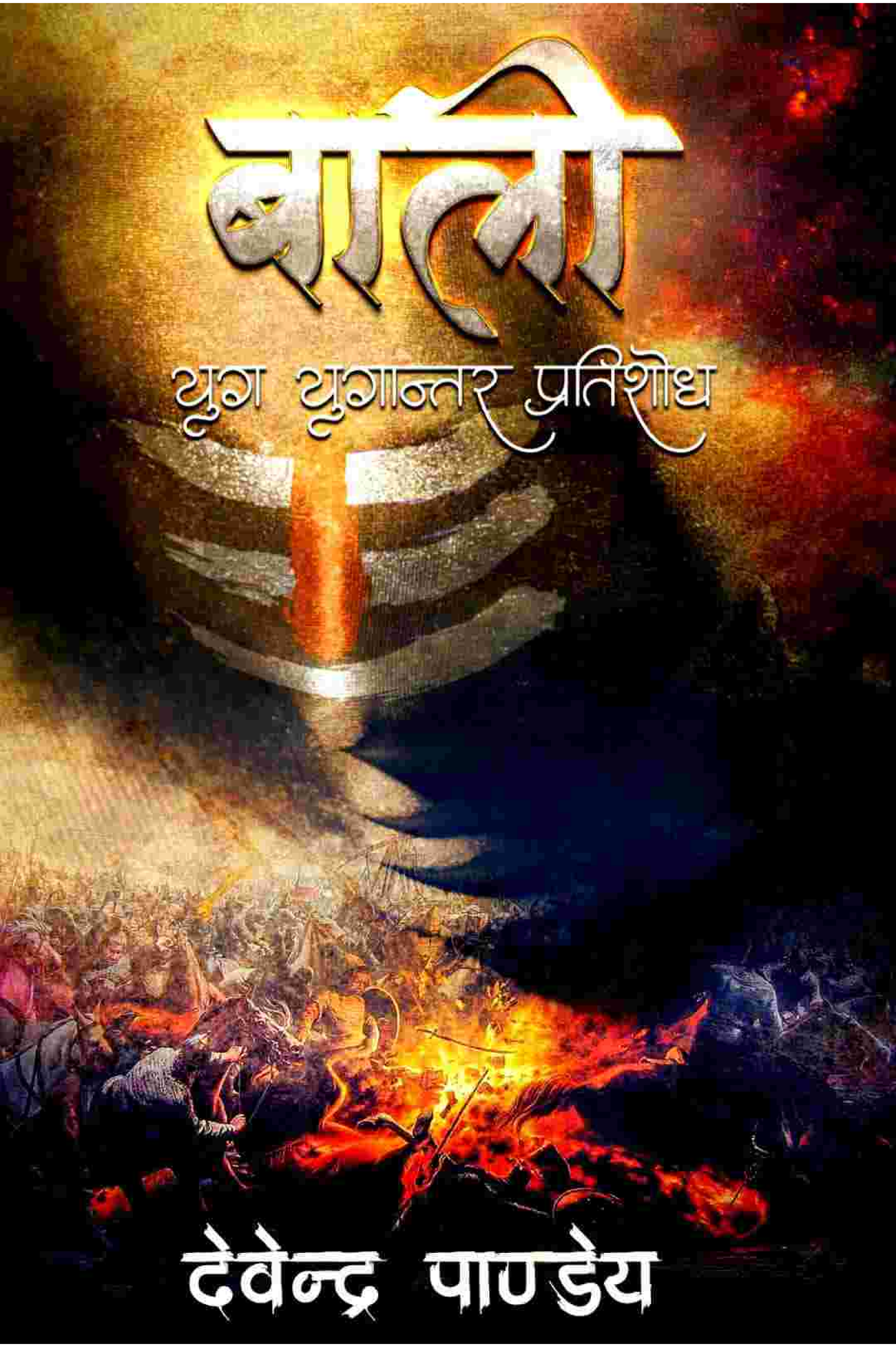

बाली

युग युगान्तर प्रतिशोध

देवेन्द्र पाण्डेय

धरती

युग युगांतर प्रतिशोध

सामग्रियाँ

Title Page

Copyright

Dedication

वर्तमान समय

विशेष धन्यवाद

बाली

युग युगांतर प्रतिशोध

देवेन्द्र पाण्डेय

सूरज
पॉकेट बुक्स

बाली - युग युगांतर प्रतिशोध (उपन्यास)

© देवेन्द्र पाण्डेय
'सूरज पॉकेट बुक्स' पुस्तक संख्या – 65
प्रथम संस्करण: जून 2019
मुखपृष्ठ: निशांत मौर्य

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी भाग लेखक व प्रकाशक की अनुमति के बिना पुनः मुद्रित करना, प्रति निकालना, वितरण करना, रिकॉर्ड करना अथवा किसी भी अन्य माध्यम द्वारा पुनः उपयोग करना निषिद्ध है।

प्रकाशक:

सूरज पॉकेट बुक्स

ठाणे, महाराष्ट्र

www.soorajbooks.com

Facebook.com/soorajpocketbooks

Email ID: soorajpocketbooks@gmail.com,

publisher@soorajbooks.com

हमारी सभी पुस्तकें निम्न वेबसाइट्स व एप्प्स पर उपलब्ध हैं :

soorajbooks.com, Amazon.in, Kindle and other online stores.

यह एक काल्पनिक किताब है। स्थानों और संस्थाओं के नामों का प्रयोग केवल कथ्य को प्रामाणिकता प्रदान करने के लिए किया गया है। कहानी में आये सभी चरित्र, नाम और घटनाएं लेखक की कल्पना पर आधारित हैं और इसका किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध एक संयोग मात्र होगा।

धन्यवाद मेरे माता-पिता का, जिन्होंने कभी
कोई बेवजह की रोक-टोक नहीं लगायी।

धन्यवाद मेरी पत्नी का, जिन्होंने मुझे लिखने के लिये प्रेरित किया।

धन्यवाद ईश्वर का, जिसने मुझे नास्तिक से आस्तिक बनाया और
मेरा मार्गदर्शन किया, जिस कारण मैं यह कहानी लिख सका।
मेरे जीवन में ईश्वर के वरदानस्वरूप अवतरित हुई मेरी दुहिता
'दृषिका' का धन्यवाद, जिसने अपने जन्म से मेरे जीवन को
और अधिक सकारात्मक किया और मुझे अपना पिता बनाने
का अतुलनीय एवं अवर्णनीय सुख प्रदान किया।
धन्यवाद उन मित्रों का जो इस रचना के आरंभ से अंत
तक सदैव किसी न किसी रूप में मेरे साथ रहे।

निवेदन

उपन्यास का उद्देश किसी की धार्मिक, सामाजिक एवं जातिगत भावनाओं को दुखाना नही है, और ना ही उसमे दर्शाये गये विचारों एवं संवादों का लेखक अथवा प्रकाशक समर्थन करते हैं।

कहानी के संवाद एवं घटनायें पात्रों के चरित्र एवं परिवेश के अनुकूल रचे गए हैं, और वे उनके दृष्टिकोण से दर्शाये गए हैं। उपन्यास का उद्देश्य मनोरंजन मात्र है, ना कि किसी की मान्यताओं अथवा आस्था पर आक्षेप उठाना। उपन्यास के सभी चरित्र काल्पनिक है, स्थान, परिवेश, मिथक, किवदंतियाँ व ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख मात्र रोचकता बनाये रखने के लिये किया गया है।

कुछ लेखकीय जैसा

बतौर लेखक मेरे प्रथम उपन्यास 'इश्क बकलोल' को जिस प्रकार पाठकों एवं समीक्षकों का उत्साहवर्धक प्रतिसाद मिला, उसने मुझे पाठकों से संवाद साधने के लिये विवश कर दिया है। मैंने प्रथम उपन्यास में लेखकीय नही लिखा था, उस समय मैं स्वयं को लेखकीय लिखने की स्थिति में नही समझता था। मैंने अनेक बार कहा है कि मैं लेखक ना होकर एक पाठक हूँ, और मेरा लेखन उसी पाठक का एक विस्तार मात्र है। किन्तु ऐसा कहकर मैं अपनी लेखकीय जिम्मेवारी से मुंह नही मोड़ सकता।

प्रथम उपन्यास की सराहना ने मेरा उत्साहवर्धन किया। प्रथम उपन्यास एवं नवलेखक होने के नाते अनेक गलतियां थी, जिसे प्रबुद्ध पाठकों ने अवश्य पकड़ा होगा। मैं उन पाठकों का भी धन्यवाद करता हूं, जिन्होंने मेरी गलतियों पर ध्यान ना देते हुए कहानी की खूबियों पर ध्यान दिया। और उनका भी धन्यवाद करूँगा जिन्होंने मेरी कमियों की ओर ध्यान खींचा और मेरा मार्गदर्शन किया। अब प्रस्तुत उपन्यास के सन्दर्भ में कुछ बातें करते है, यह वैसे तो मेरा दूसरा उपन्यास कहलायेगा, किन्तु इसकी परिकल्पना 'इश्क बकलोल' से भी पहले हो चुकी थी। बाली मेरा एक महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट था, जो आज से छह या सात वर्ष पहले किसी और स्वरुप में आने के लिये तैयार था।

एक फैन प्रोजेक्ट के रूप में बाली की कल्पना की गयी थी। सोशल मीडिया पर विभिन्न लेखन समूहों से जुड़ने के पश्चात लेखन की एक भूख सी जागी। उस समय ग्राफिक नॉवेल्स और कॉमिक्स का बोलबाला था। मेरे पाठक बनने के पीछे कॉमिक्स का ही सबसे बड़ा योगदान रहा है,

एक फैन फिक्शन के रूप में मैंने बाली का कांसेप्ट सोचा था, मेरे साथ जुड़े मेरे मित्र आशिष खरे, जो एक कुशल आर्टिस्ट हैं। उन्हें अपनी कला को सबके समक्ष प्रस्तुत करना था, और मुझे मेरी कहानी को। हम दोनों ने एक फैन फिक्शन के रूप में बाली की कहानी पर काम करना आरंभ किया। किन्तु जीवन की जिम्मेदारियां शौक पर भारी पड़ती गयी और समय का चक्र कुछ ऐसा घूमा कि हमारा यह प्रोजेक्ट कुछ पृष्ठों तक पहुँच कर ही बंद हो गया। फिर उसके कुछ वर्षो पश्चात कुछ अन्य मित्रों के साथ बाली का कांसेप्ट पुन: जीवित हो उठा। इस बार साथ थे यश ठाकुर किन्तु इस बार भी बाली कुछ पृष्ठों से आगे ना बढ़ पाया।

इस बार बंद होने के पश्चात उसकी चर्चा होनी ही बंद हो गयी। कुछ वर्षो पश्चात पुन: प्रोजेक्ट बनने को मचल उठा और फिर नये सदस्य इसमें शामिल हुए, अजय थापा, हरेन्द्र सैनी इत्यादि बेहतरीन कलाकारों ने अपना मूल्यवान समय दिया किन्तु फिर किसी कारणवश यह प्रोजेक्ट बंद हो गया। कई बार बंद होने के पश्चात् मैंने एक प्रकार से इस प्रोजेक्ट से ही किनारा कर लिया। मैंने यह बात स्वयं को समझा ली कि कुछ कहानियां पूरी होने के लिये नही होती। इसी बीच कुछ पत्रिकाओं में एक-दो लेख प्रकाशित होते रहने से उत्साह बढ़ता रहा। दो वर्ष पहले हमारे ही समूह के मित्र रहे मिथिलेश गुप्ता जी से उनकी किताब ‘जस्ट लाइक दैट’ के विमोचन के अवसर पर मुंबई में मिलना हुआ, शुभानन्द जी एवं मिथिलेश से यह मेरी प्रथम भेंट थी।

वही मेरे पहले उपन्यास का ताना बाना बुना गया और कुछ ही महीनों में उस कहानी ने १७० पृष्ठों के एक उपन्यास का रूप ले लिया। इश्क बकलोल के प्रकाशन के समय एक घबराहट सी थी, ना जाने पाठक क्या प्रतिक्रिया देंगे। किन्तु प्रतिक्रिया काफी उत्साहवर्धक रही। अब बकलोल तो हो चुकी थी। आगे क्या किया जाये यह प्रश्न उत्पन्न हो गया, हैदराबाद में जब मैं और मिथिलेश चर्चा कर रहे थे, उन्होंने प्रश्न

किया अगला उपन्यास किस विषय पर लिखेंगे ? उसी चर्चा में बाली का उल्लेख आ गया, और निर्णय यह हुआ कि बाली अब उपन्यास के रूप में आएगा। मुझमे झिझक थी कि शायद पाठक इस उपन्यास के विषय को पसंद ना करे, किन्तु उन दिनों मैंने काफी ऐसे उपन्यास पढ़े जो माइथोलॉजिकल, फंतासी, थ्रिलर विषयों से परिपूर्ण थे जो हाथों हाथ लिये और पसंद किये जा रहे थे। तब यह गलतफहमी दूर हुई, मुझे समझ में आ गया कि इस जेनर का एक अलग ही पाठक वर्ग है। फिर उपन्यास आरंभ हुआ। एक बार यूँ ही चर्चा करते हुए किसी ने हास परिहास में कह दिया 'बाली एक अभिशापित प्रोजेक्ट है।' अपरोक्ष रूप से मैं भी इस प्रोजेक्ट को लेकर इतनी नाकामियाँ देख चुका था कि मेरे मन ने भी कहीं कहीं ना कहीं इस बात को अपना समर्थन दे दिया।

कुछ ही दिनों पश्चात जब मैं १८० पृष्ठ लिख चुका था, मेरी किसी भूलवश अथवा अनजाने में वह फ़ाइल ही मेरे लैपटॉप से गायब हो गयी। कई तरीके अपनाये किन्तु फ़ाइल पुनः प्राप्त ना हो सकी। मेरा सम्पूर्ण उत्साह, निरुत्साह में परिवर्तित हो गया, मैं अब पूर्णतया निराश हो गया था, और मैंने इस प्रोजेक्ट को सदैव के लिये बंद करने का निर्णय ले लिया। किन्तु धन्यवाद करना चाहूँगा मेरी पत्नी का जिन्होंने मेरी हिम्मत बढाई और मुझे पुनः इस प्रोजेक्ट पर कार्य करने के लिये विवश कर दिया। शुभानन्द जी एवं मिथिलेश जी भी मेरा मनोबल बढ़ाते रहे। और फिर एक नये उत्साह के साथ प्रोजेक्ट आरंभ हुआ। आखिरकार जुलाई मध्य से आरंभ हुई यह कथा अक्तूबर मध्य में आकर समाप्त हुई। मेरा अनुमान था कि यह कहानी भी इश्क बकलोल की ही भाँति १७० पृष्ठों में ही सिमट जायेगी या अधिक से अधिक २०० पृष्ठ। किन्तु जब लिखने बैठा तो हर पात्र अपनी मनमानी पर उतर सा आया। और कथानक वृहद होता चला गया। मुझे शीघ्र ही आभास हो गया कि मैं अपने पिछले उपन्यास से दुगुने शब्द लिख चुका हूँ, इसके पश्चात भी कथानक समाप्त नही हुआ है। बकलोल पिछले वर्ष अगस्त में प्रकाशित हुई थी, उसके

पश्चात साल भर तक मेरी कोई रचना अथवा लेखन कहीं प्रकाशित नही किया और ना ही कहीं मैं सक्रिय रहा, अनेक पाठकों एवं मित्रों ने संदेशो में मेरे अगले उपन्यास के विषय में प्रश्न करना आरंभ कर दिया था, उपन्यास समाप्ति के पश्चात अब लग रहा है मैं इस खाली पड़ी अवधि को भरने में सफल हुआ हूँ। बाली आपके हाथों में है। यहाँ मैं यह सुनिश्चित करना चाहूँगा कि कई मित्रों को अचानक से इश्क बकलोल जैसी सामजिक और रोमांस जेनर के पश्चात सीधे एक माइथोलॉजिक, फंतासी, थ्रिलर पर लिखना समझ में नही आया। इश्क बकलोल से मेरी एक अलग ही प्रतिमा बनी हुई थी। किन्तु मैं यहाँ यह कहना चाहूँगा कि मैं किसी एक विधा में स्वयं को बंधा हुआ नही पाता और ना ही रहने की इच्छा है। मैं बस मस्तिष्क में दौड़ते विचारों को कहानियों का स्वरुप देने का प्रयास करता हूँ। अब मैं अपने इस प्रयास में कितना सफल रहा और कितना असफल यह आप ही सुनिश्चित करेंगे। आपके विचार, सुझाव एवं समीक्षाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

देवेन्द्र पाण्डेय।

वर्तमान समय

आखेट

सड़कों पर घनें कोहरे की चादर फैली हुई थी। नवम्बर के महीने में दिल्ली में यह आम बात होती है, किन्तु आज कोहरा अन्य दिनों की अपेक्षा कुछ ज्यादा ही घना था। घने कोहरे की चादर के कारण स्ट्रीट लाइट्स भी टिमटिमाते से प्रतीत हो रहे थे। सड़कों पर किसी श्मशान सी स्तब्धता और शांति थी। आवाजाही भी अपेक्षाकृत कम थी। इक्का-दुक्का वाहन या टैक्सी के टायरों से होते घर्षण की ध्वनि से यदा-कदा नीरव शांतता भंग हो जाती।

ठंड़ और आधी रात के कारण सड़क पूर्णतया सुनसान थी। सामान्यतया ऐसे मौसम में लोग अपने घरों की उष्म दीवारों के मध्य रहना ही पसंद करते है, किन्तु वह व्यक्ति इसका अपवाद था। इस पूरी सड़क पर केवल वही अकेला दिखायी दे रहा था। ट्रेंच कोट पहने उस व्यक्ति का कद लगभग छह फुट ऊंचा था। ढीले ट्रेंच कोट के बावजूद उसके शरीर के मांसल और विशालकाय कटाव बाहर आने को मानो उत्सुक से थे। यकीनन वह व्यक्ति सुदृढ़ एवं कसरती शरीर का स्वामी था।

हैट और मफलर से ढंका होने के कारण उसका चेहरा स्पष्ट दिखायी नही दे रहा था। हाथों में चमकदार काले दस्तानें मौजूद थे। कुल मिला कर उसके हुलिये का सार यह था कि आँखों को छोड़ कर उसके शरीर का कोई भी हिस्सा खुला नही था।

वह एक निश्चित स्थान की ओर बढ़ रहा था। कुछ ही दूर चलने के पश्चात अब वह उस इमारत के समक्ष खड़ा था। तीन मंजिला इमारत रंगबिरंगी नियोन लाइट्स से जगमगा रही थी। वह इमारत मुख्य सड़क से अलग छोर पर थी,जो आबादी से एकदम ही अलग-थलग जगह थी।

वह एक शानदार नाईट क्लब था। ट्रेंच कोट धारी व्यक्ति की आँखों में उस नाईट क्लब को देखकर एक चमक सी उभरी।

“माइकल! आ रहा हूँ मैं। तुम भाग्यशाली हो, जो मेरे अभियान का आरंभ तुमसे हो रहा है।” उस व्यक्ति के मुख से हल्की सी गुर्राहट सी निकली, और वह हैट को चेहरे की ओर झुकाये हुए क्लब की दिशा में बढ़ गया। वह नाईट क्लब के मुख्य द्वार की ओर ना जाकर पिछले हिस्से की तरफ बढ़ा। उसे भलीभांति पता था उसे किस हिस्से में जाना है। इमारत का मुख्य द्वार नाईट क्लब और उसके सामान्य सदस्यों के लिये ही था। किन्तु उसके मतलब की चीज वहाँ नहीं थी। क्लब के नियमित और विश्वसनीय सदस्यों के लिये पिछला द्वार आरक्षित था और उसे वहीं जाना था।

“एक्सक्यूज मी सर! युअर आयीडी प्लीज? दिस इज अ प्रोहिबिटेड़ एरिया।” एक हट्टे-कट्टे गार्ड कम पहलवान ने ट्रेंच कोट वाले को निषिद्ध क्षेत्र की बढ़ते देख कर टोका। वह अकेला गार्ड नही था, असामान्य रूप से मुख्य द्वार की तुलना में इस द्वार पर चार हट्टे-कट्टे गार्ड्स थे।

“आई हैव आयीडी।” ट्रेंच कोट धारी उन्हें देख कर मुस्कुराया, और कोट की बायीं जेब से पहचानपत्र निकालने का उपक्रम करने लगा। इस बात का उसने पूर्णतया ध्यान रखा कि ऐसा करते हुए वह अन्य गार्ड्स के निकट पहुँच जाये। एक अनुमानित दूरी पर पहुंचकर उसने आस-पास नजरें दौड़ाई। उसके मस्तिष्क में कुछ हिसाब-किताब दौड़ने लगे थे। उसने एक पहचानपत्र निकाला, गार्ड देखने के लिये झुका और इसी क्षण उस व्यक्ति ने अचानक ही उस झुके हुए गार्ड की गर्दन पर कुहनी से प्रहार कर दिया। प्रहार अकस्मात और अत्यंत भीषण था, गार्ड के मुंह से किसी प्रकार की चीख तक न गूंजी और वह बेसुध होकर जमीन पर गिर पड़ा। दूसरा गार्ड जब तक कुछ समझता तब तक ट्रेंच कोट वाले ने अपने अपने बूट का प्रहार उसकी गर्दन पर कर दिया था। हड्डी टूटने की तीव्र आवाज गूंजी और वह भी जमीन पर पड़ा नजर आया। बाकी गार्ड्स के हाथों में उनकी पिस्तौलें आ चुकी थीं किन्तु जब तक वे पिस्तौल तानते तब तक वह बला उनके सामने पहुँच चुकी थी। उस छलावे की फुर्ती देखकर दोनों क्षणभर को सकते में आ गये और यही क्षण उन्हें भारी पड़ा।

दोनों गार्ड्स के कुछ समझने से पूर्व ही उस व्यक्ति के नपे तुले हाथों का प्रहार उनकी गर्दनों पर हो चुका था। प्रहार की भीषणता एवं सटीकता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता था कि दोनों गार्ड्स को बेसुध होने में एक क्षण से भी कम का समय लगा।

अब उस व्यक्ति के सामने कोई बाधा नही थी। उसने अपना हैट सीधा किया और कपड़े दुरुस्त किये, जबकि इसकी कोई आवश्यकता ही नही थी। उसने यह सब कुछ इतनी फुर्ती से और कम समय में किया था कि उसके कपड़ो पर सलवटें पड़ने तक का समय नही मिला था।

अब वह क्लब के भीतर प्रवेश कर चुका था।

***

घुमावदार सीढियों से होते हुए वह एक गलियारे में पहुँच चुका था, जहाँ क्लब मेम्बर्स की चहल-पहल थी। उन लोगो ने ट्रेंच कोट वाले में किसी भी प्रकार की कोई दिलचस्पी नहीं जताई और ना ही उसकी वेशभूषा से किसी को कोई हैरानी हुई। क्लब के इस हिस्से में केवल विश्वसनीय सदस्यों का ही प्रवेश संभव था। और कोई मौसम होता तो उसके पहनावे से वह एक बारगी सबकी आकर्षण का केंद्र बन जाता। किन्तु सर्दियों में ऐसे कपड़े सामान्य थे। उस व्यक्ति को इन लोगो में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसने उन्हें हिकारत से एक नजर देखा और गलियारे की ओर आगे बढ़ गया। गलियारे के फर्श से लेकर छत और दीवारें तक झक सफ़ेद थी। सफ़ेद लाइट्स की रोशनी से वह गलियारा दमक रहा था। गलियारा पार करते ही वह व्यक्ति आसपास का परिवेश देख कर चौंक पड़ा। वह गैलरी एक 'अरेना' के समक्ष खुलती थी। वह एक टेनिस कोर्ट जितना बड़ा अरेना था। जिसके बीचों-बीच एक रिंग बना हुआ था। ठीक वैसा ही रिंग, जैसा रेसलिंग के लिये प्रयुक्त होता है। रिंग के चारो ओर वृत्ताकार में दर्शक दीर्घा बनी हुई थी। जहाँ लगभग ५०० दर्शकों के बैठने की व्यवस्था थी। और इस समय दर्शक दीर्घा दर्शकों से खचाखच भरी हुई थी। चारों ओर शोर सा मचा हुआ था।

कोट वाले व्यक्ति ने एक बार रिंग की ओर देखा, जहाँ दो पहलवान एक दूसरे पर ताबड़तोड़ प्रहार कर रहे थे। एक योद्धा दूसरे योद्धा से डील-डौल में लगभग दुगुना था। दर्शक दीर्घा में गजब का उत्साह था। दर्शक अपने पसंदीदा योद्धा का उत्साहवर्धन कर रहे थे , जो निस्संदेह वह विशालकाय व्यक्ति ही था।

अचानक से उस भीमकाय व्यक्ति ने अपने प्रतिद्वंदी को उठाकर पटखनी दी और प्रतिद्वंदी ने पसलियाँ टूटने की आवाज के साथ ही मुंह से रक्त फेंक दिया।

“लेडिज एंड़ जेंटलमेन, लगता है 'ब्लड़ हाउंड' फिर से विजेता बनेगा। 'रॉजर' को भीषण पटखनी मिली है। आशा नहीं है कि वह पुन: उठ खड़ा

होगा, लेकिन उसे खड़ा होना ही होगा, क्योंकि उसका प्रतिद्वंदी है 'ब्लड़ हाउंड'। जो अब तक अपने आठ प्रतिद्वन्दियों को मौत के घाट उतार चुका है। कहीं रॉजर उसका नौंवा शिकार न बन जाये।" उद्घोषणा कक्ष से उद्घोषणा हो रही थी। जिसमे ब्लड़ हाउंड के गुण गाये जा रहे थे।

"कहते है मनुष्य कभी पशु हुआ करता था। ह्म्म्म! अनर्गल, असत्य है यह कथन। मनुष्य कभी पशु नही हुआ करता था अपितु मनुष्य आज भी पशु ही है।" ट्रेंच कोट वाला व्यक्ति स्वयं से बड़बडा रहा था।

"मनुष्य के भीतर का पशु प्रत्येक क्षण अपनी पशुता का प्रदर्शन करने और बाहर आने को उत्सुक है। बस अपनी क्रूरता, पशुता, दरिंदगी, वहशियत और अपना जंगलीपन इस सफेद पोश चेहरे के पीछे और समाज की आड़ में दबा कर रखी हुई है। उसे पशु कहना पशु का भी अपमान ही है। पशु तो अपनी आवश्यकताओं के लिये शिकार करता है। किन्तु मनुष्य केवल अपने स्वार्थ, अपने आनंद और अपनी विकृति के लिये आखेट करता है।"

अपने मस्तिष्क में चलते विचारों को उसने कुछ क्षणों के लिये विराम दिया। दर्शक दीर्घा में शायद उसकी मनचाही वस्तु उसे दिख गयी थी, जिसकी खोज में वह यहाँ आया था। उसकी आँखों में एक चमक सी उभरी।

"मनुष्य के जीवन का मूल्य केवल कुछ रुपयों में आंका जा सकता है। उसके जीवन को कुछ रुपयों के बदले खरीदा जा सकता है। किसी के जीवन को अपने मनोरंजन एवं क्रय-विक्रय की वस्तु बना देने वाले इन्ही पशुओं की खोज में मैं निकला हूँ।" विचार करते हुए कोट वाले व्यक्ति ने रिंग में देखा। ब्लड़ हाउंड ने रॉजर की गर्दन दोनों हाथो से दबोच रखी थी। रॉजर छटपटा रहा था, प्रहार पर प्रहार किये जा रहा था। किन्तु गर्दन जकड़ी होने के कारण उसकी श्वसनप्रणाली अवरुद्ध हो रही थी, जिस कारण उस पर थकान हावी होने लगी। उसकी देह शिथिल पड़ती जा रही थी। ब्लड़ हाउंड दम घोंट कर उसका जीवन समाप्त करने ही वाला था। उसने एक बार दर्शकों की ओर देखा। वह जानता था उन्हें क्या पसंद है।

"यदि मैं चाहूँ तो उस योद्धा को बचा सकता हूँ। किन्तु वह इस योग्य नही है कि उसकी चिंता की जाये।" कोट वाले व्यक्ति के नेत्रों में एक ज्वाला सी दहक रही थी।

"किल हिम! किल हिम!" दर्शकों में एक सम्मिलित शोर सा उठा। उनकी उत्तेजना बता रही थी कि यदि उनका बस चलता तो वे स्वयं रॉजर

की बोटियाँ तक नोंच लेते। ब्लड़ हाउंड ने मुस्कुराते हुए दर्शक दीर्घा के ऊपरी छोर पर स्थित केबिन की ओर देखा। वह एक पारदर्शी केबिन था, जहाँ सफ़ेद सूट पहने, फ्रेंच कट दाढ़ी और किसी यूरोपियन से नैन-नक्श वाला व्यक्ति अपने शानदार सोफ़े पर पसरा हुआ था। उसके आस-पास काले सूट पहने कुछ सशस्त्र अंगरक्षक भी थे। वह माइकल था, और यह क्लब उसकी मिल्कियत थी। उसकी नज़रें हाउंड से मिली, हाउंड मानो आदेश की प्रतीक्षा ही कर रहा था। माइकल ने अपना जाम उठा कर उसे मंजूरी दे दी।

और एक जोरदार आवाज के साथ ही, हाउंड ने रॉजर की गर्दन उमेठ दी। हड्डी टूटने की जोरदार आवाज रिंग के बाहर तक सुनी गयी। इसी के साथ रॉजर की निष्प्राण देह स्टेज पर आ गिरी और हाउंड किसी जानवर की भाँति दोनों हाथों को उठा कर विजयघोष स्वरूप दहाड़ने लगा।

"और इसी के साथ हाउंड ने अपना नौंवा मुकाबला भी जीत लिया। हाउंड एक अविजित योद्धा बन कर उभरा है। उसने कुछ ही दिनों में अपनी खूंखार शैली और आक्रामकता से रेसलिंग में आतंक मचा दिया है। अफ़सोस कि इस मुकाबले के पश्चात अब शायद ही कोई हाउंड से मुकाबला करने के लिये तैयार होगा। रॉजर वह आखिरी योद्धा था जिसने हाउंड को चुनौती दी थी। अगर ऐसा ही रहा तो वह दिन भी दूर नही जब हाउंड अकेले ही रिंग में खड़ा होकर बिना लड़े ही विजेता कहलायेगा। क्योंकि हाउंड को चुनौती देने वाला कोई बचेगा ही नहीं।" उद्घोषक के स्वर में कंपन और उत्तेजना स्पष्ट झलक रही थी। वह उत्तेजना से लगभग चीख रहा था।

"मैं चुनौती देता हूँ हाउंड को।" अचानक दर्शक दीर्घा में से एक स्वर उभरा। सब की दृष्टि उस स्वर के उद्गम की ओर घूम गयी। जिसमे माइकल की नज़रें भी शामिल थी। उसे उम्मीद नही थी कि रॉजर का भयानक हश्र देखने के पश्चात भी कोई हाउंड को चुनौती दे सकता है।

"मैं लडूंगा हाउंड से।" ट्रेंच कोट वाले ने दुबारा कहा, इस बार उसने पूर्ण शक्ति से चीखते हुए कहा। उसकी आवाज मानो दहाड़ सी थी। अब वह सब के आकर्षण का केंद्र बना हुआ था। दर्शक उसकी वीभत्स मृत्यु की कल्पना करने लगे थे। उनकी आँखों के सामने एक और मनुष्य को तड़पकर मरते देखने का नजारा रोमांच बन कर दौड़ने लगा था।

कोट वाले को उनसे कोई फर्क नही पड़ने वाला था और ना ही उसे किसी की परवाह थी। वह सधे हुए कदमों से रिंग की ओर बढ़ने लगा।

***

“आश्चर्य की बात है, कोई हाउंड से लड़ने की इच्छा रखता है। चलिये तो देर किस बात की है? फिर से एक रोमांचक एकतरफा मुकाबला देखने के लिये तैयार हो जाइये।” उद्घोषक ने कुटिल मुस्कान के साथ घोषणा की।

“देर मुझे भी पसंद नही।” अपने ही विचारों में मग्न कोट धारी ने अपनी कोट की जेब से भूरी रंगत का एक विचित्र सा कपड़ा निकाला। जो किसी प्रकार का नकाब था। हाउंड उसे खा जाने वाली नजरों से देखते हुए गुर्रा रहा था, वह अपने प्रतिद्वंदी पर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने का प्रयास कर रहा था, जो उसकी शैली थी। कोट वाला व्यक्ति उसकी गुर्राहट पर किंचित भी ध्यान नहीं दे रहा था। और इसी के साथ एक छलांग के साथ ही वह रिंग के भीतर पहुँच गया। युद्ध कोट पहन कर नही हो सकता था। दर्शक दीर्घा में गजब का सन्नाटा था। माइकल की नजरें उस ओवरकोट धारी का चेहरा देखने को उत्सुक थी। उसकी आँखों की पुतलियाँ बिना पलकें झपकाए उसी पर स्थित थी। ट्रेंच कोट वाले ने अपना सर झुका कर हैट उतार दिया, और फुर्ती से नकाब भी पहन लिया। उसने पूर्ण ख्याल रखा था कि कोई उसका चेहरा ना देखने पाये और वह इसमें सफल भी रहा। अपना ट्रेंच कोट उतार कर रिंग के कोने में फेंक दिया। अब वह एक चुस्त पैंट और बनियान में खड़ा था। उसका गठीला शरीर कटाव में उस से दुगुने हाउंड के शरीर की तुलना में अधिक आकर्षक लग रहा था। उसकी देह मानों चमक रही थी। भुजाये फड़फड़ा रही थी। उसकी बाहे कम से कम सत्रह इंच का असाधारण व्यास लिये हुई थी। उसके सीने का व्यास भी किसी भी हालत में पचपन इंच से कमतर नही था। यह उसके अति कसरती होने का प्रमाण थी। इसके पश्चात भी वह भीमकाय हाउंड के मुकाबले लगभग आधा ही था। उसके चेहरे पर जो नकाब था उसमे आँखों के लिये कहीं कोई छेद नही था। नकाब के माथे से लेकर नाक और मुख को घेर कर एक गेरुआ त्रिपुंड बना हुआ था। तीन रेखाओं से बना वह त्रिपुंड जो साधु-सन्यासी भस्म अथवा चन्दन से अपने माथे पर अथवा बाहों पर बनाते है। उसका नकाब शायद भीतर से पारदर्शी एवं जालीदार था जिस कारण वह आसानी से देख और श्वास ले सकता था।

“पशु को मारने के लिये पशु बनना ही पड़ता है ।” त्रिपुंड धारी स्वयं से बोला।

“ओह, तो हमारे नये योद्धा की पहचान उनका यह नकाब है, लेकिन अफ़सोस कि उन्हें अपनी पहचान स्थापित करने का अवसर तक नही मिल पायेगा।” उद्घोषक की घोषणा में उत्साह और अतिआत्मविश्वास स्पष्ट झलक रहा था। माइकल ने उन्हें देखने के लिये बेचैनी से पहलू बदला।

“कौन है यह? मरने की बड़ी जल्दी है इसे। ब्लड़ हाउंड तो इसे मिनटों में पीस देगा।” माइकल ने सिगरेट का कश लगाया। उसे उस नकाबपोश के विषय में जानने की तीव्र उत्सुकता हो रही थी।

मुकाबला पूर्णतया एकतरफा था। त्रिपुंड धारी और हाउंड की नजरें आपस में मिली, और इसी के साथ हाउंड और त्रिपुंड धारी एक दूसरे से भिड़ने के लिये दौड़ पड़े। दोनों की भीषण टक्कर हुई, पूरा रिंग मानो इस टक्कर से कांप सा गया। अनुमान के उलट इस टक्कर से हाउंड का दिमाग चकरा सा गया और वह रिंग में ही गिर पड़ा। इसी के साथ दर्शक दीर्घा में खामोशी छा गयी।

“हैरानी की बात है, त्रिपुंड धारी की टक्कर से हाउंड गिर पड़ा, और त्रिपुंड धारी अब भी अपनी जगह सही सलामत खड़ा है।” उद्घोषक भी हैरान था।

अब की बार हाउंड उठा और पहले की अपेक्षा तीव्र गति से दौड़ते हुए उसने त्रिपुंड धारी को कमर से पकड़ कर उठा दिया और जबर्दस्त शक्ति से पटक मारा। रिंग में मानो एक धमाका सा हुआ। दर्शकों में रोमांच की लहर दौड़ गयी, और वे मानों चीत्कार से कर उठे और हाउंड के नाम से जबर्दस्त नारे लगने लगे।

“निस्संदेह हाउंड की इस जबरदस्त पटक से त्रिपुंड धारी की हड्डियाँ नाच उठी होंगी। लगता नही कि वह अब दुबारा उठ पायेगा।” उद्घोषक ने टिप्पणी की। माइकल के चेहरे पर भी मुस्कुराहट सी आ गयी, किन्तु कुछ ही क्षणों के लिये। क्योंकि उसकी मुस्कान उस त्रिपुंडधारी को खड़ा होते देख हैरानी में परिवर्तित हो गयी थी। यही हाल दर्शकों का भी था।

“मूर्ख! इन्हें लगता है इस भीमकाय हाउंड को चुनौती देकर मैंने भूल की है, किन्तु इन्हें यह नही पता कि जीतने के लिये बड़ा शरीर होना महत्वपूर्ण नही है।” त्रिपुंड धारी ने पुन:मोर्चा संभाल लिया और हाउंड की ओर देखा।

उसे खड़ा होते देख कर क्रोध से हाउंड की कनपटियाँ सुर्ख हो गयी। उसने अपनी पूर्ण शक्ति समेटकर तीव्र गति से जबर्दस्त घूंसा त्रिपुंड धारी

के चेहरे की ओर लहराया। इस घूंसे में उसकी सारी शक्ति थी, निस्संदेह इस प्रहार को झेलना किसी भी हाल में उस त्रिपुंडधारी के बस की बात नही थी। किन्तु आश्चर्यजनक रूप से त्रिपुंड धारी ने अपनी हथेली पर उसके शक्तिशाली घूंसे को रोक लिया। एक क्षण में ही दर्शक दीर्घा में सन्नाटा छा गया और यह दृश्य देखकर माइकल की आँखे फटी की फटी रह गयी। अपने शक्तिशाली घूंसे को हथेली पर झेल जाने के इस कृत्य से हाउंड अभी हैरान ही था कि अद्भुत फुर्ती का प्रदर्शन करते हुए त्रिपुंड धारी ने एक शक्तिशाली ठोकर भी उसके मुंह पर जड़ दी। हाउंड के मुंह ने खून फेंक दिया और वह लड़खडा गया।

"शक्ति का मद मनुष्य को पशु बना देता है किन्तु ऐसे पशुओं से निपटना मुझे बखूबी आता है।"

अगले ही पल हाउंड फिर दौड़ा, लेकिन इस बार त्रिपुंड धारी ने ना केवल झुक कर अपना बचाव किया बल्कि अपने सिर की एक शक्तिशाली ठोकर भी उसके पेट में जड़ दी। जिससे हाउंड दोहरा हो गया। क्षण भर का भी विलंब ना करते हुए त्रिपुंड धारी ने दर्द से झुके हाउंड को गिरने से पहले ही थाम लिया और अपने कंधो पर रख कर एक गुर्राहट के साथ उसे उठा लिया। दर्शक दीर्घा में मौजूद हर व्यक्ति सन्न रह गया। किसी को भी विश्वास नही हो रहा था कि हाउंड से आधे शरीर के व्यक्ति ने हाउंड को किसी खिलौने की भांति उठा लिया।

"असंभव! इस त्रिपुंड धारी ने अपने से दुगुने वजन वाले हाउंड को उठा लिया है। मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नही हो रहा है।" उद्घोषक चीख पड़ा।

"विश्वास! कितना अजीब शब्द हैं यह विश्वास। हम जो नही देख पाते उस पर भी विश्वास कर लेते है, किन्तु जो हो रहा है उसे देखकर भी अविश्वास करते है।" सोचते हुए त्रिपुंड धारी ने पूरी तीव्रता से हाउंड को रिंग के बाहर फेंक दिया। कठोर फर्श से टकराकर हाउंड की चीख निकल गयी।

"किन्तु किसी के विश्वास करने या ना करने से सत्य बदल नही जायेगा, और सत्य यही है कि इसकी मृत्यु मेरे ही हाथों होनी है।" त्रिपुंड धारी ने रिंग के कोनो पर बने बैरिकेड्स पर छलांग लगायी, और उस से बने विपरीत दबाव से दोबारा एक लम्बी छलांग लगा कर वह सीधे रिंग के बाहर हाउंड के सीने पर जा धमका। इस ठोकर का दबाव इतना शक्तिशाली था कि हाउंड के सीने की हड्डियाँ तो टूटी ही, साथ ही में

उसके नीचे का मजबूत फर्श तक दरक गया। अब त्रिपुंड धारी ने निढाल पड़े हाउंड की गर्दन को अपने दोनों हाथो से उसकी पीठ पर सवार होकर जकड़ लिया। हाउंड छटपटाने लगा। हाउंड की गर्दन पर पकड़ मजबूत होती गयी, हाउंड अपनी गर्दन की हड्डी टूटते हुए स्पष्ट महसूस कर रहा था। उसने पकड़ खोलने का हर संभव प्रयास किया किन्तु त्रिपुंड धारी की शक्तिशाली पकड़ के आगे उसका हर प्रयास निरर्थक साबित हुआ।

हाउंड की गर्दन दबोचे हुए त्रिपुंड धारी ने घृणा से एक बार दर्शक दीर्घा में उपस्थित सभी दर्शकों को देखा। और उसकी दृष्टि माइकल से जा मिली। माइकल को देखकर वह मानो मुस्कुराया, माइकल को तो सांप सा सूंघ गया था। हाउंड का छटपटाना जारी था।

"छटपटाना व्यर्थ है। शांत रहो, मैं तुम्हें मुक्त करने आया हूँ मित्र, शांत रहो।" त्रिपुंड धारी के ठंडे और कठोर स्वर ने हाउंड के रोंगटे खड़े कर दिये। वह हाथ-पाँव मारता किन्तु ......

'कड्ड!! कड़ाक!" एक जोरदार आवाज के साथ हाउंड की गर्दन टूट कर एक ओर झूल गयी। उसका निर्जीव शरीर फर्श पर गिर गया। त्रिपुंड धारी ने एक नजर माइकल की ओर देखा, किन्तु माइकल अब अपने स्थान से गायब था।

"शक्ति भारी-भरकम शरीर में नहीं होती, यह इन्हें समझना होगा। यह तो आरंभ है, अभी तो इन्हें बहुत कुछ समझना बाकी है।" त्रिपुंड धारी ने अपना कोट और हैट उठाया और अरेना से निकल कर वापस गलियारे की ओर चल दिया। दर्शक उसे जाते हुए देखते रहे। त्रिपुंड धारी ने पुन: एक बार दर्शकों की ओर देखा।

"समाज! यह है हमारा समाज। यही है इसका असली चेहरा। मात्र दिखावा है यह समाज, ढोंग है। यहाँ सभी कलाकार हैं, जो सामाजिक होने का अभिनय करते हैं। किन्तु वास्तविकता क्या है इस समाज की? वास्तविकता यह है कि यह समाज मर चुका है। सड़ चुका है यह समाज, लोग मर चुके हैं, भावनाए मर चुकी हैं, इंसानियत आखिरी साँसे ले रही है। सभी अपने अपने वजूद की लाशें ढो रहें हैं। इन लाशों में यह पशु रुपी कीड़े लग चुके है, जो मुर्दाखोर है। इन्हें इससे कोई मतलब नही है कि ये लाश किसकी है, बस उसे अंदर ही अंदर खाये जा रहे हैं, नोच रहे हैं, खोखला किये जा रहे हैं। इस सभ्य समाज का यही असला चेहरा है, बदबूदार, सड़ांध मारता जिंदा लाशों का कब्रिस्तान है यह समाज।" त्रिपुंड धारी अब गलियारे में प्रवेश कर चुका था।

“सभी को हैरानी के सागर में गोते लगाते छोड़ कर त्रिपुंड धारी निकल चुका है। वो एक आंधी की तरह आया और तूफ़ान की तरह निकल गया। पीछे रह गया बस तबाही का निशान। मेरे साथ-साथ सभी यह जानना चाहते है कि आखिर वह था कौन?” उद्घोषक की आखिरी घोषणा त्रिपुंड धारी के कानों में पड़ी।

“कौन हूँ मैं ? हुंह! इस कब्रिस्तान में जीवित बचा एक इंसान, जिसका जमीर, जिसका वजूद अब भी जीवित है, लेकिन पहचान लाश बन चुकी है, इन मुर्दाखोरो की बदौलत।”

***

माइकल अपने केबिन से निकल कर गलियारे में पहुँच चुका था। उसके साथ काले रंग की पोलो टी शर्ट्स पहने और हथियारों से सुसज्जित आठ हट्टे-कट्टे अंगरक्षक थे। हर अंगरक्षक के पास पिस्तौल थी, जो कंधे से टंगी होलस्टर्स में रखी हुई थी। इतने अंगरक्षकों के होने के बावजूद माइकल के चेहरे पर भय की रेखायें स्पष्ट देखी जा सकती थी। उसकी चाल असामान्य रूप से तेज थी।

“कहीं जाने की जल्दी है, माइकल?” गलियारे में एक सर्द आवाज गूंजी, जिसने माइकल की रीढ़ तक सिहरन पैदा कर दी। उसने पलटकर देखा, त्रिपुंडधारी माइकल के पीछे ही खड़ा था। उसने अब तक अपना कोट नहीं पहना था, उसके बायें हाथ में उसका कोट और हैट टंगे हुए थे। पसीने की बूंदे उसके शरीर पर झिलमिला रही थी। गैलरी की झक सफ़ेद रोशनी में उसका शरीर मानो दमक रहा था। उसकी मांसपेशियों में अब भी उतार-चढाव साफ़ दिखायी दे रहे थे।

“कौन हो तुम?” माइकल को अब भी विश्वास नही हो रहा था कि यह वही व्यक्ति है जिसने अभी-अभी हाउंड को इतनी सरलता से मौत के घाट उतारा है। त्रिपुंड धारी चुप रहा, उसने अपना कोट और हैट फर्श पर फेंक दिया।

और इसी के साथ सभी अंगरक्षकों ने फुर्ती दिखाते हुए अपनी-अपनी गन्स होलस्टर से निकाल कर त्रिपुंड धारी की ओर तान दी।

“अपना यह अजीब सा त्रिपुंड छाप नकाब उतारो। मैं जानने को उत्सुक हूँ कि इस वाहियात चीज के पीछे आखिर किसका चेहरा है?” माइकल के हाथ में भी उसकी पिस्तौल आ चुकी थी, जिसका निशाना निस्संदेह त्रिपुंड धारी ही था।

“तुम जानते हो ना मैं कौन हूँ? तुम्हारे हाथों में पिस्तौल अवश्य है, किन्तु तुम्हारे हाथ काँप रहे हैं, रोंगटे खड़े हैं, और माथे से पसीना छलक रहा है। तुम इस समय घबराये हुए हो। तुम्हें वाकई में लगता है कि इस अवस्था में तुम मुझ पर निशाना लगा पाओगे?” त्रिपुंड धारी के स्वर में व्यंग्य था।

“बकवास बंद कर। ठीक है, नकाब तो तुम्हारे मरने के बाद भी उतर सकता है।” माइकल की ऊँगली ट्रिगर पर कसने लगी। उसी क्षण त्रिपुंड धारी ने अद्भुत फुर्ती का प्रदर्शन करते हुए अपने सामने खड़े अंगरक्षक की हथेली पर प्रहार किया। उसकी गन फर्श पर जा गिरी, और इससे पहले के वह कुछ समझ पाता, त्रिपुंड धारी का घुटना उसके घुटने से टकरा चुका था। यह टकराव इतना भयंकर था कि अंगरक्षक के घुटनों की कटोरियों के दरकने की आवाज गैलरी में साफ़ सुनाई दी। अगले ही क्षण वह फर्श पर पड़ा नजर आया।

सभी की दृष्टि क्षण भर के लिये फर्श पर पड़े अंगरक्षक की ओर स्थिर हुई, और इस क्षण का लाभ उठाते हुए कब त्रिपुंड धारी माइकल के पीछे पहुँच गया, खुद माइकल को भी पता नही चला।

“नकाब के पीछे किसका चेहरा है, यह जानकर क्या करोगे? क्योंकि वह अंतिम चेहरा होगा जो तुम अपने जीवन में देखोगे।” त्रिपुंड धारी का स्वर माइकल को ठीक अपने पीछे सुनाई दिया। माइकल ने फुर्ती दिखाते हुए पलट कर पिस्तौल का ट्रिगर दबा दिया किन्तु त्रिपुंड धारी ने उसकी फुर्ती को मात देते हुए गोली चलने के पहले ही उसका हाथ छत की ओर घुमा दिया, नतीजतन गोलियाँ छत से टकराकर बेकार हो गयीं।

इसी के साथ माइकल का गन वाला हाथ पकड़ कर उसने माइकल को अपनी ओर खींचा। इस झटके से माइकल त्रिपुंड धारी के समीप पहुँचने ही वाला था कि त्रिपुंड धारी का जबर्दस्त घूंसा माइकल के पेट से जा लगा। घूंसा इतनी शक्ति से मारा गया था कि माइकल ने किसी जानवर की भाँति डकारते हुए मुंह से खून फेंक दिया।

माइकल के गिरते ही अंगरक्षकों गनें गरज उठी। किन्तु सारी गोलियाँ गलियारे की दीवारों से टकरा कर छितरा गयीं। त्रिपुंड धारी ने पुन: असाधारण फुर्ती और गति के साथ गोलियाँ चलने से पहले ही खुद को विपरीत दिशा में लहरा दिया था। ऐसा करते हुए उसने अपनी गति को एक मोड़ देते हुए अंगरक्षकों की ओर अपनी दिशा बदल ली।

भारी जोखिम उठाया था उस त्रिपुंड धारी ने, ऐसा करने से गोलियाँ उसे निशाना बना सकती थी। किन्तु उसे मानों इसकी ज़रा भी चिंता नही थी। अपनी गोलियाँ बेकार जाते देख अंगरक्षक ठीक से हैरान भी नही हो पाये थे कि उन्होंने त्रिपुंड धारी को अपने बीच खड़ा पाया। वे सभी अवाक् रह गये।

“इतनी फुर्ती! इतनी गति! इतनी तीव्रता! असीमित शक्ति! ये कोई आम आदमी नही हो सकता। यह शत प्रतिशत वही है... वही है...।” माइकल अपने मुंह से खून पोंछते हुए उसका शक्ति प्रदर्शन देख रहा था। एक अंगरक्षक ने गोली चलाने का प्रयास किया ही था कि त्रिपुंड धारी ने उसका हाथ पकड़ कर घूमते हुए अपनी कोहनी का प्रहार उसके चेहरे पर कर दिया। इस प्रहार से अंगरक्षक की खोपड़ी अंदर से मानो कई टुकडों में टूट गयी और वह निष्प्राण देह लिये फर्श पर गिरने ही वाला था कि उसने उसका हाथ थाम लिया और तेजी से पूरी शक्ति के साथ उसके शरीर को किसी खिलौने की भाँति ही घुमा दिया, जिसकी जद में आकर तीन अंगरक्षक अपने आप को संभाल ना सके। इसके बाद भी वह नहीं रुका और उसी देह को उठा कर बाकी अंगरक्षकों की ओर उछाल फेंका। जिन्होंने त्रिपुंड धारी पर गोलियाँ चला दी थी। त्रिपुंड धारी के हिस्से की सारी गोलियाँ उस बेजान शरीर में समा गयी। और वह शरीर उन अंगरक्षकों पर जा गिरा, जिस कारण वे हड़बड़ा गये, एक अंगरक्षक की पिस्तौल इस टकराव से हाथ से उछल गयी।

उस पिस्तौल को त्रिपुंड धारी ने हवा में ही कुशलता से थाम लिया। गन हाथ में आते ही त्रिपुंड धारी ने सबसे पहली गोली माइकल पर चलाई, जो उस पर गोली चलाने ही वाला था। त्रिपुंड धारी की पिस्तौल से निकली गोली माइकल के पिस्तौल वाले हाथ से जा टकराई और उसकी हथेली के चीथड़े से बिखर गये। दर्द की अधिकता से माइकल की चीख तक गले में घुट कर रह गयी, वह अपनी कलाई थामे बैठ गया।

माइकल की ओर से निश्चिंत होते ही त्रिपुंड धारी ने बाकी अंगरक्षकों की ओर खुद को उछाल दिया। वह एक अंगरक्षक से टकराया और उसकी खोपड़ी गैलरी की दीवार से भिड़ा दी। अंगरक्षक की खोपड़ी इतनी जोर से टकराई की गैलरी की दीवार तक में दरार आ गयी। उसकी आत्मा भी खोपड़ी तोड़ कर उसी दरार से फरार हो गयी।

अचानक दो गोलियाँ चली, त्रिपुंड धारी उससे साफ बच गया था। किन्तु इस कारण उसकी बार फुर्ती नही बल्कि उस अंगरक्षक की

अर्धबेहोशी थी जिसने गोली चलाई थी। इससे पहले कि वह दुबारा गोली चलाता, त्रिपुंड धारी की पिस्तौल गरजी और उससे निकली गोली ने उस अंगरक्षक का सीना फाड़ दिया, जिसने उसकी अर्धबेहोशी को पूर्ण बेहोशी में तब्दील कर दिया।

बचे हुए अंगरक्षक अभी तक स्वयं को संभालने में ही व्यस्त थे। त्रिपुंड धारी उनके लिये साक्षात् यमदूत बनकर आया था। बिना एक क्षण रुके वह उन पर टूट पड़ा, एक अंगरक्षक अभी फर्श से उठने का प्रयास ही कर रहा था कि त्रिपुंड धारी ने अपने बूट से उसकी खोपड़ी पर प्रहार कर दिया। इस जोरदार वार से उसकी खोपड़ी गैलरी का फर्श तोड़ कर लगभग एक इंच अन्दर तक धंस गयी, फर्श के छोटे-छोटे टुकड़े उसकी खोपड़ी के टुकडों और रक्त के छिंटो के साथ बिखर गये।

“समय का अभाव ना होता तो अभी भी तुम लोगो को कुछ देर और खेलने का अवसर अवश्य देता। किंतु समय नही है, इसलिये तुम लोगो को मुक्ति जल्द देनी होगी।” कहते हुए त्रिपुंड धारी ने अपनी गन से ताबड़तोड़ फायर कर दिये। निशाना अचूक होने के कारण बाकी के अंगरक्षक भी अपने साथियों की तरह मृत्यु को प्राप्त हुए।

इसी के साथ गैलरी का वातावरण एकदम शांत हो गया। अब एक भयानक सा सन्नाटा फ़ैल गया। गैलरी साउंड़ प्रूफ होने और ऊपरी मंजिल पर क्लब के कारण इस गोलीबारी की किसी को भी भनक तक न लगी। सफ़ेद गलियारे में अब चारो तरफ रक्त के छींटे और धब्बे नजर आने लगे थे। उसकी सफेदी गायब हो चुकी थी, खून के छींटों ने गलियारें को किसी मुर्दाघर में तब्दील कर दिया था। जगह जगह बिखरे टूटे-फूटे शवों से रक्त बहकर फर्श को रक्तिम कर रहा था। त्रिपुंड धारी ने उन सभी शवों को एक बार देखा और हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया।

“आप सभी की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो।” इतना कहकर वह माइकल की ओर मुड़ गया।

माइकल के चेहरे पर दर्द और हैरत के समान भाव थे। उसका चेहरा दर्द की अधिकता से विकृत सा हो गया था और आँखों में ड़र साफ़ दिखायी दे रहा था। अपने लोथड़ों में परिवर्तित हाथ को दूसरे हाथ से थामकर वह आतंकित भाव से त्रिपुंड धारी को अपनी ओर आते देख रहा था। त्रिपुंड धारी के चुस्त नकाब पर उसके चेहरे की मांसपेशियों के उभार स्पष्ट दिखायी दे रहे थे। फूलते-पिचकते जबड़े उसकी क्रूरता के परिचायक थे। उसने क्रूरता से माइकल का गिरहबान पकड़कर उसे दीवार से घसीट

कर उठा दिया और उसी दीवार के सहारे उसे खड़ा कर दिया। दर्द की अधिकता से माइकल की आँखों से आंसू और मुंह से झाग निकलने लगा था, उसकी आँखों की पुतलियाँ उलटी होने लगी थी, और इसी क्षण त्रिपुंड धारी ने अपनी पिस्तौल की नाल उसके चीथड़े-चीथड़े हो चुकी हथेली में पूरी निर्दयता के साथ घुसा दी। माइकल के मुख से एक भयानक चीख निकली और वह बिलबिला उठा।

“क्षमा करना माइकल! किन्तु यह करना आवश्यक था। नहीं तो तुम बेसुध हो जाते, और मुझे तुमसे कुछ जानना है, तो तुम्हें बेसुध नही होने दे सकता।” त्रिपुंड धारी का स्वर बेहद कठोर था।

“शिवराज पाठक कहाँ मिलेगा?”

उसके प्रश्न से माइकल की आँखों में हैरत के भाव उभर आये, किन्तु अगले ही क्षण पिस्तौल फिर से उसकी हथेली में धंस चुकी थी। वह चीख पड़ा।

“आह्ह! मुझे नही पता!” दर्द से बिलबिलाते हुए माइकल ने कहा। “न..न..नही पता मुझे। व..वह गायब हो चुका है, एकदम से।”इसी के साथ त्रिपुंड धारी ने दया ना दिखाते हुए पिस्तौल का दबाव और बढ़ा दिया।

“मैं सच कह रहा हूँ, आह..! उसका पता...उसका प..पता किसी को नही है। मेरा विश्वास करो। व..वह अक्सर ‘रेड मून’ क्लब में आता देखा गया है, जितनी बार उससे मुलाक़ात हुई है, उसी क्लब में हुई है।” बची-खुची शक्ति जोड़कर माइकल पीड़ा से तिलमिलाते हुए बोला।

“धन्यवाद।” त्रिपुंड धारी ने पिस्तौल की नाल उसके जख्म से बाहर निकाल ली। माइकल ने जैसे एक लम्बी राहत की सांस ली, और अपना हाथ थामे घुटनों के बल जमीन पर बैठ गया। दर्द से उसका हाल बेहाल हो चुका था।

“तुम वही हो ना?” तड़पते हुए माइकल के मन में अब तक उसे जानने की उत्सुकता थी।

“मुझे नही पता।” कहते हुए त्रिपुंड धारी ने खून टपकाती पिस्तौल की नाल माइकल के माथे से सटा दी। उस नाल से बहते खून की एक लकीर सी बन कर माइकल के चेहरे पर रेंग रही थी।

“मरने से पहले तुम्हारी जिज्ञासा अवश्य शांत करना चाहूँगा। तुम्हारे प्रश्न का सही उत्तर नही हैं, ‘बनारस’ याद ही होगा तुम्हें ?”

“बनारस” माइकल की आँखों में हैरानी के भाव उभर आये। उसके चेहरे से पीड़ा के भाव अदृश्य हो गये थे। उसकी जगह अब भय की सफेदी ने ले ली थी।

“तु..तुम बनारस से आये हो.. ? तुम वही हो.. ? तुम बा..बा..‘ ली’ हो, ‘बाली’।” माइकल लगभग चीख उठा।

“यही समझते हो, तो यही सही।” इतना कहकर त्रिपुंड धारी ने ट्रिगर दबा दिया और एक धमाके के साथ माइकल का मस्तिष्क चिथड़ों में बिखर गया।

त्रिपुंड धारी ने निर्विकार भाव से माइकल के शव की ओर देखा और फिर एक-एक नजर सभी शवों की तरफ देखा। उसके पश्चात् फ़र्श पर पड़े अपने कोट को उठा कर पहन लिया।

“मुझे इन सब का दुःख है। किन्तु इन्होने अपनी नियति स्वयं निर्धारित की है, अब ‘तांडव’ आरंभ हो चुका है।” बुदबुदाते हुए त्रिपुंड धारी नकाबपोश माइकल के अनुसार कहें तो त्रिपुंड धारी ‘बाली’ गलियारे में एक निश्चित दिशा की ओर बढ़ गया। कुछ ही देर में वह रेस्टोरंट के किचन में था।

किचन में इस समय कोई भी नही था। उसने नज़रें दौड़ाई, उसे अपने मतलब की चीजें दिख चुकीं थीं- गैस सिलेंड्र्स और तेल के कनस्तर।

उसने अपनी शक्तिशाली भुजाओं से दो सिलेंड़र थाम लिये और गलियारे में पहुंचा। उसने वे सारे सिलेंड़र उन शवों के पास रख दिये। इस प्रकार कई बार में उसने किचन के सारे सिलेंड़र गलियारे में रख दिये और तेल के कनस्तर भी गलियारे में पलट दिये।

***

“यहाँ उपस्थित सभी दर्शकों को मेरा प्रणाम।” अरेना की उद्घोषणा में इस बार उद्घोषक के स्वर के बजाए त्रिपुंड धारी का सर्द स्वर गूँज उठा। दर्शक दीर्घा में उपस्थित सभी दर्शक आश्चर्य से यहाँ-वहाँ देखने लगे।

“घबराइये नहीं। यह मैं हूँ, जिसे अभी थोड़ी देर पहले ही आपने हाउंड को उसके अंजाम तक पहुंचाते देखा था।” बाली का स्वर सुनते ही दर्शक दीर्घा में दीवानों सा शोर उठने लगा। दर्शक ख़ुशी के मारे झूम से उठे।

‘मास्क मैन!.. मास्क मैन!.. मास्क मैन..।” दर्शकों के एक गुट ने नारा लगाया। उनकी देखा-देखी सभी ने यह नारा लगाना आरंभ कर दिया।

“मैंने आपके उद्घोषक की गर्दन अभी-अभी मरोड़ दी है।” बाली का स्वर गूँजा और इसी के साथ दर्शक दीर्घा में भयानक शांति छा गयी।

किन्तु केवल कुछ ही क्षणों के लिये। अगले ही क्षण फिर एक गुट ने नारेबाजी आरंभ कर दी।

"यू आर रियली ग्रेट एंड़ क्रुएल।"

"वी लाइक इट।"

"वी वांट मोर ब्लड़ एंड़ गोर।" इस प्रकार के नारों से वातावरण गूंज उठा।

"आप सभी को खून देखना पसंद है, यह मैं जान गया हूँ। आप सब किसी को अपनी आँखों के सामने मरते हुए देखने के लिये बेचैन हैं, जिसके लिये आप सभी एक मोटी कीमत चुकाते हैं। आप सबका अधिकार है उस कीमत के बदले मनोरंजन पाने का। किन्तु क्या आपको लगता है आपकी लाखों की टिकट्स के बदले आपको पर्याप्त मनोरंजन मिलता है? आपको नहीं लगता आप सबको और क्रूरता दिखायी जानी चाहिये, आपको और लोगो को मरते देखना चाहिये। एक-एक करके नही एक साथ कईयों को मरते देखना चाहिये।" बाली के स्वर में उत्तेजना थी और उसकी हर बात पर दर्शक दीर्घा में उपस्थित दर्शक उद्वेलित होते जा रहे थे और दीवानों की तरह, विक्षिप्तों की भांति उसकी बातों के समर्थन में नारे लगाते।

"आपका अधिकार है, आप किसी को मौत के करीब पल-पल बढ़ते देखे? वो मजा महसूस करें, उसके उस भय का आनंद लें जो उसे उसकी मृत्यु के अहसास होने पर होगा। उसकी तड़प का मजा लें, जब उसे दर्द हो तो वह दर्द सारे अरेना में गूंजे, उसकी चीखों के रूप में। उसे छटपटाते देखने में जो मजा है, वह भला एक झटके में गर्दन तोड़ कर मरने में कहाँ है? सही कहा ना? मौत तो ऐसी हो कि एक-एक सेकंड़ एक साल सा लगे, दर्द इतना हो के शरीर की चमड़ी तक उधेड़ ली जाये, लेकिन फिर भी मौत न मिले। शरीर का एक-एक कतरा अलग हो जाये, हड्डियां मांस तोड़ कर बाहर आ जाये। खून नसों को फाड़कर उबल जाये, एक-एक रोम से दर्द चीखते हुए फूट पड़े।" बाली चीखने सा लगा था। इसी के साथ दर्शक भी विक्षिप्त से होते जा रहे थे। वे क्रूरता की हद तक का आनंद लेने की कल्पना मात्र से रोमांचित थे।

"तो अब दिल थाम लीजिये। आपके लिये, आप सभी के लिये ऐसे मनोरंजन का बंदोबस्त हो चुका है।"

दर्शकों में ख़ुशी की लहर दौड़ गयी। मास्क मैन के लिये नारों से पूरा अरेना मानो थर्रा सा उठा।

“...और वह मनोरंजन है, आप सबकी मौत।” बाली दहाड़ उठा। उसकी दहाड़ ऐसी थी कि अरेना में बैठे सबके सब शांत हो गये।

“आपको मृत्यु को समीप से देखना है ना? इंसान की मृत्यु देखने को अपना मनोरंजन समझ लिया है ना? मृत्यु, वेदना, दर्द, चीखें, आपके कानो में रस घोलती है ना? तो आज आपके लिये आपके जीवन का अब तक का सबसे जोरदार और अंतिम मनोरंजन आपकी मृत्यु के रूप में मैं देने जा रहा हूँ। क्योंकि आप सब हद से ज्यादा के हकदार है।” कहते हुए बाली ने कमेंट्री बॉक्स से उद्घोषक का शव बाहर उछाल फेंका। जो सीधे खोपड़ी के बल अरेना के फर्श से जा टकराया और छितरा गया। और वह यही पर नही रुका उसने बारी-बारी से कमेंट्री बॉक्स से कई लाशें इसी तरह से अरेना में फेंकी। दर्शकों की बोलती बंद हो चुकी थी। उनकी आँखों में आतंक साफ़ दिखायी दे रहा था।

“ये सभी लाशें इस क्लब के अधिकारियों एवं इस क्लब के मालिक माइकल की है। मैंने इन्हें मार दिया क्योंकि ये आपके पैसों के साथ न्याय नहीं कर रहे थे। आपको वह मनोरंजन नही दे रहे थे जिसके आप हकदार थे। तो जैसा कि मैंने अभी-अभी बताया था, अब शुरु करते है ‘मौत का तांडव’।” दर्शक अब भी मूक बधिर बने एक दूसरे को घूर रहे थे।

“इस अरेना में आने के लिये दो गलियारें हैं और मैंने दोनों गलियारों पर कुकिंग गैस के सिलेंड़र खुले छोड़ दिये हैं। गलियारे के फर्श पर हर ओर ज्वलनशील तेल फैला हुआ है। अब मैं कमेंट्री बॉक्स से निकलते हुए सिलेंड़र्स में विस्फोट करवा दूंगा। तीनो गलियारों में धमाके होंगे और अरेना में आग फ़ैल जायेगी। आपके पास दो रास्ते हैं मरने के। पहला, अरेना में चुपचाप बैठे रहे और फैलती आग से एक-दूसरे को जलकर, गलकर, चीखते, चिल्लाते, मरते देखकर अपनी मृत्यु को पास आते महसूस करो। दूसरा आसान रास्ता है, निकलने के दोनों गलियारों में फटते सिलेंड़र और जलते फर्श पर से निकलने का प्रयास करे। जो जलते-जलते गलियारे से बचते हुए सीढियों तक पहुँच गया, वो बच जायेगा। नियम समझ चुके हों आप सभी, तो चलिये समय व्यर्थ न करते हुए खेल आरंभ करता हूँ प्रथम सिलेंड़र से, जो कमेंट्री बॉक्स से आपके बीच जलता हुआ आकर गिरेगा, अब खेल का मजा लीजिये।” इसी के साथ बाली की आवाज बंद हो गयी और एक जलता सिलेंड़र कमेंट्री बॉक्स से दर्शक दीर्घा में आ गिरा।

जलता हुआ सिलेंड़र फर्श से टकराते ही उसमे भयानक विस्फोट हुआ और दर्शक दीर्घा के उस हिस्से में बैठे दर्शकों के परखच्चे उड़ गये। शेष दर्शकों में चीख-पुकार मच गयी, सभी गलियारों की ओर भागे, किन्तु उसी क्षण गलियारे में फैले तेल पर आग का दावानल सा लहराया और दोनों गलियारों में मौजूद खुले सिलेंड़र बम के समान फट पड़े और गलियारे के मुहाने तक पहुँच चुकी दर्शकों की भीड़ के परखच्चे उड़ गये। गलियारे किसी भट्टी की मांनिंद धधक रहे थे, उनके मुहानों से आग के गोले से निकल कर अरेना को अपनी आगोश में ले रहे थे। सारे अरेना में भयंकर चीख पुकार मची हुई थी। हर कोई मौत को पास देखकर थर्रा रहा था। चारों ओर लाशों के टुकड़े फैले हुए थे, जले हुए मांस की गंध सारे अरेना में फ़ैल गयी और देखते ही देखते वहां घुप्प धुंआ भर गया। जो लोग अब तक जीवित थे वे दम घुटने से बेचैन होने लगे। पागलों की तरह दीवारों, कुर्सियों, मेजों, से टकराने लगे। जो गिर गया, उसे भीड़ कुचलती चली गयी। मृत्यु अब चारो ओर फैली हुई थी।

बाली अब फिर से क्लब के बाहरी द्वार पर खड़ा था। उसने एक क्षण के लिये पीछे मुड़ कर देखा, निचले तल से उठते धुएं और विस्फोट की ध्वनियों के कारण क्लब का ऊपरी हिस्सा सदस्यों से पूर्णतया खाली हो चुका था। ऊपरी मंजिल स्थित क्लब के सदस्य सुरक्षित बाहर निकल चुके थे।

“ईश्वर इन सबकी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करे।” कहकर वह फिर से उसी सड़क की ओर बढ़ गया, जहाँ से वह आया था। अब वह सड़क सुनसान बिलकुल नही थी। वहाँ जबरदस्त अफरा-तफरी मची हुई थी। पुलिस और दमकल विभाग के सायरनों की आवाजें दूर से आती हुई स्पष्ट सुनी जा सकती थी। तमाशाइयों की भीड़ सड़कों पर जमा होकर यातायात अवरूद्ध कर चुकी थी।

वह सबकी परवाह न करते हुए अपने मार्ग पर चल पड़ा।

***

।। सतयुग ।।

ब्रह्माण्ड में कहीं कोई तेज चमक हुई। भीषण प्रकाश से करोड़ों मील नहा उठे। निर्वात के कारण इस विस्फोट में तनिक भी आवाज नही हुई थी। किंतु इसके भीषण धक्के से मानो आकाशगंगा में थरथराहट सी उत्पन्न गयी थी, आकाशगंगा के असंख्य ग्रहों के साथ-साथ सैकड़ों उल्कायें चूर्ण का स्वरूप ले चुके थे अथवा विशाल तारों नें समाहित हो चुके थे। यह विस्फोट परमाणु विस्फोट से भी कई गुणा अधिक शक्तिशाली था। ब्रह्माण्ड में हुई उस शक्तिशाली हलचल के बीच सैकड़ो वर्ग मील का व्यास लिये कोयले की भाँति तप्त शिलाखंड सैकड़ो प्रकाश वर्ष की गति से किसी एक दिशा की ओर बढ़ गया। वह शिलाखंड एक लघुग्रह के आकार जितना विशाल था। वह जिस भी दिशा से निकलता, वहाँ उपस्थित सारे लघु ग्रह और उल्कायें उसकी गति के प्रभाव और घर्षण से चूर्ण में बदल रहे थे।

उसकी गति से स्पष्ट था कि शिलाखंड कुछ वर्षो में पृथ्वी तक पहुँच जायेगा। किन्तु इतने वर्षो में इस गति के कारण एवं वातावरण से निर्माण हुए घर्षण के फलस्वरूप यह लघु ग्रह पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश करते-करते इतना लघु हो जायेगा कि जिससे किंचित ही कोई प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता।

***

।। त्रेतायुग ।।

सुबाहु

स्थानः मलदा राज्य का एक हिस्सा, जो सीमावर्ती अरण्य में स्थित था।

ब्रम्ह मुहुर्त की बेला थी। सूर्य की किरणों ने अभी अपनी लालिमा पूर्णतया बिखेरना आरंभ भी नही किया था। पक्षियों के कलरव से अरण्य गुंजायमान हो रहा था। वृक्ष भी अभी सुप्तावस्था में ही प्रतीत हो रहे थे। इसके पश्चात भी पवन में एक शीतलता थी, सुगंध थी, जो अरण्य से सटे उस मोहक उद्यान से आ रही थी। अरण्य के पश्चिमी छोर पर लकड़ियों एवं झाड़ियों से निर्मित बाड़ के मध्य एक आश्रम था। आश्रम में ब्रम्ह मुहूर्त के कारण चहल पहल थी।

'वल्लभ' एक सौम्य और आकर्षक युवक था, उसने गेरुए वस्त्र पहन रखे थे, निस्संदेह वह युवा साधक था। उसके पग आश्रम के मध्य में स्थित कुटी की ओर बढ़ रहे थे। कुटी में प्रवेश करते समय उसके मुख पर स्मितहास्य उत्पन्न हुआ। कुटी के मध्य मिटटी से बने चबूतरे पर एक लगभग दस वर्ष का बालक निद्रामग्न था। वल्लभ उस बालक के सोते मुख को प्रेम से निहारता रहा, उसने उसके मोटे-मोटे नर्म गालो पर अपने हाथो का स्पर्श किया। स्पर्श पाकर आश्चर्यजनक रूप से बालक के नेत्र खुल गये। उसने वल्लभ को देखा और उसके मुख पर हास्य प्रकट हुआ।

"सुबाहु! उठो पुत्र। ब्रम्ह मुहुर्त की बेला निकली जा रही है।"

"मैं तो कबका उठ गया था बाबा। बस आपकी प्रतीक्षा कर रहा था, यदि मैं पहले तैयार हो जाता तो आपके स्पर्श एवं स्मितहास्य से वंचित रह जाता।" बालक ने आँखे मलकर उठते हुए कहा।

"अच्छा तो हमारा पुत्र वाकपटु भी है।" वल्लभ बालक के समीप बैठ कर उसके केशों को प्रेमपूर्वक सहलाने लगा। केशों पर वल्लभ के हाथों का स्नेहपूर्ण स्पर्श पाकर सुबाहु ने नेत्र बंद कर लिये।

"मेरे दिन का आरंभ यदि आपकी प्रसन्नता से हो तो मेरा सम्पूर्ण दिवस शुभ होता है बाबा।"

"अच्छा! अच्छा! अब बातें ना बनाओ, चलो नदी पर जाना है ना? फिर कलेवा करके दीक्षा आरंभ करनी है।"

अपने बाबा की बात सुनकर सुबाहु ने अल्हड़पन से अपने नन्हे हाथों को उसकी ओर बढ़ा दिया। वल्लभ ने आशय समझते हुए बिना विलंब किये उसे अपनी गोद में उठा लिया।

“बाबा आप मुझे सदैव ब्रम्ह मुहूर्त में ही क्यों जगाते हैं?” सुबाहु ने बालसुलभ प्रश्न किया।

“ब्रम्ह मुहूर्त का प्रकृति से गहन संबंध है पुत्र। यही वह समय होता है जब पशु, पक्षी, वृक्ष अपनी निद्रा का त्याग करते है। पक्षियों के कलरव से प्रकृति हमें निद्रा त्यागने का सन्देश देती है, इस बेला में उठने से सौंदर्य, बुद्धि और स्वास्थ्य आदि की प्राप्ति होती है। यह समय ईश्वर की साधना के लिये भी अत्यंत उपयुक्त होता है। सूर्योदय से चार घड़ी पूर्व ही जाग जाना योग्य है। इस समय सोना निषिद्ध माना जाता है, और मेरी इच्छा है कि मेरा पुत्र किसी से भी बल, बुद्धि में कम ना रहे ।” वल्लभ ने उसे निहारते हुए उसकी जिज्ञासा शांत की।

“और सौंदर्य बाबा?” सुबाहु भोला सा मुख बना कर बोला।

“मेरा पुत्र तो जन्म से ही सुंदरता की प्रतिमूर्ति है, उसे भला सौंदर्य का क्या मोह।” वल्लभ ने मुस्कुराते हुए कहा तो सुबाहु खिलखिला उठा।

***

“बाबा..!।”

“कितनी बार कहा है कि भोजन करते समय बोलना नही चाहिये।” वल्लभ ने सुबाहु को भोजन के मध्य बोलने पर टोका।

“अच्छा बाबा।” सुबाहु का मुख उदास हो गया, और उसने भोजन का कौर मुंह में डाला। वल्लभ से उसका उदास मुख देखा न गया।

“अच्छा बोलो! इस सुंदर से मुख पर यह उदासी शोभा नही देती।” वल्लभ ने उसे प्रेम से पुचकारते हुए कहा।

“मुझे माँ से मिलने की इच्छा हो रही है बाबा।” सुबाहु ने सकुचाते हुए कहा।

वल्लभ कुछ क्षण शांत रहा और कुछ विचार करने के पश्चात बोला।

“ठीक है! बस यही कहने के लिये इतना संकोच कर रहे थे? हम कल ही तुम्हारे नानाश्री के यहाँ प्रस्थान करेंगे।”

वल्लभ के शब्द सुनते ही सुबाहु के मुख पर एक अप्रतिम मुस्कान उभर आयी।

“मेरे बाबा।” कहते हुए सुबाहु जूठे हाथों से ही वल्लभ के गले लग गया। वल्लभ ने भी उसे उसी अवस्था में उसे अपने अंक में भर लिया।

“चलो ठीक है। अब भोजन समाप्त करो, कल भोर में ही प्रस्थान करेंगे।” वल्लभ ने भोजन की ओर संकेत किया।

***

मुख्य नगर आश्रम से दस कोस के अंतर पर स्थित था। नगर से आवागमन का एकमेव मार्ग नदी का पश्चिमी छोर ही था। जहाँ बैलगाड़ियों, रथों एवं पदयात्रियों के अवागमन के कारण एक प्राकृतिक मार्ग बन गया था। मालदा और कुरूपा राज्य को जोड़ने वाला एकमात्र मार्ग होने के कारण इस मार्ग को अधिक व्यवस्थित एवं सुविधाजनक बनाया गया था। मार्ग की दुरुस्ती का कार्य दोनों राज्यों ने अपनी अपनी सीमानुसार बाँट लिया था।

जगह-जगह यात्रियों के ठहरने हेतु विश्रामालय, बैलगाड़ियो एवं रथों के लिये स्थानक एवं प्रतीक्षालय बने हुए थे। इसके व्यतिरिक्त पक्का मार्ग एवं नदी के किनारे लकड़ियों द्वारा बनाई गयी मजबूत बाड़ से मार्ग सुसज्जित था। वन के मध्य में स्थित होने के कारण मार्ग की सुरक्षा के लिये थोड़ी-थोड़ी दूरी पर सैनिकों की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ पहरा देती थीं। एक ओर नदी, तो दूसरी ओर अरण्य। अरण्य के इस भाग में हिंसक प्राणियों का बसेरा नहीं था। वे सभी वन के उत्तरी छोर में ही पाये जाते थे। वन के एक छोर पर मालदा राज्य की सीमा थी, तो दूसरे छोर पर कुरूपा राज्य। जिस कारण व्यापार एवं आवागमन के लिये यह मार्ग सुगम पड़ता था।

वल्लभ अपने पुत्र के साथ एक बैलगाड़ी पर सवार था। सुबाहु बहती नदी को निहार रहा था।

“बाबा! क्या यह मार्ग सदैव से इतना वृहद और सुविधासंपन्न था?”

“नहीं पुत्र! यह मार्ग तुम्हारे जन्म के पश्चात वृहद बनाया गया था।” वल्लभ के उत्तर ने सुबाहु की जिज्ञासा शांत करने के बजाय उसकी उत्कंठा और बढा दी।

“मेरे जन्म के पश्चात?” सुबाहु के स्वर में आश्चर्य झलक रहा था।

सुबाहु अब बैलगाड़ी के पिछले हिस्से से उठ कर, बैलगाड़ी चलाते वल्लभ के समीप आकर उसके दोनों कंधो पर अपने नन्हे हाथ रख कर खड़ा हो गया।

वल्लभ ने मुस्कुराते हुए बैलों की पीठ थपथपाई, बैलों ने संकेत समझ कर गति और बढ़ा दी। यह वल्लभ की संवेदनशीलता ही थी जो उसने आज तक तक अपने बैलों पर बल प्रयोग नही किया था। दोनों बैलों पर उसका प्रेम अपने पुत्र समान ही था, जिस कारण यह मूक प्राणी भी वल्लभ के स्पर्श का आशय समझने लगे थे।

“पुत्र जिस समय तुम्हारा जन्म हुआ था। उसी नक्षत्र और उसी समय अयोध्या नरेश को पुत्रप्राप्ति हुई थी। आश्रम के कुछ महंत उस समय अयोध्या में ही थे। उन्होंने ही तुम्हारे और अयोध्या नरेश के जन्म के समय की एक ही होने की पुष्टि की। अयोध्या नरेश का प्रभाव चहूंओर था। उन्होंने अनेक राज्यों की असुरों एवं दानवों से रक्षा करने में सहायता की थी। जिस कारण सभी राज्य उनका बहुत सम्मान करते थे। जब उनके यहाँ पुत्र जन्म हुआ तब सभी राज्यों के प्रतिनिधि अयोध्या गये थे। बहुत बड़ा उत्सव हुआ था। कुरूपा राज्य की ओर से भी प्रतिनिधि भेजे गये थे जिन्हें इस मार्ग से जाते समय बड़ी कठिनाई और असुविधा हुई थी। जिस कारण युद्ध स्तर पर कार्य करके सप्ताह के अंदर ही इस मार्ग को भव्य एवं सुविधाजनक बना दिया गया।”

“आप नहीं गये थे अयोध्या?” सुबाहु ने वल्लभ की बात काटी।

“उस समय मेरा, तुम्हारा और तुम्हारी माता के साथ रहना अधिक महत्वपूर्ण था। निसंतान अयोध्या नरेश को पुत्रों की प्राप्ति हुई थी। उसी समय तुम्हारा भी जन्म हुआ था, तो यह मेरे अत्याधिक हर्ष का समय था। इसलिये मैं तुम्हारे साथ रहा।”

“अयोध्या नरेश के पुत्र मुझसे ज्यादा सुंदर है?” सुबाहु के इस प्रश्न पर वल्लभ मुस्कुरा कर रह गया।

“तुलना मत करो पुत्र। तुम मेरे पुत्र हो, और प्रत्येक माता-पिता के लिये उसका पुत्र ही विश्व का सबसे अधिक सुंदर मुख होता है।”

सुबाहु उत्तर सुन कर खिलखिला उठा। उनकी बैलगाड़ी नगर के प्रवेशद्वार तक पहुँच चुकी थी। प्रवेशद्वार पर सैनिकों द्वारा प्रवेश की औपचारिकताओं एवं नागरिकता संबंधित मुद्राए एवं चिन्ह दिखाने के पश्चात वल्लभ को नगर में प्रवेश की अनुमति प्राप्त हो गयी।

***

आंगन लीपती सुवर्णा ने बाहर देखा तो उसकी दृष्टि वल्लभ और सुबाहु पर पड़ी, उसके मुख पर हर्ष की लहर दौड़ गयी। सुबाहु ने अपनी माता को देखा और हर्षातिरेक में वल्लभ के कंधों का आश्रय लेकर बैलगाड़ी से कूद पड़ा।

“अरे सुबाहु! ध्यान से।” वल्लभ उसे इस तरह अधीर होते देख कर बोला।

किन्तु उसके शब्द कानों में पड़ने से पहले ही सुबाहु दौड़ता हुआ अपनी माता के पास पहुंचा और आलिंगनबद्ध हो गया।

“ओह! सुबाहु। मेरे पुत्र।” सुवर्णा के नेत्रों से हर्षातिरेक के कारण अश्रु बहने लगे। उसी समय घर के द्वार से एक सदृढ़ युवक ने आंगन में प्रवेश किया। वह ‘भार्गव’ था। सुवर्णा का भाई और सुबाहु का मामा। उसने वल्लभ को देखकर प्रसन्नता से प्रणाम किया।

“अहोभाग्य हमारे जो आप यहाँ पधारे। मुझे पूर्ण विश्वास था कि आप हमारी बहन के बिना एक सप्ताह भी न रह पायेंगे।” भार्गव ने चुटकी लेते हुए कहा तो वल्लभ लजा गया।

“अरे नही भार्गव! वह तो सुबाहु का मन कर रहा था अपनी माता से मिलने का, इसलिये चला आया। नहीं तो मैं तुम्हारे विवाह से एक दिन पहले ही आने वाला था।” नेत्र छिपाते और सकुचाते हुए वल्लभ ने अपना पक्ष रखा।

“तब तो मुझे अपने भांजे सुबाहु का धन्यवाद करना चाहिये जो जीजा श्री को हमारे विवाह पूर्व ही यहाँ ले आये। आप अनुभवी व्यक्ति हैं, आपसे काफी कुछ सीखने को मिलेगा। और विवाह की पूर्व तैयारियों में भी आपकी सहायता मिल जायेगी।” भार्गव ने मुस्कुराते हुए कहा।

उसकी इन बातों से उकता कर सुवर्णा ने अपने लिपे-पुते हाथों से ही भार्गव की पीठ पर दो धौल जमा दिये।

“बड़े उद्दंड़ हो गये हो। अपने सीधे-साधे जीजा श्री को छेड़ रहे हो।”

“अरे दीदी। धौल जमाने से पहले हाथ तो धो लेती। पूरे देह पर गोबर लीप दिया।” कहकर बचते-बचाते भार्गव सीधे वल्लभ के पीछे जा छिपा।

“आप ही बचाइये जीजा श्री। माता-पिता अभी खरीदारी करने हाट में गये हुए है। इसलिये दीदी मुझे मारती रहती है, उनके आने तक आप मेरी ढाल बनकर रहो।” हंसते हुए भार्गव ने कहा तो वल्लभ के मुख पर भी हास्य उत्पन्न हुआ।

तब तक सुबाहु दौड़कर अपने मामा से लिपट चुका था।

“अरे मेरा प्रिय भांजा।” कहते हुए भार्गव ने सुबाहु को कंधो पर उठा लिया और घर के भीतर दौड़ लगा दी। वल्लभ मुस्कुराते हुए बस देखता रह गया।

“मेरा परिवार, मेरे प्रियजन, सदा इसी प्रकार प्रेमभाव एवं प्रसन्नता से रहे। हे ईश्वर! आपकी कृपादृष्टि सदैव बनी रहे।” वल्लभ ने मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद दिया। सुवर्णा के चरणस्पर्श करने से वल्लभ की तंद्रा

भंग हुई। और उसने उसे प्रेम से कंधो को सौम्यता के साथ थाम कर अपने अंक में भर लिया। सुवर्णा लजा गयी।

सांझ होने को थी। पक्षी अपने-अपने घरौंदों की ओर समूह में लौट रहे थे। उनके कलरव से वातावरण में एक संगीत सा उत्पन्न हो रहा था। सूर्य की शीतल लालिमा से वातावरण मनमोहक हो रहा था। उसी समय कहीं दूर नभ गड़गड़ाने की ध्वनि हुई।

***

सांझ का धुंधलका अपने पैर पसार चुका था। सुबाहु आंगन की क्यारियों में लगाये विभिन्न फूलों को सहलाने और निहारने में व्यस्त था। सुबाहु को फुल सदा से ही प्रिय रहे थे। इसी कारण आश्रम में भी विभिन्न फूलों की जातियों के पौधे प्रचुर मात्रा में लगवाये गये थे।

उसने आंगन की दीवार से बाहर दिखायी देते नगर मार्ग को देखा, ऊँचे भवन, चौड़े और पक्के मार्ग, हाट, रंगबिरंगे वस्त्रों एवं परिधानों से सजे खरीदारी करते, चहलकदमी करते नगरवासी। यह सब उस बालक के लिये सदैव आकर्षण का केंद्र ही रहा था। उसका अधिकतम समय नगर के कोलाहल से दूर आश्रम में ही व्यतीत हुआ था, इसलिये उसका मन ननिहाल में आकर हर्षा जाता था। शीतल पवन के झोंको का आनंद लेता सुबाहु अचानक ही चौंक पड़ा। मुख्य मार्ग पर उसे तीव्र हलचल होती दिखायी दे रही थी। सैनिकों की टुकड़ियां शस्त्रों से सुसज्जित होकर मार्ग से मुख्य नगर की ओर बढ़ रही थी। धनुष, बाण एवं भालों से सुसज्जित सैनिक लयबद्ध होकर एक निश्चित दिशा की ओर बढ़ रहे थे। अश्वारोही दल एवं पैदल सैनिकों के जत्थे से सम्पूर्ण मार्ग भर सा गया था। नगाड़ों की ध्वनियाँ और घोड़ो की असंख्य टापों के स्वरों से वातावरण गूंजने लगा। सुबाहु का नन्हा हृदय किसी अनिष्ट की आशंका से कांप उठा।

“बाबा! माँ!” सुबाहु ने व्यग्रता से अपने माता-पिता को पुकारा।

सर्व प्रथम वल्लभ भवन से निकलकर आंगन में पहुँचा। उसके पीछे-पीछे भार्गव और सुवर्णा भी पहुँच गये। और आंगन में आते ही सैनिकों की मुख्य मार्ग पर होती हलचल देखकर स्तब्ध रह गये। सुवर्णा ने सुबाहु को कसकर भींच लिया। उसका हृदय तीव्र गति से स्पंदन करने लगा।

“यह क्या हो रहा है भार्गव? इतने सैनिक अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर कहाँ जा रहे हैं? कहीं कोई युद्ध तो नहीं छिड़ गया है?” वल्लभ ने आशंका जतायी, उसके माथे पर बल पड़ गये थे।

"माँ-बाबा हाट गये हुए हैं।" भार्गव को अपने माता-पिता की चिंता हुई।

"मैं देख कर आता हूँ उन्हें, उन्हें इस समय घर पर होना चाहिये। निश्चित ही कोई संकट आया हुआ है। मैं उन्हें लेकर आता हूँ।" भार्गव आंगन से बाहर निकलने के लिये उद्विग्न हो रहा था। सुवर्णा ने उसकी बांह थाम ली।

"चिंता न करो दीदी। मैं अभी आता हूँ, मेरी चिंता न कीजिये, आप भली-भाँति जानती हैं मेरा चयन सेना में हुआ है, और मैं किसी भी प्रकार के संकट से निपटने में सक्षम हूँ ।" भार्गव ने सुवर्णा का हाथ थपथपाया और उसे अपनी बांह से अलग कर दिया। उसने अपने शब्दों से सुवर्णा को निश्चिंत करने का प्रयास अवश्य किया था, किन्तु उसे सैनिकों की संख्या और उनकी तैयारी देखकर आभास हो गया था कि संकट बहुत गहरा है।

"मैं भी संग चलता हूँ भार्गव।" वल्लभ ने साथ चलने की इच्छा जतायी तो भार्गव ने वल्लभ के दोनों कंधो पर अपने हाथ रख दिये।

"आपकी आवश्यकता दीदी और सुबाहु के साथ अधिक है। आप यही रुकिये मैं कुछ ही देर में वापस आता हूँ। निश्चिंत रहिये। हो सकता है सैनिक अभ्यास हेतु जा रहे हों।" भार्गव ने अस्वीकृति के भाव से झूठा अनुमान बता दिया, जबकि उसे अच्छी तरह ज्ञात था कि यह किसी अभ्यास की तैयारी नही है। वह मुड़ा और द्रुत गति से आंगन से होते हुए मार्ग की ओर दौड़ पड़ा। अभी वह मार्ग से आगे बढ़ा भी नही था कि उसका मित्र प्रवीण उसी ओर आते हुए दिखायी पड़ा । भार्गव उसे देखकर स्तब्ध रह गया। प्रवीण घायल था, उसका अंग प्रत्यंग रक्त से सना हुआ था। मानों किसी रक्त कुंड़ में स्नान करके आया हो।

"भार्गव… भार्गव!" प्रवीण आंगन तक पहुँच चुका था। वह गिरने ही वाला था कि भार्गव ने उसे थाम लिया।

"यह क्या हुआ प्रवीण? तुम्हारी यह दशा किसने की?" भार्गव उसकी अवस्था देखकर भयभीत हो गया था।

प्रवीण को इस प्रकार घायल देखकर वल्लभ और सुवर्णा सहम गये थे। सुवर्णा ने सुबाहु को तुरंत घर के अंदर जाने के लिये कह दिया किन्तु वह अपने ही स्थान पर जड़ सा हो गया था।

"भ ..भार्गव! तुम्हारे माता-पिता.." प्रवीण की जिव्हा वेदना के कारण लड़खड़ा रही थी।

“दीदी! जल लेकर आओ शीघ्र अतिशीघ्र।” भार्गव का आदेश मिलते ही सुवर्णा घर के भीतर दौड़ पड़ी।

“हां बोलो प्रवीण! क्या हुआ? और ये सब कैसे ?” भार्गव के नेत्र सजल हो गये थे। उसका मन किसी अनजानी आशंका से कांप रहा था।

“ताड़का!” प्रवीण के मुख से केवल यही शब्द निकला।

“ताड़का?” वल्लभ चौंक पड़ा, भार्गव के मुख पर भी हैरानी के भाव थे।

“वह यक्षिणी? मारीच की माता ताड़का?” भार्गव ने प्रश्न किया, जबकि उसे उत्तर पता था कि ताड़का एक ही है।

“अब वह यक्षिणी नहीं रही मित्र।” प्रवीण ने अपनी श्वास पर नियंत्रण पाते हुए कहा। भार्गव ने उसके इस उत्तर पर केवल नेत्रों से प्रश्न किया।

“ताड़का ने भीषण रूप धर लिया है। उसके पति को ऋषि अगस्त्य ने भस्म कर दिया है, जिससे वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठी है, ऋषि अगस्त्य के श्राप के कारण अब वह यक्षिणी से एक भयंकर राक्षसी में परिवर्तित हो चुकी है। “ प्रवीण ने कहा।

“ऋषि अगस्त्य ने भला ऐसा किस कारण वश किया?” वल्लभ ने पुन: प्रश्न किया।

“मारीच के कारण। मारीच की राक्षसी प्रवृत्ति और उसके उत्पात के कारण ऋषि अगस्त्य ने श्राप से उसे राक्षस बना दिया। जिस कारण मारीच के पिता ‘सुंद’ ने उन पर आक्रमण कर दिया। किन्तु ऋषि ने उसे श्राप से भस्म कर दिया। ताड़का इससे भयंकर क्रोधित हुई और उत्पात मचाने लगी, तो उसे भी राक्षसी बना दिया। जिसके पश्चात ताड़का का क्रोध एवं शक्तियाँ अपरिमित रूप से बढ़ गयी और उसने विनाश आरंभ कर दिया। करुपा राज्य को नष्ट करने के पश्चात अब वह राक्षसी यहाँ पहुँच गयी है। उसने नगर में भीषण विनाश किया है। असंख्य नगरवासियों को ना केवल समाप्त कर चुकी है, अपितु मानव मांस भक्षण भी आरंभ कर दिया है। उस पर किसी भी प्रकार के अस्त्र-शस्त्र निरर्थक हो रहे है।” इतना कहते-कहते प्रवीण खांसने लगा, उसके मुंह से रक्त बहने लगा। तब तक सुवर्णा जल लेकर पहुँच गयी थी। जल पात्र भार्गव ने प्रवीण के मुख पर लगा दिया, प्रवीण ने कुछ घूंट जल ग्रहण किया।

“प्रवीण तुम यही रहो! दीदी और जीजा श्री तुम्हारा उपचार करेंगे। मैं माँ बाबा को लेकर आता हूँ।” कहते हुए भार्गव व्यग्र हो उठा।

"मत जाओ मित्र! मत जाओ। तुम्हारे माता-पिता अब नही रहें।" प्रवीण के नेत्रों से अश्रुधारा बह निकली।

यह सुनकर सबको आघात सा लगा। सब इस प्रकार स्तब्ध हो गये मानो सम्पूर्ण शरीर को लकवा मार गया हो। भार्गव के कान सुन्न पड़ चुके थे और वास्तविकता के धरातल पर आते ही सुवर्णा दहाड़े मार कर रोने लगी, माँ को रोता देखकर सुबाहु भी रोते हुए सुवर्णा से लिपट गया।

"आता हूँ मैं, आता हूँ।" विक्षिप्तों की भाँति भार्गव बोला और उठ खड़ा हो गया। किन्तु प्रवीण ने उसकी कलाई थाम ली।

"मैं कहना नहीं चाहता मित्र! किन्तु तुम्हारे माता-पिता को ताड़का ने जीवित ही भक्षण कर लिया, अब वहाँ जाना व्यर्थ है, कुछ भी प्राप्त नही होगा। तुम उसका सामना नही कर सकते मित्र।"

अपने माता-पिता की इस वीभत्स मृत्यु की कल्पना मात्र से ही उसका रोम-रोम कांप उठा, वह उद्विग्न होकर चीख पड़ा। वह क्रोध से फुंफकारते हुए घर के भीतर दौड़ा और कुछ ही क्षणों में एक दुधारी तलवार लेकर निकला, उसकी देह तप रही थी। बलिष्ठ भुजायें फड़कने लगी थी। उसने एक क्षण अपनी रोती बहन और सुबाहु को देखा, वल्लभ किंकर्तव्यमूढ़ सा खड़ा था। और अगले क्षण उसने मार्ग कि दिशा में दौड़ लगा दी।

"मैं ताड़का का समूल नाश कर दूंगा।"

"भार्गव!" भार्गव को नगर की ओर जाता देख कर वल्लभ की तंद्रा भंग हुई तो उसने उसे पुकारा। किन्तु भार्गव के कानों में अब केवल उसकी माता-पिता की चीखें ही सुनाई दे रही थी। वह मार्ग से होकर सैनिकों की टुकड़ियों के मध्य ही कहीं ओझल हो गया।

***

भार्गव मुख्य नगर में पहुंचा। वहाँ का दृश्य देख कर उसका हृदय कांप उठा, नगर का दृश्य किसी नगर का ना होकर एक श्मशान सा प्रतीत हो रहा था। नगर की दुकानें, भवन, इमारतें धू-धू करके जल रहे थे। अग्नि की प्रचण्ड लपटें हर वस्तु को स्वाहा करने को मानो तत्पर सी थी। हर ओर मनुष्यों के शवों के ढेर लगे थे, कटे-फटे अंगों के अवशेष इतरत्र बिखरे हुए थे। भार्गव को अपने पैरों तले कुछ लिजलिजा सा अनुभव हुआ। उसने देखा तो वह कीचड़ था, किन्तु उस कीचड़ का रंग लाल था। भार्गव की आत्मा अंदर तक कांप उठी जब उसे यह ज्ञात हुआ कि यह कीचड़ नही बल्कि, रक्त है, जो जमकर गाढ़ा हो चुका था।

वह भय और घृणा के कारण तीव्रता से उस स्थान से हटने के लिये आगे बढ़ गया। शवों के टुकड़ों एवं रक्त से स्वयं को बचते-बचाते वह आगे बढा किन्तु उसे आभास होने लगा कि कोई भी मार्ग ऐसा शेष नही है जहाँ रक्त और मांस के अवशेष न बिखरे पड़े हों। कोई अन्य मार्ग न बचा देखकर भार्गव उसी लिसलिसाते रक्त में पैर रखते हुए आगे बढा। अचानक से किसी चीज पर पैर पड़ने से वह अपना संतुलन खो बैठा और उसी कीचड़ में जा गिरा। अब वह अनगिनत मनुष्यों के रक्त से सना हुआ था। उसके मुख पर घृणा, भय एवं क्रूरता के भाव उभरे, उसकी दृष्टि उस वस्तु की ओर बढ़ी जिस कारण उसका संतुलन बिगड़ा था। वह किसी महिला का कटा हुआ हाथ था। उस पर दृष्टि पड़ते ही अचानक से भार्गव को न जाने क्या हुआ, वह उस हाथ की ओर लपका। उसने हाथ को उठा लिया और अपने अंगवस्त्रों से उस पर लगा रक्त पोंछने लगा। इस समय वह विक्षिप्त हो गया था। उसके मुख से झाग और नेत्रों से अश्रु बहने लगे।

“माँ!!!” भार्गव चीत्कार उठा। हथेली पर गुदे हुए चिन्ह को देखकर उसने उस हाथ के अपनी माँ का हाथ होने की पुष्टि कर ली थी। यह उसके लिये हृदयविदारक था। प्रवीण के बताने के पश्चात उसे ज्ञात था कि उसके माता-पिता अब जीवित नही हैं। किन्तु उनकी इस अवस्था को देखकर वह चीत्कार उठा, आवेश में आ गया। वह हाथ को सीने से लगाकर फूट-फूट कर रोने लगा। उसकी दृष्टि मानव अवशेषों के ढेर पर पड़ी जिसमे उसे अपने पिता का कटा हुआ शीश देखकर वह थर्रा गया। वह उस शीश की ओर बढ़ा, किन्तु उस रक्तिम फिसलन में फिसल गया, वह फिर उठा और दो तीन बार प्रयत्न करने पर शीश तक पहुंचा। इस प्रयत्न में उसके शरीर का कोई अंग ऐसा नही बचा था जहाँ वह लाल कीचड़ न लगा हो। कुछ क्षण उसने उस शीश को निहारा, अब उसके अश्रु आश्चर्यजनक रूप से थम गये थे। उसने अपना अंगवस्त्र उतारा और अपनी माँ का हाथ और पिता का शीश बहुत ही ध्यान से अपने अंगवस्त्र में लपेट कर उसे अपनी पीठ से बाँध लिया। उसने अपनी तलवार उठाई जो रक्त से सनी हुई समीप ही पड़ी हुई थी। तलवार लेकर वह खड़ा हो गया। उसके नेत्र मानो जल रहे थे, अंगवस्त्र के एक कोने से उसने अपने नेत्र पोंछे। अब उसे थोडा स्पष्ट दिखने लगा। उसके नेत्रों में मानों एक भयंकर अग्नि सी प्रज्वलित दिखायी दे रही थी। तलवार पर अपनी पकड़ मजबूत करके वह दौड़ पड़ा।

अचानक वातावरण में एक भयंकर गर्जना हुई। एक भयानक हुंकार से मानो धरातल कांप गया। भार्गव का ह्रदय भी इस गर्जना से एक क्षण को भयभीत हो गया। वह हुंकार नभ गड़गडाने की ध्वनि के समान ही थी। अकस्मात ही एक मानव धड़ आकाश से अपने ऊपर गिरते हुए भार्गव ने देखा किन्तु उसने स्वयं को उससे बचा लिया। वह एक सैनिक का धड़ था, उसने धड़ के आने की दिशा में दृष्टि घुमायी, उसे तीन मंजिला भवनों से भी ऊँची एक आकृति नजर आयी जो उन इमारतों के मध्य घूम रही थी। उसका आकार और स्वरुप देख कर भार्गव कांप उठा। वह उसे स्पष्ट रुप से देखना चाह्ता था। भवनों एवं इमारतों के कारण वह उसे स्पष्ट रुप से देखने में अक्षम था।

भार्गव को उसका आकार देख कर ही समझ जाना चाहिये था कि वह उसका सामना नही कर सकता। किन्तु क्रोध और प्रतिशोध की भावना ने उसकी बुद्धि और विचार करने की क्षमता को कुंद कर दिया था। वह अनेक संकरी गलियों को पार करता रहा। भवनों के गिरतें अवशेषों एवं उनसे निकलती भयंकर अग्नि की लपटों से बचता बचाता अंतत: वह नगर के मध्य में पहुंच ही गया।

अब वह उस महाकाय आकृति के समक्ष ही खड़ा था। उस महाकाय आकृति पर सैनिकों की टुकडियाँ प्रहार कर रही थी। भाले, बाण एवं आग्नेयास्त्र के प्रहार उसे तनिक भी हानि नही पहुंचा पा रहे थे। उसकी आकृति अनुमानित पचास फीट की थी, उसकी देह अग्नि की भाँती दमक रही थी। जले हुए तांबे समान वर्ण वाली त्वचा को कोई भी शस्त्र भेद नही पा रहा था। सैनिकों द्वारा संघटित रुप से बाणों एवं आग्नेयास्त्रों की वर्षा से वह विचलित अवश्य हो रही थी, किन्तु इससे वह और अधिक विक्षिप्त होती जा रही थी। उसने समीप ही स्थित एक इमारत का शीर्ष अपने विशालकाय भुजाओं से उखाड़ लिया और उसे सैनिकों की टुकड़ी पर दे मारा, क्षण भर में पच्चीस सैनिक उस वजनी अवशेष से दबकर मृत्यु को प्राप्त हो गये। वह जहाँ भी पग रखती, तीन-चार सैनिक उसके पैरों तले कुचले जाते। सेनापति का मस्तिष्क भी कुंद हो गया था। उसे समझ में न आ रहा था वह करे तो क्या करे। इसी मध्य उस भयंकर आकृति की भुजायें घूमी और उसने एक ही बार में पांच सैनिकों को अपनी हथेलियों में समेट लिया। सैनिक छटपटाने लगे, उसने दबाव और बढ़ा दिया। दबाव इतना बढा के सैनिकों के शरीर किसी तरबूज की भाँति फट गये और उनके अंग-प्रत्यंग नगर की इमारतों पर जा गिरे। उसे इससे

अत्याधिक आनंद मिला, उसने भयंकर गर्जना की और यही करना आरंभ कर दिया। वह हर बार हाथ लहराती और सैनिकों को उठा कर भींच देती। भयावह दृश्य उत्पन्न हो गया था वहाँ। सैनिकों के आकाश से गिरते अवशेषों एवं रक्त ने मानो रक्तवर्षा की स्थिति उत्पन्न कर दी थी। भार्गव यह सब देखकर जड़ हो चुका था।

“मैं इससे युद्ध नही कर सकता। इसका कुछ अहित नही कर सकता। यह सबको समाप्त कर देगी।” भार्गव भय से कांप रहा था। वह निराश हो गया, और वापस जाने का विचार करते हुए पलटा।

“क्या कर रहे हो भार्गव? इस प्रकार बिना प्रयास किये कायरों की भाँति पीठ दिखा कर भाग जाओगे? मृत्यु से इतना भय कि उससे बचने का प्रयास भी नही करोगे? यदि ऐसा ही था तो तलवार लेकर ही क्यों आये थे? क्या उन सैनिकों को अपने प्राणों का भय नहीं है? वे किसके लिये अपने प्राणों की आहुति दे रहे हैं? कम से कम प्रयास तो करो भार्गव। बस एक प्रयास।” उसकी अंतरात्मा ने उसे धिक्कारा। भार्गव ने वहाँ से भागने का विचार त्याग दिया, उसने अपनी तलवार कमर में लटका ली। उसके नेत्रों में अब दृढ़ निश्चय दिखने लगा था। वह उस राक्षसी के समीप नहीं जा सकता था। कोई भी नहीं जा सकता था। ऐसे में दूर से प्रहार करने के लिये केवल धनुष बाण की आवश्यकता थी। उसने अपनी दृष्टि धरा पर फैले मानव शवों एवं अवशेषों की ओर घुमायी, जहाँ मृत सैनिकों के अस्त्र-शस्त्र भी बिखरे पड़े थे। उसने एक मृत सैनिक के धनुष और बाण उठा लिये। अब वह ताड़का की दिशा में बढ़ गया, वह अपने आस-पास का निरीक्षण कर रहा था। उसे सटीक प्रहार करने के लिये ताड़का की ऊंचाई से प्रहार करना था। इसके लिये वह ताड़का के समीप और उसी की ऊंचाई के समानांतर कोई इमारत खोज रहा था। उसने एक इमारत को अपने उद्देश्य हेतु चुन लिया और वह उस इमारत में प्रवेश कर गया। भार्गव कुछ ही क्षणों में इमारत की छत पर था।

उसके पास एक बड़ा सा तेल का पात्र था। वह तेल ज्वलनशील था। भार्गव ने इमारत में प्रवेश करते ही सर्वप्रथम उस भवन की रसोई में से वह तेल का पात्र खोज निकाला था। इतनी ऊंचाई से वह ताड़का के साथ-साथ नगर को भी विस्तार से देख सकता था। नगर का कोई भी भाग ऐसा नहीं था जहां से अग्नि की लपटें और धुएं के बादल दिखायी नहीं दे रहे हो। सूर्य अस्त हो चुका था किन्तु अंधियारा कहीं भी नहीं था। जलते नगर

की अग्नि के प्रकाश ने मानो नगर पर एक दूसरा सूर्य उतार दिया हो, ऐसा प्रतीत हो रहा था।

उसने एक क्षण के लिये अपने नगर को, आक्रमण करते सैनिकों को, और विकराल देह धारी ताड़का को देखा और बाण में एक सूती अंगवस्त्र लपेटा जिसे वह भवन के अहाते से लेता आया था। बाण पर पूर्ण शक्ति से वस्त्र लपेट कर उस वस्त्र को तेल के पात्र में डुबो दिया, जब उसे विश्वास हो गया कि वस्त्र ने पर्याप्त मात्रा में तेल सोख लिया है, तब उसने वह बाण धनुष पर लगाकर एक क्षण के लिये संधान किया और ताड़का की ओर छोड़ दिया। बाण पर वस्त्र लपेटने के कारण बाण उसके शरीर में चुभ नही सकता था। बाण ताड़का की पीठ पर जा लगा किन्तु ताड़का ने मुड़ कर देखना भी उचित नही समझा। उसे किसी बाण के प्रहार का आभास ही नही हुआ। अगली बार पुन: वही प्रक्रिया दोहराकर भार्गव ने बाण छोड़ दिया। इस बार बाण सीधे ताड़का के सिर पर जा लगा, किन्तु उसकी घनी जटा स्वरुप केशों में वह कहीं फंसा रह गया। उससे भी तनिक भी असर नही हुआ।

भार्गव ने इसी क्रिया को दोहराते हुए एक-एक करके पचीसों बाण इसी प्रकार ताड़का पर छोड़े, अब पात्र में तेल भी समाप्त हो चुका था। उसके पास दो ही बाण शेष थे। भार्गव ने उसका प्रहार नहीं किया, अब उसे जिस वस्तु की आवश्यकता थी वह उस स्थान से दूर एक दूसरे भवन में थी, और वह थी 'अग्नि'। उसने एक बाण में वस्त्र लपेटा और अच्छे से तेल के पात्र में उसे रगड़ा, जिससे शेष तेल भी सोख लिया जाये और इसी के साथ भार्गव ने सामने वाले भवन के छज्जे की दूरी की गणना की और दौड़ लगा दी। उसने इमारत की मुंडेर से सधी हुई गति से छलांग लगायी और सीधे उस भवन की छत पर पहुँच गया। इसी प्रकार चपलता से भागते हुए उसने दो भवन और पार कर लिये।

अब वह अपने इच्छित भवन की छत पर था। उस भवन के एक हिस्से में आग लगी हुई थी। भवन जल रहा था और भार्गव को इसी वस्तु की आवश्यकता थी, 'अग्नि' की। भार्गव ने बिना एक भी क्षण गंवाए अपने बाण का मुख अग्नि पर रखा, बाण का मुंह भभक उठा और इसी के साथ बाण को प्रत्यंचा पर पूर्ण शक्ति से खिंच कर एक भयंकर टंकार के साथ भार्गव ने बाण छोड़ दिया। जलता हुआ बाण सीधे ताड़का के सिर में जा लगा और अग्नि भभक उठी। कुछ ही क्षणों में ताड़का का संपूर्ण शरीर भयंकर अग्नि में नहा रहा था। वह एक चलता-फिरता दावानल बन चुकी

थी। भार्गव ने तेल से सने बाणों से उसके पूर्ण शरीर को तेल में नहला दिया था जिस कारण अग्नि तीव्रता से फैली थी और ताड़का चीखते हुए धधक रही थी। सैनिक यह देख कर हतप्रभ रह गये। उन्होंने अपनी दृष्टि उस बाण के आने की दिशा की ओर की तो उन्हें भार्गव दिखायी दिया, जिसने ताड़का की यह अवस्था की थी। भार्गव वहाँ खड़े ताड़का को अग्निस्नान करता देखता रहा। उसके मुख पर कठोरता और क्रूरता व्याप्त थी। किन्तु केवल कुछ ही क्षण।

क्योंकि अग्नि से जलती ताड़का ने अँधाधुंध प्रहार करने आरंभ कर दिये थे। वह भयंकर रूप से गरज रही थी। उसने अपने जलते हाथो से भार्गव की ओर प्रहार किया। किन्तु अग्नि के कारण वह उसकी दिशा का अनुमान नही लगा पायी जिस कारण उसका विशालकाय हाथ उस भवन से टकरा गया जिसकी छत पर भार्गव खड़ा था। उसके प्रहार से भवन का आधा भाग ढ़ह गया और भवन के अवशेषों के साथ ही भार्गव भी हवा में अनेक हाथ तक उछल गया। गिरते हुए भार्गव का शरीर एक अपेक्षाकृत कम ऊँचे भवन पर जा गिरा। इस प्रहार से उसके नेत्र बंद होने लगे थे। उसने बंद होते नेत्रों से देखा, ताड़का उस जलती अवस्था में भी सैनिकों का काल बनी हुई थी और नगर ध्वस्त कर रही थी। भार्गव बेसुध हो गया।

***

वल्लभ प्रवीण का उपचार कर रहा था। उसका बहता रक्त रोक लिया गया था और घावों पर पट्टी बाँध दी गयी थी। उसकी प्रकृति अब भी चिंताजनक ही थी। उसे वैद्यकीय उपचार की अत्यंत आवश्यकता थी किन्तु नगर में मची भीषण अव्यवस्था के कारण इस समय किसी भी प्रकार की वैद्यकीय सहायता मिलना असंभव ही था। सुवर्णा की दशा भी माता-पिता के शोक में बिगड़ी जा रही थी। उसके अश्रु थम नहीं रहे थे। अपनी इस अवस्था के पश्चात भी वह प्रवीण की चिकित्सा में सहायता कर रही थी। नन्हे सुबाहु को कुछ भी समझ में नही आ रहा था किन्तु आश्चर्यजनक रूप से वह एकदम शांत था। कभी वह अपनी बिलखती माता को देखता, तो कभी उपचार करते पिता को, तो सहसा द्वार की ओर देख कर चिंहुक उठता। रात्रि हो चुकी थी, नगर में जलती अग्नि एवं उससे उठते धुएं के बवंडर के कारण सम्पूर्ण वातावरण नर्क की भांति प्रतीत हो रहा था। चहुँओर अग्नि की लपटें और उससे निकलता लाल प्रकाश फैला हुआ था। अचानक हुई तीव्र गर्जना से सभी के प्राण सूख से गये

और इसी के साथ भूमि में कंपन सा होने लगा, मानो सैकड़ों हाथी दौड़ते हुए इसी ओर आ रहे हो। एक भयंकर गुर्राहट के स्वर से वातावरण कांप उठा। वल्लभ ने सुबाहु को सुवर्णा के समीप रहने का संकेत किया और स्वयं वस्तुस्थिति को समझने के लिये द्वार की ओर चला गया।

"मत जाइये।" घबराई हुई सुवर्णा ने वल्लभ का हाथ थाम लिया।

"मुझे कुछ नही होगा। मैं बस द्वार बंद करने जा रहा हूँ।" वल्लभ की बात समाप्त होते ही भवन की छत पर एक भयंकर गड़गडाहट हुई, मानो छत पर कोई पहाड़ आ गिरा हो।

"माँ!" सुबाहु की चीख निकल गयी और वह माँ से कसकर लिपट गया। वह भय से कांप रहा था।

वल्लभ को अपनी रीढ़ में सिहरन का आभास हुआ। और इसी क्षण पूरी की पूरी छत किसी कपड़े की भाँति फटकर कहीं दूर जा गिरी। छत फटने से अवशेष गिरने लगे और छत का एक बड़ा भाग प्रवीण के ऊपर ही धराशाई हो गया और प्रवीण की देह ने उसकी सीमा में आकर प्राण त्याग दिये।

वल्लभ ने भयाक्रांत होकर टूटी हुई छत की ओर देखा, वातावरण में जले हुए मांस की तीव्र दुर्गंध फ़ैल गयी थी। छत के ऊपर एक भयंकर आकृति उन्हें ही देख रही थी। वह ताड़का थी जो नगर से यहाँ तक आ पहुंची थी। उसके तन से मांस जलने की भयंकर गंध आ रही थी। किन्तु उस पर इस भयंकर अग्नि का कोई अधिक प्रभाव पड़ता सा नहीं प्रतीत हो रहा था। उसने अट्टहास किया और उन तीनों की ओर अपनी जलती हुई दृष्टि घुमायी, कुछ क्षण नेत्रों में क्रूरता लिये वह उन्हें निहारती रही, एक वीभत्स मुस्कान उसके मुख पर प्रकट हुई। और उन तीनों की ओर अपने विशालकाय हाथ बढ़ा दिये।

***

भार्गव के नेत्र खुले। उसका रोम-रोम मानो पीड़ा से फटा जा रहा था। शरीर का कोई भाग ऐसा नही था जहाँ पीड़ा ना हो रही हो। उसका पूरा शरीर ही किसी घाव के समान दुख रहा था। बहुत प्रयास के पश्चात उसके नेत्र पूर्ण रुप से खुले। कुछ क्षण तो उसे केवल स्थिति को समझने में लगे। उसने अपनी दृष्टि चारो ओर दौड़ाई, अब वहाँ एक भी सैनिक जीवित शेष नही था। वहाँ उपस्थित कोई भी इमारत अब अपने मूल रुप में नहीं थी। यह भयंकर विनाश इस बात की पुष्टि कर रहा था कि ताड़का पर उसके प्रहार का कोई भी प्रभाव नही पड़ा था।

अचानक से उसे कुछ याद आया। उसने अपनी पीठ पर बंधी पोटली की ओर देखा, वह अपने स्थान पर नही थी। उसने यहाँ-वहाँ देखा तो पोटली जिसमें उसके माता-पिता के अंग थे, वह समीप ही पड़ी दिखी। भार्गव ने पोटली उठाई, उस क्षण वह अपने तन की वेदना को एकदम से भूल गया। उसकी जगह अब शोक ने ले ली थी। इसी क्षण उसे सुबाहु, सुवर्णा, और वल्लभ का विचार आया। उनका स्मरण होते ही मानों उसके अंगो में किसी ऊर्जा का संचार हुआ और वह उठ खड़ा हुआ। अपनी पीठ पर पुन:पोटली बाँधी और अपनी कमर की ओर देखा तो तलवार को सुरक्षित पाया। वह वहाँ पड़े असंख्य मानव देहों एवं रक्त को लांघता हुआ घर की तरफ दौड़ पड़ा।

कुछ ही समय में वह घर पहुँच चुका था। उसे बेसुध हुए अधिक समय नही हुआ था। वह अपने भवन के अवशेषों के साथ ताड़का को देख स्तब्ध रह गया। ताड़का भवन पर प्रहार किये जा रही थी। भार्गव ने उसी क्षण निर्णय ले लिया और अपनी तलवार हाथों में लहराते हुए ताड़का की दिशा में दौड़ पड़ा। अचानक उसने वल्लभ को छटपटाते देखा जिसे ताड़का ने भवन से खींच निकाला था। वल्लभ उसकी मुट्ठियों में कसा हुआ छटपटा रहा था। यह दृश्य देख कर भार्गव के प्राण सूख गये। उसने सुवर्णा और सुबाहु का आर्तनाद भी स्पष्ट रूप से सुना। छटपटाते वल्लभ की दृष्टि भार्गव पर पड़ी और उसी क्षण ताड़का ने वल्लभ के आधे शरीर को अपने मुंह में डाल कर कस दिया और एक तीव्र झटका दिया। वल्लभ की देह दो भागों में विभक्त हो गयी और उसके शरीर के हिस्से एवं ताड़का के मुंह से रक्त का झरना सा फूट पड़ा। उस रक्त से सुबाहु और सुवर्णा नहा गये, इस भयानक दृश्य को देखकर सुवर्णा अचेत होकर गिर पड़ी।

सुबाहु अपनी माता को अचेत होता देख रोने लगा। उसके लिये यह सब एक भयानक दुस्वप्न जैसा था। ताड़का की दृष्टि अब नन्हे सुबाहु पर पड़ी, उसे देखकर उसके मुंह से लार टपकने लगी और उसने सुबाहु की ओर अपना हाथ बढ़ाया। किन्तु भार्गव क्रोध से फुंफकारता हुआ, दहाड़ता हुआ तलवार लहराते हुए एक ही छलांग में न केवल ताड़का की कलाई पर सवार हो गया, बल्कि दौड़ते हुए वह ताड़का के कंधो तक भी जा पहुंचा। ताड़का उसकी अद्भुत फुर्ती देख कर क्षण भर के लिये विस्मित हो गयी। इससे पहले के वह कुछ समझ पाती या कर पाती, भार्गव ने उसके कंधो से छलांग लगाते हुए अपनी दो धारी तलवार उसके नेत्र में घोंप दी, ताड़का किसी जानवर की भाँति चिंघाड़ उठी। वह भयानक

पीड़ा से छटपटा उठी। भार्गव अभी तलवार की मूठ पकड़े हुए झूल रहा था। उसके भार के कारण तलवार ताड़का के नेत्र को काटते हुए नीचे सरकती जा रही थी। उसके नेत्र से किसी झरने की भाँति रक्त को तीव्र धारा फूट पड़ी जिसमे भार्गव पूर्णतः नहा गया, किन्तु उसने अपनी पकड़ ढ़ीली नही की। सरकती हुई तलवार से होती असहनीय पीड़ा के कारण ताड़का का विशालकाय शरीर धरा पर जा गिरा। उसके गिरने से धरा कांप उठी और धूल का बवंड़र सा उत्पन्न हुआ। भार्गव अब भी उसके माथे पर सवार था। ताड़का ने अपनी हथेली भार्गव को मारने हेतु लहराई किन्तु भार्गव ने छलांग लगा कर स्वयं को उसके प्रहार की सीमा में आने से बचा लिया और उसे मारने के लिये उठा हाथ नेत्र में धंसी तलवार पर जा लगा, जिससे वह तलवार और गहरे तक जा धंसी। अब ताड़का किसी मदमस्त हाथी के समान लोटने लगी। पीड़ा की अधिकता के कारण उसके सोचने समझने की शक्ति कुंद हो गयी थी। वह किसी प्रकार उठ खड़ी हुई। उसकी छटपटाहट भी भार्गव के लिये किसी आपदा से कम नहीं थी। उसने बड़ी ही चपलता से उसके विशाल शरीर तले स्वयं को कुचले जाने से बचाया। ताड़का निरंतर चीखे जा रही थी, नेत्र बंद किये उसे जहाँ दिशा सूझी वही गिरते-पड़ते भाग निकली। भार्गव अभी भी उसके पीछे जाने को इच्छुक था किन्तु उसे सुबाहु और सुवर्णा का विचार आया और उसने उस समय ताड़का के पीछे जाने का विचार त्याग दिया।

वह दौड़ते हुए टूटे-फूटे भवन में पहुंचा। उसने बेसुध पड़ी सुवर्णा को झिंझोड़ा। किन्तु सुवर्णा का देह अब ठंडा पड़ चुका था। उसमे जीवन के कोई अवशेष शेष न थे। भार्गव का हृदय फट पड़ा, वह समझ गया था कि अब कुछ भी नही बचा है। माता, पिता, बहन, जीजा और मित्र सभी उससे बिछुड़ चुके थे। वह सुवर्णा का मृत देह लेकर रोता रहा। उसने सुबाहु की ओर देखा वह एक कोने में भयाक्रांत होकर छिपा बैठा था। भार्गव ने ध्यान से सुवर्णा का मृत शरीर धरा पर लिटाया और सुबाहु की ओर बढ़ा। सुबाहु के नेत्रों से अविरल अश्रु बह रहे थे।

“माँ भी चली गयी मामा?” सुबाहु के मुख से यह सुनते ही भार्गव ने उसे छाती से कसकर भींच लिया। वह फूट-फूट कर बिलख पड़ा। किन्तु कुछ ही क्षणों में उसके नेत्रों से अश्रु बहने बंद हो गये, अब उसके नेत्रों में अग्नि सी धधक रही थी। भार्गव का अंग-प्रत्यंग थरथरा रहा था। उसके शरीर में बहता रक्त मानो उसकी शिराओं को फाड़कर बाहर निकलने को तत्पर था।

“मैं इस राक्षस एवं दानव जाति से प्रतिशोध लूँगा और इस जाति का समूल नाश ही अब मेरा उद्देश्य होगा। यही मेरे और मेरे भांजे के जीवन का अब एक मात्र ध्येय होगा, यही उद्देश्य होगा। मैं सर्वनाश कर दूंगा इन जातियों का।”

इसी के साथ आकाश में भयंकर गड़गडाहट के साथ बिजली चमक उठी। मानो प्रकृति भी अब भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं को लेकर भयभीत थी। वर्षा आरंभ हो गयी, नगर में जलती अग्नि रेखायें वर्षा के कारण हल्की पड़ने लगी थी।

एक नये अध्याय का आरंभ होने जा रहा था।

***

दुस्वप्न

वह एक अत्यंत निर्जन स्थल था। जहाँ दूर-दूर तक जीवन का कोई भी लक्षण दिखायी नही दे रहा था। चहुँओर केवल उजाड़ छोटे-बड़े पर्वतों की एक अंतहीन शृंखला सी दिखायी दे रही थी। सूर्य का प्रखर प्रकाश और उष्णता वातावरण को झुलसाए दे रही थी। निर्जन मार्ग एवं पर्वतों पर मानों भांप सी उड़ रही थी। उष्णता लहरियों से वातावरण झिलमिलाता सा प्रतीत हो रहा था। अचानक दूर कहीं एक चक्रवात सा प्रकट हुआ, चक्रवात की तीव्रता धीमे-धीमे बढ़ते जा रही थी, जिस कारण उत्पन्न धूल के असंख्य कणों के कारण वातावरण धूमिल हो गया। वायु की तीव्रता से पर्वतों से सटी कंटीली झाड़ियाँ एवं सूखे वृक्ष मानो धरा को फोड़ कर बाहर आने को उत्सुक से प्रतीत हो रहे थे। इस भयंकर चक्रवात को देखकर किंचित ही कोई जीव इस ओर आने का साहस करेगा।

किन्तु आश्चर्यजनक रूप से उस चक्रवात के कारण निर्माण हुई घनी धूल एवं वायु के तीव्र आवेग के मध्य एक आकृति सी दिखी। वह आकृति कहीं से प्रकट नही हुई थी अपितु वह चक्रवात उस आकृति के मार्ग में बाधा बनकर उत्पन्न हुआ था। धीरे-धीरे वह आकृति स्पष्ट हुई, उसने अपने दोनों हथेलियों से अपनी आँखों को घेर रखा था ताकि इस भयंकर धूल से आँखों की रक्षा हो सके। वह असामान्य कदकाठी का व्यक्ति था, उसकी लम्बाई अद्भुत रूप से आठ फीट की थी। उसकी बलिष्ठ भुजायें किसी विशालकाय अजगर की भाँति मांसल और विशाल काय थी। जो उसके अदम्य शक्तिशाली होने का प्रमाण थी। भव्य एवं वृहद विस्तार लिये हुए ललाट, रक्त की भाँति रक्तिम नेत्र, मुख की नसें और जबड़े की बनावट असामान्य रूप से विस्तार लिये हुए थी, जो उसे मनुष्य की श्रेणी में नही रखती थी। निस्संदेह उसकी मुखाकृति किसी मनुष्य जैसी नही थी। उसने शरीर के ऊपरी भाग पर धातु का एक कवच पहन रखा था जो उसकी छाती, पीठ, और कमर के हिस्से को घेरे हुए था और किसी पशु की खाल से बने हुये एक लम्बे वस्त्र ने उसकी कमर से घुटनों तक का भाग ढंक रखा था। उसका कवच उस गर्म वातावरण में किसी अंगार की भाँति तप्त सा प्रतीत हो रहा था। उसकी त्वचा तांबे के समान वर्ण लिये हुए थी जो उस धूप में तप रही थी। वह निस्संदेह एक राक्षस था।

“कहाँ तक भागेगा दुष्ट? कायर की तरह पीठ दिखा कर भागना था तो ललकारने का क्या औचित्य रह गया तुम्हारा? तुम्हारी मृत्यु उसी क्षण निश्चित हो गयी थी, जिस क्षण तुम्हारे मन में मुझे चुनौती देने के विचार ने जन्म लिया।” वातावरण में एक और भयंकर गर्जना सी हुई, वह स्वर किसी भयंकर पशु की गुर्राहट के समान प्रतीत हो रहा था।

उस स्वर को सुनते ही वह राक्षस एक क्षण को विचलित हुआ। किन्तु अगले ही क्षण एक निश्चित दिशा की ओर भाग पड़ा। पहाड़ जैसे भयंकर डील-डौल वाले प्राणी का इस तरह किसी से भयाक्रांत होकर भागना उसके व्यक्तित्व के एकदम विपरीत था। राक्षस के पीछे ही कुछ ही क्षणों पश्चात उस चक्रवात में एक और आकृति अस्पष्ट सी दिखायी दी। उस भयंकर धूल को चीरते हुए वह आकृति बाहर आयी। वह भी कोई मनुष्य नही था। उसके केश पीठ तक लम्बे थे, सम्पूर्ण तन पर असामान्य रूप से भूरे रंग के रोयें थे। स्वर्णाभूषण से उसका तन अच्छादित था। बलिष्ठ बाजुओं पर स्वर्ण निर्मित बाजूबंद कसे हुए थे। मुख पर एक दिव्य तेज सा प्रस्फुटित हो रहा था, जो उसके अदम्य व्यक्तित्व को परिभाषित कर रहा था। उसके नेत्रों में सूर्य के समान तेज समाया हुआ प्रतीत हो रहा था। मुख असामान्य रूप से नाक से नीचे ठोड़ी तक किसी वानर की भांति बना हुआ था। वह किसी मानव और वानर का मिश्रित स्वरूप लग रहा था। उसकी दृष्टि उस राक्षस पर ही स्थिर थी जो एक कंदरा की ओर भाग रहा था।

“ठहर जा कायर।” वह व्यक्ति राक्षस के पीछे तीव्र गति से दौड़ा।

राक्षस एक पर्वत के सम्मुख आकर रुक गया। वह पीछे मुड़ा और उस व्यक्ति को अपनी ओर आते देख कर वीभत्स हंसी हंसा। उसे उसकी मनचाही वस्तु दिख गयी थी, उस पर्वत के निचले तल पर स्थित वह विशालकाय प्राकृतिक गुफा। वह अट्टहास कर उठा और उस गुफा में प्रवेश कर गया। राक्षस का पीछा करता वह व्यक्ति उस गुफा के सम्मुख आकर कुछ क्षण के लिये रुका और दहाड़ते हुए वह भी उस अंधियारी गुफा में प्रवेश कर गया।

गुफा में घना अंधियारा था। उसके नेत्र अभी उजाले से अंधियारे में आये थे जिस कारण नेत्र अभी अँधेरे में देखने के अभ्यस्त नही हुए थे। इसके पश्चात भी वह बिना किसी भय एवं बिना लड़खड़ाहट के चलता रहा।

“मूर्ख! तूने यह विचार भी कैसे कर लिया कि इस अंधियारी कंदरा में तू मेरी दृष्टि से ओझल हो जायेगा? तेरी गंध ही मुझे तेरी ओर बढ़ने का मार्ग दिखा रही है। मैं तुझे सूंघ सकता हूँ और तेरी आने वाली मृत्यु को भी। अब तेरा मृत शरीर इसी अंधियारे में पड़ा रहेगा और उसे कभी सूर्य की एक किरण के दर्शन तक का अवसर ना प्राप्त होगा।” उसकी गुर्राहट किसी के भी शरीर में झुरझुरी दौड़ा सकती थी।

“मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ वानर।” अंधियारे में राक्षस का अट्टहास प्रतिध्वनित हुआ।

वानर निर्भीक होकर आगे बढ़ता रहा, कुछ ही समय में वह गुफा के मध्य एक ऐसे स्थल पर पहुँच गया था जहाँ का भाग किसी समतल मैदान जैसा खुला था। गुफा के इस भाग में पर्याप्त प्रकाश था, जो गुफा की छतों पर बनी झिर्रियों से आ रहा था। वानर वहाँ पहुँच कर ठिठका। उसने एक क्षण के लिये उस स्थान का अंदाजा लगाया और तभी एक विशालकाय शिला वहाँ आ गिरी, किन्तु वानर अपनी अद्भुत चपलता से शिला के गिरने से पहले ही स्थान बदल चुका था। वह भीमकाय शिला राक्षस ने फेंकी थी। इस शिलाखंड को फेंकना तो दूर हिलाना तक बीस मनुष्यों की क्षमता से बाहर था। वानर ने शिला फेंकने की दिशा में देखा और उसी क्षण उस दिशा से राक्षस ने तीव्रता से छलांग लगा दी और वह वानर से कुछ दूरी पर आकर खड़ा हो गया।

वानर और राक्षस एक-दूसरे के आमने-सामने थे। दोनों की दृष्टि एक दूसरे से मिली। राक्षस के मुख पर एक विकृत और वीभत्स हंसी थी। वानर के मुख पर केवल एक गर्वीला हास्य था। दोनों ने अपनी अपनी मुट्ठियाँ भींची और एक दूसरे से टकराने के लिये दौड़ पड़े। तीव्रता से भागते हुए दोनों एक-दूसरे से टकरा गये। उनकी शक्तिशाली टक्कर से वह पथरीली गुफा मानों कांप सी गयी थी। दोनों शत्रुओं के हाथ एक-दूसरे के हाथों में जकड़े हुए थे। दोनों में से कोई भी कमतर नही था। दोनों के मुख से अमानवीय हुंकार के स्वर निकल रहे थे। क्रोध की अधिकता के कारण राक्षस का मुख और वीभत्स होते जा रहा था। राक्षस ने दांव बदला और वानर के दोनों हाथो को जकड़े हुए ही धरा पर न केवल लेट गया बल्कि अपने दोनों पांवो से वानर को उछाल कर अपने पीछे की गुफा की दीवार पर दे मारा। वानर चट्टानों को फोड़ता हुआ अंदर तक धंस गया था।

राक्षस ने उसे चट्टानों के मध्य फंसा देखा और अवसर का लाभ उठाते हुए एक भारी शिलाखंड उठा कर वानर की ओर दौड़ पड़ा। वानर अभी निकलने का प्रयास कर ही रहा था कि उस भारी भरकम शिलाखंड के साथ पूर्ण शक्ति और गति से उछलता हुआ राक्षस उससे जा टकराया। उठने का प्रयास करता वानर फिर से पत्थरों के मध्य दब गया, और उसी क्षण एक और भीमकाय शिलाखंड उसके ऊपर आ गिरा। राक्षस ने एक के पश्चात एक करके पांच शिलाखंड किसी गेंद की भाँति उठा कर वानर पर फेंक मारे। इन भयंकर प्रहारों से गुफा की दीवार और छत कांप रही थी। राक्षस ने कांपती और दरार से भर रही पथरीली छत की ओर देखा और एक विशालकाय शिलाखंड उठा कर छत की ओर फेंक दिया। छत से टकराते ही छत का वह हिस्सा भरभराकर वानर पर जा गिरा और वानर की वहीं समाधि बन गयी।

"बड़ा घमंड था वानर तुझे अपनी शक्तियों पर? कहाँ गयी तेरी शक्तियाँ ? देख आज तेरी समाधि इसी अंधियारी गुफा में मैंने बना दी। मुझे कह रहा था ना कि मेरे मृत शरीर को प्रकाश की एक किरण तक नही मिलेगी। अब देख स्वयं को।" राक्षस अट्टहास करता हुआ छत और शिलाखंडो से निर्मित हुए उन अवशेषों पर जा खड़ा हुआ जिनके नीचे वानर की समाधि बन चुकी थी। किन्तु उस अवशेष में एक तीव्र कंपन हुआ। हतप्रभ राक्षस कुछ समझ पाता उससे पहले ही वह मलबा भीषण रूप से उड़ा, मानों उसमे कोई भयंकर विस्फोट सा हुआ हो। जिस कारण राक्षस भी दूर जा गिरा। मलबे के ढेर के मध्य से धूल से सना हुआ वानर सकुशल बाहर निकला। अब वह अत्याधिक क्रोधित था। उसके मुख से रक्त निकल रहा था, उसने राक्षस को देखा और वही से एक छलांग लगायी और सीधे राक्षस की छाती पर जा गिरा, यह भीषण प्रहार था। राक्षस का शरीर उस पथरीली सतह को भीतर तक तोड़ते हुए धरा में धंस गया ।

वानर उसकी छाती पर सवार था, उसके नेत्रों में मानो रक्त सा बह रहा था। क्रोध की अधिकता के कारण वानर के मुंह से शब्द के बदले हुंकार और झाग निकल रही थी। उसने एक भयंकर घूंसे से राक्षस के चेहरे पर प्रहार किया। राक्षस ने अपने हाथों से वानर की गर्दन पकड़ ली। राक्षस की पकड़ शक्तिशाली थी, उसे सैल करने के लिये वानर ने अबकी दोनों हाथों से प्रहार करना आरंभ कर दिया। किन्तु कुछ ही क्षणों में उसकी श्वासनलिका दबने लगी। राक्षस ने पकड़ जरा भी सैल नहीं की। वानर

ने कुछ भयंकर प्रहार और किये, किन्तु राक्षस भी क्रूरता की चरम सीमा पर था। भयंकर पीड़ा के पश्चात भी वह अपनी पकड़ सैल नही कर रहा था। उसी क्षण राक्षस ने एक हाथ से वानर का कंठ पकड़ कर दूसरे हाथ से पूर्ण शक्ति द्वारा वानर के मुख पर प्रहार कर दिया। वानर के मुख से रक्त बहने लगा, उसने उसी अवस्था में राक्षस पर पुन: प्रहार किया। अब दोनों विक्षिप्तों की भाँति युद्ध कर रहे थे। ना वानर में क्रोध कम था और ना ही राक्षस में क्रूरता। दोनों एक-दूसरे के भीषण प्रहारों से रक्त में नहा चुके थे, किन्तु कोई भी हार मानने को तैयार नही था। दोनों प्रहार पर प्रहार करते जा रहे थे। वानर ने समीप ही पड़ी एक शिला को उठा कर राक्षस के मुख पर दे मारा, उसका क्रोध अब उसकी सीमा से परे जा चुका था। राक्षस की पकड़ सैल हो गयी और इसी क्षण वानर ने दोनों हाथों से भीषण प्रहार किया, राक्षस रक्त से अवश्य सना हुआ था, किन्तु वह अब भी प्रहार के उत्तर में प्रहार कर रहा था। अनगिनत प्रहारों के पश्चात अब राक्षस के प्रहारों में शिथिलता आ गयी थी। उसके धीमे होते प्रहारों के विपरीत वानर के प्रहारों की तीव्रता बढ़ती जा रही थी। वह पूर्णतया क्रूरता के वशीभूत हो चुका था। उसके हाथ किसी घन की तरह बरस रहे थे, हर प्रहार के पश्चात राक्षस का सर पथरीली धरा को तोड़ते हुए अंदर धंसते चला जाता। राक्षस हंसा, वह वानर की अवस्था को देखकर भीषण पीड़ा के पश्चात भी हंसा। उसकी हंसी ने वानर के क्रोध की अग्नि में घी का कार्य किया और वानर ने प्रहारों में क्रूरता और भीषणता और बढ़ा दी, उसे उसकी हंसी चुभ रही थी। जिस स्थान पर दोनों लड़ रहे थे, वह स्थान उनके भीषण प्रहारों से अब एक गड्ढे में परिवर्तित हो चुका था।

राक्षस के मुख की अस्थियाँ कई भागों में टूट गयीं थी। उसकी एक आँख कटोरी से बाहर आकर मांसपेशियों के आधार पर लटक रही थी। उसका चेहरा विकृत होते जा रहा था, अपने ही रक्त के मुंह-नाक में भरने के कारण उसके गले से अजीब से स्वर निकलने लगे थे। वानर के प्रहार रुक नही रहे थे। राक्षस फिर भी मुस्कुराता रहा, तब तक जब तक की उस वानर ने उसका मुख ही ना विभक्त कर दिया। उसने अंतिम बार वानर की ओर देखा, गले से बेहद अशक्त और घरघराता स्वर निकला।

“द ...देखो स्वयं को! कौन है राक्षस....?” राक्षस ने बड़ी कठिनाई से इतना ही कहा। वानर उसके व्यंग्य पर चिढ़ उठा।

“शांत रहो!” वानर ने भीषण प्रहार किया, और इसी के साथ अस्थियों के चरमराने का स्वर सुनाई देने लगा।

“शांत रहो! शांत रहो! शांत रहो।” वानर प्रहार करता रहा। राक्षस के रक्त एवं मांस के अंश हवा में उड़ते रहे, छितराते रहे, राक्षस निष्प्राण हो चुका था। किन्तु वानर ना रुका, उसका हर प्रहार उस गुफा में प्रतिध्वनित होता रहा। उसका मुख भी अब रक्त एवं मांस से सना हुआ था। उसकी आकृति अब और भयावह हो चुकी थी।

***

।। कलियुग ।।

अभिशाप

सन १९९३, मुंबई

“नहीं! नहीं! रुक जाओ। नहीं।” सोलह साल का लड़का अपने बिस्तर पर मचल रहा था। उसकी आँखे बंद थी। स्पष्ट था कि वह कोई दुस्वप्न देख रहा था। उसका कंबल बिस्तर से नीचे अस्तव्यस्त रूप में पड़ा था और वह निरंतर चीखते हुए मचल रहा था। उस आलीशान कमरे में वह अकेला ही था। उसके अलावा यदि कोई और था तो वह था महंगा फर्नीचर, और लक्जरी की हर वस्तु।

उसके कमरे का दरवाजा अचानक खुला। दरवाजा खोलने वाला व्यक्ति महेश था। उसने नाईट गाउन का फीता कसते हुए कमरे में प्रवेश किया। उसके मुख पर चिंता की रेखायें स्पष्ट रुप से दिखायी दे रही थी। वह लगभग दौड़ते हुए बेड़ की ओर बढ़ा और बेड़ के समीप रखे टेबल लैम्प को जलाकर नींद में बड़बडाते लड़के को झिंझोड़ा।

“उठो बेटा।”

लड़के की आँखे खुली। उसकी आँखों में दहशत साफ़ झलक रही थी। उसके रोम-रोम से पसीना निकल रहा था। ए.सी. की ठंड़क के बावजूद लड़का पूरी तरह पसीने से भीग गया था। उसकी साँसे तीव्र गति से चल रही थी। वह अपने पिता से लिपट गया।

“डैड़!” वह सुबक पड़ा। उसका शरीर अब तक कांप रहा था।

“फिर वही सपना देखा बेटा?” महेश ने लड़के के बालों पर सहलाते हुए पूछा।

“डैड़! आखिर यह सपना मुझे बार-बार क्यों आता है? कौन हैं वो दोनों जो एकदूसरे के खून के प्यासे है? आखिर उनसे मेरा क्या रिश्ता है? क्यों मुझे यही सपना बार-बार आता है।” लड़के के स्वर में भय और दुःख दोनों समान रूप से झलक रहा था। उसका शरीर तप रहा था। महेश ने अपने हाथ से उसके माथे पर बहता पसीना पोछा।

“मुझे नही पता बेटा। लेकिन तुम घबराओ मत, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ। मेरे होते हुये तुम्हें कुछ नही होगा। एक सपना ही तो है। तुम सोने की कोशिश करो, यह लो पानी पियो और अपनी साँसों को नियंत्रित करो।” कहते हुए महेश ने समीप ही टेबल पर रखे जग से एक गिलास में पानी

लेकर लड़के के मुंह से लगाया। लड़के ने एक ही सांस में पूरा गिलास खाली कर दिया।

"डैड! मैं सो नहीं पाता, यह सपना हमेशा मेरी नींद तोड़ देता है और मैं इस पर कंट्रोल नही कर पाता।" लड़का रुंवासा हो गया।

"तुम लेटो पहले। हूँ ना तुम्हारे साथ, एक ही सपना अगर बार-बार दिखायी दे तो उसका जरुर कोई मकसद होता है। वह तुमसे कुछ कहना चाहता है? जिस दिन वह बात तुम समझ जाओगे, उसी दिन यह सपना तुम्हें आना बंद हो जायेगा। इस सपने का तुमसे क्या संबंध है और यह तुम्हें क्या बताना चाहता है, यह तुमसे बेहतर और कोई नही समझ सकता। जिस दिन तुम इस सपने की पहेली सुलझा लोगे तुम्हें ना केवल सपने आना बंद हो जायेंगे, बल्कि कोई उद्देश्य भी मिल जायेगा। इसलिये बी ब्रेव एंड़ पॉजिटिव माई सन।" कहते हुए महेश ने हुए लड़के को लिटा कर कंबल ओढाया और माथे को चूम लिया।

"डैड! क्या मैं नॉर्मल नहीं हूँ?" बच्चे ने प्रश्न किया।

"तुम मेरे बेटे हो। 'महेश बाहुपति' की एकलौती संतान हो तुम 'माया'। तुम्हें नॉर्मल होना ही नहीं है। तुम्हें सबसे अलग ही होना है। तुम्हें तो अभी सब पर राज करना है और ऐसा कोई नॉर्मल इंसान नही कर सकता, इसलिये तुम्हें ख़ुशी होनी चाहिये कि तुम नॉर्मल नही हो।" महेश की आँखे एक अनजानी महत्वकांक्षा से चमक रही थी।

माया अपने पिता की उपस्थिति में स्वयं को सुरक्षित पाकर पुन: निद्रा की आगोश में समा चुका था।

महेश उसे सोते हुए निहारता रहा। उसके मुख पर चिंता के भाव थे, किन्तु कुछ ही क्षणों में चिंता की जगह उसके मुख पर एक रहस्यमय मुस्कान ने ले ली।

"मेरे बेटे! समय आने पर तुम्हें तुम्हारे अस्तित्व का ज्ञान हो जायेगा। मैं अभी तुम्हें कुछ नही बता सकता। लेकिन संयम रखो बेटा। अब वह समय आने को है।" महेश मन ही मन बड़बडाया।

***

अथर्व

सन १९९३, वाराणसी

भोर का समय था। देवदत्त सदा की तरह गंगा घाट पर अपनी उपासना कर रहा था, वह एक अट्ठाईस वर्षीय गृहस्थ था। सर्दी, गर्मी, या बरसात, चाहे जो भी मौसम हो उसकी पूजा का क्रम कभी नही टूटा और अब पिछले दो सालों से देवदत्त ने इसमें अपने दस वर्षीय बेटे अथर्व को भी शामिल कर लिया था। अथर्व भी बड़े उत्साह से नियमित इस पूजा में सहभागी बनता था। देवदत्त एक धोती पहन कर गंगा की धारा में कमर तक खड़े होकर सूर्य को अर्ध्य दे रहा था। देवदत्त का शरीर उसके कसरती होने का प्रमाण था, उसका शरीर सुगठित और कटाव लिये हुए था। उसके बलिष्ठ कंधो पर जनेऊ जंच रहा था। अथर्व भी पिता के साथ खड़े होने को इच्छुक रहता, किन्तु उसके छोटे कद के कारण वह उतनी गहराई में नही जा पाता था और घाट की निचली सीढ़ियों पर ही खड़े होकर पूजा आराधना करता। इतनी कम आयु में ही वह संस्कृत के श्लोक धाराप्रवाह बोल लेता था। देवदत्त की पूजा समाप्त हो चुकी थी, उसने पलटकर अथर्व की ओर देखा। अथर्व अब भी आँखे मूंदे, हाथ जोड़े मंत्रोच्चार कर रहा था। देवदत्त के मुख पर मुस्कान उभर आयी। अथर्व ने आँखे खोली। देवदत्त उसके साथ घाट की सीढियों से होते हुए प्रवाह से बाहर निकला।

“पिताजी! आपने मुझसे एक बात कही थी आपको याद है?” अथर्व ने पूछा, उसके हाथों में पूजा की सामग्री थी, उसने भी पिता की भांति मात्र एक सफ़ेद धोती पहन रखी थी, शरीर का ऊपरी हिस्सा खुला था। उसकी गोरी रंगत उगते सूर्य की किरणों में दीप्तिमान सी लग रही थी।

“मुझे सब स्मरण है बेटा! आज सांझ के समय मैं तुम्हें ले चलूँगा।” देवदत्त ने कहा।

“सांझ को क्यों पिताजी?” अथर्व के मुख पर हल्की उदासी स्पष्ट झलक रही थी।

“क्योंकि, तुम्हें स्कूल भी जाना है ना? और मेरा भी तो जाना जरुरी है। सब निपटाकर हम शाम को चलेंगे।” देवदत्त ने उसे समझाया।

“एक दिन स्कूल नही जाऊंगा तो क्या हो जायेगा?” अथर्व ने नया प्रश्न किया। वह अपने नन्हे कदमों से देवदत्त के कदमों के अंतर को नापने का प्रयास करता रहा।

“क्या तुम एक दिन पूजा छोड़ सकते हो?” देवदत्त ने प्रश्न के उत्तर में एक और प्रश्न कर दिया।

“कदापि नही।” अथर्व ने बिना क्षण गंवाए कहा।

“क्यों?”

“क्योंकि पूजा के द्वारा हम ईश्वर की स्तुति करते है, जो हमारा तरीका है उसके प्रति आभार व्यक्त करने का, हमारे दिन के आरंभ से दिन की समाप्ति तक ईश्वर सदैव किसी न किसी रूप में हमारे साथ है। हर मार्ग पर वह हमारा मार्गदर्शन करता है, सहायता करता है। वह हमें कभी अकेला नही छोड़ता। इसलिये हम पूजा, आराधना, उपासना इत्यादि विविध प्रकारों द्वारा उसका धन्यवाद करते है। मैं एक दिन भी पूजा नही छोड़ सकता, क्योंकि ईश्वर एक क्षण भी मेरा साथ नही छोड़ता।” अथर्व ने अपनी आयु से कई गुना अधिक समझदारी की बात की।

“इसी तरह शिक्षा का भी महत्व है अथर्व। शिक्षा और ज्ञान प्राप्त करना भी एक पूजा ही है। जिसे नजरअंदाज नही किया जा सकता, इसलिये तुम्हारा स्कूल में पढ़ना आवश्यक है, और मेरा पढ़ाना। और इतने उद्विग्न मत बनो, सांझ में मात्र ग्यारह घंटे ही शेष है, वह तो ऐसे ही बीत जायेंगे। और अभी तो एक घंटे तुम्हारे खेलने में ही निकल जायेंगे।” देवदत्त ने एक प्यार भरी चपत अथर्व के गालो पर मारी तो वह मुस्कुरा दिया।

कुछ ही देर में वे एक कस्बे में पहुँच चुके थे। वह कस्बा छोटे छोटे मकानों से भरा हुआ था। चहुँ ओर छोटे बड़े मकानों की मानों घेराबंदी सी थी। और उसके मध्य में गोलाकार मैदान। जहाँ कस्बे के बच्चे इतनी सुबह होने के पश्चात भी खेल रहे थे। मैदान काफी विस्तृत था, मैदान के किनारों पर छायादार वृक्ष थे, एकाध गाय अथवा बैल भी मैदान के किसी कोने पर जुगाली करते दिखायी दे जाते। मैदान के दूसरे छोर पर ही देवदत्त का घर था। अथर्व को देवदत्त के साथ मैदान में प्रवेश करता देख कर दीक्षा ने अथर्व को खेलने के लिये पुकारा, जो कि अथर्व की मित्र थी और उस वय की सबसे चंचल लड़की थी। अथर्व उसे देखकर मुस्कुराया और अपने पिता की ओर देखा। देवदत्त उसके मनोभाव समझ गया।

“ठीक है जाओ। किन्तु जल्द निपटाना। तुम्हारी माँ को ज्यादा देर नही समझा पाऊंगा। नाश्ते के पहले आ जाना।” देवदत्त ने मंजूरी दे दी, अथर्व ने अपनी पूजा का झोला देवदत्त को थमाया और मैदान की ओर दौड़ पड़ा और देवदत्त घर को ओर चल पड़ा।

“आज क्या खेल रहे हो तुम लोग?” अथर्व ने दीक्षा से पूछा।

“पिट्ठू! आज पिट्ठू खेल रहें हैं।” दीक्षा ने कहा, बाकी लड़के भी वहाँ एकत्रित हो गये।

“अरे! लेकिन अथर्व तो केवल धोती पहन के आया है। पीठ तो उघड़ी है, एक भी गेंद पीठ पर लगी तो लाल हो जायेगा।” एक लड़के ने कहा तो सब हंस पड़े।

“अरे गेंद लगेगी तब ना। देखना खेल के बाद किसकी पीठ लाल होती है।” अथर्व ने भी आत्मविश्वास दिखाया।

और बच्चो के दो गुट बन गये। अथर्व सदैव की तरह दीक्षा के गुट में ही था। पत्थरों के सपाट टुकड़ों को दोनों गुटों के बीचोबीच एक के ऊपर एक रचकर एक निर्माण सा बना दिया गया। अब दूसरा गुट गेंद से उस निर्माण को तोड़ता और पहला गुट उसे जोड़ने का प्रयत्न करता । इसी बीच विरोधी गुट गेंद से प्रहार करके उन्हें असफल करने का प्रयास करता। दीक्षा ने गेंद का निशाना साधा और एक झटके में पूरा निर्माण छिन्न भिन्न कर दिया।

इसी के साथ भाग दौड़ मची, सभी भागने लगे। विरोधी दल गेंद लपकने की ओर बढ़ा, दीक्षा और अथर्व उस टूटे निर्माण को एक के ऊपर एक जोड़ने का प्रयास करने लगे। उसी पल विरोधी दल के लड़के ने दीक्षा को निशाना बना कर पूरी गति से गेंद का प्रहार कर दिया। दीक्षा फुर्ती से गेंद का प्रहार बचा गयी, किन्तु गेंद सीधे मैदान के कोने में जुगाली करते ‘कलुए’ सांड़ को जा लगी। मुंह पर अचानक हुए इस प्रहार से सांड़ बिदक गया। उसने जलती आँखों से दीक्षा को देखा और सींग उठाये फुंफकारते हुए पूरी गति से दीक्षा की ओर दौड़ पड़ा।

बच्चों में घबराहट फ़ैल गयी। हर कोई चीखते चिल्लाते यहाँ-वहाँ भागने लगा। किन्तु आश्चर्यजनक रूप से अथर्व के मुख पर घबराहट का कोई भी लक्षण नहीं था। दीक्षा भय के मारे अपने स्थान पर जड़ हो गयी थी और सांड़ पूर्ण वेग से दीक्षा की ओर ही आ रहा था।

“दीक्षा! हट जा वहाँ से। भाग दीक्षा।” अथर्व गला फाड़ कर चीख उठा, किन्तु दीक्षा अपने स्थान से हिल भी नहीं पा रही थी। अब किसी भी क्षण कलुए की भीषण टक्कर से दीक्षा का अंत निश्चित था। अथर्व दीक्षा की ओर अद्भुत गति का प्रदर्शन करते हुए भागा।

दीक्षा और सांड़ के मध्य केवल दो हाथों का ही अंतर रह गया था। किन्तु अचानक से अथर्व दीक्षा और सांड़ के मध्य आकर ना केवल खड़ा

हो गया, बल्कि उसने आश्चर्यजनक रुप से दुस्साहस दिखाते हुए सांड़ की सींगो को ही धर लिया और हैरानी की बात तो यह थी कि सांड़ एक झटके से रुक भी गया। यह असंभव सा दृश्य था, दस साल का एक बालक भला एक सांड़ को कैसे रोक सकता था।

सांड़ फुंफकारते हुए झटका मारने का प्रयास करता रहा। अथर्व के मुख पर पसीने की बूँदें झिलमिला उठी, वह अपनी पूरी शक्ति लगा रहा था उस सांड़ को रोकने में। सांड़ गुस्से से पागल हो रहा था, उसने और बल लगाया तो अथर्व पीछे घिसटने लगा। उसी क्षण अथर्व के मुख पर क्रोध उभरा और सांड़ और अथर्व की आँखे एक दूसरे से जा मिली।

अगले ही पल आश्चर्यजन रुप से अथर्व ने सींगो को छोड़ कर अपनी बगल में उसकी गर्दन दबोच ली। सांड़ उसे उछालने का प्रयत्न करते रहा, किन्तु अथर्व ने उसकी गर्दन नहीं छोड़ी।

“शांत हो जा कालू! शांत हो जा, माँ से कहकर घी चुपड़ी रोटियां खिलाऊंगा, शांत हो जा।” कहकर अथर्व ने उसे गर्दन से दबोच कर जमीन पर बिठा दिया और उसे जकड़े रहा। सांड़ हाथ पाँव पटकते रहा, किन्तु अथर्व की पकड़ ढीली नही हुई। कुछ ही देर में सांड़ थक गया और अपने आप शांत हो गया। अथर्व को जब पूर्ण विश्वास हो गया कि सांड़ अब काबू में है, तब उसने अपनी पकड़ ढीली की और उसके माथे को प्यार से सहलाया।

“गेंद अनजाने में लगी कालू! बच्चों पर इतना गुस्सा नही करते।” अथर्व उसे पुचकार रहा था। कुछ ही क्षणों पहले यमदूत बना हुआ सांड़ अब एक गाय की भाँति शांत बैठा हुआ था, मानो कुछ हुआ ही नहीं था।

दीक्षा और बाकी बच्चे मुंह फाड़े आश्चर्य से यह दृश्य देख रहे थे। उनके अलावा देवदत्त भी चीख-पुकार सुनकर वहाँ पहुँच चुका था। उसने भी अथर्व का अद्भुत प्रदर्शन देखा था, किन्तु उसके मुख पर आश्चर्य का कोई भाव नही था। वह चिंतित अवश्य था। देवदत्त बदहवास सा दौड़ता हुआ अथर्व के पास आया और उसे गोद में उठा लिया। अथर्व के शरीर पर हल्की खरोंचे और मिटटी लगी हुई थी। वह अथर्व को लेकर अपने घर की ओर दौड़ पड़ा। तब तक दीक्षा भी सदमे से बाहर आ चुकी थी और वो भी देवदत्त के पीछे हो ली।

***

“अथर्व! यहाँ देखो मेरी ओर। तुम्हें कितनी बार समझाया है कि इस प्रकार सार्वजनिक रूप से ऐसा कुछ भी ना किया करो।” देवदत्त अथर्व

पर क्रोधित था। अथर्व चुपचाप सर झुकाए खड़ा था, माँ अपने आँचल से उसका मुंह पोंछ रही थी, उसके मुख पर चिंता स्पष्ट झलक रही थी। अब उनके साथ ही नन्ही दीक्षा और उसके पिता मटुक शास्त्री भी वहाँ उपस्थित थे।

“कविता! तुम जानती हो कि अथर्व को कोई चोट नही लगी है। इसपर ज्यादा प्रेम मत दिखाओ, इसे समझना चाहिये कि क्या करना चाहिये और क्या नहीं।” देवदत्त का क्रोध थोडा और बढ़ने लगा था।

“अरे क्या देवदत्त! बच्चा है अथर्व, उसने जो भी किया वह दीक्षा की जान बचाने के लिये ही किया है। क्या उस समय कोई अन्य मार्ग था उसके सामने?” मटुक ने देवदत्त को समझाया। मटुक देवदत्त की ही उम्र का था किन्तु उसके सर पर केश नही थे और आँखों पर ऐनक उसकी कम दृष्टि की साफ़ चुगली कर रही थी। इस समय वह हल्के स्लेटी रंग के कुर्ते और पायजामे में खड़ा था। शरीर यष्टि में वह भी देवदत्त से कमतर नही था। दीक्षा मटुक से लिपटी हुई थी।

“भाभी जी! आप अथर्व और दीक्षा को अंदर ले जाइये। मैं समझाता हूँ देवदत्त को।” मटुक ने कविता को इशारा किया तो कविता दोनों को लेकर बरामदे से निकल गयी।

“देवदत्त! वो अभी बच्चा है। उसने जो भी किया वह उसकी शिक्षा का ही परिणाम है, जो तुमने ही सिखाई है, वह दीक्षा के प्राण बचा रहा था। सोचो यदि अथर्व वहाँ नही होता तो ?” मटुक के मुख पर घबराहट थी वह दीक्षा के साथ हुई उस घटना से विचलित था।

“और फिर वहाँ किसी ने अथर्व को सांड़ से लड़ते नही देखा। सब अपने घरों में ही थे, रहा सवाल बच्चों का तो उनकी कहानियों पर भला कौन विश्वास करता है? किसी को पता नही चलेगा, अथर्व की क्षमताओं के बारे में।” मटुक ने देवदत्त के कंधो को थपथपाया, देवदत्त कुछ हद तक आश्वस्त हुआ और वहीं रखी कुर्सी पर बैठ गया। मटुक भी उसके सामने रखी लकड़ी की कुर्सी पर बैठा।

“नही मटुक! मेरी चिंता का कारण कुछ और ही था।” देवदत्त ने कहा।

“मैं जानता हूँ! आज वह समय आ गया है जब अथर्व ‘शक्ति मठ’ का हिस्सा बने। और यही तुम्हारी चिंता का कारण है। किन्तु यह तुम भी जानते हो यह कितना आवश्यक है उसके लिये।” मटुक ने उसे सांत्वना देने के लिये कहा।

“देवदत्त! एक पिता होने के कारण तुम यह भूल रहे हो कि अथर्व सामान्य बालक नहीं है। उसकी क्षमतायें उसे असामान्य बनाती है। इसी कारण उसे अपनी क्षमताओं पर नियंत्रण करना सीखना भी अति आवश्यक है। इसी वजह से उसका इसी आयु में शक्ति मठ का हिस्सा बनना उसके लिये उचित है। और देव, हमने भी अपने सामान्य जीवन और मठ के साथ समन्वय रखा है न? वह भी सीख जायेगा जल्दी ही।” मटुक ने समझाया।

“तुम सही कह रहे हो। ठीक है फिर मैं उसे शाम के लिये तैयार करता हूँ।”

***

।। त्रेतायुग ।।

कपिल

भार्गव नन्हे सुबाहु को लिये वन की ओर प्रस्थान कर चुका था। उसने एक क्षण के लिये पलटकर नगर की ओर देखा। जलता हुआ नगर अब तक स्पष्ट दिखायी दे रहा था, उसका भस्म होता घर दूर से ही दिखायी दे रहा था। जिसमें जल रहे थे उसके माता पिता के अवशेष और सुवर्णा की मृतदेह भी। वह अत्याधिक अशक्त हो चुका था। उसमें इतनी शक्ति भी नही बची थी कि वह उनका रीति-रिवाजों से अंतिम संस्कार कर पाता। किन्तु इस समय पूर्ण नगर ही एक विशालकाय चिता के समान सुलग रहा था। उसे अब उसके परिवार के एक मात्र अंश सुबाहु की चिंता थी। उसे भय था कि ताड़का कहीं पुन: ना आ जाये। वह उससे लड़ पाने की अवस्था में नही था। इसलिये भार्गव ने वनमार्ग से सुबाहु के पिता के आश्रम की ओर बढ़ना ही उचित समझा।

रात्रि अपनी चरम पर थी। वातावरण में विभिन्न जीवों के स्वर सुनाई दे रहे थे। सुबाहु के अश्रु सूख चुके थे। वह निर्विकार भाव से भार्गव का हाथ थामे चला जा रहा था। भार्गव के मन में विचारों की आंधि चल रही थी। अत्याधिक रक्तस्त्राव, एवं तनाव के कारण वह अशक्त होते जा रहा था। उसे मार्ग स्पष्ट दिखायी नहीं दे रहा था।

“नही! अभी नही! मैं बेसुध नही होना चाहता, सुबाहु की सुरक्षा मेरा कर्तव्य......'' और इसी के साथ भार्गव के पग लड़खडायें और वह भूमि पर बेसुध होकर गिर पड़ा। नन्हा सुबाहु स्तब्ध रह गया। अब तक चुप सुबाहु अपने मामा को गिरते देख रो पड़ा। वह दौड़ते हुए बेसुध भार्गव के पास आया। उसने अपने हाथों से उसे झिंझोड़ा।

“मामा! उठो मामा! ऐसा मत कीजिये। मुझे भय लग रहा है मामा।” सुबाहु रोता रहा, भार्गव के कानों में सुबाहु के शब्द पड़ रहे थे, उसे वह रोता बिलखता दिखायी दे रहा था, किन्तु भार्गव का शरीर किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया करने में असमर्थ था, उसकी विवशता उसके नेत्रों से अश्रु रूप में निकली।

“नाना जी, नानी! माँ, बाबा! सब चले गये मामा। आप भी चले जाओगे तो मैं किसके साथ रहूँगा।” सुबाहु आर्तनाद करता रहा, किन्तु भार्गव की ओर से किसी प्रकार का उत्तर नही मिला। उसी क्षण एक गुर्राहट हुई जिसे सुनकर सुबाहु भय से कांप उठा। उसने वन की ओर

देखा, वह गुर्राहट उसके समीप ही झाड़ियों के मध्य से आ रही थी। झाड़ियाँ हिली और वहाँ से एक विशालकाय बाघ निकला। उसके मुख से गुर्राहट निकल रही थी। बाघ अत्यंत विशालकाय और भयानक था, उसकी दृष्टि सुबाहु पर ही थी। वह लार टपकाते हुए संथर गति से सुबाहु की ओर बढ़ा। बाघ को देखकर सुबाहु के प्राण सूख गये,। अर्धमूर्छित भार्गव विवशता से बाघ को आते देखता रहा था, उसकी आत्मा तड़प उठी।

"नहीं! विधाता इतना क्रूर कैसे हो सकता है? क्या मैं सुबाहु को उस बाघ का भोजन बनते देखने के लिये ही जीवित हूँ? विधाता या तो मुझमें इतनी शक्ति भर दें कि मैं इस बाघ से सुबाहु की रक्षा कर सकूँ, या फिर इसी क्षण मुझे मृत्यु दे दे, ताकि मैं यह हृदय विदारक दृश्य न देख सकूँ।" भार्गव का मन विनती कर उठा।

बाघ अपनी गति से बढ़ता रहा। अचानक से सुबाहु उठ खड़ा हुआ। उसने भार्गव की कमर से बंधी तलवार को देखा और उसकी ओर हाथ बढ़ाया। तलवार खींच कर निकाल तो ली, किन्तु तलवार का भार नन्हे सुबाहु से न उठ पाना था और न उठ पाया तो वह चीख पड़ा। बाघ उत्तेजित हो गया था, उसने अपने पैरों को पीछे की ओर मोड़ा और एक उछाल के लिये स्वयं को तैयार किया। सुबाहु पूर्ण बल लगा कर तलवार उठाने का प्रयास करता रहा और बाघ ने एक कर्णभेदी दहाड़ के साथ उछाल भरी, सुबाहु से तलवार उठी ही थी कि बाघ उसके ऊपर आ गिरा। सुबाहु के गिरने से तलवार सीधी हो गयी और बाघ के सीने से आर पार हो गयी। बाघ के प्राण पखेरू उड़ गये, किन्तु सुबाहु बाघ के भारी शरीर के तले दबा हुआ था। वह बाघ के शरीर से बहते रक्त से नहा गया था, वह व्यग्रता से वहां से निकलने का अपर्याप्त प्रयास करने लगा। भार्गव ने यह दृश्य देखकर ईश्वर को धन्यवाद दिया और बेसुध हो गया। भयभीत सुबाहू किसी प्रकार निकलने का प्रयास करता रहा, किन्तु असफल रहा। एक बाघ के अपने ऊपर होने का अहसास उसे कंपाये दे रहा था। उसने पुन: एक बार प्रयास किया और इस बार वह बाघ के तले से खुद को निकालने में सफल हुआ। बाघ में अभी कुछ प्राण शेष थे, वह करवट लेकर पलटा। सुबाहु ने उसे करवट लेते देखा तो ना जाने कहां से उसमे इतना साहस आ गया कि वह सीधे तलवार पर झपट पड़ा और उस धंसी हुई तलवार को अपनी सम्पूर्ण शक्ति से और अंदर तक धंसा दिया, बाघ ने एक भयंकर डकार ली और सदा के लिये शांत हो गया।

सुबाहु ने चैन की सांस ली और भार्गव की ओर बढ़ा। भार्गव बेसुध था। वह बस उसे देखता रहा। अचानक उसे कुछ पद्चापों के स्वर सुनाई दिये जो वन मार्ग के दूसरे छोर से आ रहे थे। वह अनजानी आशंका से भयाक्रांत हो गया। उस नन्हे बच्चे ने आज जीवन का इतना वीभत्स रूप देखा था कि उसे अब हर आहट से भय होने लगा था। पदचापों के स्वर तीव्र होने लगे और नजदीक आने लगे। सुबाहु ने तुरंत मृत बाघ की ओर दौड़ लगा दी। उसे वह तलवार चाहिये थी जो बाघ के शरीर में धंसी हुई थी।

***

वह कपिल था, जो एकऋषि था। वह अपने साधु एवं ऋषि दल के संग वहाँ से निकला था। कपिल की आयु पैतालीस वर्ष के आसपास थी। सिर मुंडाया हुआ और चौड़ा ललाट। ललाट पर त्रिपुंड और अंग पर गेरुआं वस्त्र। उसका मुख किसी ऋषि-मुनि सा कम अपितु किसी योद्धा के समान अधिक प्रतीत होता था। कपिल के संग बारह शिष्यगण थे। वे बाघ की मर्मांतक चीखें सुनकर वहाँ पहुंचे थे। वहाँ पहुंचकर उन्हें आश्चर्य का झटका सा लगा। दृश्य ही ऐसा था। एक नन्हा बालक विशालकाय बाघ के शरीर पर खड़ा था और उसके शरीर से धंसी हुई तलवार खींचने का प्रयास कर रहा था। समीप ही एक युवक अचेतावस्था में पड़ा हुआ था। कपिल एक क्षण के लिये अचंभे में पड़ गया, किन्तु तत्काल ही वस्तुस्थिति को समझते हुए सहायता के लिये आगे बढ़ा।

“ठहर जाइये! कोई आगे नही आयेगा।” चीखते हुए सुबाहु ने पूर्ण शक्ति से तलवार बाघ के शरीर से खींच निकाली और बड़ी मुश्किल से पूर्ण शक्ति का प्रयोग करते हुए उनकी ओर तान दी। कपिल उस बालक का यह रूप देखकर हतप्रभ रह गया।

“बालक! घबराओ नही हम सहायता करने आये हैं।” कपिल ने सुबाहु को समझाया, किन्तु सुबाहु पर समझाने का कोई भी असर नही हुआ।

“देखो बालक! हठ मत करो, तुम्हें भी भलीभाँति ज्ञात है कि इस वजनी तलवार को लेकर तुम दो पग भी नही चल पाओगे। इसलिये इसका भय दिखाना व्यर्थ है। तुम्हारे साथ वाले युवक को सहायता की आवश्यकता है, उसे देखने दो। हम उपचार करेंगे, समय रहते उपचार करने दो अन्यथा विलंब होने पर इनके प्राण बचाना असंभव हो जायेंगे।” कपिल ने भार्गव की ओर संकेत करते हुए कहा। सुबाहु ने कुछ नहीं

कहा वह चुपचाप खड़ा रहा। उसे खड़ा देखकर उसकी मौन स्वीकृति समझ कपिल ने अपने शिष्य को संकेत किया। एक दुबला-पतला शिष्य अपनी पोटली लिये आगे बढ़ा और झुककर भार्गव की नाड़ी की जांच की।

"गुरु जी! नाड़ी संथ होती जा रही है, त्वचा भी अत्याधिक ठंडी पड़ रही है। इन्हें शीघ्र ही आश्रम ले जाना होगा। मैं इन्हें तत्काल कुछ क्षण के आराम हेतु औषधि दे रहा हूँ, उससे रक्त प्रवाह बना रहेगा।" कहकर बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये उस शिष्य ने अपने झोले से एक छोटा सा मिट्टी का सुराही नुमा पात्र निकाला और उसका सर भार्गव के मुख में डाल कर औषधि की कुछ मात्रा उसके भीतर डाली और दूसरे शिष्यों को संकेत किया।

चार शिष्य आगे बढ़े और भार्गव के हाथों और पैरों को पकड़कर आराम से उठा लिया। अब वे एक निश्चित दिशा की ओर बढ़ चले। कपिल सुबाहु के पास आया, उसके सर पर हाथ फेरा।

"चिंता की कोई आवश्यकता नही! तुम अब सुरक्षित हाथों में हो बालक, हमारे साथ चलो।" कपिल ने उसका हाथ पकड़ा और दूसरे हाथ में भार्गव की तलवार थाम ली।

"इसे मैं थाम लेता हूँ।" कपिल ने कहा तो सुबाहु ने प्रतिरोध नही किया, अब वह शिथिल हो गया था।

***

भार्गव के नेत्र खुले। उसके अंग-अंग में पीड़ा हो रही थी, उसने अपने आस-पास वातावरण का अवलोकन किया। वह एक कुटी में था। कुटी का आंगन लेपा हुआ था। सुगंधित फूलों से वातावरण महक रहा था। बाहर से लकड़ियों के तड़कने के स्वरों के साथ ही मंत्रोच्चार के स्वर सुनाई पड़ रहे थे। वह उठकर बैठ गया, शरीर में अब भी पीड़ा हो रही थी। किन्तु उसे पीड़ा से अधिक चिंता सुबाहु की थी।

"सुबाहु..." भार्गव ने सुबाहु को पुकारा। उसी समय कुटी में कपिल ने प्रवेश किया। भार्गव को उठकर बैठा देख कर वह प्रसन्न हुआ, तुरंत वो भार्गव के पास पहुंचा और उसे लिटा दिया।

"अरे योद्धा! विश्राम करो। अभी तुम्हारा शरीर पूर्णतया स्वस्थ नहीं हुआ है। तुम्हें अभी भी विश्राम की आवश्यकता है। इस औषधि का सेवन करो।" कहकर कपिल ने उसके मुख में सुराहीनुमा पात्र लगाया, भार्गव ने बिना किसी प्रतिरोध के उस औषधि का प्राशन किया। औषधि

अत्याधिक कड़वी थी, किन्तु भार्गव के मुख पर कोई भाव नही दिखा। औषधि पीने के पश्चात उसने अपने शरीर को देखा। शरीर के हर अंग पर पट्टियां बंधी हुई थी।

“सुबाहु..?”

“चिंता न करो! बालक ठीक है, वह आंगन में है। बस अभी भी अवसाद में है, उसे कोई शारीरिक चोट नहीं लगी है। किन्तु अद्भुत साहसी बालक है, सम्पूर्ण आश्रम में उसी की चर्चा है। इतने विशालयकाय बाघ का एक नन्हे बालक द्वारा मृत्यु को प्राप्त होना सबके लिये अचंभे का विषय है।” कपिल ने भार्गव की चिंता कम करने का प्रयास किया।

“मुझे उससे मिलना है।” भार्गव ने कहा, तो कपिल ने हामी भर दी।

“मैं यहाँ कब से हूँ?” भार्गव ने उत्सुकतावश प्रश्न किया।

“तुम एक सप्ताह से बेसुध थे योद्धा।” कपिल ने कहा तो भार्गव के मुख पर आश्चर्य के भाव उपस्थित हुए।

“मामा!” तभी सुबाहु आ पहुंचा और भार्गव को देख कर उससे लिपट गया। भार्गव ने उसे अपने बाहुपाश में जकड़ लिया। दोनों के नेत्रों से अश्रु बह रहे थे।

“आश्रम में आने के पश्चात यह बालक आज प्रथम बार कुछ बोला है। मुझे जानने की तीव्र इच्छा है कि तुम्हारी यह अवस्था कैसे हुई? क्या उस बाघ से हुए युद्ध के कारण ?” कपिल ने अनुमान लगाया और वो समीप ही बैठ गया।

“यह सब उस राक्षसी ताड़का के कारण हुआ है, ऋषिवर।” भार्गव के नेत्रों में प्रतिशोध धधक उठा।

“ताड़का?” कपिल को उत्सुकता हुई। तब भार्गव से सारी कहने संक्षेप में सुना दी। कपिल के मुख पर सहानुभूति के भाव आये। सम्पूर्ण कहानी जानने के पश्चात वह उठा और उसने सुबाहु के सिर पर स्नेह से हाथ फेरा।

“मुझे पूर्ण सहानुभूति है भार्गव! अब आगे क्या विचार है? कहाँ जाओगे?” कपिल ने प्रश्न किया।

“मैं ताड़का से प्रतिशोध लूँगा! उसका अंत कर दूंगा।” भार्गव के स्वर में क्रोध था।

“संयम रखो भार्गव! क्रोध तुम्हारे स्वास्थ के लिये अभी ठीक नही। तुम जब तक चाहो इस आश्रम में रह सकते हो। किन्तु क्या तुम सच में ताड़का का सामना करने की स्थिति में हो? ताड़का का अंत कर पाओगे?”

"मैं अपना पूर्ण प्रयास करूंगा! या तो वह राक्षसी जीवित रहेगी अथवा मैं।"

"यदि तुम्हें कुछ हो गया तो सुबाहु का क्या होगा? इसका तो कोई भी नही बचा तुम्हारे अलावा। क्या तुम इतने निष्ठुर हो, जो अपने प्राणों की आहुति दे दोगे बिना यह विचार किये कि तुम्हारे पश्चात इसकी क्या अवस्था होगी?" कपिल ने पुनः प्रश्न किया, इस बार भार्गव शांत हो गया। कपिल की बात सही थी।

"किन्तु मैं शांत भी तो नही रह सकता।" भार्गव उद्वेलित हुआ।

"मत रहो! किन्तु वस्तुस्थिति का सही-सही अनुमान लगाओ, अपने आप को तैयार करो। प्रतिशोध से कुछ प्राप्त नही होगा। अन्य मार्ग भी हैं जिस से तुम अपने उद्देश्य की प्राप्ति कर सकते हो।" कपिल उठा और भार्गव के कंधो पर अपना हाथ रखा।

"जैसे ?"

"स्वस्थ हो जाओ! समय आने पर सब ज्ञात हो जायेगा, तब तक स्वयं को भी विश्राम दो और सुबाहु को भी संभालो।" कहते हुए कपिल बाहर निकल गया।

***

एक सप्ताह और समाप्त हो चुका था। आज प्रातः से ही आश्रम में चहल-पहल थी। भार्गव अब स्वस्थ हो चुका था। यह कपिल द्वारा दी हुई अनोखी औषधियों एवं भार्गव की दृढ़ इच्छाशक्ति का परिणाम था। सुबाहु आश्रम में सर्वाधिक शांत रहने वाला व्यक्ति था। भार्गव उसकी दशा देखकर दुःखी था। किन्तु वह भलीभाँति जानता था कि दो सप्ताह पहले जो भी हुआ था, सुबाहु के लिये उसका विस्मरण होना अब संभव नही है। वह घटना अब उसके जीवन पर कभी ना समाप्त होनेवाला प्रभाव डाल चुकी थी।

अब वह आश्रम से पूर्णतया परिचित हो चुका था। सुबाहु ऋषिगणों की सेवा एवं आश्रम के कार्यों में हाथ बटाकर यथा शक्ति स्वयं को व्यस्त रखता था। वह शांत अवश्य था, किन्तु सभी जानते थे कि वह अंदर एक सुप्त ज्वालामुखी है, जो फटने के लिये तत्पर हो रहा है। सुबाहु यज्ञ के लिये लकड़ियाँ इकट्ठी कर रहा था। भार्गव सभी आश्रम वासियों को इस तरह दौड़ भाग करते देख थोड़ा विस्मित था। तभी कपिल का आगमन हुआ।

भार्गव ने उसे प्रणाम किया। कपिल मुस्कुरा दिया।

“आज कुछ विशेष दिन है गुरुवर ?” भार्गव ने उत्सुकता वश प्रश्न किया।

“हाँ! आज महर्षि संदीप आने वाले है, अयोध्या से।” कपिल ने उत्तर दिया और सम्पूर्ण आश्रम को एक बार देखा। तैय्यारियों से कपिल संतुष्ट था।

“वे कौन है?” भार्गव ने पुन: प्रश्न किया।

“महर्षि संदीप इस आश्रम के संस्थापक है। उनका अधिकतर समय तीर्थाटनों एवं भ्रमण में ही व्यतीत होता है। इसलिये उनकी अनुपस्थिति में उन्होंने इस आश्रम की देख-रेख मेरे हाथों में सौंप रखी है।” कपिल ने भार्गव की जिज्ञासा शांत की।

अचानक से आश्रम के मुख्य द्वार से एक युवक दौड़ता हुआ आया। वह अत्यंत भयभीत था और उसके शरीर पर जगह-जगह ताजे घाव थे जिसमें से रक्त बह रहा था। वह हांफ रहा था और सीधे कपिल के समक्ष आ कर ही रुका।

“त्रिलोक! यह क्या अवस्था बना रखी है? क्या हुआ? और तुम्हारे साथ नयन भी था ना? वह कहाँ है?” कपिल ने व्यग्रता से प्रश्न किया। उनके मुख पर चिंता की रेखायें झलक रही थी।

“गुरुवर! हम वन के पश्चिमी छोर पर नित्य की भाँति गायों को चरा रहें थे। अचानक चार दानवों ने आक्रमण कर दिया, उन्होंने समस्त गायों को हमसे हस्तगत कर लिया। मैंने और नयन ने बहुत प्रयास किये किन्तु उन शक्तिशाली दानवों से जीत नही पाये, किसी प्रकार बस प्राण बचे रह गये, नयन अब भी गुप्त रूप से दानवों के पीछे है। और मैं आपको सूचना देने चला आया।” त्रिलोक के मुख से बड़ी कठिनाई से यह शब्द निकले। तब तक अन्य शिष्य वहाँ एकत्रित हो गये थे।

“दानव! वन के इस भाग में तो कभी नहीं आते। अचानक कहां से प्रकट हो गये ?” कपिल के मुख पर गंभीरता थी। उन्होंने दूसरे शिष्यों को त्रिलोक के उपचार करने का आदेश दे दिया। तत्क्षण ही चार शिष्य त्रिलोक को उपचार कुटी में ले गये।

“ताड़का द्वारा सम्पूर्ण राज्य एवं सैन्य व्यवस्था को छिन्न-विछिन्न कर देने के कारण ही किंचित दैत्यों ने यहाँ आना आरंभ कर दिया होगा। क्योंकि अब उनका सैनिकों के प्रति भय समाप्त हो गया होगा।” भार्गव ने आशंका व्यक्त की जो परिस्थिति को देखते हुए कपिल को सही लगी।

“दानवों का सामना कैसे करेंगे?” भार्गव ने प्रश्न किया। कपिल ने उसके प्रश्नों का उत्तर देना उचित नही समझा और आश्रम के एक विशेष कक्ष की ओर बढ़ गये। उस कक्ष में जाने की अनुमति किसी को भी नही थी। अन्य शिष्य गणों के लिये वह निषिद्ध क्षेत्र था।

कपिल ने कक्ष में प्रवेश किया। कक्ष में एक छोटा सा अखाड़ा बना हुआ था। एवं भाँति भाँति के लकड़ी के यंत्र बने हुए थे। जो युद्धाभ्यास में प्रयुक्त किये जाते थे। कपिल अखाड़े को पार कर एक मिटटी के बने चबूतरे की ओर बढ़ा जहाँ एक लकड़ी का बक्सा रखा हुआ था। कपिल कुछ क्षण हिचकिचाया और बक्सा खोल दिया। उसमे लाल वस्त्र में लिपटा एक दण्ड रखा हुआ था। दण्ड पर संस्कृत में कुछ शब्द सुनहरे अक्षरों में अंकित थे। दण्ड किसी विशेष लकड़ी का बना हुआ था, जिसे पहचानना कठिन था।

कपिल ने वह दण्ड अपनी पीठ पर बाँधा और कक्ष से बाहर निकल लिया।

“गुरुवर! भार्गव आपके कक्ष से बाहर निकलते ही वन के पश्चिमी छोर की ओर चला गया। उसके हाथ में तलवार भी थी।” एक शिष्य ने कपिल को सूचना दी। कपिल के मुख पर अनिश्चितता के भाव आये।

“....और गुरुवर! क्षमा कीजियेगा किन्तु वह बालक सुबाहु भी अपने कक्ष में और आश्रम में नहीं दिख रहा।” शिष्य ने अपराधबोध से हाथ जोड़े। कपिल ने उसके कंधो पर हाथ रख कर उसे आश्वस्त किया और आश्रम के मुख्य द्वार की ओर बढ़ गया। उसके मुख पर कठोरता और दृढ़ता समान रुप से दिखायी पड़ रही थी।

***

भार्गव वन के पश्चिमी छोर पर था। उसे झाड़ियों के पीछे से स्पष्ट स्वर सुनाई दे रहे थे। उसने तलवार पर अपनी पकड़ मजबूत बनाई और झाड़ियों की ओर बढ़ गया। झाड़ियों के पार एक मैदान था, जहाँ का दृश्य देखकर भार्गव के नेत्रों में अग्नि धधकने लगी। वे चार विशालकाय दानव थे, कद में भार्गव से भी पांच फीट ऊँचे और व्यास में उससे चार गुना भीमकाय आकार। मानो किसी गैंडे को मानवी शरीर प्राप्त हो गया हो। सभी दानव जले हुए धातु के वर्ण से प्रतीत हो रहे थे। शरीर ढंकने हेतु किसी प्राणी की खाल के बने बेढंगे वस्त्र पहने हुए थे। चारों के हाथो में भयंकर और असामान्य आकार के प्राणघातक शस्त्र थे। किसी ने खड्ग, तो किसी ने फरसा, किसी ने भारी शिला को काटकर बनाई हुई गदा, तो

एक दोधारी बेढंगी तलवार थाम रखी थी। वे अपनी ही तंद्रा में मग्न थे। उनके मध्य लकड़ी के लट्ठे से एक शिष्य बंधा हुआ था। वह छटपटा रहा था। उनके समीप ही सारी गायों को एक रस्सी से बांध कर रखा हुआ था।

“मूर्ख! निर्बल सन्यासी। गुप्त रूप से हमारे पीछे था तू। हमें इतना मूर्ख समझ रखा था क्या तूने?” एक दानव दहाड़ा।

“इसे अच्छे से सबक सिखाओ गंड़क! यह उदाहरण बनेगा दूसरों के लिये।” उस दानव ने अपना भारी भरकम पैर शिष्य से बंधे लट्ठे पर रख दिये। शिष्य के प्राण कंठ में अटक गये।

“मैं अपनी भुजाओं से इसका मस्तक उखाड़ लेता हूँ। तुम इसके धड़ को इसी लट्ठ से बाँध कर इसी भूमि में खड़ा करके अपनी सीमा की रूपरेखा तैयार कर लो। यहाँ के निवासी इस मानव धड़ वाले स्तंभ को देखकर समझ जायेंगे कि अब यह स्थान हम दानवों की सीमा में आता है।” कहकर तीसरे ने ठहाका लगाया।

“शीघ्रता करो! इसे लटका दो, फिर आज तो मोटे-ताजे प्राणियों से भोज होगा।” चौथे दानव ने गायों के झुण्ड की ओर देखते हुए लार टपकाई।

और इसी के साथ उनका नेतृत्व करने वाला दानव लकड़ी के लट्ठ की ओर बढ़ा। शिष्य ने प्राणों के भय से अपने नेत्र बंद कर लिये और दानव के विशालकाय हाथ उसके सर की ओर बढ़े।

“ठहर जा दानव!” एक दहाड़ ने उस स्थान को कंपा दिया। शिष्य की ओर बढ़ते हाथ रुक गये और उसने दहाड़ की ओर देखा। वह भार्गव था, उसके नेत्रों में प्रतिशोध की ज्वाला भड़कने लगी थी। दानवों को देखकर उसे ताड़का दिखायी देने लगी थी। अपना श्मशान बना नगर दिखायी देने लगा, अपनी बहन, माँ, पिता, जीजा और मित्र के शव उसके नेत्रों के समक्ष किसी चलचित्र की भाँति दिखायी देने लगे। उसके मुख से फुंफकार और क्रोध की अधिकता से झाग उत्पन हो रहा था। वह कंठ की पूर्ण शक्ति से दहाड़ा और तलवार लहराते दौड़ पड़ा। इससे पूर्व के दानव कुछ समझ पाते भार्गव उनके मध्य पहुँच चुका था, उसकी तलवार के भीषण प्रहार ने एक ही झटके में उस दानव के हाथ की पांचो उंगुलियां काट डाली जिसका हाथ शिष्य का मस्तक उखाड़ने के लिये आगे बढ़ा था। उसके मुख से भयंकर स्वर निकला। वह पीड़ा से दोहरा हो गया और छटपटाने लगा। अब भार्गव ने उसके मस्तक की ओर तलवार चलाई थी कि दूसरे दानव ने अपनी गदा का प्रहार कर दिया। भार्गव ने समय रहते

गदा को चलता देख कर अपनी गति तो नियंत्रित कर ली, किन्तु गदा उसकी अपेक्षा से अधिक दूरी तक मार करती थी जो आंशिक रूप से भार्गव से टकरा गयी और यह आंशिक टकराव भी भार्गव के लिये घातक सिद्ध हुआ। वह उस प्रहार से छह हाथ दूर तक किसी गेंद की भाँति उछल कर जा गिरा। उसका गिरना ही था कि गदाधारी दानव ने उछल कर गदा का भीषण प्रहार भार्गव पर किया, किन्तु क्षण भर में भार्गव ने उछलते हुए अपना स्थान बदला। गदा भूमि से जा टकराई और भूमि के उस भाग के टुकड़े हवा में किसी कांच के टुकड़ों की भाँति उछल पड़े। भूमि में इतना जबर्दस्त कंपन हुआ कि भार्गव के धरा से टकराते ही वह विपरीत दिशा में पुन: उछल कर गिरा और अब दानव ने विक्षिप्तों की भाँति गदा बरसना आरंभ कर दिया। भार्गव धरा पर लेटे-लेटे ही स्वयं को बचाने का प्रयास करता रहा। गदा का प्रहार भले ही वह बचा ले रहा था किन्तु उस गदा के धरा से टकराने पर होने वाले कंपन से वह स्वयं को नहीं बचा पा रहा था। फरसा थामे दानव भी भार्गव की ओर दौड़ पड़ा। एक ही समय में गदा एव विशालकाय फरसे के प्रहार से बचना असंभव था। क्षण भर में भार्गव की मृत्यु निश्चित ही थी।

किन्तु उसी क्षण एक पत्थर गदा धारी दैत्य के नेत्रों पर आ लगा। वह बिलबिला उठा। उसने पत्थर फेंके जाने की दिशा की ओर देखा। वह सुबाहु था, उसने अपने हाथों में पत्थरों का ढेर लिया हुआ था। उसके मुख पर उसकी आयु के विपरीत क्रूरता के भाव थे। भार्गव के पीछे-पीछे वह स्वयं भी चल पड़ा था।

“ये बालक! इसको तो मैं एक ही बार में चबा जाऊँगा।” गदा धारी क्षण भर को भार्गव को भूल ही गया था। उसी क्षण का भार्गव ने भरपूर लाभ उठाते हुए अपनी तलवार का एक भरपूर प्रहार उस दानव की गदा वाली भुजा पर कर दिया। दानव की कलाई कट कर अलग हो गयी और वह पीड़ा की तीव्रता के कारण धरा पर लोट गया। वह लोटने लगा तो ऐसा प्रतीत हुआ मानो कई मदमस्त हाथी एक साथ धरा पर डोल रहें हों।

उसके गिरते ही भार्गव तलवार लेकर उछला और सीधे उसकी छाती के आर-पार कर दी। कुछ क्षण छटपटाने के पश्चात उस दानव ने प्राण त्याग दिये। अपने साथी की यह गत देख बाकी दानव क्रोधित हो गये। फरसा धारी दानव ने फरसा लहराया भार्गव यदि एक क्षण के सौवें भाग में स्वयं को न झुका लेता तो फरसा उसका शीश धड़ से अलग कर देता। फरसा पुन: लहराया किन्तु इस बार भार्गव ने अपनी तलवार को फरसे

के आगे कर दिया। फरसे का प्रहार भीषण था, तलवार उसके हाथों से छूट कर दूर जा गिरी और फरसा धारी ने एक तीव्र लात भार्गव के पेट में दे मारी। इस भीषण प्रहार से भार्गव उछलकर लभगभ पन्द्रह फीट तक जा गिरा। तब तक जिसकी उंगलियाँ कट चुकी थी उस दानव ने अपनी वेदना को भुला कर उसी हाथ की सहायता से भीमकाय शिलाखंड उठा लिया और भार्गव को निशाना बना कर फेंक मारा। उस शिलाखंड के नीचे पीसकर भार्गव की मृत्यु निश्चित थी। किन्तु उसी क्षण मानो आकाश विद्युत् सी चमक उठी हो, इस प्रकार कपिल अपना दण्ड घुमाते हुए भार्गव और उस शिलाखंड के मध्य कूद पड़ा।

कपिल का दण्ड असामान्य रूप से घूम रहा था। उड़ते शिलाखंड पर तीव्र गति से घुमते दण्ड का प्रहार हुआ और वह विशालकाय शिला खंड-खंड हो गयी। उसके टुकड़े हवा में यत्र-तत्र बिखर गये। अब कपिल दण्ड घुमाना छोड़ सीधा खड़ा हो गया, उसके नेत्र दानवों को ही देख रहे थे। इसी मध्य सुबाहु ने लकड़ी से बंधे शिष्य के बंधनों को खोल दिया था। बंधन खुलते ही वे दोनों युद्धक्षेत्र से सुरक्षित अंतर पर जाकर खड़े हो गये थे। अपने प्रहार को खाली जाता देखकर दानव ने पुन: एक विशालकाय शिला उछाल फेंकी। कपिल ने दण्ड को घुमाना आरंभ किया और इस बार स्वयं वह भी आश्चर्यजनक रूप से वह भी हवा में कई फीट उछला और घुमते हुये दण्ड का प्रहार शिला पर कर दिया। इस शिला की गति भी वही हुई।

अब तीनों दानवों ने एक साथ आक्रमण कर दिया। कपिल ने सर्वप्रथम वहाँ बंधी गायों को देखा, फिर भार्गव एवं सुबाहु को देखा और वह दानवों की विपरीत दिशा में दौड़ पड़ा। उसका दण्ड घुमता रहा, उस दण्ड से टकराकर दानवों का हर शस्त्र छितरा जाता था। कुछ ही देर में कपिल दानवों को एक सुरक्षित अंतर तक ले आया। अब वह दानवों से घिरा हुआ था, किन्तु उसके मुख पर एक मुस्कान थी। दानव पुन: झपटे और भीषण प्रहार आरंभ कर दिये, फरसे वाले के फरसे ने अनेक वृक्षों को मध्य से काट ही डाला। कपिल पर वे सभी निरंतर प्रहार कर रहे थे। विशालकाय शिलाखंडो की वर्षा सी हो रही थी, जिसे कपिल हर बार धूल धूसरित कर देता।

“इस प्रकार तो इनसे युद्ध में समय व्यर्थ होता रहेगा। और इनके प्रहार भी नही रुकने वाले। मुझे अब इनका सदैव के लिये ठोस उपाय करना चाहिये।” कपिल ने विचार किया और अपने दण्ड को एक विशेष कोण

में घुमाना आरंभ किया। दण्ड इतनी तीव्रता से घूम रहा था कि वह किसी विशालकाय चक्र के समान प्रतीत होने लगा था। कपिल उसी तीव्रता से दण्ड घुमाते हुए दानवों की ओर दौड़ पडा। दण्ड से अब विद्युत् तरंगे सी निकलने लगी थी।

वो दानवों के समीप पहुँच कर अद्भुत रूप से सामान्य मनुष्य की उछाल से कई गुना ऊँची छलांग भर कर उछला और उसके पश्चात घुमता हुआ दण्ड लेकर धरा से टकराया और दण्ड को धरा पर पटक मारा। उसके दण्ड पटकते ही एक भयंकर विस्फोट की ध्वनि हुई और वे सभी दानव हवा में अनेक हाथ ऊपर तक उछल गये। केवल दानव ही नहीं बल्कि उनके आसपास के पन्द्रह हाथ के क्षेत्र में स्थित हर वस्तु धरा से ऊपर उछल पड़ी थी। वहाँ धूल और कंपन से एक वलय का निर्माण हुआ। उस घुमते दण्ड में न जाने क्या प्रभाव था जिसने एक भीषण ऊर्जा विस्फोट सा प्रहार किया। ऊर्जा की तीव्रता इतनी थी कि उनसे सुरक्षित अंतर पर खड़े भार्गव और सुबाहु तक के शरीर कांप उठे। वृक्षों के पत्ते तक वृक्षों का साथ छोड़ चुके थे।

कुछ ही क्षणों में धूल के कण साफ़ हुए और भार्गव ने कपिल की ओर देखने का प्रयत्न किया। कपिल दण्ड लिये खड़ा दिखा। तीनो दानवों के शरीर उसके समीप ही पड़े थे। भार्गव के नेत्र आश्चर्य से फ़ैल गये, वही स्थिति सुबाहु की भी थी। उन्होंने जो देखा उन्हें उस पर विश्वास ही नहीं हो रहा था।

कपिल जहाँ खड़ा था वहाँ का क्षेत्र आधे हाथ तक गहरा हो चुका था। यह सब उसी झटके का प्रभाव था। भयंकर झटके और कंपन से दानवों की हृदय गति रुक चुकी थी और वे यमलोक की ओर प्रस्थान कर चुके थे। कपिल ने कुछ क्षण उनकी ओर देख कर आँखे मूँद ली और हाथ जोड़कर कोई प्रार्थना की। उसके पश्चात वह भार्गव की ओर बढ़ गया।

“भार्गव! सुबाहु! नयन! गायों को संभालो और आश्रम की ओर चलो।” कपिल ने निर्देश दिया तो तीनों ने गायों को आश्रम की ओर हांकना आरंभ कर दिया। भार्गव कपिल के समीप ही चलता रहा।

“आपने वह कैसे किया?” भार्गव ने प्रश्न किया, सुबाहु का भी ध्यान वहीं था। केवल वह शिष्य जिसका नाम नयन था, उसके मुख पर तनिक भी आश्चर्य के भाव नहीं थे।

“तुमने स्वयं देखा है मैंने यह कैसे किया।” कपिल मुस्कुरा रहा था।

“मेरे कहने का तात्पर्य यह था कि आप तो ऋषि हैं! फिर यह युद्ध कौशल? यह अद्भुत विद्या? यह कैसे संभव है?” भार्गव की उत्सुकता चरम पर थी।

“आश्रम चलो! तुम्हें तुम्हारे सारे प्रश्नों के उत्तर वहाँ मिल जायेंगे।” कपिल ने बस इतना ही कहा, भार्गव भी चुप हो गया।

“गुरुवर! इनके साथ एक और दानव था, जो किसी कार्यवश कहीं चला गया था।” नयन ने तनिक चिंतित होते हुए कहा।

“चिंता न करो! यदि वह आता है तो इन दानवों को देखकर समझ जायेगा कि यह क्षेत्र अब भी उनके लिये सुरक्षित नहीं है।” कपिल ने अपने दण्ड को पुनः पीठ पर बांधते हुए नयन से कहा।

उनके ओझल होते ही एक दानव झाड़ियों में से बाहर निकला। जो मृत हो चुके इन दानवों का पांचवा साथी था। वह यहाँ तब आया था जब भार्गव ने पहले दानव को मार गिराया था। वह कुछ समझता उससे पहले ही कपिल भी पहुँच गया था। जिसके युद्धकौशल को देख कर वह दानव जहाँ था वहीं छिपा रह गया। वह कपिल के अद्भुत प्रहार से विस्मित था।

“एक सामान्य ऋषि ने मेरे चार शक्तिशाली दानव मित्रों को मार गिराया। अद्भुत, दानवराज ‘भद्रक’ को इसकी अतिशीघ्र सूचना देनी चाहिये।” और वह दानव पुनः जहाँ से आया था वहीं बढ़ गया।

***

।। वर्तमान समय ।।

दिशाहीन

त्रिपुंड धारी उर्फ़ बाली एक इमारत के सामने खड़ा था। वह एक आलीशान अपार्टमेंट था। वह काफी देर से उस गेट की ओर ही देख रहा था। उसे किसी की प्रतीक्षा थी। कुछ ही देर में एक कार गेट पर आकर रुकी, जिसे देख उसकी आँखों में एक चमक उभरी। सिक्योरिटी गार्ड ने फ़ौरन गेट खोला और कार अंदर दाखिल हुई, इसी के साथ गेट बंद हो गया। बाली के शरीर में मानो बिजली सी दौड़ गयी और वह गेट की ओर दौड़ पड़ा। गेट से सटे सिक्योरिटी रूम की दीवार पर उछाल भरी, और आश्चर्यजनक रुप से एक ही छलांग में किसी बंदर की भाँति ही वह उस चारदीवारी के ऊपर चढ़ गया। वह दीवार लगभग बारह फिट की थी जिसे पार करना किसी भी सामान्य मनुष्य के बस की बात नहीं थी।

बाली ने अपना हैट सीधा किया और पार्किंग लॉट में पार्क होती उस कार को देखा। कार में से एक व्यक्ति निकला। उसने एक नीली पोलो टी शर्ट और ट्रैक पहन रखी थी। वह एक हृष्ट पुष्ट व्यक्ति था। किसी रेसलर से कम तो नही लगता था। सर पर बाल नदारद थे, एकदम गंजा। वह कार से निकला और कुछ पैकेट्स निकाल कर एक हाथ में लेकर, दूसरे हाथ से कार का डोर लॉक किया। और लिफ्ट की ओर बढ़ गया। उसने लिफ्ट में प्रवेश किया। उसके लिफ्ट में प्रवेश करते ही बाली दीवार से कूद पड़ा और काम्प्लेक्स में बने बगीचे में खुद को छिपाता हुआ जीने की ओर बढ़ा। उसने फुर्ती से सीढियाँ चढ़नी आरंभ की। उसकी गति गजब थी, एक बार में चार-चार सीढियां पार कर लेता था। वह हर मंजिल पर लिफ्ट के साथ ही साथ पहुँच रहा था। और आखिरकार सातवीं मंजिल पर लिफ्ट रुकी।

बाली सीढियों की ओट में खड़ा हो गया। लिफ्ट खुली और वह गंजा व्यक्ति बाहर निकला। हर फ्लोर पर दो ही फ्लैट्स थे। गंजे ने अपने फ़्लैट के दरवाजे को अनलॉक किया और अंदर प्रवेश किया ही था कि बाली दरवाजे पर आ खड़ा हुआ। बाली का चेहरा अब भी हैट की वजह से ढंका हुआ था। गंजे की नज़रें उससे मिली ही थी कि बाली ने बंद होते दरवाजे पर जोरदार लात मारी और दरवाजा खुल गया! उसी के साथ गंजा भी सोफा पलटते हुए फर्श पर जा गिरा। उसके हाथ का पैकेट फर्श पर गिर कर फट गया। उसमे खाने-पीने का सामान था जो अब बिखरा

पड़ा था। बाली ने घर के अंदर प्रवेश किया और खुद ही दरवाजा लॉक कर दिया।

गंजा अधेड़ उम्र का था। उसका चेहरा अब स्पष्ट दिखायी दे रहा था, जिस पर भय या घबराहट के कोई भाव नही थे। उसका होंठ फट गया था। उसने हाथ से होंठ से बहता खून पोंछा।

“ओह! तुम हो। मुझे तुम्हारे आने की पूरी उम्मीद थी।” कहते हुए वह उठ खड़ा हुआ और सामान्य होने का प्रयास करने लगा।

“मेरे सामने इस तरह से खुद को छिपाने की जरूरत नहीं है बाली! या मैं तुम्हें तुम्हारे असल नाम से पुकारूँ ‘अ..’”

“तुम वह अधिकार खो चुके हो मटुक शास्त्री। तुम्हारे लिये मैं बाली ही हूँ।” बाली का सर्द स्वर निकला। उसने गंजे को मटुक कहकर संबोधित किया।

मटुक केवल मुस्कुराया।

“यहाँ सर्दी नहीं है! कोट वगैरह उतार कर आराम से बैठ जाओ। मैं तुम्हारे लिये कॉफ़ी बनाता हूँ।” मटुक ने कहा और बिखरा सामान उठाने लगा। बाली अपनी जगह खड़ा रहा। उसने अपना हैट उतार दिया, किन्तु हैट के नीचे उसने वही त्रिपुंड धारी नकाब पहन रखा था। मटुक ने कुछ ही देर में सारा सामान बटोर लिया और यथावत रख लिया। अब वह कॉफ़ी मशीन की ओर बढ़ा।

“औपचारिकता की कोई आवश्यकता नही है! मुझे कॉफ़ी की आवश्यकता नहीं है।” बाली ने मुख से पुन: कठोर स्वर निकला। जिसे मटुक ने अनसुना कर अपना काम जारी रखा।

“ओह कम ऑन! बाहर का मौसम देखो। कॉफ़ी तो बनती है इस मौसम में और मैं कोई औपचारिकता नहीं निभा रहा हूँ। तुम बैठ क्यों नहीं जाते सोफे पर। अपने आप को आराम दो। बड़ा लंबा सफर तय करके आये हो तुम।” मटुक ने उसे सोफे की ओर बैठने का इशारा किया।

“मेरा सफर अभी आरंभ ही हुआ है।” बाली ने कहा।

“चलो कॉफ़ी रेडी हो गयी।” मटुक ने उसे पुन: अनसुना किया और कॉफ़ी को दो कप में निकाल कर एक कप उसकी ओर बढ़ा भी दिया। बाली ने एक क्षण उसे देखा और कप थाम लिया।

“घबराओ मत! जहर नहीं है इसमें।” कहकर मटुक ने एक सिप लिया।

“जहर होगा भी तो वह उस जहर कम ही होगा जो तुम्हारे अंदर है।” बाली ने कॉफ़ी का मग फूलदान के टेबल पर रख दिया।

“पुरानी बातों को भूल जाओ बाली! मैं जानता हूँ तुम्हारे लिये उसे भूलना कठिन है। किन्तु तकलीफों को याद रखने से तकलीफें कम नही होती। उन्हें भूलना ही पड़ता है।” मटुक के स्वर में गंभीरता थी। वह घर में चहलकदमी कर रहा था। बाली ने पहली बार उस शानदार फ़्लैट का निरीक्षण किया। कीमती सोफे, महंगे फर्नीचर, शानदार और डिजाइनर इंटीरियर, और एक शानदार बुक शेल्फ जो कमरे की दीवार पर स्थित थी। बुक शेल्फ में दुनिया भर के प्रसिद्ध लेखकों की मोटिवेशनल पुस्तकें करीने से सजाई हुई थी।

“आजकल वैचारिक पुस्तकों में रुचि अधिक हो गयी है?” बाली ने एक ही विषय की अनेक पुस्तकों को देखकर कहा। मटुक अपने बुक शेल्फ की ओर बढ़ा। और पुस्तकों को सहलाने लगा।

“अकेलेपन में यही साथ देती हैं बाली! यह सब कुछ सहना इतना आसान नही था।” मटुक ने एक मोटी पुस्तक उठाई और पन्ने पलटने लगा।

“मैंने माइकल को मार दिया।” बाली कहा।

“उसका यही अंजाम था। मुझे हैरानी नही है, जो किया है उसे उसी की सजा मिली है।” मटुक ने पुस्तक से ध्यान ही न हटाया और पन्ने पलटने लगा।

“तुम्हें क्या लगता है? तुम केवल इन मोटी-मोटी पुस्तकों को पढ़कर, इनकी आड़ लेकर अपने पापों की ग्लानि से स्वयं की आत्मा को भ्रमित कर लोगे?” बाली गुर्रा रहा था।

“गलत! यह पुस्तकें मुझे शांति देने के लिये नही है बाली, यह तो तुम्हारी शांति के लिये है।” इतना कहते ही मटुक ने पुस्तक के बीच बने खांचे से एक पिस्तौल निकाल कर बाली की ओर गोलियाँ चला दी। किन्तु बाली पिस्तौल के ट्रिगर दबने से पहले ही उछल चुका था। गोलियाँ दीवार से टकराकर छितरा गयी। इसी के साथ उसने फुर्ती से टेबल से फूलदान उठा कर मटुक पर दे मारा जिससे बचने के लिये मटुक झुका ही था कि बाली छलांग लगा कर उसे दबोचते हुये, सीधे सोफे को तोड़ कर फर्श पर आ गिरा। अब मटुक बाली के शिकंजे में था। मटुक ने अपनी कुहनी से बाली मुंह पर प्रहार किया जिससे वह क्षण भर को विचलित हुआ ही था कि अपने दोनों पैरों पर बाली को उठा कर उसने

छत की ओर उछाल फेंका और खुद पिस्तौल की ओर बढ़ा। बाली फर्श से आ टकराया। मटुक को पिस्तौल की ओर बढ़ता देखकर सोफे की लकड़ी का टुटा हुआ हिस्सा मटुक के हाथो पर दे मारा। लकड़ी से उभरी हुई कील मटुक की हथेली से पार हो गयी और वह बिलबिला उठा। किन्तु अगले ही क्षण उसने उस लकड़ी को निर्दयता से अपनी हथेली से खींच कर निकाल फेंका और लेटे-लेटे ही बाली के चेहरे पर अपने पैरों से प्रहार कर दिया। अकस्मात हुए इस प्रहार से बाली के नकाब पर लाल रेखाएं स्पष्ट दिखायी देने लगी। जो प्रमाण थी उसके बहते रक्त का। इससे पहले की बाली संभलता मटुक उछला और बाली की गर्दन दबोच कर उस पर सवार हो गया। मटुक की शक्तिशाली भुजाओं की पकड़ में बाली छटपटा उठा।

“क्षमा करना बाली! काश मैं तुम्हें समझा सकता। हम सभी भटके हुए थे बाली। हमारा उद्देश्य दिशाहीन था। उन शक्तियों का क्या उपयोग जिनका प्रयोग नही कर सकते? अब तो मुझे सही मार्ग मिला है, अभी तो मैं समझा हूँ कि इस समाज को किसकी आवश्यकता है।” मटुक के स्वर में क्रूरता थी। उसके मुंह से और हाथ से खून निकल रहा था किन्तु पकड़ अब भी कसी जा रही थी। बाली के आँखों के समक्ष अंधेरा छाने लगा। मटुक की पकड़ वह छुड़ा नही पा रहा था। बाली ने मटुक की हथेली के उस हिस्से में ऊँगली धंसा दी जहाँ कील धंसी थी। उसने ऊँगली से उस घाव को और बड़ा कर दिया और क्रूरता से पूर्ण शक्ति लगा कर अपनी अंगुली उसकी हथेली में स्थित कील के घांव को फाड़ते हुए उसके हथेली को ही फाड़ कर रख दिया। मटुक इस भीषण दर्द से चीत्कार कर उठा और उसी क्षण बाली ने अपने सर का प्रहार उसके मुख पर कर दिया जिससे वह दूर जा गिरा। वह अपनी हथेली थामे तड़प रहा था।

बाली उसकी ओर मुड़ा और खड़ा हो गया, उसने अपनी साँसों को नियंत्रित किया। मटुक उसे आगे बढ़ते देखता रहा। अचानक उसका हाथ समीप ही पड़ी पिस्तौल पर जा लगा। उसकी आँखों में एक चमक सी उभरी और पिस्तौल उठा ली। बाली अपनी जगह ठिठक गया।

“म..मुझे प..पता है तुम इस गोली से भी बच जाओगे! इसलिये चिंता मत करो, यह गोली तुम्हारे लिये नहीं है। यह मेरे लिये है।” कहकर मटुक हंसा, उसके रक्त से सने मुख पर हंसी बड़ी ही विकृत दिख रही थी।

बाली कुछ समझता उससे पहले ही मटुक ने अपने माथे से लगा कर ट्रिगर दबा दिया और एक धमाके के साथ उसका भेजा खोपड़ी तोड़कर चीथड़े होकर बिखर गया।

“नहीं!!!” बाली पूरी शक्ति से चीखा और मटुक की ओर दौड़ा।

मटुक निर्जीव शरीर फर्श पर पड़ा था। बाली उसे झिंझोड़ रहा था। वह किसी पागल की भाँति मटुक को झिंझोड़ रहा था।

“तुम इतनी सरलता से नहीं मर सकते मटुक। तुम्हारा अंत यह नही है। तुम्हारे पापों का कोई प्रयाश्चित नही है। तुम्हें लगता है कि यदि आत्महत्या करके तुम अपने पापों से मुक्ति पा लोगे तो यह तुम्हारा भ्रम है मटुक। मुक्त तो तुम्हारा शरीर हुआ है, आत्मा नहीं। और पापों का बोझ आत्मा ढ़ोती है, शरीर नही। तुम्हारी ग्लानि, तुम्हारे कर्म सब तुम्हारे साथ हैं। तुम्हें कभी मुक्ति नहीं मिलेगी कभी नही।” चीखते चिल्लाते बाली ने अचानक ही घृणा से मटुक के शरीर को फर्श पर वापस पटक दिया। वह तुरंत उठ खड़ा हुआ और दरवाजे की ओर बढ़ गया। अब उसके लिये यहाँ कुछ भी नही बचा था।

***

प्रथम प्रहार

१९९८

वह एक हॉल नुमा कमरा था। जहाँ लगभग नौ व्यक्ति एक गोलाकार मेज के चहुँ ओर कुर्सियों पर बैठे थे। वह किसी ऑफिस का मीटिंग अथवा कांफ्रेंस रूम प्रतीत हो रहा था। रोशनी मद्धिम थी, प्रकाश केवल मेज के मध्य पर केन्द्रित था जहाँ एक नक्शा रखा हुआ था। और एक व्यक्ति जिसने महंगा काले रंग का सूट पहन रखा था, जो उन सभी का मुखिया प्रतीत होता था वह अपनी कुर्सी पर बैठने के बजाय वहाँ उपस्थित सभी व्यक्तियों के इर्द-गिर्द चहलकदमी कर रहा था। वहाँ उपस्थित बाकी सदस्यों ने भी सूट ही पहन रखे थे। वे सभी वेशभूषा एवं हावभाव से उद्यमी प्रतीत हो रहे थे।

“आप मेज के बीचोंबीच जो नक्शा देख रहें हैं। उस नक्शे तक पहुँचने के लिये हमने अपने कई साथी खो दिये हैं। इतने वर्षो के बाद भी हमें अब तक मिला है तो केवल यह नक़्शे। यह नक़्शे जिसमे दो राज्य सम्मिलित है। वैसे यह भी ख़ुशी की बात है कि अब हम उस चीज के बहुत ज्यादा करीब पहुँच चुके हैं।” दल प्रमुख की आँखों में चमक थी।

“फेडरिक! क्या तुमने हमें इसलिये यहाँ बुलाया है? तुम चाहते हो कि हम चीफ को यह बताए कि इतने वर्षो की खोज के बाद भी हम केवल एक नक्शे को हासिल कर पाये हैं? जो कि स्पष्ट भी नही है, उस नक्शे में बताये क्षेत्र में दो राज्यों का विस्तार है। क्या हम दो राज्यों के सैकड़ो, हजारों किलोमीटर क्षेत्र से अपनी इच्छित वस्तु को खोज लेंगे? यह तो भूसे के ढेर में से सुई ढूंढ़ने के समान है।” मेज के दाहिनी ओर बैठे व्यक्ति ने नक्शे की ओर इशारा करते हुए दलप्रमुख फेडरिक को कहा। उसके मुख पर कोई उत्साह नही था।

“तुम्हें नहीं लगता कि यह हमारे लिये ख़ुशी की बात है? हम उस वस्तु को वर्षो से विश्व के हर कोने में खोज रहे हैं। किन्तु हमें सफलता नही मिली। अब तो हमें पता है के जिसे हम खोज रहे है उसके लिये सारे विश्व में भटकने की आवश्यकता है ही नही। अब कम से कम हमें हमारी खोज को कहा केन्द्रित करना है यह तो पता है। जिसे तुम भूसे के ढेर से सुई खोजना समझ कर असंभव कह रहे हो। पहले हम उसी सुई की खोज सारे विश्व में कर रहे थे, जो एक समुद्र से सुई की खोज करने के समान था। समुद्र से सुई खोजने से लाख गुना आसान है भूसे के ढेर में से खोज

निकालना। बस अब हमें चीफ तक सूचना पहुंचानी है और अपने सारे एजेंट्स और रिफ़ॉर्मस को इन्फॉर्म करना है।” फेडरिक ने कहा तो हॉल में शांति छा गयी। स्पष्ट था कि सभी उसके कहे से सहमत थे।

***

वे सभी आधुनिक हथियारों से लैस थे। सभी ने एक विशेष प्रकार की वर्दी पहन रखी थी। उनके चेहरे हेल्मेट्स से ढंके हुए थे। वे मिलिट्री के किसी विशेष दस्ते की टुकड़ी के सदस्य प्रतीत हो रहे थे। सभी के पास अत्याधुनिक गन्स थी। वे कुल मिलाकर पन्द्रह की संख्या में थे। वे उस इमारत में प्रवेश कर रहे थे। रात के अँधेरे का और अपनी कुशलता का फायदा उठाते हुए वे किसी परछाई की भाँति इमारत में बिना आवाज किये सफलता के साथ प्रवेश कर चुके थे।

“चीफ! हम इमारत में पहुँच चुके हैं।” दल की अगुवाई करते एक कमांडो ने अपने ट्रांसमीटर पर किसी को रिपोर्ट दी।

“नो टाइम फॉर फोर्मेलिटीज़। इट्स क्लियर ऑर्डर! किल ईच एंड़ एवरीवन।” ट्रांसमीटर पर प्रत्युत्तर में स्वर उभरा। और उस प्रमुख कमांडो ने बाकी कमांडोज़ को पोजीशन लेने का इशारा कर दिया। सभी इमारत के अलग-अलग हिस्सों में बिखर गये। वह इमारत एक बंद हो चुकी फर्म की इमारत थी। वहाँ जगह-जगह बंद पड़ चुके और धूल सने यंत्रो की भरमार थी। सभी कमांडोज़ उन विशालकाय यंत्रो की आड़ में छिपते-छिपाते इमारत के मध्य की ओर पहुंच रहें थे।

“ओके स्टॉप! अब हम इमारत के मध्य में है। और हम अब मीटिंग रूम को साफ़-साफ़ देख सकते हैं। हम पन्द्रह हैं, हथियारों से लैस। हममे से सात कमांडोज़ ही रूम में प्रवेश करेंगे। बाकी के कमांडोज़ रूम के पन्द्रह मीटर के दायरे में पोजीशन लेंगे। हमारा उद्देश्य साफ़ है, कुछ भी हो जाये एक भी एजेंट बचना नही चाहिये।” निर्देश देकर कमांडो चीफ ने एक इशारा किया और सात कमांडोज़ उसके साथ हो लिये। वे सभी अब भी अपने आप को छुपाने का भरपूर प्रयास कर रहे थे। कुछ ही देर में वे सभी उस कमरे के दरवाजे पर खड़े थे।

चीफ ने तीन उंगलियाँ दिखा कर काउंट डाउन शुरु किया। सभी की गने कंधो पर तन गयी और उंगलिया ट्रिगर पर कसने को बेताब होने लगी।

दो!

और एक।

इशारा हुआ और चीफ की शक्तिशाली ठोकर से दरवाजा टूटकर कमरे के मध्य जा गिरा।

***

दरवाजा टूटते ही फेडरिक और उसके साथ ही मौजूद सभी कार्पोरेट्स उछल पड़े। उनकी दृष्टि दरवाजे की ओर स्थित थी। वे वहाँ हथियारबंद कमांडोज़ को देख कर हैरत में थे। चीफ के साथ ही सभी सातों कमांडोज़ ने धड़धड़ाते हुए कमरे में प्रवेश किया और बिना किसी चेतावनी के सभी की बंदूकों ने गोलियाँ उगलनी शुरु कर दी। सभी कार्पोरेट्स अपने-अपने स्थानों से स्वयं को बचाने के लिये यहाँ वहाँ जा छिपे। तीन कार्पोरेट्स गोलियों का शिकार होकर वही मेज़ पर ढेर हो गये।

“ये सभी वहीं हैं ! वे इस नक्शे के पीछे आयें हैं। सब के सब पोजीशन ले लो।” फेडरिक ने चीखते हुए कहा और अपने सूट के भीतर से गन निकाल कर टेबल की आड़ लेते हुए कमांडोज़ की ओर फायर कर दिया। किन्तु उसकी बदनसीबी कि उसकी चलाई गोलियाँ दीवार और मेज से टकराकर व्यर्थ हो गयी।

“फायरिंग रुकनी नही चाहिये।” चीफ गरजा और कमांडोज़ ने छिपे हुए कार्पोरेट्स की आड़ की ओर निशाना बना कर अंधाधुंध फायरिंग आरंभ कर दी। बेतहाशा होती गोलाबारी से कमरा अस्तव्यस्त हो गया। धुंआ, उड़ती फ़ाइलें, बिखरते कागजों के टुकड़े, सोफे और कुर्सियों के उड़ते चिथड़ों से पूरा कमरा भर गया था। फेडरिक जमीन पर लेटा रहा। वह अपनी आँखों से बाकी कार्पोरेट्स के छलनी होते और रक्त में नहाते शरीरों को देखता रहा। वह बस लेटा रहा, कुछ ही क्षणों में वहाँ मौत की शांति छा गयी थी। वहाँ उपस्थित सभी कार्पोरेट्स अब मर चुके थे। हर एक के शरीर में असंख्य गोलियों ने पनाह ली हुई थी। किसी की भी शिनाख्त कर पाना असंभव सा था अब।

कमांडो चीफ़ ने इशारे से फायरिंग रोकने के निर्देश दिये।

“स्टॉप! सभी एजेंट्स मारे जा चुके हैं। केवल एक को छोड़कर।” चीफ ने अपनी गन का रुख फेडरिक की ओर किया जो अब भी टूटी हुई मेज और अलमारी के पीछे था। उसने एक नजर वहाँ पड़ी सभी लाशों को देखा। वह आलीशान कमरा अब नर्क सा प्रतीत हो रहा था। आग, धुंआ और दीवारों पर चारों ओर बस खून ही खून। फेडरिक ने कमांडोज़ की आहट सुनी और सतर्क हो गया। उसकी आँखों की पुतलियाँ मानों फैलने सी लगी थी। उसका शरीर कांप रहा था। मुंह से गुर्राहट निकलने

लगी थी। अचानक से वह उठ खड़ा हुआ। उसके खड़े होते ही चीफ एक पल को स्तब्ध हुआ और इसी क्षण फेडरिक ने अद्भुत शक्ति का प्रदर्शन करते हुए उस भारी अलमारी को किसी खिलौने की भाँति उठाकर चीफ़ की ओर उछाल दिया। चीफ ने फुर्ती दिखाते हुए यदि उछाल ना भरी होती तो उस अलमारी के नीचे दबकर उसकी मृत्यु निश्चित थी। अलमारी इतनी शक्ति से फेंकी गयी थी कि वह कमरे की दीवार तोड़ते हुए बाहर जा गिरी। कमरे के बाहर पोजीशन लिये हुए बाकी के कमांडोज़ की आँखे यह दृश्य देखकर हैरत से फ़ैल गयी।

“रिफ़ॉर्मर! यहाँ एक रिफ़ॉर्मर है।” सभी के रिसीवर्स पर चीफ की आवाज गूंजी।

सभी कमांडोज़ ने कमरे को घेर लिया। फेडरिक अपने स्थान पर ही खड़ा रहा। उसके चेहरे का रंग बदलता सा प्रतीत हो रहा था। कमांडोज़ उसमें आते इस अद्भुत परिवर्तन को मुंह बायें देख रहे थे। फेडरिक के मुंह से अब गुर्राहट निकल रही थी। उसके शरीर का आकार बढ़ने सा लगा। उसका सूट भी फटने लगा था। फेडरिक के चेहरे पर नीली नसें उभरने लगी थी जिससे उसका चेहरा वीभत्स होते जा रहा था। आँखों की पुतलियाँ असामान्य रूप से फ़ैल कर नीली पड़ चुकी थी। फेडरिक के मुंह से झाग निकलने लगे, उसके हाथों पर खुरदुरे शल्क उभरने लगे थे। जो देखते ही देखते उसके सारे शरीर पर उभरने लगे थे। उसकी हथेलियाँ असामान्य रूप से चौड़ी हो चुकी थी और अब उसका चेहरा उन हरी शल्कों से भरा हुआ था। वह अब मनुष्य कम बल्कि मनुष्य के रूप में कोई मगरमच्छ ज्यादा प्रतीत होने लगा था। मानो उसके भीतर कोई मगरमच्छ हो जो उसके शरीर को फाड़कर बाहर आने को उतारु था। कुछ देर तक उसकी चीखें और गुर्राहटों के साथ बदलाव का यह दौर जारी रहा। अब फेडरिक ने गुर्राना बंद कर दिया था।

“फायर!” चीफ के आदेश ने कमांडोज़ को हैरानी के सागर से बाहर निकाला और उन्होंने फायरिंग शुरू कर दी। लेकिन फेडरिक आगे बढ़ता रहा। गोलियाँ उसके शरीर में धंस अवश्य रही थी किन्तु वो उसपर कुछ ख़ास प्रभाव नही डाल रही थी। फेडरिक ने अपने स्थान से छलांग लगायी और तीन कमांडोज़ से जा टकराया और सभी कमरे की दीवार तोड़ते हुए बाहर जा गिरे। उनके बाहर आते ही, पहले से पोजीशन लिये कमांडोज़ की गन्स का रुख फेडरिक की ओर हो गया। किन्तु वे चला नही सकते थे

क्योंकि फेडरिक के साथ उनके तीन कमांडोज़ भी अर्धबेहोशी की अवस्था में पड़े थे। फेडरिक ने एक नजर चारों ओर देखा और भयंकर रूप से गुर्राया।

उसने अपने समीप ही पड़े कमांडोज़ की ओर देखा और और एक उछाल भरी। इस उछाल के बाद वह कमांडोज़ के सीने पर सवार हो जाता जिसका परिणाम मृत्यु के अलावा कुछ और हो ही नहीं सकता था।

किन्तु इसी क्षण कमरे से चीफ दौड़ते हुए बाहर आया और उसने फेडरिक की ओर छलांग लगायी और उसे नीचे गिरने से पहले अचेत कमांडोज़ से दूर ले जा गिरा। कमांडोज़ तो बच गये थे किन्तु अब चीफ फेडरिक से गुत्थमगुत्था था। फेडरिक सामान्य मनुष्य होता तो बात अलग होती किन्तु वह एक विचित्र पशुमानव में परिवर्तित हो गया था। जिसकी शक्ति अद्भुत थी। फेडरिक के भयंकर घूंसे ने चीफ का हेलमेट ही तोड़ कर रख दिया और चीफ फर्श पर जा गिरा। चीफ ने उसी अवस्था में गन का रुख फेडरिक की ओर किया ही था कि फेडरिक उसके सीने पर सवार हो गया और चीफ की गन वाले हाथ को अपने घुटनों के नीचे दबा दिया। चीफ दर्द से चीख पड़ा। बाकी कमांडोज़ असमंजस की स्थिति में थे यदि वे फायरिंग करते तो चीफ की जान को भी खतरा होता। इसके पश्चात भी कुशल निशानेबाज कमांडोज़ ने फेडरिक की पीठ और सीने को निशाना बना कर गोलियाँ दागी। फेडरिक दर्द से चिंघाड़ उठा किन्तु फिर उसे चीफ़ की गर्दन ही दबोच ली। चीफ कसमसाया फेडरिक की पकड़ अतिमानवीय थी। चीफ की मृत्यु कुछ क्षणों में ही निश्चित थी।

“तुम हमें रोक नहीं सकते। अब समय आ चुका है, सब बदल चुका है। अब परिवर्तन निश्चित है। अब इस दुनिया को हमारी शक्ति का अंदाजा हो जायेगा, उन्हें पता चल जायेगा कि इस दुनिया पर राज करने का हक केवल हमें है केवल हमें।” फेडरिक और कुछ बोलता उससे पहले ही चीफ ने बाएं हाथ से अपनी कमर में खोंसी हुई पिस्तौल निकाल कर उसकी नाल फेडरिक के मुंह में घुसा दी। फेडरिक की आँखे चौड़ी हुई।

“तुम लोगो की सबसे बड़ी कमी पता है क्या है?” चीफ ने प्रश्न किया और उत्तर की प्रतीक्षा किये बगैर ही ट्रिगर दबा दिया। एक धमाके के साथ फेडरिक का मस्तिष्क खोपड़ी तोड़ कर बाहर निकल आया और उसके प्राणपखेरू उड़ गये। फेडरिक के मृत शरीर को चीफ ने अपने ऊपर से बड़ी मुश्किल से हटाया।

“तुम लोग लड़ने के वक्त बहस में समय व्यर्थ करने लगते हो।” चीफ ने फेडरिक के मृत शरीर की ओर देख कर स्वयं ही प्रश्न का उत्तर दे दिया। चीफ ने फौरन स्वयं को संभाला और उठ खड़ा हुआ। कमांडोज़ अब कमरे के भीतर दाखिल हो चुके थे। चीफ ने मेज पर पड़े हुए नक्शे को उठाया और अपने यूटिलिटी बेल्ट में रख लिया।

“नाउ! क्लियर एवरीथिंग।” चीफ ने आदेश दिया। इसी के साथ कमांडोज़ हरकत में आये और उन्होंने अपने बैग्स में रखे कुछ कनस्तर निकाले और वहाँ पड़े हर शव पर उससे स्प्रे किया। सभी शवों को एक के ऊपर एक रख दिया गया था। सबसे अंत में तीन कमांडोज़ ने फेडरिक के शव को बाहर से घसीटते हुए कमरे में लाकर शवों के ढेर के बीच रख दिया। जल्द ही उस स्प्रे का छिड़काव कमरे की हर चीज और हर हिस्से पर कर दिया गया।

चीफ ने अपना टूटा हुआ हेलमेट बड़ी मुश्किल से सिर से निकाला जो टूटकर फंस सा गया था। हेलमेट निकालते ही चैन की सांस ली। उसने एक लाइटर जलाया और शवों के ढेर पर फेंक दिया। शव भयानक रूप से भभक उठे। उस स्प्रे में कोई अतिज्वलनशील पदार्थ था जिस कारण क्षण भर में ही सारे शवों ने लपटें पकड़ ली, शवों के साथ ही उस अग्नि की लपटें भयंकर रूप से सारे कमरे में फैलने लगी। उस आग के प्रकाश में चीफ के चेहरे की क्रूरता स्पष्टता से दिखायी दे रही थी। चीफ का केश रहित सर उस अग्नि से मानों प्रकाशमान हो रहा था।

“मिशन ओवर।” चीफ ने ट्रांसमीटर पर किसी को रिपोर्ट दी।

“वेरी गुड़ मटुक! सारे प्रमाण मिटा दो और तुरंत यहाँ सारी डिटेल्स के साथ पहुँचो।” रिसीवर पर उभरने वाला स्वर देवदत्त का था।

***

रक्षादल और नियति

१९९३

सांझ हो चुकी थी। देवदत्त और अथर्व सफेद वस्त्रों में सजे धजे खड़े थे। मानो किसी उत्सव की तैयारी कर रहे हो। कविता के हाथों में आरती की थाली थी, जिसे वह अथर्व के मुख के सम्मुख घुमा रही थी। कविता ने अथर्व के दिव्य मुख को एक बार देखा और और उसके माथे पर तिलक लगा कर कुछ बुदबुदाते हुए उस पर अक्षत की वर्षा की। अथर्व मुस्कुराते हुए अपनी माँ को देखता रहा।

“माँ तुम मेरी आरती क्यों उतार रही हो?” अथर्व ने प्रश्न किया, देवदत्त उसके प्रश्न पर मुस्कुरा दिया।

“तुम एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी संभालने जा रहे हो बेटा। जिसके लिये तुम्हारा जन्म हुआ है। आज तुम तुम्हारे पिता के बताये और ईश्वर के सुनिश्चित किये मार्ग की ओर बढ़कर अपने जीवन को एक सार्थक दिशा देने वाले हो। तुम्हारे जीवन का एक नया अध्याय आरंभ होने जा रहा है, इसलिये।” माँ ने उत्तर दिया और अथर्व के दिव्य और एक अलग ही आभा लिये हुए मुख की बलाए उतारी।

“अब विदा दो कविता! यह अभी कहीं नहीं जा रहा, आज केवल परिचय मात्र है। निश्चिंत रहो।” देवदत्त ने कविता को आश्वस्त किया। वह समझ गया था कविता भले प्रसन्न होने का अभिनय कर रही थी लेकिन उसका ममतामय हृदय विचलित था। वह देवदत्त की ओर मुड़ी और उसके माथे पर एक चौड़ा तिलक लगाया। उसके मुख पर एक अद्भुत गर्व मिश्रित मुस्कान थी।

“तुम्हारी यही मुस्कान मुझे हर संकट से जूझने की हिम्मत देती है कविता। तुम्हारा यही प्रेम अथर्व के साथ भी सदैव प्रेरणा और साहस बन कर उसका मार्गदर्शन करेगा।” देवदत्त ने कहा।

“आप बातें न बनाइए। मुहूर्त निकला जा रहा है, अब देर न कीजिये।” कविता मुस्कुराई, अबकी इस मुस्कुराहट में घबराहट के बजाय उत्साह झलक रहा था।

अथर्व अपनी माँ से क्षण भर को लिपटा और देवदत्त की कलाई थाम ली। दोनों ने एक क्षण के लिये कविता को देखा और दरवाजे की ओर बढ़ गये। कविता उन्हें जाते हुए देखती रही। उस समय उसकी आँखों में एक अद्भुत चमक सी थी।

"महादेव! अपनी कृपा बनाये रखना।" कविता ने मन ही मन महादेव का स्मरण किया।

***

देवदत्त प्राचीन मंदिर के पिछले हिस्से की ओर बढ़ रहा था। अथर्व अपने नन्हे कदमों से देवदत्त से गति मिलाने का प्रयत्न कर रहा था। अंधियारा हो चुका था। घाटों से आरती एवं भजनलहरियों के स्वर वातावरण में गूंज रहे थे। वातावरण में ठंड़क बढ़ गयी थी। कोहरा भी छाने लगा था। वहाँ घने वृक्षों की वृहद श्रृंखला थी। जो एक विशालकाय बाग़ का हिस्सा थी। वृक्षों की यह श्रृंखला विशालकाय प्राचीन महादेव मंदिर के ठीक पीछे स्थित थी। यह भाग उसी मंदिर का हिस्सा था।

अथर्व बिना प्रश्न किये उस अंधियारे में वृक्षों की छाया और कोहरे में देवदत्त के साथ चलता रहा। शीतल हवा उसके रोम रोम को सिहरा रही थी। कुछ ही क्षणों में वे मंदिर के प्रांगण में थे जहाँ मंदिर को घेरे हुए एक चारदीवारी थी। चारदीवारी विशालकाय पत्थरों से निर्मित थी, जिसकी ऊंचाई इतनी थी कि उसे फांदना असंभव था। देवदत्त दीवार के खास हिस्से के पास जाकर रुका।

"हम यहाँ दीवार के सामने क्यों रुके है बाबा?" अथर्व ने इतनी देर में पहली बार प्रश्न किया।

देवदत्त ने कुछ नही कहा। उसने उन पत्थरों पर हाथों को एक विशेष संरचना में घुमाकर दबाया। अगले ही क्षण बिना किसी आवाज के दीवार हल्की सी खिसकती सी प्रतीत हुई। अथर्व की आँखों में अथाह आश्चर्य के भाव थे।

कुछ ही क्षणों में उस दीवार में इतना स्थान उत्पन्न हो गया था जिसमे दो व्यक्ति सरलता से प्रवेश कर सकते थे। देवदत्त ने अथर्व का हाथ थामा और उस स्थान में प्रवेश किया। उनके प्रवेश करते ही दीवार पुन: अपने स्थान से हिली और पूर्ववत अवस्था में आ गयी।

अथर्व से कुछ कहते न बन रहा था। वह बस अपने आसपास का निरीक्षण करते जा रहा था। प्राचीन मंदिर की चारदीवारी के भीतर गुप्त द्वार होना उसके लिये आश्चर्य की बात थी। देवदत्त ठिठक गया था। देवदत्त ने अंदर की दीवार को पुन: एक ख़ास संरचना में घुमाकर दबाव दिया।

अथर्व अभी भी दीवार में किसी और द्वार के उत्पन्न होने की आशा कर रहा था। किन्तु इस बार मानो उसके पांवो के नीचे की धरती हिलती सी प्रतीत हुई। उसने देखा कठोर पथरीले फर्श का एक हिस्सा अपने स्थान से हट चुका था और एक छोटी सी सुरंग स्पष्ट दिखायी देने लगी जो जमीन के अंदर जाती थी। वह सुरंग के समीप पहुंचा। सुरंग चौड़ी थी और उसमे नीचे की ओर सीढ़िया बनी हुई थी। सुरंग में इस द्वार के मुकाबले ज्यादा प्रकाश था जिससे सीढियाँ स्पष्ट देखी जा सकती थी। देवदत्त ने अथर्व का हाथ पकड़ा और पीछे आने का संकेत किया।

अथर्व बिना कोई प्रश्न किये सुरंग में उतर गया। कुछ सीढ़ियां उतरते ही सुरंग के मुहाने का फर्श पुनः सरककर यथावत हो गया। अब वे सीढियों पर थे, जो नीचे की ओर जा रही थी। कुछ देर तक नीचे उतरने के बाद अब वे एक ऐसे स्थान पर पहुँच चुके थे जो एकदम खुला और विस्तृत था। वह एक गलियारा था, जमीन में सुरंग और फिर जमीन के इतने नीचे यह गलियारा। नन्हे अथर्व के लिये यह किसी स्वप्न से कम नहीं था।

“बाबा! यह कौन सी जगह है?” अथर्व आख़िरकार पूछ बैठा।

“बताता हूँ! अधीर मत बनो।” देवदत्त मुस्कुराया और बढ़ता रहा। गलियारा समाप्त होने को था। गलियारे के अंतिम छोर पर मटुक को देखकर अथर्व उछल ही पड़ा।

“चाचा आप!” अथर्व के मुख से अचरज भरा स्वर निकला और मटुक मुस्कुरा दिया।

“स्वागत है अथर्व!” कहते हुए मटुक ने मार्ग छोड़ा। गलियारा समाप्त हो चुका था। और वहाँ का दृश्य देखकर अथर्व का मुंह खुला का खुला रह गया।

***

गलियारे से लगभग बीस फीट नीचे एक हॉल बना हुआ था। उस हॉल से अनेक कमरे और द्वार जुड़े हुये थे। मटुक, अथर्व, और देवदत्त सीढियों के सहारे अब गलियारे से उस हॉल में पहुँच चुके थे। वहाँ असामान्य रूप से चहल पहल थी। मंदिर के तल में जमीन के इतने भीतर एक पूरी अत्याधुनिक इमारत थी। अथर्व मुंह बाये यह सब देख रहा था। वहाँ लगभग पन्द्रह हट्टे कट्टे व्यक्ति एक ही पोशाक में पंक्तिबद्ध तरीके से खड़े थे, उनके समक्ष एक व्यक्ति जिसने मात्र एक धोती और भगवा चोला

ओढ़ रखा था, प्रोजेक्टर द्वारा स्क्रीन पर कोई ब्लूप्रिंट समझा रहा था और निर्देश दे रहा था।

“वो जो भगवा वस्त्र और धोती पहने व्यक्ति को देख रहे हो न? वे उस दल को किसी महत्वपूर्ण स्थान के बारे में जानकारी दे रहे है। वे आचार्य जी है, देश भर में भ्रमण करते है। उनके पास जानकारी का अथाह भंडार और स्त्रोत है।” मटुक ने जानकारी दी।

“किन्तु चाचा जी! ये जानकारी इन्हें क्यों दी जा रही है और ये लोग कौन है जिन्होंने एक ही जैसे वस्त्र परिधान कर रखे है। क्या यह किसी तरह का गणवेश है? इनके परिधान से ये कहीं के प्रहरी, रक्षक या सेना से संबंधित लग रहे है।” अथर्व ने उत्सुकतावश प्रश्न किये।

“बिलकुल सही समझे। ये रक्षादल की विशेष टुकड़ी है। और यह जानकारी उन्हें क्यों दी जा रही है उसके बारे में तुम स्वयं जान जाओगे। सर्वप्रथम तुम्हारा इस ‘शक्तिमठ’ से पूर्णतया परिचित होना आवश्यक है। आगे चलो।” कहकर देवदत्त बगैर अथर्व के उत्तर की प्रतीक्षा किये हॉल के छोर पर स्थित एक द्वार की ओर बढ़ गया।

अथर्व मटुक की ऊँगली थामे उस द्वार की ओर बढ़ा। उसकी दृष्टि अब भी रक्षादल की विशेष टुकड़ी और आचार्य पर स्थित थी। आचार्य ने अथर्व को देखा और स्मितहास्य से उसका स्वागत किया, अथर्व प्रत्युत्तर में मुस्कुराया और द्वार के भीतर प्रवेश कर गया।

द्वार के उस पार एक छोटा सा गलियारा और उस गलियारे से सट कर एक अखाड़ा बना हुआ था। गलियारे के दूसरे छोर पर एक दीवार थी, जिसके दूसरी ओर कुछ लोग अपने अपने कार्यो में व्यस्त थे। हर कोई व्यस्त नजर आ रहा था। यहाँ के लोगो की वेशभूषा में काफी विविधता थी। कोई सैन्य पोशाक में अत्याधुनिक शस्त्रों से सज्ज था। कोई केवल धोती और उत्तरीय पहने हुए था। कोई केवल कुर्ता और पायजामा पहने हुए था। कोई महंगे सूट पहने हुए था। तो कोई सामान्य वस्त्रों में था। किन्तु किसी को भी किसी के पहनावे से न कोई संकोच था और न ही कोई फर्क पड़ता था। उनमे आपस में समन्वय था। अत्याधुनिक दिखने वाला, सूट बूट पहना हुआ व्यक्ति भी केवल धोती और जनेऊ पहने हुये व्यक्ति से कुछ निर्देश ले रहा था तो, कम्प्यूटर पर कोई तकनीकी समस्या का निवारण सीख रहा था। तो कहीं वही व्यक्ति किसी प्रकाण्ड पंडित की भाँति पूजा हवन करवा रहा था।

“हैरान मत हो अथर्व! यहाँ किसी के भी पहनावे से कोई भ्रम मत पालो। यहाँ उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में कई गुणों को समाविष्ट किये हुए है, और अनेक कलाओं पर पकड़ रखता है। ये सभी अत्याधुनिक यंत्रो का, अनेकों भाषाओं का, वैदिक मंत्रो से लेकर सॉफ्टवेयर, प्रोग्रामिंग, अर्थशास्त्र इत्यादि का ज्ञान रखता है। यहाँ जो पुजारी है, वही एक कुशल योद्धा भी है। यदि तलवार, धनुष, भालों जैसे प्राचीन अस्त्रों का ज्ञान रखता है तो वही वह ऑटोमेटिक गन्स और अत्याधुनिक शस्त्रों का भी ज्ञान रखता है। यहाँ चिकित्सक, अभियंता, सैनिक, शिक्षक, छात्र इत्यादि हर प्रकार के व्यक्ति है।” देवदत्त अथर्व की उत्सुकता को समझते हुए उसे आसान शब्दों में समझा रहे थे।

“अर्थात यह एक विद्यालय या यूनिवर्सिटी है हर प्रकार के ज्ञान की?” अथर्व ने अपने हिसाब से व्याख्या करने का प्रयत्न किया।

“नही भी और हां भी! क्योंकि यह एक मात्र स्थल नही है, ऐसे अनेक स्थल है इस देश में और विदेश में, जहाँ ऐसी अनेक शाखायें है। वैसे यह मुख्य शाखा है।” मटुक ने कहा।

अचानक हुई किसी ध्वनि ने अथर्व का ध्यान आकर्षित किया। उसने ध्वनि की दिशा में देखा। जो अखाड़े से आ रही थी। वहाँ अखाड़े में एक व्यक्ति एक दण्ड थामे खड़ा था। वह किसी मजबूत लकड़ी से बना नक्काशीदार दण्ड था, जिसके दोनों छोरों पर चांदी द्वारा नक्काशी की हुई थी। दण्ड पर बारीक नक्काशी के रूप में अंकित कुछ मंत्रो को स्पष्ट देखा जा सकता था। वह व्यक्ति लगभग तीस वर्ष का था। उसने मात्र एक चुस्त पैंट पहनी हुई थी। उसका ऊपरी शरीर निर्वस्त्र था, चौड़े सीने पर मात्र एक जनेऊ स्पष्ट दिखायी दे रहा था। वह बलिष्ठ शरीर का स्वामी था। अखाड़े के दूसरे छोर पर तीन व्यक्ति खड़े थे, जो निस्संदेह उसके प्रतिद्वंदी ही थे। उन तीनो की वेशभूषा भी लगभग उसी व्यक्ति के समान ही थी, बस उनके हाथो में दण्ड के बजाय धारदार चाक़ू, भाले इत्यादि थे। वे किसी तरह का युद्धाभ्यास कर रहे थे।

वहाँ उपस्थित किसी भी व्यक्ति को उनके युद्धाभ्यास में किंचित भी रुचि नही दिखायी दे रही थी, सभी अपने अपने कार्यों में व्यस्त थे। अथर्व की दृष्टि अखाड़े से हट ही नहीं रही थी, देवदत्त और मटुक भी उसकी उत्सुकता को देखते हुए शांत खड़े रहे।

“आरंभ करो।” अखाड़े के मध्य में खड़ा वह व्यक्ति अपने प्रतिद्वंदियों को देखकर एक गर्वीली मुस्कान के साथ बोला। उसके बोलने के साथ

ही एक प्रतिद्वंदी ने अद्भुत फुर्ती दिखाते हुए भाले को उसकी ओर उछाल फेंका। भाले की गति और उसका घुमाव देखकर प्रतीत हो रहा था की वह किसी लोहे की चादर को भी भेद कर निकल सकता है। किन्तु वह व्यक्ति निश्चिंत था, भाले के फेंकते ही क्षण के सौवें हिस्से में ही उसने अपने दण्ड को घुमाना आरंभ किया। दण्ड अद्भुत गति से घूम रहा था, दण्ड के घूर्णन से एक चक्र की सी आकृति निर्मित हो गयी थी, उसी क्षण भाला उस आकृति से टकराया और इस तरह छितरा गया मानो किसी पहाड़ से टकरा गया हो। भाले के दो टुकड़े हो गये थे। इसी के साथ उस व्यक्ति ने अपने दण्ड की गति रोकी और एक पैर आगे करके पीठ को नाक की सिद्ध में झुका कर दण्ड को अपनी पीठ की सीध में ताने हुए अगले प्रहार के लिये तैयार हो गया।

“एक एक करके नही! तीनों एक साथ प्रहार करो। जो भी शस्त्र है उन सबको निरंतर फेंकते रहो।” उसने प्रतिद्वंदियों से मुस्कुराते हुए कहा और उन्होंने यही किया। तीनों ने भाले, चाक़ू बरसाने आरंभ कर दिये किन्तु अद्भुत फुर्ती का प्रदर्शन करते हुये उस व्यक्ति का दण्ड फिर घूमा और एक वलय जैसा निर्माण हो गया। सारे हथियार उस वलय से टकराकर छितरा गये।

“बाण बरसाओ।” वह फिर उनकी ओर देखकर गर्व भरे शब्दों में बोला।

“अंकुश!” देवदत्त ने उस व्यक्ति का नाम इतनी जोर से लिया कि पूरा हॉल स्तब्ध हो गया। सभी की दृष्टि देवदत्त की ओर स्थिर हो गयी। अब तक मशीनों की तरह व्यस्त रहने वाले मठ वासी अपने सारे कार्य छोड़ कर देवदत्त की ओर ही देख रहे थे। स्वयं अथर्व भी अपने पिता का यह स्वर सुनकर आश्चर्यचकित था। उसने अपने जीवन कभी अपने पिता के स्वर में ऐसी उग्रता और कठोरता महसूस नहीं की थी।

देवदत्त के मुख पर कठोरता थी। देवदत्त का व्यक्तित्व एकदम से बदल गया था। वह तेज कदमो से चलते हुए गलियारे को पार करके अखाड़े के बीचों बीच जा खड़ा हुआ। अब वह उस व्यक्ति के सामने था।

“तुम्हें नियमों का पालन करना चाहिये। अखाड़े और गलियारे के मध्य सुरक्षा दीवार क्यों नही है?” देवदत्त के स्वर की तीव्रता अत्याधिक बढ़ गयी थी।

“क्षमा कीजियेगा आचार्य! किन्तु मुझे इसकी आवश्यकता महसूस नही हुई। मैं किसी भी शस्त्र को पलटकर जाने का भी अवसर नही देता।

प्रत्येक शस्त्र मेरे ‘वलय चक्र’ से टकराकर खील खील होकर बिखर जायेगा। आप ही से तो सीखा है।” अंकुश के स्वर में देवदत्त के लिये सम्मान अवश्य था, किन्तु उसमे एक गर्वोक्ति स्पष्ट झलक रही थी, देवदत्त अपने प्रतिद्वंदियों से अंकुश के बात करने के ढंग से ही उसका अहंकार भांप चुका था।

“ तुम्हें क्या लगता है? तुम इस विद्या में परिपूर्ण हो? यह तुम्हारी गलतफहमी है अंकुश, जिसे जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी दूर कर लो।” देवदत्त ने लहजे में कठोरता लाते हुए कहा। अब तक सारे मठवासी गलियारे में एकत्रित हो चुके थे। अथर्व अपने पिता को एक नये ही रूप में देख रहा था।

“मैं स्वयं तुम्हारे साथ अभ्यास करूंगा।” कहते हुए देवदत्त ने हॉल के दूसरे छोर पर स्थित एक कमरे की ओर देखते हुए कुछ इशारा किया। उसके इशारा करते ही हॉल और अखाड़े के बीच एक पारदर्शी कांच की दीवार प्रकट हो गयी।

“अभ्यास में सर्वप्रथम सुरक्षा दीवार का प्रयोग होना चाहिये। अपनी कला पर विश्वास हो या अतिआत्मविश्वास, किन्तु उसके लिये तुम किसी और की जान को खतरे में नही डाल सकते। तुम सुरक्षा का पहला ही नियम भूल गये यानी तुम आरंभ में ही सब भूल गये।” देवदत्त अखाड़े के दूसरे छोर पर खड़े प्रतिद्वंदियों की ओर बढ़ा, उन्होंने झुककर देवदत्त को प्रणाम किया, देवदत्त ने भी प्रणाम का उत्तर दिया और एक प्रतिद्वंदी के हाथों से चाक़ू ले लिया। अंकुश देवदत्त को प्रहार के लिये तैयार होता देखकर मुस्कुराया, उसे पूर्ण विश्वास था कि वह देवदत्त के समक्ष अपनी योग्यता सिद्ध कर देगा।

“तैयार हो जाओ अंकुश! जितना समय लेना है ले लो।” देवदत्त ने अंकुश को संबोधित करते हुए कहा।

“आप प्रहार करे आचार्य।” अंकुश के स्वर में ज़रा भी बदलाव न आया था। और उसने दण्ड को घुमाना आरंभ कर दिया। उसी क्षण देवदत्त ने अपने चाक़ू थामे हुए हाथ को पीठ की ओर जितना हो सकता था उतना पीछे की ओर खींचा और एक ख़ास कोण बना कर चाक़ू तीव्रता से अंकुश की ओर फेंका। चाक़ू किसी धनुष से छूटे बाण की तरह तेजी से निशाने को भेदने के लिये बढ़ा, अंकुश का वलय रूपी चक्र अब पूर्ण हो चुका था। दण्ड इतनी तीव्रता से घूम रहा था कि दिखायी देना ही बंद हो गया, अंकुश के मुख पर आत्मविश्वास दिखायी दे रहा था, और उसी क्षण

चाक़ू वलय चक्र से टकराया, एक भीषण ध्वनि हुई और दण्ड दो टुकड़ों में बिखर गया। चाक़ू घूमते वलय रुपी सुरक्षा कवच को भेदते हुए दण्ड को तोड़कर अंकुश के कान को छुते हुए दीवार में जा धंसा। प्रहार की गति इतनी तीव्र थी कि चाक़ू दीवार में हत्थे तक जा धंसा।

दण्ड दो भाग में विभाजित होकर दो विपरीत दिशा में जा गिरा, एक टुकड़ा गोली की सी गति से जाकर हॉल के मध्य स्थित सुरक्षा दीवार से जा टकराया। वहाँ खड़े दर्शक घबरा कर पीछे हटे किन्तु सुरक्षा दीवार से टकराकर दण्ड का टुकड़ा अखाड़े में जा गिरा। अथर्व की आँखे आश्चर्य से फ़ैल गयी। उसे विश्वास ही न हो रहा था।

अंकुश अवाक रह गया। कुछ क्षणों तक वह सुधबुध खोकर निर्विकार भाव से खड़ा रहा।

“अंकुश! क्या हुआ? वलय चक्र इस बार मजबूत क्यों नही बना?” देवदत्त ने दोनों हाथ अपनी कमर के पीछे बांधे अंकुश को संबोधित किया।

“आपने ’बाण गति’ विद्या का प्रयोग किया। जिस कारण मेरा वलय चक्र पूर्ण होने के पहले ही चाक़ू सुरक्षा घेरे को पार कर गया।” अंकुश अब भी हार मानने को तैयार नही था।

देवदत्त ने तीनो प्रतिद्वंदियों को संकेत किया। संकेत समझते ही एक दण्ड अखाड़े की ओर उछला जिसे देवदत्त ने थाम लिया। दण्ड थाम कर वह अंकुश की ओर बढ़ा।

“अब मेरी बारी है! बाण गति विद्या तुम्हें भी ज्ञात है अंकुश। चलो अब तुम उसका प्रयोग करो।” कहते हुए देवदत्त ने अंकुश के हाथो में दो चाक़ू थमा दिये। अंकुश मुस्कान लिये विपरीत दिशा की ओर बढ़ा।

“आप तैयार हो जाये आचार्य।” अंकुश ने दोनों चाकुओं को हाथो में लहराते हुए वही मुद्रा दोहराई जो देवदत्त ने अपनायी थी।

“तुम प्रहार करो! मैं सदैव सतर्क ही रहता हूँ।” देवदत शांति से खड़ा रहा, उसने दण्ड को हिलाया तक नही।

अंकुश एक क्षण को ठिठका, किन्तु देवदत्त ने उसे प्रहार करने का संकेत किया और उसी क्षण अंकुश ने बाण गति विद्या का प्रयोग करते हुए एक के बाद दूसरा प्रहार कर दिया। क्षण के अंतिम हिस्से में कब देवदत्त का दण्ड घूमा और कब दोनों चाक़ू उससे टकराकर दीवार में जा धंसे यह किसी को दिखायी तक न दिया। पलक झपकते ही देवदत्त ने

प्रहार को न केवल विफल कर दिया था बल्कि वह अब अपने स्थान पर खड़ा होकर मंद मंद मुस्कुरा रहा था।

“अंकुश! अब भी अवसर देता हूँ। अबकी बार चाक़ू नहीं, भाला भी नहीं, धनुष भी नहीं। पिस्तौल उठाओ और गोली चलाओ।” देवदत्त ने कहा तो अंकुश को अपने कानो पर विश्वास ही नहीं हुआ।

“तुमने सुना नहीं। आदेश का पालन करो।” देवदत्त गरजा, उसकी गरज से हॉल का कोना कोना गूंज उठा। अंकुश की ओर पिस्तौल बढ़ चुकी थी। अंकुश ने हिचकिचाते हुए पिस्तौल थामी।

“निशाना लगाओ अंकुश।” देवदत्त ने इशारा किया। हॉल में नीरव स्तब्धता पसर चुकी थी। अब प्रशिक्षण रोमांचक मोड़ ले चुका था। अंकुश ने पिस्तौल को देवदत्त की ओर तान दिया।

“एक गोली चला कर रुकना मत। पूरी मैगजीन खाली कर दो। चलाओ अब।” अंतिम शब्द चीखते हुए कहे गये थे।

अंकुश ने ट्रिगर दबाया, ट्रिगर दबने के पूर्व ही देवदत्त ने दण्ड घुमाना आरंभ कर दिया था। क्षण भर में ही दण्ड की घूर्णन गति इतनी तीव्र हो चुकी थी कि किसी हैलीकॉप्टर के पंखे सा शोर उत्पन्न होने लगा। वलय चक्र निर्माण हुआ किन्तु उसके साथ ही उस वलय में विद्युत् तरंगे भी घूमते दिखायी देने लगी। गोली उस वलय चक्र को टकराकर सुरक्षा दीवार से जा टकराई। अंकुश ने ट्रिगर दबाना जारी रखा। किन्तु एक भी गोली उस वलय तक को छू न पायी और यहाँ वहाँ छितरा कर बेकार हो गयी। हॉल गोलियों के धमाको और वलय की घरघराहट के स्वरों से गूंज रहा था। पिस्तौल की गोलियाँ खत्म हो चुकी थी। अंकुश मुह बाये देवदत्त को देख रहा था।

देवदत्त ने दण्ड की गति को संयत किया और अंकुश की ओर बढ़ा। अंकुश देवदत्त के समक्ष दृष्टि नहीं मिला पा रहा था। वह लज्जित था।

“अंकुश! तुम सर्वथा श्रेष्ठ योद्धा हो। किन्तु योद्धा में अहंकार नहीं होना चाहिये। क्योंकि अहंकार में यदि क्षण भर भी चूक हुई तो योद्धा को दूसरा अवसर नही मिलेगा।” देवदत्त ने उसके कंधो को थपथपाया, और दण्ड उसे पकड़ा दिया। देवदत्त के संकेत पर सुरक्षा दीवार हट गयी और मठ वासी पुन: अपने अपने कार्यों में ऐसे व्यस्त हो गये मानो कुछ हुआ ही नही था। देवदत्त अथर्व और मटुक की ओर बढ़ा। अथर्व का मुंह अब तक खुला हुआ था।

देवदत्त उसे देखकर मुस्कराया और उसके सर पर हाथ फेरा।

“बाबा! आप ये सब कैसे जानते है? और क्या माँ यह सब जानती है?” अथर्व को जानने की तीव्र उत्कंठा हो रही थी।

“माँ से कुछ नही छुपा है बेटा। अब चलो, अभी तुम्हें बहुत कुछ जानना बाकी है।” कहते हुए देवदत्त गलियारे के अगले मोड़ की ओर बढ़ा।

***

वह एक अत्याधुनिक कक्ष था। अथर्व का ह्रदय वहाँ का वातावरण देख कर धक्क रह गया। उस कक्ष में दीवारों पर अनेक स्क्रीन्स लगी हुई थी। उन स्क्रीन्स पर देश के विभिन्न हिस्सों के स्थल दिखायी दे रहे थे। वहाँ उपस्थित मठ वासी यंत्रों और कम्प्यूटर्स में उलझे हुए थे और जानकारी का आदान प्रदान कर रहे थे।

“यह इस मठ का अत्याधुनिक सम्पर्क कक्ष है। हम यहाँ से देश के अन्य हिस्सों की अपनी शाखाओं से जुड़े हुए रहते है। इस कक्ष से ही हम इस मठ की सुरक्षा व्यवस्था को और देश में विभिन्न हिस्सों में अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करते है।” मटुक ने जानकारी दी।

“इन सबके लिये तो बहुत खर्च होता होगा न?” अथर्व इतना तामझाम देख कर अंदाजा लगाते हुए बोला।

“बेटा! हमारे इस मठ का खर्चा और व्यवस्था देश विदेश के अन्य शाखाओं एवं दानदाताओं द्वारा आता है। हमारे रक्षादल से जुड़े अनगिनत लोग देश विदेश में छद्मपहचान के साथ कार्यरत है। डॉक्टर, वकील, उद्योजक, वैज्ञानिक, साहित्यकार, से लेकर राजनैतिक दलों के उच्च्च पदों पर भी हमारे अनगिनत सदस्य है। जो नियमित रूप से आर्थिक सहायता करते रहते हैं। जिसका हिसाब किताब, लेन देन इत्यादि का कार्य सुचारु रूप से यहाँ होता है। यदि सीधे तौर पर कहे तो अकाउंटस यानी बहीखाते और आर्थिक नियंत्रण का कार्य यहाँ होता है। यहाँ लेन देन से लेकर उसके वितरण और खर्चे को नियंत्रित किया जाता है। इसके अलावा हमारे गुप्त सदस्य शेयर मार्किट, ट्रेडिंग और बैंकिंग तक में है, जहाँ से निवेश आता है। यह कह सकते है यह हमारी एक स्वतंत्र अर्थव्यस्था है, यदि किसी कारणवश हमें मिलने वाली अर्थसहायता की आपूर्ति बंद भी हो जाती है, फिर भी हम कई वर्षो तक अपनी व्यवस्था सुचारू रूप से चला सकते है।” देवदत्त ने उस कक्ष से जुडी जानकारी दी। आंकड़े और अर्थशास्त्र समझने के लिये अभी अथर्व काफी छोटा था, वह बस इतना समझा कि यहाँ से खर्चे का नियंत्रण होता है, जैसे माँ पिताजी की तनख्वाह का हिसाब रखती है, और महीने भर की हर जरूरत

के हिसाब से तनख्वाह का वितरण करती है। ठीक वही कार्य यहाँ होता है। आसान शब्दों में जब वह गणित को समझा तो बरबस ही उसके मुख पर मुस्कान उभर आयी।

‘’इस कक्ष की दाहिनी दीवार के पार क्या है?” अथर्व की दृष्टि कक्ष से जुडी एक अपारदर्शी कांच की दीवार पर पड़ी। देवदत्त ने कक्ष में बैठे एक व्यक्ति को इशारा किया। उसने इशारा समझ कर कम्प्यूटर से कोई छेड़छाड़ की और वह अपारदर्शी दीवार इतनी सरक गयी जिसमे तीन व्यक्ति एक साथ प्रवेश कर सके। देवदत्त अथर्व को उस कक्ष में ले गया।

“यह आयुध कक्ष है। यहाँ हर प्रकार के अस्त्र शस्त्र रखे जाते है।” मटुक ने कक्ष की दीवारों से लगी हुई रैक्स की ओर इशारा करते हुए कहा। उन रैक्स में अत्याधुनिक स्वचलित आग्नेयास्त्र करीने से रखे हुए थे। हथियार सैंकड़ों की संख्या में थे, एक हिस्से में केवल स्वचलित आग्नेयास्त्र थे, तो दूसरे हिस्से में उन आग्नेयास्त्रो में प्रयोग होने वाली गोलियां, लोडेड़ कार्ट्रिज, यहाँ तक कि ग्रेनेड्स तक वहाँ मौजूद थे और सभी अपनी अपनी श्रेणीनुसार विभिन्न रैक्स में करीने से रखे हुए थे। अथर्व के लिये यह किसी अजायबघर से कम नहीं था। जिन शस्त्रों को उसने केवल फिल्मों एवं सीरियलों में ही देखा था उन्हें अब वह इतने करीब से देख रहा था। वह रोमांचित था।

मटुक उसे इस प्रकार हैरान देख कर मंद-मंद मुस्कुरा रहा था। उसने दीवार में बने पैनल में अपने फिंगरप्रिंट्स फीड़ किये जिसके पश्चात दीवार का वह हिस्सा किसी अलमारी के दरवाजे कि तरह अपनी जगह से सरक गया। उसके पीछे भी शस्त्र ही थे किन्तु वे अलग थे, वे प्राचीन अस्त्र शस्त्र थे। गदा, धनुष, बाण, भाले, तलवारें, खड्ग, चक्र, बाघनख, पंजा, फरसे, इत्यादि के अनेकों प्रकार के अस्त्र उस कांच की दीवार के पीछे सुसज्जित अवस्था में सुरक्षित रखे थे। एक एक श्रेणी के अनेकों अस्त्र वहाँ थे, अथर्व को ऐसे प्राचीन अस्त्र शस्त्र देखते ही ‘महाभारत’ की याद आ गयी। वह उनके समीप जाकर उन दिव्य शस्त्रों को निहार रहा था। इसके अतिरिक्त वहाँ प्राचीन कवच, मुकुट, युद्ध में पहने जानेवाले सुरक्षा कवच एवं मजबूत वस्त्र इत्यादि भी रखे हुये थे। ठीक उसी प्रकार आधुनिक आग्नेयास्त्रों की श्रेणी में एक हिस्से में करीने से अनगिनत यूनिफॉर्म्स रखे हुए थे, ये उसी विशेष दल का पहनावा था जिसे हॉल में प्रवेश करते ही सर्वप्रथम अथर्व ने देखा था। उसके अलावा बुलेटप्रूफ जैकेट्स, हेल्मेट्स, गैसमास्क, यूटिलिटी बेल्ट्स, और बूट्स के लिये भी अलग अलग वृहद

रैक्स थे। किन्तु अथर्व की दृष्टि उस विशालकाय फरसे पर ही टिकी रही। वह उसे आकर्षित कर रही थी।

“वह फरसा देख रहे हो? जो सबसे बड़ा है। उसे स्वयं भगवान परशुराम का आशीर्वाद प्राप्त है।” देवदत्त ने अथर्व को फरसे की महत्ता के बारे में बताया तो अथर्व ने पूर्ण सम्मान के साथ फरसे को प्रणाम किया। उसका अनुसरण देवदत्त और मटुक ने भी किया।

उसे आभास हो रहा था के यहाँ जितने भी प्राचीन शस्त्र रखे हुए थे वे सभी किसी न किसी महान व्यक्ति द्वारा आशीर्वाद प्राप्त थे। उन शस्त्रों कि आभा ही निराली थी। प्राचीन होने के पश्चात भी वे सभी इस तरह दमक रहे थे मानो अभी अभी बनाये गये हो। निस्संदेह यह मठ के रखरखाव का ही कमाल था। दीवार के मध्य में एक छह फीट का कांच का पारदर्शी बक्सा रखा हुआ था। उस बक्से के ऊपरी सिरे पर एक नीला बल्ब जल उठा जिससे अथर्व का ध्यान उस बक्से की ओर गया। वहाँ एक आदमकद धातु की प्रतिमा बनी हुई थी। उस प्रतिमा को एक चुस्त और विचित्र पोशाक पहनायी गयी था। अथर्व एकटक उस प्रतिमा को और उसे पहनाये गये वस्त्र को निहार रहा था, उस मूर्ति का पहनावा ही ऐसा था कि अथर्व की दृष्टि वहाँ से हट ही नही रही थी।

वह हल्के बैंगनी रंग का वस्त्र था। चुस्त और शरीर से एकदम कसा हुआ, वस्त्र के बाहों और सीने पर सुनहरे अक्षरों में कुछ मंत्र उकेरे हुए थे। उस प्रतिमा का मुख प्रथम बार अथर्व ने देखा, लम्बे केश, चौड़ा ललाट, गहरी आँखे और तेज लिये हुए मुखाकृति किसी मनुष्य की कम और किसी देव की अधिक प्रतीत हो रही थी। धातु से बनी प्रतिमा होने के पश्चात भी उसके चेहरे से एक सजीव सा तेज प्रस्फुटित होता महसूस हो रहा था। प्रचण्ड आकर्षण था उस प्रतिमा में। प्रतिमा के समीप ही एक धातु की मानव मुखाकृति बनी हुई थी जिसपर एक मुखावरण (मास्क) पहनाया गया था। वह मुखावरण विचित्र था, उसने सम्पूर्ण मानव शीश को घेर रखा था, भूरे रंग के उस मुखावरण पर एक बड़ा सा त्रिपुंड बना हुआ था। त्रिपुंड की तीनों रेखायें क्रमश: ललाट, नाक और मुख वाले हिस्से पर उकेरी हुई थी। त्रिपुंड के बीचो बीच ठोड़ी से लेकर कपाल तक एक सीधी गेरुए रंग की रेखा बनी हुई थी। यह त्रिपुंड साधु सन्यासियों की बाहों एवं माथे पर चित्रित त्रिपुंड के समान ही था किन्तु बनावट थोड़ी अलग थी। इस मुखावरण पर आँखों वाले हिस्से पर कोई छेद अथवा जाली नही थी। शायद यह मुखावरण भीतर की ओर से पारदर्शी था जिस

कारण धारण करने वाले को मुखावरण के बावजूद स्पष्ट दिखायी देता था। अथर्व कुछ देर तक उस प्रतिमा और मुखावरण को निहार रहा था। इस प्रतिमा के शक्तिशाली भुजाओं में एक दण्ड था। यह दण्ड कुछ कुछ उसी दण्ड जैसा था जिस के साथ अभी अभी अथर्व ने देवदत्त और अंकुश को अभ्यास करते देखा था। प्रतिमा के एक हाथ में दण्ड था और कमर पर झूलती एक दोधारी तलवार। प्रतिमा से वह किसी अदम्य योद्धा अथवा देवता की छवि सी प्रतीत होती थी।

"ये कौन है बाबा?" अथर्व ने प्रश्न किया।

"ये महान योद्धा सुबाहु की प्रतिमा है बेटा। ये हमारी इस गुप्त संस्था के संस्थापक थे।" देवदत्त ने उस प्रतिमा को अभिभूत होकर देखते हुए कहा।

"इन्होने ऐसे वस्त्र क्यों पहन रखे है?"

"धैर्य रखो अथर्व! एक ही दिन में सब जान जाओगे? अभी तो बहुत कुछ जानना बाकी है। तुम्हें सब सविस्तार बताया जायेगा। चलो, पूजा का समय हो गया है। तुम भी 'दिव्य दर्शन' कर लो।" मटुक ने अथर्व के कंधो पर हाथ रखा और उस कक्ष से बाहर निकलने का संकेत किया। अथर्व को उस कक्ष में कुछ समय और बिताने की इच्छा थी किन्तु वह मटुक और देवदत्त की आज्ञा टाल नही सकता था। अनमने ढंग से वह कक्ष से बाहर की ओर बढ़ा। मटुक ने पुनः दीवार में बने पैनल में अपने हाथो की छाप रखी। एक हल्की सी घरघराहट हुई, अथर्व ने पुनः पलटकर उस दिव्य प्रतिमा को देखा। उसका मन अभी भी नही भरा था। किन्तु कुछ ही क्षणों में प्रतिमा और प्राचीन अस्त्र उसकी दृष्टि से लुप्त हो गये।

***

अथर्व अब गलियारे से निकल कर एक ऐसे स्थान पर पहुँच चुका था। जहाँ पक्का फर्श और पक्की दीवारें नही थी। यह भूतल में स्थित विशाल शिलाखंड में उकेरी हुई गुफा थी। उसे पुस्तकों में देखे हुए एलोरा स्थित कैलासा मंदिर के दृश्य याद आ गये । यह गुफा भी उसी प्रकार विशालकाय और एक ही शिला में बनाई हुई थी। यह बहुत ही प्राचीन और मजबूत निर्माण प्रतीत हो रहा था। उस शिलाखंड को काटकर ही स्तंभ, दीवारों एवं छतों का निर्माण किया गया था। दीवारों पर भव्य नक्काशियां की गयी थी। उन नक्काशियों में देव, दानव, मनुष्य, पशु, पक्षी इत्यादियों के सुंदर एवं वृहद शिल्प बने हुए थे। अथर्व ने गौर किया

कि इन दीवारों पर शिल्पों के माध्यम से कुछ कथायें उकेरी गयी थी। मुख्य दीवार पर श्री राम जन्म, माता सीता का स्वयंवर, वनवास, महाबली हनुमान एवं श्री राम की भेंट, समुद्र पर सेतु निर्माण से लेकर रावण वध तक के शिल्प बने हुए थे। शिल्पों द्वारा रामायण की कथा उकेरी गयी थी, जो अपने आप में अद्भुत था।

दूसरी दीवार पर भगवान शिव की कथा भित्तिचित्रों एवं शिल्पकारी से चित्रित की गयी थी। महादेव और माता सती का प्रेम, सती का आत्मदाह, शिव का क्रोध, प्रलय, उनका तांडव, उनका अवसाद, भगवान विष्णु द्वारा माता सती के शरीर को सुदर्शन चक्र से अनेक खंडो में विभाजित करना। माता पर्वती का हिमालय राज के घर जन्म, महादेव की प्राप्ति के लिये माता पार्वती का अखंड व्रत। महादेव और माता पार्वती का विवाह। इत्यादि अनेकों सुंदर और सजीव शिल्पों एवं भित्ति चित्रों से महादेव की कथा संक्षेप में उकेरी गयी थी। इसी प्रकार की अनेकों कथाये उस गुफा की विशाल दीवारों पर चित्रित की गयी थी। अथर्व यह सब देखकर आश्चर्यचकित था। उसके पास उस सुंदरता को व्यक्त करने के लिये शब्द ही नहीं थे। देवदत्त और मटुक उसे देख कर बिना कुछ कहे मुस्कुरा रहे थे।

पत्थरों से निर्मित उस प्राचीन गुफानुमा मंदिर में, समस्त मठ वासी एकत्रित हो रहे थे। अथर्व देवदत्त के साथ मंदिर के गर्भगृह की ओर बढ़ रहा था। गर्भगृह में पहुंचते ही उसकी आँखे फटी की फटी रह गयी। गर्भगृह के मध्यभाग में एक विशालकाय चबूतरा बना हुआ था, चबूतरा भी किसी एक शिलाखंड को तराश कर बनाया हुआ था। उस चबूतरे पर एक शिवलिंग नुमा शिला प्रस्थापित की गयी थी। वह लगभग चार फूट का शिवलिंग था। वह शिवलिंग किस वस्तु या धातु से निर्मित था यह अंदाजा लगाना कठिन था। उस शिवलिंग सदृश आकृति से एक प्रकाश सा फूट रहा था। उस प्रकाश की आभा गर्भगृह में फैली हुई थी। उस शिवलिंग से नीले एवं लाल रंग की मिश्रित प्रकाश किरनें प्रस्फुटित हो रही थी। अथर्व उस विचित्र और दिव्य शिवलिंग को विस्फारित नेत्रों से देखता रहा। जब उसकी तंद्रा भंग हुई तब उसने गर्भगृह की बनावट पर ध्यान दिया। शिवलिंग के ठीक ऊपर शिला को उकेर कर गौमुख की आकृति बनाई गयी थी। इस गौमुख आकृति के मुख से जल की एक मोटी धार निरंतर शिवलिंग पर पड़ रही थी। अथर्व ने गर्भगृह के पीछे की दीवार को देखा तो उसका मुंह खुला का खुला रह गया। वहाँ एक

पारदर्शी शीशे की दीवार थी। जिसके पार अथाह और गहरी जलराशि स्पष्ट दिखायी दे रही थी। उस जलराशि में तैरती विभिन्न मछलियों को स्पष्ट देखा जा सकता था।

“उस दीवार के पार गंगा है अथर्व।” मटुक ने उसकी उत्सुकता समझते हुए उसके प्रश्न पूछने से पहले ही उत्तर दे दिया।

“क्या हम माँ गंगा के इतने समीप है?” अथर्व की जिज्ञासाशांत नही हुई थी ।

“हम समीप नही है। बल्कि यह गर्भगृह गंगा नदी के तल पर है। इस गर्भगृह की छत के ऊपर गंगा नदी बह रही है। वह जो गौमुख देख रहे हो न? उसमे जो जलधारा शिवलिंग पर निरंतर बह रही है, वह गंगाजल ही है।” देवदत्त ने बताया।

“यह शिवलिंग इतना गुप्त क्यों रखा हुआ है?”

अथर्व के प्रश्न पर देवदत्त मुस्कुराया। तब तक समस्त मठ वासी वहाँ एकत्रित हो गये थे। यह पूजा का समय था। विभिन्न मंत्रोच्चारणों के साथ ही उस शिवलिंग की पूजा आरंभ हो गयी।

“पूजा होने के बाद मैं तुम्हें एक महान कथा सुनाऊंगा, जिसे सुनने के पश्चात तुम्हारी समस्त उत्कंठा शांत हो जायेगी।” देवदत्त ने इतना ही कहा और शिवलिंग की ओर देखते हुए श्रद्धा से हाथ जोड़ लिये। मटुक और अथर्व ने भी उसका अनुसरण किया और पूजा, मंत्रोच्चार की ध्वनिलहरियों से वातावरण दिव्य हो गया। अथर्व को अब भी यह सब एक स्वप्न के समान प्रतीत हो रहा था। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसने आज इतना सब कुछ देखा। उसके बाबा, काका दोनों का एक अलग ही व्यक्तित्व उसके सामने था। उसे बाबा के मुख से कहानी सुनने की तीव्र उत्कंठा हो रही थी।

***

।। त्रेतायुग।।

दलपति भार्गव

बैलगाड़ियों का वह दल नगरद्वार के समीप बने फाटक पर पहुंचा। वह चार बैलगाड़ियाँ थी, जिनके साथ लगभग दस व्यक्ति थे। उन सभी के पहनावे से वे छोटे व्यापारी प्रतीत होते थे। मुख्य चौकी पर पहुँचते ही वहाँ उपस्थित प्रहरियों ने उन्हें रुकने का निर्देश दिया। सबसे आगे खड़ी बैलगाड़ी से एक प्रभावशाली व्यक्ति बाहर निकला। उसने सर पर गहरे नीले रंग की पगड़ी लपेट रखी थी। मुख पर घनी किन्तु चमकदार दाढ़ी, दाढ़ी के कुछ बाल सफ़ेद थे जो उसकी आयु की चुगली कर रहे थे। वह लगभग पैतीस वर्ष का सदृढ़ व्यक्ति था। धोती के साथ एक अंगवस्त्र पहने हुए मांसल और कटाव लिये शरीर उसके कसरती होने का प्रमाण था।

“ठहरिये। आप यहाँ से आगे नही जा सकते।” सैनिक ने औपचारिकता के लिये उन्हें रोका।

“व्यापारी है, महोदय। अयोध्या में प्रतिवर्ष लगते हाट के विषय में बहुत सुना है, हम अनेक राज्यों में व्यापार के लिये जाते है। प्रथम बार अयोध्या में आये है।” दलपति ने सैनिक से नम्रता से कहा। दलपति के बैलगाड़ी से उतरते ही अन्य बैलगाड़ियों में सवार दूसरे व्यापारी भी उतर आये। दलपति जिस बैलगाड़ी में सवार था, उसमे से एक किशोर उतरा जिसके कंधो पर एक झोला टंगा हुआ था।

“महोदय! सालाना हाट में व्यापार के लिये अग्रिम अनुमति पत्र की आवश्यकता होती है। क्या आपके पास अग्रिम अनुमति पत्र है?” सैनिक ने दलपति से अनुपति पत्र की बाबत प्रश्न किया।

दलपति ने अपने पीछे खड़े किशोर को संकेत से बुलाया। किशोर का मुख शांत और सौम्य था, उसके मुख पर एक आकर्षक मुस्कान थी। वह अभी पन्द्रह या सोलह वर्ष का ही था, किन्तु इसके पश्चात भी उसका कद दलपति के लगभग बराबर ही था। शरीर उसका भी दलपति की ही तरह मांसल और कटाव लिये हुए था। सैनिक क्षण भर के लिये उस किशोर को देखकर प्रभावित हो गया। किशोर दलपति के समीप पहुंचा और अपने कंधे पर टंगे झोले में से एक सुरक्षित रखा हुआ पत्र निकाल कर दलपति की ओर बढ़ा दिया। दलपति ने क्षणिक भी विलंब न करते हुए वह पत्र दूसरे अधिकारी सैनिक को थमा दिया। अधिकारी ने पत्र को

।। त्रेतायुग।।

दलपति भार्गव

बैलगाड़ियों का वह दल नगरद्वार के समीप बने फाटक पर पहुंचा। वह चार बैलगाड़ियाँ थी, जिनके साथ लगभग दस व्यक्ति थे। उन सभी के पहनावे से वे छोटे व्यापारी प्रतीत होते थे। मुख्य चौकी पर पहुँचते ही वहाँ उपस्थित प्रहरियों ने उन्हें रुकने का निर्देश दिया। सबसे आगे खड़ी बैलगाड़ी से एक प्रभावशाली व्यक्ति बाहर निकला। उसने सर पर गहरे नीले रंग की पगड़ी लपेट रखी थी। मुख पर घनी किन्तु चमकदार दाढ़ी, दाढ़ी के कुछ बाल सफ़ेद थे जो उसकी आयु की चुगली कर रहे थे। वह लगभग पैतीस वर्ष का सदृढ़ व्यक्ति था। धोती के साथ एक अंगवस्त्र पहने हुए मांसल और कटाव लिये शरीर उसके कसरती होने का प्रमाण था।

“ठहरिये। आप यहाँ से आगे नही जा सकते।” सैनिक ने औपचारिकता के लिये उन्हें रोका।

“व्यापारी है, महोदय। अयोध्या में प्रतिवर्ष लगते हाट के विषय में बहुत सुना है, हम अनेक राज्यों में व्यापार के लिये जाते है। प्रथम बार अयोध्या में आये है।” दलपति ने सैनिक से नम्रता से कहा। दलपति के बैलगाड़ी से उतरते ही अन्य बैलगाड़ियों में सवार दूसरे व्यापारी भी उतर आये। दलपति जिस बैलगाड़ी में सवार था, उसमे से एक किशोर उतरा जिसके कंधो पर एक झोला टंगा हुआ था।

“महोदय! सालाना हाट में व्यापार के लिये अग्रिम अनुमति पत्र की आवश्यकता होती है। क्या आपके पास अग्रिम अनुमति पत्र है?” सैनिक ने दलपति से अनुपति पत्र की बाबत प्रश्न किया।

दलपति ने अपने पीछे खड़े किशोर को संकेत से बुलाया। किशोर का मुख शांत और सौम्य था, उसके मुख पर एक आकर्षक मुस्कान थी। वह अभी पन्द्रह या सोलह वर्ष का ही था, किन्तु इसके पश्चात भी उसका कद दलपति के लगभग बराबर ही था। शरीर उसका भी दलपति की ही तरह मांसल और कटाव लिये हुए था। सैनिक क्षण भर के लिये उस किशोर को देखकर प्रभावित हो गया। किशोर दलपति के समीप पहुंचा और अपने कंधे पर टंगे झोले में से एक सुरक्षित रखा हुआ पत्र निकाल कर दलपति की ओर बढ़ा दिया। दलपति ने क्षणिक भी विलंब न करते हुए वह पत्र दूसरे अधिकारी सैनिक को थमा दिया। अधिकारी ने पत्र को

देखा, उसने राजसी मुहर और व्यापार संबंधित कुछ हस्ताक्षरों एवं मुहरों की पुष्टि की।

“अनुमति पत्र वैध है। यह अनुमति पत्र तीन दिन के लिये वैध है, आपको हाट में अग्रिम अर्जी के समय जो स्थान आवंटित किया गया था, उसकी आवश्यक खानापूर्ति होने के पश्चात आपको स्थान मिल जायेगा। किन्तु यह हुआ अनुमति पत्र, क्या मैं आपके व्यापार संबंधित आधिकारिक पहचान पत्र देख सकता हूँ?” अधिकारी अनुमति पत्र से पूर्णतया आश्वस्त था, किन्तु उसे अब भी सतर्क रहना आवश्यक था।

दलपति मुस्कुराया और अपनी कमर में टंगे थैले में एक पहचानपत्र और व्यापारिक दस्तावेज सैनिक की ओर बढ़ा दिया। सैनिक अब आश्वस्त था।

“आपको प्रदान किये गये अनुमति पत्र में आपके द्वारा विक्रय किये जाने वाले वस्तुओं के प्रकार का उल्लेख किया गया है, औपचारिकता के लिये जांच में सैनिकों सहयोग दीजिये। हमारे सैनिक एक एक गाड़ी का निरीक्षण करेंगे।” सैनिक ने दलपति को बैलगाड़ी एक एक करके प्रवेशद्वार के भीतर लाने का संकेत किया और पलटकर सैनिक टुकड़ी को निरीक्षण करने का संकेत दिया।

सैनिक अब क्रमानुसार हर बैलगाड़ी की जांच करने में व्यस्त थे। कुछ ही देर में सम्पूर्ण दल की जांच हो चुकी थी और कोई भी नकारात्मक या अवैध वस्तु नही पायी गयी। सैनिकों ने संकेत किया तो मुख्य अधिकारी ने अनुमति पत्र मुहर लगा कर प्रवेश सुनिश्चित कर दिया।

“अयोध्या में आपका स्वागत है। सहयोग करने के लिये आपका धन्यवाद, आपका दिन शुभ रहे।” टुकड़ी प्रमुख ने मुस्कुराते हुए कहा और मुख्य द्वार खोल दिया।

***

दलपति अपने दल के साथ अब वार्षिक हाट में था। भव्य इमारतें, पक्के मार्ग, साफ़ सुथरी गलियाँ, मार्ग के दोनों ओर सुवासित फूलों से सुसज्ज पौधे और बगीचे। अनेकों दुकानें, जहाँ विविध प्रकार के अनेक राज्यों के व्यापारी अपना अपना माल सजा रहे थे। हाट में खरीदारी करने वालो की आवक आरंभ हो गयी थी। दुकानें अभी भी सज ही रही थी किन्तु क्रय विक्रय अपनी पूर्ण गति पर था। विविध प्रकार के, अनेकों राज्यों एवं देश विदेश से आये व्यापारी और उनके विविधतापूर्ण नाना पदार्थ वहाँ आकर्षण का प्रमुख केंद्र थे। दलपति ने अपना वाहन दुकानों

से सजी एक गली की ओर मोड़ा और अपने गंतव्य की ओर बढ़ गया। वहाँ प्रत्येक मार्ग एवं मोड़ पर निर्देश और पथप्रदर्शक लगे हुए थे जिस कारण दलपति को तनिक भी कठिनाई नही आयी और वह उस दुकान तक पहुँच गया, अपनी दुकान की पहचान करते ही दलपति ने अपने दल के अन्य सदस्यों को ठहरने का संकेत किया और बैलगाड़ी से छलांग लगा कर उतर गया।

सभी सदस्य अब अपने सभी साहित्य उतारने में व्यस्त हो गये थे। कुछ ही देर ने सारा साजो सामान दुकानों में सज चुका था। अब तक सब ठीक था, किन्तु दुकान सजने के पश्चात से ही उनकी गतिविधियाँ थोड़ी विचित्र सी प्रतीत होने लगी थी। दलपति अपने पूरे दल से संकेतों में बातें कर रहा था। हाट का वातावरण उफान पर था। ग्राहकों की आवक अत्याधिक बढ़ गयी थी। हाट में कोई भी दुकान और कोई भी व्यापारिक केंद्र ऐसा शेष न था जहाँ भीड़ न हो। दोपहर होते होते दलपति के दुकान का आधा साहित्य समाप्त हो चुका था। ऐसी बिक्री की तो उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी। तीन दिन के हाट में बिकेगा इतना ही साहित्य वे लेकर चले थे, किन्तु उनका आधा साहित्य आज पहले ही दिन समाप्त हो गया। तीन दिन तक उनका टिकना अत्यंत कठिन लग रहा था। दलपति अपने स्थान से उठा और किशोर के पास पहुंचा।

“सुबाहु! तुम जरा मेरे स्थान पर बैठो, बाकी सदस्यों से मंत्रणा करनी है।” दलपति ने किशोर को सुबाहु कह कर संबोधित किया।

“जी मामा जी।” किशोर के मुख से उसकी मुस्कान अदृश्य हो चुकी थी। वह सुबाहु था, समय के साथ साथ उसके मुख पर कठोरता स्पष्ट दिखायी देने लगी थी। निस्संदेह दलपति के रुप में भार्गव ही था। भार्गव अपने साथियों की ओर पहुंचा।

“मित्रों! हमारी आशा के विपरीत हमारा साहित्य कल तक समाप्त हो जायेगा। और हमें अभी निश्चित तौर पर तब तक ठहरना है जब तक हम अपने उद्देश्य में सफल न हो जाये।” भार्गव ने दल के सदस्यों से कहा। उसमे सबसे हट्टा कट्टा व्यक्ति आगे आया।

“चिंता न करो भार्गव। अभी हमारे पास कल तक का समय है। यदि हमारा साहित्य समाप्त भी हो गया तो हम खरीदारी करने के लिये भी रुक सकते है।” मार्तण्ड ने सुझाव दिया। भार्गव अब थोडा आश्वस्त हुआ।

“मामा!” सुबाहु ने भार्गव को पुकारा। भार्गव ने उसकी ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा किन्तु सुबाहु की आँखे बंद देख कर वह चिहुंक उठा। सुबाहु के नेत्र बंद थे और उसके हाथ उसके कानों पर थे।

“वे आ रहे हैं।” सुबाहु लगभग चीखते हुए बोला। उसके चीखने से वहाँ उपस्थित भीड़ का ध्यान उस पर गया। भार्गव सुबाहु तक पहुंचा।

“कितने है?” भार्गव उद्वेलित था।

“ए! क्या हो रहा है यहाँ?” वहाँ से गुजरता एक सैनिक शोर सुनकर उनकी ओर बढ़ा। भार्गव को उसकी कोई चिंता नही थी। उसने सैनिक को देखकर भी अनदेखा कर दिया।

“कितने है वे सुबाहु?” भार्गव ने पुनः प्रश्न किया।

“निश्चित नही बता सकता किन्तु चार प्रतीत हो रहे है, हमारी आशा से अधिक शक्तिशाली है।” सुबाहु ने नेत्र खोले।

“मित्रों! सज्ज हो जाओ।” अथर्व ने मार्तण्ड की ओर देखते हुए अपने दल को सजग होने का आदेश दिया।

“ए व्यापारी! क्या हो रहा है यहाँ? सैनिकों यहाँ आओ, यहाँ कुछ संदेहास्पद गतिविधियाँ हो रही है।” सैनिक ने किसी आशंका के वशीभूत होकर अपने दल को आवाज दी और अपने हाथ में थमा भाला भार्गव के सीने की ओर बढ़ा कर उसे अपने स्थान पर स्थिर रहने का संकेत किया।

भार्गव ने उसकी तरफ देखना तक आवश्यक न समझा। दायें हाथ से उसने भाले का फल वाला हिस्सा पकड़ कर बायें हाथ से भाले के मध्य तीव्र प्रहार किया, जिससे भाला दो भागों में विभाजित हो गया। सैनिक उसके प्रहार की शक्ति देखकर भय से पीछे हट गया। तभी बाकी सैनिकों की टुकड़ी वहाँ आ पहुंची, सभी ने तलवारे और भाले निकाल लिये थे।

“मूर्खो! हमें नहीं उन्हें रोको। हाट खाली करवाओ शीघ्र अतिशीघ्र।” भार्गव सैनिको को देखकर चीख पड़ा।

तब तक सुबाहु भी अपने स्थान से अदृश्य हो चुका था और बैलगाड़ी के समीप पहुँच गया था।

“तुम सभी अपने अपने स्थान पर स्थिर रहो। तुम्हें बंदी बनाया जाता है।” सेना प्रमुख ने सेना को उन्हें बंदी बनाने का निर्देश दिया। सैनिक आगे बढ़े और उसी क्षण सुबाहु उछलते हुए भार्गव और सैनिको के मध्य आ पहुंचा। उसकी असंभव सी उछाल देख कर कुछ क्षण के लिये वहाँ उपस्थित भीड़ और सैनिक अवाक् रह गये।

“मामा! आप तैयारी कीजिये, इनके लिये मैं ही पर्याप्त हूँ।” सुबाहु ने भार्गव की ओर देखते हुए कहा, और भार्गव निश्चिंत होकर बैलगाड़ियों की ओर बढ़ गया जहाँ उसके दल के बाकी सदस्य उपस्थित थे। वे बैलगाड़ियों के विशालकाय चक्कों को खोल रहे थे। बैलगाड़ियों की लकडियो को अलग कर रहे थे। बैलगाड़ी के हर हिस्से में लकड़ी के कुछ भाग ऐसे थे जो अंदर से खोखले थे। वे सभी उनमे से धातुओं के कुछ विचित्र आकार प्रकार के टुकड़े निकाल रहे थे। मार्तण्ड ने बैलों के कंधो पर रखे लकड़ी के मध्य से दो तलवारें तक निकाल ली।

सैनिकों के लिये इतना ही पर्याप्त था आक्रमण करने के लिये। सैनिक आगे बढ़े ही थे कि सुबाहु धरा पर बैठ कर किसी लट्टू की भाँति तीव्र गति से घूम गया। ऐसा करते हुए उसने अपना एक पाँव बाहर की ओर रखा था। जिसकी चपेट में आकर तीन सैनिक मुंह के बल धरती पर जा गिरे। उनके गिरने से भी पहले सुबाहु छलांग कर उठ चुका था। एक सैनिक ने भाले से प्रहार किया किन्तु उसने ना केवल भाले का प्रहार बचाया, अपितु भाले को अपनी बाहों और पीठ के सहारे भींच कर तोड़ भी दिया। सैनिक एक किशोर बालक की शक्ति देख कर अचंभित थे।

“आपको हमसे युद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। हम यहाँ आपकी सहायता के लिये ही आये है।” सुबाहु कहते हुए पुन: उछला और अपने घुटने का प्रहार उस सैनिक के कंधे पर किया जिसकी तलवार प्रहार के लिये उठी ही थी। वह तनिक झुका ही था के उसकी बांह पकड़ कर सुबाहु ने उसे पटकी दे दी। सुबाहु के हाथों में भाले का टुटा हुआ भाग था। उसने उस भाग को अपनी अंगुलियों में फंसा कर घुमाना आरंभ कर दिया। सैनिक तलवार एवं भालों से प्राणघातक प्रहार करने में तनिक भी नही हिचक रहे थे। उन प्रहारों से बचाव हेतु सुबाहु ने भाले के टुकड़े को अद्भुत गति से घुमाते हुए उसे एक घूमते चक्र का स्वरुप दे दिया। और उसने इसी को अपनी ढाल बना ली। तीव्रता से घूमते इस चक्र पर वह भाले और तलवारों के प्रहार न केवल झेल रहा था अपितु उससे उल्टा प्रहार भी कर रहा था। उसने पीछे देखा भार्गव और उसका दल फुर्ती से अपना कार्य कर रहा था। उन्होंने धातु और लकड़ियों के उन विचित्र टुकडो को जोड़ कर शस्त्र बना लिये थे। ये सभी टुकड़े एक सम्पूर्ण शस्त्र के ही अलग अलग हिस्से थे। दल के प्रत्येक सदस्य के पास अब शस्त्र थे।

सुबाहु ने पुन: कुछ सुना। वह समझ चुका था कि अब खेलने का समय बिलकुल भी नहीं है। सुबाहु ने हाथ में घूमते भाले के टुकड़े को एक

विचित्र कोण बना कर सैनिको की ओर उछाल फेंका, वह घूमता हुआ चक्र सभी से टकराकर उन्हें मूर्छित करते हुए पुन: सुबाहु के हाथों में आ पहुंचा था। अब मात्र तीन ही सैनिक शेष थे जो अपने पैरों पर खड़े थे।

“हमसे लड़कर समय और ऊर्जा व्यर्थ मत करो मित्र! जितनी शीघ्रता से हो सके यह हाट खाली करवा दो और रक्षक टुकड़ियों को सहायता के लिये बुला लो।” भार्गव चीखा। उसके हाथ में एक दण्ड था। यह उसी प्रकार की दण्ड था जो ऋषि कपिल के पास सदैव होता था।

“किन्तु हम ऐसा क्यों करे?” सेना नायक ने निर्भीकता से कहा। उसके भयभीत होने का कोई कारण नही था, क्योंकि उसे पता था के कुछ क्षणों में यहाँ सैनिकों की अनेक टुकड़ियां उपस्थित हो जायेंगी।

“यदि ऐसा नही करोगे तो भीषण जनहानि होगी। यहाँ राक्षसों का आक्रमण होने वाला है कुछ ही क्षणों में।” सुबाहु ने संयत स्वर में कहा।

“यह स्थान खाली करो सबके सब।” भार्गव चीखा। किन्तु वहाँ उपस्थित भीड़ अब भी जस के तस थी। उसी क्षण सैनिको का एक जत्था वहाँ आ पहुंचा, सभी ने तलवारे निकाल रखी थी। वे आगे बढ़े ही थे की भार्गव ने अपने हाथ में थमे दण्ड को जोर से हवा में एक ख़ास कोण में घुमाया। तीन चार बार तीव्रता से घुमाने के पश्चात उसने दण्ड को सैनिकों की दिशा में ही तीव्रता से किसी तलवार की तरह लहराया। आश्चर्यजनक रूप से दण्ड से एक टंकार का स्वर उभरा और एक भीषण कंपन की लहर से आगे बढ़ते सैनिको के पाँव धरा से उखड़ गये और सभी उस भीषण धक्के से पुन: पीछे जा गिरे।

“मैंने कहा यह स्थान खाली कर दो।” भार्गव ने भीषण रूप से दहाड़ते हुए दण्ड उसी प्रकार पुन: लहराया और पुन: टंकार का स्वर निकला, अबकी वहाँ उपस्थित भीड़ को भीषण कंपन ने अपनी सीमा में ले लिया। अब वहाँ भय का वातावरण उत्पन्न हो गया था। चहुँओर भगदड़ की स्थिति उत्पन्न हो गयी।

***

“सभी पीछे हट जायें।” सुबाहु चीखा।

और उसी क्षण एक विशालकाय शिलाखंड मुख्य द्वार से उछलते हुए तीव्रता से वहाँ उपस्थित सैनिक टुकड़ी की ओर आता दिखायी दिया। उस शिलाखंड का व्यास इतना था कि थे उसकी जद में आकर सैनिक और वहाँ उपस्थित प्रजाजनों को मिलाकर कम से पन्द्रह या बीस उसके नीचे दबकर अवश्य मृत्यु को प्राप्त होते। इसी क्षण भार्गव दौड़ते हुए एक

निश्चित स्थान की ओर बढ़ा और उछला। उछलने के पश्चात उसके पाँव बैलगाड़ी के चक्के पर जा टिके और वह उस चक्के पर दबाव डालकर पुन: उछला। इससे उसकी उछाल दुगुनी हो गयी। उसने दण्ड एक विचित्र मुद्रा में घुमाया, दण्ड से निर्मित वलय में से विद्युत् सी निकलती प्रतीत हुई और दण्ड का तीव्र प्रहार उस गिरते शिलाखंड पर हुआ। एक तीव्र ध्वनि हुई और शिलाखंड अनगिनत टुकड़ों में विभाजित हो गया। सैनिकों को अब भी विश्वास नही हो रहा था कि वे जीवित है और जब उन्हें विश्वास होने ही लगा था तभी वे पुन: भार्गव के द्वारा मात्र एक दण्ड के प्रहार से उस भीमकाय शिलाखंड को विभाजित होता देख पुन: आश्चर्य के सागर में डूब गये। वे समझ गये थे कि यह दल किन्हीं सामान्य व्यक्तियों का समूह नहीं है, किन्तु इनका उद्देश्य इन्हें हानि पहुंचाना भी नहीं है। यदि हानि पहुँचाना चाहते तो उस शिलाखंड से कदापि न बचाते।

भार्गव अब पुन: अपने स्थान पर खड़ा था। मार्तण्ड ने सुबाहु की ओर उसकी विचित्र तलवार उछाल दी। वह एक लम्बी और मुड़े हुए फल की तलवार थी। इस तलवार के मध्य भाग में पकड़ने के लिये हत्था बना हुआ था। और दोनों ओर मुड़े हुए फल निकले हुए थे। यह तलवार नही अपितु एक अर्धचक्र था। जिससे एक ही समय में अनेकों शत्रुओं से युद्ध किया जा सकता था। दल के बाकी सदस्यों के हाथों में भी अलग अलग शस्त्र आ चुके थे और जिस प्रकार सुबाहु और भार्गव ने अर्धचक्र और दण्ड का प्रयोग किया था, उससे स्पष्ट होता था के दल का हर सदस्य अपने अपने शस्त्र के साथ एक विशिष्ट विशेषता, निपुणता लिये हुए था।

“हमारी बात मानिए। आप प्रजा को सुरक्षित स्थान पर ले जाइये।” भार्गव ने सेनाप्रमुख से नम्रता से कहा।

सेनाप्रमुख अब स्थिति की गंभीरता को समझ चुका था। उसने अपना सर हिलाया और अपने बिखरे हुए सैनिकों को संकेत दिया और स्वयं एक दिशा की ओर बढ़ गया। उसके संकेत पर चौकियों पर स्थित सैनिकों ने सेना को सूचना देने और प्रजाजनों को उस स्थल से हटाने के लिये नगाड़ों को बजाना आरंभ कर दिया। यह युद्ध के आरंभ होने और सैनिकों के एकत्रित होने का संकेत था।

प्रवेश द्वार पर भीषण कोलाहल उत्पन्न हुआ और उसी क्षण एक पूरा का पूरा वृक्ष ही प्रवेश द्वार को तोड़ते हुए भीतर आ गिरा। उस टूटे हुए प्रवेश द्वार से चार भीमकाय दानवों ने नगर में प्रवेश किया। यह स्पष्ट था कि द्वार पर खड़ी टुकड़ी उन्हें रोकने में असफल रही थी या मारी जा

चुकी थी। दानवों ने कुछ क्षणों तक वही स्थिर रहकर हाट और वहाँ मचे कोलाहल का निरीक्षण किया। हाट अब आधे से अधिक खाली हो चुका था। हर दानव कद में लगभग आठ से नौ हाथ ऊंचा और किसी जंगली भैंसे की भाँति तगड़ा था। शरीर के अनुपात में उनकी शक्ति कई गुना अधिक थी। उस विशालकाय वृक्ष को जड़ सहित उखाड़ फेंकने से यह प्रमाणित हो रहा था।

दानवों को देखते ही द्वार के भीतर उपस्थित सैन्य टुकड़ी ने आक्रमण कर दिया। पन्द्रह के आसपास सैनिकों की टुकड़ी तलवार और भाले लिये दानवों की ओर लपकी। चारों दानवों में से सबसे आगे वाला दानव जो निस्संदेह उनका मुखिया प्रतीत हो रहा था, आगे बढ़ा और उस विशाल वृक्ष को उठाया जिसकी सहायता से नगरद्वार तोड़ कर उन्होंने प्रवेश किया था। उस विशालकाय वृक्ष को उठा कर उस दानव ने किसी दण्ड की भाँति लहराया और आगे बढ़ती सैनिक टुकड़ी को एक साथ उस भीषण प्रहार से हवा में उछाल दिया। प्रहार भीषण था, सभी के पैर धरा से उखड़ चुके थे, सैनिक यत्र-तत्र जा गिरे। वृक्ष के प्रहार से तो भीषण चोट लगी ही थी किन्तु उसकी तीव्रता से वे जहाँ जहाँ गिरे वहां हड्डिया टूट गयी। वह टुकड़ी पुन: उठ पाने में असमर्थ थी। दानव उन घायल सैनिकों की ओर बढ़ रहे थे।

उसी क्षण एक विशालकाय पन्द्रह फीट का भाला तीव्रता से लहराते हुए उनकी ओर बढ़ा। मुखिया फुर्ती दिखाते हुए न केवल बच गया अपितु उसने उस भाले को भी लपक लिया। कुछ क्षणों तक वह उस अद्भुत विशालकाय भाले को विस्मय से देखता रहा। भाले का आकार और उसका भार इतना था कि उसे पकड़ने में ही मुखिया के दांतों तले पसीना आ गया था। उसने अचंभित होकर भाला जहाँ से आया था उस दिशा की ओर देखा। उसका देखना ही था कि एक और भाला द्रुतगति से आया और सबसे पिछले दानव के कंधे को न केवल भेद गया बल्कि उस झटके से वह दानव भी भाले के साथ ही पिछली सुरक्षा दीवार में जा धंसा। उसके गले पीड़ायुक्त गुर्राहट निकली। मुखिया ने एक वृक्ष को अपना शस्त्र और ढाल दोनों बना लिया और एक और बढ़ते भाले को न केवल वृक्ष के प्रहार से विफल किया बल्कि उस वृक्ष को ही किसी भाले की भांति उसी दिशा में उछाल फेंका जहाँ से प्रहार हो रहे थे।

उन विशालकाय भाले को एक यंत्र की सहायता से फेंका जा रहा था। वह यंत्र विशालकाय पहियों के ऊपर स्थित था। मजबूत और भारी

भरकम लकड़ी एवं धातु के प्रयोग से वह यंत्र बनाया हुआ था, जो एक विशाल काय धनुष के समान ही था। पन्द्रह फीट के भाले उस धनुष के बाण समान थे। इस यंत्र में एक बार में चार विशालकाय भाले बिठाए जा सकते थे जिससे एक के पश्चात एक चार बार प्रहार किया जा सकता था। यह दानव भेदक बाण था। जिसका निर्माण ही विशालकाय दानवों एवं राक्षसों से निपटने के लिये किया गया था। यह एक अद्भुत और मारक यंत्र था। किन्तु तब तक, जब तक मुखिया द्वारा भयंकर गति से फेंका गया वृक्ष उस पर ना आ गिरा।

उस विशालकाय वृक्ष को अपनी ओर आते देख यंत्र संचालन करने वाले सैनिक सही समय पर यंत्र से उछल कर अपने प्राण बचाने में सफल हुए थे। वृक्ष के प्रहार से यंत्र खंड-खंड हो गया। दानवों के विरुद्ध एक मारक अस्त्र अब विफल हो गया था।

“मित्रों! सैनिक अधिक समय तक दानवों के समक्ष खड़े नही रह पायेंगे। भले ही और यंत्रो की सहायता से दानवों को पराजित कर दे, किन्तु इतनी देर में यह दानव भीषण विनाश कर देंगे और अनगिनत लोगों को मार चुके होंगे। हमें इन्हें विफल करना है। इनके प्रहारों को बचाते हुए आगे बढो।” कहते हुए भार्गव किसी कुशल नट की भाँति अपने स्थान से उछल कर बैलगाड़ी पर जा चढ़ा और वहाँ से पुन: उछला। वह इसी प्रकार से विभिन्न वस्तुओं पर पैर टिकाते हुए स्वयं के शरीर को गतिमान बनाते हुए दानवों की ओर बढ़ रहा था। उसके दल एवं सुबाहु ने भी उसी का अनुसरण किया। वे सभी दानवों द्वारा फेंकी जा रही विशालकाय वस्तुओं से बचते बचाते, उछलते हुए उनकी ओर बढ़ रहे थे।

तब तक सैनिक एक और दानव भेदक बाण पर प्रत्यंचा कस चुके थे। अबकी वे चारों बाण एक साथ फेंकने के लिये तैयार थे। किन्तु दीवार से जा चिपके दानव ने अपने कंधे में धंसा भाला खींच निकाला और क्रोध में आकर उस भाले को उसी यंत्र की ओर उछाल फेंका, भाला उस विशालकाय यंत्र की कमान को तोड़ता हुआ प्रत्यंचा ताने सैनिक को भेद गया। सैनिक कमान की दिशा सम्भाले हुए था, दिशा साधने से पहले ही वह भाले का निशाना बन गया, सैनिक क्षण भर में ही मृत्यु को प्राप्त हो गया और प्रत्यंचा से नियंत्रण हटते ही अनियंत्रित भाले छूट पड़े।

सुबाहु ने विशालकाय अनियंत्रित भालों को बाण की गति से अपनी ओर आते देखा।

“सभी स्वयं को विशालकाय बाणों से बचायें।” चीखते हुए सुबाहु ने कुशलता से अपने शरीर को गति देकर उछाल दिया और एक बाण से स्वयं को बचा लिया। किन्तु वह बाण अब मार्तण्ड को भेदने वाला था। भार्गव ने उस बाण पर अपने दण्ड का प्रयोग किया। दण्ड अभी पूर्णतया गति प्राप्त भी नहीं कर पाया था, अर्धवलय ही बना था। इस कारण विशालकाय बाण भले ही उस अर्धवलय से टकरा कर रुक गया किन्तु भीषण टक्कर के कारण और चक्र के पूर्ण निर्माण ना होने के कारण से उस टकराव के भीषण आघात से उछलता हुआ भार्गव सीधे दानवों के मध्य जा गिरा। आघात से वह अभी स्वयं को संभाल ही न पाया था के मुखिया दानव ने भार्गव को गर्दन पकड़ कर उठा लिया। मार्तण्ड अपने बाकि साथियों सहित दानवों की बढ़ा ही था, किन्तु उसी क्षण सैनिको द्वारा छोड़े गये अनगिनत बाणों से बचने के लिये उन्हें अपने को यत्र-तत्र उछाल देकर, और ओट लेकर स्वयं को बचाना पड़ा।

“मूर्खो! प्रहार मत करो।” सुबाहु गला फाड़कर सैनिकों पर चीखा। किन्तु सैनिकों के लिये उसकी चीख का कोई महत्व नहीं था। बाणों के प्रहार दानवों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं डाल रहे थे किन्तु उनके क्रोधाग्नि में घी का कार्य अवश्य कर रहा था। उसी क्षण अद्भुत शक्ति का परिचय दिखाते हुए तांबे के रंग वाली त्वचा वाले दानव ने भूमि में गडा एक भीमकाय शिलाखंड अपनी भुजाओं से उखाड़ कर निकाल लिया और सैनिकों की ओर उछाल दिया। इतने विशाल शिलाखंड को अपनी ओर आते देखकर सैनिक अपने आप को बचाने के लिये मैदान छोड़ कर भागे।

सुबाहु भार्गव को मुखिया के हाथों में छटपटाते हुए देख रहा था। वह दानव किसी भी क्षण भार्गव के शीश को किसी खरबूजे की भाँति भींच कर तोड़ सकता था। सुबाहु के नेत्रों के सामने ताड़का दिखायी देने लगी। उसके पिता और माँ की मृत्यु उसे दिखायी देने लगी। क्रोध के कारण सुबाहु के मुख से झाग निकल रहा था, कर्णशिरायें रक्तिम हो गयी थी। नेत्र और शरीर किसी भट्टी की भाँति दहक रहे थे। वह अपने दुधारी अर्धचक्र को लिये द्रुत गति से भार्गव की ओर बढ़ा। दानव मुखिया ने अपनी हथेली का कसाव भार्गव के शीश पर बढ़ा दिया था। भार्गव को आभास हुआ कि कुछ ही क्षणों में उसका मस्तक फूट जायेगा। भार्गव के पास दण्ड तक नही था, होता तो भी वह उसका प्रयोग करने की अवस्था में था ही नही। मार्तण्ड अपने दल के साथ शेष दानवों से भिड़ा हुआ था।

मुखिया के मुख पर क्रूर भाव दिखायी दे रहे थे। अब किसी भी क्षण भार्गव की मृत्यु निश्चित थी।

और यही वह क्षण था जब सुबाहु अद्भुत ढंग से उछला, उसकी उछाल असामान्य थी। उस उछाल को देखकर सैनिकों के साथ साथ दानव तक विस्मित हो गये। अभी मुखिया कुछ समझ पाता उससे पहले ही सुबाहु अर्धचक्र को दोनों हाथो से घुमाता हुआ भार्गव और दानव के मध्य आ गिरा। भार्गव दानव की पकड़ से छूट कर धरा पर जा गिरा। दानव अवाक रह गया, एक क्षण के लिये उसे कुछ भी समझ में न आया कि आखिर हुआ क्या है।

किन्तु अगले ही क्षण उसे भयंकर पीड़ा का अनुभव हुआ। सुबाहु अपने चक्र से उसकी कलाई काट कर अलग कर चुका था। मुखिया की कलाई भार्गव के साथ ही धरा पर जा गिरी थी। मुखिया के हाथों से रक्त की मोटी धारा फूट पड़ी जिसमे सुबाहु नहा गया था। सुबाहु ने विद्युत् की गति से चक्र का प्रहार किया था, कुछ भी समझने से पूर्व और पलक झपकने से भी पहले सुबाहु ने अपना कार्य कर दिया था। वह अपने स्थान पर पूर्ण क्रूरता के भाव लिये खड़ा था। मुखिया पीड़ा से कराह ही रहा था कि सुबाहु के हाथ से चक्र छूटा और मुखिया की गर्दन को छूते हुए पुन: घूमकर सुबाहु के हाथो में आ गया। उस क्षण सभी का ध्यान वहीं पर था। क्षण भर के लिये सभी युद्ध करना भूल गये थे। मुखिया का सर धड़ से अलग होकर धरा पर जा गिरा था। यह देख क्रोध से बिफरते हुए तीसरे दानव ने सुबाहु की छाती पर अपनी गदा से भीषण प्रहार किया। सुबाहु किसी सूखे पत्ते की ही भाँति लहराते हुए पन्द्रह-सोलह हाथ दूर जा गिरा। उसने उठने का प्रयास किया ही था कि उसके मुंह से रक्त आ गया और खांसी आने लगी।

प्रहार भीषण था और सुबाहु असावधान। सुबाहु ने दानव को अपनी ओर आते देखा, सुबाहु को स्पष्ट दिखायी देना बंद हो गया था। उस पर मूर्छा छा रही थी। वह दानव किसी पागल भैंसे की तरह द्रुतगति से दौड़ते हुए सुबाहु की ओर बढ़ रहा था। सुबाहु की मृत्यु निश्चित ही थी। किन्तु तब तक मार्तण्ड अपने दल के साथ मोर्चा संभाल चुका था। उसने अपने धनुष से सटीक लक्ष्य साध कर एक के पश्चात एक चार बाण छोड़े। बाणों का उस दानव पर कोई प्रभाव नही पड़ने वाला था। किन्तु वह बाण उसकी दाहिनी आँख को भेदते हुए उसके मस्तिष्क में जा धंसे थे। अद्भुत निशाना था मार्तण्ड का। उसके चारों बाण एक के पश्चात एक दानव की

दाहिनी आँख में ही जा धंसे थे। ड़कारता हुआ दानव मुंह के बल सुबाहु के समीप आकर गिरा, उसके गिरते ही बाण और गहरे तक उसके मस्तक में जा धंसे और उसने भी अपने प्राण त्याग दिये।

अपने मुखिया और साथी की मृत्यु देख कर दोनों दानव कुछ क्षणों तक किंकर्तव्यमूढ़ से खड़े रहे। सैनिकों में भी साहस नही हो रहा था कि वे किसी भी प्रकार का प्रहार करे। वे इन अनजान तथाकथित व्यापारियों की क्षमता और कौशल से अत्याधिक प्रभावित दिखायी दे रहे थे। वे कुछ और कर भी नही सकते थे, उनके दैत्याकार भेदक यंत्र भी निष्क्रिय हो चुके थे।

दोनों दानवों ने एकदूसरे की ओर देखा। वे अत्याधिक क्रोध में थे, उन्हें विश्वास ही नही हो रहा था कि उनके साथियों को तुच्छ मनुष्यों ने इतनी सहजता से मार गिराया, सर्वाधिक क्रोध उन्हें मुखिया की मृत्यु का था, जो किसी योद्धा अथवा सैनिक के हाथो न होकर एक किशोर के हाथो हुई थी। दोनों ने भयंकर हुंकार भरी। मार्तण्ड ने अपने बाणों की वर्षा आरंभ कर दी। किन्तु उसके बाण उनसे टकराकर छितरा गये। मार्तण्ड अभी कोई और योजना बना पाता उसके पहले ही दोनों दानवों ने जो भी मिला उससे प्रहार करना आरंभ कर दिया। बगीचे के पेड़ उखाड़ कर फेंकना आरंभ कर दिया। सुरक्षा दीवार का सम्पूर्ण भाग उठा के फेंकने लगे। और जब भी उनमे से कोई संभलने का प्रयास करता दोनों एक साथ उछल कर धरा पर कूद पड़ते, जिससे उनके समीप एक भयंकर कंपन सा होता और मार्तण्ड को स्वयं को भी स्थिर रखना असंभव हो जाता। अब मार्तण्ड प्रहार नही कर पा रहा था और ना ही उसके साथी। चार सदस्य तो केवल दानवों द्वारा उछाली गयी भयंकर वस्तुओं से सैनिकों एवं सुबाहु को ही बचाने में व्यस्त थे। सुबाहु मूर्छित होने वाला था।

“नही मुझे मूर्छित नही होना है। कदापि नही।” प्रबल इच्छाशक्ति और हठ दिखाते हुए सुबाहु उठ बैठा। उसकी छाती में भीषण पीड़ा हो रही थी। कदाचित कुछ पसलियाँ टूट भी चुकी थी। वह जब भी श्वास लेता पसलियों के दोनों ओर भीषण पीड़ा होती। उसने अपने समीप ही पड़ा अर्धचक्र उठाया। एक पत्थर उठाया और अपने पैर की सबसे छोटी अंगुली पर क्रूरता से प्रहार कर दिया। भीषण पीड़ा की लहर उसके शरीर में दौड़ गयी किन्तु वह दांत भींचे सह गया। उसे अपनी मूर्छा से बचने हेतु यही उपाय सही लगा था, अब पीड़ा की लहर उसे चेतना में रखे हुई थी,

किन्तु साथ ही साथ उसे यह भय भी था कि कहीं अत्याधिक पीड़ा ही उसे मूर्छित न कर दे।

भार्गव ने सुबाहु को ऐसा करते हुए देखा। उसे स्वयं को चोट पहुंचाते देख भार्गव पीड़ा से तड़प उठा। किन्तु यह समय आवेश में आने का नही था। उसी क्षण दानवों द्वारा एक भीमकाय शिलाखंड भार्गव की ओर उछाल दी गयी, जिससे भार्गव ने स्वयं को बचाते हुए उस स्थान से उछल कर परे हट गया। उसके हाथों में अब उसका दण्ड आ चुका था। किन्तु समस्या अब भी स्थिर रहने की ही थी। दोनों दैत्य विक्षिप्तों की भाँति बिना थके और बिना रुके प्रहार पर प्रहार करते जा रहे थे। उनके प्रहारों की तीव्रता बढ़ती ही जा रही थी। दोनों दानव आसपास की इमारतों, भवनों एवं दुकानों तक के स्तंभ, दीवारे, हिस्से उखाड़ उखाड़ कर फेंकने लगे। भार्गव उनकी इस अंधाधुंध प्रहार करने की रणनीति से कुछ भी सोच नही पा रहा था। भार्गव ने मार्तण्ड की ओर देख कर संकेत किया। मार्तण्ड अपने बचे हुए साथियो के साथ भार्गव के समीप जाने का प्रयास करने लगा। उसके साथियो के पास गदा, दोमुंहे भाले, और धातु से निर्मित दण्ड थे, ठीक उसी प्रकार के जैसे भार्गव के पास थे। वे दण्ड के प्रयोग में भार्गव जितने दक्ष नही थे। हां वे उसकी घूर्णन गति से प्रहारों को अवश्य विपरीत दिशा में उछाल सकते थे। अब तक वे इसी प्रकार से प्रहारों को रोकते आ रहे थे। किन्तु निरंतर होते प्रहारों के कारण अब वे भी थकने लगे थे।

मार्तण्ड का संकेत पाकर उन्होंने दानवों द्वारा किये गये प्रहारों को अपनी दण्ड की गति से पुन: दानवों की ओर ही मोड़ने का प्रयास आरंभ कर दिया। किन्तु इस कारण उनके प्रहारों को रोकने का प्रयास केवल भार्गव और उसके समीप के स्थल तक ही सिमित हो गया, जिस कारण प्रहारों की सीमा में सैनिक आ रहे थे, किन्तु सैनिकों ने भी बुद्धिमानी दिखाते हुए अपने आपको मजबूत भवनों एवं निर्माणों की आड़ में छुपा रखा था। कुछ ही क्षणों में मार्तण्ड एवं उसके साथी भार्गव के समक्ष एक घेरा बनाये खड़े थे। सभी के दण्ड तीव्र गति से चक्र के समान घूम रहे थे। धीरे धीरे सभी की लय और दिशा एक समान होने लगी और उससे एक सम्मिलित वलय का निर्माण हुआ। सामने से देखने पर उनके घुमते दण्ड अदृश्य हो गये से प्रतीत हो रहे थे । भास होता था मानो वे सभी एक विशालकाय तीव्र गति से घूमते चक्र की ओट में हो। दण्ड के घुमने से जो वलय बन रहा था वह अब किसी ढाल की भाँति सुरक्षा चक्र का

कार्य कर रहा था। दानवों का हर प्रहार उस वलय रूपी चक्र से टकराकर पुन: उन्ही की ओर आ टकराता। दानवों ने अब अपने सारे आक्रमण का केंद्र केवल उस सम्मिलित चक्र की ओर ही केन्द्रित कर दिया था। वे यह जानते थे कि चक्र केवल तभी तक है जब तक सभी योद्धा स्थिर है। दोनों ने एकदूसरे की ओर देखा और सम्मिलित रूप से पुन: छलांग लगा कर कंपन करने की योजना बना ली। तब तक भार्गव ने विद्युत् की गति से अपना दण्ड घुमाना आरंभ कर दिया था। अब उसके दण्ड के घुमने से किसी भीषण ध्वनि का निर्माण होने लगा। सुबाहु भी अपने पैरों पर खड़ा हो गया था। उसने कोई निश्चय कर लिया था। अर्धचक्र उसके हाथो में चमक रहा था, वह भी योद्धाओ द्वारा बनाये गये सम्मिलित वलय की सीमा में स्वयं को सुरक्षित रखने का प्रयास करते हुए आगे बढ़ा।

अब भार्गव के दण्ड की घूर्णन गति अपने चरम की ओर थी। उसमे से विद्युत् तरंगे प्रस्फुटित होने लगी। छलांग लगाने की तैयारी करते दानव क्षण भर को चिंहुके और आश्चर्य से वलय के पीछे से चमकती विद्युत् तरंगो को देखने लगे। भार्गव ने उसी क्षण अपने कंठ से एक विचित्र सी ध्वनि निकाली जो संकेत था वलय चक्र के रोकने का। उस ध्वनि को समझते ही सभी योद्धाओ ने अपने दण्ड को घुमाना बंद कर दिया, और उसी क्षण तीव्रता से घूमते वलय चक्र के साथ ही भार्गव इस प्रकार उछला मानों हवा में उड़ा हो। उसका चक्र दोनों हाथो से उसके सर के ऊपर तीव्रता से विद्युत् तरंगो को प्रस्फुटित करते हुए घूम रहा था। उसकी उछाल अब तक सबसे अविश्वसनीय उछाल थी। विद्युत् की सी गति से वह उछला और घुमते दण्ड को हाथो में लेकर दानवों के मध्य जा गिरा, किन्तु धरा पर पैर रखने से पहले ही विद्युत् सी तरंगे छोड़ता दण्ड धरा से जा टकराया। एक भीषण कंपन हुआ। उस कंपन से दानवों के पैर धरा से उखड़ गये और वे अनेक हाथ तक हवा में उछल गये। भार्गव दण्ड को धरा पर टिकाये मजबूती से धरा पर स्थिर था, दण्ड से अभी भी विद्युत् तरंगे सी प्रस्फुटित हो रही थी। कंपन इतना भीषण था कि अनेक हाथ के अंतर पर खड़े योद्धा और सुबाहु तक अपने स्थानों से यत्र तत्र जा गिरे, कंपन की भीषणता केवल दानवों के समीप ही केन्द्रित होने के कारण उनपर कोई विशेष प्रभाव नही पड़ा। किन्तु दानवों के साथ ऐसा नही था। उस भीषण झटके से वे उछलकर कर धरा पर पुन: आ गिरे थे। उनके शरीर के अंदर तक भीषण कंपन हो रहे थे। उनकी अस्थियाँ इतनी भीषण रूप से कांप रही थी मानो मांस छोड़ कर बाहर आ जायेंगी। उनकी हृदय गति और

रक्तचाप असामान्य रूप से बढ़ गया था। मस्तिष्क कुंद हो गया था, कान सुन्न और दृष्टि धूमिल हो गयी थी।

उसी क्षण सुबाहु उछला और उनके मध्य आ खड़ा हुआ। इससे पहले के भार्गव कुछ कहता सुबाहु का अर्ध चक्र घूम चुका था और वह तभी वापस आया जब उन दोनों दानवों के शीश अपने अपने धड़ों से अलग होकर धरा पर लुढ़क गये। भार्गव उसकी आयु से विपरीत उसकी क्रूरता को देखकर असमंजस में भी था और चिंतित भी। मार्तण्ड शेष योद्धाओ के साथ अब वहाँ पहुँच चुका था। उसके मुख पर प्रशंसा के भाव थे, वह भार्गव का अनन्य प्रशंसक था और उसका बहुत सम्मान करता था। उसका युद्ध कौशल और किसी भी कला को आत्मसात करने की क्षमता का वह सदैव से प्रशंसक रहा था और उसके सानिध्य में स्वयं को बहुत ही भाग्यशाली मानता था।

“भार्गव! आपने पुन: विजय प्राप्त की।” मार्तण्ड प्रशंसा भरे स्वर में बोला।

“नहीं! यह मेरे अकेले का कार्य नही है। यह हम सबकी विजय है। अब हमारा कार्य हो चुका है तो हमें चलना चाहिये।” भार्गव को सुबाहु की चिंता थी, उसने सुबाहु की छाती पर हुए भीषण प्रहार को देखा था। सुबाहु को चिकित्सा की शीघ्र अतिशीघ्र आवश्यकता थी। सुबाहु स्वयं को स्थिर रखने का प्रयास कर रहा था किन्तु अब वह स्वयं को मूर्छित होने से रोकने में अक्षम पा रहा था। उसके मुख से रक्त अब भी बह रहा था।

“आप सभी! यहाँ से कहीं नहीं जायेंगे।” एक सख्त स्वर वहाँ गूंजा।

भार्गव ने पलटकर देखा। अब वहाँ अन्य सैन्य टुकड़ियां भी पहुँच चुकी थी। हाट में जहाँ तक दृष्टि पड़ती केवल सैनिक ही सैनिक दिखायी दे रहे थे। उनके हाथो में धनुष बाण थे जिसके निशाने पर ये सभी थे।

“हमें आपको अवैध रूप से प्रवेश, अपनी वास्तविकता छिपाने और नियमों से खिलवाड़ करने के आरोप में बंदी बना रहे है।” सेनानायक ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा।

“अभी आपने जो भी देखा उसके पश्चात क्या आपको विश्वास है कि आप हमें बंदी बना सकते है?” भार्गव ने कठोर स्वर में कहते हुए अपने दण्ड को दो बार लहराया। उसके लहराने की ही प्रतीक्षा में मार्तण्ड और बाकी सदस्य थे, वे भी एक साथ आकर खड़े हो गये और अपने अपने शस्त्रों को हाथो में मजबूती से थाम कर बचाव की मुद्रा में आ गये।

सैनिको ने धनुष उनकी ओर कर दिये। अब वातावरण में तनाव था, सेनानायक किसी भी क्षण आक्रमण करने का निर्देश दे सकता था।

अपनेआप को मूर्छित होने से बचाने का भरसक प्रयास करने के पश्चात भी सुबाहु स्वयं को नहीं संभाल पाया और अचेत होकर गिर पड़ा। उसे गिरते देख भार्गव उसकी ओर दौड़ पड़ा।

***

शताब्दी दर शताब्दी निरंतर युद्ध

अलेक्ज़ेंडर का आक्रमण (३२६ ईसा पूर्व)

मैसोडोनिया का शासक अलेक्ज़ेंडर विश्वविजय के सपने को लिये अपने अगले पड़ाव की ओर बढ़ रहा था। उसकी सेना वर्षो से अपने घरों से दूर थी, और निरंतर युद्ध कर रही थी। अलेक्ज़ेंडर की महत्वकांक्षा के समक्ष उसकी सेना ने स्वयं को झोंक दिया था। अलेक्ज़ेंडर शक्ति के मद में चूर था, वह निहायत ही क्रूर, कपटी, अत्याचारी और शराबी था। सत्ता और जीत के लिये हर तरह के हथकंडे अपनाने में उसका कोई सानी नही था। यूनानी उसे देवता का दर्जा देते थे। किवदंतियों के अनुसार वह आधा देवता और आधा मानव था। पिता फिलिप की मृत्यु के बाद बीस वर्ष की आयु में अलेक्ज़ेंडर सम्राट बना, अलेक्ज़ेंडर की महत्वकांक्षा और कुशल नेतृत्व के कारण उसने जल्द ही एशिया, मिस्त्र, बेबीलोन और बैक्ट्रिया पर जीत हासिल की। उसकी सेना निरंतर होते युद्धों से थक रही थी। यदा कदा अलेक्ज़ेंडर के वफादार सेना में पनप रहे असंतोष को दबा देते थे। आरंभ में सेना अपने महान राजा के नेतृत्व में युद्ध करने को ही अपना परम धर्म और ईश्वर की इच्छा मानती थी।

गांधार के राजा आम्भी ने पोरस और मगध के राजा धनानंद से अपने मतभेद और शत्रुता के कारण अलेक्ज़ेंडर को भारत आने का न्योता दिया। भारत की सीमा पर पहुँचने के पश्चात अलेक्ज़ेंडर की सेनाओं का मुकाबला अश्वायन और अश्वकायन नामक छोटे राज्यों की सेनाओं से हुआ। दोनों सेनाओं ने अलेक्ज़ेंडर की सेनाओं को कड़ी टक्कर दी। मत्सराज राज्य का बच्चा बच्चा सेना के विरुद्ध खड़ा हो गया था किन्तु अलेक्ज़ेंडर ने संधि करने का प्रस्ताव देकर धोखे से रात्रि में आक्रमण कर दिया और राज्य के हर व्यक्ति को मृत्यु के घाट उतार दिया। उसने मित्रता और संधि का दांव चलाकर धोखे से कई राजाओं को पराजित किया, फिर वह गांधार और तक्षशिला पहुंचा जहाँ आम्भी ने अपनी महत्वकांक्षा के लिये अलेक्ज़ेंडर का स्वागत किया और उसे सहायता भी उपलब्ध करवाई। अलेक्ज़ेंडर अब पोरस से लड़ने के लिये निकल चुका था। पोरस पंजाब, सिंध के साथ एक बहुत बड़े भूभाग का शक्तिशाली राजा था। अलेक्ज़ेंडर और पोरस के मध्य बाधा थी झेलम नदी, जिसे पार करना आवश्यक था।

अलेक्ज़ेंडर की सेना ने बेड़ों एवं पुलों का निर्माण किया। उसी समय सेना में विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी, छोटे छोटे विद्रोह अब भयानक असंतोष में परिवर्तित हो चुके थे। सेना का मनोबल टूट चुका था, वह शारीरिक और मानसिक रूप से थक चुकी थी। सेना भारत पर आक्रमण के लिये तैयार नही थी, भारत की उष्ण जलवायु उनके हौसले पस्त कर रही थी। वे वर्षो से अपने घर-परिवार से दूर थे, उनका अलेक्ज़ेंडर पर से उनका विश्वास अब कमजोर पड़ने लगा था। सेनानायक और सेना प्रमुख ने इस बात को गंभीरता से लिया, वे समझ गये थे कि अब असंतोष को दबाया नहीं जा सकता। उन्होंने अलेक्ज़ेंडर को वस्तुस्थिति समझाई तो अलेक्ज़ेंडर खुद अपनी सेना से मुखातिब हुआ और इस युद्ध के पश्चात घर वापसी के लिये राजी हो गया, किन्तु उसके लिये युद्ध जीतना आवश्यक था। अलेक्ज़ेंडर हर हाल में भारत पर कब्जा करना चाहता था। आम्भी की सहायता से उसकी सेना ने झेलम नदी को पार किया और लेकिन उसके पश्चात हुई भयानक वर्षा से झेलम में बाढ़ आ गयी, जिस कारण वापसी असंभव सी हो गयी। पोरस के पास विशालकाय हाथी दल था, स्वयं को विश्वविजेता कहलवाने वाले अलेक्ज़ेंडर की सेना का बंदर जैसे जीव से पहला सामना भी भारत में ही हुआ था, उसकी सेना ने बंदर तक नहीं देखा था। पोरस की सेना विशालकाय हाथियों पर सवार थी। उसकी सेना के पास विशालकाय भाले थे जिस कारण वे दूर से ही प्रहार कर सकते थे। युद्ध आरंभ हुआ, पोरस एक भयंकर योद्धा था उसके हाथी दल ने अलेक्ज़ेंडर की थकी और निष्प्राण सेना में त्राहि त्राहि मचा दी। भयंकर युद्ध हुआ किन्तु हाथियों पर सवार सैन्य और भालों के कुशल प्रहारों से जल्द ही अलेक्ज़ेंडर की सेना के पैर उखड़ने लगे थे। हाथियों की प्रचण्ड चिंघाड़ों से अलेक्ज़ेंडर की सेना के घोड़े बिदक गये और अव्यवस्था मच गयी। प्रशिक्षित हाथी प्रतिद्वंदी सेना को पांवो तले कुचल रही थी, और सूंड़ में उठाकर पटक रही थी।

एक अजब युद्ध नीति के तहत हाथी सूंड़ से जब शत्रु सेना को उठा देते उसी समय हाथी पर सवार पौरव सेना शत्रु का मस्तक काट देती, यह युद्ध नीति आतंक का पर्याय बन चुकी थी, अलेक्ज़ेंडर की सेना अब तक केवल क्रूरता दिखाने की आदि थी, किन्तु अब यह प्रथम अवसर था जब उनके साथ क्रूरता हो रही थी। अलेक्ज़ेंडर ने अपने जीवन में अनेकों भयानक युद्ध लड़े थे लेकिन ऐसा भयानक युद्ध उसने पहली बार देखा

था। उसने सेना का टूटता मनोबल देख स्वयं नेतृत्व किया और तलवार निकाले पोरस की सेनाओं के मध्य आवेश में आकर कूद पड़ा। उसका यही आवेश घातक सिद्ध हुआ।

उसकी सेना का मनोबल दुगुना हुआ, लेकिन उसी समय पोरस के सेना के एक भाले से अलेक्ज़ेंडर का घोडा धराशाई हो गया और अलेक्ज़ेंडर भूमि पर जा गिरा। पोरस की सेना के समक्ष अलेक्ज़ेंडर की सेना का बढ़ा मनोबल भी काम नहीं आया, और अलेक्ज़ेंडर स्वयं भी रणक्षेत्र में घायल पड़ा था। उसकी सेना ने उसे किसी प्रकार मैदान से बाहर निकाला।

अलेक्ज़ेंडर की सेना ने मैदान छोड़ दिया और भाग निकली। पोरस की भयंकर सेना ने अलेक्ज़ेंडर की सेना को भारी क्षति पहुंचाई। अलेक्ज़ेंडर की सेना का मनोबल पूर्णतया ध्वस्त हो चुका था और उन्होंने किसी भी तरह के युद्ध में सहभाग लेने से इनकार कर दिया। झेलम में आयी बाढ़ के कारण मार्ग बंद था जिस वजह से अलेक्ज़ेंडर और उसकी सेना सिन्धु नदी के पश्चिमी छोर की ओर बढ़ी यह दूसरा रास्ता था जो भारत में प्रवेश करने के लिये कम सुरक्षित माना जाता था। वह उस रास्ते से होते हुए जाट प्रदेश पहुंचा और यहाँ पहुँचते ही उसका सामना जाटों से हुआ जिन्होंने उसकी आधी सेना का सफाया कर दिया।

एक जाट सैनिक का फेंका भाला अलेक्ज़ेंडर के सीने को भेदता हुआ बाहर निकला। किसी प्रकार उसकी बची खुची सेना अलेक्ज़ेंडर के अधमरे शरीर को लेकर बच निकलने में सफल हुई। भाले के घाव में संक्रमण होने के कारण अलेक्ज़ेंडर का स्वास्थ बिगड़ने लगा और चिकित्सा के अभाव में जाट प्रदेश के पश्चिमी सीमा में स्थित गांधार में पहुँचने के बाद उसने प्राण त्याग दिये।

***

मुहम्मद बिन कासिम (सन ७११)

सन ६३८ ई. से ७११ ई. तक नौ खलीफाओं ने सिंध पर एक के बाद एक आक्रमण किये, जिनमे से हर हमले में उनकी पराजय ही हुई। पन्द्रहवे आक्रमण का नेतृत्व मुहम्मद बिन कासिम कर रहा था। वह नवयुवक था, उसने अपनी दस हजारी घुड़सवार सेना के साथ सिंध का रुख किया। उसके द्वारा देबाल का बंदरगाह कब्जा लिये जाने के पश्चात ही युद्ध का आरंभ हो गया था। उस समय सिंध के शासक थे राजा दाहिर सेन।

दाहिर के पूर्वज सिंध पर छह सौ वर्षो से राज्य करते आ रहे थे। दाहिर के पिता अपनी गलत राजनीति के चलते प्रमुख समुदायों से कटुता अर्जित कर चुके थे। जिस कारण उनकी सत्ता और महत्ता दोनों क्षीण होते जा रही थी। दाहिर के राजा बनते ही उन्होंने सर्वप्रथम अपने संबंध विभिन्न समुदायों से सुधारे। दाहिर के नेतृत्व में सिंध एक प्रभावशाली और समृद्ध राज्य बनकर उभरा था। उसके वैभव से ही आकर्षित होकर ईरानी खलीफाओं ने सिंध पर कब्जा करने के लिये अनेक आक्रमण किये किन्तु कभी विजय प्राप्त नही कर पाये। जिससे क्षुब्ध होकर खलीफा ने अपने ख़ास मुहम्मद बिन कासिम को सिंध भेजा। कासिम ने भारत के अनेक राजाओं को संदेश भिजवाए कि वे उनका धर्म स्वीकार कर ले अथवा युद्ध की तैयारी कर ले।

कासिम ने इतिहास से सीख लेते हुए सिंध पर सीधे आक्रमण करने की नीति नही अपनायी, देबाल के सूबेदार को सिंध की सत्ता का लालच देकर अपनी सेना का साथ देने के लिये मना लिया। इससे जब कासिम ने आक्रमण किया सूबेदार ने उसका तनिक भी प्रतिकार न करते हुए उसकी सहायता भी की। दाहिर का पुत्र उसे रोकने के लिये आया किन्तु सूबेदार के विश्वासघात के कारण सिंध के सैनिक हार गये और देबाल पूर्णतया कासिम के कब्जे में आ गया था। कासिम इस जीत से उत्साहित था। अपने बेटे की मृत्यु और सेना की हार के पश्चात ईरानी आक्रांताओं का बढ़ता खतरा देख कर दाहिर ने अपनी सेना सहित देबाल में कासिम पर आक्रमण कर दिया। सिंधी सेना बड़ी बहादुरी से लडी, कासिम चिंतित हो उठा। वह ऐसे युद्ध नहीं जीत सकता था तो उसने अपने आक्रमण का केंद्र दाहिर की ओर कर दिया जिसमे वह सफल भी रहा। दाहिर की आँख में तीर लगने से वह घायल होकर हाथी से गिर गये और उसी क्षण कासिम की सेना ने उन्हें बाणों से बींध दिया। दाहिर के मरते ही उसकी सेना का मनोबल टूट गया और कासिम की सेना का मनोबल कई गुना बढ़ गया। नतीजतन भीषण युद्ध हुआ और सिंध के सैनिकों की भयंकर पराजय हुई। कासिम सिंध जीतने की इस उपलब्धी से विक्षिप्त सा हो गया था और उसने सिंध में भीषण मार काट का दौर आरंभ कर दिया। हजारो लोगो का जबरन धर्म परिवर्तन करवाया गया, जिन्होंने धर्म परिवर्तन नहीं कराया उन्हें बेरहमी से मार दिया गया। वृद्धो, महिलाओं और बच्चों को निर्ममता से मारा गया। कासिम की सेना वहशियों की भाँति सिंध पर टूट पड़ी थी। असंख्य महिलायें और बच्चियां उनकी वासना का शिकार बनी।

अनगिनत महिलाओं को गुलाम बना लिया गया और पुरुषों को मार दिया गया। कासिम ने वहाँ स्थित महत्वपूर्ण प्राचीन मंदिरों में भी जमकर न केवल लूटपाट की बल्कि अनेक मंदिरों को ध्वस्त तक कर दिया। कासिम का उन्माद सिंध पर बहुत समय तक रहा, वह क्रूरता का परिचायक बन चुका था। सिंध विजय के पश्चात वह पंजाब की ओर बढ़ा किन्तु राजस्थान के शूरवीर बाप्पा रावल ने उसका मार्ग रोक लिया। बाप्पा रावल की सेना ने कासिम की हौंसले पस्त कर दिये, बाप्पा स्वयं एक अभूतपूर्व योद्धा थे। उन्हें लड़ता देख कासिम की सेना उनके समक्ष आने से भी कतराने लगी थी। बाप्पा की सेना पूरी क्रूरता के साथ कासिम की सेना पर टूट पड़ी थी। सिंध विजय के दम्भ में आकर कासिम ने पंजाब की ओर बढ़कर गलती कर दी थी। बाप्पा रावल के भीषण आक्रमण ने कासिम की सेना को अभूतपूर्व क्षति पहुंचाई और कासिम को प्राण बचाकर युद्ध से भागना पड़ा। सिंध पर विजय प्राप्त करने के पश्चात बाप्पा रावल से मिली करारी हार के बाद उसका बढ़ता प्रभाव, घमंड़, अति आत्मविश्वास और उद्दंड़ता देख खलीफा ने उसे पुन: बुला लिया। और उसे कारावास में डाल दिया। जहाँ प्रताड़नाओ और यातना से वह तड़प तड़पकर मृत्यु को प्राप्त हुआ। कासिम के पश्चात बाप्पा रावल के प्रभाव के कारण किसी और ने सिंध पर आक्रमण करने की हिम्मत न दिखायी।

***

महमूद गजनवी (सन १०१८)

मध्य अफगानिस्तान के क्रूर और सत्तालोलुप शासक महमूद गजनवी की निगाहें भारत की ओर थी। वह बचपन से भारत की समृद्धि और वहाँ की प्रचलित कथाओं के बारे में सुनता आ रहा था। तुर्की मूल का यह व्यक्ति निहायत ही क्रूर एवं महत्वाकांक्षी था। तुर्क सरदार सुबुक्तगीन का यह बेटा अपना साम्राज्य और अपने धर्म के प्रति हद तक पागल था। भारत पर आक्रमण करके वह अपने धर्म को फैलाना चाहता था और दूसरे भारत की अकूत सम्पत्ति को लूटना चाहता था। सन १००० इस्वी से उसने भारत पर आक्रमण आरंभ किये। उसने अपने आक्रमणों द्वारा पंजाब के सीमावर्ती क्षेत्र, पेशावर, भटिंडा, मुल्तान, वैहिद, नारायणपुर, थानेश्वर, नंदन, कश्मीर, मथुरा एवं कन्नौज, ग्वालियर, कालिंजर, सोमनाथ और

सिंध पर विजय प्राप्त की। राजा जयपाल से उसका दो बार युद्ध हुआ किन्तु दूसरे युद्ध में जयपाल के १५००० सैनिक मारे गये और जयपाल अपने सारे रिश्तेदारों एव सगे सम्बन्धियों के साथ गजनवी द्वारा गुलाम बना लिया गया।

जयपाल ने क्षुब्ध और अपमानित होकर आत्महत्या कर ली। जयपाल की मृत्यु के पश्चात उसके पुत्र आनंदपाल ने गद्दी सम्भाली। आनंदपाल ने महमूद के विरुद्ध युद्ध के लिये अन्य भारतीय राजाओं से सहायता मांगी, किन्तु किसी ने महमूद के समक्ष आने की हिम्मत न दिखायी और इस युद्ध में भीषण जनहानि हुई और आनंदपाल हार गया। महमूद के सैनिक टिड्डी दल की भाँति कार्य करते थे। वे मार्ग में मिलने वाली प्रत्येक वस्तु का विनाश कर देते और काम की चीजे लूट लेते, खेतों में आग लगा देते, पशुओ को आहार बना लेते, जहाँ भी जाते हर घर, कस्बे और नगर को श्मशान बना देते। राह चलते राहगीर, बच्चो और बूढों तक को मार दिया जाता। नगरकोट में लूट मचाने के बाद उसकी सेना ने थानेसर के सम्पन्न मंदिरों को अपना निशाना बनाया। मंदिरों में स्थित अकूत सम्पत्ति को प्राप्त करने के लिये उसने भीषण नरसंहार मचा दिया। थानेसर को पूर्णतया नष्ट करने के पश्चात अब उसका अगला पडाव था मथुरा और कन्नौज। कन्नौज का राजा उसका मुकाबला नही कर पाया गजनवी ने कन्नौज की गलियों को रक्त से भर दिया। हिन्दुओ का भीषण नरसंहार किया, वह इसे अपना परम कर्तव्य मानता था।

उसके अनुसार विधर्मियो को जीवित रहने का अधिकार नहीं था, इसलिये वह किसी को भी मृत्यु के घाट उतारने में ज़रा भी ग्लानिग्लानि या संकोच नही करता था। वह लगातार मंदिरों को अपना निशाना बना रहा था। हर भव्य मंदिर पर उसकी गिद्ध दृष्टि होती थी। अब वह अपने सबसे भीषण और क्रूर हमले की तैयारी कर रहा था। उसने सोमनाथ मंदिर की चर्चा सुन रखी थी और अब उसका अगला पडाव वहीं था। १०२६ ईस्वी में उसने काठियावाड़ स्थित सोमनाथ पर आक्रमण करने का आदेश अपने टिड्डी दल को दिया। महमूद की सेना अपने अचानक आक्रमण के लिये भी जानी जाती थी। वे अचानक हमला कर देते और किसी के कुछ समझने से पहले ही नरसंहार और लूटपाट करके भाग निकलते थे। सोमनाथ के लिये भी यही युक्ति अपनायी जानी थी। सोमनाथ क्षेत्र में सदैव की तरह श्रद्धालुओं की भीड़ थी।

वहाँ सदैव उत्सव सा वातावरण रहता था। मंदिर के पुजारियों का दल ही एक हजार के आसपास का माना जाता था, जो मंदिर और उससे जुड़े रीतिरिवाजो का पालन करते थे। उस दिन पच्चीस हजार से भी अधिक श्रद्धालु एकत्रित हुए थे। बच्चे अपने परिवार के साथ व्यस्त थे, स्त्रियाँ पूजा सामग्री खरीदने में व्यस्त थी। बाजार सजे हुए थे। देश विदेश से हजारों कलाकार वहाँ अपनी कला का प्रदर्शन करने आते थे। उसी समय उस रण में धूल का बवंड़र सा उठता दिखायी दिया। साफ़ वातावरण में इस तरह धूल का बवंड़र लोगो के लिये आश्चर्य की बात थी। किन्तु जल्द ही उन्हें आभास हो गया के यह बवंड़र प्राकृतिक नहीं है, अपितु यह उन हजारो घोड़ों की टापों से निर्मित हुआ है जो सोमनाथ परिसर की ओर ही आ रहे थे। वह महमूद की सेना थी। बेरहम, दुर्दांत, हत्यारों और लुटेरों की फ़ौज। जिसके निशाने पर अब सोमनाथ मंदिर था। वहाँ उपस्थित श्रद्धालुओ को संकट का आभास होने से भी पहले गजनवी अपनी दुर्दांत सेना सहित उस परिसर में प्रवेश कर चुका था। प्रवेश करते ही जो भी सामने आया उसे नंगी तलवारों से काट दिया गया। बच्चों एवं महिलाओं तक को न छोड़ा गया और उन्हें भी घोड़ों की असंख्य टापों के बीच रौंद दिया गया। नराधमों की फ़ौज ने चहुँओर से परिसर को घेर लिया था। कोई भी मार्ग ऐसा नहीं बचा था जहाँ से एक भी व्यक्ति बचकर निकल पाता। गजनवी के लिये यह सभी विधर्मी थे, उसके अनुसार मूर्तिपूजकों को जीवित रहने का भी अधिकार नहीं था।

उसने इसे धर्मयुद्ध करार देते हुए सेना को खुली छूट दे दी थी। सेना ने अपनी तलवारों का जम कर प्रयोग किया। निहत्थे श्रद्धालु त्राहि त्राहि कर रहे थे। किन्तु सेना अपने धर्मांधता और लालच में सराबोर थी। तलवारों ने अनगिनत शीश धड़ रहित कर दिये। सारा परिसर रक्त से नहा गया था। धरा पर फैली हुई बालू रक्त से सनी हुई कीचड़ में तब्दील हो गयी थी। गजनवी इस दृश्य को देखकर अट्टहास कर रहा था। वह निर्दोषों को कटते देख कर आंतरिक सुकून प्राप्त कर रहा था। वह स्वयं भी अनगिनत निरीहों को अपनी तलवार से काटते जा रहा था। घबराकर भागते बच्चों पर ज़रा भी दया न करते हुए वह घोडा दौड़ा रहा था। कुछ ही घंटो में मंदिर परिसर में शवों का अम्बार लग गया था। कोई स्थान ऐसा नहीं था जहाँ शव बिखरे न पड़े थे। जीवन के नाम पर केवल गजनवी की दुर्दांत सेना ही वहाँ शेष थी। वे गजनवी मंदिर की ओर अपनी तलवार के साथ बढ़ा। कटे फटे अंगो एवं रक्त से निर्मित कीचड़ से सना उसका

घोडा अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहा था। सभी ज्योतिर्लिंगों में से प्रमुख ज्योतिर्लिंगों में से एक अब महमूद गजनवी की तलवार के साए में था। यह मंदिर गजनवी का स्वप्न था, इसकी संपन्नता और भव्यता के किस्सों ने उसे इस ओर आने को विवश कर दिया था। मंदिर के भीतर अब भी श्रद्धालु भरे पड़े थे। गजनवी रक्त से सनी तलवार लेकर मंदिर के द्वार पर खड़ा था। उसके मुख पर भयंकर क्रूरता विराजमान थी। उसने एक दृष्टि सोमनाथ परिसर की ओर डाली। जहाँ तक दृष्टि पहुँचती थी वहाँ तक केवल शवों का अम्बार लगा हुआ था। कुछ देर पहले जो स्थान किसी मेले का सा प्रतीत हो रहा था अब एक विशालकाय श्मशान में परिवर्तित हो गया था। उसके सैनिकों का विनाश अब भी आरंभ था। वे सभी शवों से उनके आभुषण इत्यादि उतार रहे थे। अँगुलियों में फंसी अंगूठियो को निकालने के लिये पूरी अंगुली ही काट देते थे। टुकड़े हुए अंगो में से रक्त से सने आभूषणों को खींच कर निकाले जा रहे थे और उन्ही मृत लोगो के कपड़ो से उसे पोछ कर अपने झोलों में भर लिया जाता। कुछ सैनिक दुकानों में और भवनों में आग लगा रहे थे। वे केवल लूट के उद्देश्य से नहीं आये थे। उनका उद्देश्य मूर्तिपूजकों का सर्वनाश था।

गजनवी अपनी सैनिक टुकड़ी के साथ तलवार लहराते हुए मंदिर में प्रवेश कर गया और वहाँ उपस्थित सैकड़ों श्रद्धालुओ एवं पुजारियों के रक्त से मंदिर को अपवित्र कर दिया। शवों के उस अम्बार पर पैर रखते हुए वह शिवलिंग की ओर बढ़ा। अब वह शिवलिंग के समक्ष खड़ा था।

“इस बुत को टुकड़ों में बाँट दो। और इस मंदिर को ढ़हा दो।” गजनवी ने सैनिकों आदेश दिया। सैनिक आगे बढ़े।

कुछ देर बाद वे उस मंदिर को जीर्ण शीर्ण कर चुके थे। शिवलिंग खंडित हो चुका था। गजनवी उस खंडित शिवलिंग को काफी समय तक टकटकी लगाये निहारता रहा, उसके चेहरे पर एक क्रूर चमक थी, एक विजयी मुस्कान। किन्तु कुछ ही क्षणों में उसके भाव बदल गये।

“यह नही हो सकता।” वह चीख पड़ा और उस खंडित शिवलिंग को पागलों की भाँति देखने लगा।

“मुझे यह टुकड़े चाहिये। इनका ले जाने का बंदोबस्त किया जाये फौरन।” गजनवी ने दहाड़ते हुए आदेश दिया, जिसका तुरंत पालन हुआ। गजनवी खंडित शिवलिंग को लेकर वहाँ से निकल गया। सैनिको ने मंदिर के हर भाग से कीमती वस्तुओं को कुरेद कुरेद कर निकाल लिया।

यहाँ तक कि मुख्य द्वार तक उखाड़ लिया गया। गजनवी ने पूर्ण शक्ति लगा दी मंदिर को नष्ट करने में। फिर भी मंदिर पूर्णतया नष्ट नही हुआ था।

"बस हो गया। अब यहाँ से फौरन निकल चलों। हिन्दुस्तानी फौजों तक खबर पहुँच गयी होगी। वो सभी एक साथ हमला करने आयेंगे क्योंकि हमने उनकी रग पर वार किया है। भलाई इसी में है के यहाँ से निकल लिया जाये।" गजनवी ने आदेश दिया और इसी के साथ सैनिकों ने लूटा हुआ सारा सामान घोड़ो पर लाद दिया और जिस प्रकार से आये थे उसी प्रकार निकल भी लिये। बचा था केवल विनाश। हिन्दू राजाओं तक सूचना पहुँच चुकी थी, राजपूतों ने थार में पडाव डाल लिये थे और गजनवी की प्रतीक्षा में थे, गजनवी को इस बात का ज्ञान था इसलिये उसने मार्ग बदल लिया और कच्छ से होते हुए सिंध के रास्ते निकलने के प्रयास में लग गया था। किन्तु हिन्दू आस्था पर प्रहार करने के कारण हिन्दू राजाओं ने इसे व्यक्तिगत प्रहार समझा, सिंध के जाट शासक को गजनवी की करतूत और उसके सिंध मार्ग से आने की सूचना मिल गयी थी।

उसने जाटों की सेना द्वारा घेराबंदी करके गजनवी की दुर्दांत सेना पर आक्रमण करके उसकी सेना को तहस नहस कर भारी क्षति पहुंचाई। किसी प्रकार गजनवी अपनी बची खुची सेना के साथ वहाँ से बच निकलने में सफल रहा। इस युद्ध में हुई क्षति के कारण वह अनेक वर्षो तक पुन: आक्रमण करने की अवस्था में नहीं था। सोमनाथ की लूट से उसे सबसे अधिक धन प्राप्त हुआ था किन्तु उसका मानसिक चैन खो गया था। वह बेचैन रहने लगा था। कुछ ही वर्षो में वह अनेक प्रकार के विभिन्न असाध्य रोगों से ग्रस्त हो गया। अपने कुकर्मो के कारण भयंकर मानसिक क्लेश और तनाव में वह रहने लगा। भयंकर शारीरिक कष्टों को झेलते हुए वह दुर्बल हो गया था और सन १०३० में आखिरकार उसकी मृत्यु हो गयी।

***

मुहम्मद गोरी सन (११७५)

उसका नाम 'मुइज -दिन मुहम्मद' था जो मुहम्मद गोरी के नाम से जाना गया। वह घोर प्रान्त से था। वह अति महत्वाकांक्षी था। वह दक्षिण एशिया में अपने सम्राज्य को स्थापित करने के साथ साथ

अपनेधर्म का भी विस्तार करने की इच्छा रखता था। गजनवी द्वारा शासित अनेक राज्यों पर उसने अपनी विजय पताका लहराई। गजनवी की ही तरह भारत उसकी महत्वकांक्षा के केंद्र में था। वह भारत में लूट कर के ही संतुष्ट होने वालों में से नहीं था। उसे वहाँ अपनी सत्ता स्थापित करनी थी। उसने ११७५ में मुल्तान पर आक्रमण किया, और दो ही वर्षो पश्चात गुजरात पर भी आक्रमण कर दिया किन्तु वहाँ वह बुरी तरह पराजित हुआ और भाग निकला। उसने अपनी शक्तियाँ पुन: समेट कर इस बार पंजाब को निशाना बनाया। ११८५ तक उसने पेशावर और सियालकोट तक अपना साम्राज्य फैला दिया था। फिर उसके मार्ग की बाधा बना पृथ्वीराज चौहान। पृथ्वीराज और जयचंद का बैर था जिस कारण पृथ्वीराज को पराजित करने हेतु जयचंद ने इस विदेशी धर्मान्ध आक्रमणकर्ता को निमंत्रण दिया। पृथ्वीराज चौहान के साथ गोरी का प्रथम युद्ध तराइन में हुआ जिसमे गोरी पराजित हुआ, उसकी सेना पृथ्वीराज की सेना के समक्ष टिक नही पायी। पृथ्वीराज ने पराजित गोरी के क्षमा मांगने एवं शरण में आने के कारण उस पर दया दिखाकर उसे जीवित ही छोड़ दिया।

इसके पश्चात गोरी ने अनेकों बार पुन: आक्रमण किये किन्तु जयचंद की सहायता से भी वह पृथ्वीराज से जीत नही पाया। वह विफल होकर बार बार भाग जाता। सीधी तरह से वह पृथ्वीराज से नहीं जीत पा रहा था तो उसने छल का प्रयोग करते हुए ११९२ में एक विशाल सेना के साथ धावा बोल दिया। नियमानुसार युद्ध हुआ, जिसमे पृथ्वीराज की सेना सदैव की भाँति भारी पड़ी। किन्तु सूर्यास्त हो जाने के कारण युद्ध विराम दिया गया। पृथ्वीराज और उसकी सेना नियमानुसार सूर्यास्त के पश्चात युद्ध नहीं करती थी। किन्तु गोरी ने युद्ध विराम के नियम नहीं माने और रात्रि में असावधान पृथ्वीराज की सेना पर धावा बोल दिया। धोखे से किये गये इस आक्रमण में सेना अस्त व्यस्त हो गयी। उन्हें संभलने तक का अवसर नही मिल पाया और पृथ्वीराज को पराजित कर दिया और बंदी बना लिया। मान्यता है कि पृथ्वीराज पर बेतहाशा अत्याचार किये गये थे। उनकी आँखे गर्म सरिये से दाग दी गयी थी। इसके पश्चात भी पृथ्वीराज ने अपने सेनापति और मित्र चन्द्रबरदाई की सहायता से गोरी को एक शब्दभेदी बाण द्वारा मार गिराया और उसके पश्चात चन्द्रबरदाई एवं पृथ्वीराज ने तुर्कों के हाथों में पड़ने से अच्छा स्वयं का बलिदान देना ही उचित समझते हुए एक दूसरे के प्राण ले लिये।

***

चंगेज (सन ११६२)

तेमुजिन उर्फ़ चंगेज का जन्म मंगोलिया में ओनोन नदी के किनारे हुआ था, उसके हाथ पर जन्म से एक रक्तिम धब्बा था, जिस कारण भविष्यवाणी की गयी कि इस लड़के के हाथों भयंकर रक्तपात होगा, और वह आधी दुनिया पर शासन करेगा उसका पिता एक कबीलाई सरदार था, आपसी वैमनस्य के कारण कबीलों में वैर था। इसके चलते उसके पिता की हत्या कर दी गयी। कम उम्र में ही उस पर अपने परिवार की जिम्मेदारी आ गयी थी। वह कबीलों के आपसी कलह से असंतुष्ट था। अपना और अपने लोगों का अस्तित्व बचाने के लिये उसे अनेको कबीलों से कई लड़ाईयाँ लड़नी पड़ी। चंगेज में कुशल नेतृत्व के गुण थे, जिस कारण वह हर युद्ध में विजयी होता गया। धीरे धीरे वह मंगोलों के कबीलों को एकत्रित करने लगा। उसके बढ़ते प्रभाव और विचारों के कारण जल्द ही उसे मंगोलों के नायक का रुतबा प्राप्त हो गया और वह एक शक्तिशाली प्रमुख बन गया। उसके पास मंगोलों की एक संगठित सेना थी, जो उसने अपने बल पर कमाई थी। किन्तु उसमे सहनशीलता का अभाव था, वह ज़रा सी बात पर विरोधियों को मृत्यु के घाट उतार देता था। जहाँ भी जाता लाशों के ढेर लगा देता था। वह एक अत्यंत महत्वाकांक्षी एवं क्रूर शासक था। उसने जल्द ही अपनी संगठित सेना द्वारा आधे एशिया पर अपना राज स्थापित कर लिया था।

उसने अपनी क्रूर नीतियों एवं सेना की सहायता से उस समय के लगभग बाईस प्रतिशत भूभाग पर अपना परचम फहरा लिया था। अनुमान के मुताबीक उसने करीब चार करोड़ लोगो को मृत्यु के घाट उतार दिया था। यह आंकड़ा अनुमानित रूप से उस समय की सम्पूर्ण आबादी का दस प्रतिशत माना जाता था। उसने अकेले ईरान की पिचहत्तर प्रतिशत आबादी का क्रूरता से सफाया कर दिया था। बुखारा और समरकंद को आग के हवाले कर दिया। अकेले बुखारा की दस लाख की आबादी घटकर पचास हजार तक सिमट गयी थी। उसने चीन की दीवार पार करते हुए चीन पर आक्रमण किया और बेतहाशा नरसंहार किया। चीन के पश्चात अब वह भी भारत की ओर अपनी गिद्ध दृष्टि रखे हुए था। वह सिन्धु नदी को पार करते हुए उत्तरी भाग की ओर बढ़ा। किन्तु भारत

के असह्य परिवेश, वातावरण और भीषण गर्मी ने चंगेज की सेना के पैर उखाड़ दिये। वहाँ के कठिन वातावरण में युद्ध करने के लिये उसकी सेना और स्वयं चंगेज तक हतोत्साहित हो गया था। चंगेज कबीलाई होने के कारण अत्यंत अंधविश्वासी था। उसकी सेना में विभिन्न बीमारियाँ फैलने लगी जिसे अशुभ संकेत करार दे दिया गया और सारी एशिया पर हुकुमत करने वाला चंगेज भारत के सीमावर्ती इलाके से ही वापस लौट गया। वह पैसठ साल की आयु में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

***

तैमूर (सन १३८९)

तैमूर का जन्म समरकंद में हुआ था। वह एक चोर का जीवन जीता था और चरवाहों की भेड़ों को चुरा कर जीवनयापन करता था। भेड़ चुराते समय एक बार एक भेड़ के मालिक ने तैमूर को देखकर तीर चला दिये जिससे उसका कंधा और कूल्हा घायल हो गया। जिसके परिणाम स्वरूप वह सदैव के लिये लंगड़ाने लगा। इसीलिये उसका 'लंग' कहकर उपहास बनाया जाने लगा और उसका नाम ही तैमूर लंग से प्रसिद्ध हो गया। तैमूर बचपन से ही चंगेज खान के किस्से सुनते आ रहा था। वह उसके नेतृत्व, क्रूरता का प्रशंसक था। वह छोटी मोटी चोरियाँ करते करते एक कुख्यात लुटेरा बन गया। धीरे धीरे उसने खुद का विशाल दल बना लिया। अब वह छोटी मोटी चोरियाँ करने के बजाय अपने दल के साथ नगर के नगरों पर धावा बोलने लगा और खुलेआम लूटमार करने लगा।

जब समरकंद के शासक की मृत्यु हुई तब तैमूर ने अपने प्रभाव और शक्ति के प्रयोग से समरकंद की गद्दी पर कब्जा कर लिया और स्वयं को समरकंद का शासक घोषित कर दिया। वह मूल रूप से तुर्की था, किन्तु अपने प्रभाव के लिये स्वयं को चंगेज का वंशज बताता था। समरकंद पर कब्जा करने के बाद ही उसने बगदाद पर हमला कर दिया। चूँकि वह शासक नही एक लुटेरा और चोर प्रवृत्ति का था, इस कारण उसने बगदाद में न केवल भयंकर लूटपाट और कत्लेआम किया बल्कि उसने वहाँ के निवासियों के सर काट कर उनकी खोपड़ियों को एक के ऊपर एक रखकर सिरों का ढेर लगा दिया। उसे इस कार्य में संतुष्टि मिलने लगी। और वह अपने विरोधियो के साथ यही करने लगा। उसने धन दौलत लूटकर अपनी विशाल सेना बनाने में खर्च किया। उसके राज में सेना को लूटमार

करने की खुली छूट थी। जिस कारण सेना तैमूर के प्रति वफादार थी और उस पर विश्वास करती थी। अनेकों राज्यों को जीतने के पश्चात अब वह चंगेज के अधूरे स्वप्न और अपनी महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिये भारत पर आक्रमण करने की योजना बना रहा था। सेना भारत के वातावरण, मौसम और भौगोलिक स्थितियों की विषमता के कारण वहाँ आक्रमण करने के विरोध में थे। किन्तु चंगेज ने इसके लिये सेना को मना लिया। उसने भारत के खिलाफ युद्ध को धर्मयुद्ध करार दे दिया। सेना को समझा दिया भारत काफिरों एवं बुतपरस्तों का देश है, या तो उन्हें इस्लाम स्वीकार करना होगा या मृत्यु को। उनकी मृत्यु उनके लिये पुण्य का कार्य था, और यही उनके ईश्वर की इच्छा थी। उसने अपनी जीवनी में भी स्पष्ट रूप से भारत पर आक्रमण को धर्म के लिये किया गया हमला बताया। उसने लिखा के उसके धर्म को न मानने वालों को जीवित रहने का अधिकार ही नहीं है, वे सभी विधर्मी है।

१३९८ में उसने भारत की ओर रुख किया। अब सेना उसके समर्थन में थी। सेना धर्मयुद्ध को लेकर उत्साहित थी। सिन्धु नदी पार करने के पश्चात उसने नरसंहार आरंभ कर दिया। वह और उसकी सेना निहत्थे और निर्दोष नागरिकों तक को काट देती थी केवल इसलिये कि वे विधर्मी थे। उसने सिन्धु घाटियों में कई अतिप्राचीन मंदिरों को ध्वस्त कर दिया और भीषण मारकाट करते हुए आगे बढ़ा। उस समय भारत में दिल्ली पर तुगलक वंश का शासन था जो बेहद कमजोर शासन था। उसने कश्मीरी सीमा पर आक्रमण किया और वहाँ के निवासियों को मौत के घाट उतार कर उनके शीशों के मीनार बना दिये, दीवारों में चुनवा दिये। जब वह जाट प्रदेश में आया तब उसने अपनी लुटेरी सेना को आदेश दे दिया के जो भी जीवित व्यक्ति सामने दिखे उसे काट डालो, जो भी भवन दिखे उसे लूट लो आग लगा दो। खड़ी फसलों को रौंद डालो। महिलाओं से अपनी पिपासा शांत करो। उसकी सेना ने वही किया

हजारों नागरिकों को काटा गया। फसलें जला दी गयी। महिलाओं को अपनी वासना का निशाना बनाया गया। उसने हजारों निवासियों को अपना गुलाम बना लिया जो उसके लिये काम करते। दिल्ली पहुँचने से पहले उसने अपने गुलामों में से मुसलमानों को छोड़कर सभी गुलामों को केवल इसलिये मार दिया ताकि उन्हें उनका बोझ न उठाना पड़े। वह क्रूरता का नंगा नाच करते हुए दिल्ली पहुंचा जहाँ महमूद का राज था। महमूद ने अपनी सेना द्वारा तैमूर का सामना करने का प्रयत्न किया किन्तु

तैमूर की दुर्दांत और क्रूर सेना के समक्ष उसकी सेना टिक नही पायी। महमूद युद्ध के मैदान से ही भाग खड़ा हुआ और अब दिल्ली तैमूर के रहमों करम पर थी। उसने दिल्ली में प्रवेश करते ही सैनिकों को हर आदेश हर नियम से मुक्त कर दिया और जिसके जो मन में आये जैसे मन करे दिल्ली को लूटने खसोटने का आदेश दे दिया। उसकी विशाल सेना ने दिल्ली की हर गली में लाशों के अम्बार लगा दिये, लाखों शीश काट कर मीनारों के ढेर लगा दिये गये। वहाँ की महिलाओं को गुलाम बनाकर उनके साथ भीषण दरिंदगी की गयी। दिल्ली में हर ओर बस आग , रक्त, लाशों का ढेर ही दिखायी दे रहा था। यह लूटपाट निरंकुश रूप से पांच दिनों तक निरंतर चलती रही। जब उसका मन कत्ले आम, विनाश और क्रूरता से भर गया तभी वह दिल्ली से वापस लौटा। वह भारत में रहने का इच्छुक नही था। उसने असंख्य मंदिरों को ध्वस्त किया, मूर्तियों को खंडित किया। उसके मार्ग में जो भी मंदिर दिखता वह उसे आग लगा देता अथवा ध्वस्त करा देता। वह जिस मार्ग से लौटा उस मार्ग में पड़ने वाले हर व्यक्ति को मार दिया जाता। हर गाँव जला दिया जाता। भारत में कई महीनों तक लूटपाट और हत्याए करते हुए वह सिन्धु नदी पार करके समरकंद लौट गया। १४०५ में तैमूर नामक इस हैवान की मृत्यु हो गयी और दुनिया ने चैन की सांस ली।

***

बाबर सन (१४८३)

बाबर का जन्म समरकंद में फरगना नामक स्थान पर सन १४८३ में हुआ था उसका पिता तुर्की वंशज था और माता मंगोल वंश से। इस हिसाब से वह तुर्की एवं मंगोल का मिश्रण था। वह बचपन से ही शराबी और अय्याश प्रवृत्ति का था। यह अवगुण उसे अपने बाप द्वारा मिले थे। नशेडी बाप की मृत्यु के बाद उसे तैमूर का वंशज होने का लाभ मिला और उसने फरगना पर कब्जा कर लिया। उसके आसपास वफादारों की फ़ौज थी जिससे उसके हौंसले में इजाफा हुआ और उसने समरकंद पर कब्जा करने के अनेक प्रयास किये जिसमे उसे विफलता ही मिली तब उसने काबुल पर विजय प्राप्त की, अफगानी आपस में शत्रुता निभाते

रहे जिसका लाभ उठाकर बाबर ने काबुल पर कब्जा कर दिया। कब्जा करने के साथ ही उसने हजारो नागरिकों को मार गिराया। यही से उसकी प्रतिष्ठा में इजाफा होता चला गया और उसने समरकंद पर भी विजय प्राप्त कर। लेकिन कुछ था जो उसे अंदर ही अंदर खाये जा रहा था, वह अपने पूर्वजो की भाँति भारत पर कब्जा करने की महत्वकांक्षा पूर्ण करना चाहता था। वह भारत की ओर बढ़ा।

उसने अपने रास्ते में आते हर जीवित व्यक्ति को आयु, लिंग इत्यादि का भेद न करते हुए कत्ल कर दिया। वह मध्य एशिया में फिलहाल आक्रमण करने की स्थिति में नहीं था, इसलिये उसने आक्रमण भारत की ओर केन्द्रित कर दिया क्योंकि उस समय भारत में राजनैतिक अस्थिरता थी। बाबर राजनैतिक अस्थिरता का लाभ लेते हुए पानीपत के मैदान में इब्राहिम लोदी से जा टकराया (१५२६) किन्तु इस युद्ध में लोदी की हार हुई और बाबर का भारत का रास्ता साफ़ हो गया। बाबर ने भारत से वापस लौटने के बजाय वही रहकर अपना राज स्थापित करने के मंसूबे पर काम करना शुरु कर दिया। १५२७ में उसका युद्ध राणा सांगा से हुआ। जिसमे बाबर की सेना को कड़ी टक्कर मिली और उनके पाँव उखड़ गये। किन्तु इसके पश्चात भी बाबर की विशाल संघटित सेना और उपकरणों के कारण वह भारी पड़ा और राणा सांगा की हार हुई। उसके पश्चात उसने बिहार व बंगाल के अफगानी शासकों से युद्ध किया और उन्हें खदेड़ दिया। अब वह एक शक्तिशाली शासक बन चुका था। उसकी सेना विशालकाय हो गयी थी और उसे हराना अब कठिन होता जा रहा था। अपने पूर्वजों की ही भाँति उसने भी प्राचीन मंदिरों के ध्वंस और अत्याचारों का दौर जारी रखा। उसके शासन में कई मंदिरों को नष्ट किया गया, उसने हिन्दू, व जैन मंदिरों एवं स्थलों को क्षति पहुंचाई। वह भारत में पूर्णतया स्थापित हो चुका था और अपनी संस्कृति और धर्म को फैला रहा था, चाहे जबरन चाहे प्रेम से। उसे किसी भी तरीके से कोई हर्ज नही था। काफी समय राज करने के पश्चात १५३१ में उसकी मृत्यु हो गयी। बाबर ने मुगलों को स्थापित कर दिया था।

***

औरंगजेब (सन १६१८)

बाबर के वंश में ही शाहजहाँ का बेटा औरंगजेब हुआ। उसका जन्म १६१८ में हुआ। वह भी अति महत्वाकांक्षी और अत्याधिक कट्टर था। अठरह साल की आयु में वो दक्खन का सूबेदार बना दिया गया था। धीरे धीरे उसकी राज्य करने हवस बढ़ती गयी। उसका भाई दारा शिकोह उसके एकदम विपरीत था। जहाँ औरंगजेब कट्टर था, और संकुचित विचारधारा एवं सत्तालोलुप था। वही दारा संतोषी व्यक्ति था, वह सभी धर्मो का सम्मान करता था। दारा की रुचि हिन्दू दर्शनशास्त्र में अधिक थी। उसने वेदों पर अध्ययन आरंभ कर दिया था। उसकी दयालुता और मृदुलता के कारण वह सबका चाहिता था। औरंगजेब को दारा का विधर्मियो की तरह रहना पसंद नहीं था। उसी समय शाहजहाँ बीमार हुआ, और यही उचित अवसर जानकर उसने शाहजहाँ को कैद करवा दिया और स्वयं को राजा घोषित करवा दिया। जनता उसे कतई पसंद नही करती थी, शाहजहाँ को बंदी बनाना और उसका स्वयं को राजा घोषित करना किसी को रास नही आया। उसने अपने भाइयों को भी फांसी दे दी और खुद का तख्त सुरक्षित करवा लिया। वह सम्पूर्ण भारत का धर्म परिवर्तन करवाने की चाहत रखता था। उसने गैरमुस्लिमों पर कर लगा कर अपनी विकृत बुद्धि का परिचय दे दिया था। औरंगजेब के अत्याचार बढ़ते गये, सिख गुरु तेगबहादुर जी उसके विरोध में खड़े हुए , औरंगजेब ने उन्हें फांसी दिलवा दी और अनेकों मंदिरों को तोडा और जबरन धर्म परिवर्तन की एक बाढ़ सी ला दी। वह अपनी धार्मिक मान्यताओं को लेकर कट्टर था और उसी के अनुरुप नियम बना रखे थे। औरंगजेब के बढ़ते अत्याचारों से क्षुब्ध होकर मराठा, सिख एवं बुंदेलों ने भयंकर विद्रोह करके उसका प्रतिकार किया। उसे सबसे तगड़ी टक्कर मिली मराठों से, शिवाजी महाराज ने उसकी नाक में दम कर रखा था और दक्खन के उसके अधिपत्य वाले कई सूबों पर विजयश्री प्राप्त करके एक नई उम्मीद की तरह उभरे। वे आजीवन औरंगजेब के विरुद्ध न केवल लड़ते रहे बल्कि औरंगजेब की हालत खस्ता किये रहे।

उसी प्रकार सिखों ने भी भयंकर अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई और औरंगजेब के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। अपने पुरखों द्वारा प्रस्थापित मुगल साम्राज्य को औरंगजेब की क्रूरता ने ध्वस्त करने का कार्य ही किया। उसने अपनी रुढ़िवादी सोच के कारण स्वयं को हर चीज से पृथक कर लिया था। यहाँ तक के वह अपने पुत्रों पर भी विश्वास नही करता था। उसके वंश का यह एक अनकहा नियम सा था के पुत्र पिता से अथवा

भाई भाइयो से विश्वासघात अवश्य करेगा, इसी कारण वह किसी पर भी विश्वास नही करता था। वह जीवनपर्यन्त युद्ध करता रहा। उसमे असुरक्षा की भावना अत्याधिक थी। आजीवन उसे मराठों, राजपूतों, बुंदेल और सिखों से लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी जो निरंतर जारी थी। अपने अंत समय में वह बेहद निराश था। उसे अपने द्वारा किये हुए अत्याचार कचोटते थे, वह अत्यंत पछतावे में बीमारी से मृत्यु को प्राप्त हुआ।

उसके मरते ही उसके बेटों ने वंशावली निभाते हुए आपस में लड़ना आरंभ कर दिया। उसके बेटें आपस में ही लड़ते मरते रहे और बेहद कमजोर शासक बने। औरंगजेब ने आखिरकार मुगलों को ध्वस्त कर दिया था।

***

नादिर शाह (सन १७४७)

नादिर शाह ने अपनी शुरुवात गुलाम के तौर पर की थी,उसका जन्म १६८८ में हुआ था। बड़े संघर्ष के पश्चात वह जल्द ही वह फारस का शाह बन बैठा।उसने अपनी कूटनीति से सेना का विस्तार किया और एक शक्तिशाली शासक बन बैठा। उसकी नज़रें अब दिल्ली पर टिकी हुई थी। उसने काबुल,कंदहार(कंधार) सहित सारे अफगानिस्तान पर कब्जा कर लिया। इसके पश्चात वह दिल्ली की ओर बढ़ा। करनाल में उसका सामना मोहम्मद शाह और उसकी सेना से हुआ। किन्तु नादिर ने उन्हें बुरी तरह हरा दिया। नादिर की सेना ने क्रूरता दिखाते हुए दिल्ली की सड़कों पर लगभग बीस से बाईस हजार लोगो का कत्ले आम किया, और भयानक लूटमार शुरू कर दी। उसने कोहिनूर नामक हीरा भी प्राप्त किया जो विश्व का सर्वाधिक लोकप्रिय और बहुचर्चित हीरा था। उसने दिल्ली को बेरहमी से इतना लूटा के उसके पास अगले कई वर्षों तक अपार धनराशि उपलब्ध रही। किन्तु उसके अनाप शनाप और बेलगाम खर्चों के कारण जल्द ही वह आर्थिक रूप से एक तंग शासक बन गया। अंतिम समय में वह अनेकों प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त रहा और अपने ही अंगरक्षको द्वारा मार डाला गया।

***

अब्दाली (१७४८ से १७६८)

अहमदशाह अब्दाली नादिरशाह का सेनापति था। नादिरशाह द्वारा दिल्ली से लाई हुई अथाह राशि और उसके द्वारा भारत के विषय में की गयी चर्चा से वह हतप्रभ था। इतनी धन दौलत देखकर वह हैरान था। इससे पहले भी उसने भारत के विषय में काफी कुछ सुन रखा था जो उसकी भारत के प्रति दिलचस्पी बढाती जा रही थी। वह भारत को लूटने के स्वप्न देखने लगा था। उसी दौरान नादिरशाह की मृत्यु के बाद उसने दिल्ली से लूटा हुआ माल जमकर हस्तगत किया और खुद बादशाह बन बैठा। उसने आख़िरकार १७५७ में दिल्ली पर चढाई कर दी। दिल्ली का शासक आलमगीर द्वितीय एक बहुत ही कमजोर शासक था। वह अब्दाली की विशाल सेना से मुकाबला नही कर सकता था इसलिये उसने संधि कर ली। संधि के अनुसार उसने अब्दाली को लूट करने की छूट दे दी। अब्दाली एक माह तक दिल्ली को बकायदा आदेशानुसार लूटता रहा। दिल्ली की लूट के पश्चात उसका लालच बढ़ता गया। उसने दिल्ली से सटे छोटे छोटे राज्यों की ओर भी अपना रुख किया। वह आगरा की ओर बढ़ा और उसका सामना वहाँ बल्लभगढ़ में जाटों से हुआ। जाटों ने उनसे कड़ा मुकाबला किया किन्तु अब्दाली की विशाल और नृशंस सेना के आगे वे टिक नही पाये। अब्दाली ने उन्हें परास्त करने के पश्चात बल्लभगढ़ और उसके आसपास भयंकर नरसंहार और लूटपाट की। उसने सेना को खुली छूट दे दी थी। उसकी सेना ने भयंकर कत्लेआम और लूटमार की। उसने हिन्दुओ के पवित्र स्थलों को नष्ट करने का आदेश दे दिया।

उसने सभी सैनिकों को काफिरों के सर काटने पर इनाम घोषित कर दिया और जिसको जो लूटना है वह उसे लूट सकता है, और लूट का माल उसी का जिसने लूटा है, कहा। जिससे उसके सैनिकों का उत्साह दुगुना बढ़ गया। उसने काफिरों के सिरों पर इनाम घोषित करवा दिये, जो सैनिक जितने सर काटेगा उसे उतना ही इनाम मिलेगा। नतीजतन उसके सैनिकों ने भयंकर क्रूरता दिखाते हुए जमकर नरसंहार किया। अब्दाली की सेना अब बृजभूमि की ओर बढ़ चुकी थी। मथुरा के समीप ही जाटों ने उसका रास्ता रोका और बड़ी बहादुरी से उसका सामना किया लेकिन अब्दाली की विशाल सेना के आगे वे टिक नहीं पाये। इसके बाद उसकी सेना मथुरा में प्रवेश कर गयी। खुली लूट और संहार का दौर आरंभ हो गया। जो भी सामने पड़ता अब्दाली की सेना उसे काट डालती। वो अपने पूर्वजों की ही भांति उम्र और लिंग का भेदभाव न करते हुए बच्चे, बूढ़े,

पुरुष और स्त्री सबको अपने तलवारों से काटते रहे। उन्होंने हर वह चीज जो वे ला सकते थे लूट ली। और जो नहीं ले जा सकते उसमे आग लगा दिया। पशुओं तक को नही छोड़ा गया। जितना ले जा सकते थे उतने पशु इकट्ठे कर लिये , और बाकियों को भी काट दिया, जला दिया। वहाँ की कोई गली ऐसी शेष नहीं थी जहाँ रक्त न फैला हो। वहाँ के नागा सैनिकों ने भरसक मुकाबला किया किन्तु उस असंख्य सेना के मुकाबले उनकी संख्या भी नगण्य थी।

साधुओ और नागाओ तक को काटा गया। वृन्दावन, मथुरा में उसने भयंकर लूटपाट और नरसंहार जारी रखा। कई मंदिरों को ध्वस्त कर दिया, भवनों को जला दिया और वह अब गोकुल की ओर बढ़ने को आतुर था, यमुना नदी को मथुरा और वृन्दावन वासियों के रक्त से लाल करने के पश्चात वह गोकुल की ओर बढ़ गया। उसकी मारकाट इस हद तक भयानक थी कि किंचित ही कोई ऐसा भवन शेष बचा था जिसके सदस्य की मृत्यु न हुई हो। खड़ी फसलों तक को इस प्रकार जलाया और रौंदा गया के पूरा प्रदेश ही अकालग्रस्त सा दिखने लगा था। उसकी लगायी हुई आग कई दिनों तक जलती रही। यमुना का काफी हिस्सा लाल हो गया और अनेक महीनो तक वहाँ से शव मिलते रहे। यमुना पार करने के बाद उसका सामना नागा साधुओं के एक बड़े सशस्त्र दल से हुआ।

नागाओं ने अपनी सीमित संख्या के बावजूद भीषण टक्कर दी। नागा साधुओं की इस भयंकर आक्रामकता को देखकर एक बारगी अब्दाली तक कांप उठा। वह मन ही मन प्रशंसा कर उठा, यहाँ के साधु सन्यासी इतने भयंकर योद्धा है तो यहाँ के लोग कैसे होंगे? किन्तु उसे यह बात अच्छे से पता थी कि भारत में एकमत कभी नही रहा, छोटे बड़े सभी रजवाड़े आपस में ही लड़ते रहे है, वे तभी शस्त्र उठाते थे जब संकट उनके द्वार पर आ खड़ा होता था। अफगानी लुटेरा अब्दाली इस बात को जानता था। वह भारत में केवल दो लोगों से ड़रता था, एक सिखों से और दूसरे मराठों से। किन्तु उसे भारत के अन्य राज्यों पर विश्वास था कि युद्ध के समय वे इनके साथ नही आयेंगे और इसी कमजोरी के कारण वह इन्हें भी पछाड़ सकता है। नागा साधुओं ने भीषण मारकाट मचा दी, कुछ समय के लिये अब्दाली की सेना भी कांप गयी किन्तु उनकी असीमित संख्या आखिरकार सीमित संख्या वाले नागाओं पर भारी पड़ी। किन्तु इसके पश्चात ही अब्दाली की सेना में भयंकर हैजा फ़ैल गया। जिसने महामारी का रूप ले लिया। हैजे के कारण कई सैनिक मरने लगे। उसकी पच्चीस

प्रतिशत से अधिक सेना इस प्रकोप से समाप्त हो गयी। सेना समेत अब्दाली के पाँव उखड़ गये। इतना नुक्सान उसे युद्धों में भी नहीं हुआ था जितना इस प्रकोप से हुआ। सेना में यह बात फ़ैल गयी के मथुरा और वृंदावन पर किये हमले और हिन्दुओं के मंदिरों को अपवित्र किये जाने के कारण श्राप फ़ैल गया है। यदि वे और कुछ समय इस क्षेत्र में रुके तो सबके सब बारी बारी से समाप्त हो जायेंगे। अब्दाली भी घबरा गया था।

उसे उस क्षेत्र से भाग निकलना ही उचित लगा और वह पुन: दिल्ली भाग गया। जाते जाते भी उसके अनेकों सैनिक बीमार पड़ते रहे किन्तु अब्दाली ने बीमारों को वही छोड़ने का आदेश दिया और आगे बढ़ गया। उसने पुन: दिल्ली में शरण ली, पंजाब के सिखों और मराठों ने अपना छापामार युद्ध सदैव जारी रखा जिससे अब्दाली को बेहद क्षति पहुँचती रही। उसके कब्जाए अनेकों क्षेत्र अब मराठों और सिखों ने हथिया लिये थे। अंतत १७६० में मराठा सेनापति दत्ताजी की ह्त्या करने के पश्चात ही तत्कालीन पेशवा बाजीराव ने अब्दाली से लड़ने के लिये अपने चचेरे भाई सदाशिव भाऊ के साथ भारी सेना भेजी। सदाशिव भाऊ के नेतृत्व में मराठा सेना दिल्ली तक पहुँच गयी किन्तु अब्दाली वहाँ से निकल चुका था। मराठों के दिल्ली जीतने के पश्चात कई राजाओ ने उनका साथ छोड़ दिया और अब्दाली से जा मिले, जिसमे नवाब शुजा उद दौला का नाम प्रमुख था। इनकी सम्मिलित शक्ति से अब्दाली ने मराठों का घेराव आरंभ कर दिया। मराठे वहाँ से निकल नही पा रहे थे और जल्द ही उनकी रसद भी समाप्त हो गयी। उसी समय पानीपत के पास अकाल पड़ गया था जिस कारण स्थिति और भयावह हो गयी थी। अब आमने सामने युद्ध के अलावा और कोई रास्ता नही बचा था। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार सदाशिवभाऊ के पास पन्द्रह हजार की पैदल सेना व पचपन हजार की अश्वारोही सेना की विशाल संख्या थी। इसके अलावा उनके पास दो सौ तोपें थी जिसका संचालन इब्राहिम गारदी करता था। इब्राहिम गारदी के पास भी नौ हजार की पैदल सेना थी। अब्दाली के पास अब सम्मिलित सेना थी जिसमे अड़तीस हजार पैदल सैनिक, बयालीस हजार घुड़सवार सैनिक, इसके अलावा अब्दाली के पास दस हजार के आसपास बंदूक धारी सेना भी थी। और दो हजार ऊंट पर सवार सैनिक। कुल मिलाकर मुकाबला एकतरफा ही माना जा रहा था। १४ जनवरी १७६० के दिन युद्ध के नगाड़े बजे और युद्ध आरंभ हो गया।

भयंकर युद्ध हुआ, मराठे जी जान लगाकर लड़े और अपने से भारी अब्दाली की सेना के दांत खट्टे कर दिये। शुरुवाती कुछ ही घंटो में मराठा सेना के छह दल और अब्दाली के आठ हजार सैनिक मारे गये। मराठा सैनिकों का उत्साह भारी पड़ता जा रहा था। वे अब्दाली के टिड्डी दल को मुंहतोड़ जवाब दे रहे थे। अब्दाली उनकी बहादुरी और रणकौशल देख कर अपनी जीत के लिये अनिश्चित सा था। किन्तु यहाँ अब्दाली की सेना एक तो संख्या में अधिक थी। और मराठों के साथ समस्या थी कि वे महीनों से दिल्ली में फंसे हुए थे, उनकी रसद सामग्री भी समाप्त हो गयी थी। जिस कारण आहार और अन्य जीवनावश्यक सामग्रियों की कमतरता होने के कारण वे कमजोर होते जा रहे थे। इसके पश्चात भी सदाशिव भाऊ के प्रखर नेतृत्व में वे लड़ते रहे। उस युद्ध का पलड़ा तब पलट गया जब पेशवा का बेटा विश्वास राव और सदाशिव भाऊ वीरगति को प्राप्त हुए। सदाशिव भाऊ के नेतृत्व में उत्साह से लड़ने वाली सेना में निराशा छा गयी। नेतृत्व न होने के कारण सेना हतोत्साहित हो गयी और अब्दाली ने इसी अवसर का लाभ उठाया। उसने हजारों मराठों को मार गिराया। अनगिनत योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए, वे समझ गये थे कि वे यह असंभव युद्ध नहीं जीत सकते इसके पश्चात भी मैदान छोड़ने के बजाय लड़ते रहे और लड़ते लड़ते ही वीरगति को प्राप्त हुए। पानीपत का युद्ध अब अब्दाली जीत चुका था। उसने इब्राहिम गारदी को बंदी बनाया और उसे सहधर्मी होने का हवाला देकर काफिरों के विरुद्ध न लड़ते हुए अब्दाली से हाथ मिला लेने का निमंत्रण दिया किन्तु इब्राहिम गारदी के लिये मातृभूमि सवर्प्रथम थी और उसकी निष्ठा मराठों के प्रति थी इस वजह से उसने अब्दाली का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया जिस कारण अब्दाली ने उसे तोप से बाँध कर उड़ा दिया। इस युद्ध में पेशवा की सम्पूर्ण शक्ति लग गयी थी जिस कारण मराठा साम्राज्य की कमर टूट गयी। वर्षो से दिल्ली तक अपना परचम फहराने वाले मराठों की शक्ति पानीपत युद्ध ने क्षीण कर दी और इसके बाद एक नई शक्ति ने अपना वर्चस्व जमा लिया। वह एक लुटेरा था और उसका उद्देश्य पूरा हो चुका था। वह अपने साथ लूट का माल लेकर अपने देश लौट गया। जहाँ १७७३ में उसकी मृत्यु हो गयी। उस समय तेजी से प्रभुत्व जमाते ब्रिटिश फ़ौज की राह में मराठे सबसे बड़ी बाधा थे। उनके रहते वे अपनी मंशा शायद ही कभी पूर्ण कर पाते। किन्तु पानीपत की हार से मराठों को असीमित क्षति पहुंची जिससे अंग्रेजो का कार्य आसान हो गया।

***

ईस्ट इंडिया कम्पनी (सन १६००)

वह हेक्टर नामक जहाज था। जिसपर एक ब्रिटिश व्यापारियों का दल सवार था। पुर्तगालियों के कारण भारत के लिये यूरोप का समुद्री मार्ग अब विश्व को पता था। ब्रिटेन से निकला यह व्यापारिक संगठन भारत के सूरत के बंदरगाह पर आकर रुका। सूरत एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र था। उस दल का नेतृत्व हॉकिन्स कर रहा था। उस समय जहांगीर एक प्रभावशाली राजा था। हॉकिन्स ने जहाँगीर के दरबार में खुद को एक राजदूत की तरह प्रस्तुत किया। जहांगीर ने ब्रिटिश हॉकिन्स का स्वागत किया। हॉकिन्स ने धीरे धीरे जहांगीर का विश्वास जीतना आरंभ किया। उस समय तक भारत में अनेकों विदेशी शक्तियाँ अपना व्यापारिक गढ़ बना चुकी थी। पुर्तगाली, स्पेनिश, नीदरलैंड्स, और फ्रांस के व्यापारी दलों ने अपने पाँव जमाने आरंभ कर दिये थे। सभी देशो के व्यापारिक दलों के पास अपनी सुरक्षा हेतु हथियारबंद सैनिकों की टुकड़ियां होती थी। वे सभी स्थानीय राजाओं एवं मुगलों से सहायता एवं अनुमति प्राप्त थे। यूरोपीय सैन्यो एवं व्यापरियों के पास आधुनिक तंत्रज्ञान एवं मारक हथियार थे जिसका लाभ मुगलों ने एवं अन्य रजवाड़ों अपनी अपनी रियासतों को मजबूत करने के लिये किया और उन्हें बढ़ावा दिया। ब्रिटिशों ने अवसर देखकर कलकत्ता में अपना प्रभुत्व जमा चुके पुर्तगालों के विरुद्ध शाहजहाँ को भड़काना आरंभ कर दिया और उसकी अनुमति से पुर्तगालियों से वह व्यापारिक केंद्र हस्तगत कर लिया।

अब अंग्रेजो की इस नीतिनीति के कारण अन्य विदेशी दल उसके शत्रु बने हुए थे जिस कारण सुरक्षा का हवाला देकर ब्रिटिशो ने अपनी सैन्य शक्ति में इजाफा किया और प्रशिक्षित सेना तैयार करने लगे। मुगलों एवं रजवाड़ों ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। और फिर धीरे धीरे अंग्रेजो ने सूरत और कलकत्ता का व्यापर पूर्णरुप से अपने हाथों में ले लिया। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने मुम्बई, मद्रास और कलकत्ता में अपनी चुंगीयां स्थापित कर दी जिस कारण अब उन्हें राजस्व भी मिलने लगा और वे आर्थिक रूप से अधिक सक्षम होने लगे। वे किसी छोटे रजवाड़े की तरह ही अधिकार रखते थे। कुछ ही समय में अपने अधिकार बढाते हुए और अन्य राजाओं के आपसी मतभेदों का लाभ उठाते हुए ईस्ट इंडिया ने बंगलादेश, दक्षिण

भारत और उत्तर भारत के कई क्षेत्रो तक अपना वर्चस्व बढ़ा लिया। मुगलों के खेमे में धीरे धीरे अंग्रेजी हुकुमत की बढ़ती ताकत के विरुद्ध आवाजें उठने लगी थी। किन्तु मुगलों ने स्वयं की हिन्दू विरोधी नीतियों कारण स्वयं को भारत के अन्य राजाओ के विरुद्ध शत्रु के रूप में प्रस्थापित कर दिया था। आये दिन वे किसी न किसी अन्य राजाओ के साथ युद्धों में व्यस्त रहते। राजनीतिक और सामाजिक अस्थिरता अपने चरम पर थी। अंग्रेजों ने इन युद्धों में भी अपनी सहायता देकर स्वयं की स्थिति मजबूत करने का प्रयास किया जिसमे वे सफल भी रहे। १७वीं शताब्दी में मुगलों के पतन के साथ ही ब्रिटिशों के उदय का आरंभ सुनिश्चित हो गया। ब्रिटिशों को तब तक केवल मराठों की सम्मिलित शक्ति से ही खतरा था। किन्तु पानीपत के तीसरे युद्ध में हुई मराठों की भीषण हार के कारण मराठा सत्ता कमजोर हो गयी और ईस्ट इंडिया का विरोध करने वाली कोई प्रमुख शक्ति नही रही। तब तक अंग्रेजों ने अपनी स्थिति इतनी मजबूत कर ली थी के जिन्होंने भी विरोध किया उन्हें दबा दिया गया। धीरे धीरे भारतीय प्रदेशों पर ईस्ट इंडिया का नियंत्रण आरंभ हो गया। उत्तर भारत और गंगा के अधिकांश क्षेत्र अब उनके अधीन थे। इसके पश्चात भी कुछ राज्यों का छिटपुट विरोध जारी था।

ईस्ट इंडिया ने शुरुवाती दिलचस्पी भारत के कच्चे माल में ही रखी थी जिससे वह मुनाफा कमाता जा रहा था। किन्तु फिर उन्होंने अपनी बस्तियांबसानी आरंभ कर दी। ईस्ट इण्डिया ने औद्योगीकरण और यांत्रिकिकरण को बढ़ावा देना आरंभ किया, अब वे कच्चे माल पर भी कब्जा करते और उससे बने माल को बाहर के देशो में बेचने के बजाय भारतीयों को जबरन खरीदने को विवश करते। इससे भारतीय अर्थव्यस्था और सामजिक ढांचा कमजोर होने लगा, अंग्रेजो की दमनकारी नीतियाँ अब अपने चरम पर थी। उन्होंने अब भारत की संस्कृति और कला को निशाना बनाया आरंभ कर दिया, ब्रिटिशों ने भारतीय नक्काशीकारों एवं जरी का काम करने वालो की उंगलियाँ तोड़ दी, आंखे फोड़ दी, जो भी जिस कला में प्रवीणता लिये हुए था उसका वो अंग भंग कर दिया जाता जिस कारण अनेक कलाए वंशानुगत रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक न बढ़ने के कारण नष्ट हो गयी। अंग्रेजो ने कच्चे माल की ढुलाई के लिये रेलमार्ग विकसित किये, अंग्रेजों ने भारत में पारम्पारिक खेती को हटा कर जबरन नगदी खेती प्रारम्भ करवाई जिससे उन्हें अधिक मुनाफा प्राप्त हो सके। भारत में उगाई अफीम को वो चीन में बेचता

और वहाँ की युवा पीढ़ी को नशे की लत लगाकर बर्बाद करके वहाँ भी अपना स्थान मजबूत करता। इसी बीच अकाल पड़ते रहे और अंग्रेजों को अपने लिये कार्य करनेवाले गुलामों की आवश्यकता हुई तो उन्होंने भारतीयों को ही प्रशिक्षित करना आरंभ कर दिया ताकि पढ़े लिखे अंग्रेजी जाननेवाले काले अंग्रेज बन सके जो उनके लिये गुलामी करे। ईस्ट इंडिया ने अकालग्रस्त क्षेत्रों में धर्मपरिवर्तन को बढ़ावा दिया और एक पूरी जीवनशैली ही बदल कर रख दी। १८५० तक अंग्रेजों का वर्चस्व लगभग सम्पूर्ण भारत तक बढ़ गया था। उन्होंने इतने समय में एक सम्पन्न कहलाये जानेवाले देश को छिन्न विछिन्न कर दिया। भारत को जितनी जन एवं धन हानि विदेशी आक्रमणकारियों ने सदियों के अन्तराल में नही पहुँचायी उससे अधिक नुकसान ब्रिटिशों ने पहुँचाया। उन्होंने आर्थिक रूप से भारत को इस तरह खोखला कर दिया के वे सम्पन्न हो गये और भारत दरिद्र होता चला गया। नस्लवाद, जातिभेद, इत्यादि को बढ़ावा इसी काल में मिला, अंग्रेजों ने अपने फायदे के लिये भारतीय समाज और विभिन्न सम्प्रदायों में फूट डालनी आरंभ कर दी ताकि वे कभी एक न हो पाये और वे इसमें सफल भी रहे।

धीरे धीरे बचे हुए मुगलों और रजवाड़ों पर भी अंग्रेजों ने नियंत्रण प्राप्त कर लिया। अंग्रेजों ने फ्रांस और डच कम्पनियों को भी हरा कर उन्हें पीछे हटने पर विवश कर दिया और व्यापार में एकाधिकार प्राप्त कर लिया। अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों से त्रस्त होकर १७५७ में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला और अंग्रेजो के मध्य प्लासी का युद्ध हुआ जिसमें अंग्रेजों ने पूर्णतया दबा दिया। इसके पश्चात अंग्रेजों की हिम्मत बढ़ती गयी और उन्होंने धीरे धीरे सम्पूर्ण भारत पर अपना कब्जा कर लिया। इसी मध्य अंग्रेजों ने धर्म परिवर्तन, अत्याधिक लगान, पारम्परिक कलाओं,प्राचीन मंदिरों एवं धार्मिक स्थलों को अपवित्र करना और नष्ट करना जारी रखा। अब अंग्रेजो की बस्तियां भारत में बसने लगी थी। वे पूर्णतया भारत में स्थापित हो चुके थे। उनकी शक्तियाँ इतनी बढ़ चुकी थी कि कोई भी राजा उनके विरुद्ध जाने का विचार भी नही कर सकता था। किन्तु अंग्रेजों के अत्याचारों से त्रस्त आकर और धार्मिक भावनाओं से होते खिलवाड़ से उकताकर १८५७ में में मंगल पाण्डेय नामक सैनिक ने विद्रोह कर दिया, जिसे फांसी दे दी गयी। किन्तु उसके द्वारा भड़काई गयी क्रान्ति ने असर दिखाया और देशभर में अंग्रेजों के विरुद्ध झड़पें होने लगी जिन्हें अंग्रेजों ने बड़ी मुश्किल से दबाया किन्तु १८५८ में भयानक विद्रोह हुआ जिसमे

अंग्रेजी हुकूमत लगभग हिल ही गयी थी। किन्तु वह विद्रोह टुकड़ों में बंटा रह गया और उसकी व्याप्ति समान रुप से न रहने के कारण उसे भी दबा दिया गया। किन्तु वह विद्रोह इतना व्यापक था के उसके चलते पुनः भारत पर नियन्त्रण रखने में एक साल लग गया।

अगले शतक तक अंग्रेजों की नीतियों के विरुद्ध और अपनी गुलामी के विरुद्ध लड़ने के लिये व्यापक संघर्ष आरंभ हो गये, कई रजवाड़े, रानियाँ और बादशाहों सहित,जनता भी अब खुले आम अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति का बिगुल बजा चुकी थी। भारत में अनगिनत क्रांतिकारियों एवं योद्धाओं ने अंग्रेजी हुकुमत की नाक में दम करके रख दिया। और कुछ ही वर्षो पश्चात द्वितीय महायुद्ध के कारण ब्रिटिश अर्थव्यस्था चरमरा गयी जिस कारण उसकी भारत पर पकड़ ढीली हो गयी। रही सही कमी सशस्त्र क्रांतिकारियों एवं आजाद हिन्द फ़ौज ने पूरी कर दी। चौतरफा मार से बौखलाए अंग्रेजों को आख़िरकार भारत छोड़ने पर विवश होना ही पड़ा। और सन १९४७ में भारत एक स्वतंत्र और लोकतांत्रिक देश के रुप में उभर कर सामने आया।

***

महादेव से साक्षात्कार

१९९३, वाराणसी

“बाबा! भारत ने किसी अन्य देश का कोई अहित नही किया था और न ही कहीं युद्ध किया, तो फिर क्यों भारत पर सदैव आक्रमण होते रहे है?” अथर्व ने देवदत्त के मुख से भारत पर प्राचीनकाल से हुए कुछ आक्रमणों के संक्षेप उल्लेख के बारे में सुनने के पश्चात, विचारपूर्ण मुद्रा में प्रश्न किया।

“भारत वर्ष पर शताब्दी दर शताब्दी आक्रमण हुए लूटपाट एवं धर्म , प्रचार ही इनका उद्देश्य था ? किसी को प्रदेश की सीमायें बढ़ानी थी, किसी को अपना धर्म बढ़ाना था, किसी को धन का मोह, किसी को प्राकृतिक संसाधनों का लालच, इसके अलावा क्या कोई और कारण भी हो सकता है इन क्रमानुसार एवं निरंतर आक्रमणों का ? बेटा ये आक्रमण मात्र संयोग नही थे। अभी तुम इसे समझ नही पाओगे, थोडा धैर्य रखो। आज तुम्हारा पहला ही दिन है। अभी के लिये मात्र इतना ही पर्याप्त है। अभी तुम्हें बहुत कुछ जानना शेष है। अपने प्रश्नों के उत्तर तुम्हें स्वयं ही मिल जायेंगे अथर्व।” देवदत्त मुस्कुराया।

“अभी समय है तुम्हारे अभिषेक, दीक्षा समारंभ और शपथ ग्रहण का और रक्षादल का हिस्सा बनने की प्रक्रिया आरंभ करने का।” मटुक ने अथर्व के कंधो पर हाथ रखाऔर उसे लेकर उस अद्भुत शिवलिंग के गर्भगृह की ओर बढ़ गया। उनके पीछे दल के अन्य सदस्य पूजा सामग्री एवं संसाधन लेकर उनके पीछे हो लिये।

वहाँ मध्य में गाय के गोबर से कच्ची धरा को लीप कर पवित्र किया गया था और उसके बीचो बीच यज्ञ वेदी बनाई हुई थी। दल के सदस्य में से ही एक सदस्य पुरोहित की भूमिका में था। अथर्व उसे देखकर आश्चर्यचकित रह गया। यह व्यक्ति वही था जो अभी यंत्रणा कक्ष में यंत्रों का संचालन कर रहा था। वह अथर्व को देख कर मुस्कुराया और आँख मूँद कर कुछ बुदबुदाया और यज्ञ का सामान व्यवस्थित करने में व्यस्त हो गया। मटुक ने अथर्व को दीक्षा वेदी पर बैठने का निर्देश दिया, अथर्व तुरंत उसका पालन किया और आसन जमा लिया। गंगाजल के छिड़काव के साथ मंत्रोच्चार का आरंभ हो गया। सर्वप्रथम गणेशजी के आवाहन से शुभारंभ करते हुए प्रक्रिया आरंभ कर दी गयी। अथर्व के ललाट पर पुरोहित ने मंत्र पढ़ते हुए दही, अक्षत, गोमय और दूब का क्षेपण किया।

उसके पश्चात पुरोहित ने एक डिबिया में से जनेऊ निकाल कर कुछ बुदबुदाते हुए उस जनेऊ को अथर्व के कंधे पर रखा देवदत्त आगे बढ़ा और उसकी सहायता से अथर्व ने जनेऊ धारण कर लिया। इसी के साथ वहाँ उपस्थित आचार्यों ने सामूहिक रूप से इष्टदेवों का आवाहन आरंभ कर दिया और स्वस्ति वाचन प्रारम्भ हो गया।

।।ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा: ।
स्वस्ति न: पूषा विश्ववेदा: ।
स्वस्तिर्नास्ताक्ष्योअरिष्टनेमि: ।
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ।।

सम्पूर्ण रीतिरिवाजों अथर्व का दीक्षा समारंभ समाप्त हुआ। वह पूर्णतया, जल, दुग्ध, मधु एवं हल्दी से पुता हुआ था।

अथर्व का शरीर अद्भुत कांति से मानो जगमगा रहा था। सभी आवश्यक क्रियाओं के पश्चात पुरोहित और बाकी आचार्य अपने अपने स्थानों से उठे। देवदत्त आगे बढ़ा और अथर्व को उस दिव्य शिवलिंग की परिधि की ओर लेकर चल दिया। सभी सदस्य वही स्थिर थे। अथर्व को शिवलिंग की ओर बढ़ता देख कर सभी ने एक स्वर में महादेव का आवाहन आरंभ कर दिया। अथर्व अब शिवलिंग के चारो ओर बने वलय के समीप ही खड़ा था। देवदत्त उस वलय से कुछ ही दूरी पर ठहर गया मानो उसकी सीमा वही तक हो।

उस शिवलिंग से प्रस्फुटित होती अद्भुत प्रकाश की किरणों में अथर्व का नन्हा शरीर दैदीप्यमान प्रतीत हो रहा था। वह अब बालक अथर्व नही अपितु कोई दिव्य आकृति सा प्रतीत हो रहा था। उस प्रकाश में नहाते ही अथर्व का मन एकदम से शांत हो गया। उसके नेत्र स्वयमेव बंद हो गये। हाथ अपने आप जुड़ते चले गये। अब उसे कुछ भी सुनाई नही दे रहा था। मानो क्षण भर में वह शक्ति मठ से कहीं दूर पहुंच गया हो। केवल शक्ति मठ ही नही, बल्कि वह इस संसार से भी परे किसी अलग विश्व में स्वयं को पा रहा था। अथर्व अब खुद को शरीर हीन और भार रहित अनुभव कर रहा था। वह किसी दिव्य ऊर्जा क्षेत्र में था जहाँ उसे केवल ऊर्जा और प्रकाश ही दिखायी दे रहा था और एकदम नीरव शांति।

उस शांति में उसके कानों में मात्र एक ही ध्वनि सुनाई दे रही थी, वह थी ओमकार की। धीरे धीरे उस ध्वनि की तीव्रता बढ़ती जा रही थी। अब वह ध्वनि उसे उसके अंतर्मन से प्रस्फुटित होती हुई प्रतीत हो रही थी।

उसने ध्वनि के स्त्रोत की ओर ध्यान देने का प्रयास किया, वह ध्वनि कोई और नही बल्कि उसके हृदय गति की ध्वनि थी जो उसे ॐ के स्वर में सुनाई देती प्रतीत हो रही थी। उसने अपनी हृदय गति को अपने कानों में गूंजता स्पष्ट महसूस किया और उसी क्षण मानो वह स्वयं को ही खुद ही के हृदय में अनुभव कर रहा था। उसके हृदय में खुद अथर्व ही था। अथर्व ने अपने आसपास देखने का प्रयत्न किया। असंख्य शिराओं के मध्य वह मात्र ऊर्जा रुप में स्वयं को अस्थिर पा रहा था। शिराओं में रक्त दौड़ रहा था, प्रकाश की किरणें शिराओं पर पड़ रही थी जिस कारण रक्त कण प्रकाशमान हो रहे थे। उसके चहुँओर रक्त कण उस अद्भुत प्रकाश के कारण प्रतिबिम्बित हो रहे थे। रक्त के असंख्य कण उस प्रकाश से ऐसे दमक रहे थे मानों वे रक्त कण न होकर असंख्य तारें हो, उन तारों का स्वरूप एवं रंगरूप भी रक्तिम ही प्रतीत होता था। उसने एक बार अपने हृदय को खोजने का प्रयास किया। किन्तु उसे हृदय न दिखायी दिया। वह स्वय को शरीर रुपी ब्रह्माण्ड में पा रहा था। अचानक उसे एक और ध्वनि सुनाई देने लगी। वह उस ध्वनि के साथ ही रक्त कण मानो थिरक रहे थे। जब भी वह ध्वनि बजती उसी समय शरीर रुपी वह ब्रह्माण्ड अस्थिर हो जाता। अथर्व ने स्वर पहचानने का प्रयास किया, वह किसी वाद्य का स्वर था। किन्तु कौन सा? 'ड़मरु' हाँ! यह ड़मरु का स्वर है।

स्वर का परिचय पाते ही मानों ड़मरु के स्वरों से कंपन होने लगा और हर स्वर के साथ अथर्व का अस्तित्व तक थरथरा जाता। उसने ड़मरु के स्वर की ओर ध्यान लगाना आरंभ किया। इस बार भी वह आश्चर्यचकित रह गया जब ड़मरु की ध्वनि लहरियां उसे अपने ही भीतर से आती प्रतीत हुई। वह इस समय स्वयं अपने ही हृदय में स्पंदन ऊर्जा के रुप में उपस्थित था, किन्तु वह इस ऊर्जा रुप में भी अपने स्पंदन में सूक्ष्म हृदय का अनुभव कर रहा था जो ड़मरु के स्वर की भांति बज रहा था। उसे स्वर के स्त्रोत का पता चला ही था की उसे ऐसा लगा मानो उसे किसी ने बेहद ही गहरी अंधकार भरी खाई में खींच लिया हो। अथर्व शरीर हीन था किन्तु वह अपने आपको तीव्र गति से एक अंधकूप में गिरता हुआ अनुभव कर रहा था। उसका पूरा व्यक्तित्व ही किसी चुम्बक की शक्ति से मानों गहन अंधकार में डूबता जा रहा था, खींचा जा रहा था।

वह कोई विचार भी कर पाने अक्षम था, उसके विचार तक मानो उस अंधकूप में भयंकर गति के साथ खींचे जा रहे थे। उसे न समय का भान था और न ही किसी संवेदना का। उसे प्रतीत हुआ मानों वह युगों से

इस अंधकूप में खींचा जा रहा है, गिरता जा रहा है किन्तु इसकी गहराई का कोई थाह नही है, कोई छोर नही है। उसका मन अवचेतन के गहन अंधकार में डूबता सा प्रतीत हो रहा था, उसका मन मस्तिष्क एकदम विचारशून्य हो गया था। अथर्व खुद को किसी स्वप्न के एकदम मध्य में महसूस कर रहा था। तीव्रता से गहराई में गिरते अथर्व को अचानक एक सौम्य झटका सा लगा और वह रुक गया। इतनी तीव्रता से नीचे की ओर गिरते हुए भी वह एक झटके से रुक गया था, किन्तु उसे महसूस हुआ जैसे उसका शरीर किसी फूल की पत्ती की भाँति गिरते हुए एकदम स्थिर हो गया हो, न कोई झटका, न कोई प्रभाव। वहाँ अब भी घुप्प अंधेरा था। ड़मरु की धुन शनैः शनैः तीव्र होती जा रही थी। अब अथर्व स्थिर था और उस घुप्प अँधेरे को समझने का प्रयास कर रहा था। यह अँधेरा एकदम घुप्प था, उसकी कल्पना से भी परे घना अँधेरा था वह। केवल ड़मरु के स्वर ही सुनाई पड़ रहे थे।

उसे अनुभव हुआ कि वह स्थिर नही है, बल्कि कहीं खींचा चला जा रहा है, उसकी गति अब विद्युत् की गति समान हो गयी। उसे यह आभास हो रहा था के उसका ऊर्जा रुपी शरीर कहीं बहे जा रहा है, किन्तु उसे यह किंचित भी अंदेशा नहीं था कि वह प्रकाश की गति से कहीं खींचा जा रहा है। अचानक अंधेरे में ही एक प्रकाश का नन्हा बिंदु दिखायी पड़ा। निस्संदेह वह इस अंधियारे का अंतिम स्थाम था जहाँ से से प्रकाश आरंभ होता था। अथर्व अब उस बिंदु को देख रहा था और कुछ ही क्षणों में वह उस क्षेत्र में था जहाँ नीला प्रकाश था। अथर्व ने अपने पीछे देखा जहाँ से वह आया था, किन्तु उसे किसी भी प्रकार के अँधेरे का कोई चिन्ह नही दिखा। मानों वह किसी कृष्णविवर (ब्लैक होल) से अचानक निकल आया हो। उसके समक्ष जो दृश्य था उसे देखकर अथर्व को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। वहाँ चारों ओर हल्का नीला प्रकाश था। वह स्पष्ट रुप से तारामंड़ल और असंख्य ग्रहों को देख सकता था। अर्थात इस समय वह ब्रह्माण्ड के किसी कोने में था। अथर्व अब भी यही सोच रहा था कि यह मात्र एक स्वप्न है। ब्रह्माण्ड का स्वरुप ऐसा होगा उसने कभी कल्पना भी नही की थी, पुस्तकों में और चलचित्रों में दिखायी जाने वाली छवियों से भी अधिक अद्भुत वातावरण था वह। यहाँ एक साथ असंख्य सूर्य एक कतार में प्रकाशमान थे। तो वही चन्द्र के भी अनेकों स्वरुप एकत्र उस ब्रह्माण्ड में उपलब्ध थे। इतने सूर्यो के प्रकाश के पश्चात भी अथर्व का ऊर्जारुपी शरीर स्वयं को एक अत्यंत शीतल स्थान पर महसूस

कर रहा था। सूर्य की किरणों में दाह के बजाय एक विचित्र सी शीतलता थी जो उसके मन को शांति प्रदान कर रही थी। अनेकों ग्रह, तारामंड़ल, क्षुद्र ग्रह, इत्यादि से वह स्थान भरा हुआ था। अथर्व निस्संदेह ब्रह्माण्ड में ही था किन्तु यह ब्रह्माण्ड ऐसा था जिसकी किसी ने कल्पना भी नही की थी। वहाँ का वातावरण सकारात्मक और दैवीय ऊर्जा से परिपूर्ण था। वहाँ आते ही अथर्व का अस्थिर मन तुरंत स्थिर और शांत हो गया। वह अद्भुत अनुभूति कर रहा था।

अचानक उसने देखा वह ब्रह्माण्ड सिमटा जा रहा था। मानो किसी पानी से भरे पात्र में छेद हो जाने पर जिस प्रकार पानी तल की ओर भागता है, उसी प्रकार यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड भी भाग रहा था। किन्तु तल की ओर नही बल्कि ऊपर की ओर। वैसे भी अथर्व यहाँ तल, ऊपर और दिशा इत्यादि का कोई भान नही रख पा रहा था। उसे पता ही नही थी के कौन सी स्थिति कौन सी दिशा क्या है। वह बस सिकुड़ते ब्रह्माण्ड को देख रहा था। मानो वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड किसी कृष्ण विवर में समा रहा हो। किन्तु वह कृष्ण विवर नही था, वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एक आकृति ले रहा था। अथर्व को अपनी आँखों पर विश्वास नही हो रहा था कि वह एक सम्पूर्ण आकाशगंगा को एक आकार लेता देख रहा था। जल्द ही वह सम्पूर्ण आकाशगंगा एक मानवाकृति आकार ले चुकी थी। उस विशाल और भीषण आकार के समक्ष अथर्व का कद मात्र किसी अणु जितना ही था। वह उस आकार को अपनी दृष्टि की परिधि और सीमा से नाप ही नही पा रहा था। उसकी दृष्टि का विस्तार इतना था ही नही के वह उस आकार को समझ सके। किन्तु वह आकार अब सिकुड़ने लगा और इतना छोटा हो गया जिसे अथर्व सरलता से देख सके। ऊर्जा रुप में होने के कारण उसकी दृष्टि की सीमा मनुष्य शरीर की तरह नियमों में नहीं बंधी थी। वह असीमित दायरे तक देख सकता था, किन्तु यह आकार उसके ऊर्जा रुप के दायरे के भी बस के बाहर की बात थी। गनीमत थी कि आकार स्वयं छोटा हो गया जिसे अब अथर्व सरलता से देख सकता था, पहचान सकता था। अब तक दिखायी देने वाले अनेकों चन्द्र अब आकार के एकदम शीर्ष पर धनुषाकृति आकार में कतारबद्ध सजे हुए थे। असंख्य सूर्य दो भागों में बंटे हुए थे मानो दो दीप्तिमान नेत्र हो। क्षुद्रग्रहों एवं तारामंड़ल से मुखाकृति एवं एक जटा सी बनी प्रतीत हो रही थी।

“म.....महादेव! साक्षात् महादेव!” अथर्व आश्चर्यचकित रह गया। वह आकृति अब भी स्पष्ट नही थी, किन्तु फिर भी उसके आकार और

दिव्य आभामंड़ल से अथर्व को आभास हो गया। उसके भीतर से अनुभूति उठी कि यह आकृति साक्षात् महादेव ही हैं। अथर्व उस दिव्य आकृति के समक्ष नतमस्तक हो गया। वह उस आकृति को स्पर्श करने की लालसा से आगे बढ़ा, हालांकि वह आकृति उससे लाखो प्रकाशवर्ष की दूरी पर स्थित थी। किन्तु उसकी ऊर्जा की गति भी इतनी अधिक तीव्र थी के वह कुछ ही क्षणों में आकृति के मध्य पहुँच जाता। अद्भुत से भी अद्भुत गति से वह उस आकृति से जा टकराया, किन्तु वह कोई ठोस आकृति तो थी ही नहीं, इसलिये वह पुन: ब्रह्माण्ड के मध्य पहुँच गया। उसके मध्य में पहुंचते ही वह पुन: एक अंधियारी खाई में गिरने लगा। पुन: घुप्प अँधेरा छा गया और उसी तीव्रता से उस अंधकूप में खींचा जाने लगा। कुछ भी समझ पाने से पहले ही वह खींचता चला गया।

"महादेव!" अथर्व के मुख से निकला और उसकी आँखे खुल गयी। वह शक्ति मठ में ही था। उसके सामने वह अद्भुत शिवलिंग अपने स्थान पर ही स्थिर था। उसने आश्चर्य से यहाँ वहाँ दृष्टि घुमायी। मटुक, देवदत्त, पुरोहित इत्यादि सब अपने अपने स्थानों पर यथावत ही खड़े थे। देवदत्त ने उसे अपने पास आने का संकेत किया। अथर्व ने शिवलिंग को पुन: प्रणाम किया और देवदत्त की बढ़ा।

"कितनी देर हो गयी बाबा मुझे शिवलिंग के समक्ष खड़े हुए?" अथर्व ने उत्सुकता से पूछा, वह जानना चाहता था, उसे पूर्ण विश्वास था कि उसने न जाने कितना समय आँखे बंद किये वही गुजार दिया था।

"अरे अभी तो आँखे बंद ही की थी तुमने। बंद करने के एक ही क्षण बाद तो महादेव का नामस्मरण करते हुए आँखे खोली।" देवदत्त मुस्कुराया।

"एक क्षण ही? यानी एक सेकंड़ ही बस?" अथर्व के स्वर में आश्चर्य का भयंकर पुट था। वह हैरान था। उसे प्रतीत हो रहा था मानों वह कई युग बीता कर आ रहा हो।

"क्या देखा?" मटुक ने उसकी अवस्था भांपते हुए पूछ लिया।

"स्वयं महादेव की आकृति देखी मैंने।" अथर्व बोल पड़ा।

"साक्षात् महादेव!!" मटुक और देवदत्त दोनों के मुख से यह निकला। इससे पहले भी इस मठ में अनेकों ने दीक्षा आरंभ के दौरान शपथग्रहण विधि की थी। सभी के शिवलिंग के समक्ष आते ही अनेकों विचित्र अनुभव थे। किन्तु आजतक किसी ने भी किसी भी प्रकार की आकृति देखने का दावा नही किया। अथर्व पहला व्यक्ति था जिसने

शिवलिंग के सम्पर्क में आकर कोई आकृति देखी थी और वह भी साक्षात् महादेव की। यह अब मठ में अत्याधिक कौतुहल का और चर्चा का विषय बन गया।

“आज के लिये इतना ही पर्याप्त है अथर्व, कल से तुम्हारा असल प्रशिक्षण आरंभ होगा। फिलहाल घर चलो।” देवदत्त ने अथर्व का माथा सहलाया।

“पहले नहा लो, अभिषेक और पंचामृत से अब तक शरीर भीगा हुआ है।” मटुक ने अथर्व की ओर देखते हुए कहा और उस हॉल के एक ओर इशारा कर दिया।

उस गलियारें से निकलने के बाद ही अंतिम छोर पर नहाने एव, शुद्ध होने हेतु स्वतंत्र स्नानागार बने हुए थे। देवदत्त अथर्व के साथ वही बढ़ रहा था। उसके मन में कोई द्वंद चल रहा था।

“महादेव ने अथर्व को दर्शन दिये। क्या यह किसी प्रकार का कोई संकेत अथवा संदेश है?” देवदत्त के मन में अनेकों विचार आ जा रहे थे। उसने निश्चय किया कि वह अथर्व से इस बाबत घर पहुंचकर विस्तार से चर्चा करेगा।

***

रिफ़ॉर्मर

१९९४, मुंबई

मीटिंग रुम में महेश बाहुपति अपनी रिवाल्विंग चेयर पर विराजमान था। उसके हाथों में एक सिगार था, जिसे उसने सुलगाया नही था। वह ऑफिस के नियमों का कड़ाई से पालन करने वाला व्यक्ति था इसलिये तलब के बावजूद भी वह ऑफिस में अक्सर उंगलियों के मध्य बुझा हुआ सिगार फंसाए रखता था, इससे उसकी तलब को गलतफहमी बनी रहती थी।

वह उस लम्बी मेज के सबसे आखिरी छोर पर बैठा हुआ था, उसके मुख पर इस समय सख्त भाव थे। वही उसका ख़ास फ्रैंक उससे कुछ ही दूर पर एक दूसरी चेयर पर बैठा हुआ था। फ्रैंक एक यूरोपियन था, किन्तु वह पिछले कई वर्षो से भारत में स्थाई रुप से रह रहा था। फ्रैंक लगभग महेश की ही उम्र का था। यूरोपियन होने के बावजूद वह महेश के सामने शारीरिक रुप से उन्नीस ही था। महेश की नज़रें फ्रैंक से मिली और फ्रैंक ने वहा उपस्थित सदस्यों को मीटिंग शुरू करने का संकेत किया।

मेज के इर्द गिर्द फ्रैंक की कुर्सी के अलावा पन्द्रह कुर्सियां लगी हुई थी, सभी कुर्सियों पर काले सूट पहने पन्द्रह व्यक्ति बैठे हुए थे। सभी एक ही जैसे सूट में थे, मानो यह कोई अघोषित यूनिफ़ॉर्म था। किन्तु असल बात यह थी कि वे सभी व्यक्ति देश के विविध हिस्सों से थे और बड़े ओहदों पर विराजमान महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। आधे से अधिक तो महेश की कम्पनी के शीर्ष और महत्वपूर्ण पदों पर विराजमान कर्मचारी ही थे। ये सभी महेश की कम्पनी और उसके साझेदार संगठनो से जुड़े हुए व्यक्ति थे।

"सबसे पहले मैं आप सभी का धन्यवाद करना चाहूँगा, जो आपने अपने व्यस्त शेड्यूल में से समय निकाला और यहाँ उपस्थित हुए।" फ्रैंक ने चेयर पर बैठे बैठे ही स्वागत की खानापूर्ति करते हुए भूमिका बांधनी शुरू कर दिया।

"फ्रैंक! औपचारिकता की आवश्यकता नही है।" महेश का सख्त किन्तु शांत स्वर उभरा। फ्रैंक ने हामी में सर हिला दिया।

"मुद्दे की बात पर आते है। यह एक इमरजेंसी मीटिंग है, आप सभी को इन्फॉर्म किया जाता है कि हमारा महत्वपूर्ण रिफ़ॉर्मर फेडरिक कल मारा गया।" फ्रैंक इतना कहकर खामोश हो गया। फ्रैंक के शब्द सुनकर हॉल में एक मुर्दनी सी छा गयी। सब के सब सकते में आ गये।

“लेकिन कैसे?” एक ने प्रश्न किया।

“हमारे सीक्रेट हाइड़ आउट पर हमला हुआ है। फेडरिक के साथ ही कई और एजेंट्स भी मारे गये है। यह किसने किया, इसकी अब तक कोई सूचना नही मिली है, हाइड आउट ख़ाक हो चुका है, स्थानीय मीडिया ने आगजनी की घटना बता दी है। आश्चर्य की बात यह है कि पुलिस को हमारे किसी भी एजेंट के अवशेष तक नही मिले है। आग इतनी भयानक थी कि लाशों की हड्डियां तक ख़ाक हो गयी।” महेश ने अपनी उसी सख्त किन्तु शांत आवाज में कहा।

“चीफ! हमें इसकी जड़ तक जाना ही होगा। यह किसी साधारण व्यक्ति का काम नही हो सकता। हमारे रिफ़ॉर्मर्स को मात देना किसी साधारण मनुष्य के बस की बात नही है।” मेज के दूसरे छोर से एक एजेंट बोला।

“यह बात तो जाहिर है। सबसे पहले तो यह एक सीक्रेट हाइड आउट था, इसका पता उन्हें कैसे चला? दूसरे फेडरिक के पास कोई सूचना थी, जिसके आधार पर वह योजना बना रहा था। यह सूचना उस खोज के संदर्भ में ही थी जिसकी तलाश हम शताब्दियों से करते आ रहे है। उस मीटिंग के बाद वह फ्रैंक से मिलने वाला था। किन्तु उसकी सुबह तक कोई खबर नही आयी तो अपने एजेंट्स के जरिये हमें यह बात पता चली की फेडरिक मारा गया है। हमारे मीडिया के गुप्त सूत्रों में से एक ने कन्फर्म किया है की उस इलाके में देर रात एक राहगीर ने मिलिट्री की विशेष टुकड़ी देखी थी। किन्तु यह बात मीडिया में नही आयी।” महेश ने बेचैनी से मेज पर हल्के से मुक्का मारा। उसके चेहरे के भाव बन बिगड़ रहे थे।

“मिलिट्री? क्या मिलिट्री इसमें शामिल थी?” पुन: एक सदस्य ने उत्सुकता से प्रश्न किया।

“नही! वो मिलिट्री के लोग नही है, क्योंकि वे पूरी तैयारी के साथ आये थे, रिफ़ॉर्मर के लिये बाकायदा तैयार होकर आये थे वे सब। वे फेडरिक के पीछे ही थे, वे नही चाहते थे कि कोई उस वस्तु को खोजे और न ही वह दुनिया के सामने आये। इसलिये उन्होंने फेडरिक के इरादों को जड़ से ही समाप्त कर दिया।”

“वे वही है जिनसे हम स्वयं को बचाते आ रहे हैं। किन्तु अब लगता है आमने सामने का टकराव तय है। वे हमारी ही तरह उसी सीक्रेट ऑर्गनाइजेशन से है जो सदियों से हमारे मंसूबो को नाकाम करते आ रहे हैं।”

“हम काफी करीब आ चुके है सर, हमारे पीछे हटने का तो सवाल ही नही पैदा होता।” फ्रैंक ने कहा, उसके मुख पर रोष स्पष्ट झलक रहा था।

“कोई पीछे नही हट रहा। लेकिन अब हमें यदि टकराना ही है तो तैयारी पूरी होनी चाहिये। सभी सीक्रेट एजेंट्स को एकत्रित करो। फेडरिक उत्तर भारत में हमारा एजेंट था, उसने वहाँ के कुछ नक्शे बनाये थे, जहाँ उस चीज के होने का अनुमान है, शायद इसी सिलसिले में वह कुछ जरुरी सूचना हमें देने वाला था। उत्तर भारत के दस महत्वपूर्ण ठिकानों की सूची हमें फेडरिक पहले ही भेज चुका था। अपने एजेंट्स को और सारे सूत्रों को उत्तर भारत की उन दस जगहों पर खोज केन्द्रित करने के लिये कह दो, और कहीं कोई चूक नही होनी चाहिये और न ही कोई बेसब्री दिखायेगा। भले ही समय लग जाये किन्तु इत्मिनान से और सही दिशा में जांच करे, जब कोई ठोस प्रमाण मिलेगा हम तभी हमला करेंगे। फ़िलहाल हम जल्द ही आपातकाल की घोषणा करनेवाले है।” इतना कहकर बिना किसी के उत्तर की प्रतीक्षा किये महेश कमरे से निकल गया।

वहाँ उपस्थित हर एजेंट चकित होने के अलावा और कुछ नही कर पाया। सदैव शांत रहनेवाले और संयम से काम करने वाले महेश का यह व्यवहार उनके लिये नया था। फ्रैंक जानता था कि महेश का मूड़ इस समय खराब है इसलिये साये की तरह हर समय साथ रहनेवाला फ्रैंक महेश के पीछे निकलने के बजाय अपनी चेयर पर ही जमा रहा और वहाँ उपस्थित एजेंट्स को देखकर मुस्कुराता रहा। उसने इशारे से ही मीटिंग बर्खास्त करने का निर्देश दे दिया

***

महेश अपने आलीशान घर में था। उसने अपना सूट निकाल कर वहाँ उपस्थित नौकर को थमा दिया और अपनी टाई ढीली करते हुए वह सीढियाँ चढ़ने लगा। उसके मुख पर कठोर भाव अब भी यथावत ही थे। उसकी कसी हुई सफ़ेद कमीज उसके शक्तिशाली मांसल कटाव को छुपा नही पा रहा था। इस उम्र में भी उसका सुदृढ़ शरीर उसके जिम एडिक्ट और फिटनेस फ्रीक होने की चुगली कर रहा था। अब वह एक गैलरी में था, गैलरी के अंतिम छोर का दरवाजा उसका गन्तव्य था।

“रक्षा दल सतर्क हो गया है। इसका मतलब वो हर उस गतिविधि पर पैनी दृष्टि रखे हुए है जो उस वस्तु की खोज में हो रही है और गतिविधि को मूर्त रूप लेने से पहले ही वे समाप्त भी कर रहे है।अब मैं और रिस्क

नही उठाना चाहता फ़िलहाल, जब तक उस वस्तु के बारे में कोई सार्थक सुराग न मिल जाये ।"

अब वह एक द्वार के सम्मुख खड़ा था, जिसे देखकर आश्चर्यजनक रूप से महेश के चेहरे के भाव बदल गये। उसके चेहरे से कठोरता क्षण भर में अदृश्य हो गयी और उसकी जगह एक मंद मुस्कान ने ले ली। उसने मुस्कुराते हुए दरवाजे का हैंड़ल धकेला और कमरे में प्रवेश कर गया।

एक अठरह वर्षीय युवक आदमकद शीशे के सामने खड़ा था। उसने एक बेहद महंगा सूट पहन रखा था और गले में टाई कस रहा था। वह शारीरिक रूप से महेश की प्रतिकृति लग रहा था, किन्तु व्यास और चौड़ाई में वह महेश से आधा ही था। किन्तु उसकी आयु देखकर सहज अनुमान लगाया जा सकता था कि वह कुछ ही वर्षों में महेश से भी अधिक सुदृढ़ हो जायेगा। वह शीशे में अपनी छवि देख रहा था, क्लीन शेव्ड, बाल सलीके से पीछे की ओर काढ़े हुए, वह असामान्य रूप से सवा छह फीट का युवक था। सूट पहने होने के पश्चात भी उसके चौड़े कंधे और बलिष्ठ भुजाये स्पष्ट रूप से झलक रही थी। उसने शीशे में ही महेश का अक्स देखा और मुस्कुरा उठा।

"कैसा लग रहा हूँ डैड़?" उसने बिना मुड़े ही महेश से प्रश्न किया, वह जो निस्संदेह महेश बाहुपति का बेटा माया ही था।

महेश उसके ठीक पीछे खड़ा था। उसके दोनों हाथ अपने बेटे के मजबूत कंधो पर थे। उसके चेहरे की मुस्कान स्पष्ट चुगली कर रही थी कि वह अपने बेटे को इस रूप में देखकर कितना प्रफुल्लित था।

"जंच रहे हो माया।" महेश ने मुस्कुराते हुए उसका सूट ठीक किया।

माया अब अपने पिता से मुखातिब था।

"डैड़! मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि अब जिम्मेदारियों का भार उठा ही लेना चाहिये?" माया के स्वर में एक दृढ़ता थी।

"क्योंकि अब तुम पूर्ण रूप से तैयार हो इसलिये, मेरे सपनों के साथ साथ अपने स्वप्नों को भी साकार रूप देने का समय आ गया है माया।" महेश ने मुस्कुराते हुए कहा। उसकी नज़रें माया से हट ही नही रही थी।

उसी क्षण मानों सारे विश्व की क्रूरता और पीड़ा माया के मुख पर उभर आयी। सपनों का उल्लेख होते ही उसके भाव बदल गये।

"मेरे सपने? मेरे वे सपने जिन्होंने मेरा बचपन छीन लिया जिन्होंने, आपसे पिता होने के सुख को छीन लिया ? वो सपने जिन्होंने

,माँ को निगल लिया? वही सपने जिनमे मेरा बचपन जला परिवार जला ......," माया के मुख से जलते शब्द अभी पूरे भी नही हुए थे।

"और अब उसकी आग में यह दुनिया जलेगी माया। मेरे बेटेतुम , ,बचपन जवानी, परिवार, प्यार से परे हो, तुम इन सब चीजो के लिये नहीं बने हो। तुम्हारा जीवन केवल प्रतिशोध है ,प्रतिशोध की नींव ही तुम्हारे इस जीवन का सारहै, आधार है, और तुम्हें इसे अपनाना ही होगा।" महेश ने उसकी बात सम्पूर्ण होने के पहले ही कहा। महेश के स्वर में प्रचण्ड दाह था, जिसकी ऊष्मा माया स्पष्ट महसूस कर रहा था।

"आज का दिन तुम्हारे लिये बहुत महत्वपूर्ण है बेटा। आज तुम वर्चस्व के इस युद्ध में पहला कदम रखने जा रहे हो। आज से तुम इस एम्पायर के नेतृत्व की भूमिका निभाने वाले हो।" महेश के स्वर में प्रसन्नता थी, और आँखों में एक अद्वितीय चमक।

***

वह एक आलीशान हॉल था। बेशकीमती फर्नीचर सजे हुए थे, हॉल किसी बहुमंजिला इमारत के टॉप फ्लोर पर था, जिस कारण कांच की दीवार से पूरा शहर दिखायी दे रहा था। हॉल की सजावट में कोई कसर बाकी नही रखी गयी थी। हॉल के मध्य चेयर्स करीने से सजाई हुई थी, जिन पर अनेकों व्यक्ति बैठे हुए थे। ये सभी ''बाहुपति गोल्ड माइंस" के कर्मचारी थे। यह महेश बाहुपति की संस्था थी, जो देश के टॉप बिजनेस ब्रांड्स में से गिनी जाती थी। सभी कर्मचारी अपने अपने स्थानों पर बैठे हुए थे, वे सभी हॉल के मध्य बने हुए मंच की ओर देख रहे थे। जहाँ महेश अपने शानदार काले सूट में खड़ा मुस्कुरा रहा था। उसके चेहरे का तेज आज अप्रतिम था।

मंच पर ही कुछ दूसरी कुर्सियों पर संस्थान के कुछ उच्च पदों पर स्थापित पदाधिकारी विराजमान थे। उन पदाधिकारियों के ही मध्य माया भी बैठा हुआ था। वह इस समय हल्का सा बेचैन था। आज वह पहली बार अपनी कम्पनी के कर्मचारियों और अधिकारियों से सीधे संवाद साधने वाला था। बेचैनी अवश्य थी किन्तु वह निश्चय कर चुका था और आश्वस्त था कि उसे क्या कहना है। वह फिलहाल अपने पिता को सुन रहा था।

"वेलकम जेंटलमेन्स! आप सभी जानते ही होंगे कि हम सब यहाँ क्यों इकट्ठा हुए है। फिर भी मैं दोहराना चाहूँगा, क्योंकि अच्छी बातों को जितनी बार दोहराया जाये उतना ही कम है, 'ग्रेट कम्पनीज टू वर्क' एक

इंडिपेंडेंट और जानी मानी वैश्विक संस्था है, जो हर साल विश्व की अग्रणी कम्पनीज के बीच सर्वे करवाती है। सर्वे के कड़े मापदण्ड है, नियम है। इस बार विश्व की टॉप ४० कम्पनीज के बीच सर्वे किया गया था। इस सर्वे में वातावरण, सुविधा, कर्मचारियों की संतुष्टि और समाज में कम्पनी द्वारा दिये गये योगदान का मूल्यांकन करके सर्वश्रेष्ठ कम्पनीज को चुना जाता है, जिन्हें 'वर्ल्ड्स ग्रेट कम्पनीज टू वर्क' का ख़िताब दिया जाता है, अर्थात सारी दुनिया में एक बेहतरीन कार्य करने की जगह। ख़ुशी की बात है कि हमारी कम्पनी को ५ वां स्थान प्राप्त हुआ है और आज हम सब इसी के सेलिब्रेशन के लिये यहाँ एकत्रित हुए है। सो बिग हैंड्स टू क्लैप एवरीवन, चियर्स।" महेश ने अंतिम वाक्य पर जोर दिया, इसी के साथ पूरा हॉल तालियों की गड़गडाहट से गूंज उठा।

महेश ने इशारे से सबको शांत किया, और पुन: माइक की ओर मुखातिब हुआ।

"लेकिन, यहाँ इकट्ठे होने का यही एकमात्र कारण नही है। आपको यह बताते हुए हर्ष हो रहा है की हमारी कम्पनी अब एक नये क्षेत्र में कदम रखने जा रही है। बाहुपति गोल्ड एंड़ माइंस अब 'कन्स्ट्रक्शन' में अपने पाँव ज़माने जा रही है, और कम्पनी की एक नई इकाई आरंभ हो रही है, जो है ''माया कन्स्ट्रक्शन्स एंड़ डेवलपमेंट।" महेश के इतना कहते ही हॉल में स्थित प्रोजेक्टर स्क्रीन पर एक दृश्य उभर आया। वह एक एनिमेटेड़ 'लोगो' था। उस चिन्ह में भव्य इमारतें दर्शाई गयी थी और उन इमारतों के ऊपर और नीचे दो हाथ सुरक्षात्मक मुद्रा में दर्शाए गये थे।

"यह है 'माया कन्स्ट्रक्शन्स एंड़ डेवलपमेंट्स' यानी 'एम.के.डी'। जिसका सपना है एक अत्याधुनिक और सुरक्षित सिटीजनशिप, एक अत्याधुनिक शहर जो दुनिया के हर मापदण्ड से कहीं आगे निकल जाये। चूँकि मुझमे इतनी शक्ति और इतनी एनर्जी नही है कि मैं एक साथ दो दो कम्पनीज को संभाल सकूँ, तो मैं एम.के.डी का नेतृत्व सौंपता हूँ मेरे बेटे और इस कम्पनी के वाइज प्रेजिडेंट 'माया बाहुपति' के कुशल हाथों में।'' महेश के इतना कहते ही तालियों की गड़गडाहट पुन: गूंज उठी और माया अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ। उसमे गजब का आत्मविश्वास दिख रहा था। वह तेज और आत्मविश्वास भरे कदमों से चलते हुए माइक तक आया। महेश उसे मुस्कुराते हुए देख रहा था। उसने माया को गले लगाया और माइक छोड़ दिया। अब माया वहाँ उपस्थित कर्मचारियों से मुखातिब था।

“गुड़ इवनिंग एवरीबडी।” माया के कहते ही पुन: तालियाँ बजी किन्तु माया ने इशारा करके रोकने का निवेदन किया। उसके चेहरे पर मुस्कुराहट थी।

“मैं आप सभी को जानता हूँआपके नाम से और आपके काम से , भी, इसलिये नो नीड़ टू फोर्मेलिटिज ,आप सभी के साथ एज ए टीम काम करनावाकई दिलचस्प होगा , जी हांबिलकुल सही सुना आपने ’’टीम। मैं बॉस बनने में यकीन नहीं रखता ,मैं एक कर्मचारी के नजरिये से कम्पनी को देखना चाहता हूँ, क्योंकि किसी भी कम्पनी को सफल बनाने में और ऊँचा मुकाम दिलाने में किसी बॉस से ज्यादा उसके एम्पलॉयीज की मेहनत और लगन का हाथ होता है , औरमैं मेहनत से जी चुराने में बिल्कुल भी यकीन नहीं रखता।” माया के पहले संवाद ने ही वहाँ उपस्थित सभी का दिल जीत लिया। महेश मंत्रमुग्ध सा माया को देखता रह गया।

“मेरा दखल केवली ऊपरी तौर पर नहीं होगा। मैं जमीनी स्तर पर भी सबसे जुड़ा रहना चाहता हूँ ,मैं इस देश की सिटीजन शिप का अर्थ ही बदल देना चाहता हूँ ,हाँ मैं महत्वाकांक्षी हूँ , बहुत हूँ । लेकिन यह मेरी गलती नहीं है , यह मुझे विरासत में मिली है, औरमैं यह चाहता हूँ कि यह विरासत सिर्फ मुझ तक सीमित न रहे, यह आपमें भी उतना ही होना चाहिये जितना के मुझमे है, क्योंकि बिना महत्वकांक्षा के किसी भी कम्पनी को सफल नहीं बनाया जा सकता। यह जो ‘लोगो’ आप देख रहे है , इसमें एक शहर है, और इस शहर को सुरक्षा प्रदान करतेदो हाथ है। यह लोगो समर्पित है आप सब को ,यह शहर नहीं है। यह एक सपना है। मेरा! डैड़ का! आपका! और इस सपने को सुरक्षा प्रदान करते यह हाथ किसी और के नहीं आप के ही है।”

वहाँ उपस्थित सभी दिलचस्पी से उस जोशीले युवा को सुन रहे थे। उसके शब्दों में एक आकर्षण सा था, एक विचित्र सम्मोहन।

“आप से एक बात शेयर करना चाहता हूँ। कई लोग मेरे नाम को लेकर हैरानी जताते है के ‘माया’ तो पुरुषवाचक नाम नही है। फिर क्या कारण है कि महेश बाहुपति ने अपने बेटे का नाम ‘माया’ रखा? आप में से भी कई लोगो के मन में यह प्रश्न आया ही होगा। चलिये आज अपने नाम का रहस्य भी खोल देता हूँ। मेरी दादी का नाम था माया। मेरे डैड़ आज जिस मुकाम पर है वह केवल और केवल उनकी माँ की वजह से ही है। दादी की मौत के समय मैं पेट में ही था, दादी की इच्छा थी कि वह

अपने पोते की अथवा पोती की शक्ल देखकर ही अंतिम सांस ले। किन्तु मेरे जन्म के एक महीने पहले ही दादी की मृत्यु हो गयी। डैड़ को अफ़सोस इस बात का रहा कि काश वह एक महिना और जीवित रह पाती तो अपनी इच्छा पूरी कर लेती। इसलिये उन्होंने मेरा नाम अपनी माँ के नाम पर 'माया' रखा। इससे वे अपने माँ का अहसान नही चुका सकते, किन्तु इससे उन्हें अहसास रहता है कि आज वो जिस मुकाम पर है, उनकी हर सफलता को मेरे नाम के रूप में उनकी माँ देख रही है।" कुछ पल के लिये माया खामोश हो गया, वह महेश की ओर देख रहा था। महेश भावुक दिख रहा था।

"आप सब सोच रहे होंगे मैं आपको अपनी पारिवारिक कहानी क्यों बता रहा हूँ? इससे आपका क्या संबंध? इससे आपका संबंध है, आपको लगता है एम.के.डी का यह लोगो बस यूंही बना लिया गया? बस एक ग्राफिक डिजाइन बनवा लिया गया कुछ ही मिनटों में? नही! ऐसा नही है, जिस तरह मेरी दादी का योगदान रहा था डैड़ के उत्कर्ष और सफलता में, उसी तरह से आप सभी की मेहनत और साथ है, जो यह संस्थान आज विश्व के टॉप फाइव में है। यह सब आपके कारण ही है, डैड़ चाहते थे कि उनकी माँ उनकी हर सफलता की गवाह बने, इसलिये उन्होंने उनकी मृत्यु के पश्चात भी उनका नाम मेरे रूप में जीवित रखा। यह उनका अपना तरीका था उनका अहसान मानने का, याद रखने का और इस लोगो में जो दो हाथ है सुरक्षात्मक मुद्रा में, वह आप सबका प्रतीक है, क्योंकि आप सभी का एक अमूल्य योगदान है इस संस्थान में। आप सबके बिना यह कतई संभव नही होता। तो हमने इन सुरक्षात्मक हाथों के रूप में आप का प्रतीक रखा है, हमारे हाथ तो आप ही है न।" माया मुस्कुराया और चुप हो गया।

मंत्रमुग्ध से सभी शांत थे। माया के चुप होते ही उन्हें भान हुआ और तालियों की अब तक की सबसे तेज गड़गडाहट हुई जो काफी देर तक चलती रही। इस बार माया और महेश दोनों में से किसी ने भी रुकने का संकेत नही किया।

***

मीटिंग समाप्त हो चुकी थी। अब केवल माया और महेश ही वहाँ उपस्थित थे। महेश ने माया के कंधो पर गर्व से हाथ रख। महेश अपने बेटे का प्रभावशाली वक्तव्य सुनकर गदगद था।

“माया! माई सन। तुममे एक कुशल नेतृत्व के गुण है, जन्मजात है। पहली ही मीटिंग में सबका दिल जीत लिया तुमने।”

‘’डैड़! आपको पता है कि यह कितना जरुरी है। हमारा उद्देश्य बड़ा है, हमारे असल उद्देश्य को यह एम्पलॉयीज नही जानते। वे केवल ‘माया-बाहुपति’ ब्रांड़ को ही जानते है, उसके उद्देश्य को नही। उसके लिये हमें बड़े कैनवास पर काम करने की जरूरत है। अब मैं पूर्णतया तैयार हूँ, हमें जिसकी तलाश है वह जल्दी ही पूरी होगी। यह सब बदलना होगा, आप अच्छे से जानते है इस समाज को और दुनिया को एक बहुत बड़े बदलाव की आवश्यकता है और हर बदलाव बलिदान मांगता है, हर बदलाव की एक कीमत होती है, आज जो तालियाँ बजा रहे थे, कल उन्ही को उसकी कीमत भी चुकानी है।

“हमारे प्रयास रंग ला रहे है। हम काफी करीब पहुंच चुके है। कुछ महत्वपूर्ण सूत्र मिले है, जिससे हम जल्द ही अपने मकसद को अंजाम तक पहुंचाएंगे। हम मंजिल के करीब है। “ महेश के स्वर में दृढ़ता थी।

“और कितना करीब डैड़? साल दर साल हम करीब ही पहुँच रहे है, फिर भी अब तक वह हमारी पहुँच से दूर है। मैं भी आपके साथ ‘ब्लैक मीटिंग्स’ का हिस्सा बनने की इच्छा रखता हूँ।” माया रोषपूर्ण स्वर में बोला।

“अभी समय नहीं आया है माया। धैर्य रखो, पीढ़ियां खप गयी, सदियां बीत गयी, युग बदल गये उसकी खोज में ,किन्तु उसके जितना नजदीक हम पहुंचे है, उतना कोई और अब तक नहीं पहुंचा और मैं नहीं चाहता के जल्दबाजी में फिर वर्षो का इन्तेजार सदियों में बदल जाये।”

माया को पीछे छोड़ महेश मीटिंग रूम के एक्जिट दरवाजे की ओर बढ़ गया। माया केवल महेश को जाते हुए देखता रहा।

“यह मत भूलो माया, यह तुम्हारी ही नियति है और इसे ,तुम्हें ही प्राप्त करना है। लेकिन फिलहाल अपना ध्यान बिजनेस की तरफ रखो। बाकी चीजों के लिये अभी मैं हूँ, बेफिक्र रहो।” इतना कहकर महेश बाहर निकल गया। माया किंकर्तव्यमूढ़ सा खड़ा रहा, माया धीमे कदमों से चलते हुए पारदर्शी दीवार की ओर बढ़ा। वह वहाँ से दिखायी देते सम्पूर्ण शहर को देख रहा था। शाम का धुंधलका बढ़ रहा था ,वातावरण में अँधेरा छा रहा था। माया बेफिक्र बिलकुल भी नही था, वह केवल शांत दिख रहा था। किन्तु यह शांति ज्यादा देर तक नही रहने वाली थी।

***

वर्तमान समय

शिकार

मध्य प्रदेश में कहीं।

वह एक सुनसान सी सड़क थी, जो जंगल के बीचों बीच होते हुए गुजरती थी। उस रास्ते पर आवाजाही काफी कम होती थी। कुछ ही दूरी पर हाइवे था जो मुख्य रास्ता था। यह पुराने जमाने की सड़क थी, जो उपयोग में ना होने के कारण काफी खस्ताहाल हो चुकी थी। अमूमन लोग जंगल वाले रास्ते के बजाय हाइवे पकड़ना ही उचित समझते थे। इसके बावजूद उस उबड़ खाबड़ रास्तें पर एक वैगन दिखायी दे रही थी। वैगन में चार व्यक्ति सवार थे।

“देख कासिम! यार हमें इस रास्ते से नहीं आना चाहिये था। तुझे पता है यहाँ की कितनी सारी कहानियां है।” बिल्लू उस उबड़ खाबड़ और अँधेरे रास्ते से जाने के निर्णय से खासा नाराज था। बिल्लू कसरती शरीर का मालिक था, सिर घुटा हुआ, और दाढ़ी के नाम पर बेतरतीब से जाले। आँखे गांजे के नशे में लाल हुई पड़ी थी।

“बेवकूफ है क्या बे? पुलिस पीछे पड़ी है हमारे, साला देखते ही एनकाउंटर का ऑर्डर दिया है। देखा नहीं, बॉस की लाश कैसे सड़क पर गोलियों से छलनी हुई मिली थी।” कासिम जो ड्राइविंग सीट पर बैठा था, मद्धिम पड़ती हैडलाईट की रौशनी में उस बदहाल सड़क का मुआयना करते हुए बोला। सड़क के बीचों बीच गड्ढे हो रखे थे, जिसमे घास उग आयी थी। कासिम ने एक लम्बा कुर्ता पहना हुआ था। आँखों में सुरमा लगाये हुए, चेहरा क्लीन शेव्ड, वह लगभग ३० साल का युवक था। शरीर से एकदम दुबला पतला, लेकिन कमीनापन उसके मुख से टपकता था।

“नशा कम किया कर बिल्लू। अगर हम हाइवे से जाते तो आगे चेकपोस्ट पर धर लिये जाते। पुलिस ताक में बैठी है हर जगह। इसलिये फिलहाल यही रास्ता सही था। आगे जाकर हम जंगल में पैदल निकल लेंगे क्योंकि आखिर में यह रास्ता भी शहर में ही जा मिलेगा जहाँ चेकपोस्ट है। रास्ते से जाने पर हमें बीस किलोमीटर जाना पड़ेगा और जंगल से शायद दस या पन्द्रह और जंगल में तो कोई खोजने भी न आने वाला।” मुन्ना ने तर्क दिया जिससे सभी सहमत नजर आ रहे थे। मुन्ना पिछली सीट पर राकेश के साथ बैठा था। उनके पास दो एयरबैग्स थे। दोनों ने हाफ स्लीव की टी शर्ट और घिसी हुई काली और नीली जींस

पहन रखी थी। दोनों फ़िल्मी गुंडों की तरह ही हट्टे, कट्टे, मुष्टंडे थे। इन तीनो के बीच राकेश चुप था। उसके चेहरे से साफ़ जाहिर हो रहा था कि वह जंगल से जाने के निर्णय पर खुश नही था। कासिम ने गाडी रोकी। एक झटके से राकेश और मुन्ना अगली सीट से जा टकराए।

“अबे बेवकूफ! कम से कम बता दिया कर, ब्रेक लगाने से पहले।” मुन्ना अपना माथा सहलाते हुए कासिम पर चीखा।

“आगे गड्ढा है, सड़क के बीचो बीच और वह भी इतना बड़ा कि जिसमे पूरी गाडी समा जाये।” कासिम ने हेडलाईट की रौशनी में सही समय पर गड्ढे को देख कर ब्रेक लगाये थे।

“तो अब?” बिल्लू के चेहरे पर हवाईया उड़ने लगी।

“अब नीचे उतरो, अपने बैग्स लटकाओ और जंगल सफारी पर निकल चलो।” मुन्ना ने आदेश दिया। मजबूरन सभी गाडी से बाहर निकले। गाडी से बाहर निकलते ही उन्हें आभास हुआ गाडी के अंदर से जंगल जितना भयावह दिख रहा था, बाहर आते ही जंगल का वातावरण उससे भी अधिक डरावना था। हवा में अजीब ठंड़क थी जो हड्डियों तक महसूस हो रही थी। चारो ने अपने बैग्स कंधो पर टांग लिये।

“देखो, मेरी मानो तो अब भी समय है, हम गाडी घुमा सकते है। पीछे जाकर कोई न कोई छोटा मोटा रास्ता मिल सकता है, या कोई ठिकाना मिल सकता है जहाँ रात गुजार सकते है। लेकिन अभी जंगल से जाना मूर्खता ही होगी।” राकेश ने कहा।

“इस जंगल में कोई जंगली जानवर नहीं रहता।” कासिम ने कहा।

“बात जंगली जानवर की नहीं है! यहाँ ‘उसके’ बारे में सुना जाता है।” बिल्लू के स्वर में भय का पुट था।

“अबे यार! यह सब कुछ नहीं होता! बड़े बूढ़ों के पास टाईमपास के लिये कोई काम नही होता, तो वो लोग ऐसी अफवाहे फैलाते रहते हैं। ऐसी कोई चीज यहाँ है ही नहीं। यह सब बस ड़राने के लिये बनाई हुई कहानियां है। अगर है भी तो अपने पास पिस्तौले है, चाक़ू है। ड़रना तो उसे चाहिये।” कासिम ने अपनी कमर में खोंसा हुआ डेढ़ फुट लंबा कांटेदार चाक़ू निकाल कर लहराते हुए कहा।

“अच्छा अब बहस बंद! कोई रास्ता नही, गाडी छोड़ दो। वैसे भी कौन सी अपनी है। अब जंगल के रास्ते ही सफर तय करना है, चाहे घबरा कर करो, चाहे हंसते खेलते करो लेकिन करना तो है ही।” कहकर मुन्ना आगे बढ़ गया। उसने अपने बैग से एक टॉर्च निकाली और झाडियों के मध्य

रास्ता बनाते हुए जंगल में प्रवेश कर गया। उसके तीनो साथियों ने उसका अनुसरण किया।

***

जंगल के एक हिस्से में कुछ हलचल दिखायी दे रही थी। वहाँ दो कैम्प लगे हुए थे जिसके बीचों बीच एक खुली जगह में अलाव जल रहा था। उस अलाव को घेर कर पत्थरों पर तीन लड़के और २ लड़कियाँ बैठी हुई थी। उन सभी की उम्र बीस से पच्चीस के मध्य ही थी। पहनावे से सभी संपन्न लग रहे थे। एक लड़का जिसके हाथ में गिटार था, वह गिटार पर कोई धुन बजा रहा था जिसे सब तल्लीन होकर सुन रहे थे।

“क्या बात सुनील! तूने तो यार समां ही बाँध दिया।” प्रीती सुनील के इस टैलेंट से प्रभावित थी। सुनील अपनी तारीफ़ सुनकर फूल गया।

“लेकिन यार जंगल में आधी रात को भला कौन गिटार बजाता है? खामखाह जंगली जानवरों और भूत प्रेतों को परेशान कर रहा है।” कमल ने मजाकिया लहजे में कहा।

“कमल! तेरी यही आदत मुझे पसंद नहीं है। एक तो यार तुम लोगो की सनक की वजह से मैं यहाँ आने को मजबूर हुई, ऊपर से इतना मना करने के बाद भी तू भूत, प्रेतों का जिक्र करता है। ये चीजे हो या ना हो लेकिन फिर भी माहौल देखा कर एक बार ड़र लगता ही है।” स्नेहा ने कहा जो उस जंगल के वातावरण से खुद का दिमाग भटकाने का प्रयास कर रही थी, लेकिन कमल की बातें उसे और ड़रा देती।

“क्या यार! स्नेहा ये मत भूल कि हम लोगो के ग्रुप का मोटिव ही एड़वेंचर है। हमने प्लान किया था न कि भारत के मोस्ट हंटेड़ और रहस्यमयी जगहों पर कैम्पिंग करेंगे? जब हम भानगढ़ गये थे तब तो बड़ी स्ट्रांग बन रही थी। अब यहाँ आकर अचानक क्या हो गया?” सुनील स्नेहा में आये परिवर्तन से हैरान सा था।

“देख यार, बाकी जगहों की बातें अलग थी। लेकिन यहाँ आने के बाद से मुझे किसी की प्रेजेंस का अनुभव हो रहा है। मैं फील कर रही हूँ कि शायद कोई हमें देख रहा है। या हम पर नजर रखे हुए है और दूसरी बात ‘उसकी’ कहानियां। तुम्हें पता है कि ‘वह’ आज भी इन जंगलों में कहीं भटकता रहता है। या आई नो यार आई एम् बिहेविंग लाइक फूलिश! हो सकता है यह कहानियां झूठी हो, लेकिन फिर भी मन का एक हिस्सा खुद चाहता है कि यह कहानियां झूठी ही रहे।”

“अब तो यार तू मुझको भी ड़रा रही है।” प्रीती ने कहा, वह अब तक शांत थी लेकिन स्नेहा की बातों ने उसके मन में दबा हुआ ड़र उजागर कर दिया था।

“इसीलिये मैं कैम्पिंग और ट्रेकिंग के लिये लड़कियों को शामिल करने के खिलाफ था। एक तो यार इनके दुनिया भर के नखरे, ऊपर से इनका ड़र, तीसरे पूरे टाइम इन्हें ही संभालते रहो बस। जबकि हम अपनी सुरक्षा का पूरा इंतजाम करके ही आये है, सबके पास नाइफ है। मेरे पास लाइसेंसी पिस्तौल भी है, फिर भी ड़रने का मतलब समझ में नही आता, आई एम् रियली टायर्ड।” धीरज लड़कियों के ऐसे बर्ताव से शुरु से ही तंग आया हुआ था।

“कम ऑन यार! अब तू भी लड़का-लड़की पर ज्ञान देगा? साले मन में लड्डू तो तेरे ही फूटे थे जब दोनों ने ग्रुप ज्वाइन किया था।” सुनील की बात पर सभी की हंसी फूट पड़ी, धीरज खिसियानी हंसी हंसा।

उसी समय प्रीती स्नेहा के कानो में कुछ फुसफुसाई। स्नेहा उठ खड़ी हुई। लड़कों ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उन्हें देखा तो प्रीती ने छोटी ऊँगली का इशारा कर दिया। लड़कों ने नजरंदाज कर दिया और अपने अपने कामों में व्यस्त हो गये। प्रीती स्नेहा के साथ कैम्प के पिछले हिस्से की ओर बढ़ने लगी।

“ओय सुनो! याद है न कैम्प से ज्यादा दूर नही जाना है, ‘कैम्पफायर’ की रौशनी दिखायी दे बस वही तक जाना और कोई भी प्रॉब्लम हो तुरंत आवाज देना।” सुनील ने निर्देश दिये।

“हा अच्छे से याद है! इसके अलावा हमारे पास एक फुट का नाइफ भी है, वो मत भूल।” प्रीती ने अपनी कमर में खोंसा हुआ एक फैंसी नाइफ निकाल कर लहराया, जिसे देखकर सब मुस्कुरा दिये।

***

राकेश आगे बढ़े जा रहा था। मच्छरों ने उन्हें हैरान कर रखा था। झाडियों के बीच से रास्ता बनाते हुए उन्हें किसी जीव जन्तु अथवा सांपो का भी अनजाना भय सता रहा था। लेकिन कासिम के चेहरे पर किसी भी प्रकार के ड़र का निशान ही नहीं दिखायी दे रहा था। बिल्लू पर भय हावी हो रहा था, उसे बेचैनी सी हुई तो अपने जेब से एक बोतल निकाल कर कुछ घूंट मार लिये।

“अबे पी मत। अभी हमें कई किलोमीटर जंगल में पैदल ही चलना है, होश में रह। अगर नशे में धुत्त हो गया तो साले यही छोड़ जायेंगे तुझे।” कासिम ने बिल्लू को हड़काया तो बिल्लू ने चुपचाप बोतल जेब में डाल ली।

तीनों आगे निकल चुके थे केवल बिल्लू पीछे रह गया था। बिल्लू ने अवसर देख फिर से बोतल निकाल ली। अभी वह बोतल मुंह से लगाने ही वाला था कि अचानक उसे अपने पीछे कोई महसूस हुआ। उसकी सांस अटक गयी और बोतल से हाथ से छूट कर जमीन पर जा गिरी। उसने अपनी कनपटी से बहते पसीने को महसूस किया, उसका रोम रोम भय से खड़ा हो गया था। उसे अपने पीछे किसी की मौजूदगी का अहसास हो रहा था। लेकिन हिम्मत न हो रही थी कि पीछे पलट कर देख भी ले। उसने अपने साथियों को आवाज देने के लिये जुबान खोलनी चाही लेकिन उसकी जुबान मानो अकड़ सी गयी थी, हलक से शब्द तक न निकल पा रहा था। वह भय से जड़ होते जा रहा था। उसने एक हल्की सी भयानक गुर्राहट सुनी जो धीरे धीरे उसके करीब आती जा रही थी।

“अबे तू कहा मर गया बे? साथ में रहने को बोला ना तुझे।” मुन्ना ने टॉर्च की रौशनी बिल्लू पर मारी। बिल्लू मानो एक झटके से नींद से जागा हो, अपने साथियों को देखकर उसमे हिम्मत का संचार हुआ और वह पीछे पलटा। लेकिन पीछे घने जंगल और बढ़ी हुई झाड़ियो के अलावा कुछ भी नहीं था। हां झाडियाँ इस तरह दबी और हिल रही थी मानों यहाँ से कोई अभी अभी गुजरा हो।

“अ ...अबे यहाँ कोई था। एकदम मेरे पीछे खड़ा गुर्रा रहा था भाई। कुछ तो था यहाँ।” बिल्लू की हवाइयां उड़ रही थी। उसका सारा नशा एक झटके से उतर चुका था। कासिम उसके पास आया ।

“बोला था ना साले! मत चढा इतनी। अब भुगत! कुछ भी ऊटपटांग दिख रहा तुझे।” कासिम बेहद गुस्से में था।

“तू बीच में रह बिल्लू! पीछे रहेगा तो फिर कुछ न कुछ सोचता रहेगा ड़रपोक।” कहते हुए मुन्ना ने बिल्लू को अपने आगे खड़ा कर दिया और खुद सबसे पीछे हो गया। तीनो फिर आगे बढ़े, कुछ दूर चलने पर उन्हें जंगल में कोई रौशनी सी दिखी। सब के सब ठिठक गये। राकेश ने खामोश रहने और टॉर्च बंद करने का इशारा किया। सभी ने टॉर्च बंद की और झाड़ियो के पीछे छिप कर देखने की कोशिश करने लगे।

“अबे पुलिस जंगल में भी पहुँच गयी क्या?” राकेश फुसफुसाया।

“ये पुलिस नही है! गौर से सुन लड़की की आवाज है।” मुन्ना ने आवाज सुनते हुए कहा।

“लड़की! इस जंगल में? इस समय। भाई वापस चलो, मेरी बात मान लो यह चुड़ैल है पक्का। ऐसे जंगलों में सभी रहते है भाई। निकल लो।” बिल्लू भय के अतिरेक से लगभग कांप रहा था, राकेश ने उसके मुंह पर हाथ रखा।

“अबे वो देख! उधर जहाँ से रौशनी आ रही है। वो शायद कोई अलाव है, दो तीन लोग है वहाँ और कुछ झोपड़े जैसे बने हुए है।” राकेश ने कहा।

“वो कैम्प है शायद! लड़के लड़कियाँ आते है ऐसे कैम्प करने को।” कासिम ने ज्ञान झाड़ा।

“इतने घने जंगल में! भूतिया माहौल में भला क्यों लोग मरने आयेंगे?” मुन्ना उनकी उपस्थिति पर हैरान था।

“अबे एड़वेंचर के शौक़ीन होते है साले! बड़ी चर्बी होती है आजकल के लौंडो में। एड़वेंचर बोल के कहीं भी चले जाते है। वो सब छोडो बे, वो इधर की झाडियों में लड़कियाँ हैं दो। क्या बोलते हो?” राकेश ने लड़कियों को देखकर कहा।

“भाई, देख जंगल है! यहाँ कोई नहीं आने वाला। किसी का ड़र नहीं है। तो फिर क्यों ना हम सफर थोडा मजेदार कर ले?” मुन्ना राकेश का इरादा भांपते हुए बोला। कासिम के होंठो पर भी विकृत मुस्कान थी।

“जो भी करना सावधानी से, कैम्प से दूर ले चलो इन्हें।” कासिम के कहते ही सभी के चेहरों पर वहशियत भरी मुस्कान दौड़ गयी।

***

“स्नेहा ! तुझे नहीं लगता कि हम लोग ज्यादा दूर निकल आये है ?” प्रीती इस जंगल से घबरा रही थी। वे वापस अपने कैम्प की ओर रूख किये हुए थे।

“कम ऑन यार! इतना दूर भी नहीं है। रूल्स के मुताबिक़ हम अभी भी कैम्प फायर को देख पा रहे है।” स्नेहा ने उसे आश्वस्त किया ही था कि उसे अपने पीछे झाडियों में सरसराहट की आवाज आयी। वह घबराकर पीछे मुड़ी ही थी कि कासिम ने अपने हाथों से उसका मुंह दबोच लिया। प्रीती के मुंह से चीख निकलती इससे पहले ही उसका भी मुंह मुन्ना जकड़ चुका था। उनकी चीख हलक में ही घुटी रह गयी। मुन्ना और कासिम के

“ये पुलिस नही है! गौर से सुन लड़की की आवाज है।” मुन्ना ने आवाज सुनते हुए कहा।

“लड़की! इस जंगल में? इस समय। भाई वापस चलो, मेरी बात मान लो यह चुड़ैल है पक्का। ऐसे जंगलों में सभी रहते है भाई। निकल लो।” बिल्लू भय के अतिरेक से लगभग कांप रहा था, राकेश ने उसके मुंह पर हाथ रखा।

“अबे वो देख! उधर जहाँ से रौशनी आ रही है। वो शायद कोई अलाव है, दो तीन लोग है वहाँ और कुछ झोपड़े जैसे बने हुए है।” राकेश ने कहा।

“वो कैम्प है शायद! लड़के लड़कियाँ आते है ऐसे कैम्प करने को।” कासिम ने ज्ञान झाड़ा।

“इतने घने जंगल में! भूतिया माहौल में भला क्यों लोग मरने आयेंगे?” मुन्ना उनकी उपस्थिति पर हैरान था।

“अबे एड़वेंचर के शौक़ीन होते है साले! बड़ी चर्बी होती है आजकल के लौंडो में। एड़वेंचर बोल के कहीं भी चले जाते है। वो सब छोडो बे, वो इधर की झाडियों में लड़कियाँ हैं दो। क्या बोलते हो?” राकेश ने लड़कियों को देखकर कहा।

“भाई, देख जंगल है! यहाँ कोई नहीं आने वाला। किसी का ड़र नहीं है। तो फिर क्यों ना हम सफर थोडा मजेदार कर ले?” मुन्ना राकेश का इरादा भांपते हुए बोला। कासिम के होंठो पर भी विकृत मुस्कान थी।

“जो भी करना सावधानी से, कैम्प से दूर ले चलो इन्हें।” कासिम के कहते ही सभी के चेहरों पर वहशियत भरी मुस्कान दौड़ गयी।

***

“स्नेहा ! तुझे नहीं लगता कि हम लोग ज्यादा दूर निकल आये है ?” प्रीती इस जंगल से घबरा रही थी। वे वापस अपने कैम्प की ओर रूख किये हुए थे।

“कम ऑन यार! इतना दूर भी नहीं है। रूल्स के मुताबिक़ हम अभी भी कैम्प फायर को देख पा रहे है।” स्नेहा ने उसे आश्वस्त किया ही था कि उसे अपने पीछे झाडियों में सरसराहट की आवाज आयी। वह घबराकर पीछे मुड़ी ही थी कि कासिम ने अपने हाथों से उसका मुंह दबोच लिया। प्रीती के मुंह से चीख निकलती इससे पहले ही उसका भी मुंह मुन्ना जकड़ चुका था। उनकी चीख हलक में ही घुटी रह गयी। मुन्ना और कासिम के

पकड़ते ही राकेश और बिल्लू ने दोनों लड़कियों के पैरों को दबोच लिया जो छटपटा रहे थे।

“अबे इन दोनों को कैम्प से दूर ले चलो, बिना किसी आवाज के।” कासिम ने निर्देश दिया, लड़कियाँ भरसक प्रयास कर रही थी लेकिन चारो मुस्टंडो के सामने वे किसी बकरी के समान ही थी। चारों उन्हें उठाते घसीटते कैम्प से विपरीत दिशा की ओर ले जाने लगे। प्रीती और स्नेहा अचानक हुए इस वाकये से सदमे में थी। वे हर संभव प्रयास कर रही थी लेकिन उनकी ताकत के आगे इनके कोई भी प्रयास कारगर साबित नहीं हो रहे थे।

“भाई! हमने आज तक चोरी की, ठगी की, डाका डाला, मर्डर तक किया लेकिन ऐसा कुछ कभी नहीं किया। आज ये भी करने को मिल गया।” मुन्ना के चेहरे पर वहशियत दिखायी दे रही थी।

“और लड़कियाँ भी एकदम हाई क्लास की है! फ़िल्मी हिरोइन्स की तरह। साला सारी जिन्दगी गुजर जायेगी लेकिन ऐसी लड़की अपने को देखने तक को नसीब नही होगी। आज सारी कसर निकाल लेंगे। फिल्मों में देख देख कर अपने अरमान भी हिलोरे मारते थे कि मैं भी किसी को इस तरह दबोच कर रौंद डालू।” बिल्लू हवस के आगे अपने भय को भूल चुका था। उसके मुंह से झाग निकल रहे थे।

कासिम आश्वस्त हुआ कि वे अब कैम्प से काफी दूरी पर आ गये है तो उसने रुकने का इशारा किया।

“जो भी करने का है, यही कर लो।” कासिम ने निर्देश दिया तो सभी रुक गये। सबसे पहले बिल्लू ने स्नेहा की गर्दन पर चाक़ू रखा। चाक़ू इतना कसा हुआ था कि गर्दन से खून निकलने लगा।

“अभी मैं तेरा मुंह खोलने वाला हूँ! अगर चीखी तो गला रेत दूंगा समझी?” उसने चाक़ू का दबाव बढ़ाया तो चाक़ू अंदर धंसने लगा, घबराकर स्नेहा ने सर हिला दिया। जिसके बाद बिल्लू ने आहिस्ता से उसके मुंह से हाथ हटा दिया।

“देखिये ...आ..आप हमें छोड़ दीजिये ...'' स्नेहा ने छूटते ही कुछ कहने के लिये मुंह खोला ही था कि बिल्लू के झन्नाटेदार झापड़ से उसका सर घूम गया और वह झाड़ियों के पास जमीन पर जा गिरी। उसके गिरते ही बिल्लू उस पर झपट पड़ा। प्रीती सन्न रह गयी, वह अभी उनकी जकड़ में ही थी, उसकी कमर से बंधा चाकू चारों ने पहले अपने कब्जे में ले लिया था।

स्नेहा को भय के मारे मानो लकवा सा मार गया था। खौफ की अधिकता से वह जड़ हो गयी थी। बिल्लू ने दोबारा उसका मुंह जकड़ लिया था। उसकी आँखों में वासना के लाल डोरे दिखायी दे रहे थे। कासिम कमर पर हाथ धरे अपनी बारी की प्रतीक्षा में था तो राकेश और मुन्ना प्रीती पर काबू पाने का प्रयास कर रहे थे।

बिल्लू किसी दरिन्दे की भाँति उसके कपड़ों को नोचने के लिये उतावला हुआ जा रहा था कि तभी झाड़ियों में हुई हलचल ने उसका ध्यान खींच लिया। स्नेहा के सर के पास ही स्थित झाड़ियों में तीव्र हलचल सी हुई, और इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता किसी चीज ने बिल्लू को झाड़ियों में खींच लिया। बिल्लू के इस तरह गायब होते ही कासिम की आँखे फ़ैल गयी, मुन्ना और राकेश तो अभी भी समझ ही नही पाये थे कि आखिर हुआ क्या है।

अचानक से झाड़ियो के दूसरे छोर से बिल्लू की एक मर्मान्तक चीख सुनाई दी और किसी गेंद की ही भाँति उसका कटा हुआ क्षत विक्षत सर झाड़ियो से स्नेहा के पास लुढ़कते हुए आ गिरा। स्नेहा अपने चेहरे के सामने बिल्लू का कटा सर देखकर पूरी ताकत से चीखी इसी के साथ बिल्लू का धड़ तीव्रता से उछलते हुए आया और सामने वाले पेड़ से इतनी बुरी तरह से टकराया कि उसकी रीढ़ की हड्डी टूट कर धड़ किसी खिलौने की भाँति बुरी तरह तुड़ मुड़ गया। उसका धड़ अब जमीन पर इस प्रकार गठरी बना पड़ा था मानो उसमे हड्डियां ही ना बची हो। उसके धड़ को इस प्रकार अमानवीय शक्ति से फेंकने वाला अब भी कहीं दिखायी नहीं दे रहा था।

उसका यह हाल देखकर मुन्ना के होशोहवास उड़ गये तो राकेश की रीढ़ में भी सिहरन दौड़ गयी। प्रीती को तो वे भूल ही गये थे। प्रीती और स्नेहा अब बंधन से मुक्त थी। तीनों अब तक सदमे में थे, इसी बीच स्नेहा और प्रीती ने खुद को संभाल लिया और बेतहाशा कैम्प की ओर दौड़ लगा दी। किसी को भी उन लड़कियों को रोकने का होश तक नहीं था।

तीनो के हाथो में अब पिस्तौलें आ चुकी थी।

“क...कासिम! ये क..क्या था बे?” मुन्ना ने थूक निगलते हुए कहा और यहाँ वहाँ पिस्तौल तानने लगा।

“मुझे नहीं पता! श...शायद कोई भालू था।” कासिम जानता था कि कोई भालू इस तरह से क्षण भर में किसी की यह हालत नहीं कर सकता था।

“ये वही है जिसके बारे में बिल्लू बोल रहा था।” राकेश ने बिल्लू के कटे हुए सर को देखा जो बुरी तरह कुचला हुआ था। उसके प्राण सूखे जा रहे थे।

“जो भी था, निकलो यहाँ से तुरंत।” मुन्ना ने कहा, इसी पल उसके पीछे झाड़ियों में हलचल हुई। उस सरसराहट को सुनते ही तीनो ने अपनी गन का मुंह उसी दिशा में खोल दिया। लगातार छह से सात गोलियों के धमाकों से जंगल का वातावरण गूंज सा उठा।

***

“अबे ये गोलियों की आवाज?” सुनील गोलियों की आवाज सुन कर चौंक पड़ा। वही हाल कमल और धीरज का भी हुआ, इस समय जंगल में चलने वाली गोलियां और लड़कियों की अनुपस्थिति उनके लिये चिंता का विषय थी।

“आवाज तो वही से आयी है जहाँ स्नेहा और प्रीती गयी हुई है। लेकिन उनके पास तो गन्स है ही नहीं, फिर?” एक अनजानी आशंका से कमल का हृदय कांप उठा, उसने तुरंत अपना नाइफ थाम लिया। उसकी देखा देखी सुनील ने भी अपना नाइफ निकाल लिया, धीरज भी नाइफ लेकर तैयार था। जिस दिशा में लड़कियाँ गयी हुई थी उस दिशा में कोई हलचल हुई, इससे पहले कि वे कुछ समझ पाते वहाँ स्नेहा और प्रीती बदहवास सी आती दिखायी थी। उनकी हालत खराब थी, स्नेहा के कपड़े फटे हुए थे और वह धूल से सनी हुई थी, उसके होठों से खून बह रहा था। दोनों बदहवास सी दौड़ते हुए तीनों के पास आयी।

“यहाँ से निकलो!” प्रीती चीखी।

“ये क्या हुआ? तुम्हारी यह हालत किसने की?” सुनील ने रोती हुई प्रीती के चेहरे को ऊपर उठाते हुए कहा।

“स्नेहा! तेरे साथ क्या हुआ? यह खून?” कमल के इतना पूछते ही स्नेहा उससे लिपट गयी और बेतहाशा रोने लगी।

“अरे शांत हो जा। बता क्या हुआ?” कमल ने उसके सर पर हाथ फेरते हुए पूछा, हालांकि वह भी घबराया हुआ था। उसका दिल भी काफी तीव्रता से धड़क रहा था।

“यार पहले बैग्स समेटो, निकलो यहाँ से।” प्रीती ने खुद को संयत करते हुए कहा।

“बताओ तो हुआ क्या?”सुनील को जानने की उत्सुकता थी, लेकिन वह उनकी हालत देखकर घबराया हुआ था।

“वो चार लोग थे। क..कोई बदमाश थे, उन्होंने हमारे साथ जबरदस्ती करने की कोशिश की।” प्रीती बोलते बोलते सिसक पड़ी। सुनील ने उसे सहारा दिया।

“फिर तुम यहाँ कैसे?” कमल ने प्रश्न किया, उसकी उंगलियाँ पिस्तौल पर सख्त होती जा रही थी। उसके पास भले ही पिस्तौल थी लेकिन रात के इस वक्त जंगल में चार बदमाशो की उपस्थिति के ख्याल ने उसकी रुह को कंपा दिया था।

“हमें यहाँ से निकलना होगा। वहाँ उन बदमाशों के अलावा भी कुछ है। कुछ बहुत ही भयानक।” इस बार स्नेहा बोली, वह भय से थरथर कांप रही थी।

“उस चीज ने एक बदमाश को मार दिया। उसका सिर काट दिया।” प्रीती ने आगे का वाक्य पूर्ण किया, प्रीती के इस वाक्य ने धमाका सा किया। तीनों के हाथो में हथियार अवश्य थे लेकिन भय उनपर हावी हो चुका था।

“बाकी बातें बाद में। सबसे पहले यहाँ से निकलो, बैग्स उठाओ अपने।” सुनील ने निकलने में ही समझदारी समझी।

“ए! कोई यहाँ से नहीं जायेगा समझा।” कासिम की आवाज गूंजी। लेकिन उसमे आदेश के बजाय भय का पुट था। पांचो ने आवाज की दिशा में देखा तो उन्हें कासिम, मुन्ना और राकेश नजर आये। तीनों के हाथो में पिस्तौल थी, लेकिन उनके चेहरों पर हवाइयाँ उड़ रही थी। तीन हथियार बंद बदमाशो को देखकर सभी की सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी। कमल यह भूल ही गया कि उसके हाथ में भी पिस्तौल है।

“द..देखो हमें यहाँ से जाने दो। हम किसी को कुछ नहीं करने वाले।” कमल ने कांपते हुए कहा। उसके स्वर में लड़खडाहट थी।

“अबे चुप्प! खड़ा रह वहीं पर।” राकेश गरजा तो सबको मानो सांप सूंघ गया।

लेकिन स्नेहा ने बहादुरी दिखाते हुए कमल की पिस्तौल छीन ली, और पलटकर फायर भी कर दिया। चूँकि वह नौसिखिया थी इसलिये उसकी चलाई गोली बेकार गयी। फिर भी तीनो घबराये हुए बदमाशों के क्रोध में घी डालने के लिये यह विफल गोली भी पर्याप्त थी।

“साली! गोली चलाती है।” गुस्से से कांपते हुए राकेश ने अपनी पिस्तौल से स्नेहा को निशाना बनाते हुए ट्रिगर दबाने के उंगलियों को कसा ही था कि उसे दाहिनी ओर से एक गुर्राहट सुनाई दी। इससे पहले

कि वह कुछ समझ पाता कोई चीज अँधेरे में से तीव्रता से उसकी ओर बढ़ी और इससे पहले की कोई उस चीज को देख भी पाता वह चीज राकेश को लेकर झाड़ियों के बीच अदृश्य हो गयी।

“अबे ये क्या चीज थी?” कमल चीख पड़ा।

“बस भागो यहाँ से।” प्रीती चीखी लेकिन तीनों अपनी जगह पर जड़ हो गये थे। उसी समय राकेश की हृदय विदारक चीख गूंजी और कोई चीज अलाव के समीप आ गिरी। वह राकेश के शरीर का कमर से नीचे का हिस्सा था, जिसे उस चीज ने दो टुकडों में बाँट दिया था। धड़ के उस निचले हिस्से के वहाँ गिरते ही मांस के टुकड़े और रक्त के छींटे हवा में बिखर गये। उस दृश्य को देखकर तो मानों तीनो लड़को के पाँव जमीन से जा चिपके। भय की अधिकता इतनी थी कि उनके हलक से शब्द तक न फूट पा रहा था। उन्होंने ऐसा भयानक दृश्य अब तक नही देखा था।

“अबे सामने आ ना।” कासिम ने अंधाधुंध गोलियाँ चलाना आरंभ कर दिया। वह भय से अपना मानसिक संतुलन खोने की कगार पर था। उसकी चलाई गोलियाँ किसी भी क्षण लड़कों को निशाना बना सकती थी।

और उसी पल कासिम की गोलियाँ रुकी। उसका मुंह विकृत होने लगा। उसके मुंह ने खून उगल दिया। मुन्ना उसे हैरत से देखता रहा। कासिम के पैर हवा में उठने लगे जिसे देख सभी की आँखे मानो कटोरियों से बाहर ही निकलने को आतुर होने लगी और इसी के साथ उसके सीने को फाड़कर एक हाथ उसकी छाती से बाहर निकला। वह भयावह चीज कासिम के पीछे ही खड़ी थी जिसका हाथ कासिम के सीने को फाड़कर बाहर की ओर निकल आया था। उसने कासिम के शरीर को हवा में तीन फीट तक उठाया। उसकी गुर्राहट से सारा वातावरण कांप रहा था। लड़कियाँ उस चीज को देखकर बदहवास सी चीखने लगी। कासिम अभी भी जीवित था, वह छटपटा रहा था। मुन्ना ने उस चीज पर गोलियाँ चला दी, उसे परवाह नही थी कि गोलियां कासिम को भी लग रही है। वह चीज सात फीट की थी, अँधेरा होने के कारण वह स्पष्ट दिखायी नहीं दे रही थी। केवल उसका आकार ही अस्पष्ट सा दिखायी दे रहा था। उसकी गुर्राहट से प्रतीत हो रहा था मानों सैकड़ो भेड़िये एक साथ गुर्रा रहे हों। मुन्ना की गोलियों से उसे कोई फर्क नहीं पड़ा और उसने कासिम के सीने में धंसे हाथ को झटके से ऊपर की ओर खींचा। उसका हाथ कासिम की छाती को फाड़ते हुए गर्दन से बाहर निकला, कासिम की पसलियाँ शरीर

से खून के फव्वारे के साथ बाहर निकल गयी। उसका शरीर आधे में ही दो फाड़ हो गया। बड़ा ही भयावह दृश्य था वह। वह आकृति पूर्णतया मांस के लोथड़ो और रक्त से सनी हुई थी। उसने किसी खिलौने की ही तरह कासिम के शरीर को उछाल फेंका, कासिम का शरीर कैम्प से जा टकराया। अब वह आकृति मुन्ना की ओर ही देख रही थी, वह अपने साथियों की भयानक मौत देखकर दहशत में था। उसने गोलियों को बेकार होते देखकर अपनी भयानक मौत की कल्पना कर ली और उसने पिस्तौल अपनी कनपटी पर लगा कर ट्रिगर दबा दिया।

किन्तु गोलियाँ खत्म हो चुकी थी। अब वह उस आकृति को अपनी ओर बढ़ते देखने के अलावा कुछ नही कर सकता था। वह आकृति उसकी ओर बढ़ी। मुन्ना ने आखिरी कोशिश करते हुए चाक़ू निकाला ही था कि वह आकृति उसके समीप पहुँच गयी, उसके विशाल पंजे ने मुन्ना की खोपड़ी को ही जकड़ लिया। मुन्ना का चाक़ू वाला हाथ उठ ही नही पाया। उस आकृति ने अपने पंजो का दबाव इतना बढ़ाया की मुन्ना की खोपड़ी एक धमाके के साथ फट पड़ी और उसका दिमाग खोपड़ी से बाहर आ गया। उसने मुन्ना के निर्जीव शरीर को जमीन पर पटक दिया।

पांचो उस दृश्य को जड़ होकर देख रहे थे। वे अपनी जगह से हिल भी नही पा रहे थे। उस आकृति ने एक नजर उनकी ओर देखा, अँधेरे में वह आकृति अब भी अस्पष्ट थी और जितनी भी दिख रही थी, उसमे भी वह रक्त और मांस से लिथड़ी हुई थी। लड़के समझ गये थे कि अब शायद उनकी बारी है। स्नेहा के हाथों से पिस्तौल जमीन पर गिर पड़ी। वही हाल बाकियों का भी था। सभी के पास चाक़ू थे लेकिन मानो हाथों में शक्ति ही नही रही थी।

उन्हें मृत्यु अपने समक्ष दिखायी दे रही थी। उस आकृति ने उन्हें कुछ क्षण तक देखा और आश्चर्यजनक रुप से वह पुन: जंगल के अँधेरे में ही कूद पड़ी और नजरो से ओझल हो गयी।

“क..क्या वह चला गया?” सुनील के कंठ से बड़ी मुश्किल से यही शब्द निकले।

“शायद फिर आये।” कमल ने आशंका जतायी, उसने एक गहरी सांस ली, दिल अब भी बेतहाशा धड़क रहा था।

“निकलो यहाँ से। यहाँ एक पल भी रुकना सुरक्षित नहीं है।” धीरज ने कहा जो काफी देर से चुप था। वह उस अजीब से जीव को देखकर हतप्रभ था।

***

माया की तलाश

"जैसा कि आप देख रहे है। हाइवे से सटे हुए जंगल से चार वांटेड़ मुजरिमों के वीभत्स शव बरामद हुए है। पुलिस को घटनास्थल पर पांच नौजवान अर्धबेहोशी की अवस्था में मिले है। जिनमे तीन लड़के और दो लड़कियाँ है। ये सभी एक एडवेंचर ग्रुप के सदस्य है, जो कैम्पिंग के लिये गये हुए थे। चारो वांटेड़ मुजरिमों ने पुलिस से बचने के लिये जंगल का रास्ता चुना था जहाँ इनकी मुठभेड़ इन लड़कों से हो गयी। लड़कों के बयान के अनुसार जंगल में किसी जीव के आक्रमण में सभी बदमाश मारे गये। इस मामले में पुलिस का कहना है कि वो शायद कोई भालू रहा होगा, जिसे ड़र की अधिकता के कारण लड़के कुछ और समझ बैठे। मामले की तफ्तीश जारी है, लेकिन बदमाशो के क्षत विक्षत शवों को देखकर यह अंदाजा लगाया जा रहा है, भालू या जो भी कोई जीव था वह शायद बहुत ही शक्तिशाली था। जहाँ चारो बदमाशों की मौत पर पुलिस महकमा चैन की सांस ले रहा है, वही प्रश्न उठता है ऐसे भयानक जंगलो में नौजवानों को रात्रिट्रेकिंग और कैम्पिंग की अनुमति कैसे मिल जाती है और नौजवान भी चंद क्षणों के एडवेंचर के चक्कर में आकर बिना कुछ सोचे समझे जोखिम क्यों उठा लेते है? वैसे भी यहाँ के लोकल्स के अनुसार इस जंगल को लेकर काफी कहानियां और अफवाहें भी है, जिसे प्रशासन सिरे से नकार रहा है। खैर मामला चाहे जो भी हो असल कहानी छानबीन के बाद ही पता चलेगी किन्तु रिपोर्ट में जंगली जानवर का हमला बताकर केस सुलझाने की जल्दबाजी ज्यादा दिखायी दे रही है। मैं 'सन मीडिया' से 'मिथिलेश' कैमरामैन 'शुभानंद' के साथ।"

टीवी पर दोपहर की खबरों में रिपोर्टर विश्लेषण कर रहा था। उस खबर को देखकर माया मुस्कुरा रहा था। उसके चेहरे पर एक विजेता की मुस्कान थी। वह अपनी चेयर से उठा, और सेलफोन से कोई नम्बर डायल किया।

"फ्रैंक! एम.पी. हाइवे पर हुई दुर्घटना से संबंधित घटना के सारे न्यूज चैनलों के विश्लेष्ण और अखबारों की रिपोर्ट्स की डिटेल्ड एनालिसिस रिपोर्ट मुझे शाम तक चाहिये।" माया ने फ्रैंक को संक्षिप्त शब्दों में आदेश देकर बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये फोन काट दिया।

अब वह पुन: अपनी रिवाल्विंग चेयर पर बैठा हुआ था। उसने अपने आप को ढीला छोड़ दिया और आँखे मूँद ली।

“मेरी तलाश खत्म हुई। मुझे यकीन था मैं तुम तक पहुँच जाऊँगा।” माया स्वयं से बड़बडा रहा था।

***

माया फ्रैंक के साथ अपने केबिन मे था।

“फ्रैंक! तुम्हें पता ही होगा के मैंने तुम्हें यहाँ क्यों बुलाया है।” माया अपनी रिवाल्विंग चेयर से उठ खड़ा हुआ। उसके उठते ही फ्रैंक भी अपनी कुर्सी से उठने लगा, लेकिन माया ने उसे बैठे रहने का संकेत किया। उसने टेबल से रिमोट उठा कर कमरे की लाइट बंद कर दी और इसी के साथ प्रोजेक्टर शुरू हो गया। प्रोजेक्शन स्क्रीन पर कुछ तस्वीरें स्लाइड़ होने लगी।

“जी! मैं जानता हूँ। माइकल मारा गया है।” फ्रैंक ने सपाट स्वर में कहा।

“तुम्हें क्या लगता है? माइकल कैसे मारा गया?” माया ने प्रोजेक्शन स्क्रीन पर माइकल के क्लब के जले हुए हिस्सों की तस्वीरों को देखते हुए प्रश्न पूछा।

‘’मीडिया के अनुसार माइकल किसी अवैध धंधे में लिप्त था। इसी के चलते कुछ गुटों से उसकी अनबन थी, कल उसका क्लब ऐसी ही किसी गैंगवार का निशाना बना।” फ्रैंक ने कहा, लेकिन उसके शब्दों में आत्मविश्वास की कमी स्पष्ट थी।

“फ्रैंक यह तुम भी जानते हो कि यह कोई गैंगवार नही है। यह एक सोची समझी हत्या है। यह जिसने भी किया है उसने केवल माइकल को ही नही मारा है, बल्कि उसने उस अंड़रग्राउंड़ अरेना में मौजूद हर शख्स को बुरी तरह मारा है। यह गैंगवार नही है, यह युद्ध का आरंभ है।” माया स्क्रीन की स्लाइड़ शो देख रहा था। जले हुए कमरे, जले हुए शव। हर ओर लाशें ही लाशें। फ्रैंक के मुख पर उन चित्रों को देखकर कठोरता उत्पन्न हो रही थी।

‘’और कल ही रात किसी ने मटुक की भी हत्या कर दी है।” माया ने स्क्रीन पर मटुक का शव दिखाया। खोपड़ी में लगी गोली के कारण उसका शव बुरी तरह क्षत विक्षत था। फ्रैंक हैरानी से उसे देखता रह गया। उसका मुंह खुला का खुला रह गया।

“माइकल हमारे साथ ‘बनारस मिशन’ में था। मटुक भी इसका हिस्सा था। कुछ समझ में आया? यह चरणबद्ध तरीके से हुई हत्यायें है। हमने जो बीज बोया था, यह उसी का फल है। मटुक के घर की हालत देखो।”

माया ने स्लाइड़ चलाई, अब वहाँ मटुक के कमरे के दृश्य दिखायी दे रहे थे। मजबूत फर्नीचर के टुकड़े, छत से उखड़ा हुआ प्लास्टर, फर्श में दरारें। फ्रैंक आँखे गोल किये देखने लगा।

“तुम जानते हो के मटुक कोई साधारण इंसान नही था। उसे काबू करने के लिये तुम्हारी पूरी टुकड़ी कम पड़ गयी थी। उसके अपार्टमेंट में मौजूद सीसीटीवी फुटेज में एक कोट पहने हुआ व्यक्ति दिखायी दिया है, जो मटुक के फ्लोर पर आखिरी बार देखा गया था।” कहते हुए माया ने अगली स्लाइड़ चलाई। उस स्लाइड़ में अपार्टमेंट की गैलरी में बाली खड़ा दिखायी दे रहा था। उसका चेहरा हैट और कॉलर से ढंका हुआ था। माया ने अगली स्लाइड़ चलाई, अब उसमे माइकल के क्लब के पिछले हिस्से की तस्वीर दिखायी दे रही थी।

“यह माइकल के क्लब का पिछला हिस्सा है, केवल रिजर्व्ड और ख़ास लोगो के लिये। यहाँ भी आखरी शख्स एक ट्रेंच कोट धारी ही था। उसने हैट पहन रखी थी। क्लब के भीतर की सारी फुटेज सिस्टम्स के भस्म हो जाने के कारण नष्ट हो चुकी है। लेकिन कल मैंने माइकल को एक कॉल किया था। उस दौरान वह अपने क्लब में ही था, और किसी नये योद्धा का जिक्र कर रहा था, जिसने हाउंड को किसी चींटी की तरह मसल दिया था। उसने अरेना में लगी डिस्प्ले का एक क्लोज अप शॉट मुझे भेजा था। उसे देखो।” माया ने अगली स्लाइड़ चलाई। अब स्क्रीन पर वह बलिष्ठ युवक खड़ा दिखायी दे रहा था। उसका चेहरा उसी अजीब त्रिपुंड बने मास्क से छुपा हुआ था। उसे देख कर फ्रैंक उठ खड़ा हुआ।

“मैंने ऐसा नकाब बनारस मिशन में देखा था।” फ्रैंक ने कहा, उसके स्वर में आश्चर्य था। माया मुस्कुराते हुए पलटा।

“तुम ना भी बताते फिर भी मुझे पता था कि यह कोई एक ही आदमी है, जिसने माइकल और मटुक को मारा, और उसका संबंध बनारस ‘इंसिडेंट’ से जरुर है। माइकल और तुमने वहाँ की पर्याप्त सफाई नही की फ्रैंक। कुछ हिस्सा छूट गया था तुमसे और यह आदमी वही छूटा हुआ हिस्सा है।” माया के चेहरे पर क्रोध के बजाय एक रहस्यमय मुस्कान तैर रही थी। यह फ्रैंक की उम्मीद के विपरीत था, वह माया की मुस्कान से असमंजस में था।

“मुझे पता था! यह दिन जरुर आयेगा। मुझे उसकी बेसब्री से प्रतीक्षा है फ्रैंक। मैं जानता हूँ यह वही है।” माया कह रहा था और फ्रैंक आश्चर्य से सुन रहा था।

“क्या आप उसे जानते है?” फ्रैंक हैरान था।

“युगों से।” माया ने इतना ही कहा।

‘’य..युगों से?” फ्रैंक की उलझन बढ़ गयी।

“तुम नही समझोगे फ्रैंक। समझ जाओगे जल्द ही। बस इतना समझ लो कि इसका अस्तित्व ही मेरे अस्तित्व का उद्देश्य है। यह है इसलिये मैं हूं। मेरा जन्म इसी के लिये हुआ है, और इसका जन्म मेरे ही हाथों से मरने के लिये हुआ है। यही नियति है, इस बार अवसर मुझे दिया गया है।” माया बोलता चला गया, फ्रैंक की समझ में कुछ भी नही आया, लेकिन उसने टोकना उचित नही समझा। वह जानता था माया संतुलित और बेहद कुशाग्र बुद्धि का व्यक्ति है, उसका कोई भी शब्द व्यर्थ नही हो सकता। हर शब्द के पीछे कोई न कोई गूढ़ अर्थ अवश्य होता था।

माया ने प्रोजेक्टर बंद कर दिया। लाइट्स ऑन कर दी और अपनी चेयर पर बैठ गया।

फ्रैंक ने भी अपना स्थान ग्रहण किया। वह अब भी उलझा हुआ था, माया उसके मनोभाव समझ रहा था। लेकिन उसे यह भी पता था कि वह चाहे तो भी उसे वह समझा नही सकता था, जो उसके मन में चल रहा था।

“अच्छा वह सब छोडो! एक और खबर सुनो। हमें वह मिल गया है, जिसके जरिये हम अपने मकसद को कामयाबी की ओर ले जा सकते है।” माया सीधे फ्रैंक की ओर देख रहा था।

“क्या सच?” फ्रैंक के चेहरे पर अविश्वास के भाव थे।

“फ्रैंक! मैं देख रहा हूँ डैड़ के जाने के बाद से तुम काफी बदल गये हो। तुम्हें अब भी इस थ्योरी पर अविश्वास है? तुम खुद एक रिफ़ॉर्मर हो, इसके बावजूद तुम्हें इस थ्योरी पर विश्वास क्यों नही था?” माया ने शांत स्वर में पूछा।

“ऐसा नही है। मुझे विश्वास है, लेकिन मुझे लगा नही था कि किवदंतियों में वर्णित ‘उसे’ खोजना इतना आसान होगा। इसलिये विश्वास नही हो रहा।” फ्रैंक ने कहा, अब वह शांत हो चुका था। उसने मूर्खता वाले भाव चेहरे पर से हटा दिये।

“उसे खोजना कभी मुश्किल नही था। बस उसका समय नही आया था, उसकी खोज हमें असल वस्तु के मिलने के बाद ही करनी थी। अब वह मिल चुका है, लेकिन अब भी उससे बात करने के लिये हमें नाको चने चबाने पड़ जायेंगे। यदि उसका मन होगा तभी वह हमारे सामने आयेगा,

“क्या आप उसे जानते है?” फ्रैंक हैरान था।

“युगों से।” माया ने इतना ही कहा।

‘’य..युगों से?” फ्रैंक की उलझन बढ़ गयी।

“तुम नही समझोगे फ्रैंक। समझ जाओगे जल्द ही। बस इतना समझ लो कि इसका अस्तित्व ही मेरे अस्तित्व का उद्देश्य है। यह है इसलिये मैं हूं। मेरा जन्म इसी के लिये हुआ है, और इसका जन्म मेरे ही हाथों से मरने के लिये हुआ है। यही नियति है, इस बार अवसर मुझे दिया गया है।” माया बोलता चला गया, फ्रैंक की समझ में कुछ भी नही आया, लेकिन उसने टोकना उचित नही समझा। वह जानता था माया संतुलित और बेहद कुशाग्र बुद्धि का व्यक्ति है, उसका कोई भी शब्द व्यर्थ नही हो सकता। हर शब्द के पीछे कोई न कोई गूढ़ अर्थ अवश्य होता था।

माया ने प्रोजेक्टर बंद कर दिया। लाइट्स ऑन कर दी और अपनी चेयर पर बैठ गया।

फ्रैंक ने भी अपना स्थान ग्रहण किया। वह अब भी उलझा हुआ था, माया उसके मनोभाव समझ रहा था। लेकिन उसे यह भी पता था कि वह चाहे तो भी उसे वह समझा नही सकता था, जो उसके मन में चल रहा था।

“अच्छा वह सब छोडो! एक और खबर सुनो। हमें वह मिल गया है, जिसके जरिये हम अपने मकसद को कामयाबी की ओर ले जा सकते है।” माया सीधे फ्रैंक की ओर देख रहा था।

“क्या सच?” फ्रैंक के चेहरे पर अविश्वास के भाव थे।

“फ्रैंक! मैं देख रहा हूँ डैड़ के जाने के बाद से तुम काफी बदल गये हो। तुम्हें अब भी इस थ्योरी पर अविश्वास है? तुम खुद एक रिफ़ॉर्मर हो, इसके बावजूद तुम्हें इस थ्योरी पर विश्वास क्यों नही था?” माया ने शांत स्वर में पूछा।

“ऐसा नही है। मुझे विश्वास है, लेकिन मुझे लगा नही था कि किवदंतियों में वर्णित ‘उसे’ खोजना इतना आसान होगा। इसलिये विश्वास नही हो रहा।” फ्रैंक ने कहा, अब वह शांत हो चुका था। उसने मूर्खता वाले भाव चेहरे पर से हटा दिये।

“उसे खोजना कभी मुश्किल नही था। बस उसका समय नही आया था, उसकी खोज हमें असल वस्तु के मिलने के बाद ही करनी थी। अब वह मिल चुका है, लेकिन अब भी उससे बात करने के लिये हमें नाको चने चबाने पड़ जायेंगे। यदि उसका मन होगा तभी वह हमारे सामने आयेगा,

नही तो हमारा हश्र भी वही होगा जो कल रात उन बदमाशों का हुआ उन जंगलो में। टीम तैयार करो, इस बार मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।” माया ने निर्णय सुना दिया।

फ्रैंक ने सर हिला कर हामी भर दी और वह कमरे के बाहर निकल गया।

“माया सर खुद किसी मिशन पर साथ चलने के लिये तैयार है, इसका मतलब है उससे निपटना वाकई बहुत मुश्किल है। उसके बारे में कही गयी बातें अगर सच है तो पता नही उससे सामना होने के बाद क्या होगा और सर माइकल और मटुक की मौत के बाद भी परेशान होने के बजाय मुस्कुरा रहे है। आखिर क्या वजह हो सकती है? वो दुश्मन से मिलने के लिये इतने उत्साहित क्यों है कि उसके द्वारा किये नुकसान को सिरे से नजरंदाज कर रहे है?” फ्रैंक उधेड़बुन में था, लेकिन उसे पता था समय आने पर माया खुद ब खुद उत्तर भी दे देगा।

***

शाम अपनी पूरी रंगत पर थी। त्रिपुंड धारी उर्फ़ बाली इस वक्त पुन: सड़क पर था। इस समय भी वह अपने उसी पहनावे में था। सर पर हैट और एक ट्रेंच कोट।

‘’मटुक ने खुद को समाप्त कर लिया। उसे लगता है शायद यह उसके पापों की सजा है, किन्तु वह अच्छे से जानता है कि पाप का बोझ शरीर नही अंतरात्मा ढोती है, शरीर को सजा देकर आत्मा के पाप नही धोये जा सकते। मनुष्य एक कायर प्राणी है, वह सोचता है कि मर कर वह सभी पापों से मुक्ति पा लेगा। लेकिन ऐसा सोचकर वह स्वयं को अँधेरे में रखता है।” बाली स्वयं से बड़बडा रहा था।

वह उस इमारत के सामने आकर रुका। वह एक क्लब था, वही क्लब जिसका उल्लेख माइकल ने मरने के पहले किया था। ‘रेड मून’। बाली क्लब के भीतर प्रवेश कर गया। क्लब के भीतर हल्की रौशनी थी। क्लब में लाल प्रकाश फैला हुआ था, जो वातावरण को तनाव पूर्ण बनाता सा प्रतीत हो रहा था। क्लब में जगह जगह आलीशान कुर्सियां, मेज और सोफे करीने से सजाये हुए थे। क्लब की कोई भी कुर्सी इस समय खाली नही थी। सर्दियों की शाम और शनिवार होने के कारण आज भीड़ रोज के मुकाबले दुगुनी थी। हर ओर शराब परोसी जा रही थी। जिन्हें सीट नही मिली थी वे भी कतार में थे। बाली ने उन्हें देख कर वितृष्णा से मुंह फेर लिया। क्लब का हर कोना हल्के अँधेरे से व्याप्त था। वहाँ की रौशनी

में किसी की सूरत को पहचान पाना संभव नही था। लोग शराब पी रहे थे, झूम रहे थे। अँधेरे कोनों में क्या युवा क्या अधेड़ क्या बूढ़े, हर उम्र के व्यक्ति महिलाओं के साथ अभद्र और अश्लील क्रिया कलापों में व्यस्त थे, वहाँ उपस्थित किसी को भी इस बेशर्मी से कोई आपत्ति नही थी, सब अपने में मस्त थे। सबका उद्देश्य आखिर वही था। बाली की आँखे अँधेरे में किसी शिकारी की भाँति ही कुशलता से देख सकती थी। वह समाज के खोखले आदर्शो को ध्वस्त होते देख रहा था। उसका मन घृणा से भर गया।

“अँधेरा! इन अंधेरो में इंसान अपने उस पहलू को छिपाता है, जो यदि समाज के सामने आ जाये तो वह इंसान कहलाने के काबिल नहीं रहेगा, इंसान सिर्फ कहने को इंसान है, वास्तविकता यह है कि वह जानवर से भी बदतर है और दिन प्रतिदिन वह और भी बदतर होते जा रहा है। समाज की यही घिनौनी सच्चाई है, जिसे वह इन अंधेरो में छुपाते आ रहा है, लेकिन कभी तो यह सामने आयेगी, और जिस दिन समाज अपनी सड़न को महसूस करेगा, उस दिन खुद वह उसकी सड़ांध सहन नहीं कर पायेगा। नाली में रेंगने और बजबजाने वाले कीड़ों की तरह ही है ये सब।”

बाली क्लब के दूसरे हिस्से की ओर बढ़ा, उस हिस्से में हॉल के बीचों बीच एक स्टेज बना हुआ था। वहाँ भी सीट्स भरी हुई थी। बाली चुपचाप कोने में स्थित बार की ओर बढ़ गया। वहाँ पहुंचकर वह काउंटर पर हाथ रख कर सीट पर बैठ गया।

“यस सर!” बार टेंडर ने बाली को देखते हुए ऑर्डर के लिये इशारा किया। बाली ने उसे चुप रहने का संकेत किया, उसने बाली को अजीब नजरों से देखा और काउंटर पर बैठे दूसरे कस्टमर्स की ओर बढ़ गया और शराब के पैग बनाने लगा।

अचानक से स्टेज पर एक स्पॉट लाईट जल उठी। उस प्रकाश के भीतर एक युवती बैठी दिखायी दी। उसके हाथों में माइक था। बाली उस युवती की ओर देख रहा था। वह उस क्लब की सिंगर थी। क्लब के इस हिस्से में लोग झूठे सुकून की तलाश में आते थे। वह एक निहायत ही खूबसूरत युवती थी। लाल और महरून रंग के मिश्रण से बनी हुई रंगत की सुर्ख ड्रेस में उसका गोरा रंग मानो किसी सूर्य सा दमक रहा था। होठों पर सुर्ख गाढे महरून रंग की चमकदार लिपस्टिक उभर कर दिखायी दे रही थी। वहाँ उपस्थित न जाने कितनों के हृदय उसे देख कर और उसकी मुस्कान से ही घायल हो गये थे।

उसने अपने मधुर स्वर में गाना आरंभ किया। स्टेज के नेपथ्य में मौजूद ऑर्केस्ट्रा ने गाने के हिसाब से संगीत देना आरंभ कर दिया। उस युवती की आवाज में वाकई एक जादू था। वहाँ उपस्थित हर व्यक्ति मंत्रमुग्ध सा उसे सुनते जा रहा था। बाली की दृष्टि भी केवल उस सिंगर पर ही स्थित थी। बार टेंडर पुन: बाली की ओर बढ़ा।

“एक्सक्यूज मी सर।” उसने ऑर्डर के लिये पूछा तो बाली ने जेब से एक पांच सौ का नोट उसकी ओर बढ़ा दिया।

“अब खामोश रहो बस।” बाली की भारी आवाज सुनकर और पैसों को देखकर बार टेंडर चुप हो गया। कुछ देर बाद लड़की का शो समाप्त हो चुका था। शो समाप्त होते ही उसके चेहरे के भाव बदल गये, अब तक मुस्कुराती और निश्चिंत नजर आती लड़की अचानक से तनावग्रस्त दिखायी देने लगी। उसके मुख-मंड़ल पर उदासी छा गयी। बाली उसके बदलते भावों का निरीक्षण कर रहा था। वह स्टेज से उतर कर बाली की ओर ही बढ़ी। उसके शो के समाप्त होने के बाद किसी को उससे कोई मतलब नही रहा। वहाँ उपस्थित हर व्यक्ति अब अपने शराब और शबाब का लुत्फ़ उठा रहा था, उन्हें इससे कोई मतलब नही था के आसपास कौन क्या कर रहा है। लड़की काउंटर पर आकर एक सीट पर बैठ गयी जो बाली से दो सीट की दूरी पर थी।

“हे ऋचा! व्हाट्सअप। आज मूड़ खराब लग रहा है तेरा।” बार-टेंडर ने सिंगर को देखते हुए कहा।

“कुछ नही यार अमित! तू बस शॉट्स बना।”ऋचा ने उसे ऑर्डर देते हुये कहा तो बार-टेंडर मुस्कुराते हुए पैग बनाने लगा। ऋचा ने एक के बाद एक सात पैग मार लिये।

“हे! कम ऑन यार, बस कर अब। झेल नही पायेगी, अब और नही बनाने वाला मैं।” अमित ने ऋचा को समझाने के अंदाज में कहा। बाली खामोशी से उसे देख रहा था। ऋचा ने बाली की नजरो को महसूस किया और उसकी ओर देख कर भंवे मटकाते हुए प्रश्नवाचक इशारा किया। बाली केवल मुस्कुराकर रह गया।

“अरे मैड़म जी! यहाँ हो आप। आजकल हमें तो भूल ही गयी हो।” एक खुरदुरी सी आवाज ने बाली का ध्यान अपनी ओर खींचा। ऋचा ने स्वर की दिशा में देखा। वे पांच थे। सभी के सभी मुस्टंडे थे।

“आ गये कमीने! फिर मेरी जान खाने। न जाने कब मरेंगे।” वह बुदबुदाई, उसके शब्द बाली ने सुन लिये थे। पांचो व्यक्ति ऋचा के इर्द

गिर्द घेरा बनाकर खड़े हो गये। उनमे से एक ब्राउन लेदर जैकेट पहना व्यक्ति ऋचा की बगल वाली सीट पर ही बैठ गया। उसके चेहरे पर एक कुटिल मुस्कान थी। वह चेहरे से ही महा कुटिल प्रतीत हो रहा था। वह ऋचा को देख कर मुस्कुराया। ऋचा उसकी मुस्कुराहट देख कर कुढ़ गयी। बाकी चारो भी हंसने लगे।

"देखिये! आप इन्हें यहाँ तंग नही कर सकते?" अमित ने अटकते हुए कहा।

"चल रे सिंकड़ी! तू केवल पैग बना समझा? बीच में नई आना। वरना शराब के साथ चखने में तुझको ही चबा जायेंगे, समझा?" लेदर जैकेट वाले ने अमित का कॉलर पकड़ लिया।

"समझा क्या?" जैकेट वाले ने गुर्राकर पूछा। अमित ने बेबसी से हामी में सर हिला दिया।

" वसीम! उसको छोड़ दे।"ऋचा कसमसाई, लेदर जैकेट वाले वसीम ने एक नजर उसे देखा और कुत्सित ढंग से मुस्कुराते हुए अमित की कॉलर से पकड़ ढीली कर दी।

"चल फटाफट बिना सोडे का पांच नीट बना, समझा।" जैकेट वाले ने उसे काउंटर के पीछे की ओर धकेल दिया। वह लड़खडा गया।

"आपके कहने पर छोड़ दिया मैड़म जी। हम यहाँ आपको ले जाने आये है।" वसीम ने अमित का दिया हुआ पैग हलक में उतारते हुए कहा। बाकी चारों ने भी भूखे भेडियों की तरह एक ही झटके में पैग खाली कर दिया।

"द..देखो! प्लीज मेरी बात समझो। अभी मुझे थोडा समय और लगेगा। अभी तो सेट होने लगी हूँ।" ऋचा लगभग गिड़गिडा उठी।

"अरे बात को समझो मैड़म। मै कुछ नही कर सकता, अपनी हमदर्दी है तुम्हारे साथ। लेकिन क्या है ना शेषन भाई नही मानने वाला। कितने महीने हो गये, एक महीने में पैसे लौटाने की बात हुई थी। वो तो भाई आपके कॉलेज टाइम का फ्रेंड़ था, इसलिये इतना दिन बर्दाश्त कर लिया, नही तो आप जानती नही हो शेषन भाई अपना पैसा कभी इतने दिनों तक रोक कर नही रख सकता। तो अभी समझने समझाने का टाइम गया, अभी बस अपने साथ इज्जत से चलने का।" वसीम के चेहरे के भाव से ही साफ़ झलकता था कि वह हमदर्दी शब्द केवल व्यंग्य के लिये प्रयोग कर रहा था। ऋचा घबरा गयी। वह समझ गयी थे कि ये मानने वाले नही है।

“मैं कोशिश कर रही हूँ ना, दस दिन बाद मेरे पेमेंट का चेक आ जायेगा, तब मैं चुका दूंगी।” वह रुवांसी हो गयी।

“आपकी पेमेंट एक लाख रूपये थोड़े ही है मैड़म।” वसीम ने इतना कहकर ठहाका लगाया। उसके ठहाका लगाते ही चारो साथी भी हंसने लगे। ऋचा की आँखों से आंसू बहने लगे।

“अभी शेषन भाई के पास चलो। अपन खुद बात करेगा उससे। लेकिन अभी ऑर्डर फ़ॉलो करने का है अपने को बस।” इतना कहकर वसीम ऋचा का हाथ पकड़कर खड़ा हो गया।

“छोड़ो मुझे।” ऋचा अकस्मात चीख उठी। उसकी चीख सुनकर क्लब में उपस्थित सभी ने काउंटर की ओर देखा।

“क्या? हां क्या देख रहे हो? चुप चाप पैग गटको, और आइटम के साथ टचिंग वचिंग में बीजी रहो समझा?” वसीम ने सबको अपनी ओर देखता पाकर हड़का दिया। इतने लोगो में से किसी की पुन: हिम्मत नही हुई काउंटर की ओर देखने की। वसीम ने एक झटके से ऋचा की कलाई को खींचा, वह अपनी सीट से खींचती हुई वसीम की जकड़ में आ गयी। उसका हाथ दर्द करने लगा था, वसीम ने पूरी शक्ति से उसकी कलाई दबोच रखी थी। अपमान और दर्द से वह रो पड़ी।

“लड़की का हाथ छोड़ दो।” बाली के मुख से गुर्राहट निकली। वसीम ने उसकी ओर देखा। उसने ऋचा की कलाई दूसरे साथी को पकड़ा दी, और अपनी कमर में खोंसी हुई पिस्तौल लेकर बाली की ओर बढ़ा।

“ओवरकोट और हैट पहन कर खुद को नागराज समझ रहा है क्या? ये देख रहा है ना, एक ट्रिगर दबाया ना तो भेजा टोपी फोड़ कर बाहर आ गिरेंगा, समझा?” वसीम ने पिस्तौल को बाली के माथे पर टिकाते हुए कहा।

“मैंने कहा ना, लड़की को छोड़ दे।” कहते हुए बाली फुर्ती से अपनी सीट से उठा, उसने वसीम की पिस्तौल थामी हुई कलाई को एक झटके में मरोड़ दी। वसीम दर्द से दोहरा होकर चीखने के लिये मुंह खोलने ही वाला था कि बाली ने उसकी खोपड़ी काउंटर पर दे मारी, इसके साथ ही वहाँ रखी शराब की बोतल भी उठा कर उसके सर पर पटक दी। शराब की बोतल चकनाचूर हुई ही साथ में वसीम की खोपड़ी भी बुरी तरह फट गयी। बाली ने उसे फर्श पर किसी बोरी की तरह फेंक दिया। यह सब केवल कुछ ही क्षणों में हो गया था, खुद वसीम को भी पता नहीं चला कि

“मैं कोशिश कर रही हूँ ना, दस दिन बाद मेरे पेमेंट का चेक आ जायेगा, तब मैं चुका दूंगी।” वह रुवांसी हो गयी।

“आपकी पेमेंट एक लाख रूपये थोड़े ही है मैड़म।” वसीम ने इतना कहकर ठहाका लगाया। उसके ठहाका लगाते ही चारो साथी भी हंसने लगे। ऋचा की आँखों से आंसू बहने लगे।

“अभी शेषन भाई के पास चलो। अपन खुद बात करेगा उससे। लेकिन अभी ऑर्डर फ़ॉलो करने का है अपने को बस।” इतना कहकर वसीम ऋचा का हाथ पकड़कर खड़ा हो गया।

“छोड़ो मुझे।” ऋचा अकस्मात चीख उठी। उसकी चीख सुनकर क्लब में उपस्थित सभी ने काउंटर की ओर देखा।

“क्या? हां क्या देख रहे हो? चुप चाप पैग गटको, और आइटम के साथ टचिंग वचिंग में बीजी रहो समझा?” वसीम ने सबको अपनी ओर देखता पाकर हड़का दिया। इतने लोगो में से किसी की पुन: हिम्मत नही हुई काउंटर की ओर देखने की। वसीम ने एक झटके से ऋचा की कलाई को खींचा, वह अपनी सीट से खींचती हुई वसीम की जकड़ में आ गयी। उसका हाथ दर्द करने लगा था, वसीम ने पूरी शक्ति से उसकी कलाई दबोच रखी थी। अपमान और दर्द से वह रो पड़ी।

“लड़की का हाथ छोड़ दो।” बाली के मुख से गुर्राहट निकली। वसीम ने उसकी ओर देखा। उसने ऋचा की कलाई दूसरे साथी को पकड़ा दी, और अपनी कमर में खोंसी हुई पिस्तौल लेकर बाली की ओर बढ़ा।

“ओवरकोट और हैट पहन कर खुद को नागराज समझ रहा है क्या? ये देख रहा है ना, एक ट्रिगर दबाया ना तो भेजा टोपी फोड़ कर बाहर आ गिरेंगा, समझा?” वसीम ने पिस्तौल को बाली के माथे पर टिकाते हुए कहा।

“मैंने कहा ना, लड़की को छोड़ दे।” कहते हुए बाली फुर्ती से अपनी सीट से उठा, उसने वसीम की पिस्तौल थामी हुई कलाई को एक झटके में मरोड़ दी। वसीम दर्द से दोहरा होकर चीखने के लिये मुंह खोलने ही वाला था कि बाली ने उसकी खोपड़ी काउंटर पर दे मारी, इसके साथ ही वहाँ रखी शराब की बोतल भी उठा कर उसके सर पर पटक दी। शराब की बोतल चकनाचूर हुई ही साथ में वसीम की खोपड़ी भी बुरी तरह फट गयी। बाली ने उसे फर्श पर किसी बोरी की तरह फेंक दिया। यह सब केवल कुछ ही क्षणों में हो गया था, खुद वसीम को भी पता नहीं चला कि

वह अकस्मात फर्श पर कैसे आ गिरा। उसके बाकी साथी एकदम हक्के बक्के रह गये।

यह देखकर क्लब में अफरातफरी मच गयी। हर कोई अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ और दरवाजे की ओर भागने लगा। वसीम के गिरते ही दो बदमाश बाली की ओर दौड़े, एक के हाथ में छूरा था तो दूसरे ने एक शराब की बोतल को ही अपना हथियार बना लिया। छूरे वाले बदमाश ने वार किया, बाली ने उसका छूरा दोनों हथेलियों के मध्य ही कसकर थाम लिया। बदमाश आश्चर्यचकित हो गया, उसने ऐसा कुछ होते अब तक केवल फिल्मो में ही देखा था। अभी वह आश्चर्य के दौरे पर ही था कि बाली ने उसकी कलाई बुरी तरह उलटी दिशा में मोड़ दी। हड्डी टूटने की भयानक आवाज गूंजी और उसके हाथ से छूरा छूट कर जमीन पर जा गिरा। उसके गिरते ही बाली ने अपनी बूट की मजबूत ठोकर उसकी खोपड़ी पर जड़ दी। इससे वह फर्श पर जा लड़ा। इस दोहरे प्रहार से वह क्षण भर में बेहोश हो गया।

“तेरी तो साले!” चीखते हुए वसीम ने बाली को निशाना बना कर गोलियाँ चला दी। उसका सर अब भी घूम रहा था, इसलिये उसका निशाना गलत था। बाली गोली चलने के पहले ही निशाना भांप चुका था, गोलियाँ शर्तिया काउंटर के पीछे खड़े अमित को परलोक पहुंचा देती। किन्तु क्षण के भी आधे हिस्से में बाली उछला और गोली चलते ही वह अमित को लेकर काउंटर की आड़ में जा गिरा। गोलियाँ शराब की बोतलों और कांच के गिलासों से टकरा गयी। वसीम की फायरिंग जारी रही। बाली अमित को लेकर फर्श पर ही चिपका रहा। कुछ ही क्षणों में गोलियों की आवाजे बंद हो गयी।

“मुझे बचाओ!” ऋचा की चीख गूंजी। उसकी चीख बता रही थी कि वह अब क्लब के दरवाजे के समीप पहुंच चुकी है।

“इसका मतलब वसीम उसे ले जा रहा है।” बाली ने अनुमान लगाया और तुरंत फुर्ती दिखाते हुए एक ही छलांग में काउंटर से बाहर आ गया। क्लब में अब तक भगदड़ जारी थी। उसने काउंटर के पास देखा, जो बदमाश कुछ देर पहले वहाँ बेसुध हुआ था वह भी अपने स्थान से नदारद था। बाली दौड़ते हुए क्लब के दरवाजे की ओर बढ़ा। बाली के दरवाजे पर आते ही वहाँ घात लगाये बैठे बदमाश ने छूरे से प्रहार किया। बाली खुद को बचाते हुए नीचे झुका और उसके पेट में ही अपने सर से प्रहार कर दिया। प्रहार करने के साथ ही बाली ने झुके हुये ही उसे पेट के बल उठा

कर पथरीले फर्श पर पटक दिया। उस बदमाश की कई हड्डियां टूट गयी। उससे निपटकर वह बढ़ा ही था कि सड़क पर खड़ी जिप्सी में से वसीम ने फायर कर दिया। बाली ने ऐन वक्त पर पर पिस्तौल देख कर ही खुद को मोड़ लिया था, जिस वजह से गोलियाँ बेकार गयी। जिप्सी स्टार्ट हो गयी थी और तुरंत गति भी पकड़ ली। बाली के देखते ही देखते वह जिप्सी उसकी नजरों से ओझल हो गयी।

बाली ने पीछे देखा। वहाँ मजमा लग चुका था। क्लब से निकली भीड़ उसे आश्चर्य से देख रही थी। बाली ने उन्हें घृणा से देखा।

“किसे बचाने जा रहा हूँ मैं भी। क्या मैंने ठेका लिया है इस समाज को बचाने का या सुधारने का? वैसे भी उसे क्यों बचाऊ जब यहाँ मौजूद तथाकथित सभ्य समाज कहलाने वाले मनुष्य रुपी जानवरों के झुण्ड में से एक भी व्यक्ति आगे नहीं आया? कैसे आगे आयेगा कोई? मैं बेकार ही इनसे उम्मीद रखता हूँ, मुझसे कोई पूछे कि मैं इस समाज को मुर्दाघर क्यों कहता हूँ, तो शायद उसे इस सवाल का जवाब मिल जाये, और फ़िक्र तो जिन्दा लोगो की, की जाती है, बचाया उन्हें ही जाता है जिनमे जान हो, जो पहले से ही निर्जीव हो उन्हें क्या बचाना, और किस से बचाना?” वह कुछ क्षण अपने ही प्रश्नों एवं उलझनों से जूझता रहा और फिर उस घायल बदमाश की ओर बढ़ा। वहाँ खड़ी भीड़ अब भी देखने के अलावा कुछ भी नही कर रही थी।

बाली बदमाश के पास बैठा। उसने उसका सर अपने हाथों में उठाया।

“अब तू मुझे वहाँ तक पहुँचायेगा जहाँ तेरे साथी लड़की को लेकर गये है।” बाली का सर्द स्वर सुनकर उस बदमाश की रीढ़ में कंपन उत्पन्न हो गया और उसने हामी में सर हिला दिया।

***

ऋचा बेड़ पर पड़ी हुई थी। वसीम ने उसे बेड़ पर ला पटका था। वसीम के सर से अब भी खून बह रहा था। उसके पूरे चेहरे पर कटने के बेहिसाब निशान थे। वह दर्द से तड़प रहा था। उसी क्षण कमरे के भीतर का दरवाजा खोलकर एक युवक ने प्रवेश किया। उसने चुस्त काली टी शर्ट और ब्लू जींस पहनी हुई थी और गले में सोने की मोटी-मोटी चेन और अँगुलियों में विभिन्न प्रकार की रत्नजड़ित अंगूठियाँ पहनी हुई थी। उसकी नजर सबसे पहले वसीम पर पड़ी। वसीम की हालत देख कर वह चौंक गया।

“अरे तुझको क्या हो गया?”

“शेषन भाई! इसको लाते टाइम क्लब में लफडा हो गया था, एक बंदे से मारपीट हो गयी। बाद में बताऊंगा सब। पहले अपन को हॉस्पिटल पहुँचाओ।” वसीम तड़पते हुए बोला, कटे हुए जख्मों से उसे भयंकर पीड़ा हो रही थी। शेषन ने अपने दूसरे साथियों को उसे ले जाने का इशारा किया। दो साथी वसीम को थामे उपचार हेतु कमरे से बाहर निकल गये। उनके जाने के बाद शेषन अब ऋचा से मुखातिब था।

वह घबराई हुई थी। थरथर कांप रही थी। उसने कमरे को देखा। वहाँ शेषन के अलावा अब भी चार बदमाश उपस्थित थे। एक बदमाश बाकायदा वीडियो कैमरा लिये खड़ा था और दूसरा बदमाश फोकस लाइट्स का एंगल ठीक कर रहा था। मानो वहाँ किसी फिल्म की शूटिंग होने वाली हो।

“द...देखो वरुण। म ..मैं तुम्हारे पैसे लौटा दूंगी। प्लीज मुझे जाने दो। म ..मैं सुबह तक कुछ न कुछ बंदोबस्त करके हर हाल में तुम्हारा कर्जा चुका दूंगी।”ऋचा रोते हुए गिड़गिड़ा उठी। उसने दोनों हाथ जोड़ लिये। वरुण शेषन के मुख पर एक कुत्सित हंसी उभरी।

“तुम आखिर चाहते क्या हो वरुण?” अपनी गिड़गिड़ाहट का कोई प्रभाव न होते देख ऋचा रो पड़ी।

“वही जो तुम चाहती हो ? मशहूर! हम तुम्हें मशहूर करना चाहते है, बस एक छोटी सी फिल्म बनाना चाहते है, जिसमे तुम्हारा किरदार काफी महत्वपूर्ण है, मैं ही नायक हूँ, मै ही डायरेक्टर भी और लेखक भी, बाकी यह रहा कैमरा, फिल्म भी ज्यादा बड़ी नहीं है बस कुछ मिनटों की रहेगी, यकीन मानो इस फिल्म के बाद तुम रातो रात मशहूर हो जाओगी।” कहते हुए वरुण ने अपने मुंह पर एक काला नकाब पहन लिया और मेज पर रखी छोटी सी शीशी में से एक सिरिंज तैयार करके ऋचा की ओर बढ़ा। ऋचा उसके इरादे समझ चुकी थी। वह घबराते हुए पीछे हटी लेकिन पीछे हटते ही एक बदमाश का जोरदार झापड़ उसके गालो पर आ टिका जिससे वह बिस्तर पर दोहरी हो गयी।

“अरे घबराओ मत मेरी जान। इस इंजेक्शन के लगते ही तुम्हारी सारी हिचक दूर हो जायेगी और तुम भी एन्जॉय करोगी।” कहते हुए वह बेड पर चढ़ा, दूसरे बदमाश में ऋचा के हाथ जकड़ लिये। वह छटपटाती रही लेकिन वरुण ने इंजेक्शन लगा दिया। इंजेक्शन लगने के कुछ ही क्षणों में ऋचा की आँखे उलटने लगी और उसका शरीर ढीला पड़ने लगा।

शेषन के साथी ने ऋचा को बंधनमुक्त कर दिया और वहाँ से हटकर कैमरे की ओर जाकर खड़ा हो गया।

वरुण ने खाली इंजेक्शन वापस टेबल पर रखा। ऋचा अर्धबेहोशी की हालत में छटपटा रही थी। वरुण ने अपने साथी को कैमरा ऑन करने का संकेत किया और रिकार्डिंग शुरू हो गयी। वरुण अब बेड पर था। उसने ऋचा के वस्त्रों पर हाथ रखा। वह उन्हें नोच फेंकने को उतारु था। उसके मुंह पर नकाब था, यदि नकाब नही होता तो साफ़ पता चलता कि उसके मुंह से किसी पशु की भाँति लार टपक रही थी। उसकी आँखों में वासना की लाल लकीरें लहरा रही थी।

“इन पर्दों को दूर कर दो मेरी जान।” कहते हुए उसने कपड़े को खींचना चाहा, अर्धचेतना की अवस्था में भी ऋचा ने उसका हाथ पकड़ लिया। वरुण मुस्कुरा उठा।

“अब भी तुममें बहुत अकड़ है ऋचा।” उसने उसका हाथ झटक दिया। ऋचा अशक्त हो गयी थी। वह नशे में थी, प्रतिकार करने की क्षमता लगभग शून्य होने के कारण उसका हाथ निर्जीव अंग की भाँति बिस्तर पर बिना किसी विरोध के जा गिरा। अब वरुण एक ही झटके में वस्त्रों को फाड़ने के लिये लालायित था। उसने दोनों हाथ ऋचा के वस्त्रों पर कसे।

उसी क्षण एक भीषण आवाज के साथ दरवाजे के परखच्चे उड़ गये, और वसीम का बेसुध शरीर कमरे में किसी बोरे की भाँति आ गिरा। वरुण के साथ सभी पीछे घूम गये। दरवाजा कई टुकडो में बिखर गया था। वसीम बेहोश पड़ा था और टूटे दरवाजे के पार एक व्यक्ति खड़ा था। उसके दोनों हाथों में दो मनुष्य निश्चेत पड़े हुए झूल रहे थे। ये वही थे जो वसीम को अस्पताल लेकर जा रहे थे।

वरुण बेड से उतरा और उस व्यक्ति को देखने का प्रयास करने लगा। उसने ट्रेंच कोट और हैट पहन रखा था। वह बाली था।

“क ...कौन है बे तू?” वरुण ने थूक निगलते हुए कहा और टेबल पर रखी पिस्तौल उठा कर बाली की ओर तान दी।

“तेरी मृत्यु।” कहते हुए बाली ने बला की सी फुर्ती से कमरे के भीतर प्रवेश किया, और उसके पिस्तौल वाले हाथ को थाम लिया। वरुण उसकी इस फुर्ती को देख कर हैरान था। उसके बाकी साथी अब तक सकते में थे। ऋचा अपनी बोझिल पलकों से बाली को देखने का प्रयास करती दिख रही थी। आज उसने भगवान को देखा था। भगवान जो ओवरकोट पहनकर आया था।

“तू जानता नही तू किससे पंगा ले रहा है, मेरा बाप .....” आगे वरुण कुछ कहता उसके पहले ही बाली ने उसे किसी खिलौने की ही भाँति दोनों हाथों से उठा लिया और उसे उठा कर अपने ही घुटने को मोड़ कर उस पर ही पटक दिया। हड्डी टूटने की भयानक आवाज उस कमरे में गूंजी और हड्डी के साथ ही साथ वरुण की हृदय विदारक चीख भी गूंजी। वह उसकी आखिरी चीख थी। बाली ने उसे इतनी भयंकर शक्ति से पटका था कि न केवल उसकी रीढ़ की हड्डी के टुकड़े हो गये थे, बल्कि उसके कमर और धड़ के बीच की सारी हड्डियां टूट चुकी थी। वह मुंह से खून फेंकते हुए किस जानवर की भाँति ही डकारा और सदैव के लिये शांत हो गया। उसने वरुण के निर्जीव शरीर को किसी बेकार वस्तु की तरह फर्श पर फेंक दिया। उसके फर्श पर फेंकते ही वरुण का शरीर इस तरह मुड़ गया मानो वह रबर का बना पुतला हो। चारो बदमाश यह दृश्य देखकर भय के मारे जड़वत से हो गये थे। उनकी तंद्रा तब टूटी जब बाली कैमरा संभाले हुए बदमाश के सामने जा पहुंचा। इससे पहले की वह कुछ समझ पाता।

बाली ने उसके चेहरे पर इतनी जोर का घूंसा मारा कि उसका सर दीवार का पलस्तर चटका कर अंदर तक जा धंसा। एक ही प्रहार में वह इहलोक से परलोक जा चुका था। दूसरे ने पिस्तौल निकाली ही थी कि बाली ने वहाँ पड़ी मेज को ही उठा कर उस पर दे मारा। उस बदमाश को उम्मीद नही थी कि कोई व्यक्ति ना केवल इस मेज को उठा सकता है, बल्कि किसी खिलौने की भाँति उछाल कर फेंक भी सकता है। वह आश्चर्य में ही डूबा रहा और भारी मेज के नीचे वह और उसका दूसरा साथी जा दबे। उनके दबते ही बाली अपने स्थान से उछला और सीधे उस मेज पर कूद पड़ा। उसके भयंकर प्रहार से उन दोनों बदमाशो की छाती की पसलियाँ टूट गयी। वे दोनों या तो बेहोश हो गये या मारे जा चुके थे, कुछ भी निश्चित नही था। अब एक मात्र बचा बदमाश भय से कांप रहा था।

ऋचा अपने भगवान का रौद्र रूप देख रही थी। वही उस बदमाश को बाली के रूप में यमदूत दिखायी दे रहा था। उसकी जेब में पिस्तौल थी, लेकिन वह समझ चुका था कि पिस्तौल हाथ में आने से पहले ही वह छलावा उस तक पहुँच जायेगा और उसे एक बेरहम मृत्यु प्रदान करेगा। बाली उसे देखता रहा।

बाली धीरे धीरे आगे बढ़ा। बदमाश जड़वत खड़ा रहा। उसने बिना किसी झिझक के उस बदमाश की गर्दन जकड़ ली।

“तुमने समझदारी दिखायी। फ़िक्र मत करो। तुम्हें आसान मौत दूंगा।” कहते हुए बाली ने एक झटके में उसकी गर्दन मरोड़ दी। एक ही क्षण में वह बदमाश भी मर चुका था।

“ये नराधम जीने के लायक तो हरगिज नही हैं। यह लड़की जो बिस्तर पर अर्धबेहोशी की हालत में पड़ी है, यदि समय पर न आता तो यह उसे जीवित ही लाश बना देते। तब वह मात्र कहने के लिये ही जीवित रहती।” बाली ने ऋचा को देखा। वह बेतहाशा रो रही थी। तड़प रही थी और विक्षिप्तों की भाँति हाथ पैर झटक रही थी। बाली किंकर्तव्यमूढ़ सा उसकी हालत देख रहा था।

“हुँह! जीवित? लड़की जीवित नहीं थी, वह तो उसी वक्त मर चुकी थी। उसका वजूद, उसकी आत्मा वह खो चुकी थी। लेकिन क्यों? उसका वजूद सिर्फ उसके शरीर से क्यों था? जब ऐसा घिनौना कार्य करनेवालो की आत्मा का बोझ उनका शरीर बेशर्मी से ढोता है, तो यह लड़की क्यों अपना वजूद अपनी आत्मा को मार रही है? अजीब है ना? अपराध करनेवाले को कोई ग्लानि नहीं लेकिन अपराध सहनेवाले को ग्लानि हो रही थी। समाज के ढ़कोसले, झूठे ढ़कोसले। एक लड़की को उसके तन के दायरे में बाँध दिया जाता है। एक साजिश औरत को हमेशा अपने कदमो तले रखने की। बस एक शब्द दे दिया जाता है इस संहार को ‘बलात्कार‘! यह शब्द घटना के बाद खत्म नहीं हो जाता। यह शब्द बारबार इस्तेमाल किया जाता है, औरत को यह अहसास दिलाया जाता है कि उसकी तथाकथित इज्जत सिर्फ उसके शरीर से है। शरीर के साथ हुई दुर्घटना से उसकी इज्जत जा सकती है, लेकिन जिसने इस घटना को अंजाम दिया उसकी इज्जत नहीं जा सकती। पुरुषप्रधान समाज। नारी की पूजा तो कर सकते है, लेकिन उसकी इज्जत नहीं कर सकते। यही है सभ्य समाज का असली चेहरा।”

“क्या तुम ठीक हो लड़की?” बाली ने ऋचा से प्रश्न किया। ऋचा उसे हतप्रभ सी देख रही थी। वह खुद को संभाल नही पा रही थी।

“म ....मुझे किसी ड्रग की हाई डोज दी गयी है। म..मुझे ब.. बचा लो।” बड़ी मुश्किल ने ऋचा ने अटकते हुए कहा।

बाली फौरन आगे बढ़ा और उसने ऋचा को अपनी बाहों में उठा लिया। ऋचा की पलके मुंदने लगी थी। उसका शरीर ऐठने लगा था। मुंह से झाग निकलने लगी।

“तुम्हें अस्पताल पहुंचाता हूँ।” बाली उसे उठाये हुए कमरे से निकला।

“अस्पताल नही! अस्पताल नही। शेषन के आदमी खोज लेंगे। वो यहाँ के एसीपी का बेटा है।” ऋचा इतना कहकर बेसुध हो गयी।

***

इतनी रात गये दरवाजे पर हुई दस्तक से विपुल शर्मा चौंक गया। वैसे उसे ज्यादा हैरत नही हुई। वह डॉक्टर था और रातबिरात उसके यहाँ इमरजेंसी मामलों का आना सामान्य सी बात थी। विपुल लगभग पैतालीस वर्षीय अधेड़ था। वह इस समय अपने ढीले कुर्ते और पायजामे में बैठा किसी प्रकार की स्टडी कर रहा था। दरवाजे की दस्तक से उसका ध्यान भंग हुआ और उसने दरवाजा खोला। दरवाजा खुलते ही वह ओवरकोटधारी नकाबपोश अंदर आ गया। उसकी बांहों में एक नवयुवती बेसुध अवस्था में थी।

“य... ये क्या है? कौन हो तुम।” विपुल हक्काबक्का रह गया। बाली ने उसे परे धकेला और नजरअंदाज करते हुए वहाँ स्थित एक सोफे की ओर बढ़ा। उसने ऋचा को उस सोफे पर लिटाया।

“खबरदार डॉक्टर! दरवाजे बाहर निकलने की सोचना भी मत।” बाली ने डॉक्टर की ओर देखे बगैर सख्त स्वर में चेतावनी दी। विपुल अनजानी आशंका वश दरवाजे से बाहर भागने का ही विचार कर रहा था। बाली के खूंखार स्वर ने उसे जहाँ का तहां जड़वत कर दिया। बाली अब डॉक्टर से मुखातिब था। उसने हैट उतारी। डॉक्टर को उम्मीद थी कि हैट उतरने के बाद व्यक्ति का चेहरा दिखायी पड़ेगा किन्तु उसने सम्पूर्ण चेहरे पर एक अजीब सा त्रिपुंड बना हुआ नकाब पहन रखा था। डॉक्टर उसकी उस विचित्र वेशभूषा को देख कर चौंक पड़ा।

“कौन हो तुम?” उसने घबराते हुए सवाल किया।

“इतना जान लो, इस लड़की की हालत गंभीर है। इसे किसी प्रकार की ड्रग दी गयी है, जिससे इसकी हालत खराब हो रही है। इसे बचाना जरुरी है और तुम इसे बचाओगे।” बाली के स्वर में सख्ती झलक रही थी।

विपुल अब थोडा सा आश्वस्त हुआ कि उसे किसी प्रकार का खतरा नही है। नकाबपोश केवल लड़की के इलाज के लिये आया है।

“देखो! इसकी हालत गम्भीर है। इसे फौरन अस्पताल ले जाना जरुरी है और यह पुलिस केस भी है, तो उन्हें भी सूचना देना आवश्यक है।” विपुल ने घबराते हुए कहा।

“डॉक्टर! पुलिस आयेगी। जरुर आयेगी। अगर तुमने फौरन इसका उपचार नही आरंभ किया तो पुलिस तुम्हारी लाश उठाने जरुर आयेगी।” बाली का स्वर अत्यंत सर्द था। विपुल के बदन में झुरझुरी सी दौड़ गयी।

“लेकिन मैं केवल प्रयास ही कर सकता हूँ और वह भी तब जब पता चले कि इसे किस प्रकार की ड्रग दी गयी है।” विपुल ने किसी तरह से स्वर को संयत करते हुए कहा। बाली ने फौरन जेब से एक शीशी निकाल कर डॉक्टर को थमा दी। उसने वहाँ से निकलने से पहले ही समझदारी दिखाते हुए ड्रग्स की शीशी को अपनी जेब में रख लिया था।

“ओह! बोतल तो पूरी खाली है? इसे पूरी की पूरी डोज दी गयी है। किसने किया ऐसा? क्या तुमने किया है यह?” डॉक्टर ने उत्सुकतावश बाली से प्रश्न किया।

“इलाज शुरू करो।” बाली गुर्राया। उसकी गुर्राहट सुनते ही डॉक्टर अपनी अलमारी की ओर भागा। सुरक्षा हेतु बाली भी उसके पीछे पीछे हो लिया। डॉक्टर ने फौरन अलमारी से अनेको प्रकार की शीशियाँ निकाली और उन्हें लेकर ऋचा की ओर बढ़ा। एक इंजेक्शन ऋचा को लगा दिया।

“मैंने इंजेक्शन लगा दिया है। वह ड्रग्स को फैलने से रोकेगा और इन्हें भरपूर पसीना आएगा जिससे विषैले तत्व बाहर उत्सर्जित हो जायेंगे। कमजोरी ना लगे इसलिये इन बोतलों को लगातार कुछ घंटो तक इनके शरीर में प्रवाहित करना पड़ेगा।” कहते हुए डॉक्टर ने ग्लूकोज की कुछ बोतलों को सोफे के पास ही एक खूंटी में लटका दिया और उसमें कुछेक इंजेक्शन धंसा दिये और ऋचा की नसों से जोड़ दिया।

“अब फ़िक्र की कोई बात नही है। कुछ घंटो में तुम इसे ले जा सकते हो।” डॉक्टर ने बाली से कहा। उसकी नजर अब भी उसके विचित्र नकाब से नही हट पा रही थी।

बाली ने फ्रिज को देखा और आगे बढ़कर दरवाजा खोलकर पानी की बोतल निकाल ली और अपने नकाब को थोडा सा उठाकर एक ही सांस में पूरी बोतल खाली कर दी। पानी हलक से उतरते ही उसके गले में तरावट महसूस हुई और साँसे थोड़ी संयत हुई। डॉक्टर ऋचा के नजदीक ही बैठा हुआ उसका निरीक्षण कर रहा था। बाली दूसरे सोफे पर पसर गया। कुछ देर तक दोनों ने एकदूसरे की ओर देखा और जब कोई संवाद

स्थापित न हो पाया तो आख़िरकार विपुल ने बोरियत दूर करने के लिये रिमोट से टीवी ऑन कर दिया और अपनी आदतों के अनुसार ही समाचार चैनल लगा दिया।

“ब्रेकिंग न्यूज! अभी अभी मिली खबरों के अनुसार शहर के एसीपी ‘जयराज शेषन‘ के बेटे ‘वरुण शेषन’ की कुछ अज्ञात लोगो द्वारा उनके फार्म हाउस में बेदर्दी से हत्या कर दी गयी है। हत्यारों में एक लड़की और एक नकाबपोश शामिल है, घटनास्थल पर मिले सीसी टीवी फुटेज से प्राप्त तस्वीरों में अपराधियों का ब्यौरा रिकॉर्ड हो गया है, उनकी तस्वीरे इस प्रकार है, अगर इनसे संबंधित कोई भी जानकारी मिले तो इस नम्बर पर सम्पर्क करें।” समाचार प्रवक्ता ने हेडलाइन्स बताने के बाद ही स्क्रीन पर बाली और ऋचा की तस्वीरें प्रसारित कर दी। डॉक्टर उन तस्वीरों को देख कर जड़ हो गया। वो दोनों इस समय उसी के साथ तो थे। उसके माथे पर पसीना उभर आया।

“घबराओ मत डॉक्टर। यह भारतीय मीडिया है, खबर होती कुछ और है, और दिखाती कुछ और है। तुम्हें घबराने की तब तक कोई जरूरत नही है, जब तक की तुम कोई होशियारी ना करो। इसलिये मेरी ओर से निश्चिंत रहो। मैं कुछ देर में खुद ही चला जाऊंगा। उम्मीद करता हूँ कि तब तक तुम कोई बेवकूफी नही करोगे।” बाली ने शांत स्वर में ही विपुल को धमकी दे दी। विपुल ने केवल गर्दन हिला कर हामी भर दी, उसके पास इसके अलावा और कोई चारा भी तो नहीं था।

बाली ने अपनी जेब से एक मोबाइल निकाला। वह बेहद ही साधारण बेसिक फीचर फोन था। उसने कोई नम्बर डायल किया। एक ही रिंग में फोन उठा लिया गया।

“हेल्लो! गाइड, मुझे फौरन एक गाडी चाहिये, पता नोट करो।” और बाली ने डॉक्टर का पता फोन पर किसी को नोट करवा दिया। काम होने के बाद उसने फोन अपनी जेब में रखा और सोफे पर अधलेटी अवस्था में पसर गया।

डॉक्टर उसके अजीब से नकाब को ही देख रहा था। उस नकाब से उसकी आँखे दिख ही नही रही थी। डॉक्टर हैरान था कि वह शख्स आखिर देख कैसे रहा है। वह सो रहा है, या जाग रहा है इसका तक अंदाजा न लग रहा था।

“डॉक्टर! मेरी नज़रें तुम्हारी ओर ही है, गलतफहमी में मत रहना।” बाली ने पुन: सर्द स्वर में कहा।

***

।। त्रेतायुग ।।

सुबाहु का क्रोध

महर्षि संदीप एवं कपिल कुटी में बने चबूतरे पर आसन जमाये बैठे हुए थे। पूरे तीन दिन पश्चात भार्गव अपने दल के साथ अयोध्या से लौटा था। मार्तण्ड उत्साह से उन्हें अपनी अयोध्या यात्रा और दानव दल के संहार के विषय में बता रहा था। भार्गव शांत खड़ा था। किन्तु सुबाहु का मन विचलित था। उसे चबूतरे के समीप ही लिटाया गया था। वह अब भी अशक्त था। दो शिष्य उसका उपचार कर रहे थे और उसके घावों पर लेप लगा रहे थे।

"गुरुवर! आपको देखना चाहिये था, भार्गव ने किस प्रकार योजना कार्यान्वित करके असंभव से कार्य को संभव बनाया और उस भीषण दानव दल का वध कर दिया।" मार्तण्ड हृदय से भार्गव का प्रशंसक था।

"मार्तण्ड! यह मुझ अकेले के वश का नहीं था। तुम और अन्य सदस्य साथ नही देते और अपने अद्भुत कौशल का प्रदर्शन नही करते तो यह विजय इतनी सरल नही होती।" भार्गव ने सौम्यता से कहा, वह अपनी प्रशंसा से स्वयं को असुविधाजनक अनुभव करता था।

"मैं सहमत हूँ भार्गव। किन्तु यदि तुम 'भूमिकंपक' विद्या का प्रयोग नही करते तो वे दानव पता नही और कितना विनाश करते। सारे सदस्यों में एक तुम ही जो 'भूमिकंपक' विद्या में निपुण हो, महर्षि संदीप और गुरु कपिल के पश्चात एक तुम ही हो जिसने इस विद्या को आत्मसात किया है। यह निस्संदेह तुम्हें सबसे योग्य बनाती है।" मार्तण्ड भार्गव की प्रशंसा में कोई कसर नही छोड़ना चाहता था। मार्तण्ड के लिये भार्गव एक आदर्श योद्धा था। उसके लिये यह गौरव का विषय था कि भार्गव ने उसे अपने दल में सम्मिलित किया था। वह सदैव से भार्गव के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने को लालायित था।

"पुत्र मार्तण्ड! अब तनिक धीर धरो। भार्गव को भी कुछ कहने का अवसर दो।" महर्षि संदीप मुस्कुराते हुए बोले। मार्तण्ड अपनी अधीरता और अतिउत्साह पर लजा गया।

"हाँ भार्गव! तुम्हें और तुम्हारे दल को दानवों के वध के पश्चात अयोध्या के सैनिको द्वारा बंदी बना लिया गया था और तुम्हें महाराज दशरथ के सम्मुख ले जाया गया था। यहाँ तक तो मुझे मार्तण्ड ने बता ही दिया है। आगे तुमसे सुनना चाहता हूँ।" कपिल ने भार्गव की ओर देखा।

“जी गुरुवर! सर्वप्रथम हमें राज्य में अवैध प्रवेश के लिये राजकीय दण्ड संहितानुसार आरोप लगाये गये, किन्तु महाराज वैयक्तिक रूप से हमसे प्रभावित थे। उन्होंने सर्वप्रथम अचेत सुबाहु को राजकीय चिकित्सालय में उपचार हेतु भिजवा दिया। वे सैनिकों द्वारा उस पूरी घटना का विवरण सुन चुके थे। वहाँ उपस्थित प्रजाजनों ने भी उनसे हमें क्षमा करने का निवेदन किया। महाराज दयालु थे, जब पूर्ण विवरण उन्हें ज्ञात हुआ तो उन्होंने हमें धन्यवाद दिया कि आज हमारे कारण उनके सीमावर्ती क्षेत्र की रक्षा हुई, और प्रजाजनों एवं सैनिको के प्राण बचे। उन्होंने हमसे राजकीय सम्मान एवं आतिथ्य ग्रहण करने का निवेदन किया किन्तु मैंने सविनय प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। वे हमारे पराक्रम एवं कौशल से अत्याधिक प्रभावित थे, और उन्होंने हमें अपनी सेना में भी सम्मिलित होने का आग्रह किया। किन्तु हमने उन्हें समझाया कि हम सेना में रहकर केवल एक राज्य तक सीमित नही रहना चाहते। राज्य की रक्षा के लिये सेना है, किन्तु हम उनकी रक्षा करते है जिन तक सैन्य सहायता समय रहते पहुँच नही पाती, हम नगर-नगर, राज्य-राज्य भ्रमण करते है, ताकि दानवों एवं राक्षसों का उत्पात नियंत्रण में रख सके। इसलिये हम सेना का भाग नही बन सकते। महाराज दशरथ ने मेरी बात को भली भाँति समझा और सुबाहु के उपचार करने हेतु आग्रह किया। सुबाहु को उपचार की आवश्यकता थी। इसलिये हमें वहाँ रुकना पड़ा। अंत में पूर्ण राजकीय सम्मान सहित हमारी विदाई हुई।”

भार्गव इतना कहकर चुप हो गया और उसने सुबाहु की ओर देखा। सुबाहु के नेत्र मानो ज्वाला की तरह धधक रहे थे।

“सुबाहु ने भी अप्रतिम वीरता का परिचय दिया। उसने अकेले ही सैनिकों के साथ ही साथ दानवों को भी परास्त किया।” भार्गव ने सुबाहु की प्रशंसा की, भार्गव जानता था सुबाहु का मन उद्विग्न है।

“मेरी प्रशंसा मत कीजिये। मैंने कुछ नही किया, उलटे मैं चोटिल हो गया जिस कारण दल का आधा ध्यान मेरी सुरक्षा में ही लगा रहा।” सुबाहु क्रोध से बोला।

“सुबाहु! तुम अभी भी अस्वस्थ हो, क्रोध पर संयम रखो।” भार्गव ने तनिक क्रोध से कहा।

“उसे कहने दो। मन में कोई बात है तो उसे कहने देना चाहिये।” महर्षि संदीप ने भार्गव को टोका तो भार्गव ने नम्रता से सर हिला दिया।

“मैं अस्वस्थ नही हूँ।” कहते हुए सुबाहु शिष्यों का हाथ हटा कर उठ खड़ा हुआ। उसके शरीर पर चोट के चिन्ह थे। जगह जगह लेप और पट्टियां बंधी हुई थी।

“मैं पूरे सम्मान के साथ कहना चाहूँगा कि मुझे ‘चक्रदण्ड’ एवं ‘भूमिकंपक’ विद्या सिखाने में किसी ने भी कभी रुचि नही दिखायी। जबकि मैं सदैव तत्पर था। मैंने स्वयं अनेक बार आपसे आग्रह किया किन्तु आप मुझे अन्य युद्ध कलायें सिखाते रहे। मैं भी तभी से सीख रहा हूँ, जब से मामा प्रशिक्षण ले रहे थे। तो यदि उन्होंने इस विद्या को आत्मसात कर लिया है, तो मैं क्यों नही कर सकता? यदि आपने मुझे यह विद्या सिखाई होती तो अयोध्या में दानव इतना विध्वंस नही कर पाते। मैं भी तब सबके कंधे से कंधा मिलाकर दल की शक्ति बनकर लड़ता ना की दल की कमजोरी बनता।” सुबाहु अस्वस्थता और क्रोध के कारण अपना संयम खो चुका था।

“तुम कमजोरी नही हो दल की।” भार्गव ने उसे समझाया।

“आप समझते क्यों नही मामा! मुझमे प्रतिशोध की अग्नि धधक रही है, मैं हर दानव में उस दुष्टा ताड़का की परछाई देखता हूँ, किन्तु मुझे तब स्वयं पर क्रोध आता है जब मुझे ज्ञात होता है कि इतने प्रयत्नों के पश्चात भी मैं अपना प्रतिशोध लेने में सक्षम नही हूँ। मेरे जीवन का एक मात्र उद्देश्य ताड़का से प्रतिशोध लेना ही है और उसके लिये मुझे जो भी युद्ध कलाये सीखनी पड़ेंगी वो सीखने को तत्पर हूँ, मैं हर परीक्षा के लिये सज्ज हूँ, किन्तु मुझे बालक मानकर सदैव अवहेलना की जाती है।” सुबाहु कहे जा रहा था। मार्तण्ड और भार्गव उसके इस व्यवहार से आश्चर्यचकित थे तो कपिल एवं महर्षि संदीप मुस्कुरा रहे थे।

उसी समय कुटी में महेंद्र ने प्रवेश किया। उसके मुख पर प्रसन्नता स्पष्ट दिखायी दे रही थी।

“प्रणाम महर्षि, प्रणाम गुरुवर।” उसने कुटी में प्रवेश करते ही सर्वप्रथम महर्षि संदीप एवं कपिल को प्रणाम किया। दोनों ने उसके प्रणाम का प्रत्युत्तर दिया।

“क्या हुआ महेंद्र? बहुत प्रसन्न दिखायी दे रहो हो?” कपिल ने प्रश्न किया।

“जी! आप भी सुनेंगे तो प्रसन्न हो उठेंगे। भार्गव, सुबाहु आप दोनों तो सर्वाधिक प्रसन्न होंगे।” महेंद्र हर्षातिरेक से कहे जा रहा था।

“पहेलियाँ न बुझाओ महेंद्र। अब कह दो।” मार्तण्ड विचलित हुआ, वह जानने को अधीर था।

“जी! अभी सूचना प्राप्त हुई है कि अयोध्या युवराज के शुभ हाथों से उस भयानक और निर्दयी राक्षसी ताड़का का वध हो गया है। युवराज ने ताड़का के प्रकोप से सदैव के लिये मुक्ति दिला दी। अब हमें किसी प्रकार का भय नही है। सारे साधु सन्यासी एवं राज्यों में प्रसन्नता की लहर है। उत्सव मनाया जा रहा है।” महेंद्र के शब्दों ने मानो भार्गव के कानो में विस्फोट सा किया था। वह ताड़का की मृत्यु की कामना करता था किन्तु ताड़का की मृत्यु की सूचना से उसे हर्ष नही हुआ, उसका मस्तिष्क कुंद हो गया था।

“नहीं! ऐसा नही हो सकता। ताड़का नही मर सकती।” सुबाहु चीखा, और कुटी से बाहर की ओर दौड़ पड़ा।

“सुबाहु!” मार्तण्ड उसके पीछे दौड़ा ही था के कपिल ने उसे रोक लिया।

“तुम यही रहो! मैं सुबाहु के पास जाता हूँ।” कहते हुए कपिल ने महर्षि संदीप से आज्ञा ली और भार्गव को सकते में खड़ा छोड़ कुटी से बाहर आ गया।

सुबाहु आश्रम के बाहर वनों की ओर दौड़ रहा था। उसने अपने जीवन का उद्देश्य ताड़का की मृत्यु को ही बना लिया था और आज ताड़का की मृत्यु से उसका उद्देश्य ही समाप्त हो गया। उसका प्रतिशोध उसका क्रोध, उसका अवसाद सब उसके हृदय में ही रह गया। प्रतिशोध की ज्वाला ने उसके हृदय में एक ज्वालामुखी का स्वरूप ले लिया था, जो केवल ताड़का के वध हेतु फटने को तत्पर था। किन्तु अब उस ज्वालामुखी के लावे को फटने का अवसर नही मिलने वाला था। अब वह ज्वाला मुखी उसके भीतर ही फट चुका था। उसे अपने समक्ष केवल अंधकार दिखायी दे रहा था। सम्पूर्ण उद्देश्य ताड़का के सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ ही चूर हो गया था।

***

वह आश्रम से कुछ दूर आकर रुक गया। उसका मन अशांत था, वन की अद्वितीय सुंदरता आज उसके मन को नहीं बहला रही थी। वह असमंजस में था कि वह करे तो क्या करे। जब कुछ भी ना समझ में आया तो वह वहाँ स्थित सबसे ऊँचे वृक्ष पर किसी बंदर की भाँति ही कुशलता से चढ़ने लगा।। वह उस क्षेत्र का सबसे ऊंचा वृक्ष था। कुछ ही क्षणों में

सुबाहु वृक्ष के मध्य में एक मोटी डाल पर बैठा हुआ था। यहा से वन का एक बहुत बड़ा क्षेत्र दिखायी दे रहा था। शीतल पवन के झोंको से उसके विचलित मन को थोड़ी सी शांति का अनुभव हुआ और उसने आँखे मूंद ली।

“समस्या से भागना समस्या का समाधान नही होता सुबाहु।”

किसी के स्वर ने सुबाहु की तंद्रा भंग की। वह आश्चर्यचकित हो गया जब उसने उसी डाली के दूसरे छोर पर कपिल को स्थिर खड़े देखा। वो मुस्कुरा रहा था। सूर्य मस्तक पर आ चुका था और कपिल के ठीक ललाट के ऊपर ही सूर्य किसी मुकुट की भांति प्रतीत हो रहा था। मानो कपिल कोई दिव्य पुरुष हो। सुबाहु को आश्चर्य हुआ कि कपिल कैसे इतने ऊँचे वृक्ष पर आ गये? और वह भी उसी डाल पर जिसपर सुबाहु बैठा हुआ था। उसे कोई पद्चाप या स्वर क्यों नही सुनाई दिया?

“आप यहाँ कब आये? और आप ऊपर कैसे आ गये?” सुबाहु का स्वर अब पहले से थोडा शांत हुआ।

“सुबाहु। मैं यहाँ नही आया हूँ, तुम यहाँ आये हो। यह जंगल तो सदैव मेरा घर रहा है। मेरे लिये यह कोई कठिन कार्य नही है।” कपिल अद्भुत संतुलन बनाते हुए सुबाहु के समक्ष ही अलथी पलथी मार कर बैठ गये।

“आप अनेक विद्या जानते है, किन्तु क्या कारण है कि आप मुझे नही सिखाते?” सुबाहु के मन में चुभने वाला प्रश्न अब बाहर था।

“तुम अधीर हो सुबाहु। यही तुम्हारा एकमात्र दुर्गुण है।” कपिल ने मुस्कुराते हुए कहा।

“यदि मुझमे कुछ भी आत्मसात करने की क्षमता नही है, मैं इस योग्य नही हूँ तो मैं युद्ध और द्वंद कला में निपुण कैसे हूँ? आपके द्वारा सिखाई गयी हर कला को आत्मसात किया है मैंने, और उसका प्रमाण भी दिया है समय समय पर। अयोध्या में भी मैं दानवों और सैनिकों से वीरता से लड़ा था। क्या यह मेरे योग्य होने का प्रमाण नही है?” सुबाहु आज मन बना चुका था।

“योग्यता को किसी प्रमाण की आवश्यकता नही होती। तुम द्वंद और अन्य युद्ध कलाओं में पारंगत हो क्योंकि तुम्हारी अधीरता तुम्हें आत्मसात करने में सहायता करती है, यह शारीरिक कलायें है, इन्हें आत्मसात करना सरल है।” कपिल भी आज उसके सारे प्रश्नों का उत्तर देने की मनस्थिति बना चुका था।

"जब मैं यह सब आत्मसात कर सकता हूँ, तो चक्रदण्ड और भूमिकंपक विद्या क्यों नही?"

"उसके लिये तुम्हें शारीरिक नही मानसिक रूप से सक्षम होना आवश्यक है पुत्र। उसके लिये तुम्हें तुम्हारे मन और तुम्हारी अधीरता को नियंत्रण में रखना आवश्यक है। किन्तु ऐसा हो नही पा रहा। भार्गव एक सैनिक बनने की तैयारी कर रहा युवक था। उसे सैन्य अनुशासन एवं युद्ध कलाओं का उचित प्रशिक्षण प्राप्त था। इस कारण उसने तुम्हारे माता पिता की मृत्यु की घटना से हुए अवसाद को हटा कर अपना सम्पूर्ण ध्यान स्वयं को इस योग्य बनाने में लगा दिया कि वह दानवों से प्रतिकार कर सके। उसने अपने क्रोध, अवसाद और अधीरता को नियंत्रण में रखा है, क्योंकि उसे पता है उसके छटपटाने से जो बीत चुका उसे बदला नही जा सकता। वह उसके हाथों में नहीं है, किन्तु आगे क्या होगा यह सुनिश्चित करना उसके हाथों में है, वह अपने माँ, बाप, बहन और तुम्हारे पिता को जीवित नही कर सकता, तुम्हें तुम्हारा बचपन नही लौटा सकता, किन्तु वह प्रशिक्षित होकर किसी अन्य सुबाहु को विनाश का यह दंश न झेलना पड़े यह सुनिश्चित कर सकता है। यह उसके हाथ में है और इसीलिये वह सब कुछ भुलाकर हर उस विद्या पर ध्यान केन्द्रित कर रहा है जो उसके लक्ष्यप्राप्ति के लिये आवश्यक है।" कपिल शांत हुआ, वह सुबाहु के भाव पढ़ने का प्रयास कर रहा था।

"किन्तु अब ताड़का के वध के पश्चात उद्देश्य भी तो समाप्त हो चुका है।" सुबाहु अब पुन स्वयं को दिशाहीन अनुभव कर रहा था।

"सुबाहु। क्या तुम्हारे जीवन का एकमात्र उद्देश्य ताड़का से प्रतिशोध ही था? चलो मान लो कि यदि यह अवसर तुम्हें प्राप्त होता और तुम ताड़का का वध करने में सफल होते, उसके पश्चात क्या करते?" कपिल ने प्रश्न किया। सुबाहु को कोई उत्तर न सुझा, वह शांत रहा।

"दिशाहीन और निरुद्देश्य तुम ताड़का वध के पश्चात भी रहते सुबाहु। क्योंकि तुमने अपने जीवन को केवल एक ही लक्ष्य की ओर केन्द्रित कर लिया है। तुम्हें नही लगता कि इस एक जीवनकाल में किसी एक लक्ष्य की ओर स्वयं को केन्द्रित कर लेना, सीमित कर लेना अर्थात स्वयं की क्षमताओं का अपमान करना है? क्या तुम और तुम्हारी क्षमता केवल किसी विशेष लक्ष्य पर ही आश्रित है? तुम्हारे पास योग्यता है, अवसर है, क्षमता है, विद्या है, और सबसे बड़ी बात इच्छाशक्ति है। तो इसका प्रयोग करो, अनेक लक्ष्य बनाओ और हर लक्ष्य को प्राप्त करने को तत्पर

रहो सुबाहु। सब को दूसरा अवसर प्राप्त नही होता, जिनको मिलता है वे भाग्यशाली होते है। तुम्हें मिला है, तो उसे समझो, तुम्हारा जन्म केवल ताड़का के लिये नही है, वह तो मात्र एक पडाव है तुम्हारे लक्ष्य का। ताड़का तो एक मात्र संकट था जिसे तुमने देखा, ऐसे अनगिनत संकट अभी और है जिनसे तुम्हें निपटना है। तुम योग्य हो, तुम हर विद्या को आत्मसात कर सकते हो। किन्तु तभी जब तुम स्वयं को नियंत्रित कर सकोगे।"

सुबाहु चुप रहा। वह कपिल की कहीं बातों से प्रभावित दिख रहा था।

"यदि तुम ऐसा कर सकोगे तो मैंतुम्हें प्रशिक्षण देना आरंभ कर दूंगा। क्या तुम कर सकोगे यह? अपनी चंचलता, क्रोध और अधीरता पर नियंत्रण रख पाओगे?"

सुबाहु निश्चय ले चुका था। कपिल से वह पूर्णतया सहमत था। उसे अपने प्रश्नों के उत्तर मिल चुके थे। उसका मन अब शांत था।

"मैं पूर्ण प्रयास करूंगा।" उसने धीरे से कहा।

"कल से तुम्हारा प्रशिक्षण आरंभ होगा।" कपिल ने उसके सर पर हाथ रखते हुए कहा। सुबाहु ने नेत्र बंद कर लिये।

***

दानव संहिता

भद्रक अपने भवन में सिंहासन पर विराजमान था। वह दानव कुल में जन्मा था। उसके पिता दानवों के एक छोटे संगठन के प्रमुख थे। उन्होंने आजीवन उद्दंड़ एवं असभ्य दानवों को संगठित करके उनकी समाज रचना तैयार करने के यत्न किया था। उन्होंने यही इच्छा अपने पुत्र भद्रक को अपने मृत्यु के समय उपहार में दी थी।

भद्रक अपने पिता के उद्देश्य के प्रति निष्ठावान था। उसने अनेक दानव एवं राक्षस संगठनो को अपने अथक प्रयास को एकत्र किया और उन्हें एक छत्र में लाने हेतु निरंतर प्रयासरत था। वह मानवों की ही भाँति दानवों को भी हर क्षेत्र में विकास करता देखने को इच्छुक था। किन्तु वह समझता था कि दानवों का गुणधर्म ही ऐसा है कि उन्हें नियंत्रित और सुनियोजित कर एक सभ्य दानव समाज की रचना करना कठिन है। उसके क्रांतिकारी विचारों से अनेक दानव एवं राक्षस सहमत थे। सहमत होने वाले में बहुसंख्यक वे थे जिनके घर के सदस्य दानवों, राक्षसों एवं मानवों से वर्चस्व के अनेकों युद्धों एवं विचारधारा की लड़ाई में अपने प्राण गंवा चुके थे। वे समझ चुके थे विचारधारा के टकराव से कोई लाभ नही होगा, उन्हें आवश्यकता है उनके नीति एवम् नियमों को बदलने और एक सर्वमान्य संहिता लागू करने की। ऐसे दानवों एवं राक्षसों की स्वामिभक्ति पाकर भद्रक ने अपना एक छोटा राज्य बना लिया था। वह राज्य वन के एक दुर्गम क्षेत्र में पहाड़ियों एवं घने वृक्षों के मध्य स्थित था। जो मुख्यतया कुछ दानव गाँवों का को एक सूत्र में पिरोकर बनाया गया था। मनुष्यों एवं अन्य जातियों की पहुँच से दूर और वह नगर सर्वथा गुप्त था। भद्रक ने अपनी स्वतंत्र नियमावली एवं संविधान की स्थापना की थी। उसके नगर में मानवों की ही भाँति उत्तम और पक्के भवन थे, पक्के मार्ग और स्वच्छ नगर, नियमों का पालन करने करवाने के लिये अधिकारी, सभ्यता से रहने वाले दानव नागरिक। मांसाहारी होने के कारण अब भी वे मांस पर ही निर्भर थे और उस शरीरीक संरचना को बदलना असंभव था। इसके लिये भद्रक ने दानवों का एक अलग दल बना रखा था जो उसके नगर के लिये शिकार का प्रबंध करता था। वे वनों से आखेट करते। नदियों से मछलियाँ पकड़ते। मांस हेतु पशुधन संवर्धन करते। उसके पिता द्वारा बनवाये तालाब में विभिन्न प्रजातियों की मछलियां पाली जाती। कुल मिलाकर भोजन के लिये उन्हें बाहरी विश्व पर निर्भर नही

रहना पड़ता था। जिस कारण उनके नगर वासियों का इतने वर्षों में कभी किसी अन्य जाति से टकराव नही हुआ था। भद्रक की समुचित व्यवस्था और दूरदृष्टि के कारण इस नगर को किसी दानव को अकाल या युद्ध में मृत्यु होते देखे वर्षों हो गये थे। भद्रक नगरवासियों के लिये एक अवतार के समान ही था जिसने दानवों का जीवन बदलने का बीड़ा उठाया था।

वही भद्रक आज चिंतित था। उसके सलाहकार एवं सुरक्षा अधिकारी अपने नायक को इस प्रकार देखकर विचलित थे। भद्रक इस समय अपनी सभा में विचारमग्न अवस्था में बैठा हुआ था। भद्रक ने एक सम्पूर्ण राजभवन मनुष्यों से प्रेरित होकर बनावाया हुआ था। भवन की साज सजावट, राजसभा इत्यादि सभी किसी राजसी महल की ही हुबहू प्रतिकृति लग रही थी। उसकी राजसभा के मध्य एक दानव हाथ झुकाये विनीत भाव में खड़ा था। सारे सभासद उसके द्वारा प्रदत्त सूचना से चिंतित दिखायी दे रहे थे।

“यह बहुत ही अशुभ समाचार है ‘शुण्ड’, यह हमारी असावधानी है कि इतना सब कुछ हो गया और हमें कुछ ज्ञात ही नहीं। वे चारो अयोध्या कैसे पहुँच गये?” भद्रक के मुख पर क्रोध था।

“नायक! हमें इसकी कोई आधिकारिक जानकारी नही है। वे सभी विद्रोही दल के सदस्य थे।” शुण्ड ने लज्जित होते हुए कहा।

“विद्रोही दल को अब अपने अनुचित कार्यकलापों को रोकना ही होगा। हमने सबसे अलग दानव सभ्यता इसलिये नही बसाई कि उजड्डु एवं पशुओं की तरह हम अपना जीवन व्यतीत करे। यदि हमें श्रेष्ठत्व अर्जित करना है तो श्रेष्ठ बनना होगा ना कि दूसरी प्रजातियों के समक्ष अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना होगा। मुझे एक दानव प्रमुख होने के नाते उन चारों की मृत्यु का दुःख है, किन्तु यदि वे वहाँ से जीवित आ भी जाते तो भी संविधान अनुसार उन्हें दंडित अवश्य किया जाता।” भद्रक नियमों के उल्लंघन को लेकर कठोर था।

उसी समय सभा में गुरु महेंद्र ने प्रवेश किया। उन्हें देखते ही भद्रक अपने आसन से उठ खड़ा हुआ और उनके सम्मान में हाथ जोड़ लिये। भद्रक के खड़े होते ही वहाँ उपस्थित सभी सभासद अपने अपने आसन से उठ खड़े हो गये और उन्होंने भी प्रणाम करके सम्मान जताया।

महेंद्र ने सब को आशीष दिया और भद्रक की ओर बढें।

“तुम दानवों के नायक हो भद्रक। कितनी बार समझाया है कि तुम्हें इस प्रकार किसी के समक्ष झुकना नही चाहिये।” महेंद्र मुस्कुराए।

“आप मेरे गुरु है। यह सत्ता, राज्य, नगर, संविधान, सभ्यता, यह सब आप ही के मार्गदर्शन के कारण संभव हुआ है गुरुदेव। मैं इतना कृतघ्न तो नही हूँ कि आपका सम्मान न कर सकूँ।” भद्रक ने सौम्य शब्दों में कहा।

“भद्रक! तुम इस समय नायक के पद पर विराजमान हो। यह पद सबसे ऊंचा है, इसलिये इसकी मर्यादा को ध्यान में रखो और किसी के समक्ष मत झुको।” महेंद्र को भद्रक से वाद विवाद में बड़ा आनंद आता था। वे सदैव भद्रक की वाकपटुता का आनंद लेते रहते थे।

“गुरुदेव, यदि बात पद के सम्मान की है, तो निस्संदेह गुरु से बड़ा पद किसी का भी नही। गुरु को तो परब्रम्ह और त्रिदेव कहा गया है, तो एक नायक के पद का भला क्या महत्व।” भद्रक मुस्कुराया। महेंद्र शांत हो गये, उनके मुख पर स्मित हास्य था।

“हमें सदैव ऐसा प्रतीत होता है कि इस दानव कुल में किसी देवता अथवा ब्राम्हण ने जन्म लिया है भद्रक। तुम्हारा आचरण, बुद्धि, व्यवहार एवं दूरदृष्टि तुम्हें दानवों से भिन्न बनाती है। यही कारण है कि तुम्हारे रूप में एक आशा की किरण दिखायी देती है। तुम्हें देखकर प्रतीत होता है कि वह दिन दूर नही जब दानवों एवं राक्षसों को भी समाज द्वारा सम्मान सहित स्वीकार किया जायेगा और समाज का अंग माना जायेगा।” महेंद्र ने कहा।

“क्षमा करें गुरु देव। एकमात्र मेरे प्रयास से यह संभव नही है, आप देख ही रहे है कुछ दानव संगठन मेरी इस विचारधारा के विरुद्ध हैं। उन्हें लगता है कि मैं दानवों एवं राक्षसों को कायर बना रहा हूँ। उनकी शक्तिशाली भुजाओं से परिश्रम करवाकर मैं उनकी शक्तियों का अपमान कर रहा हूँ। उनके उद्दंड़ और नैसर्गिक आचरण के विरुद्ध उनपर नियमावली थोप कर उन्हें अनुशासित करने की आड़ में उनके स्वतंत्रता पर प्रहार कर रहा हूँ। उनका मानना है कि दानव, दैत्य, राक्षस इत्यादि मनुष्यों से अधिक शक्तिशाली है तो इन्हें श्रेष्ठ होना ही चाहिये किन्तु केवल अपने बाहुबल पर। जब हम ही मनुष्यों एवं अन्य जातियों को स्वीकार नही कर सकते तो अन्य जातियां हमें सम्मान देंगी और हमें समाज में स्थान प्रदान करेंगी यह विचार अनुचित ही है। हमें सर्वप्रथम अपनी कार्यप्रणाली और स्वभाव में परिवर्तन लाना होगा गुरुदेव और यह मैं अकेला नही कर सकता।” भद्रक ने समस्या बताई।

“तुम अकेले नही हो भद्रक। तुमने एक विचारधारा को जन्म दिया है, विद्रोही अवश्य है, किन्तु तुम्हारे समर्थक कम नही है। वे सभी तुम्हारी

“आप मेरे गुरु है। यह सत्ता, राज्य, नगर, संविधान, सभ्यता, यह सब आप ही के मार्गदर्शन के कारण संभव हुआ है गुरुदेव। मैं इतना कृतघ्न तो नही हूँ कि आपका सम्मान न कर सकूँ।” भद्रक ने सौम्य शब्दों में कहा।

“भद्रक! तुम इस समय नायक के पद पर विराजमान हो। यह पद सबसे ऊंचा है, इसलिये इसकी मर्यादा को ध्यान में रखो और किसी के समक्ष मत झुको।” महेंद्र को भद्रक से वाद विवाद में बड़ा आनंद आता था। वे सदैव भद्रक की वाकपटुता का आनंद लेते रहते थे।

“गुरुदेव, यदि बात पद के सम्मान की है, तो निस्संदेह गुरु से बड़ा पद किसी का भी नही। गुरु को तो परब्रम्ह और त्रिदेव कहा गया है, तो एक नायक के पद का भला क्या महत्व।” भद्रक मुस्कुराया। महेंद्र शांत हो गये, उनके मुख पर स्मित हास्य था।

“हमें सदैव ऐसा प्रतीत होता है कि इस दानव कुल में किसी देवता अथवा ब्राम्हण ने जन्म लिया है भद्रक। तुम्हारा आचरण, बुद्धि, व्यवहार एवं दूरदृष्टि तुम्हें दानवों से भिन्न बनाती है। यही कारण है कि तुम्हारे रूप में एक आशा की किरण दिखायी देती है। तुम्हें देखकर प्रतीत होता है कि वह दिन दूर नही जब दानवों एवं राक्षसों को भी समाज द्वारा सम्मान सहित स्वीकार किया जायेगा और समाज का अंग माना जायेगा।” महेंद्र ने कहा।

“क्षमा करें गुरु देव। एकमात्र मेरे प्रयास से यह संभव नही है, आप देख ही रहे है कुछ दानव संगठन मेरी इस विचारधारा के विरुद्ध हैं। उन्हें लगता है कि मैं दानवों एवं राक्षसों को कायर बना रहा हूँ। उनकी शक्तिशाली भुजाओं से परिश्रम करवाकर मैं उनकी शक्तियों का अपमान कर रहा हूँ। उनके उद्दंड़ और नैसर्गिक आचरण के विरुद्ध उनपर नियमावली थोप कर उन्हें अनुशासित करने की आड़ में उनके स्वतंत्रता पर प्रहार कर रहा हूँ। उनका मानना है कि दानव, दैत्य, राक्षस इत्यादि मनुष्यों से अधिक शक्तिशाली है तो इन्हें श्रेष्ठ होना ही चाहिये किन्तु केवल अपने बाहुबल पर। जब हम ही मनुष्यों एवं अन्य जातियों को स्वीकार नही कर सकते तो अन्य जातियां हमें सम्मान देंगी और हमें समाज में स्थान प्रदान करेंगी यह विचार अनुचित ही है। हमें सर्वप्रथम अपनी कार्यप्रणाली और स्वभाव में परिवर्तन लाना होगा गुरुदेव और यह मैं अकेला नही कर सकता।” भद्रक ने समस्या बताई।

“तुम अकेले नही हो भद्रक। तुमने एक विचारधारा को जन्म दिया है, विद्रोही अवश्य है, किन्तु तुम्हारे समर्थक कम नही है। वे सभी तुम्हारी

ही विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते है और यह केवल तुम्हारे कारण है। इसी प्रकार यदि तुम अकेले किसी की विचारधारा बदल सकते हो तो सोचो जब तुम्हारे अनुयायी तुम्हारी विचारधारा पर चले तो वे एक नये समाज का निर्माण अवश्य करेंगे। हर वह दानव जो सभ्यता से रहना चाहता है, मुख्यधारा में आकर विकास करना चाहता है, वह तुम्हारे साथ है, इसलिये स्वयं को अकेला न समझो।" महेंद्र ने उसके अशांत मन को शांत किया।

"अब चलता हूँ भद्रक, संध्या के समय मिलता हूँ। कुछ आवश्यक चर्चा करनी है।" कहकर बिना एक क्षण गंवाए महेंद्र सभा द्वार की ओर बढ़ गये।

भद्रक जानता था गुरु महेंद्र निकलने के पश्चात् पीछे नही मुड़ते। इसलिये उसने उन्हें रोकने का प्रयास भी नही किया। केवल सम्मान में खड़ा रहा। महेंद्र द्वार से ओझल हो चुके थे।

"आज की सभा समाप्त करता हूँ। हम इस विषय पर चर्चा अयोध्या घटना से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी इकट्ठी होने के पश्चात करेंगे।" भद्रक के आदेश देते ही सभी सभासद उठ खड़े हुए। भद्रक लंबे डग भरता हुआ सभा से निकल गया।

***

भद्रक अपने कक्ष में था। वह चिंतित था, गुरु महेंद्र की बातों से वह आश्वस्त होने का प्रयास कर रहा था किन्तु उसकी चिंता का कारण कुछ और ही था। वह कक्ष की खिड़की पर खड़ा अपने नगर को निहार रहा था।

उसी समय कक्ष में बलभद्र ने प्रवेश किया। बलभद्र भद्रक का छोटा भाई था। भद्रक जहाँ शांत स्वभाव का था, और हर कार्य करने से पहले उसके परिणाम के विषय में विचार करता था। वही बलभद्र पूर्ण दानवीय स्वभाव को परिभाषित करता था। दिवस रात्र मदिरा पान, दानव सुंदरियों के बीच घिरे रहना। अपने बल पर घमंड, अनियंत्रित क्रोध, वर्चस्व की वृत्ति और महत्वकांक्षा। वह भद्रक का एकदम विपरीत स्वरुप था। इस समय वह मदिरा के मद में था। भद्रक ने उसे मदिरा के मद में झूमते हुए देखा, एक क्षण को उसका क्रोध उबल पड़ा, किन्तु उसने उसे नियंत्रित कर लिया।

"आपने बुलाया बड़े भैय्या?" भद्रक ने बिना किसी औपचारिकता के वहाँ स्थित आरामदेह कुर्सी पर बैठते हुये उचकती हुई सी दृष्टि भद्रक की ओर डाली।

भद्रक ने कुछ नही कहा। वह आगे बढ़ा और कुर्सी के समीप ही एक दूसरे आसन पर बैठ गया। उसकी तीक्ष्ण दृष्टि मानो बलभद्र को भेदने पर उतारू थी।

“क्या हुआ बड़े भैय्या? आप इस प्रकार क्यों देख रहे है?” बलभद्र ने दृष्टि नीचे करते हुए कहा।

“यहाँ देखो बलभद्र, मेरे नेत्रों में देखो। दृष्टि मिलाकर बात करो मुझसे।” भद्रक का स्वर कड़ा हो गया। बलभद्र ने अचकचाते हुए दृष्टि ऊपर उठाई। उसके मटमैंले और मदिरा के मद से रक्तिम हुए नेत्र अब भद्रक की ओर स्थिर थे।

“तुमने ऐसा क्यों किया?”

“मैंने क्या किया?” बलभद्र ने पुनः दृष्टि नीचे कर ली।

“अयोध्या में तुम्हारे दल के सदस्य क्यों गये थे?” भद्रक ने अपने क्रोध पर भरसक नियंत्रण रखने का प्रयास किया। बलभद्र शांत रहा, वह चाहता तो झूठ बोल देता, किन्तु वह भद्रक के समक्ष झूठ बोल सके उसमे इतना साहस नही था । उसे पता था कि भद्रक ने यदि उसे आरोपी ठहराया है तो निश्चित ही भद्रक के पास ठोस प्रमाण और जानकारी होगी।

अपने प्रश्न का उत्तर न मिलते देख भद्रक उठ खड़ा हुआ।

“बलभद्र! हमारे पिता, दादा, परदादा जानते हो क्या थे? वे वनवासी थे। वनों में भटकते थे। हमारे पुरखों के पास भवन नही होते थे, वे गुफाओं, कन्दराओ एवं घने वृक्षों में निवास करते थे। भूख मिटाने के लिये केवल मांस भक्षण का ही ज्ञान था उन्हें, वे शिकारी थे। यदि शिकार ना मिले तो अनेक दिवस भूखे ही रह लेते थे क्योंकि उनका किसी भी प्रकार की सभ्यता से कोई संबंध न था। किसी भी प्रकार की कला, ज्ञान अथवा शिक्षा उन्हें नही थी। वर्चस्व के लिये अनेकों युद्ध होते। छोटी से छोटी बात के लिये भी भाई भाई के प्राण ले लेता। बस शक्ति ही एकमात्र वस्तु थी जो श्रेष्ठता का प्रमाण थी। शक्तिहीन केवल मरने के लिये ही बने थे। वस्त्र बनाने की कला अवगत नही थी, जिस पशु का आखेट किया उसी की खाल जैसे तैसे जोड़ कर आधा अधूरा शरीर ढंक लेते। कड़ाके की गर्मी में झुलसे रहते, भयंकर ठंड में सिकुड़े रहते, हड्डियां कड़कडाती रहती। शीत ऋतु में जन्मने वाले शिशुओ में से कुछ ही जीवित रह पाते। नन्हे शिशु ठंड़ से प्राण त्याग देते और स्त्रियाँ अस्वस्थता एवं प्रसव के पश्चात अनेक प्रकार के संक्रमण से ग्रसित हो जाती। हम जहाँ आखेट करतें

वही खाते और अस्वच्छता फैलाते, हमारे स्थानों पर सदैव अस्वच्छता का वातावरण रहता था। जिस कारण नाना प्रकार की व्याधियों से कोई ना कोई सदैव ग्रस्त रहता। बलशाली शरीर होने के कारण भले ही व्याधियां शीघ्र नही होती थी, किन्तु होने के पश्चात उपचार का कोई ज्ञान न होने से छोटी सी छोटी व्याधि भी बढ़ कर प्राणघातक हो जाती और गाँव के गाँव साफ़ हो जाते। ऊपर से मनुष्यों से आये दिन तनाव होता रहता।

हमारे पूर्वज बलशाली शरीर और अद्भुत क्षमताओं के मद में चूर रहते और अन्य जातियों पर प्रभुत्व पाने का प्रयास करते। जिस कारण हम दूसरी प्रजातियों के लिये एक संकट बन गये थे। मनुष्य शारीरिक रूप में हमारे सामने तुच्छ था। किन्तु उसने सभ्यता अपनायी, अनेकों कलायें आत्मसात की, ज्ञान का प्रसार किया, अध्ययन का महत्व समझा। जिसके परिणाम स्वरूप वह विकसित होता गया और हमसे शक्ति में तुच्छ समझे जाने वाला मनुष्य अपनी क्षमताओं एवं कलाओं के कारण दानवों को सीधे युद्ध में भी चुनौती देने लगा। हम शताब्दियों तक एक दूसरे से लड़ते रहे, रक्त के प्यासे बने रहे किन्तु उसका कोई निष्कर्ष नही निकला। दूसरी जातियां विकास कर गयी और हम अब भी वही थे जहाँ से हमारा आरंभ हुआ था। हमारे पिता जी इस अव्यवस्था से सर्वथा अप्रसन्न थे। वे मनुष्यों से प्रभावित थे। उनके विकास और ज्ञान अर्जन करने की लालसा से प्रभावित थे। उनकी सभ्यता, संहिता, दण्डव्यवस्था, न्याय प्रक्रिया और नगरीय संरचना ने उन्हें प्रेरित किया। एक युद्ध में उन्होंने अपना सब कुछ गंवा दिया। वे उस समय किशोर थे जब मनुष्यों एवं दानवों में एक भीषण युद्ध हुआ जिसमे वे अनाथ हो गये। उन्हें उस समय एक मनुष्य ने ही शरण दी। वे एक ऋषि थे जिन्होंने पिता जी की जाति को दुर्लक्ष करते हुए उनका उपचार किया और उन्हें वात्सल्य दिया। ऋषि के सानिध्य में उन्होंने ज्ञान अर्जित किया। अनेक कलायें सीखी, सभ्यता सीखी। समूह और नगरव्यवस्था की महत्ता समझी। फिर ऋषि की मृत्यु के पश्चात वे पुन: एक छोटे दानव समूह का भाग बने। उनकी बुद्धिमत्ता और निर्णय क्षमता के कारण वे शीघ्र ही उस समूह के नायक बन गये और वहाँ से उन्होंने दानवों को सभ्यता में लाने की आधारशिला स्थापित की। मैं अपने पिता के उसी स्वप्न पर कायम हूँ। जिसका परिणाम है यह हमारा नगर, हमारी संरचना, हमारी सभ्यता। हम एक आदर्श है दानव समाज के लिये। एक उदाहरण है कि हम भी मुख्यधारा में साथ साथ विकास कर सकते है।” भद्रक कुछ क्षण के लिये रुका।

“आज तुम इस पक्के भवन में रह रहे हो। खाने के लिये उत्तम मांस की व्यवस्था है, भोजन के लिये वन वन नही भटकना पड़ रहा है। शीत, ग्रीष्म एवं वर्षा से बचने के उपाय जानते हो। अस्वस्थ होने पर उत्तम उपचार की व्यवस्था है। युद्ध न होने के कारण किसी भी प्रकार की जीवन हानि नही है, सारे परिवार सुख से जीवन बिता रहे हैं, समृद्ध है। जीविकोपार्जन के लिये विभिन्न कलायें हैं, जिस कारण हम जहाँ भी जाकर बस जाये वहाँ भी सभ्य जीवन जी सकते है। दूसरी जातियों से बिना किसी टकराव या वैमनस्य के हम शांति से जीवन रह सकते हैं। यह सब हमने इतनी सहजता से प्राप्त नही किया है बलभद्र। वर्षो की तपस्या है यह, एक शतक का अथाह प्रयास और परिश्रम है यह। बलिदान है यह हमारे पूर्वजों का। तो उसका मूल्य समझो भाई। तुम्हें जो सुख समृद्धि वाला सहज जीवन प्राप्त हुआ है वह जीवन अन्य दानवों एवं राक्षसों को नही मिला है, क्योंकि वे अब भी उसी विचारधारा में जीना चाहते है। ऐसा कुछ भी ना करो जिस कारण हमारी वर्षो की तपस्या नष्ट हो जाये। हमारी सभ्यता के आरंभ में ही उसका समापन हो जाये। समझो बलभद्र।” भद्रक का क्रोध समाप्त हो चुका था।

“और किसी मूषक की भाँति हम घने वनों एवं दुर्गम पर्वतों से बने इस नगर रुपी कारावास में आजीवन बंदी बने रहे।” बलभद्र गरज उठा। उसके स्वर की तीव्रता देख कर क्षण भर को भद्रक तक सिहर गया।

“बड़े भैय्या! आप बहुत भोले हैं। आप अपने पूर्वजों एवं अन्य जातियों के पिछड़ेपन और दुर्दशा के लिये अपनी जाती की अज्ञानता, स्वभाव और असभ्यता को दोष देते है जबकि सत्य तो यह है कि इन मनुष्यों ने हम पर सदैव अत्याचार ही किया है। हम तो प्राकृतिक रूप से जैसे बने थे वैसा ही आचरण कर रहे है। किन्तु मनुष्य हमें कभी अपने समक्ष खड़े होते नही देख सकता। उनके अत्याचारों एवं महत्वकांक्षा को दोष देने के बजाय आप उनसे प्रेरणा लेने के लिये कह रहे हैं? यह मनुष्य है क्या भैय्या? एक दानव अकेले ही दस मनुष्यों को अपने दोनों हाथों से चीर सकता है। दानवों में बाहुबल है, अद्भुत क्षमता है। आप यह क्यों नही समझ रहे कि हमारी शक्ति और हमारी अद्भुत क्षमता हमें क्यों प्राप्त हुई है? क्योंकि हम अन्य जातियों पर सत्ता करने के लिये बने है। हम अशक्त नही है, हमें इन मनुष्यों से भयभीत होने की आवश्यकता ही नहीं है? हमारा नैसर्गिक स्वभाव हम दबा नही सकते, यदि हमें दबा कर सभ्यता का पाखंड करते है तो यह पाखंड शीघ्र ही समाप्त हो जायेगा भैय्या। राक्षसी प्रवृत्ति दबने

के लिये नही बनी है। आपके नगर और इस तथकथित सभ्यता में ही ना जाने कितने ही दानव और राक्षस असंतुष्ट है, वे इस प्रकार से नही रहना चाहते। वे स्वछन्द रहना चाहते है। इतनी शक्तियों का क्या उपयोग जब हम यहाँ पालतू पशुओं की भाँति एक बाड़े में ही पड़े रहे? आपके सूत्रों ने बताया नही किस प्रकार से केवल चार दानवों ने अयोध्या की एक बड़ी टुकड़ी को रसातल में मिला दिया था। मेरे मित्रों ने अयोध्यावासियों को उनकी क्षमता का और हमारे बल का परिचय करवा दिया है।" बलभद्र उठ खड़ा हुआ और अब उसने अपनी दृष्टि सीधे भद्रक की दृष्टि पर स्थिर रखी। अब उसे किसी भी प्रकार का संकोच या ग्लानि नही थी।

"किन्तु उन चारों को यमलोक भेजने वाले भी कुछ व्यापारी ही थे ना बलभद्र। गुप्तचरों ने बताया कि एक किशोर बालक ने भी उन्हें कड़ी टक्कर दी थी। क्या इस से यह प्रमाणित नही होता कि बल से बुद्धि अधिक घातक होती है? मनुष्य को कमतर आंकने की भूल न करो बलभद्र।" भद्रक ने उसे समझाने का प्रयास किया।

"मैं अपना कर्तव्य वहन ही कर रहा हूँ। मैं इस प्रकार से शांत नही रह सकता। यह हमारा स्वभाव ही नही है। मैं अपनी दानव जाति को श्रेष्ठ मानता हूँ, मुझे मनुष्यों की तरह नकल करने की आवश्यकता नही है और न ही इस छद्म सभ्यता के आवरण की। बड़े भैय्या आप समझने का प्रयास कीजिये। आपने यदि अब दानवों एवं राक्षसों को संगठित किया है, उनके आपसी मतभेद मिटा कर उन्हें एक सूत्र में पिरोया है तो उसका सदुपयोग कीजिये। यही तो समय है, अब हमारी एकता के कारण हम एक प्रकार से अविजित सेना के समान है। आपको तो चाहिये कि हम सभी अपने आसपास के छोटे राज्यों पर अपना अधिकार कर लें और दानव सभ्यता को वह अधिकार दिलवायें जिसके लिये उसकी रचना हुई है।" कहते हुए बलभद्र लड़खडाया। भद्रक ने उसे थाम लिया। बलभद्र के नेत्र मुंदने लगे थे और स्वर अस्पष्ट हो रहे थे।

"यह तुम नही कह रहे हो बलभद्र। यह तुम्हारी मदिरा कह रही है। तुम जानते हो कि हमारी सभ्यता का अस्तित्व तभी तक है जब तक हम यहाँ है। जब तक हम किसी अन्य जाति के प्रति द्वेष नही रखते। हमने यदि आरंभ किया तो हम फिर उसी युग में चले जायेंगे जहाँ से हमने आरंभ किया है। स्वभाव पर नियंत्रण पाना, संयमित करना किसी भी प्रकार की हीनता नही है। यह तो एक कौशल है, तप हैं। जिसके लिये हमें स्वयं पर गर्व होना चाहिये मेरे भाई। मनुष्य भी आदिम ही था आरंभ में, किन्तु

उसने अपनी प्रवृत्ति को त्यागकर ही विकास किया है।" भद्रक यह जानते हुए भी बड़बडा रहा था कि बलभद्र अब कुछ भी सुन पाने में असमर्थ था। भद्रक ने उसे प्रेम से निहारा। वह उसका एकमात्र भाई था, उसके बालपन से लेकर अब तक भद्रक ने उसे पिता के समान ही प्रेम किया था। वह उसका भाई नही अपितु पुत्र समान ही था। वह बस उसके स्वभाव पर नियंत्रण रखना कभी सीख नही पाया था।

भद्रक ने उसे शैय्या पर सुला दिया। उसके मुख पर बलभद्र के प्रति प्रेम स्पष्ट झलक रहा था। किन्तु कुछ क्षणों में वह प्रेम अदृश्य हो गया और उसका स्थान चिंता ने ले लिया।

"तुम नही जानते बलभद्र, अयोध्या में तुमने जो आरंभ किया है उसका अंत कितना भयानक होगा।"

***

सन २००८

कर्तव्य से बंधा

उसने सर्वप्रथम सिंदूरी रंग से बनी हुई श्री हनुमान जी की प्रतिमा के समक्ष घुटनों पर झुक कर प्रणाम किया और मंदिर की कच्ची भूमि पर नतमस्तक हो गया, फिर उसने वेदी पर रखी हल्दी कुमकुम से सुसज्जित तलवार को पूर्ण श्रद्धा से प्रणाम किया। उस समय वह मात्र एक सफ़ेद धोती पहने हुए था। उसका ऊपरी शरीर निर्वस्त्र था जिस कारण उसके मांसल कटाव स्पष्ट दिखायी दे रहे थे। मुख सौम्य किन्तु नेत्रों में विचित्र सी आभा थी। उसका पूर्ण व्यक्तित्व किसी अनजानी आभा से दमकता सा प्रतीत हो रहा था। कसरती सांचे में ढ़ला हुआ शरीर किसी तप्त अंगारे की भांति ही दमक रहा था। गौर वर्ण थोडा अलग ही प्रतीत होता था जिसमे हल्की सी तांबे की रंगत की छटा थी। चेहरा पूर्णतया क्लीन शेव्ड, चमकदार लम्बे बाल गर्दन तक फैले हुए थे और पसीने से भीगे हुए थे। शरीर पर पसीने के कारण प्रकाश की किरणें परिवर्तित सी होती प्रतीत हो रही थी। बांहे अद्भुत रुप से कम से कम १७ इंच का व्यास लिये हुए थी, जो उसके शक्तिशाली होने का प्रमाण थी। उसके सीने का व्यास और कटाव अद्भुत था। निस्संदेह उसका शरीर किसी भी मनुष्य के लिये शक्ति के आदर्श के समतुल्य ही था। वह अथर्व था, जो अब एक बालक से शक्तिशाली युवक में बदल चुका था। उसके मुख पर अब बचपन का भोलापन नही था, किन्तु दिव्यता और चमक उसी प्रकार थी। अथर्व को शक्ति मठ में प्रशिक्षण लेते हुए सात साल बीत चुके थे। वह अब युवा हो चुका था। समय के साथ साथ उसने अनगिनत युद्ध कलाओं में महारत प्राप्त कर ली थी। वह उस समय शक्ति मठ में बने प्रशिक्षण केंद्र में स्थित अखाड़े में था।

उससे कुछ ही दूरी पर देवदत्त और मटुक दोनों ही खड़े थे। दोनों ने किसी मजबूत धातु से बना हुआ कवच पहन रखा था। जो जोड़ों पर लचीला था और शायद वजन में भी एकदम हल्का। दोनों के हाथो में तलवारें थी। जो प्रकाश में चमक रही थी।

“अथर्व! अब समय है अभ्यास का। कसरत हो चुकी हो तो आरंभ करे?” देवदत्त ने कहा। देवदत्त के कानों के ऊपरी कोनो पर बालों में सफेदी स्पष्ट रूप से दिखायी दे रही थी। इतने वर्षो में उसमे मात्र यही एक बदलाव स्पष्ट दिखायी दे रहा था। अन्यथा अब भी उसमे किसी भी

प्रकार की बढ़ती उम्र का कोई लक्षण दिखायी नही दे रहा था। मटुक के बाल तो पहले से ही नही थे, इसलिये उस पर भी इन वर्षों का कोई ख़ास प्रभाव नही दिखायी दे रहा था।

“मै तैयार हूँ। तो आज आप मुझे आगे की जानकारी प्रदान करने वाले थे।” अथर्व ने मुस्कुराते हुए तलवार हवा में लहराते हुए अखाड़े में प्रवेश किया। अथर्व के अखाड़े में प्रवेश करते ही शक्ति मठ में हलचल मच गयी। वहाँ उपस्थित हर व्यक्ति अखाड़े के बाहर आकर खड़ा हो गया।

“अथर्व का अभ्यास आरंभ हो गया है।” उस भीड़ में कोई जोर से बोला, जिसे सुनकर सभी अपना अपना काम छोड़ कर दौड़े चले आये। देवदत्त उनकी इस व्यग्रता और उत्सुकता को देख कर मुस्कुरा दिया।

देवदत्त और मटुक दोनों अपने स्थानों से पूर्ण शक्ति से उछले। उनकी उछाल और उसकी गति आश्चर्य जनक रूप से अद्भुत थी। दोनों की तलवारें एक साथ लहराई और अथर्व पर टूट पड़ी। लेकिन अथर्व सतर्क था। वह भले ही लापरवाह दिखायी दे रहा था, किन्तु जैसे ही दोनों की तलवारें उसकी ओर बढ़ी उसने क्षण के सौवें हिस्से में अपनी तलवार पर दोनों की तलवारों का प्रहार झेल लिया। वहाँ उपस्थित सदस्यों को यह तक देखने का अवसर नही मिला कि आखिर अथर्व ने तलवार कब लहराई।

तलवारें भयंकर गति और शक्ति से टकराई थी। जिसका प्रमाण था उनके टकराव से उत्पन्न हुई चिंगारियां। अभी दोनों तलवार पर दबाव बना ही रहे थे कि अथर्व ने नीचे झुक कर अपने पूर्ण शरीर को कंधे का सहारा लेते हुए दोनों पर एक साथ सम्मिलित प्रहार कर दिया। दोनों अकस्मात हुए इस प्रहार से लड़खडाकर अखाड़े की जमीन पर जा गिरे। उनके गिरते ही सदस्यों ने उत्साह में तालियाँ बजाई। उत्साहवर्धन पर अथर्व ने उनकी ओर देखा और मुस्कुरा दिया और यहीं वो चूक गया। उसकी दृष्टि एक क्षण के लिये ही दोनों से हटी थी और उसी एक क्षण में देवदत्त ने नीचे पड़े पड़े ही अपने पैरों से अथर्व की पिंड़लियों पर प्रहार किया जिस कारण अथर्व लड़खडाकर गिर पड़ा। उसके गिरते ही मटुक उछलकर खड़ा हो गया और तुरंत अपनी तलवार अथर्व की ओर बढ़ा दी। अथर्व गिरने के बाद भी असावधान नही था, उसने फौरन लुढ़कते हुए अपना स्थान बदल लिया और तलवार भूमि में जा लगी। उसका लुढ़कना अभी समाप्त भी नही हुआ था कि देवदत्त दोनों हाथों से तलवार पकड़े उछल पड़ा। अब वह सीधे नीचे पड़े अथर्व पर आकर गिरने वाला ही था

किन्तु उसका शरीर हवा में ही रुक गया। उसने आश्चर्य से देखा। अथर्व ने अपने दोनों पैरों को सीधा करके देवदत्त को नीचे आने से पहले ही थाम लिया था।

“इसके लिये क्षमा करना बाबा।” अथर्व मुस्कुराया। अभी देवदत्त हैरान ही था कि अथर्व ने अपने पैरों को घुटनों से अपने सीने की ओर मोड़ा और एक झटके से विपरीत दिशा में पैर को गति देते हुए देवदत्त को उछाल दिया। उसने देवदत्त को किसी भारहीन खिलौने की भाँति ही उछाल फेंका था। देवदत सीधे दीवार से जा टकराया और अखाड़े की मिटटी में जा गिरा। देवदत्त को दीवार से टकराता देख कर अथर्व चिंतित होकर उसकी ओर दौड़ा और दौड़ते ही मटुक ने उसके पैरों में अपने पैर फंसा दिये जिससे वह मुंह के बल अखाड़े में जा गिरा।

उसके गिरते ही सदस्यों के मध्य हंसने के स्वर उभरने लगे। उनका भरपूर मनोरंजन हो रहा था। अथर्व बिना क्षण गंवाये फौरन अपने स्थान से उछला ही था कि मटुक ने पहले ही उसके बदलने वाले स्थान का अंदाजा लगाते हुए वही छलांग लगा कर तलवार का प्रहार कर दिया। कुछ समझने के पहले ही तलवार सीधे अथर्व के मस्तक पर जा लगी। सदस्यों में अचानक गहन सन्नाटा पसर गया। सबके सब शांत हो गये। पूरे शक्ति मठ में अभूतपूर्व शांति छा गयी।

मटुक मुस्कुरा रहा था। वह प्रहार करने में सफल रहा था। अथर्व पर उसने तलवार का प्रहार अवश्य किया था, किन्तु वह प्रहार तलवार के मध्य वाले सपाट हिस्से का हुआ था, धार वाले हिस्से से प्रहार होता तो यह प्रहार अवश्य प्राणघातक होता। यह प्रहार अब मस्तक पर केवल एक छड़ी के प्रहार जितना ही घातक था। मटुक मुस्कुराया, उसे देख अथर्व भी मुस्कुरा दिया और हंसने लगा। मटुक ने हाथ पकड़ कर उसे उठा दिया। अथर्व का पूर्ण शरीर मिटटी से पुता हुआ था। उसे देवदत्त की चिंता हुई किन्तु देवदत्त अपने स्थान खड़ा मुस्कुरा रहा था। अथर्व हैरान था, उसने अनजाने में ही अपनी शक्ति से कई गुना अधिक वेग से देवदत्त को उछाल फेंका था। उसे चिंता थी कि देवदत्त की कहीं कोई हड्डी ना टूट गयी हो, किन्तु देवदत्त के मुख से ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों उसे खरोंच तक नही आयी थी।

“इसलिये कहता हूँ, प्रशिक्षण के दौरान अति आत्मविश्वास दिखाने के बजाय सुरक्षा कवच पहना करो। देखो आज यदि मैंने सुरक्षा कवच ना पहना होता तो तुमने मेरी एकाध हड्डी तो तोड़ ही दी होती।” देवदत्त

के स्वर में अपने बेटे के लिये गर्व स्पष्ट झलक रहा था। अथर्व के मुख शर्मिंदगी के भाव उभरे।

“मुझे क्षमा करना बाबा।” वह लज्जित होते हुए बोला।

“तुम युद्धाभ्यास कर रहे थे। तुम प्रहार नही करते तब लज्जित होते तो समझ में आता। तुम चाहो तब भी अपनी क्षमताओं पर नियंत्रण नही रख सकते अथर्व। इसलिये लज्जित होकर मुझे गर्व करने का जो अवसर दिया है उसे मत खोने दो।” कहकर देवदत्त ने अथर्व को गले से लगा लिया। मटुक ने अथर्व के बाल सहलाये।

अब देवदत्त ने दर्शक बने हुए सदस्यों की ओर देखा। देवदत्त के भाव देख कर सभी वहाँ से झाग की भाँति हट गये और अपने अपने कार्यों में व्यस्त हो गये।

“तो अब आगे सुनो।” मटुक ने अथर्व के साथ चलते हुए कहा तो अथर्व चहक उठा। मानो वह इसी क्षण की प्रतीक्षा कर रहा था।

“मुझे युद्धाभ्यास का यही हिस्सा सर्वाधिक प्रिय है। जब आपसे हर बार हमारे उद्देश्य और प्रति कुछ नया जानने को मिलता है।” अथर्व ने इतना कहा और चुप हो गया। अथर्व और मटुक अब अखाड़े के किनारे ही मिटटी में अलथी पलथी मार कर बैठ गये थे। देवदत्त स्नानागार की ओर बढ़ गया।

“हमारे भारतवर्ष पर प्राचीन काल से ही निरंतर विदेशी आक्रांताओं एवं शक्तियों द्वारा सदैव आक्रमण हुए है। प्राचीन काल में राक्षस, दैत्य, दानव इत्यादि सक्रिय थे। किन्तु वे सभी यही के निवासी थे और उनसे द्वंद केवल वर्चस्व की लड़ाई के लिये ही था। उद्देश्य तब बदला जब भगवान श्री राम ने रावण का अंत किया, और कई अन्य राक्षस और दैत्य प्रमुखों का भी वध कर दिया। दैत्य, दानव इत्यादि आधारहीन और नेतृत्वहीन हो गये थे। ऐसे में अयोध्या से दूर एक गुप्त राज्य में भद्रक के रूप में दानवों को एक नया प्रतिनिधि मिल गया। भद्रक अन्य दानवों की भाँति क्रोधी और मूर्ख नही था और वह सदैव शांति का पक्षधर था। दानव जातियां तो उसे दानव के रूप में मानव की ही संज्ञा देती थी। उसके समर्थक तेजी से बढ़ रहे थे और उसी तेजी से उसके विरोधी भी बढ़ते जा रहे थे। विरोधियो में खुद उसका भाई बलभद्र तक था। उसका मानना था कि दैत्य, दानव, राक्षस इत्यादि शक्तिशाली प्रजातियाँ केवल राज्य करने के लिये ही जन्मी है। वो मानवों पर आधिपत्य जमाकर स्वयं की श्रेष्ठता को सिद्ध करना चाहता था। भद्रक उसे समझाता किन्तु वह कुछ भी नही

समझ पाता। उसी समय में ऋषि कपिल ने सुबाहु को अनेक विद्याओं और सिद्धिओं से परिचित कराया। प्रतिशोध एवं कुछ करने की इच्छा के वशीभूत होकर सुबाहु ने शीघ्र ही उन सभी विद्याओं में कुशलता अर्जित कर ली जिसमे कपिल और भार्गव निपुण थे। अब वह एक दुर्दम्य और अद्भुत योद्धा बन चुका था।" मटुक शांत हो गया।

"अब यह मत कहियेगा कि अगला भाग कल बताएँगे आप।" अथर्व को इसी बात से चिढ़ थी, मटुक और देवदत्त सदैव कहानियों को अधूरा ही छोड़ देते थे।

"यह अलग ही कहानी है अथर्व। सुबाहु, भार्गव, कपिल और भद्रक जैसे योद्धाओ के टकराव की कहानी अद्भुत है, जिसे एक ही बार में नही बताया जा सकता। अब तक तुम जान ही चुके हो किस प्रकार सुबाहु ने अपने माता पिता और नाना नानी को ताड़का के हाथों वीभत्स मृत्यु को प्राप्त होते देखा। भार्गव कुछ भी न कर पाया, वह अपने अदम्य प्रयासों के बाद भी खुद को और अपने भांजे सुबाहु को अनाथ होने से नही बचा पाया। उन्होंने ताड़का के साथ ही समस्त दानव प्रजाति से प्रतिशोध की शपथ ली और वनों में भटकते हुए उनका सामना ऋषि कपिल से हुआ जो स्वयं एक अदम्य योद्धा थे। कपिल ने भार्गव और सुबाहु में असीमित संभावनायें देखीं, उनकी कहानी और उद्देश्य जानने के पश्चात उन्हें प्रशिक्षित करके योद्धा बनाया। भार्गव और सुबाहु की सम्मिलित जोड़ी ने दानवों एवं राक्षसों का प्रतिरोध करना आरंभ कर दिया। वे उनके हर आक्रमण को विफल करते और कई दानवों को मृत्यु के द्वार पहुंचा देते। अयोध्या में हुए दानवों से युद्ध के कारण अब स्थितियां उन्हें भद्रक से मिलाने वाली थी।" मटुक फिर चुप हो गया।

"यह सब आप मुझे विस्तार से बता चुके है।" अथर्व ने मुंह बनाते हुए कहा।

"हां मैं सदैव सारांश में सब दोहराता हूँ ताकि तुम्हें सब स्मरण रहे। भद्रक और सुबाहु के टकराव की चर्चा हम बाद में करेंगे। अभी बस यह जान लो कि इसके पश्चात द्वापर युग में एक भीषण युद्ध हुआ था, जिसमे इस धरती पर उपस्थित सभी भीषण शक्तियों का नाश हो गया। वह था महाभारत का युद्ध। इस युद्ध में अनेक जातियां, प्रजातियां, सिद्धिधारक, और दिव्य शक्तियों ने युद्ध किया था। इस युद्ध के पश्चात कई जातियों का लगभग समूल नाश ही हो गया था। सुबाहु और भद्रक द्वारा जो कथा आरंभ हुई थी उस कथा का मध्य और चरमबिन्दु था महाभारत युद्ध। इस

युद्ध के पश्चात दानव, राक्षस प्रजातियाँ भी आश्चर्यजनक रूप से लगभग अदृश्य हो गयी। वे अब पहले की तरह दिखायी नही देते थे। इसके बाद युग बदला, कलियुग ने पैर पसारे और जिस तनाव की नींव रखी गयी थी उसके फलस्वरूप भारत पर विभिन्न जातियों, शक्तियों ने आक्रमण किया।" मटुक ने एक दीर्घ श्वास लिया।

"विदेशी आक्रमणकारी जिन्होंने लगातार एक के बाद एक भारत की संस्कृति पर निरंतर आघात किये। हमारे गौरवशाली इतिहास को धूमिल करने का प्रयास किया। हमारी प्राचीन धरोहरों का नाश किया, मंदिरों को ध्वस्त किया। करोड़ों भारतवासियों का नरसंहार किया।" इस बार अथर्व ने कहा, कहते कहते अथर्व के माथे की नस अत्याधिक क्रोध से उभरकर स्पष्ट रूप से दिखायी देने लगी।

"उनका उद्देश्य क्या था? वे सभी किसी वस्तु की खोज में थे अथर्व। तुम इनके हमलों की संरचना देखो। सभी ने आक्रमण किया और सबसे पहले धार्मिक स्थलों को ही निशाना बनाया और उनका नाश किया। कोई भी यहाँ अधिक दिनों तक टिका नही रहा। सभी लूट पाट करके निकल गये। तुम्हें नही लगता कि वे किसी ख़ास वस्तु की तलाश में थे, जिसे वे हर धार्मिक स्थल पर खोज रहे थे।"

"ऐसी क्या चीज हो सकती है? यह अवश्य कोई ऐसी शक्ति होगी जिसे प्राप्त करने के बाद विश्व की किसी अन्य वस्तु की आकांक्षा शेष न रह जाये। कोई विचित्र शक्ति तो नहीं?" अथर्व ने शंका जतायी।

"हमारे पुराणों में असंख्य ऐसी वस्तुओं का उल्लेख है, जिनका बाद में क्या हुआ, कहाँ गयी, कहीं कोई उल्लेख नही है। कुछ वस्तुयें ऐसी भी है जिनका कहीं कोई लिखित अलिखित उल्लेख ही नही है।" मटुक ने गला साफ़ किया।

"स्पष्ट बताइये।" अथर्व बेसब्र हो रहा था।

"शक्ति मठ में स्थापित यह दिव्य शिवलिंग।" मटुक ने इतना ही कहा।

अथर्व ने आश्चर्य से गर्भगृह में उस विचित्र प्रकाश से दमकते शिवलिंग की ओर देखा।

"क्या उन्हें इसकी खोज थी?"

"थी नही, है। वे अब भी इसी की खोज में है, कुछ समय से शिवलिंग की खोज में कुछ शक्तियों की रुचि देखी गयी है। हमने इससे पहले भी इन शक्तियों को परास्त किया है और सदैव करते भी रहेंगे। किन्तु अब

उनका तरीका बदल गया है। " मटुक ने इतना कहा और उठ खड़ा हुआ। यह संकेत था कि अब इसके आगे की कथा सुनने के लिये अथर्व को एक दिन और प्रतीक्षा करनी होगी।

लेकिन अथर्व की उत्सुकता अब चरम पर थी। वह मटुक के आगे जाकर खड़ा हो गया।

"आज नही। आज आप मुझे सम्पूर्ण कहानी बताएँगे। अब मैं युवक हो चुका हूँ। अपने निर्णय स्वयं ले सकता हूँ। आपके द्वारा सिखाई गयी अनेकों युद्धकलाओं में कुशलता प्राप्त की है। वेद पुराण आदि का गहन अध्ययन किया है। मैं अब पूर्ण रूप से अपने उद्देश्य पूर्ति के लिये तैयार हूँ। आपने मुझे पर्याप्त प्रशिक्षण दिया है और इसी नाते अब मैं चाहता हूँ के आप मुझे सारे रहस्य बताये।" अथर्व के मुख पर उसकी अधीरता स्पष्ट झलक रही थी।

"शिवलिंग की खोज आज भी निरंतर जारी है अथर्व। हम इस शिवलिंग को इस दुनिया से इसलिये ही छुपा कर रखते है। क्योंकि इसी में सबकी भलाई है। पहले दानव, दैत्य और राक्षस सदैव आक्रमण किया करते थे। किन्तु फिर अचानक से वे सब कैसे विलुप्त हो गये? तुम्हारे मन में कभी यह प्रश्न नही आता कि जब मानव और अन्य प्रजातियां एक साथ अस्तित्व में थी तो अचानक ऐसा क्या हो गया कि मानव शेष रह गया और दानव, दैत्य, राक्षस जैसी भीषण शक्तियाँ एकदम से विलुप्त हो गयी। उनका कहीं कोई उल्लेख ही नही मिला। वे सब कहां अदृश्य हो गये?" मटुक ने प्रश्नवाचक दृष्टि से अथर्व की ओर देखा। अथर्व शांत रहा क्योंकि वह उत्तर मटुक के मुख से ही सुनना चाहता था। मटुक दुबारा अखाड़े में पालथी मार कर बैठ गया। अथर्व ने भी उसका अनुसरण किया।

"दैत्य, दानव, राक्षस जैसी जातियां कभी विलुप्त हुई ही नही थी अथर्व। वे हमारे साथ साथ ही अस्तित्व में थी और सदैव रहेंगी। बस उन्होंने स्वयं को परिवेश के अनुसार बदलने की कला आत्मसात कर ली। रावण के वध के पश्चात वैसे भी आसुरी प्रजातियाँ बिखर गयी थी। महाभारत के भयंकर युद्ध के पश्चात रही सही कमी भी पूर्ण हो गयी। दानव समझ चुके थे कि मनुष्य ने अपनी बुद्धि के बल पर उनसे श्रेष्ठ का पद प्राप्त कर लिया है और वे सीधे युद्ध में उन्हें हानि तो पहुंचा सकते है लेकिन जीत नही सकते। राक्षसों और दानवों ने मनुष्यजाति से संभाव्य खतरे को देखते हुए भारतवर्ष की सीमाओं को ही छोड़ दिया, और विश्व

के विभिन्न हिस्सों में जा बसे। एक गुप्त नेतृत्व उनका संचालन कर रहा था और यह गुप्त नेतृत्व भद्रक द्वारा स्थापित किया हुआ था। जो शताब्दियों से दानव एवं रक्ष जातियों को जीवित रहने में सहायता कर रहा था।

दानव अब लुप्त हो चुके थे। वर्षो के प्रयास से आखिरकार उन्होंने समस्या की जड़ को समझा और सभ्यता का महत्व समझते हुए भद्रक द्वारा स्थापित नियमों का पालन किया और नेतृत्व निर्माण करने लगे। दानवों की विभिन्न जातियां विश्व के विभिन्न स्थानों पर स्थापित हो चुकी थी। वे धीरे धीरे गुप्त रूप से समाज में घुलने मिलने लगे। उनमे संकरित विवाह सामान्य होने लगे। दानवों, राक्षसों एवं मानवों के मिलन से एक नई प्रजाति का जन्म हुआ। जो दिखने में तो मनुष्य ही थे लेकिन उनकी शक्तियाँ अब भी विचित्र ही थी। इससे जातियों में विभिन्नता निर्माण हो गयी। किन्तु भद्रक द्वारा निर्मित संविधान के कारण सभी एक सूत्र से बंधे रहे। उनमे भी मनुष्यों की ही तरह विचारधारा की लड़ाई आरंभ हो गयी। कुछ जातियां शक्तिया अर्जित करके शक्तिशाली बनने की इच्छा रखती थी। तो कुछ जातियां अब इस विश्व की सभी जातियों के साथ घुलमिल कर रहने में विश्वास रखती थी। कुछ जातियों में अद्भुत क्षमतायें अब भी जस की तस थी और वंशानुगत रूप से एक पीढ़ी से दुसरी पीढ़ी को मिलती रही। रक्ष जातियां कई विचारधाराओ में बंटी रही और अनेक नये पंथों का जन्म हुआ जो रक्ष जातियों द्वारा स्थापित की गयी थी। भारत पर निरंतर आक्रमण उन्ही जातियों की देन है। वे सभी किसी न किसी रूप से भद्रक द्वारा संचालित संगठन के सम्पर्क में थे या उस विचारधारा से प्रभावित थे। उग्र विचारधारा वाली जातियों ने अब शक्तियाँ जुटा कर संगठित होकर आक्रमण करने आरंभ कर दिये। उन सभी की प्राथमिकता उस शिवलिंग की खोज ही थी। उस शिवलिंग को प्राप्त करने से वे इस विश्व की सबसे शक्तिशाली जाति का स्थान प्राप्त कर लेते और सर्वशक्तिशाली बनकर युगों से पनपती प्रतिशोध की अग्नि बुझाकर और विश्व को संचालित करते।

किन्तु अनेकों आक्रमणों के पश्चात भी उन्हें शिवलिंग कभी प्राप्त नही हुआ। भद्रक द्वारा स्थापित रक्षदल के मूल अनुयायी समझ गये थे कि इस विश्व को अब इस तरह के युद्धों से नहीं जीता जा सकता। इसलिये उन्होंने मनुष्य जाति में अपनी पैठ बनानी आरंभ कर दी और वे भी धीरे धीरे इसी समाज का हिस्सा बन गये। रक्ष जातियां आज हर क्षेत्र में है।

वे हमारे साथ ही रहते है, हम रोजाना उनसे टकराते है, मिलते है, व्यवहार करते है किन्तु कभी एकदूसरे को पहचान नही पाते। वे नेता हो सकते हैं, डॉक्टर हो सकते हैं, वकील और न्यायाधीश के पदों पर आसीन होंगे। इंजीनियर्स, साइंटिस्ट, रिटेलर्स, बिजनेसमैन, साहित्य कार, अभिनेता, हर क्षेत्र में वे होंगे। वे अब मनुष्यों के साथ ही रहते है और उन्हें पता भी नही चलता। हमें भी उनसे कोई समस्या नही होती, किन्तु केवल तब तक, जब तक उनसे हमें समस्या ना आने लगे। हमारा रक्षा दल कई बार उनकी गलत विचारधारा पर प्रहार करता रहता है, और उनके हर उस उद्देश्य को असफल करता है जो उन्हें इस शिवलिंग तक पहुंचा सके।" मटुक ने संक्षेप में अथर्व को जितना हो सके उतना बता दिया।

"क्या अभी के लिये इतना पर्याप्त है अथर्व?" मटुक मुस्कुराया।

"प्रश्न तो अब भी अनेक है, किन्तु अभी के लिये इतना पर्याप्त है। बस भारत पर हुए इतने आक्रमणों का एक यह भी कारण था यह नयी जानकारी है मेरे लिये। इस विषय पर मैंने कभी विचार ही नही किया था। हमारे इतिहास में ऐसा कोई वर्णन क्यों नही?" अथर्व ने शंका जाहिर की, मटुक समझ गया कि अथर्व आज इतनी सरलता से जाने देने वाला नही था।

"मैंने क्या कहा था अभी? वे हर क्षेत्र में हैं। वे इतिहासकार भी है, और साहित्यकार भी। किसी भी संस्कृति को नष्ट करना हो तो उसके लिये सर्वप्रथम उसके इतिहास को दूषित करना होता है और इन तथाकथित बुद्धिजीवियों और इतिहासकारों ने शताब्दियों से यही कार्य करने पर बल दिया है। उन्होंने हमारे इतिहास और हमारी संस्कृति की अपनी सुविधानुसार व्याख्या की। जिसका परिणाम आज तुम्हारे सामने ही है। हमारे इतिहास की कई बातें अब लुप्त हो चुकी है, हमारा गौरवशाली इतिहास इनके झूठे तत्वों से दूषित हो चुका है, जहाँ हमारी पीढ़ी को हमारे इतिहास से कुछ सीखना चाहिये वहीँ अब वही पीढ़ी उस इतिहास से नाक मुंह सिकोड़ती है। एक नया शब्द प्रचलन में आया है। 'माइथोलॉजी' अर्थात 'मिथ्या' अथवा काल्पनिक चित्रण, और हमारी पीढ़ी हमारे प्राचीन इतिहास को इसी संज्ञा से बुलाती है। उसे वह माइथोलॉजी कहती है जो हमारा इतिहास होना चाहिये। रक्ष सीधी लड़ाई में नही पड़ रहे, वे बस अपना प्रभाव दिखा रहे हैं। अब वे धीमी रणनीति पर काम कर रहे है, जो असरदार है। पिछली कुछ शताब्दियों ने उन्हें काफी बदल दिया और उन्होंने अब इस शताब्दी को काफी बदल

दिया। वैसे भी अब यह युग रक्ष जातियों के अनुकूल ही है। दैवी शक्तियाँ अब क्षीण हो चुकी है। मनुष्यों ने अपनी बुद्धि के बल पर अब सब प्राप्त कर लिया है, उसे भगवान की आवश्यकता नही रही। वह स्वयं भगवान बनना चाहता है। उसे नही पता कि वह जाने अनजाने अब वही करने जा रहा है जो रक्ष जातियां युगों से करती आ रही है। सर्वशक्तिशाली बनना।" कहते हुए मटुक उठ खड़ा हुआ। यह अथर्व के लिये संकेत था कि अब संवाद कल के लिये शेष रहेगा। वह भी चुपचाप उठा और मटुक के साथ चल दिया।

"बुराई के नाश के लिये तो सदैव ईश्वर ने अवतार लिया है ना? तो क्या अब नही आयेंगे?" अथर्व के स्वर में कठोरता थी।

मटुक मुस्कुराया, उसकी मुस्कान में व्यंग्य था और एक पीड़ा भी।

"अब भगवान नही आते। वे हम से रूठ चुके है।"

***

अथर्व अपने मकान से जल्दबाजी में निकला, उसकी गति बता रही थी कि उसे कहीं जाने की जल्दी थी। इस समय वह एक चुस्त नीली जींस और गहरे नीले रंग की पोलो टी शर्ट में गजब जंच रहा था। किसी प्रोफेशनल बॉडीबिल्डर नुमा तराशा हुआ शरीर किसी को भी उसकी ओर प्रभावित कर सकने में सक्षम था।

उसने कोने में बनी हुई कामचलाऊ पार्किंग में से अपनी बाइक में चाभी घुमायी और बाइक स्टार्ट करके ज्यो ही पीछे खींची, एक युवती उसकी पिछली सीट पर बैठने का प्रयास करने लगी। अथर्व ने पीछे मुड़ कर देखा।

वह बेहद ख़ूबसूरत युवती थी। उसने अपने छरहरे शरीर पर इस समय पीले रंग का एक लॉन्ग स्लीव कुर्ता और सफ़ेद जींस पहनी हुई थी। अंडाकार चेहरा, बड़ी आँखे, नुकीली और बारीक नाक, खुले बाल, और दूधिया रंगत उसे बेहद ख़ूबसूरत बनाते थे। वह अथर्व को भौंचक होता देखकर खिलखिलाई। हंसने से उसकी सुंदरता में मानो और निखार आ गया था।

"अरे तू? उतर नीचे।" अथर्व उसे देखकर चिढ़ सा गया।

"अरे ऐसा क्या बोल रहा है? मुझे लाइब्रेरी तक छोड़ दे ना प्लीज। मेरे प्रोजेक्ट के लिये कुछ रिसर्च बाकी है।" वह अथर्व को मनाने का प्रयास करते हुए बोली।

“दीक्षा! इस समय मैं कहीं और जा रहा हूँ, और तेरी लाइब्रेरी दूसरी ओर है। तू रिक्शा करके चली जा, मेरा दिमाग ना खा सुबह सुबह।” अथर्व ने उसे सीट से लगभग धकेल कर हटाया। वह बुरा सा मुंह बना कर पीछे हट गयी।

“अरे क्यों झिड़क रहा है उसे? खबरदार जो मेरी फूल सी बच्ची को डांटा तो। इतने बड़े हो गये हो और अब भी बचपना गया नही तुम दोनों का।” अथर्व की माँ ने उन दोनों की हल्की झड़प होते देखकर आंगन से ही कहा।

“लेकिन माँ……”

“चुप कर। ले जा इसे, जहाँ जाना चाहती है छोड़ दे, नही तो अभी तेरे पिताजी से शिकायत करती हूँ कि तू दीक्षा को तंग कर रहा है।” माँ ने धमकाया तो अथर्व ने मुंह बना लिया।

“अच्छा लद जाओ।” अथर्व ने गुस्से में कहा।

“प्यार से।” माँ ने आँखे तरेरते हुए कहा। अथर्व ने चेहरे पर जबरदस्ती की मुस्कान लाकर दीक्षा की ओर बड़े प्रेम से देखा।

“विराजिये।” शब्दों में बनावटी मिठास लाते हुए अथर्व ने व्यंग्य से कहा। दीक्षा ने उसके व्यंग्य को नजरअंदाज कर दिया और बलखाते हुए एक झटके से सीट पर उछल कर बैठ गयी। इससे बाइक थोड़ी ड़गमगा गयी।

“अरेरे! गिरा कर ही दम लेगी क्या? आराम से बैठ ना।” अथर्व ने त्रस्त होते हुए कहा।

“अरे अब चलो भी। फूल जैसी ही तो हूँ मैं, भला मेरे बैठने से कौन सी तुम्हारी बाइक गिर जायेगी, सीधे सीधे कहो तुम लड़खडा रहे हो।” दीक्षा ने उसे छेड़ते हुए कहा। अथर्व सकपका गया।

“बस शुरु हो गयी तू।” कहकर अथर्व ने बाइक स्टार्ट की। यह बात और थी कि दीक्षा के आने से वह अप्रसन्न होने का दिखावा भले ही कर रहा था लेकिन उसके होंठो की मुस्कुराहट और चेहरे की लाली स्पष्ट चुगली कर रही थी कि वह दीक्षा के आने पर कितना खुश था। कुछ ही देर में वह लाइब्रेरी की ओर जाने वाली सड़क पकड़ चुका था।

***

वह माया ग्रुप का ऑफिशियल क्रूज था, जो इस समय अरबी समुद्र के मध्य था। इस समय महेश क्रूज के डेक पर खड़े होकर समुद्र में डूबते सूर्य को देख रहा था। डेक की रेलिंग पर दोनों हाथ टिकाये समुद्र की

शीतलता को अनुभव कर रहा था। उसने अपने जैकेट के बटन्स खोल दिये और टाई ढीली कर दी। अब उसकी जैकेट हवा के झोंको से लहरा रही थी। महेश ने अपनी आँखे बंद की। उसेक मुख पर अब पहले से अधिक झुर्रिया थी। किन्तु शरीर अब भी उसी तरह बलिष्ठ और सुदृढ़ था। कुछ ही दूरी पर उसके तीन बॉडीगार्ड्स हाथ बांधे चौकन्ने खड़े थे। तीनों के कंधो पर चमड़े से बनी होलस्टर में पिस्तौलें स्पष्ट देखी जा सकती थी।

महेश का व्यक्तित्व उस समय समुद्र की लहरों से ज्यादा ही अशांत लग रहा था। फ्रैंक ने डेक पर प्रवेश किया और सीधे महेश के साथ जाकर खड़ा हो गया।

“फ्रैंक! अब तुम्हारी जरूरत माया को है। उसे तुम्हारे मार्गदर्शन और अनुभव की कहीं ज्यादा आवश्यकता है।” महेश ने आँखे खोले बगैर ही कहा। उसने फ्रैंक की मौजूदगी को महसूस कर लिया था। फ्रैंक बस मुस्कुराया।

“मुझे आपको सूचित करना जरूरी लगा।” फ्रैंक ने कहा।

“बोलो।”

“जैसा कि हम अपनी वर्षों की खोजबीन कर रहे थे, हमने अब तक के इकट्ठे किये गये सुबूतों से कुल आठ जगहों को मार्क किया था जहाँ उस ‘शिवलिंग’ के होने की अधिक सम्भावना थी।” फ्रैंक ने कहा।

“नया बताओ।” महेश ने सपाट भाव से कहा।

“आपको जानकर ख़ुशी होगी हमने दो जगहों को कन्फर्म स्पॉट कर लिया है। जहाँ सबसे प्रबल संभावनाये है। हमने अपने सभी सूत्रों के प्रभाव से उन जगहों की रेकी आरंभ कर दी है।” फ्रैंक के स्वर में अधीरता थी।

“यदि खबर सही है, और सुबूत पुख्ता है तो अपने सूत्रों से कहकर माया ग्रुप द्वारा अपने लोगो को वहाँ के कन्स्ट्रक्शन वगैरह के ठेके दिलवा दो। जिस जगह पर शक है वहाँ के सारे टेंड़र्स हमारे होने चाहिये।” महेश ने आँखे खोलते हुए कहा। उसकी आँखों में अब एक उत्साही चमक स्पष्ट दिखायी पड़ रही थी।

“कुछ पुरातन और टूरिस्ट स्पॉट्स भी है।” फ्रैंक बोला।

“तुम्हें पता होना चाहिये के धार्मिक और प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों पर निर्माण की अनुमति नही होती।” महेश ने सपाट भाव से कहा।

“जी सर! इसीलिये हमने हमारी पुरातत्ववेत्ताओं के एक दल को रेकी का कार्य सौंपा है।”

महेश फ्रैंक के उत्तर से आश्वस्त हुआ।

“कार्य में तेजी लाओ फ्रैंक और अभी फिलहाल माया को इसमें शामिल करने की कोई जरूरत नहीं है। उसे अभी भी काफी सेट अप करने है। मेरी रिटायरमेंट के बाद अब वही सारा बिजनेस संभाल रहा है। मैं उस पर अनावश्यक बोझ नही देना चाहता। इसीलिये बिजनेस की सारी जिम्मेदारियों से मुक्त होने के पश्चात मैंने अपना सारा ध्यान अपने उद्देश्य की ओर केन्द्रित कर दिया। जहां तक संभव हो सके माया को दूर रखो, अभी उसका समय नही आया है। मैं नही चाहता कि किसी भी प्रकार की कोई गड़बडी हो और रक्षा दल पुन: हमला करे। उनकी स्ट्रेटजी साफ़ है, कहीं भी कोई संदेहास्पद हरकत देखते है तो उसे समाप्त कर देते है और मैं नही चाहता कि फिलहाल रक्षा दल और माया आमने सामने आये।” महेश के स्वर में थोड़ी सी चिंता झलक रही थी। जिसे फ्रैंक की तीक्ष्ण नजरों ने फौरन ताड़ लिया था।

“सर! आप माया सर को कहीं अंडरएस्टीमेट तो नही कर रहे? आप जानते है कि वे स्वयं ऐसे खतरों से निपटने में सक्षम हैं।” फ्रैंक ने मन की बात कहीं।

“मुझे उसकी क्षमताओं पर कतई अविश्वास नही फ्रैंक। लेकिन मैं एक बाप भी हूँ।” महेश मुस्कुराया।

“जैसा आप उचित समझे।” फ्रैंक ने कहा और रेलिंग के पास आकर खड़ा हो गया। ढ़लते सूर्य की किरणों के कारण आकाश में लाली थी। फ्रैंक उसे ही देख रहा था। महेश ने पुन: अपनी आँखे बंद कर ली।

***

अथर्व गंगा आरती में सम्मिलित होकर अभी घर पहुंचा ही था कि आंगन में दीक्षा को प्रतीक्षा करते हुए पाया। दीक्षा उसे देख कर मुस्कुराई, अथर्व समझ गया कि यह मुस्कुराहट नकली है। उसे जरुर उससे कोई काम है, या फिर कहीं जाना है। वह मात्र एक सफ़ेद धोती पहने हुए और पूजा की थाल हाथ में लिये जहाँ का तहां खड़ा रह गया। दीक्षा उसके उस दमकते बलिष्ठ और सुदृढ़ शरीर से अपनी दृष्टि हटा ही नही पा रही थी। कुछ ही क्षणों में उसे आभास हुआ कि उसका ऐसा उतावलापन गलत संदेश देता है, वह स्वयं पर शर्मा गयी और नज़रें नीची कर ली।

फिर अचानक उसके चेहरे पर सदैव की तरह एक नटखट मुस्कान उभरी।

“पण्डित जी पाय लागी।” दीक्षा ने अथर्व की ओर देखकर प्रतीकात्मक रूप से पैर छूने की मुद्रा में हाथ झुकाने का अभिनय करते हुए कहा।

“दीर्घायु भव बालिके। शंभर पुत्रवती भव।” अथर्व ने भी उसी शरारत में आशीर्वाद देने का अभिनय किया। उसका आशीर्वाद सुनकर तो एक पल के लिये दीक्षा झेंप सी गयी। फिर उसने स्वयं को संभाला और अपनी झेंप मुस्कान के तले छिपा ली।

“देखो! अभी आरती से आ रहा हूँ, इसलिये बेकार की बकबक मत करना।” कहते हुए अथर्व उसके समीप से होते हुए घर के आंगन की ओर बढ़ा। देवदत्त और कविता वही खड़े उनकी नोंक झोंक एवं शरारतों का आनंद ले रहे थे। अथर्व ने देवदत्त को मुस्कुराता हुआ देखा तो वह सकपका गया और नज़रें झुका ली। चुपचाप आगे बढ़कर उसने दोनों के चरण स्पर्श किये।

“खुश रहो!” दोनों ने सम्मिलित स्वर में आशीर्वाद दिया।

“माँ! आशीर्वाद में एक धौल मेरी ओर खींच कर देना अथर्व की पीठ पर।” दीक्षा ने अथर्व की माँ से शिकायत करने के अंदाज में कहा। अथर्व ने तिरछी निगाहों से उसे देखा, वह केवल हंस दी। उसी समय मटुक भी वहाँ कंधे पर झोला लटकाए और कुर्ता पाजामा पहने पहुँच गया।

“अरे अथर्व बेटा! जरा दीक्षा को चौराहे वाले मंदिर छोड़ देना, यह पगली सीधे सीधे तो कहेगी नहीं, लेकिन इसे जाना वही है। कब से इंतजार कर रही है कि तू आएगा और इसे छोड़ आयेगा।”

“जा अथर्व तू पहले मंदिर जाकर आजावरना दीक्षा मटुक को नोच , खायेगी।” देवदत्त ने मटुक की खिंचाई की, मटुक खिसियानी हंसी हंस कर रह गया।

“कपडे तो बदल लूँ पहले, या ऐसे ही निकल लूँ?” अथर्व ने झल्लाते हुए कहा।

“नहीं नहींकोई जरुरत नहीं है, ऐसे ही चलो !। इस रूप में चलने से तुम भी पुजारी ही दीखते हो, तो मंदिर में कतार लगाने की नौबत नहीं आयेगी।” दीक्षा पुनः मुस्कुराई।

“सही कह रही है यह। जा ऐसे ही चला जा। वैसे भी मंदिर ज्यादा दूर तो है नही। ला पूजा का साहित्य मुझे थमा दे।” कहते हुए बिना अथर्व के उत्तर की प्रतीक्षा किये देवदत्त ने उसके हाथों से पूजा की थाल थाम ली, और उसके हाथों में बाइक की चाभी थमा भी दी। अथर्व ने चाभी देखकर

विचित्र नजरों से अपने पिता की ओर देखा। देवदत्त ने तुरंत नज़रें चुरा ली और घर के बरामदे में चला गया।

अथर्व अपनी बाइक की ओर बढ़ा और चाभी घुमाकर बाइक स्टार्ट कर दी।

“इसका बस चले तो संपूर्ण भारत भ्रमण इसी धोती कुरते में ही करवा देगी।” अथर्व स्वयं से बड़बडाया। दीक्षा ख़ुशी के मारे उछल ही पड़ती लेकिन मटुक सामने ही खड़ा था इसलिये भावनाओं पर काबू रखते हुए वह किसी शांत लड़की की तरह बाइक की पिछली सीट पर चुपचाप बैठ गयी।

“आज कूदेगी नही? बड़े आराम से बैठ गयी तू तो।” अथर्व इतने धीमे बोला जितना केवल दीक्षा ही सुन सके।

“तू यहाँ से निकल फिर बताती हूँ।” वह उसके कमर में चिकोटी काटते हुए बोली। उसकी चिकोटी से अथर्व से एक्सिलरेटर दब गया और क्लच भी ज्यादा ही छूट गया और बाइक एकदम से उछल पड़ी, दीक्षा पहले से ही चिकोटी का परिणाम जानती थी इसलिये वह सावधान ही थी और इसी के साथ बाइक मोहल्ले से बाहर निकल कर सड़क पर आ गयी और कुछ ही देर में अथर्व की बाइक बनारस की भूलभुलैय्या नुमा सड़कों पर घूम रही थी।

दीक्षा बाजार की दुकानों को मंत्रमुग्ध सी निहार रही थी, अचानक से एक मिठाई की दुकान पर नजर पड़ते ही उसकी आँखों में एक चमक सी उभरी।

“आते हुए ना रामदीन काका के यहाँ से छेनेवाली बर्फिया लेनी है, ,मुझे बड़ी पसंद है फिर रोज की तरह गंगादीन के यहाँ दहीभल्ले भी खायेंगे जो मुझे और भी पसंद है और.......

“तुझे आखिर कौन सी चीज नहीं पसंद है?” दीक्षा की बात पूर्ण होने से पहले ही अथर्व ने उसे टोक दिया। दीक्षा ने बुरा सा मुंह बनाया।

“देख अब दुबारा बीच में टोका ना तो अब की कसकर चिकोटी लूँगी।” दीक्षा ने धमकाया। उसकी धमकी ने फौरन असर दिखाया और अथर्व एकदम शांत हो गया। उसे शांत देखर वह मुस्कुराई। थोड़ी ही देर में वे मंदिर परिसर में पहुँच चुके थे।

अथर्व ने बाइक वही रोक दी। दीक्षा बाइक से उतरी, अथर्व ने अभी इंजिन बंद नही किया था। उसने बाइक वापस मोडी।

“देख अगर तू यहाँ से वापस गया तो तेरे पिताजी से कहकर खाल खिंचवा लूँगी, कह रही हूँ हाँ।” दीक्षा उसे बाइक मोड़ते देखकर बोल उठी।

“अरे बाबा कहीं नही जा रहा। मंदिर के पास पार्किंग नही है, जानती है ना। तू पहुँच मंदिर में। मैं मदन की दुकान के सामने पार्क करके आता हूँ।” अथर्व ने जान छुडाते हुए कहा।

“ठीक है। जल्दी आना।” दीक्षा ने चेतावनी सी दी।

अथर्व ने चुपचाप सर हिला दिया और आगे बढ़ गया। मदन की दुकान कुछ ही दूरी पर थी। दीक्षा मंदिर की सीढियों पर माथा टेकते हुए आगे बढ़ी। आज मंदिर में भीड़ कुछ अधिक ही थी। दीक्षा ने भीड़ के मध्य से उचकते हुए अथर्व को एक नजर देखा। उसे बाइक पार्क करते देख वह मुस्कुराई।

अथर्व अब मंदिर से कुछ ही फिट की दूरी पर था। अचानक से मानों धरती कांप सी उठी। एक भीषण कर्णभेदी विस्फोट हुआ। विस्फोट से उत्पन्न लहर की तीव्रता से अथर्व के पैर जमीन से उखड़ गये और वह किसी पत्ते की तरह हवा में उछला और तीव्र गति से जहां से आया था उसी गली में पुन: जा गिरा। उसके कान सुन्न हो गये। कुछ क्षणों तक उसके कानों में मानो सीटियाँ सी गूंज रही थी। अथर्व के सम्पूर्ण शरीर में पीड़ा की एक तीव्र लहर उठ रही थी। वह बेहद तीव्र झटके से उछल कर भूमि से टकराया था, जिस कारण उसकी पसलियों में बेहद दर्द हो रहा था। उसका सम्पूर्ण शरीर धूल और धुएं से नहा गया था। केवल वही नही बल्कि उस गली में भी अब कुछ भी दिखायी नही दे रहा था। भयानक धुएं के गुबार ने उस गली को ढंक लिया था। अथर्व कुछ समझ ही न पा रहा था कि आखिर हुआ क्या है। उसका सर अब भी घूम रहा था। उस क्षण आकाश और धरती के बीच मानों फासला मिट सा गया था। उसे अपने चकराते सिर को संभालने में कुछ क्षण लगे। धुएं के बादल के पार अब कहीं से अग्नि की लपटें भी दिखायी देने लगी थी। धुंए के कारण सूर्य का प्रकाश भी मानो थम सा गया था। चारों ओर बस धुँआ, धूल और अँधेरा ही था।

“यह विस्फोट मंदिर में हुआ है, और द....दीक्षा!” अथर्व का मस्तिष्क झन्ना गया। उसने अपनी कमजोरी और पीड़ा को एकदम से नजरअंदाज कर दिया और खड़ा हो गया। वह पूर्णतया धूल और राख में नहाया हुआ था। उसने धुएं के केंद्र की ओर दौड़ लगायी ही थी की एक और भीषण

धमाका हुआ। मलबे के कुछ टुकड़े उसी ओर तीव्र गति से आ गिरे। अथर्व को उसकी कोई परवाह ही नहीं थी। उसने देखा लोगों की भीड़ धुएं के विपरीत दिशा में भाग रही थी। वे सभी ड़रे हुए थे, सहमे और चोटिल थे। हर कोई बदहवास सा भाग रहा था। हर कोई विस्फोट क्षेत्र से दूर भागने को तत्पर था। चीख, पुकार, क्रंदन के स्वरों से वातावरण गूंज रहा था। एकमात्र अथर्व ही ऐसा था जो विस्फोट की दिशा में भाग रहा था। वह लोगो की भीड़ को चीरता हुआ धुंए और मलबे के बीच दौड़ रहा था। इसी बीच एक धमाका और हुआ जिससे पुन: धरती कांप उठी। अथर्व भूमि पर गिर पड़ा। लेकिन गिरते ही फिर खड़ा हुआ और मंदिर की दिशा में भागा। जैसे जैसे वह आगे बढ़ता रहा वैसे वैसे धुएं का गुबार और गहरा होते जा रहा था। अब उसे लपटों की तपिश महसूस हुई। वह मंदिर के सामने ही खड़ा था। मंदिर में चीखों पुकार मची हुई थी। मंदिर और उसके आसपास का आधा परिसर लगभग नष्ट हो चुका था। कुछ बाकी था तो बस मलबे का विशालकाय ढेर और कुछ एकदूसरे के सहारे टिकी हुई गिरने को तत्पर दीवारें। चारो ओर पूजा की थालियाँ, साहित्य, और अनगिनत जूतें चप्पलों का बेतरतीब ढेर सा लगा हुआ था। धुएं के कारण अथर्व की आँखे जल रही थी। उसके फेफड़े मानों फट पड़ने को उतारू थे। वह खांस रहा था। उसकी आँखों से निरंतर आंसू गिर रहे थे। वह पागलों की तरह मलबें को हटाते हुए रास्ता बना रहा था। उसकी शक्ति निस्संदेह असामान्य थी। वह पचास किलो से सौ किलो तक के अवशेषों को ऐसे फेंक रहा था मानों वे पांच दस किलो के पत्थर हो। वह निरंतर अवशेष हटा रहा था। एक भारी पत्थर हटाते ही वह स्तब्ध हो गया। वह अपने स्थान पर जड़ हो गया। वह एक दस साल की बच्ची थी।

मलबे के नीचे उसका रक्त में नहाया हुआ मृतदेह पड़ा था। नजदीक ही उसका खिलौना कुचला हुआ पड़ा था। उस दृश्य ने उसे झिंझोड़ कर रख दिया। वह कांप उठा। उसने वहाँ से मलबा हटाना आरंभ किया। तब तक आसपास के क्षेत्रों से लोग राहत कार्य हेतु पहुँच चुके थे। चारों ओर से पानी की बौछारें होने लगी थी। लोग बाग़ अब संभल चुके थे और मलबे को हटा कर घायलों को निकालने का प्रयास कर रहे थे। दूर से कहीं पुलिस या फायर ब्रिगेड़ के सायरन भी सुनाई दे रहे थे।

आकाश भी इस समय स्याह हो गया था। मानों वह भी क्रूरता को देखकर शोक मना रहा था। अथर्व ने बच्ची को संभाल कर अपनी शक्तिशाली भुजाओं में उठाया और उस ओर दौड़ा जहाँ से लोगो की

आवाजें सुनाई दे रही थी। वो सहायता के लिये इकट्ठी हुई भीड़ थी। अथर्व उन तक पहुंचा और उनमे से एक को बच्ची थमा दी।

“इसे संभालो! म..मैं और लोगो को देखता हूँ। अंदर बहुत से लोग फंसे हुए है। आप सबकी आवश्यकता पड़ेगी।” अथर्व के स्वर थरथरा रहे थे। वह पुन: मंदिर की ओर दौड़ा। उसके जेहन में केवल दीक्षा थी। रह रहकर उसका वह मुस्कुराता चेहरा उसके अंतर्मन में दिखायी पड़ जाता जो उसने मंदिर में जाते समय देखा था। अथर्व की आँखों से अब जो आंसू बह रहे थे वह धुएं के कारण नही थे। वह दीक्षा को लेकर आशंकित था। सब कुछ अपने सामने देखकर भी वह ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था कि दीक्षा सुरक्षित हो।

मंदिर के चारों ओर रक्त फैला हुआ था। कुछ कटे फटे अंग क्षत विक्षत अवस्था में बिखरे हुए थे। वह रक्त से सने मलबे को हटाने लगा। इस प्रयास में मलबे के अंदर मौजूद बिखरे हुए सरियों से उसका बदन कई जगह से कट फट गया, किन्तु उसे इसकी तनिक भी परवाह नही थी। वह मृतों एवं घायलों के उस ढेर को देख रहा था। चारों ओर रक्त से निर्मित लिजलिजा कीचड़ और मांस के जलने की दुर्गन्ध फैली हुई थी। अवशेष अब तक सुलग रहे थे। फायर ब्रिगेड़ पहुँच चुकी थी और पानी बरसाना आरंभ भी हो गया था। पुलिस एवं सहायता दल अपने काम में लग चुकी थी। वे घायलों को निकाल रहे थे। घायलों की संख्या नगण्य थी। क्योंकि उस विस्फोट की जद में जो भी आया था वह मर चुका था। घायल तो वे थे जो विस्फोट से दूर थे। कुछ ही देर में क्षत विक्षत और जले हुए शवों का अम्बार सा लग गया। एम्बुलेंस फ़ौरन भर गयी। चार एम्बुलेंस और आने के साथ ही मृत और घायलों से भर गयी थी और अन्य अभी पहुंची नही थी।

अथर्व अब पानी की बौछार से पूर्णतया भीगचुका था। किन्तु उसका शरीर रक्त से सना हुआ था, जो गाढ़ा होकर सूख गया था। वह पागलों की भाँति हर अवशेष को हटा रहा था। उसकी अविश्वनीय शक्ति पर किसी का ध्यान नही गया। वहाँ मचे हंगामे, धूल और धुएं के कारण किसी का भी ध्यान अथर्व की ओर था ही नही।

“दीक्षा! कहाँ हो तुम?” अथर्व चीख पड़ा और अचानक ही उसे कुछ दिखा। मलबे के मध्य उसे एक पैर दिखा। वह वहाँ पहुंचा और अपने घुटनों के बल उसी कीचड़ में बैठ गया। खून से लसलसातें हाथों से वह मलबा हटाने लगा। मलबे के थोडा हटते ही उसका हृदय कांप उठा। वह

दीक्षा ही थी। दीक्षा की अवस्था देखकर अथर्व का हृदय चीत्कार उठा। उसने दीक्षा को सवाधानी से निकाला। दीक्षा का शरीर बुरी तरह जल गया था। उसकी कलाई बुरी तरह कट कर अलग हो गयी थी। उसके कपडे जल कर उसकी त्वचा में पैवस्त हो चुके थे। उसका चेहरा अब भयावह हो चुका था। उसके शरीर के कई हिस्सों में गहरे घाव और कटने के निशान थे जहाँ से मांस स्पष्ट दिखायी दे रहा था। वह खून से लथपथ थी। अथर्व ने उसे उठाकर अपनी बांहों में थामा तब उसे महसूस हुआ दीक्षा की अनगिनत हड्डियां टूट चुकी थी। वह उसकी बांहों में किसी रबड़ के खिलौने की भाँति ही झूल गयी थी।

“हे ईश्वर!” अथर्व रो पड़ा, वह किसी बच्चे की तरह फफक पड़ा। उसने दीक्षा को अपने सीने से लगा लिया। उसके हाथों में उसका हाथ था। उसकी कलाई देखकर अथर्व को चक्कर आ गया। अचानक उसे अपने सीने पर गर्म सांसे महसूस हुई। वह चौंक पड़ा।

“इसकी सांसे चल रही है।”

वह इस कल्पना मात्र से सिहर उठा और फौरन उसे उठाये हुए खड़ा हो गया। वह मलबे को चीरते हुये एम्बुलेंस की ओर दौड़ा। दीक्षा की आँखे खुली, उसकी आँखों तक से खून टपक रहा था। वह अथर्व की ओर देख रही थी।

“आँखे खुली रखना दीक्षा! कुछ नही होगा तुझे, एम्बुलेंस आ चुकी है। तुझे कुछ नही होगा। मैं तेरे साथ ही हूँ।” अथर्व उसे दिलासा देता रहा। कुछ ही देर में वह एम्बुलेंस में दीक्षा के साथ था।

***

मटुक बदहवास सा अस्पताल पहुंचा। उसके साथ ही देवदत्त और कविता भी थे। वे रिसेप्शनिष्ट से अभी कुछ पूछने ही वाले थे कि गलियारे की बेंच पर अथर्व को बैठा देखकर सीधे वही पहुँच गये। रिसेप्शनिष्ट रोकते ही रह गयी किन्तु किसी ने भी न सुनी। देवदत्त के पहले ही मटुक अथर्व के सामने पहुंचा और घुटनों के बल बैठ गया। एक नर्स ने अथर्व की मरहम पट्टी कर दी थी। उसके शरीर पर जगह जगह पट्टियां और बैंडेज लगे हुए थे। आमतौर पर इतने जख्मों के पश्चात व्यक्ति को एड्मिट कर लिया जाता है किन्तु इस समय स्थिति अलग थी। अस्पताल में अफरा तफरी मची हुई थी। श्रृंखलाबद्ध विस्फोटों के पश्चात वहाँ मरीजों का तांता लगा हुआ था। हर कोई व्यस्त था, अथर्व के जख्म बाकी घायलों के सामने एकदम मामूली थे। उसकी अवस्था इस समय बाकियों की

तुलना में एकदम सामान्य श्रेणी में ही आती थी जिस कारण उसे केवल मरहम पट्टी करके छोड़ दिया गया था।

“तुम ठीक तो हो ना अथर्व? यह क्या हो गया, और द ..दीक्षा कहाँ है?” मटुक दीक्षा को उसके साथ ना देखकर घबरा गया था।

“अथर्व एकदम ठीक है मटुक, तुम जानते हो।” देवदत्त ने मटुक के कंधे पर हाथ रखा। कविता ने अथर्व को अपने सीने से चिपटा लिया। उसके आंसुओं का बाँध टूट गया था।

“मैं ठीक हूँ माँ।” अथर्व ने कांपते स्वर में कहा। उसकी आँखे भीगी हुई थीं। राख और मिटटी से सने उसके चेहरे पर आंसुओं की लकीरे स्पष्ट देखी जा सकती थी।

“दीक्षा ....व...” अथर्व के होंठ कांप रहे थे। आवाज उसके गले में मानो फंस सी गयी थी।

“बोलो अथर्व। मेरी बेटी ठीक तो है ना?” मटुक चीख पड़ा। उसकी चीख से अस्पताल में किसी को कोई विशेष परेशानी नहीं हुई, क्योंकि अस्पताल पहले ही चीख-पुकारों से गूंज रहा था। उन आवाजों के शोर में ही मटुक की चीख भी दबकर रह गयी। एक के बाद एक बुरी तरह क्षत विक्षत घायल वहाँ स्ट्रेचर पर लाये जा रहे थे। एक एम्बुलेंस जाती तो दूसरी कतार में लगी रहती। अस्पताल के फर्श तक पर रक्त के बेतरतीब धब्बे स्पष्ट दिखायी दे रहे थे।

“वह अंदर इमर्जेंसी वार्ड में है। उसका ऑपरेशन शुरू हो गया है।” अथर्व ने बड़ी मुश्किल से कहा।

“ऑ ..ऑपरेशन ? ये क्या कह रहे हो तुम?” मटुक फूट फूट कर रो पड़ा।

उसने इमर्जेंसी वार्ड से आती नर्स का रास्ता रोक लिया। नर्स अचकचा गयी।

“वो ..मेरी बेटी! दीक्षा। वह ठीक तो है न ?” मटुक पागलों की तरह हरकतें कर रहा था। नर्स ने अथर्व को देखा और समझ गयी कि मटुक किस लड़की के बारे में पूछ रहा था।

“कुछ बता नहीं सकते। सीरियस कंडीशन है, ऑपरेशन चल रहा है।” इतना कहकर नर्स दूसरे घायलों की ओर बढ़ी। मटुक ने उसे रोकना चाहा लेकिन देवदत्त ने उसकी बांह पकड़ ली। कविता अपने आंचल से अथर्व का मुंह पोंछ रही थी।

“मटुक! यह कठिन घड़ी है, फिर भी कह रहा हूँ संयम बनाये रहो। बिटिया ऑपरेशन थियेटर में है, तुम और मैं सिवाय प्रतीक्षा करने के कुछ नही कर सकते। तुम बैठो यहाँ अथर्व के पास।” कहते हुए मटुक को कंधे से पकड़ बेंच पर अथर्व की ही बगल में बिठा दिया।

“अथर्व सब शुरु से बताओ।” देवदत्त ने अथर्व से प्रश्न किया, वह अथर्व की अवस्था से विचलित था, किन्तु अपनी भावनाओं पर उसे नियंत्रण रखना आवश्यक लगा, क्योंकि मटुक की अवस्था पहले से ही गंभीर थी। उसका बेटा कम से अपने पैरों पर खड़ा तो था, लेकिन दीक्षा ऑपरेशन थियेटर में जीवन और मृत्यु के मध्य फंसी हुई थी।

अथर्व ने अपने आप को संभाला और सारी घटना संक्षेप में बता दी। देवदत्त स्तब्ध खड़ा रह गया। दीवार पर लगे टीवी में इसी घटना का प्रसारण हो रहा था। देवदत्त ने टीवी की आवाज बढ़ा दी।

“बनारस के सिद्धि मंदिर में हुए विस्फोट में अब तक ४५ लोगों की मृत्यु हो चुकी है, और ३१ गंभीर रूप से घायल है, यह एक आतंकवादी हमला था, जिसकी जिम्मेदारी जमात ए‘ फ़तेह ’ नेएक वीडियो जारी करके ली है। जमात ए फ़तेह हाल ही में उभरा एक आतंकवादी विचारधारा रखने वाला संगठन है। गुप्तचर एजेंसिया तत्पर हो चुकी है और देश के विभिन्न इलाको में दबिश दी जा रही है। मिली सूचनाओ के अनुसार इन चार लोगो को संदिग्ध माना गया है , जिनके नाम इस प्रकारहैं....... ” टीवी पर समाचार चल रहे थे। मटुक के कान खड़े हो गये।

“पिछले वर्ष इस संगठन की विचारधारा से प्रभावित कुछ युवकों की गिरफ्तारियां भी हुई थी। जो एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय के छात्र थे। यह चिंता का विषय है कि पढ़े लिखे छात्र अलगाववादी विचारधारा से प्रभावित होकर आतंकवादी संगठनों को अपना आदर्श मानने लगे है। पिछले वर्ष विद्यार्थियों और कुछ समाजसेवकों की हुई गिरफ्तारियों पर सरकार की खूब निंदा हुई थी। विद्यार्थियों ने जगह जगह प्रदर्शन किये थे। इस विरोध में साहित्यकारों ने भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया अपने अपने सम्मान वापस लौटा कर अपना विरोध जताया था। किन्तु इस बार के हमले के बाद पुन: आरोपियों में अलगाववादी विचारधारा वाले विद्यार्थियों का लिंक मिला है। तत्काल प्रभाव से कुछ छात्र नेताओं एवं समाज सेवकों को अरेस्ट किया गया है। देश भर में इस घटना से सरकार के प्रति आक्रोश और दबाव के चलते यह गिरफ्तारियां हो रही है ऐसा

इन के समर्थकों का मानना है। इसी बीच प्रधानमंत्री द्वारा घटनास्थल का दौरा किया जा रहा है।" समाचार चलते रहे।

मटुक अचानक से उठ खड़ा हुआ और अस्पताल के निकास की ओर तेज कदमों से चल पड़ा। देवदत्त ने उसे देखा और दौड़कर उसके सामने अवरोध बनकर खड़ा हो गया।

"कहाँ जा रहे हो तुम?" देवदत्त उसकी आँखों में क्रोध और खून स्पष्ट रूप से देख रहा था।

"मैं उन्हें नही छोडूंगा। किसी को नहीं छोडूंगा।" मटुक फुफकार उठा।

"किसे नही छोड़ेगा ? किसको पकड़ेगा ?" देवदत्त ने उसका कंधा मजबूती से पकड़ा।

"मैं सरकार के भरोसे नही रह सकता। ये अपराधी पकड़े भी गये तो इन्हें सजा नहीं होगी। सब राजनीति हो रही है। ये विद्यार्थी के रूप में जहरीले सांप है देवदत्त, इनकी जहरीली पौध को समाप्त करना ही होगा। ये कैसी विषाक्त विचारधारा पनप रही है अपने देश में ? अपने ही देश में रहकर ये विश्वासघाती इस देश को अपना क्यों नही मानते ? किस तरह की आजादी और क्रान्ति का सपना देख रहे है ये नराधम ? किस जंगली धर्म से सम्बन्धित है ये जिन्हें दूसरे पंथ को मानने वालों का इस तरह निर्दयता से संहार कर देना न्यायोचित लगता है, धर्मसम्मत लगता है ? ऐसे पंथ और उसके अनुयायी इस सम्पूर्ण जगत के लिये घातक है देवदत्त। देख लो अपनी आँखों से, जहां भी गये है उस देश को नर्क बना कर रख दिया है। उन देशों में मानवता रो रही है। ये हमारे देश के भीतर पलने वाले सांप है जो दूसरे देशों में होते अत्याचारों के लिये हमारे देश में विरोध करते है, दंगा करते है। उत्पात मचाते है, सार्वजानिक संपत्ति नष्ट करते है। ये तथाकथित छात्र और छात्र नेता एक प्रदूषित जमात का नेतृत्व करते है, जहर फैला रहे है ये और ये कमीने साहित्यकार और समाजसेवक कहलाने वाले नामर्द। केवल कुछ शब्दों की प्रशंसा, ख्याति और अपनी कुपोषित और दूषित मानसिकता के चलते इनका समर्थन करते है, इनका बचाव करते है। ये इन आतंकवादियों से कहीं अधिक घातक आतंकवादी है देवदत्त। आतंकी की गोली से एक आदमी मरता है लेकिन इन हरामखोरों के लेखन से ऐसे सौ आतंकी विचारधारा वाले जन्म लेते है। सबसे पहले इनका नाश जरूरी है। ये अभिनेता, नेता सभी उसी दूषित मानसिकता से ग्रसित है। मैं आँखों देखी मक्खी नही निगल सकता। मैं जानता हूँ ये संदिग्ध नही है, ये हत्यारे है हत्यारे। देखना इनकी गिरफ्तारी का विरोध

आरंभ हो गया होगा। कोई समाजसेवक आता ही होगा इनका पक्ष लेने। कुछ कलुषित मानसिकता के व्यक्ति न्यायव्यवस्था को मुंह चिढ़ाते हुए आधी रात को भी न्यायालय पहुँच जायेंगे इनकी पैरवी करने के लिये। साहित्यकार नामक जहरीले कीड़े अपनी कलम से स्याही के नाम पर जहर उगलेंगे। इन्हें आरोपी से स्वयं विपत्तिग्रस्त बता दिया जायेगा। पंथ का नाम लेकर कार्ड खेला जायेगा और फ़िर ये बच निकलेंगे और अगली बार फिर किसी मासूम दीक्षा को निशाना बनायेंगे। मैं चुप नही रहूँगा। मैं नही रहूँगा।" मटुक पागलों की भाँति चीख रहा था, चिल्ला रहा था। क्रोध के कारण उसके मुंह से झाग निकलने लगा।

"पागल मत बन मटुक। रुक जा, दीक्षा की हालत ने तुझे सोचने समझने लायक नहीं छोड़ा है, ठंडे दिमाग से काम ले भाई। रुक जा। दीक्षा को तेरी जरूरत है यहाँ।" देवदत्त ने उसे समझाते हुए कहा, उसने मजबूती से मटुक की बांह पकड़ी हुई थी। मटुक कांप रहा था।

"देवदत्त तू भी साथ चल। हम उन्हें खोज सकते हैतुझे पता है, फिर , हम उन्हें ऐसा सबक सिखायेंगे कि उनकी आनेवाली नस्लें भी उनका हाल देख कर थरथर कांपे।" मटुक बोलते ही जा रहा था, उसे कुछ और सूझ ही नहीं रहा था।

"मटुक! बात को समझो। हम व्यक्तिगत् नही हो सकते, हमारी संस्था व्यक्तिगत् नही है। हम इसका प्रयोग अपना प्रतिशोध लेने के लिये नहीं कर सकते। हम प्रतिशोध लेने के लिये प्रशिक्षण नही लेते। भावनाओं पर नियंत्रण रखो मटुक। सरकार को अपना काम करने दो।"

मटुक अभी कुछ कहता तब तक उसकी नज़रें ऑपरेशन थियेटर से निकलते डॉक्टर पर पड़ी। डॉक्टर अथर्व के पास आकर खड़ा हो गया।

"इनके पिता आपके साथ है ?" डॉक्टर ने प्रश्न पूछा। मटुक फ़ौरन वहाँ पहुंचा।

"जी मैं हूँ उसका पिता। मेरी बेटी ठीक तो है ना ?"

"वो गंभीर रूप से घायल है। हमने पूर्ण प्रयास कर लिया है किन्तु उनका शरीर प्रतिसाद नहीं दे रहा है। दो ऑपरेशन हो चुके है फिर भी उम्मीद बहुत कम है। अगले ऑपरेशन के पहले मैं चाहता हूँ आप एक बार मिल ले।" डॉक्टर ने सांत्वना स्वरूप मटुक के कंधे पर हाथ रखा। मटुक के साथ सभी एकदम स्तब्ध और निशब्द हो गये। मटुक की आँखों के आगे अँधेरा सा छा गया वह गिर पड़ता किन्तु अथर्व ने फुर्ती से उसे थाम लिया। मटुक की आँखे बंद हो गयी। वह बेसुध हो गया।

डॉक्टर ने तुरंत नर्स को बुलाया।

***

सारनाथ में सदैव की तरह सैलानियों की भीड़ थी। देशी विदेशी सभी प्रकार के सैलानी वहाँ की सुंदरता और प्राचीन स्मृतिचिन्हों का लुत्फ़ उठा रहे थे। दोपहर का समय था। किन्तु इसके बावजूद वातावरण में ठंड़क थी। लेदर जैकेट पहने हुए वह सैलानी अशोक स्तंभ एवं इतर स्तूपों में खासी दिलचस्पी ले रहा था। वह उन खुबसूरत दृश्यों को सदैव के लिये अपने कैमरे में संजो लेने के लिये प्रयासरत था।

वह लगभग पैतीस वर्ष का रहा होगा। फ्रेंच कट दाढ़ी, गोरा चेहरा, कटावदार मुखाकृति और गर्दन तक लहराते घुंघराले बालों के कारण उसके व्यक्तित्व में एक विशेष आकर्षण था। अपने पहनावे से वह निस्संदेह एक संपन्न व्यक्ति लगता था।

वह गाइड काफी समय से उसे ही देख रहा था। यूँ कहे कि उसकी दिलचस्पी ऐसे ही सैलानियों में अधिक थी जो ना केवल ऐतिहासिक वस्तुओं को देखना चाहते है, बल्कि उनके बारे में छोटी से छोटी जानकारी तक बटोरना पसंद करते है। ऐसे सैलानियों से ही उसे विशेष कमाई होती थी। अन्यथा बाकी लोग तो बस आये, घूमे और तस्वीरे खींच कर निकल लिये। जगह का क्या इतिहास था, अवशेष क्यों और कैसे बना इसका इतिहास जानने में उन्हें कतई दिलचस्पी नहीं होती थी। गाइड ने उस सैलानी के रूप में एक मोटी आसामी को देखा और उसी की ओर बढ़ गया। गाइड करीब बत्तीस वर्ष के आसपास का एक छरहरे बदन का व्यक्ति था। उसने वी नेक का स्वेटर और उसके भीतर सफ़ेद शर्ट पहन रखी थी और गले में चेक्स वाला मफलर डाल रखा था। चेहरा अवश्य कभी गोरा रहा होगा, क्योंकि धूप से जलकर उसका रंग स्याह पड़ गया था जो निस्संदेह सांवला तो हरगिज नही था। चेहरा क्लीन शेव्ड था। कुछ देर सोच विचार करने के पश्चात ही वह उस सैलानी की ओर बढ़ा।

“गुड़ आफ्टरनून सर!” गाइड ने सैलानी का अभिवादन किया तो सैलानी चौंक गया, फिर भी उसने मुस्कुराकर उसके अभिवादन का जवाब दिया।

“सर मैं यहाँ का गाइड हूँ। मैं सारनाथ से लेकर काशी तक की हर वस्तु का इतिहास आँख मूँद करके बता सकता हूँ। इसके उदय से लेकर अब तक की कहानी मेरे नसों में दौड़ती है।” वह मुस्कुराया।

“एक्चुअली, मुझे भी यहाँ का इतिहास पता है, मिस्टर ....?” सैलानी को उसका नाम पता नही था।

“गाइड! जी मेरा नाम गाइड ही है।” गाइड ने उसका मन्तव्य समझते हुए मुस्कुराते हुए अपना परिचय दिया। सैलानी प्रश्नवाचक नजरों से देखता रहा। उसे लगा वह मजाक कर रहा है।

“नही मैं मजाक नही कर रहा। मेरा नाम गाइड ही है।” गाइड उसके मनोभावों को पढ़ते हुए बोला।

“गाइड भला कैसा नाम हुआ?” सैलानी ने उत्सुकता से पूछा।

“जी मैं बचपन से इन गलियों में घूमता आया हूँ। मेरा शौक था हर छोटी सी छोटी चीज की जानकारी इकट्ठी करना। मुझे ऐतिहासिक और प्राचीन वस्तुओं में खासी दिलचस्पी थी। मैं देश के हर कोने की जानकारी रखता हूँ। मुझे जूनून सा था हर चीज की जानकारी रखने का। कोई कुछ भी किसी भी स्थान के बारे में पूछे मुझे सब पता होता था। इसीलिये सबने मुझे गाइड ही बुलाना आरंभ कर दिया। तो मैंने इसी को अपना रोजगार बना लिया। मैं कोई शौकिया या चालू गाइड नही हूँ, यह देखिये मेरे पास कार्ड है बतौर आधिकारिक गाइड का। मैंने पंजीकरण करवाया हुआ है।” गाइड अपनी ही रौ में बोले जा रहा था।

“काफी दिलचस्प है आप। एनिवेज..अब मुझे चलना चाहिये काफी थक गया हूँ, अभी मैं कुछ दिन और यहाँ रुकूंगा तो तुम्हारी मुझे जरूरत पड़ेगी।” सैलानी ने कहा तो गाइड ने तुरंत जेब से एक कार्ड निकाल कर उसे थमा दिया।

“बस इस नम्बर पर कॉल कर दीजियेगा मैं आपकी सेवा में उपस्थित हो जाऊंगा।” वह मुस्कुराया, सैलानी ने मुस्कुराते हुए उससे हाथ मिलाया और विदा ली। दिन भर घूमते घूमते वह थक गया था। उसे आराम की आवश्यकता थी। वह टैक्सी स्टैंड़ की ओर बढ़ गया।

एक टैक्सी उसके सामने ही आकर खड़ी हो गयी।

“कहा चलना है बाबू जी।” टैक्सी ड्राइवर ने लगभग अपना पूरा सिर ही खिड़की से बाहर निकाल लिया।

“बनारस! घनश्याम होटल। रास्ता पता है न ?” सैलानी ने पूछा।

“अरे आप बैठिये। हर गली कूचे से वाकिफ है साहब।” उसके कहते ही सैलानी ने टैक्सी में प्रवेश किया। टैक्सी स्टार्ट हो गयी और अपने गंतव्य की ओर बढ़ गयी।

“साहब! बाकी सब त मालूमें है। बस घनश्याम होटल से तनिक अनजान है। रास्ता बता दीजियेगा बस।” ड्राइवर ने बैक व्यू मिरर में सैलानी की ओर देखते हुए कहा। उसे भय था कि कहीं वह खीज ना जाये कि जब पता नही था तो बैठाया क्यों। किन्तु इसके विपरीत वह मुस्कुराया और हामी में सर हिला दिया।

“बता देंगे! और कोई गाना वाना बजाओ भाई।”

ड्राइवर ने मुस्कुराते हुए टेप चालू कर दिया। कोई वर्तमान हिट गाना बज उठा जिसे सैलानी भी गुनगुनाने लगा।

टैक्सी अब बनारस की भूलभुलैय्या नुमा सड़कों पर घूम रही थी। सैलानी सड़कों और गलियों के इस जाल को मंत्रमुग्ध होकर देख रहा था। भीड़ भरी सड़कें, तंग गलियाँ, हर गली में कोई न कोई छोटा मोटा मंदिर, लोगो की भीड़, बाजार, छोटी दुकाने। छोटे छोटे मकान और एकदूसरे से सटी हुई इमारतें। साधु सन्यासियों की भीड़ से लेकर विद्यार्थियों तक से सड़क भरी हुई थी।

“बनारस एकदम अलग ही शहर है। इसका मिजाज एकदम अल्हड़ है, इतनी समस्याओं के बावजूद भी इतनी जिंदादिली और रंगबिरंगी लाइफ और कहीं नही देखी।” सैलानी ने मुस्कुराते हुए ड्राइवर से कहा।

“पहली बार आये हो साहब?”

“नही! कई बार आया हूँ, लेकिन हर बार लगता है जैसे पहली ही बार आया हूँ।” सैलानी ने ड्राइवर के प्रश्न का उत्तर दिया।

“भोले नाथ की नगरी है साहब। स्वयं भोलेनाथ इसके मोह से नही छूट पाये तो हम तो इंसान है साधारण से। ड्राइवर मुस्कुराया और सैलानी के निर्देशानुसार टैक्सी एक गली में मोडी। कुछ ही देर में वह एक तीन मंजिली इमारत के नीचे खड़ा था।

सैलानी दरवाजा खोलते हुए बाहर निकला।

“यह लीजिये आपका किराया।” उसने पर्स में से पैसे निकाले।

“यहाँ ठहरे हैं आपअरे पहले पता होता के यह होटल यहाँ है तो ? आपको इससे अच्छे होटल में ठहराते, हमरे भाई का ही है, पिछले वाले मोड़ से दस पन्द्रह कदम दूर।” ड्राइवर ने होटल को देखते हुए कहा।

“चलिये कोई बात नही, नाम बता दीजिये होटल का, अगली बार आना होगा तो वही ठहरेंगे।” सैलानी ने जवाब दिया।

“भैरवनाथ आश्रम।” ड्राइवर ने नाम बताया और छुट्टे पैसे देने चाहे किन्तु सैलानी ने रखने के लिये कह दिया। ड्राइवर ने ख़ुशी ख़ुशी पैसे

अपनी जेब में रख लिये और स्टीयरिंग के सामने रखी भगवान शिव की प्रतिमा को प्रणाम करके गाडी पुन: स्टार्ट कर दी।

***

सैलानी अपने कमरे के दरवाजे को खोल कर अंदर पहुंचा। उसके चेहरे पर दिन भर की थकान स्पष्ट रुप से दिखायी दे रही थी। कमरे में आते ही उसने सबसे पहले अपना जैकेट उतार कर हैंगर पर टांग दिया। कमरा साधारण सा ही था, जहाँ काम भर के फर्नीचर रखे हुए थे। बमुश्किल एक बेड़रूम, और किचन नुमा कमरा था। एक आदमी के लिहाज से यह पर्याप्त और आरामदेह जगह थी। कोने में दीवार से सटा हुआ एक फ्रिज और छत पर झूलता सीलिंग फैन। कमरे के कोने में ऊपर केवल एक ट्यूबलाईट जिसका दूधिया प्रकाश कमरे में फैला हुआ था।

उसने अपना कैमरा एक जगह रखा और बिस्तर पर बैठ गया। कुछ देर तक वह आँखे मूंदे बैठा रहा। खिड़की के बाहर से घंटियों एवं मंत्रोच्चार के स्वर सुनाई पड़ रहे थे। मंदिरों और स्थानीय मकानों से आरतियों एवं भजनों के गीत बज रहे थे। अचानक ही खिड़की से एक ठंडी हवा का झोंका आया जिसने सैलानी को कंपा दिया। वह अनमने ढंग से उठा और खिड़की के लकड़ी के दोनों पल्लों को खींच कर कुण्डी लगा दी। उसे गला सूखता सा महसूस हुआ और कदम फ्रिज की ओर बढ़ गये। दरवाजा खोलकर एक पानी की बोतल निकाली और पूरी की पूरी बोतल एक ही बार में खाली कर गया। अब थोडा चैन पड़ा। वह पुन: बिस्तर पर था।

उसने अपने जूते निकाल कर पैरों को खुला छोड़ दिया। ठंड़ के कारण मोजों को निकालने का विचार फिलहाल उसने त्याग दिया और अपने कैमरे को लेकर पुन: बिस्तर पर लेट गया। कैमरा ऑन करके वह अपनी खींची गयी तस्वीरों को देखकर प्रसन्न हो रहा था। उसकी फोटोग्राफी कमाल की थी। वह निस्संदेह फोटोग्राफी में निपुण था या कोई प्रोफेशनल फोटोग्राफर ही था। अभी वह अपनी तस्वीरों में खोया हुआ ही था कि उसे किसी अजीब सी चीज की गंध ने चौंका दिया। उसे लगा शायद यह उसका वहम हो या सीलन वगैरह की बदबू हो। लेकिन कुछ ही क्षणों में गंध की तीव्रता बढ़ती सी महसूस हुई तो वह बिस्तर छोड़ कर उठ खड़ा हुआ। उसने कमरे के चारो ओर निगाहें दौड़ाई, वह अब किसी चीते की भाँति सतर्क नजर आने लगा था और इसी के साथ कमरे में एक विचित्र सा कत्थई रंग का धुंआ भरने लगा।

“य...ये गैस कहाँ से आ रही है?” उसने अपने हाथों से खुद के मुंह नाक को कवर करते हुए खुद से ही प्रश्न किया। वह दरवाजे की ओर बढ़ने का प्रयास करने लगा। किन्तु कुछ ही क्षणों में वह धुंआ इतना गाढ़ा हो चुका था कि हाथ को हाथ तक न दिखायी दे रहा था। गैस की तीव्र गंध अब उसके फेफड़ों में प्रवेश कर चुकी थी और फेफड़ों में जाते ही उसका सर चकराया, और उसकी चेतना लुप्त हो गयी। इसी के साथ वह वापस बिस्तर पर औंधा गिर पड़ा। वह पूर्णतया बेहोश हो चुका था।

उसके बेसुध होते ही धुंये के बादलों को चीरते हुए चार व्यक्ति प्रकट हुए। उन्होंने गैसमास्क पहने हुए थे जो उनकी आँखों तक को कवर किये हुए थे। वे बेहोश पड़े सैलानी की ओर बढ़े।

“वह बेहोश है अब।” पहला मास्कधारी बोला।

“रिस्क नही ले सकते। पूरी तरह से बेहोश नही हुआ होगा यह, इंजेक्शन लगाओ जल्दी।” दूसरे ने निर्देश दिया, जिसका तुरंत पालन हुआ और तीसरे मास्क धारी ने अपने कंधे से लटकते बैग में से कोई शीशी निकाल कर एक इंजेक्शन तैयार करके बेहोश पड़े सैलानी के जिस्म में पैवस्त कर दिया।

“चलो अब इसे ले चलो।”

****

वह एक अँधेरी जगह थी। सैलानी ने अपनी आँखे खोली, उसकी आँखों में अभी भी तीव्र जलन थी। दोनों आँखे खून सी लाल हुई पड़ी थी, जो निस्संदेह उसी धुएं के कारण ही थी। उसने धीरे धीरे आँखे खोली, उसके जिस्म में एक अकड़न सी महसूस हुई और वह कराह उठा। हाथ पैर हिलाने का प्रयास करते ही उसे समझ में आया कि वह एक चेयर से बंधा हुआ है, और उसके दोनों हाथ और पैर मजबूती से कुर्सी के हत्थों से बंधे हुए है। वह कसमसाया लेकिन जकड़ मजबूत थी।

उसने आँखों को अँधेरे में देखने का अभ्यस्त करने का प्रयास किया ही था कि एक बल्ब जल उठा। उसने अपनी आँखों को मूँद लिया। कुछ क्षणों बाद धीरे धीरे उसने अपनी आँखों को खोला। वह सामने का दृश्य देखकर आश्चर्यचकित रह गया। उसके सामने खड़े व्यक्ति उसे पहचाने से लगे। थोडा जोर डालते ही वह हैरान हो गया। वे तो वही गाइड और ड्राइवर है, जो सारनाथ में उससे मिले थे।

“ये क्या हरकत है ? मुझे इस तरह से बाँधने का क्या मतलब है ? क्या तुम दोनों कोई रैकेट चला रहे हो किड्नैपिंग का ?” सैलानी के

चेहरे पर क्रोध था, जो ऐसी परिस्थिति में एकदम विपरीत बात थी। ऐसी परिस्थिति में फंसने पर सामन्यतया: व्यक्ति घबरा जाता है, किन्तु उसके चेहरे पर घबराहट के बजाय क्रोध के भाव थे।

“कैसे हो साहब? बनारस की हवा रास नहीआई का?” ड्राइवर ने व्यंग्य किया और हंस दिया।

“तुम...ड्राइवर ..तुमने मुझे किड़नैप किया?” सैलानी अब भी हैरान था।

“शांत रहो। तुम्हें तुम्हारे हर प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा। किन्तु पहले हमें हमारे प्रश्नों के उत्तर दे दीजियेगा श्रीमान ‘रिफ़ॉर्मर’। क्यों? यही कहते है न तुम जैसों को ?” गाइड ने सख्त स्वर में कहा। सैलानी रिफ़ॉर्मर संबोधन सुनकर चौंक पड़ा। वह एकदम से सकते में आ गया।

“ये तुम मुझे क्या कह रहे हो ? मैं कुछ समझा नहीं।” सैलानी के मुख पर आश्चर्य के भाव थे। वह कसमसाया और पहली बार गौर किया कि उसके हाथ पैर किसी रस्सी से नही बल्कि स्टील की मजबूत पट्टियों से बंधे हुए थे।

“यह अभिनय हमारे सामने मत करो सैलानी। मैं पिछले दस दिनों से तुम पर नजर रख रहा हूँ। तुम्हें सारनाथ और उसके परिसर के इर्द गिर्द घूमते हुए देख रहा हूँ, इतने दिनों में तो व्यक्ति आधा भारत घूम आये लेकिन तुम्हारी सुई उसी जगह अटकी पड़ी थी। तुम्हें मानों किसी चीज की तलाश सी थी।” गाइड ने अपना पैर सैलानी के घुटनों पर रख कर उससे नज़रें मिलाते हुए कहा। गाइड की आँखों में इस समय खूंखार भाव थे।

“तो तुम सीधी तरह से अब सब बता ही दो रिफ़ॉर्मर। अब तक अच्छे से समझ चुके होंगे कि हम कौन है, और क्या कर सकते है।” ड्राइवर का स्वर अब सख्त हो गया था।

सैलानी के चेहरे से एकाएक आश्चर्य के सारे भाव लुप्त हो गये। उसकी जगह एक हंसी ने ले ली। वह हंसने लगा। क्षण भर को ड्राइवर और गाइड दोनों सकते में आ गये।

“बहुत खूब। मानना पड़ेगा तुम्हें। लेकिन क्या तुम जानते हो कि इन स्टील की पट्टियों से तुम मेरा कुछ नही बिगाड़ सकते, यदि मैं रिफ़ॉर्मर हूँ तो तुम मुझे रोक नही सकते।” कहते ही उसका स्वर एकदम से बदल गया। उसकी जगह एक भयंकर गुर्राहट ने ले ली थी। वह पूर्ण शक्ति से छटपटाने लगा।

उसके मुंह से झाग निकलने लगे। आश्चर्यजनक रूप से उसकी त्वचा की रंगत बदलने लगी। उसकी त्वचा अब हल्के से हरे रंग में बदल गयी थी। उसके साथ ही उसके हाथों और चेहरे पर किसी घडियाल के शरीर की तरह शल्क से उभरने लगे। उसकी आँखों की पुतलियाँ सिकुड़ कर पतली हो गयी और सफ़ेद हिस्सा पूर्णतया काला हो गया। उसकी गुर्राहट अब भी जारी थी, कुर्सी के हत्थे किसी भी क्षण टूटने ही वाले थे। ड्राइवर और गाइड उसके इस बदलाव को देखकर हैरान हो गये किन्तु जल्द ही उन्होंने खुद को संभाल लिया।

इसी के साथ सैलानी ने कुर्सी के टुकड़े टुकड़े कर दिये और उठ खड़ा हुआ। उसकी शक्ति अद्भुत थी, उसने मजबूत कुर्सी के हत्थे ही उखाड़ दिये थे जो एक सामान्य मनुष्य के बस का तो हरगिज भी नहीं था।

वह जोर से गुर्राया। उसकी गुर्राहट से पूरा कमरा प्रतिध्वनित हो रहा था। गाइड ने पहली बार उसके चेहरे को बारीकी से देखा। उसके दांत कुछ अलग थे। वह किसी पशु के दांतों की भाँति नुकीले और लंबे हो चुके थे और उसकी अंगुलिया भी सामान्य मनुष्य की अंगुलियों के मुकाबले डेढ़ गुना लम्बी हो गयी थी। उस पर उभरे शल्क और नुकीले नाख़ून उसे भयानक और घातक रुप प्रदान कर रहे थे। निस्संदेह उसके ये नाख़ून किसी को भी सहज रूप से चीर सकते थे।

रिफ़ॉर्मर ने उछाल भरी और अपनी उँगलियों को गाइड के चेहरे की ओर बढ़ा कर झपट्टा मारा, किन्तु गाइड ने आश्चर्यजनक फुर्ती से अपने सामने रखी लोहे की फोल्डिंग चेयर को अपने पैर से उछाल कर हाथों में किसी ढाल की भाँति थाम कर उसका वार बचा लिया। रिफ़ॉर्मर के प्रहार की भयानकता और शक्ति का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता था कि उसका पंजा लोहे की कुर्सी तक को फाड़ता हुआ बाहर आ गया था। किन्तु गाइड का चेहरा अब उसके पंजो की पहुँच से दूर ही था। गाइड ने उसके फंसे हुए पंजो को कुर्सी के सहारे उमेठ दिया और नीचे से अपने घुटने का भयंकर प्रहार रिफ़ॉर्मर के पेट में कर दिया। रिफ़ॉर्मर क्षण भर को पीछे हटा। कुर्सी उसके हाथों से निकल कर फर्श पर जा गिरी। अभी वह गिरी ही थी कि ड्राइवर ने भी अद्भुत गति से उछलते हुए न केवल कुर्सी को अपने कब्जे ले लिया बल्कि उसी कुर्सी से रिफ़ॉर्मर के सर पर इतनी जोर का प्रहार किया कि कुर्सी ही बुरी तरह मुड़ गयी। वह अभी हैरान ही था कि रिफ़ॉर्मर के एक ही घूंसे ने उसे हवा में कई फीट तक उछाल

दिया। ड्राइवर उछलते हुए कमरे की दीवार से जा टकराया, उसके टकराने से दीवार का पलस्तर तक चटक गया।

रिफ़ॉर्मर ने दोबार गाइड पर छलांग लगायी। गाइड उसके खूनी पंजो को थामने में सफल रहा किंतु रिफ़ॉर्मर फिर भी उसे लिये हुए ही फर्श पर जा गिरा। अब रिफ़ॉर्मर गाइड के सीने पर सवार था और गाइड उसके दोनों पंजो को अपने चेहरे की ओर बढ़ने से दोनों हाथो द्वारा रोके हुए था। गाइड शक्ति में रिफ़ॉर्मर से आधा ही था, उसे यकीन था कि रिफ़ॉर्मर के और दबाव डालने से उसके पंजे गाइड की खोपड़ी में धंस जायेंगे। गाइड के माथे से पसीने की धार बहने लगी। रिफ़ॉर्मर किसी भेडिये की तरह ही गुर्रा रहा था। दोनों पंजो को गाइड की पकड़ में देख कर उसने अपने नुकीले दांत ही गाइड की गर्दन में धंसाने के लिये बढ़ा दिये।

“पीछे हट कंबख्त! दांत गडा कर ही मानेगा क्या ? अबे ओ ड्राइवर के बच्चे वहाँ बैठे बैठे आराम कर रहा है, बचा मुझे इस मगरमच्छ से।” गाइड ने उसके दोनों हाथो को फैला कर एक झटके से छोड़ा। रिफ़ॉर्मर ने पूरा बल लगाया हुआ था जिस कारण हाथों पर से दबाव हटते ही वह गाइड के ऊपर ही गिरने वाला था किन्तु गाइड ने फुर्ती से अपनी कुहनी से रिफ़ॉर्मर की नाक पर प्रहार कर दिया। रिफ़ॉर्मर भले ही ताकतवर था किन्तु अन्य ताकतवर पशुओं की ही भांति उसकी भी नाक कमजोर और अतिसंवेदनशील ही थी। जिस कारण उसकी नकसीर फूट गयी और वह फर्श की दूसरी ओर लुढ़क गया। उसके लुढ़कते ही गाइड ने अपने पैरों और हाथों को फर्श के सहारे विपरीत बल देकर स्वयं को उछाला और पुन: अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

रिफ़ॉर्मर भी अपने पैरों पर पुन: खड़ा हो गया। वह फिर से गाइड की ओर आग्नेय नेत्रों से घूर रहा था और हमला करने के लिये तैयार था। वह आगे बढ़ा ही था कि पीछे से ड्राइवर ने छलांग लगाते हुए अपने दोनों हाथों को रिफ़ॉर्मर की बगलों से पकड़ते हुए उसकी गर्दन जकड़ ली। रिफ़ॉर्मर अब कोई हरकत नही कर पा रहा था और ड्राइवर उसकी हड्डियाँ कड़कडाने का प्रयास कर रहा था लेकिन उसे अपनी पूर्ण शक्ति लगानी पड़ रही थी। ड्राइवर रिफ़ॉर्मर को ज्यादा देर तक जकड़े नही रह सकता था। गाइड ने अवसर देखकर दौड़ते हुये ही एक छलांग लगायी और भरपूर शक्ति से एक किक रिफ़ॉर्मर के सीने पर जमा दी। उस किक में गाइड ने पूरी ताकत झोंक दी थी जिस कारण रिफ़ॉर्मर के पैर जमीन से उखड़ गये और वह ड्राइवर के साथ ही पीछे दीवार से जा टकराया।

ड्राइवर दीवार से टकराने के एक क्षण पहले ही उसे अपनी पकड़ से आजाद कर चुका था, अन्यथा रिफ़ॉर्मर और दीवार के बीच पीसकर उसकी पसलियाँ जरुर टूट जाती। रिफ़ॉर्मर दीवार से टकराकर गिर पड़ा।

"गाइड के बच्चे। इसे मार रहा है या मुझे ? समय पर खुद को नही हटाता तो अभी उसकी जगह मैं लेटा होता।" ड्राइवर झुंझलाते हुए बोला।

"तू उसके पीछे खड़ा ही क्यों था ?" गाइड ने उल्टा उसे ही डांटा।

"हमको शौक था पीछे खड़े रहने का।" ड्राइवर ने भी तुरंत जवाब दिया। उनकी आपसी बहस को रिफ़ॉर्मर की गुर्राहट ने भंग किया।

"अबे यार! यह इंसानी जानवर।"

रिफ़ॉर्मर ड्राइवर की ओर बढ़ा ही था कि गाइड ने टेबल उठा कर रिफ़ॉर्मर के सर पर पूरी ताकत से खींच के दे मारी। टेबल के टुकड़े टुकड़े हो गये, गाइड का हाथ अपने ही प्रहार से झनझना रहा था। रिफ़ॉर्मर सर पकड़े हुए घुटनों के बल फर्श पर बैठा ही था कि अपने हाथ में टेबल के बचे हुए हत्थे का प्रयोग करते हुए ड्राइवर ने फिर से एक प्रहार किया और इस प्रहार के साथ भीषण स्वर में चिंघाड़ते हुए रिफ़ॉर्मर उठ खड़ा हुआ। वह ड्राइवर की ओर मुड़ा, ड्राइवर समझ गया कि अब यदि इसकी पकड़ में आया तो काम तमाम होना निश्चित है।

अचानक आगे बढ़ता रिफ़ॉर्मर चकराकर मुंह के बल फर्श पर गिर पड़ा। उसका सम्पूर्ण शरीर ड्राइवर के कदमों में पड़ा हुआ था।

"अबे पैर हटा। वरना काट खायेगा मगरमच्छ।" गाइड के कहने से ड्राइवर उछलकर उस स्थान से हट गया। कुछ क्षणों तक वे दोनों उसे पड़े हुए देखते रहे। जब यकीन हो गया कि वह नही उठेगा तब ड्राइवर ने गर्व से गाइड की ओर देखा।

"इतना न इतराओ। यह तुम्हारे मेरे प्रहारों से बेहोश नही हुआ है, यह उसी इंजेक्शन के हैवी डोज का असर है जो हमने इसे लगाया हुआ है, उसी से यह अब तक कमजोर है। श्रेय न लूटा कर।" गाइड ने कहा

"चलो चलो! अब बातें न बनाओ ज्यादा। जो काम मिला है उसे खत्म करो। इसे सेफरुम में ले चलो।" कहते हुए ड्राइवर ने दीवार के अँधेरे कोने की ओर कोई इशारा किया जिसके पश्चात वह हिस्सा प्रकाशमान हो गया। वह कांच की मजबूत पारदर्शी दीवार थी। जिसके दूसरी ओर शक्ति मठ की यूनिफ़ॉर्म पहने हुए अनेक एजेंट्स मौजूद थे, जो इस पूरे वाकये को देख रहे थे। उनके चेहरों पर मुस्कुराहट थी।

“अबे तुम सालो, मदद न कर दिया करो। हाथ घिस जायेंगे। बैठे बैठे तमाशा देख रहे हो और हम पिटा रहे है।” ड्राइवर ने उन्हें देख कर बुरा सा मुंह बनाया।

गाइड उसकी बात पर मुस्कुरा दिया। उसे पता था कि उन्हें बीच में न पड़ने के लिये पहले ही ड्राइवर ने निर्देश दे रखा था।

***

।। त्रेतायुग ।।

वचनभंग

“चिंतित दिखायी पड़ रहे हो भद्रक।” गुरु महेंद्र ने भद्रक के कमरे में प्रवेश करते ही उसके मुखमंड़ल को देख कर कहा। भद्रक ने फौरन अपने आसन से उठकर गुरु को प्रणाम किया। महेंद्र ने मुस्कुराते हुए उसे आशीर्वाद दिया।

“विराजिये गुरुवर।” भद्रक ने महेंद्र को बैठने का अनुनय किया। महेंद्र आसन पर बैठ गये।

“सात वर्ष बीत चुके है भद्रक। तुम अब भी बलभद्र को लेकर चिंतित हो।” महेंद्र ने उसके मन की बात पहचानते हुए कहा।

“जी गुरुवर। भाई है मेरा, चिंता होती ही है।” भद्रक ने सौम्य स्वर में कहा, उसके स्वर में चिंता और दुःख स्पष्ट रूप से झलक रहा था।

“वह कोई बालक नही है। वह एक स्वतंत्र दानव संगठन का प्रमुख है। सात वर्षो पूर्व ही उसने अपने अनुयायियों के साथ यह नगर और इसकी न्यायव्यवस्था को त्याग दिया था। तुमने सब तो किया उसके लिये, यहाँ तक की अपने राज्य का पूर्वी छोर भी उसे दे दिया ताकि वह वहाँ अपनी विचारधारा वाले दैत्यों, दानवों एवं राक्षसों के साथ रह सके, जिससे भविष्य में विभिन्न मतों के कारण आपस में टकराव ना हो । वह एक शक्तिशाली नायक है, उसने अनेक अवसरों पर स्वयं की योग्यता सिद्ध की है। तुम्हें उसके लिये चिंतित होने की कोई आवश्यकता ही नही है।” महेंद्र ने भद्रक को समझाने का प्रयत्न किया।

“यही तो मेरी चिंता का कारण है गुरुदेव। वह अपनी शक्ति के मद में चूर है, मदान्धता से ग्रसित हो चुका है। अयोध्या और आसपास के अन्य नगरों पर उसकी दानव सेना यदा कदा आक्रमण करती रहती है। जिस कारण हमने अनेकों दानव सैनिक तो खोये ही है, साथ ही में स्वयं को एक भीषण संकट के रूप में भी प्रचारित किया है। जिस कारण सभी राज्य आपसी मनमुटाव तक भुला कर एक हो रहे है, ताकि दानवों का सम्मिलित रूप से नाश कर सके। अकेले अयोध्या के महाराज दशरथ के पुत्र ने ही हमारे अनेकों मायावी और शक्तिशाली दानवों का वध कर दिया है। किन्तु इसमें उनका कोई दोष नही है। बलभद्र ने ही आरंभ किया है, और उसी का आदर्श समक्ष रख कर अन्य दानव जातियां भी स्वयं को शक्तिशाली सिद्ध करने के प्रयास में आत्मघाती निर्णय ले रहे है।

वे समझते नही कि हम मानवों से सीधे युद्ध में नहीं जीत सकते, क्योंकि वे शारीरिक बल की अपेक्षा बुद्धि को ही वरीयता देते है। जिस कारण वे हमसे निपटने के लिये नये नये उपाय और अस्त्रों की खोज करते रहते है , किन्तु हम केवल अपनी शक्ति के घमंड़ पर आश्रित है, जिस कारण बचाव के लिये कोई ठोस योजना करने के बजाय सीधे युद्ध करने में व्यस्त हो जाते है। यह सब कम था कि एक और गुप्त दल सक्रिय हो उठा जो दानवों के नाश हेतु तत्पर है। पता नहीं वे कौन है और कहाँ से आते है, किन्तु वे दानवों के अनेक आक्रमणों को अब तक विफल करते आ रहे है। बलभद्र के भी अनेक दानव उस दल के हाथों मारे गये है। बलभद्र की दो टुकडियां तक उस गुप्त दल से सीधे युद्ध के समय नष्ट हो चुकी है।” भद्रक के मुख पर चिंता की रेखायें और अधिक स्पष्ट हो गयी थी।

“मनुष्यों का एक साधारण दल भला कैसे अपने से कई गुना अधिक शक्तिशाली राक्षसों एवं दानवों का संहार कर सकता है ? एकाध बार इसे संयोग और कुशल रणनीति माना जा सकता है किन्तु वे सदैव दानवों को सीधे युद्ध में परास्त करते रहे यह कैसे संभव है, वे अवश्य ही असाधारण योद्धा होंगे।” महेंद्र सोच में पड़ गये थे।

“वे कोई साधारण मनुष्य नही है गुरुदेव। वे अद्भुत सिद्धिधारक हैं और अनेकों रहस्यमयी युद्ध कलाओं में निपुण योद्धा है, जिनका उद्देश्य ही केवल दानव जातियों का सर्वनाश है।”

“सिद्धिधारक ? किस प्रकार की सिद्धियाँ ?” महेंद्र ने प्रश्न किया।

“मुझे उनकी शक्तियों के बारे में अधिक नही पता। किन्तु अनेक दानव ऐसे थे जो उस दल से बचकर निकलने में सफल भी हुए थे। उनमे से किसी ने बताया था उस दल में दो योद्धा ऐसे है जो किसी प्रकार की ‘चक्र’ विद्या जानते है। वे अपने पास कोई दण्ड रखते है, जिसका उपयोग समय पड़ने पर एक चक्र की तरह करते है। किवदंतिया है कि जब उनके चक्र भूमि से टकराते है तब भूमि भी कांप उठती है।” भद्रक कहता चला गया।

“चक्रदण्ड विद्या और भूमिकंपक।” महेंद्र के नेत्र सिकुड़ गये, उनके मुख पर आश्चर्य के भाव उभरे। भद्रक ने महेंद्र के बदलते भावों का निरीक्षण किया।

“आप के भाव से प्रतीत होता है आप इस सिद्धि के विषय में जानकारी रखते है।”

“मैं नही रखता भद्रक। किन्तु इस सिद्धि के जनक को मैं जानता हूँ, इस संसार में मात्र वही एक व्यक्ति है।” महेंद्र उठ खड़े हुए।

“कौन है वो ?” भद्रक जानने को उत्सुक था।

“महर्षि संदीप।” महेंद्र ने उत्तर दिया।

“मैंने कभी इनके विषय में नहीं सुना। कृपया मुझे विस्तार से बताइए।” भद्रक ने निवेदन किया।

“महर्षि संदीप और मैं एक ही गुरु से शिक्षा प्राप्त है भद्रक। हम दोनों के विचारों में सदैव अंतर रहा था। राक्षसों से हुई एक भिडंत में उसके गाँव सहित पूरा परिवार और संबंधी मृत्यु को प्राप्त हुए थे जिस कारण उसने निश्चय किया कि वह दानवों के विरुद्ध युद्ध करने की शक्ति अर्जित करेगा। उसने गुरुकुल छोड़ दिया और अज्ञातवास में चला गया, वर्षो की तप और साधना के पश्चात संदीप ने ऐसी अनेक सिद्धियाँ अर्जित कर ली जिससे वह दानव जातियों से युद्ध कर सकता था। अवश्य वह गुप्त संस्था इन्ही के सानिध्य में फल फूल रही है। मैं उनसे इस विषय में चर्चा करूंगा। अभी चलता हूँ भद्रक, शीघ्र मिलूंगा।” इतना कहकर बिना भद्रक के उत्तर की प्रतीक्षा किये महेंद्र कक्ष के बाहर निकल गये।

भद्रक के मन में अनेक प्रश्न अब भी अनुत्तरित थे।

***

सुबाहु अब एक शक्तिशाली एवं सुंदर युवक में बदल चुका था। कंधे तक लहराते केश, हल्की काली चमकदार दाढ़ी। विस्तृत और विशालकाय कंधे, शक्तिशाली और सुदृढ़ भुजाये, और विस्तृत छाती। वह पृथ्वी पर किसी देवता समान ही प्रतीत होता था। संयम एव धैर्य का महत्व आत्मसात करने के पश्चात सुबाहु ने कम समय में ही अनेक युद्ध कलाओं के अनुरूप स्वयं को ढाल कर अनुशासित कर लिया था। अब वह भी भार्गव के ही समान सिद्धियों और विविध कलाओं में निपुण था। भार्गव के संग उसकी जोड़ी ने दानवों में हाहाकार मचा कर रख दिया था। वे सीधे युद्ध भी करते थे और छापा मार भी। दानव जातियों के लिये वे किसी भयावह दुस्वप्न के समान ही थे। आज अभ्यास के पश्चात सुबाहु ने आश्रम में ज्यों ही प्रवेश किया उसे अभास हुआ कि आश्रम में आज कुछ अलग ही चहल पहल थी। सुबाहु आश्रम के प्रांगण में था, वह महर्षि संदीप की कुटिया की ओर बढ़ा ही था किन्तु भार्गव ने उसकी बांह पकड़ ली।

“सुबाहु। अंदर मत जाओ। महर्षि इस समय व्यस्त है ?” भार्गव ने सुबाहु को रोका।

“महर्षि ने आज तक कभी किसी को कुटी में प्रवेश के लिये नही रोका। आज ऐसा क्या हो गया मामा ?” सुबाहु ने प्रश्न किया।

“आज महेंद्र ऋषि आश्रम में पधारे है। वे महर्षि संदीप के छात्र जीवन के मित्र रहे है। कुछ आवश्यक मंत्रणा चल रही है तो हम उसमे व्यवधान नही डाल सकते।” भार्गव ने सुबाहु को समझाया। सुबाहु ने अनुमोदन में गर्दन हिला दी।

“और ऋषि कपिल कहाँ है ?”

“वे भी उन्ही के साथ हैं।” भार्गव ने इतना कहा और फिर आश्रम के प्रांगण के उस कोने में चला गया जहाँ शिष्य ज्ञान साधना कर रहे थे।

***

“महर्षि संदीप आपने वचन दिया था।” महेंद्र का स्वर थोडा ऊंचा था। कपिल हाथ बांधे शांत खड़ा था। उसके लिये दोनों ही वरिष्ठ थे जिनके मध्य बोलकर वह असभ्यता नही दिखाना चाहता था। यदि महर्षि संदीप ने नही रोका होता तो कपिल अब तक कुटी से बाहर प्रस्थान कर चुका होता।

“मुझे अपना वचन स्मरण है ऋषि महेंद्र।” संदीप ने बिना उत्तेजित हुए शांत स्वर में कहा।

“यदि स्मरण होता तो आज यह अवसर नही आता। आपने वचन दिया था आप इस विद्या का प्रयोग दानवों के विरुद्ध नही करेंगे। फिर यह क्या है ?” महेंद्र के स्वर में क्रोध स्पष्ट झलक रहा था।

“महेंद्र। मैंने स्पष्ट कहा था इन विद्याओं का प्रयोग तभी होगा जब दानव जातियां अपनी सीमा में रहेंगी, और दानव जातियों ने अपनी सीमा लांघी है। किन्तु इसके पश्चात भी मैंने स्वयं शस्त्र नही उठाये है। मैंने यह विद्या केवल उन्हें सिखाई जिन्हें इसकी आवश्यकता थी।” महर्षि ने अपना पक्ष रखा।

“आप स्पष्ट रूप से यह क्यों नही कहते कि आपने अपने शस्त्र दूसरों को प्रदान कर दिये। आप परोक्ष रूप से युद्ध में भले सम्मिलित न हो किन्तु अपरोक्ष रूप से इस विनाश का कारण आप ही तो हैं।” महेंद्र अपने पूर्ववत स्वर में बोले जा रहे थे। कपिल अब भी मूकदर्शक बने रहने के अलावा और कुछ न कर रहा था।

“इस विनाश का कारण आप और आपके दानवों की नीतियाँ रही है महेंद्र। जिस प्रकार मैंने आपको वचन दिया था कि मैं इस विद्या का प्रयोग दानवों के विरुद्ध नही करूँगा उसी प्रकार आपने भी वचन दिया था आप दानवों को मुख्यधारा में सम्मिलित करेंगे, उन्हें सभ्यता का अंग बनायेंगे।” महर्षि संदीप की भृकुटियाँ तन गयी।

“और मैंने अपना वचन निभाया। उदाहरण स्वरुप आज दानवराज भद्रक आपके समक्ष है। उन्होंने दानव जातियों को एक शांत सभ्यता में परिवर्तित करने और एक समाज के रुप में एकजुट करने का कार्य किया है। आप उनके विषय में जानते हैं।” महेंद्र ने प्रतिवाद किया।

“जहाँ तक मुझे स्मरण है, हमारे शिष्यों ने कभी दानवराज भद्रक के दानवों पर आक्रमण नही किया। वे शांति से रहना चाहते है, और हम उनके विचारों का सम्मान करते है , इसी कारण आज तक हमारा उनसे कभी मतभेद नही रहा और ना ही किसी प्रकार का कोई टकराव हुआ।” बहुत समय तक चुप रहने के पश्चात कपिल ने चुप्पी तोड़ी। महेंद्र ने आग्नेय नेत्रों से कपिल की ओर देखा, कपिल शांत खड़ा रहा।

“दानवराज भद्रक को हमारी ओर किसी भी प्रकार का कष्ट नही होगा। किन्तु उनके भाई बलभद्र से हमारा टकराव सुनिश्चित है, क्योंकि वे सभ्यता में विश्वास नही रखते और अन्य जातियों के लिये घातक है। स्वयं भद्रक ने उन्हें अपनी विचारधारा से पृथक कर दिया है।” महर्षि ने कपिल का साथ दिया।

“आप को क्या लगता है कि आप भद्रक के लिये संकट बन सकते है ? भद्रक शांत और सभ्य है और बुद्धि तथा विवेक से कार्य करता है इस कारण आप उसे कायर और शक्तिहीन समझने की भूल तो नही कर रहे महर्षि ? आपको क्या लगता है आप और आपके कुछ सिद्धिधारी शिष्य मिलकर भद्रक को परास्त कर सकते हैं ? भ्रम है यह आपका। आप भले भद्रक से सीधे युद्ध नही कर रहे किन्तु बलभद्र से आपका टकराव और मतभेद भद्रक से आपके युद्ध का कारण अवश्य बनेगा। आप जानते ही हैं भद्रक अपने भाई से अत्याधिक प्रेम करता है और यदि उसे कुछ हुआ तो वह जिस सभ्यता के मार्ग पर निकला है उस मार्ग को छोड़ भी सकता है। इसलिये इसे मेरा नम्र निवेदन समझिये या चेतावनी, आप और आपके शिष्य बलभद्र के मार्ग में आना बंद कर दीजिये।” महेंद्र पर अब उनका क्रोध हावी हो रहा था।

“यदि भद्रक को अपने भाई से इतना ही प्रेम है और उसकी इतनी ही चिंता है तो उन्हें चाहिये कि वे उसे सही मार्ग पर लाये। हम किसी के मध्य नही आ रहे हैं। हमारी नीति सदैव प्रथम प्रहार न करने की रही है। बलभद्र की महत्वकांक्षा ही हर बार टकराव का कारण बनती है। वह यदि अन्य जातियों पर शक्ति प्रदर्शन एवं अत्याचार बंद कर दे तब हमें मध्यस्थता करने की आवश्यकता ही नही पड़ेगी।” महर्षि ने महेंद्र के क्रोध को अनदेखा कर दिया।

“आप भूल रहे है महर्षि। यह योग्यता का युद्ध है, जो सृष्टि के आरंभ से ही चला आ रहा है। वही जीवित रहेगा और वही शासन करेगा जो शक्तिशाली होगा और बलभद्र यह अच्छे से जानता है कि दानव शक्तिशाली है, इसके पश्चात भी उन्हें केवल घृणा के अलावा और कुछ भी प्राप्त नही हुआ और ना उनको वह सम्मान मिला जिसके वे अधिकारी थे। यह अब और सह्य नही है, दानवों को मनुष्यों की दासता स्वीकार्य नही है। अब यह युद्ध मनुष्यों की कुटिलता और दानव जातियों के अधिकार के मध्य है। इसे उन्हें ही सुलझाने दीजिये। आप हस्तक्षेप ना ही करें तो उत्तम।” महेंद्र ने पुन: अप्रत्यक्ष रूप से चेतावनी दी।

“आप ही ने कहा के यह वर्चस्व का युद्ध है। शक्ति का युद्ध है, वही शीर्ष पर रहेगा जिसके पास शक्ति और योग्यता होगी। तब आप क्यों चिंतित हो रहे हैं। मनुष्यों और दानवों के मध्य यदि निर्णयात्मक युद्ध होगा तो क्या हम किसी अन्य जाति से सम्बंधित है ? हम भी तो मनुष्य ही है, सहज रूप से हम अपना बचाव करेंगे ही और हम यही कर रहे है। इतिहास साक्षी है कि हमने कभी प्रथम आक्रमण नही किया और ना करेंगे, किन्तु यदि दानव इसका यह अर्थ लगाये कि हम शक्तिहीन, अशक्त और अयोग्य है, तो यह उनकी भूल है। जिसके परिणाम वे समय समय पर भुगत ही रहे है। आप के पास भी अवसर है ऋषि महेंद्र, जिस प्रकार भद्रक ने अनुचित मार्ग त्यागकर एक सराहनीय प्रयास किया है और उदाहरण प्रस्तुत किया है। उसी प्रकार यदि बलभद्र भी अपनी शक्ति का घमंड़ त्याग कर सभ्यता स्वीकार कर ले तो यह अनावश्यक युद्ध टल सकता है। यदि उसका स्वभाव नही बदल सकता तो हमें भी पूर्ण अधिकार है स्वयं की रक्षा करने का और ऋषि महेंद्र, यह स्मरण रखिये मैंने अपनी सिद्धियों का प्रयोग दानवों के विरुद्ध ना करने का वचन दिया था, किन्तु अपने बचाव के लिये यदि मैं इन सिद्धियों का प्रयोग करता हूँ तो यह मेरे वचन की सीमा में नहीं आता और ना ही इसे वचन भंग माना

जायेगा क्योंकि तब मैं इसका प्रयोग अपनी रक्षा के लिये ही करूँगा और अपनी तथा अपनी जाति की रक्षा हेतु मैं किसी अन्य आतताई जाति का समूल नाश भी कर सकता हूँ।" कहते हुए महर्षि संदीप उठ खड़े हुए। वे क्रोधित थे, कपिल ने संदीप को इतना क्रोधित कभी नही देखा था, वह आश्चर्य चकित सा उनके भाव देखता रहा।

महेंद्र से कुछ कहते न बना।

"आपसे नम्र विनती है, आप यहां आये हमारा आतीथ्य स्वीकार किया। हमें प्रसन्नता हुई। किन्तु अब सांझ होने को है इसलिये आपको सुझाव दूंगा कि आज आप इस आश्रम में ही रुक जाये और कल प्रात: प्रस्थान करें। रात्रि में वन विचरण अत्यंत घातक होता है, निशाचरों एवं हिंस्त्र पशुओं का भय रहता है।" महर्षि ने उसी स्वर में कहा।

"आपके आतिथ्य एवं चिंता हेतु धन्यवाद और धन्यवाद इस सम्मान हेतु। किन्तु अब मैं प्रस्थान की आज्ञा चाहूँगा।" महेंद्र के स्वर में उनकी अरुचि स्पष्ट झलक रही थी।

"कपिल! इन्हें सकुशल आश्रम की सीमा से बाहर विदा कर आओ।" महर्षि ने कपिल को आदेश दिया और पुन: अपने आसन पर बैठ ध्यान मग्न हो गये।

"चलिये ऋषि वर।" कपिल ने महेंद्र को देख हाथ जोड़ लिये।

महेंद्र अपने सुलगते नेत्रों के साथ ही तीव्र कदमों से कुटी के बाहर निकल गये।

***

"तुमने स्वयं गुरु महेंद्र को उस आश्रम से निकलते देखा है ?" बलभद्र अपने दानव गुप्तचरों से संवाद कर रहा था। दानव गुप्तचर हाथ जोड़े उसके समक्ष खड़े थे। बलभद्र अपने सिंहासन पर विराजमान था। उसके नेत्र मदिरा के मद के कारण रक्तिम थे और शरीर आवश्यकता से अधिक झूम रहा था।

"इसका अर्थ यह हुआ कि गुरूजी को ज्ञात है वे कौन है जो इतने वर्षो से दानव जातियों के संहारक बने हुए है। इसके पश्चात भी उन्होंने इसे गुप्त रखा। तुम दोनों ने उत्कृष्ट कार्य किया है तुम्हें इसके लिये विशेष पुरस्कार मिलेगा।" कहते हुए बलभद्र उठ खड़ा हुआ। वह ड़गमगाया किन्तु सेवकों ने फुर्ती से उसे थाम लिया। उसने सेवकों को पीछे रहने का संकेत किया, वे पीछे हट गये।

“दानव योद्धाओं को सांझ की सभा के लिये आदेश भिजवा दो। हम शीघ्र ही उस आतताई दल का समूल नाश चाहते है।” कहकर बलभद्र अपने कक्ष की ओर प्रस्थान कर गया।

***

कपिल सुबाहु एवं भार्गव एकदूसरे के समक्ष बैठे हुए थे। यह उनके आश्रम का ही एक एकांत कक्ष था जहाँ नई रणनीतियों पर विचार विमर्श किया जाता था।

“इसका अर्थ यह हुआ कि भद्रक के गुरु महेंद्र और महर्षि संदीप भूतकाल में मित्र एवं सहपाठी हुआ करते थे। फिर क्या कारण था जो दोनों के मार्ग विपरीत हो गये?” भार्गव के मन में महर्षि एवं गुरु महेंद्र के संबंधो को जानने की उत्कंठा थी।

“वह एक वृहद कथा है भार्गव। फिर कभी बताऊंगा, संक्षेप में इतना समझ लो जो कभी तुम्हारे और सुबाहु के साथ हुआ था, वैसा ही कुछ महर्षि संदीप के साथ भी हुआ था। जिस कारण उन्होंने आश्रम का त्याग कर दिया और अज्ञातवास में चले गये थे। कुछ वर्षो पश्चात जब वे अज्ञातवास से लौटे तब वे अद्भुत सिद्धियों के स्वामी बन चुके थे। उनके मन में प्रतिशोध की ज्वाला भड़क रही थी। उन्होंने उस विद्या का प्रयोग करके दानव जातियों को भयंकर आघात पहुंचाया। दानवों ने गुरु महेंद्र को अपना प्रतिनिधि बना कर महर्षि के पास भेजा। महर्षि संदीप ने क्रोध में आकर एक बार दानवों के विरुद्ध भयंकर युद्ध किया जिसमे असंख्य दानव मारे गये। महर्षि संदीप ने यह संहार देखकर स्वयं को बदल लिया और गुरु महेंद्र को वचन दिया कि अब वे इन सिद्धियों का प्रयोग दानव जातियों के विरुद्ध कभी नही करेंगे। किन्तु इसके लिये उन्होंने गुरु महेंद्र से वचन स्वरुप दानवों द्वारा समाज की मुख्यधारा में सहभागिता का वचन लिया था।” कपिल ने संक्षेप में बताया।

“और यह स्पष्ट है कि दानव अपने वचन पर कभी स्थिर नही रह पाये, जिस कारण महर्षि का वचन महत्वहीन हो गया।” सुबाहु ने अनुमान लगाया।

“हाँ, कह सकते हो। जिस प्रकार हम तुम्हें मिले थे उसी प्रकार महर्षि ने मुझे भी आश्रय दिया था और शिक्षा दीक्षा द्वारा इस योग्य बनाया।” कपिल मुस्कुराया।

“और आपने भी यह परंपरा आगे बढाई।” भार्गव ने कहा।

“गुरु महेंद्र के यहाँ आने का आशय क्या था वह स्पष्ट नही हो पाया।” सुबाहु अब तक संशय में था।

“उनका आशय यही था कि हम दानवों के क्रियाकलापों के मध्य हस्तक्षेप करना बंद कर दें, दानव यदि विनाशक रहे तो भी हम केवल हाथ बांधे खड़े रहे। उनकी अपनी एक अलग ही व्याख्या है श्रेष्ठता को लेकर। उनके अनुसार दानव जातियां मनुष्यों से अधिक शक्तिशाली है, इसलिये वे श्रेष्ठ है। जबकि मनुष्य अपनी कुटिलता के कारण श्रेष्ठतत्व के झूठे पद पर विराजमान है।” कपिल ने सुबाहु की ओर देखा।

“यदि शक्ति को ही श्रेष्ठ माना जायेगा तो फिर उन्हें आपत्ति नही होनी चाहिये यदि हम अपना शक्ति प्रयोग कर रहे है तो। भद्रक से हमें कोई हानि नही है, भद्रक एक विलक्षण दानव है, उसने दानवों की एक शांत सभ्यता की नींव रची है। हम उनके मध्य कभी नही आयेंगे जब तक वे अपनी मर्यादा में रहे। किन्तु बलभद्र उनके विपरीत है। इतने वर्षो में दानवों से हुई भिडंत में हमने सबसे अधिक बलभद्र को ही हानि पहुंचाई है, क्योंकि बलभद्र एक क्रूर, मूर्ख और अत्याचारी दानव है, और तो और वह नरभक्षण भी करता है, जो सर्वथा घृणित ही माना जायेगा। इसलिये उसका अंत भी हमारे ही हाथो सुनिश्चित है। मुझे फर्क नही पड़ता गुरु महेंद्र क्या चेतावनी देते हैं क्या तर्क देते हैं। हमारा केवल एक ही तर्क है, दानव सही रहेंगे तो हमारा व्यवहार भी सही रहेगा। शक्ति वाली व्याख्या सर्वथा मूर्खता है, जगविदित है कि भीमकाय हाथी को मात्र एक छोटा सा अंकुश ही नियंत्रण में रखने के लिये पर्याप्त है और यदि दानव हाथी है तो हम वही अंकुश है, किन्तु हम वह अंकुश नही है जो मस्तक में चुभन देकर नियंत्रण में रखे, हम वह अंकुश है जो मस्तक को चीरकर हाथी को ही समाप्त कर देता है।” सुबाहु के शब्दों में उसका चिरपरिचित क्रोध झलक रहा था। किन्तु इस बार उससे भार्गव एवं कपिल दोनों सहमत थे।

कपिल उससे इसी प्रकार के उत्तर की अपेक्षा कर रहे थे।

“मेरे पास एक योजना है गुरुवर।” सुबाहु ने कहा। कपिल ने केवल शीश हिलाकर कहने का संकेत दिया।

“हम सीमित संख्या में ही है जिस कारण मात्र आसपास के राज्यों तक ही हमारी पहुँच है। हम अनेक बार केवल इसलिये असफल हुए है क्योंकि हम समय रहते नही पहुँच पाये। तो मेरी योजना भविष्य को लेकर है। जिस प्रकार आप और महर्षि ने मिलकर इस आश्रम का निर्माण किया और यहाँ अद्भुत योद्धा तैयार किये। ठीक उसी प्रकार मैं चाहता हूँ कि हम

अपने सर्वोत्तम योद्धाओं को देश के विभिन्न भागों में भेजे ताकि वे वहाँ भी इस आश्रम की तरह एक रक्षा दल तैयार कर सके। हर राज्य के पास अपनी सेना है, अपने शासक है, किन्तु मायावी दानव जातियों के विरुद्ध वे सदैव शक्तिहीन ही रहते है। हमारा हर योद्धा देश के विभिन्न क्षेत्रों में आश्रम की एक श्रृंखला आरंभ करेगा जहां हम योग्य व्यक्तियों का चयन करके उन्हें प्रशिक्षण देंगे ताकि वे स्वयं के साथ साथ अपने समाज की भी रक्षा कर सके।” सुबाहु की आँखों में एक चमक थी।

“तुम्हारी योजना से मैं प्रभावित हूँ सुबाहु। मुझे प्रसन्नता हुई तुम्हारी दूरदर्शिता को जानकर। हमें इसे कार्यान्वित अवश्य करना चाहिये। मैं इस विषय में महर्षि से चर्चा अवश्य करूँगा। तब तक हमें बलभद्र की ओर से सावधान रहना होगा। यदि महेंद्र को हमारे इस गुप्त संगठन के विषय में पता है तो बलभद्र को भी देर सवेर ज्ञात हो ही जायेगा। इसलिये बलभद्र की हर योजना के लिये हमें स्वयं को तैयार रखना होगा।”

“जी गुरुवर।” सुबाहु ने हामी भरी। भार्गव इस बीच कुछ ना बोला, उसे पता था कि उसे कुछ भी बोलने की आवश्यकता नही थी। सुबाहु उसके मन की हर बात स्वयं बोल रहा था। फिर भी न जाने क्यों उसका मन आशंकित था।

***

वर्तमान समय

विश्वासघात

ऋचा की आँखे खुली। उसके सारे शरीर में ऐठन और पीड़ा थी। उससे बिस्तर से उठा ही ना गया। पलके अब तक बोझिल थी, उसकी नजर सीधे दीवार पर स्थित घड़ी पर गयी। दस बज रहे थे।

“थैंक गॉड! यह सब एक सपना ही था।” ऋचा ने भगवान को धन्यवाद दिया ही था कि उसे भास हुआ की यह उसका कमरा नही है। उसने अपनी दृष्टि का दायरा बढ़ाया। यह बिस्तर भी उसका नही था। कमरे की दीवारे अनजानी थी। वह कमरा किसी मिडल क्लास व्यक्ति के घर का प्रतीत हो रहा था। कामचलाऊ फर्नीचर और दीवारों पर लगा सस्ता डिस्टेम्पर इस बात की स्पष्ट चुगली कर रहा था। इस कमरे में उंगलियों पर गिने जा सकने लायक ही सामान थे। एक बेड, कोने में एक फ्रिज, एक २४ इंची टीवी और उसका फर्नीचर, दीवार पर एक पुरानी दीवार घड़ी और छत से लगा हुआ मध्यम गति से घूमता हुआ सीलिंग फैन। कमरे में एक खिड़की थी जो खुली थी। ऋचा को मिटटी की सौंधी खुशबु आयी जिसमे फूलों की महक भी थी। विभिन्न पक्षियों कलरव से उसे अंदाजा हो गया कि वह निस्संदेह शहर से बाहर किसी स्थान पर है।

“ओह गॉड! यानी वह सपना नही था। इसका मतलब मैं ....मैं ...और वह अजीब से नकाब वाला शख्स ?” उसने थोडा सा प्रयास किया और अपने स्थान से उठने की कोशिश की। उसने अपने कपड़ों की ओर देखा और उन्हें टटोला, उसे यह जानकर राहत मिली कि ये वही कपडे थे जो उसने रात में पहने हुए थे।

वह लड़खडाते हुए बिस्तर से उठ खड़ी हुई। वह इतना समझ चुकी थी कि वह शख्स जो कोई भी था उसने उसकी जान बचाई थी। फिर भी एक घबराहट अब भी उसके मन में थी। उसने कमरे में मौजूद हर वस्तु को देखा, उसे किसी ऐसी वस्तु की तलाश थी जो हथियार की तरह प्रयोग में लायी जा सके। उसकी खोज पीतल की एक फूलदान पर आकर समाप्त हुई। उसने वह फूलदान सावधानी से बिना आवाज किये पकड़ा और दबे पाँव दरवाजे की ओर बढ़ी। बिना आहट किये उसने दरवाजा धीरे से धकेला और वह ठिठक गयी।

उसके सामने कुछ ही दूरी पर कमरे में बने हुए मंदिर के सामने एक व्यक्ति खड़ा था। उसकी पीठ ऋचा की ओर थी और चेहरा मंदिर के

सामने। मंदिर में भगवान शिव की एक मूर्ति स्पष्ट दिखायी दे रही थी। वह व्यक्ति मात्र एक धोती में खड़ा था। उसका ऊपरी शरीर नग्न था। उसकी मांसपेशियां और उतार चढाव देखकर ऋचा एक क्षण के लिये हतप्रभ रह गयी। वह निस्संदेह एक विशालकाय, सुदृढ़ और असाधारण शरीर का स्वामी था। उसकी पीठ पर कुछ पुराने जख्मो के निशान स्पष्ट देखे जा सकते थे। उसके सर पर केश नही थे। उस व्यक्ति का सर पूर्णतया केश रहित था, केशों के नाम पर मात्र एक चोटी थी। वह पूजा कर रहा था। एक हाथ में दीप और दूसरे में घंटी लिये हुए वह मंत्रोच्चार कर रहा था। ऋचा के वहाँ पहुँचने के कुछ ही क्षणों बाद उसकी पूजा समाप्त हुई और उसने दीप को मंदिर में रखते हुए मंदिर पर माथा टेका।

ऋचा ने फूलदान अपनी पीठ के पीछे छिपा लिया।

“उस फूलदान को वही रख दो जहाँ से उठाया था लड़की। मुझसे तुम्हें किसी भी प्रकार का कोई खतरा नही है।” उस व्यक्ति ने पीछे मुड़े बगैर ही कहा। ऋचा हतप्रभ रह गयी। उसने बिना उसकी ओर मुड़े मंदिर के नीचे रखे टेबल पर से अपना वही अजीब सा मास्क उठा कर पहन लिया। इसके पश्चात वह ऋचा की ओर मुड़ा।

ऋचा उसके अद्भुत व्यक्तित्व को देखती रही। उसे अफ़सोस हो रहा था कि वह उसका चेहरा नही देख पायी। अगले ही क्षण उसे भान हुआ कि यह व्यक्ति अब भी उसके लिये अनजान है, और इसने कल रात कई लोगों की हत्या की है। यह ख्याल आते ही उसने फूलदान को हथियार की तरह उसकी ओर तान लिया।

“क्या तुम्हारे प्राण बचाने वाले का तुम ऐसे धन्यवाद करती हो ?” बाली ने कहा। इस समय उसका स्वर रात की तरह भारी नही था।

“मेरी ओर से तुम्हें कोई खतरा नही है। निश्चिंत रहो।” बाली ने सपाट स्वर में कहा।

ऋचा को उसका सर घूमता सा प्रतीत हुआ। फूलदान हाथ से छूटकर फर्श पर जा गिरा। वह भी जा गिरती यदि बाली की शक्तिशाली बाहों ने उसे थाम ना लिया होता।

“तुम पर अभी भी कमजोरी छाई है लड़की। तुम्हें अभी विश्राम की आवश्यकता है।” कहते हुए बाली ने उसे सहारा देते हुए पुन: उसी कमरे में बिस्तर पर लिटा दिया जहां ऋचा की आँखे खुली थी। वह बिस्तर पर लेटने के बजाय तकिये के सहारे अधलेटी बैठ गयी। बाली उसी प्रकार खड़ा रहा। ऋचा ने बोझिल पलकों से उसे देखा और अपलक देखती

रही। बाली को अहसास हुआ कि उसका ऊपरी शरीर अब तक निर्वस्त्र है। वह फ़ौरन कमरे से बाहर निकला और कुछ ही मिनटों में एक सफ़ेद कुर्ता पहने पुन: अंदर आया। इस बार उसके हाथ में एक कप था। कॉफ़ी की खुशबु ऋचा ने फौरन पहचान ली। उसे इस समय कॉफ़ी की सख्त आवश्यकता थी। उसका सर चकरा रहा था, और दर्द से फटा जा रहा था।

“मैं कॉफ़ी बढिया नही बनाता, लेकिन कामचलाऊ बना लेता हूँ।” कहते हुए बाली ने कॉफ़ी का कप ऋचा की ओर बढ़ा दिया जिसे उसने तुरंत थाम लिया।

“आपको कैसे पता कि मुझे कॉफ़ी पसंद है।” उसने कॉफ़ी का सिप लेते हुए कहा। उसका मन अब भी आशंकित था, किन्तु कल रात से लेकर अब तक का उसका बर्ताव देखकर वह थोड़ी सी आश्वस्त थी।

“मुझे नही पता। किचन में कॉफ़ी बनाने का सामान मौजूद था तो बना दिया।” बाली ने सपाट स्वर में कहा।

“यकीन मानिये। इससे बढिया कॉफ़ी मैंने आज तक नही पी।” ऋचा को कॉफ़ी का स्वाद बेहद पसंद आया।

“धन्यवाद आपका।” बाली झेंप गया, उसे ऋचा से ऐसी किसी प्रतिक्रिया की बिलकुल भी उम्मीद नहीं थी। बाली ने खुद को सामान्य करने के लिये रिमोट से टीवी चला दिया। टीवी ऑन होते ही उसने सबसे पहले न्यूज चैनल लगाया।

खबरों में अब भी जयराज शेषन के बेटे वरुण शेषन और वसीम के साथ उसके साथियों की बेरहम हत्याओं की चर्चा हो रही थी और बार बार बाली और ऋचा की तस्वीरें चलाई जा रही थी। खुद को हत्या का दोषी देख कर ऋचा के मुंह से कॉफ़ी छलकते बची।

“य..ये क्या बकवास है ? न्यूज वाले क्या कह रहे है ? म ..मैं हत्यारी! ओह गॉड।” ऋचा ने अपना सर पकड़ लिया।

“शांत हो जाओ। हत्यारा मैं हूँ, तुम नही। मैंने सबको मारा है, तुम्हें पता है।” बाली ने उसे शांत करने का प्रयास किया।

“ये मैं जानती हूँ। लेकिन ये नही जानते, पुलिस और मीडिया तो मुझे ही अपराधी बना रहे है। काश मैंने पापा की बात मान ली होती और दिल्ली नहीं आती।” वह रो पड़ी।

“चिंता मत करो। मेरे पास तुम्हें निर्दोष प्रमाणित करने के लिये कुछ है।” बाली ने कहा। उसकी बात सुनकर ऋचा ने उसकी ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा। उसके गालों पर मोटे मोटे आंसुओ की बुंदे बहने लगी थी।

“शेषन के कैमरे की रिकार्डिंग मेरे पास है। तुम्हें वहाँ से लाते समय ही मैंने उसे अपने कब्जे में ले लिया था। उस वीडियो में सारी घटना रिकॉर्ड है जिससे तुम निर्दोष प्रमाणित हो जाओगी।”

इस बात को सुनकर ऋचा को उम्मीद की एक किरण दिखायी दी, और उसने स्वयं को संयत किया।

“धन्यवाद आपका। आप नही होते तो पता नही मेरा क्या होता। इतना सब कुछ हो गया, मैंने अब तक आपको ना तो धन्यवाद कहा और ना ही आपका नाम पूछा।” ऋचा को यह कहते हुए शर्मिंदगी महसूस हुई।

“इसकी कोई आवश्यकता नही है। हालात ऐसे थे ही नही कि धन्यवाद वगैरह की औपचारिकता निभाने का अवसर तक मिले। मुझे बाली कहते है।” बाली ने कहा और जहाँ पहले फूलदान रखा हुआ था उसी टेबल पर वह बैठ गया।

“आपने यह नकाब क्यों पहन रखा हैं ?” ऋचा को उत्सुकता हुई।

“जाहिर सी बात है, अपनी पहचान छिपाने के लिये।” बाली ने संक्षेप में उत्तर दिया।

“मेरे कहने का मतलब था, यह मास्क इतना अजीब क्यों है ?” ऋचा ने कहा।

“यह इतना महत्व नही रखता। तुम अपने बारे में बताओ, अच्छे घर से लगती हो, इस क्लब और शेषन जैसे लोगो के बीच कैसे फंस गयी ? बताओ मुझे, शायद मैं तुम्हारी कोई सहायता कर सकूँ।” बाली ने ऋचा से ही प्रश्न कर लिया।

ऋचा ने चुप्पी साध ली। उसकी आँखे शून्य में कहीं खो सी गयी। उसकी आँखे फिर से नम हो गयी। अपने हाथों से उसने बहते आंसू पोंछे।

“मैं बनारस से हूँ, मैं कॉलेज टाइम से ही सिंगर बनना चाहती थी। टीवी पर रियलिटी शोज देख देख कर मुझे भी इच्छा होती थी कि मैं भी इनका हिस्सा बनूँ और नाम कमाऊँ। मेरी गायकी का जूनून मेरे पापा को पसंद नही था। एक माँ ही थी जो मेरा मेरा सपोर्ट करती थी। पापा एक स्थानीय पार्टी के अध्यक्ष थे। उनका मानना था कि हमारे पास पैसों की कोई कमी नही है जो मुझे इस तरह स्ट्रगल करना पड़े। लेकिन मेरे लिये पैसा ही सब कुछ नही था। मुझे कुछ करना था, मुझे खुद की पहचान बनानी थी। फिर एक दिन मैंने अपनी सहेलियों के साथ आउटिंग के बहाने दिल्ली आकर चुपचाप एक रियलिटी शो के लिये ऑडिशन दे

दिया। यह बात पापा को पता चली तो हमारी खूब बहस हुई। उन्होंने मुझ पर हाथ तक उठा दिया। मैंने उसी रात फैसला किया और घर छोड़ दिया। दिल्ली में पढ़ते हुए मेरी पहचान वरुण से हुई थी। दिल्ली में पहुँचने के बाद कुछ दिनों तक पैसे चलते रहे, ऑडिशन होते रहे लेकिन जल्द ही रियलिटी शोज की रियलिटी भी समझ में आ गयी। यहाँ भी सब पैसों का ही खेल था। मेरे सारे पैसे खर्च होने लगे, गुजारा होना मुश्किल हो गया था, सहेलियों ने असमर्थता जता दी। सबके रंग दिख गये। पापा के पास भी क्या मुंह लेकर जाती ? ऐसे में वरुण की हेल्प ली, उसने मुझे पैसे उधार दिये और एक क्लब में टेम्परेरी सिंगर की पोस्ट भी दिलवा दी, जिससे मेरे खर्चे निकल आते और मैं ऑडिशन वगैरह दे आती। वरुण के पैसों से और अपनी कमाई को जोड़ कर मैं खुद का म्यूजिक अल्बम बनाने का सोच रही थी। लेकिन बाद में समझ में आया यह इतना भी आसान नही था।” कहकर ऋचा चुप हो गयी। उसने गाल पर बहते आंसू को पोंछा और बाली की ओर देखा। उस मास्क के पीछे क्या भाव थे वह भांप नही पा रही थी।

“आगे बोलो।” बाली का स्वर गूंजा।

“अलबम के लिये बहुत से पैसों की जरूरत थी। इसी बीच शेषन पैसों के लिये तगादा करने लगा और आगे आप जानते ही हो, पैसे वसूल करने के लिये वह किस हद तक गिर गया। मुझे बाद में पता चला कि वरुण सही लड़का नही है। उसे नशे की लत थी और वह कई गैरकानूनी धंधो में लिप्त था। बाप के एसीपी होने का सदैव उसे लाभ मिलता था। इसी कारण उसे इतनी हिम्मत मिलती रहती थी।” ऋचा अब एकदम शांत हो गयी।

“अब मेरी बात ध्यान से सुनो लड़की।” बाली उसकी ओर झुका, उसका स्वर अब बदल चुका था। चिरपरिचित सख्ती पुन: उभर आयी।

“मैं वह रिकार्डिंग की सीडी तुम्हें दे दूंगा और न्यूज चैनल्स में भी भिजवा दूंगा। तुम निर्दोष भले ही साबित हो जाओ लेकिन तुमसे पूछताछ होगी। काफी मानसिक परेशानी झेलनी होगी अभी। इसलिये एक ही रास्ता बचा है, यह खुद्दारी और कुछ करने का जूनून जैसी फ़ालतू और दिवास्वप्न वाली बातों को छोडो और अपने पिता को फोन लगाओ। इस समय तुम्हें उनकी बेहद जरुरत है।” बाली ने कहा और ऋचा के चेहरे पर आते भाव पढ़ने का प्रयास किया।

दिया। यह बात पापा को पता चली तो हमारी खूब बहस हुई। उन्होंने मुझ पर हाथ तक उठा दिया। मैंने उसी रात फैसला किया और घर छोड़ दिया। दिल्ली में पढ़ते हुए मेरी पहचान वरुण से हुई थी। दिल्ली में पहुँचने के बाद कुछ दिनों तक पैसे चलते रहे, ऑडिशन होते रहे लेकिन जल्द ही रियलिटी शोज की रियलिटी भी समझ में आ गयी। यहाँ भी सब पैसों का ही खेल था। मेरे सारे पैसे खर्च होने लगे, गुजारा होना मुश्किल हो गया था, सहेलियों ने असमर्थता जता दी। सबके रंग दिख गये। पापा के पास भी क्या मुंह लेकर जाती ? ऐसे में वरुण की हेल्प ली, उसने मुझे पैसे उधार दिये और एक क्लब में टेम्परेरी सिंगर की पोस्ट भी दिलवा दी, जिससे मेरे खर्चे निकल आते और मैं ऑडिशन वगैरह दे आती। वरुण के पैसों से और अपनी कमाई को जोड़ कर मैं खुद का म्यूजिक अल्बम बनाने का सोच रही थी। लेकिन बाद में समझ में आया यह इतना भी आसान नही था।" कहकर ऋचा चुप हो गयी। उसने गाल पर बहते आंसू को पोंछा और बाली की ओर देखा। उस मास्क के पीछे क्या भाव थे वह भांप नही पा रही थी।

"आगे बोलो।" बाली का स्वर गूंजा।

"अलबम के लिये बहुत से पैसों की जरूरत थी। इसी बीच शेषन पैसों के लिये तगादा करने लगा और आगे आप जानते ही हो, पैसे वसूल करने के लिये वह किस हद तक गिर गया। मुझे बाद में पता चला कि वरुण सही लड़का नही है। उसे नशे की लत थी और वह कई गैरकानूनी धंधो में लिप्त था। बाप के एसीपी होने का सदैव उसे लाभ मिलता था। इसी कारण उसे इतनी हिम्मत मिलती रहती थी।" ऋचा अब एकदम शांत हो गयी।

"अब मेरी बात ध्यान से सुनो लड़की।" बाली उसकी ओर झुका, उसका स्वर अब बदल चुका था। चिरपरिचित सख्ती पुन: उभर आयी।

"मैं वह रिकार्डिंग की सीडी तुम्हें दे दूंगा और न्यूज चैनल्स में भी भिजवा दूंगा। तुम निर्दोष भले ही साबित हो जाओ लेकिन तुमसे पूछताछ होगी। काफी मानसिक परेशानी झेलनी होगी अभी। इसलिये एक ही रास्ता बचा है, यह खुद्दारी और कुछ करने का जूनून जैसी फ़ालतू और दिवास्वप्न वाली बातों को छोडो और अपने पिता को फोन लगाओ। इस समय तुम्हें उनकी बेहद जरूरत है।" बाली ने कहा और ऋचा के चेहरे पर आते भाव पढ़ने का प्रयास किया।

“वैसे अब तक उनका ही फोन तुम्हें आ जाना चाहिये था। यह खबर अब तक उन तक भी पहुँच चुकी होगी।” बाली ने शंका जताई।

“मैंने अपना नंबर बदल लिया था। उन्हें नही पता।” ऋचा ने सर झुकाए हुए कहा।

“मेरा फोन लो और उन्हें कॉल करो।” बाली ने अपना बेसिक फोन उसकी ओर बढ़ाया। ऋचा ने अनिश्चित भाव से बाली को देखा, वह अब भी निर्णय नही ले पा रही थी।

“मेरी बात सुनो! वो तुम्हारे अपने हैं, हो जाती है गलतियां, लेकिन उसके लिये अपनों से गलती मान लेने में कोई झिझक नही होनी चाहिये। आखिरकार एक वही हैं जो सदैव हमारे साथ रहते है, हमारी हर परेशानी में हमारा साथ देते हैं। यह खबर सुनकर उन्हें भी बहुत दुःख हुआ होगा, वो परेशान होंगे। यह पता होने के बावजूद भी कि तुमने नंबर बदल लिया है, फिर भी उसी नम्बर पर सैकड़ों कॉल्स और मैंसेजेस कर चुके होंगे। माँ बाप हैं तुम्हारे। नाराज भले रहे लेकिन औलाद को तकलीफ में देखकर वे नाराज नही रह सकतें। फोन करो, यकीन मानों तुम्हें उनकी और उन्हें तुम्हारी सबसे ज्यादा आवश्यकता है इस समय। चलो ठीक है, मैं तुम्हारी ओर से बात करता हूँ उनसे। नंबर बताओ उनका।” बाली की बात समाप्त होते ही ऋचा ने नंबर बता दिया, जो वह अब तक नही भूली थी। बाली ने कीपैड़ पर नंबर डायल किया।

“क्या नाम है तुम्हारे पिता का ..?” बाली ने ऋचा से प्रश्न किया।

“शिवराज पाठक।” ऋचा ने उत्तर दिया।

काश कि ऋचा मास्क के भीतर छुपे उस चेहरे की मुस्कान देख पाती जो इस समय उस नाम को सुनकर उभरी थी।

***

उस जंगल में पुन: हलचल थी। रात्रि के घुप्प अँधेरे में लगभग पच्चीस से तीस अत्याधुनिक शस्त्रों से लैस टुकड़ियों ने उस जंगल में प्रवेश किया था।

उन्होंने एक विशेष प्रकार की यूनिफ़ॉर्म पहनी हुई थी। उनकी टुकड़ियां विविध गाड़ियों में सवार होकर जंगल के मध्य तक पहुंची थी। जंगल के जितना भीतर संभव था उतने भीतर तक गाड़ियों के काफिले ने प्रवेश किया था, लेकिन अब आगे गाडियों के लिये कोई मार्ग नही था। जंगल इतना घना था कि प्रकाश की किरणों तक को उसमे प्रवेश करने के लिये खासी मशक्कत करनी पड़ती।

वाहनों से टुकड़ी उतरी और अलग अलग दिशाओं में फ़ैल गयी। सभी की अत्याधुनिक गन्स पर सर्च लाइट्स और लेजर प्रकाशमान थे। जो उन्हें घुप्प अँधेरे में देखने के लिये सहायता प्रदान कर रहे थे।

“हमारी सर्च टीम जंगल में पोजीशन ले चुकी है सर।” दल की अगुवाई करते कमांड़र ने हेलमेट में लगे ट्रांसमीटर पर कहा। वह फ्रैंक था।

“चौकन्ने रहो। मैं भी आसपास ही रहूँगा और सिचुएशन पर नजर गडाये रहूँगा। हमें आज हर हाल में सफल होना ही है और हां उसे कम नहीं समझना, सबको समझा दिया है ना हम किस से टकराने जा रहे हैं ?” रिसीवर पर एक स्वर उभरा जो माया का था।

फ्रैंक के नेतृत्व में सर्च टीम जंगल में प्रवेश कर गयी । जंगल के घुप्प अँधेरे को चीरते हुए उनकी लेजर्स एवं टॉर्च का प्रकाश वातावरण को प्रकाशित कर रहा था। सर्च टीम का हर सदस्य एक दूसरे से ट्रांसमीटर्स के जरिये जुड़ा हुआ था। किन्तु जंगल विस्तृत था और टुकड़ी सीमित संख्या में।

“सर्च टीम। सभी एकदूसरे से सौ मीटर के दायरे में ही रहेंगे। अपने मैप्स और कम्पस ऑन रखो और एकदूसरे से कनेक्टेड़ रहो। कोई भी अपने दायरे से बाहर नही जायेगा। दिस इज अ ऑर्डर।” फ्रैंक ने अपने ट्रांसमीटर पर एक सन्देश प्रसारित किया। जिसे सभी ने नोट कर लिया।

बियाबान और सुनसान रहनेवाला यह जंगल अब किसी युद्धस्थल में तब्दील हो चुका था। जंगल के हर हिस्से में हलचल हो रही थी। सर्च टीम के बूटों तले सूखे पत्तों एवं घास के चरमराने की आवाज और झाडियों की सरसराहट चारो ओर स्पष्ट सुनाई दे रही थी। आधा घंटा बीत चुका था।

फ्रैंक के माथे से पसीना टपकने लगा था।

“सर! आधे घंटे से ऊपर हो गया है। हम उसी लोकेशन और उसके आसपास तलाश कर रहे है जहाँ उन चार क्रिमिनल्स की हत्या हुई थी, और बच्चे बच कर भागे थे। लेकिन वहाँ किसी भी चीज का कोई निशान नही है। यहाँ की हर वस्तु को पुलिस ने शायद अपने कब्जे में ले लिया है। बस सूखी जमीन और आसपास की झाड़ियों पर खून के छींटे अब भी दिखायी दे रहे है।” फ्रैंक ने माया को सूचित किया।

“यह खून उन्ही क्रिमिनल्स का होगा। ओके नाउ इट्स टाइम टू चेंज अवर मोड्स ऑपरेंडी। दूसरा प्लान अमल में लाओ तुरंत।” माया ने आदेश दिया। फ्रैंक अपनी जगह रुक गया। उसने फौरन ट्रांसमीटर पर

सबके लिये खोज बंद करने का आदेश जारी कर दिया, और जो जहाँ है उसे वही रुकने का आदेश भी दे दिया। फ्रैंक अपने साथ वाली टीम के साथ पीछे की ओर पलटा। उसकी टीम के साथ एक शख्स था। जिसके चेहरे पर काला नकाब पहनाया हुआ था और दोनों हाथ पीछे की ओर बांधे हुए थे। फ्रैंक के दो साथी उसे पकड़े हुए थे।

"इसे छोड़ दो।" फ्रैंक ने आदेश दिया। उसके साथ ही दोनों ने उसके हाथ खोल दिये और चेहरे से नकाब हटा दिया।

"अ..आप लोग आखिर चाहते क्या है ? कौन हैं आप और मुझे क्यों किड़नैप ...." मुंह की पट्टी खोलते ही वह युवक चौंक पड़ा। उसका प्रश्न पूरा होने से पहले ही उसने अपने आसपास का निरीक्षण किया। एक जाना पहचाना सा वातावरण देख कर उसके शरीर में सिहरन दौड़ गयी। उसके मुख पर भय की अधिकता स्पष्ट दिखायी देने लगी थी।

"मुझे ..इस जंगल में वापस क्यों लाया गया है ? यहाँ से निकालो प्लीज। मुझे वापस ले चलो।" लड़का गिड़गिड़ा उठा।

"बहुत खूब। एक ही बार में इस जगह को पहचान गया 'कमल'। अरे इतना क्यों घबरा रहे हो ? अभी हाल ही में तो तुम और तुम्हारे बाकी साथी यहाँ कैम्पिंग के लिये आये थे ना ? तुम्हारे लिये तो यह फैमिलियर माहौल है।" फ्रैंक के चेहरे पर एक विकृत हंसी थी।

"म...मैंने पुलिस को सब बता दिया। मेरे सभी साथी उनके साथ कोऑपरेट कर रहे है। लेकिन उन्हें ऐसी किसी चीज का यकीन ही नही है और आप लोग कौन हैं ? मुझे क्यों किड़नैप किया गया है। मुझे प्लीज यहाँ से निकालो वरना वह चीज सबको मार डालेगी।" कमल लगभग रो पड़ा और घुटनों पर बैठ गया।

"चुप हो जा।" कहते हुए फ्रैंक ने अपने बूट की एक जबर्दस्त ठोकर उसके चेहरे पर जड़ दी। कृशकाय कमल फौरन मुंह से खून फेंकते हुए जमीन सूंघने लगा। उसके गिरते ही फ्रैंक के दोनों आदमियों ने भी उसे अपने बूटों से पीटना आरंभ कर दिया। कुछ ही देर में कमल बेहाल हो गया।

"स्टॉप।" फ्रैंक के आदेश पर सभी रुके।

"जा तुझे छोड़ दिया। फौरन इस जंगल से निकल जा, मेरे दस गिनने तक मेरी नजरों से ओझल हो जा वरना ग्यारह पर आते ही मेरी गोली तेरा सीना चीर देगी।" फ्रैंक ने अपनी गन का रुख कमल की ओर किया। कमल समझ नही पा रहा था अचानक ही ये उसे जाने कैसे दे रहे हैं।

उसके पास समय बिलकुल भी नहीं था क्योंकि फ्रैंक की गिनती आरंभ हो गयी थी। कमल समझ चुका था कि भागने में ही भलाई है। वह पूरी शक्ति समेट कर उठा और जंगल के एक अँधेरे कोने की ओर दौड़ लगा दी। फ्रैंक ने गिनती आधे में ही बंद कर दी। उसके चेहरे पर मुस्कुराहट थी।

“वह भाग चुका है सर।” उसने माया को रिपोर्ट दी।

“वेरी गुड़। टीम को खबर करो और शिकार शुरू करो।” माया का स्वर उभरा। फ्रैंक ने फौरन संदेश प्रसारित किया।

“शिकार निकल चुका है। सभी की घड़ियों में उसकी लोकेशन दिखायी दे रही होगी। उसे ट्रैक करो और मार दो।” फ्रैंक के आदेश के पश्चात सर्च टीम के बिखरे हुए एजेंट्स ने अपनी अपनी घड़ियों में देखा जिसमे कमल की लोकेशन अपडेट हो रही थी। अब सारी टीम का निशाना कमल ही था।

कमल बदहवास सा भागे जा रहा था। वह बेहद घबराया हुआ था। वह नही चाहता था कि उस चीज से उसका दोबारा सामना हो। उसके लिये यह एक भयानक दुस्वप्न ही था। वह तेजी से भाग रहा था लेकिन सर पर हुए प्रहारों के कारण वह चकरा रहा था। वह थक गया और घुटनों पर दोनों हाथ रखे खड़ा हो गया। उसके पेट के दाहिने हिस्से में दर्द शुरू हो गया। वह बुरी तरह हांफ रहा था। उसी क्षण उसे अपने पीछे झाड़ियों में बूटों की आवाज सुनाई दी और लेजर का प्रकाश दिखा। वह समझ गया कि उन लोगों ने शायद उसे खोज लिया है। वह बेहद थका हुआ था। वह चाहकर भी भाग नही सकता था। झाड़ियों को चीरते हुए दो विपरीत दिशाओं से दो एजेंट्स निकले, उनकी लेजर्स अब कमल के सीने पर थी। कमल ने आँखे बंद कर ली। वह समझ गया था कि अब क्षण भर में ही उसका जिस्म गोलियों से छलनी हो जायेगा। आँखें बंद करते ही उसे झाड़ियों में एक तीव्र सरसराहट की आवाज सुनाई दी। साथ ही गोलियों की आवाज भी। लेकिन गोलियों ने उसे छुआ तक नही। कमल ने कुछ क्षण तक आँखे बंद रखी, जब उसे एहसास हुआ कि उसे गोलियाँ नही लगी है तब उसने आँखे खोली। उसके सामने कोई एजेंट नही था। एजेंट्स की गन्स वहीं गिरी पड़ी थी। आसपास की झाड़ियाँ बुरी तरह कुचली हुई थी। झाड़ियों पर रक्त के धब्बे स्पष्ट दिखायी दे रहे थे।

“ओह नो ! फिर से नही।” कमल के रोंगटे खड़े हो गये। उसने भागने का सोचा किन्तु उसके कदम मानो जड़वत हो गये थे। भय की अधिकता के कारण उसके दिमाग ने काम करना ही बंद कर दिया था।

“वह फिर आ गया। इस बार मैं नही बचूंगा।” कमल के कान से बहता हुआ पसीना उसकी गर्दन तक आ पहुंचा।

***

“हमारे दो एजेंट्स की चीखें सुनाई दी हैं और उनसे सम्पर्क नही हो पा रहा है।” फ्रैंक ने कमल की लोकेशन की ओर ही भागते हुये माया को अपडेट दी। उसके साथ तीन और एजेंट्स उसकी गति से गति मिलाने का प्रयास करते हुए भाग रहे थे।

“मूव! क्विक! वह आ पहुंचा है। सबके सब उस लड़के को घेर लो। लड़का बचने ना पाये।” माया के स्वर में उत्साह और उत्तेजना दोनों थी।

फ्रैंक अब कमल से मात्र कुछ मीटर ही दूर था।

“एजेंट्स सभी एक साथ उस लड़के की ओर बढ़ो, वह मेरी लोकेशन से बस ४० मीटर नार्थ की ओर है। हरी अप उसे जाने मत देना।” फ्रैंक ने पुनः सन्देश प्रसारित किया और झाडियों के बीच किसी जिमनास्ट की भाँति ही उछलते कूदते जंगल में बढ़ते रहा। अचानक ही उसका पैर किसी चीज पर पड़ा और फिसला। झाड़ियों में गिरने के कारण उसे चोट नही आयी। लेकिन उसका हाथ किसी लिजलिजी सी चीज में सन गया था। उसने अपनी टॉर्च की रौशनी में देखा तो एहसास हुआ कि वह रक्त में सना हुआ था और उससे कुछ ही दूरी पर उसके दो एजेंट्स के कटे हुए सिर पड़े हुए थे। यह दृश्य देखकर फ्रैंक की आँखे फ़ैल गयी। उनके धड़ भी उससे कुछ ही दूरी पर क्षत विक्षत अवस्था में पड़े हुए थे।

“बॉस ! अपने दोनों एजेंट्स की लाशें मेरे सामने पड़ी है। उनके सिर धड़ से इस तरह उखाड़ दिये गये है कि रीढ़ की हड्डी समेत ही वह धड़ से बाहर आ गये हैं। यह कोई सामान्य चीज नही है।” फ्रैंक ने पहली बार सिहरन महसूस की थी।

“कम ऑन फ्रैंक ! घबराओ नही। तुम जानते हो ये क्या है और तुम एक रिफ़ॉर्मर हो, इस चीज को तुम बखूबी टक्कर दे सकते हो। तो आगे बढ़ो और सबको साथ रहने के लिये कह दो। कोई भी टीम से अलग नही होगा।” माया ने अपनी बात पूरी भी नही की थी कि जंगल के अलग अलग हिस्सों से एजेंट्स की हृदय विदारक चीखें गूंज उठी। फ्रैंक समझ गया था कि अब वे शिकार बन चुके है।

“फ्रैंक ! तुम अच्छे से जानते हो इस मिशन में हमें कुर्बानियां देनी है। लेकिन तुम्हें कुर्बान नही होना है, किसी भी हाल में वहाँ मत रुको। बढ़ते

रहो। अपने लक्ष्य तक पहुँचो।" माया का आदेश गूंजा। फ्रैंक फौरन उठ खड़ा हुआ।

"आगे बढो।" चीखते हुए फ्रैंक ने अपने एजेंट्स को आदेश दिया और झाडियों को चीरता हुआ कमल की दिशा में भागा। बीच बीच में एजेंट्स की चीखे अलग अलग दिशाओं से उसे झकझोरती रही। उसका हृदय कांप रहा था। हर चीख पर उसे महसूस हो रहा था मानो अगला निशाना अब वही होगा। अगली चीख अब उसी की होगी। उस आखिरी झाडी को पार करते ही कमल उसके सामने था।

फ्रैंक ने फौरन अपनी गन उसकी ओर तान दी। उसके साथ ही दो और एजेंट्स ने भी अपनी गन्स कमल की ओर कर दी। इसी के साथ विभिन्न दिशाओं से कुछ और एजेंट्स वहाँ पहुँच गये। सबका निशाना अब केवल कमल ही था। वह चारों ओर घिरा हुआ था। कमल अपनी साक्षात मौत को देख रहा था।

फ्रैंक ने स्पष्ट महसूस किया कि उसकी सर्च टीम का केवल पिचहत्तर प्रतिशत हिस्सा ही यहाँ पहुंचा था। बाकी पच्चीस प्रतिशत हिस्सा अब शायद कहीं और पहुँच चुका था। उसने एक ठंडी सांस ली और ऊँगली ट्रिगर पर कसी। अचानक ही उसके पीछे झाड़ियों में एक तीव्र हलचल सी महसूस हुई। फ्रैंक की छठी इंद्री सजग हो उठी और अद्भुत फुर्ती को भी मात देते हुए वह झुका और उसने एजेंट्स के द्वारा बने घेरे में छलांग लगा दी। उसके साथ ही एक स्याह आकृति भी उसके सामने आ गिरी। यह पहली बार था जब उस चीज का वार खाली गया था। अभी वह कुछ करता उससे पहले ही फ्रैंक की गन ने उसपर ताबड़तोड़ फायर कर दिया। वह विचित्र साया फौरन अपनी जगह से उछला और एक लम्बी छलांग लगा कर ऊपर पेड़ों पर जा पहुंचा। सबने अपनी गन्स का रुख पेड़ों की ओर करके फायरिंग शुरु कर दी।

"एवरीबडी स्टॉप।" माया की चीख गूंजी। सबने फायरिंग रोक दी और आवाज की दिशा में देखा। माया खुद उनके बीच उपस्थित था। फ्रैंक उसे देखकर कतई हैरान नही था। माया वहीं था जहाँ उनके वाहन उन्होंने छोड़े थे। वह वहीं से पूरी स्थिति का जायजा ले रहा था।

कमल आश्चर्यचकित था। वह कभी एजेंट्स को देखता, कभी फ्रैंक को, तो कभी पेड़ों को ताकता। माया एजेंट्स के घेरे के मध्य पहुंचा, फ्रैंक तब तक उठकर खड़ा हो गया था और कमल ड़र की अधिकता से बेहोश होकर गिर पड़ा। माया ने अपने एजेंट्स की ओर एक नजर देख कर पेड़ों

के ऊपर दृष्टि केन्द्रित की, उसे पूर्ण विश्वास था वह चीज अब वहाँ नही होगी।

“मैं यहाँ तुमसे युद्ध करने नही आया हूँ। मेरे पास तुम्हारे लिये एक प्रस्ताव है।” माया चीखा। माया की चीख के साथ ही झाड़ियों में हलचल हुई। एजेंट्स सतर्क हो गये। उनकी उंगलियाँ ट्रिगर पर कस चुकी थी।

“मैं खून खराबा नहीं चाहता। मेरी बात सुनों, मेरे पास तुम्हारी समस्या का हल है।” कहते हुए माया ने बेहोश पड़े कमल को एक हाथ से किसी खिलौने की भाँति उठा लिया और अपनी जेब से पिस्तौल निकाल कर उसके माथे से सटा दी।

“मैं ऐसे टोटकों में विश्वास नही करता। लेकिन अगर तुम दो क्षण के अंदर सामने नही आये तो मैं इसका भेजा उड़ा दूंगा।” माया ने कहा और ट्रिगर दबाने ही वाला था कि उसके सामने झाड़ियों में सरसराहट हुई। सभी एजेंट्स की गन्स, टॉर्च और लेजर्स उसी ओर केन्द्रित हो गयी। उनकी उंगलियाँ किसी भी क्षण ट्रिगर पर दबने के लिये तैयार थी। लेकिन इस बार सरसराहट में वह तेजी नही थी। झाड़ियाँ हटी और साढ़े छह फुट की एक स्याह आकृति वहाँ दिखायी दी। टॉर्च के झिलमिल प्रकाश के बीच उसका चेहरा स्पष्ट दिखायी नही दे रहा था। उसने किसी प्रकार का कोई मोटा कपड़ा सारे शरीर पर कंबल की भाँति लपेट रखा था। उसका मुंह भी उस कंबल से ढंका हुआ था। उसके मुख से एक विचित्र सी गुर्राहट निकल रही थी। उस गुर्राहट को सुनकर सभी के शरीर में सिहरन दौड़ रही थी। उस आकृति ने झाडियों से निकलकर अपना पैर एजेंट्स से बने घेरे के बीच रखा।

एजेंट्स अभी भी उससे ड़रे हुए थे। उसके हाथों के पंजे बेहद असमान्य एवं लंबे थे। जिसमे से अब भी ताजा रक्त टपक रहा था, जो निस्संदेह उन्ही के साथियों का था जो उसके हाथों मारे गये थे। माया उसे देखकर मुस्कुरा उठा।

“मुझे माफ़ करना, तुम्हें बुलाने के लिये मुझे ऐसी हरकत करनी पड़ी। लेकिन मेरा तुमसे मिलना अत्यंत आवश्यक था। तुम्हें अपने सामने देखकर मुझे बेहद प्रसन्नता हुई ‘अश्वत्थामा’।” माया ने उसे अश्वत्थामा कहकर पुकारा।

***

राक्षस

२००९, वाराणसी

मटुक हताश सा फर्श पर बैठा शून्य में ताक रहा था। उसके मुख पर विभिन्न भाव आ रहे थे जा रहे थे। कभी मुस्कुराता तो कभी फफक पड़ता, कभी बड़बडाने लगता। रो रोकर उसकी आँखे सूज चुकी थी। देवदत्त उसके कंधे पर हाथ रखे हुए उसी के समीप बैठा उसे सांत्वना देने का प्रयत्न कर रहा था। कमरे में दोनों छोरों पर गलियारे के मध्य बिछी दरियों पर कस्बे के लोग बैठे हुए थे। वे सभी शांत थे, वातावरण में एक मनहूसियत सी फैली हुई थी । अथर्व दरवाजे पर खड़ा हर आने जानेवाले की शोक संवेदनाये ग्रहण कर रहा था। वह काफी समय तक कमरे के मध्य बैठा था। लेकिन कमरे के केंद्र में एक टेबल पर रखी हुई दीक्षा की फूलमाला से सजी मुस्कुराती तस्वीर उसे विचलित कर रही थी। वह अपने आप को संभाल नही पा रहा था। कमरे में केवल रह रह कर मटुक के रोने और हंसने के स्वर ही इस मनहूस शांतता को भंग कर रहे थे। तस्वीर पर लगायी अगरबत्तियों से आज उसे सुगंध नही आ रही थी। उस गंध में कुछ जलने की दुर्गन्धि सी प्रतीत हो रही थी। अथर्व अब तक दीक्षा का वह शरीर अपने सामने देख रहा था।

मुस्कुराती तस्वीर दीक्षा की उस छवि को ढांप नही पा रही थी। श्रद्धांजलि के फूलों की महक में उसे जलते मांस की सी गंध आ रही थी। पूरे वातावरण में उसे चिता से उठता धुंआ ही दिखायी दे रहा था। उसकी आँखे उस काल्पनिक धुंये के कारण जल रही थी। अंततः वह सहन नही कर पाया और उठकर द्वार पर जाकर खड़ा हो गया। उसकी पलकें भीगी हुई थी, बार बार वह अपनी हथेलियों से पलकों के किनारों को पोंछ रहा था। लेकिन जितनी बार पोंछता उतनी ही बार फिर भीग जाती थीं। आखिरकार उसने हार मान ली और आंसुओ को बहने दिया।

महिलाओं की पंक्ति में उसकी माँ भी गुमसुम सी बैठी हुई थी। अथर्व जानता था कि दीक्षा की माँ की मृत्यु के पश्चात दीक्षा की देखभाल उसकी माँ ने ही की थी। वह उनकी जान थी। माँ सदैव अथर्व के बजाय दीक्षा का ही पक्ष लेती थी। दीक्षा की शरारतों को हमेशा अपने प्रेम की आड़ में छिपा लिया करती थी। अथर्व माँ को इस तरह उदास और रोता हुआ नही देख सकता था।

दीक्षा अब नही रही, उसका मन यह मानने को तैयार ही नही हो रहा था। अभी कल ही तो वह उससे झगड़ रही थी। जबरन मंदिर ले जा रही थी। अनायास ही दीक्षा की शरारतें और उसके साथ बिताये क्षण उसकी नजरों के सामने सजीव होने लगे। वह यादों के उस भंवर में स्वयं को डूबता सा पा रहा था। उसका अवसाद बढ़ता ही जा रहा था। अथर्व की तंद्रा तब भंग हुई जब किसी ने उसके हाथ पकड़े। वो शक्ति मठ के वरिष्ठ सदस्य थे। उनके साथ ही शक्ति मठ के दूसरे सदस्य भी सफ़ेद वस्त्रों में कमरे के बाहर खड़े थे। अथर्व ने सबको प्रणाम किया। वे सर झुकाए आगे बढे और उन्होंने दीक्षा की तस्वीर परसुमन अर्पित किये। उसके पश्चात वे सभी मटुक के निकट ही बैठ गये। कोई कुछ ना कह रहा था। क्या बोलें किसी को कुछ भी नही सूझ रहा था। वरिष्ठ सदस्य देवदत्त के पास ही बैठे थे, देवदत्त उनकी उपस्थिति पर थोडा चौंका। मटुक को तो कौन आया और कौन गया की सुध ही नही थी।

“क्षमा कीजियेगा। जानता हूँ अवसर योग्य नही है, किन्तु सूचित करना मेरा कर्तव्य है।” वरिष्ठ सदस्य ने इतने धीरे से कहा कि उसे केवल देवदत्त ही सुन सका। देवदत्त ने सिर हिलाकर अपनी सहमती जता दी।

“सारनाथ से गाइड और ड्राइवर ने कल एक रिफ़ॉर्मर पकड़ा है।”

यह सुनते ही देवदत्त के चेहरे के भाव एक क्षण में ही बदल गये, किन्तु उसने मौके को देखते हुए पुन: अपनी भावनाओं पर नियंत्रण किया।

“मुझे आज क्यों बता रहे हो ? कल ही सूचित क्यों नही किया ?” देवदत्त फुसफुसाया।

“कल आप अस्पताल में थे और अवसर ऐसा था ही नही कि आपको कुछ बताया जाता। वैसे भी वह गाइड और ड्राइवर के योग्य हाथों में है। वे उसे इन्वेस्टिगेट कर रहे है।”

“क्या नतीजा निकला पूछताछ का ?” देवदत्त ने धीमे स्वर में पूछा।

“वह बेहद सख्त है। अभी टूटा नही है, किन्तु जल्द ही उससे सब उगलवा लिया जायेगा।”

“रिफ़ॉर्मर सारनाथ में क्या कर रहा था ?” देवदत्त की आँखे सिकुड़ी।

“ठीक है। आप सब शक्ति मठ पहुँचो, मैं कुछ ही देर में आता हूँ।” देवदत्त ने उसे निर्देश दिया, वे सभी उठ खड़े हुए और दीक्षा की तस्वीर की ओर हाथ जोड़कर घर से बाहर निकल गये।

“मैं भी चलूँगा तुम्हारे साथ।” मटुक के स्वर ने देवदत्त को चौंका दिया। मटुक बेहद धीमे स्वर में ही बोला था जो केवल देवदत्त को ही सुनाई दिया।

“तुम्हें इसकी कोई आवश्यकता नही है। तुम कुछ दिन आराम करो।” देवदत्त ने मटुक के कंधे पर हाथ रखा।

“अगर मैं अकेला रहा तो स्वयं को समाप्त कर लूँगा देवदत्त। मुझे ले चल अपने साथ। मैं आऊंगा चाहे जो हो जाये।” मटुक की आँखे लाल हो चुकी थी। देवदत्त उसकी अवस्था को समझ पाने में असमर्थ था। उसने हामी में सर हिला दिया।

***

अँधेरे कमरे में एक बल्ब जल उठा। रिफ़ॉर्मर की आँखे चुंधिया गयी। उसने अधखुली पलकों से देखने का प्रयास किया। कमरे का दरवाजा खोल कर एक अधेड़ व्यक्ति ने प्रवेश किया। रिफ़ॉर्मर को अब भी ड्राइवर और गाइड के आने की उम्मीद थी लेकिन आने वाला व्यक्ति मटुक था। मटुक इस समय एक चुस्त जींस और एक कसी हुई काले रंग की टी शर्ट में था। उसका केश विहीन सिर कमरे में मौजूद एकमात्र बल्ब के प्रकाश में चमक रहा था। रिफ़ॉर्मर एक मजबूत शिकंजे में बंधा हुआ था। इस बार वह स्टील की मजबूत चेयर पर बिठाया गया था और चेयर से जुडी हुई स्टील की दो इंच की पट्टियों ने उसकी दोनों कलाइयाँ, पैर, सीने और घुटने तक कसे हुए थे जिस कारण वह चाहकर भी अपने स्थान से हिल भी नही सकता था। इस समय वह सामान्य रूप में था। उसका अतिमानवीय स्वरूप अब लुप्त हो चुका था। अतिमानवीय रूप में आने के कारण उसके कपडे जगह जगह से फटे हुए थे। वह मटुक की ओर देखकर व्यंग्य से मुस्कुराया। मटुक की मुट्ठियाँ भिंची। बाहों की मांसपेशियां कड़ी हो गयी और वह तीव्र गति से रिफ़ॉर्मर के पास पहुंचा और अपने भारी बूट से उसके सीने पर पूरी शक्ति से प्रहार किया। बूट के प्रहार से रिफ़ॉर्मर मुंह से खून फेंकता हुआ कुर्सी समेत पथरीले फर्श पर जा गिरा। वह बुरी तरह खांसने लगा, उसे इस अप्रत्यक्षित प्रहार की उम्मीद बिल्कुल भी नही थी।

कमरे की मजबूत पारदर्शी दीवार के पीछे देवदत्त, गाइड और ड्राइवर मटुक के इस अवतार को देख कर हतप्रभ थे।

“मटुक चाचा तो आते ही शुरु हो गये।” गाइड को भी मटुक से ऐसी आशा नही थी। मटुक सदैव शांत बुद्धि से कार्य करनेवाला व्यक्ति था। किन्तु आज उसका अलग ही स्वरुप उन्हें देखने को मिल रहा था। ड्राइवर

ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला ही था कि देवदत्त ने उसे शांत रहने का संकेत किया। उसकी दृष्टि मटुक और रिफ़ॉर्मर पर ही थी। देवदत्त समझ गया था कि मटुक फिलहाल अपने आपे में नही है, लेकिन अभी उनके हस्तक्षेप का समय बिलकुल भी नही आया था।

मटुक ने कुर्सी के हत्थों को पकड़ा और पूरी ताकत लगाकर रिफ़ॉर्मर को कुर्सी समेत ही उठा कर दोबारा फर्श पर पटक दिया। रिफ़ॉर्मर की पसलियाँ चरमरा गयी। उसके शरीर में फिर से बदलाव आरंभ हो गये। उसकी त्वचा पुनः अपने असल रूप में आ गयी और चेहरा फिर से वीभत्स हो गया। मटुक एक क्षण के लिये उसका वह रूप देख कर रुका। लेकिन फिर उसने अपने बूट की ठोकर उसके चेहरे पर जड़ दी।

“बंधे हुए पर क्या शक्ति प्रदर्शन कर रहे हो योद्धा ? क्या यही है तुम्हारे नियम, तुम्हारे आदर्श, जिसकी स्थापना तुम्हारे महान सुबाहू ने की थी ?” रिफ़ॉर्मर ने खून थूकते हुए मटुक से कहा। मटुक ने उसकी कॉलर पकड़ कर कुर्सी समेत ही उठा कर बिठा दिया। मटुक की आँखों में लाल डोरे और चेहरे पर वहशियत झलक रही थी। रिफ़ॉर्मर उसकी अवस्था देखकर हंसा।

“तुम अस्वस्थ लग रहे हो योद्धा। तुम अपनी किसी कुंठा को मुझपर निकाल रहे हो ? तो मैं बता दू यदि यह सच है तो तुमने एकदम सही व्यक्ति को अपना हिट बैग बनाया हुआ है। मुझ पर तुम अपना गुस्सा उतार सकते हो और मैं प्रतिकार भी नही कर सकता, बंधा हुआ जो हूँ।” उसके स्वर में घृणा का भाव था जिसने मटुक के पहले से ड़गमगाते विवेक को हर लिया था।

मटुक फ़ौरन दरवाजे की ओर बढ़ा, देवदत्त उसे दरवाजे की ओर आते देखकर चौंक गया। इससे पहले की वह कुछ समझ पाता मटुक ने दरवाजा भीतर से बंद कर लिया।

“यह क्या कर रहे हों ? तुम्हें इसके उकसावे में आने की आवश्यकता नही है।” देवदत्त माइक पर चीखा, लेकिन मटुक ने उसकी चीख को अनसुना कर दिया और रिफ़ॉर्मर की ओर बढ़ा। मटुक ने अपनी जेब से एक चाभी निकाली और कुर्सी से जुड़े हुए बंधनों को खोलने लगा।

“वह तो उसे खोल रहे है सर। रोकिये उन्हें, वह रिफ़ॉर्मर बेहद शक्तिशाली है। बहुत ही मुश्किल से उसे वापस बांधे थे।” ड्राइवर मटुक का इरादा समझते हुए देवदत्त से बोला।

“मटुक उससे निपट सकता है। लेकिन इस समय वह आवेश में है। बेटी की मौत से वह अवसाद में है। कुछ देर रुको फिर लॉक तोड़ देंगे।” देवदत्त ने उसे आश्वासन दिया।

“तब तक मनोरंजन कर लेते है।” गाइड ने मुस्कुराते हुए कहा, लेकिन फौरन ही उसे स्थिति की गंभीरता का भान हुआ और वह लज्जित होकर चुप हो गया। मटुक अब रिफ़ॉर्मर को बंधनमुक्त कर चुका था और उससे दूर जाकर खड़ा हो गया।

“तेरी इच्छा पूरी हो गयी। अब तू हिट बैग नही है राक्षस।” मटुक ने एक एक शब्द को चबाते हुए कहा। रिफ़ॉर्मर मुस्कुराया उसके रक्त से सने विकृत मुख पर वह भाव अत्यंत भयानक था। उसने अपने स्थान से मटुक की ओर छलांग लगायी लेकिन मटुक तैयार था। वह फौरन अपने स्थान से हटा और रिफ़ॉर्मर फर्श से जा टकराया। उसके टकराते ही मटुक ने उसके हवा में लटके हुए पैर को पकड़ा और अपने बूट का एक जबर्दस्त प्रहार सीधे रिफ़ॉर्मर की खोपड़ी पर कर दिया। रिफ़ॉर्मर का सर पथरीले फर्श तक में धंस गया। निस्संदेह उसके अनेक दांत टूटकर पेट में जा चुके थे। इसके बावजूद उसने अद्भुत फुर्ती से पलटी खाई और घूमते हुए उठ खड़ा हुआ। मटुक ने उसका पाँव पकड़ा हुआ था जिस कारण उसके पलटते ही मटुक भी पलट कर दीवार से जा टकराया। मटुक के दीवार से टकराते ही रिफ़ॉर्मर उसके सामने पहुँच गया और अपने लम्बे और नुकीले पंजो से उसके चेहरे को जकड़ लिया। मटुक को अपना चेहरा किसी लोहे की मजबूत संड़सी में जकड़ा हुआ सा प्रतीत हुआ जिसपर पल प्रतिपल दबाव बढ़ता ही जा रहा था।

“हमें चलना चाहिये।” देवदत्त ने यह दृश्य देखा तो वह दरवाजे की ओर दौड़ा। लेकिन वह भूल गया था कि मटुक देवदत्त के पश्चात उस दल का सर्वश्रेष्ठ योद्धा था। मटुक ने एक शक्तिशाली घूंसा सीधे रिफ़ॉर्मर के चेहरे पर जड़ दिया। रिफ़ॉर्मर की पकड़ अचानक हुए इस शक्तिशाली प्रहार से ढीली हुई ही थी कि मटुक ने अपनी कुहनी का एक शक्तिशाली प्रहार उसके मस्तक पर कर दिया। रिफ़ॉर्मर चकराते हुए फर्श पर जा गिरा। उसके गिरते ही क्षण का भी विलंब न करते हुए मटुक उछला और अपने दाहिने घुटने को मोड़ कर सीधे उसकी छाती पर जा गिरा। हड्डियों के कड़कडाने का स्वर गाइड और ड्राइवर तक को सुनाई दिया, जो निस्संदेह रिफ़ॉर्मर की छाती की हड्डियों के टूटने का प्रमाण था। वह किसी जानवर की भाँति ड़कारा। मटुक उसे कोई भी अवसर देने के मूड़ में

नही था और लगातार उस के चेहरे पर घूंसे बरसाता रहा। कुछ ही क्षणों में रिफ़ॉर्मर का चेहरा बुरी तरह टूट चुका था और फर्श पर रक्त की गाढ़ी धार बह रही थी।

" ऐसा मत कीजिये सर। वह मर जायेगा।" गाइड ने परिस्थिति को काबू से बाहर होते देखकर मटुक से कहा। मटुक ने आग बरसाते नेत्रों से उसकी ओर देखा और वह पुन: रिफ़ॉर्मर की ओर पलटा। उसका गिरहबान पकड़ उसे उठाया और बेरहमी से चेयर पर पटक दिया। इसी के साथ मटुक ने अपनी जेब एक छोटा किन्तु तीक्ष्ण फोल्डिंग नाइफ निकाला और उसकी एक अंगुली एक ही प्रहार में काटकर अलग कर दी। रिफ़ॉर्मर भीषण पीड़ा से चीख पड़ा, उसकी चीख से पूरा कमरा थर्रा उठा। लेकिन वह फिर भी इतने दर्द के बावजूद मुस्कुरा उठा। उसने व्यंग्य से मटुक की ओर देखा और थूक दिया।

"कोई गहरी चोट खाये लगते हो साहब।" इतना कहकर वह अपने रक्त से सने हुए टूटे फूटे मुंह से हंसा। उसके हंसते ही मटुक ने उसकी दूसरी अंगुली भी एक ही प्रहार में काटकर अलग कर दी। वह दांत भींच कर तड़प उठा। अभी उसकी चीख भी ना निकली थी कि मटुक का हाथ पुन: घुमा और चाक़ू उसकी जांघ में अंदर तक जा धंसा। रिफ़ॉर्मर का विकृत चेहरा पीड़ा से और विकृत हो गया।

"मुझे उकसाना छोड़ दे राक्षस। मैं जिस उद्देश्य के लिये आया हूँ उस पर ध्यान दे। इस गलतफहमी में मत रहना कि तू अपना मुंह बंद रख सकता है। मैं अपनी पर आ जाऊं तो पत्थर तक बोल पड़ते है।" मटुक बेरहमी से गुर्राया। देवदत्त अब अपनी जगह पर ठिठक गया था। वह समझ गया था कि मटुक अपने उद्देश्य को लेकर अब भी सचेत था। वह वापस कंट्रोल पैनल की ओर बढ़ा जहाँ ड्राइवर और मटुक दम साधे कमरे का दृश्य देख रहे थे।

"अब तुझ पर निर्भर करता है तू कैसे मुंह खोलना पसंद करेगा। अभी बोल देगा तो शायद आसानी से छूट जायेगा, क्योंकि जब हम खुलवायेंगे तब तू फिर कुछ और बोलने और करने के लायक नही बचेगा। बता तू यहाँ बनारस तक कैसे पहुँच गया , और किसको रिपोर्ट कर रहा है। तेरे संगठन को बनारस के विषय में कैसे पता चला ? और कौन है इस संगठन का सर्वे सर्वा।" मटुक ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। रिफ़ॉर्मर केवल मुस्कुराया।

“मैं तुझे मारूंगा नहीं। एक एक करके तेरी दोनों हाथों की दसों उंगलिया काट कर अलग कर दूंगा। फिर पैरों की भी काट दूंगा। उसके बाद तेरी एक आँख निकाल लूँगा और तुझे जिंदा रखते हुए तेरे शरीर का एक एक अंग निकाल कर तेरे सामने ही रखूंगा लेकिन मरने नही दूंगा। शुरुवात एक इंजेक्शन से करता हूँ। तेज़ाब का एक इंजेक्शन तेरी आँख में लगाऊंगा, तेज़ाब तेरी आँखों की कोशिकाओं को गलाता हुआ चेहरे में फैलता जायेगा, जहाँ भी जायेगा कोशिकाओं को गलाता और जलाता वह अपना रास्ता बनाते जायेगा और तू मृत्यु के लिये गिड़गिडायेगा जो तुझे नही मिलने वाली। फिर वो कोने में उस टेबल पर औजारों के मध्य जो दो फुट की मोटी मोटी सुइयां देख रहा है ना ? पता है मैं उसका क्या प्रयोग करूंगा ?”

रुक तुझे उदाहरण के साथ समझाता हूँ।” कहते हुए मटुक कमरे में रखी टेबल की की तरफ बढ़ा और वहाँ से उसने एक सुई उठा ली। उसे सुई के बजाय बर्फ तोड़ने का सुआं कहना ज्यादा सही रहता। वह उस सुई को लेकर पुन: रिफ़ॉर्मर की ओर पहुंचा। पहली बार रिफ़ॉर्मर की आँखों में दहशत दिखायी दे रही थी। मटुक ने उसे पुन: कुर्सी से बाँध दिया। वह प्रतिरोध तक करने की स्थिति में नहीं था। बाँधने के पश्चात मटुक उसके सामने घुटनों के बल बैठ गया और उसने रिफ़ॉर्मर की कलाई को अपने हाथ में पूरी ताकत और दबाव के साथ पकड़ लिया।

“अब मैं जो करने जा रहा हूँ, वह बस एक शुरुवात भर है राक्षस।” कहते हुए मटुक ने वह सुई उसकी ऊँगली के भीतर सीधी रेखा में धंसानी आरंभ कर दी। रिफ़ॉर्मर दर्द से तड़प उठा। वह चीखने लगा। सुई उसकी ऊँगली में धंसती चली जा रही थी। जैसे जैसे सुई अंदर धंसती रिफ़ॉर्मर की चीखें कमरे की दीवारों तक को कम्पायमान करने लगी। लेकिन मटुक नही रुका उसने वह पूरी की पूरी सुई उसकी ऊँगली के भीतर तक घुसा दी। वह तड़पता रहा, छटपटाता रहा लेकिन मटुक पर फर्क नही पड़ा। उस पर क्रूरता पूर्णरूप से हावी थी।

“अरे अभी से हार गया ? अभी तो मेरे पास नौ सुइयां और है तेरी बाकी नौ उंगलियों के लिये। अरे माफ़ करना कुछ तो काट चुका हूँ पहले ही।” मटुक वहशियत भरी मुस्कान चेहरे पर लाते हुए बोला और उठकर पुन: टेबल की ओर गया। जब लौटा तो उसके हाथों में नौ सुइयां और थी।

उसकी इस दरिंदगी को देखकर गाइड, ड्राइवर ही नहीं देवदत्त तक सकते में था। लेकिन वह उसे टोक नही रहा था। वह जानता था कि मटुक

रिफ़ॉर्मर से जानकारी उगलवा ही लेगा। भले उसकी आखिरी सांस तक ही क्यों ना उसके शरीर में बची रहे। कमरे में रिफ़ॉर्मर की चीखें और डकारें गूंजती रही। मटुक उसके रक्त से सराबोर होता रहा। उस समय निर्णय करना मुश्किल था कि राक्षस कौन है ?

***

महेश कमरे के बाहर बेचैनी से टहल रहा था। बीच बीच में वह अपनी बेशकीमती घड़ी में समय देख रहा था, रात के ९ बज रहे थे । आख़िरकार कुछ सोचकर उसने मोबाइल पर नम्बर डायल किये।

“हेल्लो ! कहां पहुंचे माया ?”

“मैं ट्रैफिक में हूँ डैड़। आप मीटिंग शुरु कीजिये मैं पहुँच कर कंटीन्यू कर लूँगा। अपना मोबाइल ऑन रखियेगा मैं सब सुनना चाहूँगा।” माया का जवाब आया।

“ओके। पहुँचने के बाद बिना किसी फॉर्मेलीटी के केबिन में आ जाना।” कहकर महेश ने फोन जेब में रख लिया और दरवाजा खोलकर कमरे में प्रवेश कर गया।

वह एक आलीशान मीटिंग रूम था। जहाँ पुराने चिर परिचित चेहरों ने उसका अभिवादन किया। माया ने सबको बैठे रहने का संकेत किया और आत्मविश्वास से भरे कदमों से वह मीटिंग रूम के मध्य बने स्टेज की ओर बढ़ा। स्टेज पर पहले से ही फ्रैंक अपने हथियारबंद गार्ड्स के साथ मौजूद था। माया की आँखे फ्रैंक से मिली। फ्रैंक ने हाथ से स्टेज पर रखे टेबल पर सजाये हुए माइक की ओर इशारा किया।

“गुड़ इवनिंग एवरीबड़ी।” माया ने कोट का निचला बटन लगाते हुए सबका अभिवादन किया।

“आज मैंने आप सबको इस सीक्रेट रूम में इनवाईट किया है, मैं आप सबको यह बताना चाहता हूँ कि हमने जो काम आप सबको सौंपा था, हमें उसके बारे में एक सकारात्मक समाचार बनारस से मिला है। लेकिन अभी भी कुछ जानकारियाँ वगैरह इकट्ठी की जा रही है ताकि उसके अनुसार योजना बनाई जा सके। आप सभी देश विदेश से आये रक्ष दल के सभी सदस्यों को मैं अब हर समय तैयार रहने के लिये कहना चाहूँगा। अब समय आ गया है हम अपनी पहचान इस गर्म, मखमली और बेशकीमती कोट, कार्पोरेट्स, और एंटरप्रेन्युअर के छद्म आवरण तले दबाए ना रखते हुए अपने असली स्वरूप के लिये इस विश्व को तैयार करें। युगों, शताब्दियों पश्चात हम अब अपने मकसद के इतने करीब पहुँच

चुके है। गर्व कीजिये कि हम उस पीढ़ी से हैं जिसके हाथों यह कार्य होने जा रहा है। हमारे पूर्वज और संस्थापक हम पर गर्व करेंगे।" महेश लगभग चीखते हुए ही बोला। उसकी बात समाप्त होते ही हॉल तालियों से गूंज उठा।

"अब समय आ गया है जब इस दुनिया को पता चलेगा यहाँ दूसरी भी जातियां है जो उनसे श्रेष्ठ और शक्तिशाली है, जो केवल राज करने के लिये ही जन्मे हैं। युगों से होते आये अत्याचार और अपमान का प्रतिशोध लेने का समय आ गया है। अब युद्ध नही होते, लेकिन अब वह समय निकट है जब महायुद्ध होगा और यह महायुद्ध ही इस सम्पूर्ण पृथ्वी का भविष्य निश्चित करेगा और इस भविष्य का नेतृत्व हम करेंगे। हम यानी दानव, राक्षस और दैत्य प्रजातियाँ। जिन्हें लुप्तप्राय, मिथक या किवदंतियों का हिस्सा मानकर भुला दिया गया। जिन्हें आजीवन हजारों वर्षों तक अज्ञातवास में रहना पड़ा। अब वह अज्ञातवास समाप्ति की ओर है। यही सही समय है, पूर्वजों द्वारा निर्धारित किये गये लक्ष्य को प्राप्त करने का सौभाग्य और अवसर हमें मिला है। यह हमारे लिये गर्व की बात है, लक्ष्य रक्त माँगता है, बलिदान माँगता है और मैं सबको बताना चाहूँगा कि इस युद्ध में भीषण टकराव होगा, मनुष्य अब कमजोर नही रहा। वह हमारे अस्तित्व पर हैरान जरुर होगा, लेकिन वह हमसे निपटने में सक्षम है। किन्तु हम उनकी जड़ों तक पहुँच चुके हैं, हर क्षेत्र में है और जिस दिन हम सभी एक साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ेंगे मनुष्य पंगु हो जायेगा। उसके कुछ समझने से पहले ही हम अपनी सत्ता प्रस्थापित कर चुके होंगे। रक्ष सम्राट महाबली 'भद्रक' द्वारा स्थापित यह विचारधारा आखिरकार इस पृथ्वी पर राज करेगी।" आखिरी शब्द महेश ने इतनी जोर से कहे थे कि उसके गले की नसें तक खिंचती हुई दिखायी दीं। इसी के साथ हॉल में भयंकर तालियों की गड़गडाहट गूंज उठी। महेश की आँखों में अभूतपूर्व चमक थी। वह अपने भविष्य को लेकर अत्याधिक उत्साहित था, आशान्वित था।

***

"चीफ! हम रिफ़ॉर्मर द्वारा प्राप्त जानकारी द्वारा मिली हुई जगह पर पहुँच चुके है। सूचना सही है। यहाँ चार रिफ़ॉर्मर्स से हम निपट चुके है और मुख्य हॉल की तरफ बढ़ रहे है, जहाँ उनकी सीक्रेट मीटिंग चल रही है।" मटुक ने अपने कंधे पर लगे ट्रांसमीटर द्वारा देवदत्त को रिपोर्ट दी। मटुक इस समय उसी वर्दी में था। सिर पर हेलमेट और मास्क। शरीर पर

बुलेटप्रूफ जैकेट हाथों में दस्ताने, कुहनियों एवं घुटनों पर सेफ्टी पैड्स, अत्याधुनिक ऑटोमेटिक गन, कमर में एक पिस्तौल और कंधे पर एक यूटिलिटी बैग। वह अकेला नही था, उसके साथ लगभग पन्द्रह सदस्य और भी थे जो इसी वेशभूषा में थे। वे सभी दबे पाँव अलग अलग दिशाओं से होते हुए मुख्य गैलरी की ओर बढ़ रहे थे। मटुक और उसके ट्रेंड एजेंट्स सीसीटीवी की जद से खुद को सावधानी से बचाते छिपाते आगे बढ़ रहे थे। वे किसी परछाई की ही भाँति अँधेरे कोनों में छुपने में निपुण थे। मीटिंग रूम के बाहर ही चार हथियारबंद तगड़े व्यक्ति मुस्तैदी से खड़े थे। मटुक ने दूसरी दिशा से आती टुकड़ी के प्रमुख को संकेत किया। संकेत समझते ही उन्होंने अपनी गन का रुख उन गार्ड्स की ओर किया।

“वे चार है। फायर एक साथ होगा और निशाना सीधे खोपड़ी पर ही होगा। मेरे इशारा करते ही फायर कर देना। रेडी ?” मटुक ने कहा और फायर करने का संकेत कर दिया। एक साथ दो अलग दिशाओं से चार गोलियाँ चली और सीधे निशाने पर जा लगी। चारों गार्ड्स बिना आवाज किये ही ढेर हो गये।

“कम ऑन मूव! मूव। कमरे की ओर चलो सब। एक टीम कवर के लिये पीछे रहेगी और दूसरी मेरे साथ आगे बढ़ेगी। नाउ गो।” कहते ही मटुक गन ताने हुए तीव्र गति से आगे दौड़ा। उसके साथ साथ टुकड़ी के आधे सदस्य भी दौडे। बाकी आधे उनके कवर के लिये आसपास का मुआयना करते रहे।

मटुक ने दरवाजे के लॉक पर फायर किया और पूरी ताकत से ठोकर मारी। लॉक टूटने के साथ ही दरवाजा भी टूटकर खुल गया। अब मटुक मीटिंग हॉल में था।

अचानक हुई इस घटना से हॉल में मौजूद हर शख्स भौंचक्का रह गया। स्टेज पर खड़े महेश और फ्रैंक को समझते देर न लगी कि यह वही रक्षा दल के एजेंट्स है जिन्होंने हाल ही में इनके एक सीक्रेट हाइड आउट पर हमला किया था। मटुक ने एक क्षण के लिये स्टेज पर खड़े महेश को देखा और दूसरे ही क्षण उसको निशाना बना कर ट्रिगर दबा दिया। ऑटोमेटिक गन से एक साथ अनेकों गोलियाँ निकली, लेकिन फ्रैंक ने अद्भुत फुर्ती दिखाते हुए महेश पर छलांग लगा कर महेश को न केवल फर्श पर लिटा दिया बल्कि फुर्ती से अपनी पिस्तौल निकाल कर मटुक पर फायर भी कर दिया। गोली सीधे मटुक के सीने पर जा लगी और मटुक उस झटके के कारण टूटे हुए दरवाजे से बाहर जा गिरा। यदि बुलेटप्रूफ

जैकेट न होती तो गोली मटुक का सीना चीरते हुए दिल तक पहुँच जाती और मौत शर्तिया तय होती। मटुक ने गिरते ही पुन: स्वयं को संभाला।

“सभी अंदर है। फायर। कोई भी न बचने पाये।” मटुक ने इतना कहा ही था कि उसके पीछे गलियारे से अनेकों गोलियाँ उनकी ओर बढ़ी। बुलेटप्रूफ जैकेट्स होने के बावजूद हाई कैलिबर की गोलियों से रक्षा दल के एजेंट्स घायल हो रहे थे। कवर देने वाली टुकड़ी ने अपना काम कुशलता से करते हुए गलियारे में ही फायरिंग करते चार गार्ड्स को मार गिराया। वे रिफ़ॉर्मर्स नही थे इसलिये दोबारा नही उठ पाये। अब हमला दो तरफ़ा हो रहा था, एक मुख्य गलियारें से और दूसरा मीटिंग हॉल से। हॉल में मौजूद सभी एजेंट्स ने अपने अपने हथियार निकाल लिये थे और फ्रैंक के साथ ही महेश ने भी पोजीशन संभाल ली थी।

इमारत साउंड़ प्रूफ थी। लेकिन उस हिस्से में गोलियों और धमाकों का शोर अपने चरम पर था। हाई कैलिबर की गोलियाँ अब रक्षा दल के सैनिकों के जैकेट्स तक को फाड़कर धंसने लगी थी। रक्षा दल के एजेंट्स अब गलियारे की दीवारों की आड़ में छिप कर फायरिंग कर रहे थे। रक्षा दल के एजेंट्स की संख्या में महेश के दुगुने एजेंट्स धराशाई हो चुके थे। यहाँ मटुक को उसकी पूर्वतैयारी का लाभ मिल रहा था। वे युद्ध के लिये तैयार होकर ही आये थे और उनके पास ऑटोमेटिक गन्स के साथ साथ विस्फोटक एवं बुलेटप्रूफ जैकेट्स तक होने के कारण उनका पलड़ा भारी था। रक्ष दल के पास केवल पिस्तौलें ही थी, जिससे जब तक एक गोली चलती तब उसे पांच गोलियाँ छलनी कर चुकी होती। हाई कैलिबर वाली गन्स केवल गलियारे के गार्ड्स के पास ही थीं। गलियारे के छोर पर अभी भी आठ से नौ गार्ड्स थे। वे सभी रुक रुक के फायर कर रहे थे। मटुक समझ गया था यदि इन्होने फायर में दोहराव बढाया तो गलियारे के खुले हिस्से में होने के कारण उनका सफाया हो जायेगा। मटुक ने फौरन अपनी कमर की यूटिलिटी बेल्ट से लटकता हुआ ग्रेनेड़ निकाल कर गलियारे के कोने की ओर फेंक मारा, बंद गलियारे में धमाके का असर बेहद भयानक एवं तीव्र हुआ। सारे गार्ड्स चिथड़ों में बिखरे पड़े नजर आये। मटुक ने लेटे लेटे ही एक ग्रेनेड़ हॉल की ओर उछाल फेंका। एक भीषण धमाके से लगभग चार एजेंट्स मारे गये। फ्रैंक का निशाना पक्का था लेकिन रक्षा दल के बुलेटप्रूफ जैकेट्स के कारण उसका निशाना अर्थहीन साबित हो रहा था। उसी समय और गार्ड्स के आने की आहटें सुनाई दी। मटुक को जल्द ही निर्णय लेना था। वह इतना समझ

चुका था कि स्टेज पर मौजूद व्यक्ति इनका कोई प्रमुख है। उसके पन्द्रह सैनिकों में से अब केवल नौ शेष बचे थे। छह सैनिक मर चुके थे। मटुक को उनके लिये अफ़सोस हुआ लेकिन उसने भावनाओं पर नियंत्रण रखते हुए अपनी गन की मैंगजीन बदली और दीवार की आड़ लेते हुए उठ खड़ा हुआ।

“मैं तीन लोगो के साथ हॉल में फायरिंग करते हुए जा रहा हूँ। तुम लोग तीन तीन की दो टीमों में बंट जाओ, एक टीम हमें अंदर के रिफ़ॉर्मर्स से कवर करेगी और दूसरी टीम बाहरी गार्ड्स से।” कहते हुए मटुक ने तीन एजेंट्स को इशारा किया जो उसके साथ हो लिये। उनके आगे बढ़ते ही फ्रैंक और बाकी सदस्यों ने उन पर फायरिंग की ही थी कि कवर फायरिंग शुरू हो गयी। जिस कारण फौरन दो सदस्य मारे गये। फ्रैंक जानता था यदि रक्षा दल हॉल के भीतर प्रवेश कर गये तो उन्हें कोई नही बचा सकता । लेकिन वह चाह कर भी फायर नही कर पा रहा था। महेश एक कोने में पड़ा हुआ था। उसकी आँखों में खून सा उतर आया था। फ्रैंक ने उसे देखा।

“नही सर। आप नही। मैं इन्हें सम्भालता हूँ।” कहते हुए फ्रैंक ने आँखे बंद की और उसी क्षण उसके शरीर में बदलाव होने लगे। उसकी त्वचा का रंग हल्का बैंगनी हो गया और आँखों की पुतलियाँ मानो उलट सी गयी। उसकी त्वचा बेहद सख्त और खुरदुरी सी हो गयी और चेहरे पर शल्क उभरने लगे। उसके रोयें कड़े होकर महीन काँटों की भाँति सख्त हो गये थे। फ्रैंक अपने दानव रूप में आ चुका था। उसका कद भी अब अपने सामान्य आकार से दो फूट बढ़ चुका था और इसी के साथ वह गुर्राते हुए दौड़ा। उसके सामने पड़ने वाली हर कुर्सी, फर्नीचर इत्यादि तोड़ते हुए वह अंधाधुंध मटुक की ओर दौड़ा। मटुक क्षण भर को चौंका, लेकिन उसी क्षण फ्रैंक उसे लेकर सीधे कमरे की दीवार तोड़ते हुए गलियारे में आ गिरा। मटुक के सैनिकों ने गन तानी लेकिन चला नही सके। गोली मटुक को भी लग सकती थी। फ्रैंक ने दोनों हाथों से मटुक की गर्दन पर दबाव बनाया। मटुक की गन उसके हाथ से छूटकर दूर जा गिरी थी। उसने अपने पिंड़ली में बंधा हुआ चाक़ू निकाल कर फ्रैंक की कमर में धंसा दिया। लेकिन चाक़ू उसके शरीर को भेद ही न पाया। अपना प्रयास विफल होते देखकर मटुक ने उसकी नाक पर ही मुक्का जड़ दिया। फ्रैंक नाक पर पड़े मुक्के से तिलमिला कर पीछे जा गिरा और उसके गिरते ही मटुक ने अपनी

गन थाम कर उसकी ओर फायर कर दिया, फ्रैंक गोलियों को बचाते हुए पुन: हॉल में जा घुसा।

“ओपन फायर।” मटुक चीखा, उसके चीखते ही एजेंट्स ने अपनी पोजीशंस बदल ली और अपनी गन को हॉल की ओर करके ताबड़तोड़ फायरिंग शुरु कर दी। हॉल की दीवारे तक चटकने लगी और प्लास्टर के टुकडें हवा में बिखरने लगे। गोलियों की तड़तडाहट के बीच ही रक्ष दल की चीखें गूंजने लगी। हॉल के आधे से अधिक लोग अब समाप्त हो चुके थे। एजेंट्स का एक दल फायरिंग करता तो दूसरा अपनी मैंगजीन बदलता। बारी-बारी से बिना रुके ओपन फायर होता रहा। बीच-बीच में दो-दो के गुट में एजेंट्स ग्रेनेड्स फेंकते रहे। फ्रैंक ने किसी भेडिये की भाँति ही छलांग लगायी और दो एजेंट्स को दबोचे हुए गलियारे में जा गिरा। एजेंट अभी प्रतिरोध कर भी पाते तब तक फ्रैंक के अतिमानवीय शक्ति से भरे घूंसे ने उनका हेलमेट तक फोड़ कर खोपड़ियों को तोड़ते उनकी आत्मा को आजाद कर दिया।

तब तक गलियारे के दोनों छोरों पर हथियार बंद गार्ड्स पहुँच चुके थे। मटुक और उसके एजेंट्स तीनों ओर से घिर चुके थे। अपने आप को तीनों ओर से घिरा देखकर मटुक और उसके एजेंट्स पीठ से पीठ लगाकर तीन दिशाओं में घूम गये और घूमते ही फायरिंग शुरु कर दी। गोलियाँ फिर चली, दोनों ओर से चलती रही। लेकिन मटुक और उसके बचे हुए साथियों ने फौरन अपने आप को फर्श पर लिटा दिया। इससे दुगुना फायदा हुआ, एक तो महेश के गार्ड्स एक दूसरे की गोलियों से ही मारे गये और दूसरे फर्श की ओर से फायरिंग करने के कारण बाकियों को भी संभलने का अवसर तक नहीं मिला। मटुक के दो सैनिक फिर भी गोलियों से छलनी हो चुके थे। अब मटुक के साथ मात्र दो सैनिक ही शेष थे। गार्ड्स अब भी अच्छी खासी संख्या में थे। मटुक समझ चुका था कि यह उसके जीवन का अंतिम मिशन है। यहाँ से बचकर निकलना अब संभव ही नही था। मटुक ने हॉल की ओर देखा वहाँ लगभग दस एजेंट्स अपने दानव रुप में थे, मटुक उनके सिरों को निशाना बना कर गोलियाँ चलाता रहा, लेकिन इससे ज्यादा फायदा नही हो रहा था। उनकी गति तीव्र थी जिस कारण गोलियाँ चूक रही थी।

“चीफ! यहाँ सिचुएशन आउट ऑफ़ कंट्रोल हो चुकी है। यह पूरी बिल्डिंग ही रिफ़ॉर्मर्स और रक्ष दल से भरी पड़ी है। हमारे सारे एजेंट्स मारे जा चुके है, केवल दो एजेंट्स मेरे साथ बचे हुए हैं। लेकिन मैं निराश

नही करूँगा, मेरी टीम का मिशन कभी फेल नही हुआ है, इस बार भी नही होगा। मैं उनके चीफ को हर हाल में समाप्त करके ही आखिरी सांस लूँगा। ओवर एंड़ आउट।" कहते हुए मटुक ने गोलियों धमाकों के बीच बिना किसी उत्तर की प्रतीक्षा किये ट्रांसमीटर ऑफ कर दिया। उसके ट्रांसमीटर के ऑफ करते ही अचानक पता नही क्या हुआ की उसके सारे मृत एजेंट के ट्रांसमीटर्स में एक शार्ट सर्किट सा हुआ और ट्रांसमीटर्स नष्ट हो गये। यह उसका शायद अंतिम उपाय था, ताकि पकड़े जाने पर ट्रांसमीटर्स के जरिये उनकी मूल लोकेशन ट्रेस न हो सके।

फ्रैंक ने गार्ड की गन थामी और फायर शुरु कर दिया। उसकी फायरिंग में मटुक के बचे हुए साथी भी मारे गये। केवल मटुक बचा रह गया। मटुक ने जमीन पर घुटनों को मोड़ कर स्वयं को उछाल दिया। किसी गुलेल से छुटे पत्थर की ही भाँति वह आश्चर्यजनक रूप से कई फीट तक उछला और सीधे हॉल के दरवाजे के सामने आ खड़ा हुआ। अब महेश उससे मात्र कुछ ही फीट की दूरी पर था। सारे रिफ़ॉर्मर्स और गार्ड्स अब उसी की ओर बढ़ रहे थे, फायरिंग बंद हो चुकी थी क्योंकि गोलियां उन्ही के साथियों को निशाना बना सकती थी। वैसे भी मटुक अकेला ही बचा था सो उसे काबू करना उनके हिसाब से कतई मुश्किल नही होने वाला था।

मटुक ने अपनी गन का रुख महेश की ओर किया ही था कि फ्रैंक ने उसे अपने सिर से टक्कर मार दी। अचानक से फ्रैंक के आ जाने और इस टक्कर से मटुक बौखला गया और उसके हाथ से गन दूर जा गिरी। अब वह फर्श पर निहत्था ही पड़ा था। उसका हेलमेट कहीं दूर जा गिरा था, बुलेटप्रूफ जैकेट तक फट चुकी थी। बांह और माथे से खून बह रहा था।

"कमीने! घृणित जीवों। देख रहे हो ना ? खुद को श्रेष्ठ कहते हो फिर भी हम जैसों के पन्द्रह सैनिक तुम्हारी पूरी सेना पर भारी पड़े।" वह खांसते हुए हंसा। महेश केवल सुन रहा था।

"तुम्हें लगता है तुम मुझे संभाल लोगे ? वह भी इतनी आसानी से ? तो तुम्हारी सोच बिलकुल गलत है।" कहते हुए मटुक ने अपनी कमर में खोंसी हुई एक छड़ी निकाली। वह एक फूट लंबी छड़ी थी। उसके मध्य में दबाव बनाते ही छड़ी दोनों ओर से दो-दो फूट और खुल कर पांच फिट के दण्ड में परिवर्तित हो गयी।

महेश की आंखे यह देखकर सिकुड़ी।

"चक्रदण्ड ?" उसके जेहन में मात्र यह शब्द कौंधा।

“शूट हिम।” महेश चीखा और खुद भी पिस्तौल से मटुक की ओर फायर कर दिया। लेकिन देर हो चुकी थी, मटुक के हाथ में थमा हुआ दण्ड अब घूमने लगा था और इतनी गति पा चुका था कि उसने गोली तक परावर्तित कर दिया। मटुक अब उछल कर खड़ा हो गया। मटुक जानता था कि वह चक्र दण्ड विद्या में पूर्णतया सिद्ध नही है। उसे बस दण्ड विद्या का सामान्य ज्ञान ही प्राप्त था, और इस समय उसके लिये यही पर्याप्त था। इसी के साथ चारों ओर से रक्ष दल और रिफ़ॉर्मर्स उस पर टूट पड़े। मटुक अपनी उस छड़ी को घुमाते हुए और अपने शरीर को उछालते हुए प्रहार करता रहा उसके एक प्रहार से रक्ष दल के सदस्य कई कई फीट तक दूर जा गिरते। वह अकेला ही अब दस पर भारी पड़ रहा था। रक्ष दल उसके पास भी फटक नही पा रहा था। मटुक जानता था चक्र दण्ड का यह प्रयोग जल्दी ही उसे थका देगा और वह प्रहार करने की अवस्था में नही रह पायेगा। इसीलिये एक अंतिम प्रहार के लिये वह उछला और जितना उसे ज्ञात था उतना ही दण्ड को घुमाते हुए अर्धचक्र वलय का निर्माण किया और उसी तीव्रता से फर्श पर दण्ड पटक दिया। फर्श से टकराते ही एक भीषण विस्फोट सा हुआ और सारे एजेंट्स उसके झटके से बिखर गये। मटुक का दण्ड अभी रुका नही था, वह निरंतर घूम रहा था और अपने दूसरे प्रहार के लिये तैयार ही था कि अचानक उसके सामने कोई आ खड़ा हुआ। उसने आश्चर्य से उसे देखा। वह माया था। इस समय वह काले सूट में था लेकिन चेहरे पर हमेशा की तरह शांत भाव नदारद थे। मटुक से उसकी नज़रें मिली, मटुक ने अपने घूमते दण्ड को उसके ओर बढ़ाया ही था किन्तु उस घूमते दण्ड को ही माया ने एक झटके में अपने हाथ से पकड़ लिया।

एक क्षण को हॉल में उपस्थित हर शख्स सकते में आ गया। यह अकल्पनीय सा था, मटुक आँखे आश्चर्य से फ़ैल गयी। अभी वह कुछ समझता उससे पहले माया ने अपने दूसरे हाथ का प्रहार करके दण्ड को दो टुकडों में तोड़कर रख दिया और एक भीषण घूंसा उसने मटुक के सीने में मारा जिससे मटुक कई फीट तक पीछे जा गिरा और सीधे महेश के कदमों तले आकर ही रुका। माया से अनजाने में ही एक भीषण भूल हो चुकी थी। मटुक मुस्कुराया, माया जब तक उसकी मुस्कुराहट को समझ पाता तब तक मटुक ने अपनी पिंड़ली में बंधी पिस्तौल निकाल ली और एक झटके से उठ खड़ा हुआ। इससे पहले की महेश कुछ समझता उसने महेश को अपनी बांहों में जकड़ा और पिस्तौल को उसके सीने से सटा

दिया। महेश ने माया को देखा माया चीख पड़ा और इसी क्षण मटुक ने ट्रिगर दबाना शुरू किया, वह तभी रुका जब उसने पूरी की पूरी मैगजीन ही खाली कर दी। महेश के सीने में आर पार दिखने लायक सुराख़ हो चुका था। इसी क्षण फ्रैंक की चलाई गोली मटुक के जिस्म में आ धंसी और वह भी औंधे मुंह फर्श पर महेश के साथ ही जा गिरा।उसके चेहरे पर महेश के निर्जीव शरीर को देखकर एक संतोष भरी मुस्कान उभरी और आँखे बंद हो गयी। हॉल में उपस्थित हर व्यक्ति सकते में आ गया। माया दौड़ते हुए महेश के पास आया उसने महेश के निर्जीव शरीर को अपनी बांहों में उठा लिया। महेश का कोट खून से भीगा हुआ था, माया उसी खून से लथपथ हो रहा था। उसके चेहरे पर अनेक भाव आ रहे थे, जा रहे थे। उसने बहते आंसुओ को रोक लिया। चेहरे पर भयंकर क्रूरता और कठोरता स्पष्ट झलक रही थी। फ्रैंक अपने सामान्य रुप में आ चुका था। वह खामोश खड़ा रहा।

***

।। त्रेतायुग ।।

बलभद्र और भार्गव

कपिल आज प्रात: ही अन्य राज्यों से आये ऋषियों के एक दल के साथ अयोध्या की ओर प्रस्थान कर चुका था, वह हर राज्य में अपने योद्धाओं के संगठन स्थापित करने हेतु विविध राज्यों से समर्थन जुटाने में लगा था। कपिल की अनुपस्थिति में आश्रम का का कार्यभार अब महर्षि संदीप के दिशानिर्देश में भार्गव के ही हाथों में था। दानव गुरु महेंद्र से भेंट हुए एक महीना समाप्त हो चुका था। इस एक महीने में ही सुबाहु के प्रस्ताव को महर्षि संदीप ने अपना समर्थन देकर उस पर कार्य भी आरंभ कर दिया था। आश्रम के योग्य लडाकों और शिष्यों के दो दलों को अन्य राज्यों की ओर स्थापना की नींव रखने के लिये रवाना भी कर दिया गया था और आज भी तीन दलों में कुशल शिष्य अपनी इस महत्वाकांक्षी योजना को कार्यान्वित करने हेतु प्रस्थान करने की तैयारी में ही थे। भार्गव प्रात: से उसी तैयारी में लगा हुआ था। भार्गव शिष्यों को पूर्णतः तैयार कर चुका था और आवश्यक दिशा निर्देश भी दे रहा था। उन्होंने महर्षि संदीप का आशीर्वाद लिया।

“सुबाहु ! इन्हें राज्य की सीमा तक छोड़ आने का दायित्व अब तुम्हारा ही है।” महर्षि ने सुबाहु से कहा। सुबाहु के मुख पर प्रसन्नता झलक रही थी। वह प्रसन्न था कि उसकी योजना ना केवल उन्हें उचित लगी थी अपितु इतनी शीघ्र वह कार्यान्वित भी हो रही थी। उसने पूर्ण श्रद्धा से महर्षि के चरण स्पर्श किये।

“विजयी भव: पुत्र।” महर्षि ने भावविभोर होकर सुबाहु के शीश पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया। सुबाहु ने भार्गव के भी चरण स्पर्श किये।

“चलो अब। औपचारिकता निभाने का समय नही है यह। दोपहर हो रही है, सांझ तक इन्हें पहुंचा कर आना भी है।” भार्गव ने सुबाहु की पीठ थपथपाई। सुबाहु मुस्कुराया और शिष्यों के जत्थों की ओर बढ़ गया। इन सभी के लिये घोड़ों की व्यवस्था की गयी थी। योद्धाओ के लिये घोड़ों का प्रयोग भार्गव ने ही आरंभ किया था। महर्षि संदीप एवं कपिल ने स्वीकार किया था कि रक्षा दल के सदस्य केवल पैरों के सहारे तीव्र गति से आवागमन नही कर सकते थे। इस कारण हर स्थान पर अपनी पहुँच बनाने के लिये आवागमन के लिये तीव्र गति से चलने वाले साधन की अवश्यकता थी। जिसके लिये अश्व ही सर्वोत्तम प्राणी था। भार्गव

के विचारों को समर्थन देते हुए आश्रम के ही एक भाग में अश्वशाला की भी निर्मित की गयी थी। किन्तु यह अश्व केवल योद्धा शिष्यों के लिये ही थे। सुबाहु अपने शुभ्र अश्व पर एक ही छलांग में सवार हो गया। घोडा हिनहिनाया तो सुबाहु ने किसी कुशल अश्वारोही की भाँति उसके गले को थपथपाया। घोडा शांत हो गया। अंतिम बार शिष्यों ने आश्रम को देखा और अपने अश्वों को राज्य की बाहरी सीमा की ओर मोड़ लिया। कुछ ही क्षणों में वे दृष्टि से ओझल हो चुके थे।

***

उस दानव की सांस फूल रही थी। वह पूर्णतया थका हुआ प्रतीत हो रहा था। वह वन के उस भाग में पहुंचा जहाँ एक अश्वारोही सेना की टुकड़ी खड़ी थी जिसके मध्य खड़े एक हृष्टपुष्ट काले अश्व पर बलभद्र सवार था। उसने उस दानव को अपनी ओर आते देखा तो उसके मुख पर प्रसन्नता दौड़ गयी।

“कहो शम्भुक! क्या समाचार लाये हो ?” बलभद्र ने प्रश्न किया।

“महाराज ! वह समय आ गया है जिसकी हमें प्रतीक्षा थी। आज प्रात: ही ऋषि कपिल कुछ योद्धाओं के साथ अयोध्या की ओर प्रस्थान कर चुके हैं, और उनके आश्रम के शिष्यों के दो जत्थे सीमा की ओर अभी अभी प्रस्थान कर चुके हैं। यह सही अवसर है आक्रमण करने का।” शम्भूक ने हाँफते हुए कहा। बलभद्र की आँखों में एक चमक सी उभरी। उसने अपनी सेना की ओर देखा। वे लगभग सौ के आसपास की संख्या में थे। बलभद्र ने अपनी पीठ पर टंगी हुई खड्ग को उठा कर उन्हें आगे बढ़ने का संकेत किया और इसी के साथ अश्वों की हिनहिनाहटों एवं टापों के स्वरों से जंगल का वह हिस्सा गूंज उठा। सारे सैनिकों के हाथो में अब खड्ग, फरसे, कुल्हाड़ियाँ लहरा रहे थे। कुछ ही क्षणों में वे आश्रम तक पहुँचने वाले थे। बलभद्र इस समय के लिये तभी से प्रतीक्षारत था जब से गुरु महेंद्र ने महर्षि संदीप से भेंट की थी। वह जानता था महर्षि संदीप के शिष्यों से सीधे आक्रमण में वह जीतेगा अवश्य, किन्तु उसे भयानक हानि भी होगी, जिसके बाद उसे पुन: अपनी शक्ति बटोरने में वर्षो लग जाने थे। इसलिये वह ऐसे ही किसी क्षण की प्रतीक्षा में था जब आश्रम के योद्धा आश्रम में या तो उपस्थित ना रहे या फिर सदैव से कम संख्या में रहे। बलभद्र की सेना का हिस्सा अब दो टुकड़ियों में बंट चुका था। वे आश्रम को दो दिशाओं से घेरने की योजना बना रहे थे।

***

भार्गव के कान सतर्क हो गये। अश्वारोही सेना की टापों से उत्पन्न ध्वनियाँ एवं अश्वों की हिनहिनाहटों की दूर से आती हल्की ध्वनि का उसे आभास हो रहा था। उसकी छठी इंद्री सतर्क हो उठी। वह आश्रम के मध्य पहुंचा और वहाँ उपस्थित आश्रमजनों को देखकर कंठ फाड़कर चिल्लाया।

“हम पर आक्रमण होने वाला है। सभी तैयार हो जाये।”

मार्तण्ड अपनी कुटी से दौड़ता हुआ बाहर आया। वह कमर में अपनी दुधारी तलवार और बाहों में धनुष लिये दौड़ा आया, उसकी तूणीर बाणों से भरी हुई थी। आश्रम में भगदड़ मच गयी। योद्धागण फौरन ही शस्त्रागार की ओर दौड़े और कुछ ही क्षणों में सन्यासी योद्धाओं की एक सम्पूर्ण टुकड़ी शस्त्रों से सुसज्जित थी। अश्वों की टापों से धरा में कंपन सा प्रतीत हो रहा था। भार्गव समझ चुका था शत्रु की संख्या अधिक है, उसे इस समय अपने दण्ड की आवश्यकता थी। किंतु अब शत्रु दिखायी देने लगा था।

“दानव ! यह तो दानव है ? अश्वारोही दानव सैनिक ?” मार्तण्ड के मुख पर आश्चर्य के भाव आये।

“बलभद्र ! यह बलभद्र की सेना है। गुरु महेंद्र के कारण हुआ है यह सब। छल हुआ है हमारे साथ, गुरु महेंद्र ने अपनी संधि भंग की है।” भार्गव क्रोध से दांत पीसता हुआ बोला। वह एक सम्पूर्ण दानव सेना को अपने समक्ष देख रहा था। मार्तण्ड ने एक धनुष और बाणों से भरा तूणीर भार्गव को थमा दिया। भार्गव ने बिना एक भी क्षण व्यतीत किये धनुष पर बाण संधान करके छोड़े। उसके साथ ही मार्तण्ड ने भी एक के पश्चात एक करते हुए अनेकों बाण दानव सेना की ओर छोड़े। उनके बाणों से कुछ दानव अवश्य अश्वों से गिर पड़े थे, किन्तु वे मृत थे या जीवित यह कहना अब भी कठिन था। बलभद्र के नेतृत्व में सेना चीखते चिल्लाते हुए आगे बढ़ते जा रही थी। बगीचे, फूलों की क्यारियाँ एवं पौधों को अपने अश्वो के खुरों तले रौंदती हुई उसकी सेना अब आश्रम में प्रवेश कर चुकी थी। सन्यासी योद्धा बाणों की निरंतर वर्षा किये जा रहे थे, बाणों से दानव सैनिक मृत्यु को प्राप्त अवश्य हो रहे थे, किन्तु उनकी संख्या अधिक होने के कारण इससे कुछ अधिक प्रभाव नही पड़ रहा था।

भार्गव के समक्ष ही अनेक शिष्यों को बलभद्र ने अकेले ही अपने दुधारी खड्ग से यमलोक पहुंचा दिया था। आश्रम की धरा अब रक्त से लाल हो रही थी। भार्गव ने मार्तण्ड की ओर देखा किन्तु मार्तण्ड

अपने स्थान पर नही था। भार्गव ने अधिक विचार ना करते हुए धनुष पर बाण चढाते हुए दानवों को लक्ष्य करके अनेक बाण छोड़े। उसका कोई भी बाण खाली नही जा रहा था। हर बाण एक दानव की मृत्यु का दूत था। शीघ्र ही उसके तूणीर में मात्र एक ही बाण शेष रह गया। भार्गव ने उस बाण को बलभद्र के लिये शेष रखने का विचार किया और कमर से तलवार निकाल कर अश्वारोही दानवों के मध्य प्रवेश कर गया। वह विद्युत् की भाँति तलवार चला रहा था। वह जहाँ भी जाता उसकी तलवार इतनी तीव्रता से घुमती मानों तलवार के रूप में विद्युत् सी चमक रही हो। उसने अकेले ही अनेकों अश्वारोही दानवों को यमलोक पहुंचा दिया था। बलभद्र उसे देख कर चकित था। भार्गव ने बलभद्र को देखा और बिना एक क्षण भी गंवाए धनुष पर अंतिम बचा हुआ बाण चढाया और छोड़ दिया। वह बाण सीधे बलभद्र की बाई आँख में जा धंसा और बलभद्र चीखते हुए अपने अश्व से गिर पड़ा।

बलभद्र के गिरते ही एक क्षण को दानव सेना सकते में आ गयी। उनका सेना नायक धराशायी हो चुका था, सेना का आधा बल एकदम से मानो समाप्त हो गया था। युद्ध क्षण भर को रुक सा गया। बलभद्र असीम पीड़ा से चीख रहा था, किन्तु उसमे अदम्य इच्छाशक्ति थी, उसे ज्ञात था यदि वह गिरा तो सेना का मनोबल टूट जायेगा, उसका अपने पैरों पर खड़ा रहना अत्यंत आवश्यक था। बलभद्र ने अपने हाथों से आँख में धंसे बाण को खींच निकाला, जिसके साथ उसकी आँख तक बाण के साथ बिंधी हुई अवस्था में बाहर आ गयी। वह गुर्राता रहा और दांत भींचकर उस आँख को ही अपने शरीर से अलग खींच कर निकाल दिया। इससे पीड़ा तो हुई किन्तु इसके साथ ही सेना के उत्साह में दुगुनी वृद्धि हो गयी। महर्षि संदीप अपनी कुटी से बाहर आ चुके थे। बलभद्र अपने स्थान पर खड़ा हुआ उसने अपने समीप ही खड़े अश्वारोही सैनिक से धनुष और बाण लिया। इससे पहले के कोई कुछ समझ पाता उसने बाण चला दिया। भार्गव और अन्य शिष्य जब तक बाण का लक्ष्य समझ पाते तब तक बाण अपने लक्ष्य को भेद चुका था। महर्षि संदीप के शरीर को चीरते हुए बाण पीठ से बाहर निकला। अभी वे कुछ समझ पाते इससे पहले ही दूसरा बाण भी उनके शरीर में आ धंसा। बलभद्र के दोनों बाण सटीक बैठे थे। महर्षि के गिरते ही बलभद्र के मुख पर पीड़ा के पश्चात भी एक विजयी मुस्कान उभरी। भार्गव महर्षि को गिरता देख उनकी ओर दौड़ा। मार्तण्ड भी तब तक वहाँ आ पहुंचा था। उसके हाथों में भार्गव का दण्ड था। वह

दण्ड लेने हेतु ही गया था। किन्तु उसके पहुँचने में मात्र कुछ क्षणों का विलंब हुआ और इन कुछ ही क्षणों में स्थितियां बदल चुकी थी।

भार्गव ने महर्षि को थाम लिया। उनकी आँखे खुली हुई थी।

"युद्ध करो भार्गव, युद्ध करो। तुम्हारी आवश्यकता है इस आश्रम को, युद्ध करो।" महर्षि ने भार्गव को आदेश दिया। मार्तण्ड ने भार्गव की ओर उसका दण्ड बढ़ा दिया। भार्गव के नेत्र क्रोध से सुलग रहे थे, उसमे लावे के रूप में अश्रु बह रहे थे। एक शिष्य दौड़ते हुए वहाँ आया और उसने महर्षि को भार्गव से थाम लिया।

भार्गव के हाथों में अब दण्ड आ चुका था। मार्तण्ड ने भी अपना चक्र दण्ड अर्धचन्द्राकार आकर में घुमाना आरंभ कर दिया।

"भूमिकंपक हेतु सज्ज हो जाओ।" भार्गव सम्पूर्ण शक्ति से चीखा। उसका संकेत पाकर सभी सन्यासी योद्धा एवं शिष्य तत्काल युद्ध छोड़ आश्रम की ओर भागे। दानव आगे बढ़ने का प्रयास करते, किन्तु शिष्यों ने अपने बाणों की वर्षा से एक अवरोध सा उत्पन्न कर दिया जिस कारण कोई भी दानव आश्रम के अंदर नही पहुँच पा रहा था। यह मात्र कुछ ही क्षणों तक चलने वाला था, उनके बाणों में इतनी शक्ति नही थी कि वह दानवों का सामना कर सके। भार्गव के लिये इतना समय ही पर्याप्त था, वह दौड़ते हुए अपने स्थान से अमानवीय गति से उछला। उसका दण्ड घूमता रहा और वह उसी के साथ तीव्रता से पुनः धरा से आ टकराया। दण्ड धरा पर विद्युत् तरंगो की भाँति ही आ टकराया और एक भूकम्प सा उत्पन्न हुआ। जिस कारण सारे दानव सैनिक अपने अपने अश्वों से धरा पर मुंह के बल आ गिरे। भार्गव रुका नही और पुनः अपने स्थान से उछला और इस बार उसके दण्ड के घूर्णन से विद्युत् की लहरियां सी प्रस्फुटित हो रही थी। वह पुनः दुगुनी शक्ति से धरा से आ टकराया इस बार दण्ड का प्रहार दुगुनी शक्ति से किया था। जिस कारण एक भयंकर विस्फोट लहरियां उत्पन्न हुई जिसकी सीमा में आकर सैनिक पुनः भयंकर झटके से यहाँ वहाँ छितरा गये। बलभद्र अपने सम्पूर्ण शरीर में भयंकर कंपन अनुभव कर रहा था। उसकी हृदय गति असामान्य रुप से बढ़ चुकी थी। कंपन क्षेत्र के प्रभाव सीमा से सेना का जो हिस्सा बाहर था वह तो फिर भी अपने पैरों पर पुनः खड़ा हो गया था किन्तु भार्गव की परिधि के समीप दानव अब पुनः उठने की स्थिति में नही थे अथवा यमलोक पहुँच चुके थे।

मार्तण्ड ने शिष्यों को पुनः आक्रमण का संकेत किया। इसी क्षण शिष्यों ने अनगिनत बाण दानव सेना को लक्ष्य करके चला दिये। बाणों

की इस भयंकर वर्षा से दानव सेना की भयंकर हानि निश्चित थी। भार्गव ने अपना दण्ड घुमाते हुए एक वलय का निर्माण किया और उस उस घूमते वलय के तले स्वयं को सुरक्षित रखा। उससे टकराने वाले बाण उस घूमते वलय रूपी चक्र से टकराकर छितरा जाते किन्तु बाणों की सीमा में आने वाले दानव सैनिक मृत्यु को प्राप्त होते जा रहे थे। यहाँ तक कि बलभद्र तक को अपने मृत दानव सैनिक के शरीर को ही अपनी ढाल बनानी पड़ी। बलभद्र की ओर बढ़ने वाले बाण उस मृत सैनिक के शरीर में धंस कर रह गये। भार्गव ने अपना दण्ड क्षण भर को रोका। उसे ज्ञात था यदि वह निरंतर इस गति से दण्ड घुमाता रहा तो शीघ्र ही थक जायेगा।

बलभद्र अपनी इस अवस्था के पश्चात भी उसकी ओर देख कर एक वीभत्स हंसी हंसा जो धीरे धीरे एक अट्टहास में परीवर्तीत हो गयी। भार्गव उसे हंसते देख आश्चर्यचकित ही था कि एक बाण तीव्र गति से उड़ता हुआ भार्गव की पीठ में धंसते हुए छाती के आरपार हो गया। मार्तण्ड भार्गव को बाण लगते देख कर चीख पड़ा किन्तु उसी क्षण उसकी पीठ में भी दो बाण आ धंसे। उसकी चीख गले में ही फंसी रह गयी। उस भयंकर पीड़ा के कारण उसके मुख से शब्द तक ना निकल पा रहे थे। बलभद्र अपनी बची खुची सेना के साथ उठ खड़ा हुआ और अपना खड्ग लेकर भार्गव की ओर बढ़ा। भार्गव के हाथ में दण्ड अवश्य था किन्तु शरीर में धंसे बाण के कारण वह उसपर ध्यान केन्द्रित कर पाने में स्वयं को अक्षम पा रहा था। उसने बाण की दिशा में देखा। बलभद्र की आधी सेना ने अवसर देख कर आश्रम की दूसरी दिशा से आक्रमण किया था। उनके बाणों की वर्षा में मार्तण्ड सहित अनेकों शिष्य मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे। शिष्य शूरता का परिचय देते हुए युद्ध कर रहे थे, किन्तु आक्रमण पीछे से होने के कारण उन्हें सावधान होने तक का अवसर नही मिला था। भार्गव अपने समक्ष आश्रम को श्मशान बनता देखने के लिये विवश था। दानवों ने आश्रम में आग लगा दी। आश्रम अब जल रहा था। शिष्य एक एक करके युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हो रहे थे।

भार्गव ने अपनी शक्ति का अंतिम कण पुनः जुटाया और अपने पास पहुँच चुके दानव सैनिकों पर तलवार से प्रहार कर दिया। उसके एक ही प्रहार में दो दानव सैनिकों के शीश धड़ से अलग हो कर बलभद्र के पैरों में जा गिरे, बलभद्र एक क्षण के लिये अचंभित हो गया। भार्गव शरीर में बाण धंसे होने के पश्चात भी सैनिकों से युद्ध कर रहा था। उसके समीप आने वाला हर दानव मृत्यु को प्राप्त होता या अपना अंग भंग करवा

लेता। वह किसी को भी अपने समीप आने का अवसर तक नही दे रहा था। उसकी तलवार यमदूत की भाँति जहाँ भी लहराती वहाँ एक प्राण हर लेती। बलभद्र के मुख पर एक क्रूर मुस्कान विराजमान थी, वह क्षण भर को भार्गव की प्रशंसा कर उठा और उसने एक बाण पुन: भार्गव की ओर छोड़ दिया। वह बाण भार्गव के कंधे को चीरते हुए निकला। भार्गव का बाया हाथ अब बेकार हो चुका था। वह पीड़ा की अधिकता से घुटनों के बल धरा पर आ गिरा। तलवार उसके हाथ से छूट कर गिर पड़ी। अवसर देख एक दानव सैनिक उसके पीछे से आया और उसने भार्गव के केश पकड़े लिये। उसकी तलवार अब किसी भी क्षण भार्गव का शीश धड़ से अलग करने के लिये तत्पर थी। किन्तु उसका हाथ उठने से पहले ही भार्गव का दायाँ हाथ तलवार को थामे हुए ऊपर की ओर उठा और तलवार दानव की ठोड़ी को चीरते हुए मस्तक के पार निकल गयी। भार्गव ने तलवार को पूर्ण निर्दयता के साथ उसके मुख में से खींचा, तलवार उसकी ठोड़ी और मस्तक को दो भागो में चीरती हुई निकली। उस रक्त से बलभद्र नहा उठा। उसकी आँखों में क्षण भर में भय के भाव उत्पन्न हुए। भार्गव अंतिम श्वास तक युद्ध के लिये तत्पर था। भार्गव ने बलभद्र को देखा और मुस्कुरा दिया।

“तुम नही आओगे युद्ध करने दानव प्रमुख ?” भार्गव विकृत होते मुख के पश्चात भी एक विजयी हंसी हँसा। उसकी हंसी ने बलभद्र के क्रोध को सातवे आकाश में पहुंचा दिया और उसने समीप ही पड़े भाले को लेकर पूर्ण वेग से भार्गव की ओर दौड़ा और भाला भार्गव के शरीर में आरपार कर दिया। भार्गव की तलवार छूट गयी, अब उसमे इतनी ऊर्जा भी शेष नही बची थी कि वह स्वयं के पैरों पर भी खड़ा रह सके। वह गिरता इससे पहले ही बलभद्र ने उसे थाम लिया।

“मैंने तुम जैसा वीर नही देखा। अंतिम श्वास तक तुम लड़ते रहे, तुम मेरे सम्मान के पात्र बन चुके हो योद्धा। मैं अवश्य तुम्हें जीवन पर्यंत स्मरण करूंगा और तुम्हारा उदाहरण भी दूंगा। किन्तु इस समय तुम केवल मेरे शत्रु हो।” कहते हुए अंतिम प्रहार के रूप में बलभद्र ने अपना खड्ग भी उसके शरीर में धंसा दिया। भार्गव ने अंतिम प्रयास स्वरूप बलभद्र का कंठ अपने शक्तिहीन हाथ से पकड़ लिया, बलभद्र ने उसका तनिक भी विरोध नही किया, वह जानता था कि यह प्रयास अब अर्थहीन है। भार्गव ने एक हिचकी के साथ अंतिम श्वास ली। बलभद्र कुछ क्षणों तक उसके निष्प्राण मुख को देखता रहा। उसके मुख पर अब भी एक विजयी

मुस्कान थी जो उसकी मृत्यु के पश्चात भी उसे मुंह चिढ़ा रही थी। बलभद्र ने अपने हाथों से उसकी पलकें बंद की और आश्रम की ओर देखा। आश्रम में चारों ओर बस अग्नि का तांडव दिखायी दे रहा था।

“मामा !!” एक भयंकर दहाड़ ने उस वातावरण को भेद दिया। वह दहाड़ एक हृदयविदारक क्रंदन में परिवर्तित हो गयी। उसके साथ ही अनेकों दानवों के शीश हवा में उछलते हुए बलभद्र के सामने आ गिरे। उसने आश्चर्य से उस चीख की दिशा में देखा। वह सुबाहु था, अपने मामा की मृत्यु देखकर वह साक्षात् रुद्रावतार ले चुका था।

***

सुबाहु की तलवार विद्युत् की भाँति घूमते हुए दानवों को काटे जा रही थी। उसने प्रवेश करते ही लगभग नौ दानवों को क्रूरता से खंडो में बाँट दिया।

उस पर क्रोध हावी था। उसका क्रोध जागृत हो चुका था। जिस क्रोध को भार्गव ने नियंत्रित करना सिखाया था, अब भार्गव के साथ ही वह नियंत्रण भी अस्तित्वहीन हो चुका था। उसे किसी भी दण्ड की आवश्यकता प्रतीत नही हो रही थी। वह दोनों हाथों से विद्युत् की गति को भी मात देती गति से तलवार लहरा रहा था। उसके प्रहारों में इतनी अधिक शक्ति और क्रोध था कि दानवों के साथ साथ उसके प्रहार की सीमा में आने वाले वृक्ष तक कट रहे थे। बलभद्र उसके इस रुद्रावतार को देख कर भय से कांप उठा। बलभद्र को आभास हुआ कि भार्गव के रूप में जो संकट उनके समक्ष आया था वही संकट अब रूप बदल कर सुबाहु के रूप में प्रकट हुआ है। सुबाहु इस समय भयंकर क्रोध में था, वह अपनी दोनों तलवारों को घुमाते हुए दौड़ रहा था। उसके समक्ष आने का साहस जिस भी दानव ने किया वह टुकड़ों में विभक्त हो गया। कुछ ही क्षणों में बलभद्र के सैनिकों की टुकड़ी की एक भारी संख्या सुबाहु के क्रोध का ग्रास बन चुकी थी। दानवों ने उसे चहुँओर से घेर लिया था, वे समझ गये थे कि उसे तलवारों से परास्त नही किया जा सकता था, तलवार से प्रहार करने हेतु जो भी समीप जाता सुबाहु एक तलवार से उसका प्रहार रोकता और दूसरे से उसका शीश ही काट देता था। वन का वह भाग अब दानवों के रक्त से दलदल में परिवर्तित हो गया था। चारों ओर बस दानवों के अंगो के टुकड़े दृष्टिगत थे और रक्त की धारायें बह रही थीं। बलभद्र समझ चुका था कि सुबाहु को रोकने के लिये उसे अपनी आधी सेना की आवश्यकता पड़ेगी जो अभी भी आश्रम में तांडव मचा रही थी। बलभद्र

ने एक भयंकर चिंघाड़ भरी जिसके प्रत्युत्तर में आश्रम में उपस्थित टुकड़ी ने अपनी दिशा बदल दी और उसकी ओर चल पड़ी। सभी अश्वारोही उसी ओर बढ़ रहे थे। वे कम से पचास की संख्या में थे। सुबाहु भले ही क्रोध से सुलग रहा था किन्तु वह अमानवीय शक्ति धारी व्यक्ति नही था, वह उन भीषण दानवों से निपट नही सकता था, क्रोध ने उसके विचार करने की क्षमता ही हर ली थी। थकान उसके शरीर पर अपना प्रभाव दिखा रही थी किन्तु उसका आवेग उसे नकार रहा था। बलभद्र ने अब अपने शस्त्र त्याग दिये थे और अपनी प्रकृत्यानुसार ही भयंकर शक्ति का प्रदर्शन करते हुए वहाँ स्थित एक मजबूत वृक्ष को ही उखाड़ लिया। उस वृक्ष का प्रयोग अब वह गदा की ही भाँति कर रहा था। सुबाहु की कमर पर एक भारी वृक्ष का प्रहार हुआ, वह अनेक हाथ दूर तक जा गिरा और घिसटते चला गया। इस शक्तिशाली प्रहार के कारण और धरा से घिसटने के कारण उसका शरीर जगह जगह से छिल गया था। किन्तु सुबाहु की सारी संवेदनाये मानो मृत हो चुकी थी। वह इस भयंकर प्रहार के पश्चात भी उठ खड़ा हुआ। उसने अपनी कमर में लटके हुए दण्ड की ओर हाथ बढ़ाया किन्तु दण्ड उसके पास नही था। उस प्रहार के पश्चात दण्ड वह गिर पड़ा था।

“अब तो तेरे पास कोई शस्त्र भी नही है योद्धा। अब भला कैसे युद्ध करोगे ?” बलभद्र व्यंग्य से हंसते हुए बोला।

“मुझे किसी प्रकार के शस्त्र की आवश्यकता नही है दानव। मैं स्वयं एक शस्त्र हूँ, और यह तुम्हें जब पता चलेगा तब तक तुम यमलोक पहुंच चुके होगे।” कहते हुए सुबाहु अपने स्थान से उछला और अनेक हाथ तक उछलकर वह सीधे दानवों के मध्य ही जा पहुंचा, दानवों के मध्य पहुँचने का निर्णय आत्मघाती था। दो दानवों ने अपने खड्ग एवं गदा से प्रहार किया, सुबाहु ने अपने शरीर को पूर्ण आवेग के साथ ही किस धनुष से छूटे बाण की भाँति तीव्र गति से लहराया और घूमते हुए ही गदा और खड्ग के प्रहार के मध्य से होते हुए दोनों बाहों को फैलाए उन दोनों दानवों को लेकर धरा पर जा गिरा। दानव अभी उठने का प्रयास कर ही रहे थे कि सुबाहु ने एक के मुख पर कुहनी से तो दूसरे के मस्तक पर अपने घुटने से भयंकर प्रहार कर दिया। वे भीषण पीड़ा से तड़प उठे और उसी क्षण सुबाहु ने एक की गदा पर अपना अधिकार जमा लिया और पूर्ण शक्ति समेट कर उसने गदा का प्रहार कर दिया। एक ही प्रहार में दानव के मस्तक के टुकड़े टुकड़े हो गये, वह यही पर नही रुका उसने दूसरे दानव की छाती पर गदा को पटक मारा। उस दानव की छाती की सारी पसलियाँ असंख्य

टुकड़ों में विभाजित हो गयी और उसने भयंकर डकार लेते हुए प्राण त्याग दिये। सुबाहु ने गदा थामे हुए ही आगे बढ़ते एक और दानव की छाती पर प्रहार कर दिया। वह इतनी भयंकर शक्ति से प्रहार कर रहा था कि जिस दानव पर गदा पड़ती वह छटपटाते हुए प्राण त्याग देता। वह आगे बढ़ा ही था किन्तु बलभद्र ने उसकी छाती में अपने विशालकाय पैरों का भयंकर प्रहार कर दिया। छाती पर हुए इस प्रहार से सुबाहु धरती पर आ गिरा। उसे प्रतीत हुआ मानों बलभद्र के रूप में किसी हाथी का पैर उसकी छाती पर पड़ा था। बलभद्र ने अवसर ना गंवाते हुए नीचे पड़े हुए सुबाहु की छाती पर अपना पाँव रख कर उसे दबा दिया। सुबाहु को अपनी छाती फटती हुई सी प्रतीत हुई। निस्संदेह बलभद्र के दबाव के कारण उसकी सारी पसलियाँ टूट जानी थी।

एक सैनिक ने बलभद्र के हाथों में गदा थमा दी थी। अब किसी भी क्षण गदा का भीषण प्रहार सुबाहु को यमलोक पहुंचा देने वाला था। सुबाहु को मृत्यु अपनी समीप दिखायी दे रही थी, किन्तु उसी क्षण उसकी दृष्टि भार्गव की निष्प्राण देह पर पड़ी। उसकी आँखों में क्रोध और दुःख की ज्वाला पुन: प्रज्वलित हो गयी। भार्गव का असंख्य घावों से छिन्न विछिन्न शरीर इस बात की पुष्टि कर रहा था कि भार्गव ने अंतिम श्वास तक युद्ध किया था।

“तू निस्संदेह एक महान योद्धा है, किन्तु तेरे मामा के सामने तेरी वीरता गौण है, वह अंतिम श्वास तक, रक्त के अंतिम अंश तक युद्ध करता रहा और तुम युद्ध आरंभ करते ही मेरे पैरों तले किसी कीट की भाँति मृत्यु को प्राप्त हो रहे हो।” कहते हुए बलभद्र ने पूर्ण शक्ति से गदा से सुबाहु के मस्तक पर प्रहार कर दिया। किन्तु आश्चर्यजनक रूप से सुबाहु ने गदा का प्रहार अपने दोनों हाथों पर न केवल झेल गया अपितु गदा को विपरीत दिशा में ही धकेल दिया। बलभद्र का मुख अपनी ही गदा से भयंकर रूप से टकरा गया और उसकी आँखे एकदम से चुंधिया गयी, वह लड़खडाते हुए गिरते गिरते बचा। उसका पैर सुबाहु की छाती से हट चुका था, सुबाहु ने धरती पर पड़े पड़े ही अपने पैरों से बलभद्र के घुटने के जोड़ पर प्रहार कर दिया, जोड़ पर प्रहार होते ही बलभद्र घुटनों के बल धरती पर आ गिरा और उसी क्षण सुबाहु ने एक विशालकाय शिला उठा कर उसके मस्तक पर पटक दिया। शिला दो टुकड़ों में विभाजित हो गयी। सुबाहु ना केवल खड़ा हो गया बल्कि उसने अपने पैरों से इस बार बलभद्र की कानशिला पर भयंकर गति से और पूर्ण शक्ति से प्रहार कर दिया। बलभद्र मुख के

बल धरती पर जा गिरा। सुबाहु ने बलभद्र की गदा उठाई और किसी के पलक भी झपकाने से पहले विद्युत् की गति से बलभद्र की पीठ पर गदा का प्रहार कर दिया।

एक के पश्चात एक हुए लगातार प्रहारों को बलभद्र का शरीर झेल नही पाया। बस अब अंतिम प्रहार और बलभद्र का मस्तक किसी तरबूज की भाँति फट कर छितरा जाना निश्चित था। किन्तु तब तक वहाँ पहुंची दानव टुकड़ी द्वारा छोड़े गये दो बाण सुबाहु की की पीठ में आ धंसे। सुबाहु क्रोध के आवेग में उन्हें भूल ही गया था। वह भीषण पीड़ा के पश्चात भी घुमा। दानव सेना ने बाण रोक लिये क्योंकि बाणों के प्रहार बलभद्र को भी अपना लक्ष्य बना सकते थे। सुबाहु ने धनुर्धारी दानव सेनापति को देखा, उसका क्रोध अपने चरम पर जा पहुंचा और उसने अपनी गदा को ही अपने हाथों से चारो दिशा में घुमाना आरंभ कर दिया। वह एडियों पर किसी चक्र की भाँति ही घुमने लगा। उसने अपने शरीर को ही गति देकर गदा को दानव सेनापति की ओर उछाल फेंका गदा आश्चर्यजनक गति से दानव सेनापति की ओर बढ़ी और उसकी छाती को फोड़ती हुई धरा में जा धंसी। दानव सेना इस दृश्य को देख भयभीत होकर पीछे हट गयी। सुबाहु को समीप ही पड़ा दण्ड दृष्टि गोचर हुआ। उसने क्षण भर में ही उसे प्राप्त किया और एक क्षण के लिये अपनी आँखे मूंद ली। उसे आँखे मूंदता देख दानव सेना ने तुरंत धनुष पर बाण चढ़ा कर उसे लक्ष्य बना कर छोड़ दिया। बाण सुबाहु तक पहुँचने से पहले ही सुबाहु के नेत्र खुले और उसका दण्ड घुमा और बाण उससे छिटक कर दूर जा गिरा। सुबाहु ने अपने अपना ध्यान अब केन्द्रित कर लिया था। वह दण्ड को तीव्रतम गति से घुमाने लगा। दण्ड अब तक की सर्वाधिक तीव्र गति से घूम रहा था। दानव सेना ने बिना एक क्षण व्यतीत किये असंख्य बाण सुबाहु की ओर छोड़ दिये किन्तु सारे बाण उसके दण्ड रुपी घूमते चक्र से छितरा कर यत्र तत्र ना केवल छिटक गये बल्कि उसकी सीमा में आकर अनेक दानव भी अपने प्राण गंवा बैठे। सुबाहु रुका ही नही, वह आज अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा के एक एक कण का प्रयोग करने को तत्पर दिखायी पड़ रहा था। चक्र घूमते घूमते मानों अदृश्य सा हो गया और इसी के साथ घूमते हुए चक्र के साथ ही सुबाहु भयंकर रुप से उछला उसके दण्ड से विद्युत् तरंगे वातावरण में बिखर रही थी। वह भीषण गति से दण्ड को भूमि पर टकराते हुए धरा पर जा टकराया। यह चक्रदण्ड सिद्धि का अब तक का सबसे भीषण और महाशक्तिशाली प्रहार था।

इस प्रहार से मानो वन के उस भाग में एक आणविक विस्फोट सा हुआ। सम्पूर्ण दानव सेना अपने अश्वों सहित उस भीषण झटके और विस्फोट से अनेक हाथ तक उछल पड़ी और, धरा मानो किसी लहर की भाँति ही लहरा उठी और धूल का एक प्रचण्ड गुबार उठा। वातावरण धूल के उस गुबार से पूर्णतया नहा गया।

वृक्ष तक टुकड़ों में विभाजित हो गये और आश्रम के सम्पूर्ण भूभाग में स्थित वृक्ष पूर्णतया पर्णरहित हो गये। दानव सेना इस प्रहार से समाप्त हो चुकी थी। इस भीषण कंपन के कारण उनके हृदय और रक्त की गति इस स्तर तक बढ़ गयी थी मानो रक्त अपनी शिराओं को फोड़कर बाहर निकल आएगा। इस भीषण कंपन से उनकी अस्थियों तक ने मांस का साथ छोड़ दिया और कई टुकड़ों में विभाजित हो गयी। एक भीषण कंपन ध्वनि वातावरण में गूंजती रही । कुछ समय पश्चात कंपन ध्वनि मद्धिम हुई और वातावरण से धूल छंटी। उस भाग के सारे वृक्ष गिर चुके थे, पत्ते और घास तक जड़ से उखड़ गये थे। चहुँ ओर केवल और केवल दानवों के ही टूटे-फूटे, क्षत-विक्षत शव बिखरे पड़े थे। सबसे मध्य में अपने दण्ड के साथ ही सुबाहु भी बेसुध सा गिरा हुआ था। उसने अधिकतम ऊर्जा का प्रयोग कर लिया था। उसके शरीर ने ऊर्जा की अधिकतम सीमा तक का प्रयोग कर लिया था। चक्र दण्ड का यह प्रहार इतना तीव्र था कि स्वयं उस सिद्धि का धारक भी उस प्रहार के आवेग से बच नही पाया था। उसके संपूर्ण शरीर में अब तक कंपन हो रहा था। मस्तिष्क झनझना रहा था और नेत्र बंद होते जा रहे थे। उसने बंद होते नेत्रों से उस स्थान की ओर देखा जहां बलभद्र को अंतिम बार देखा था। बलभद्र का शरीर उस स्थान पर नही था। सुबाहु के आँख, कान, नाक से रक्त बहने लगा था। वह उसने एक हिचकी के साथ मुंह से रक्त फेंक दिया और उसके नेत्र बंद हो गये।

***

माया और मटुक

२००८

मटुक ने अपनी आंखे खोलने का प्रयास किया। दाहिनी आँख पर बहता खून सूख चुका था जिस कारण उसकी पलकें चिपक सी गयी थी। उन्हें खोलने के प्रयास में दर्द हुआ तो मटुक ने प्रयास बंद कर दिया। होश में आते ही उसे अपने शरीर के हर हिस्से में अथाह पीड़ा का एहसास हुआ। सिर से बहता खून चेहरे पर आकर सूख कर पपड़ी बन चुका था। कराहने के लिये मुंह खुला ही था कि उस पपड़ी में खिंचाव हुआ। उसका गला सूख रहा था, वह अब तक कुर्सी से बंधा हुआ था। हाथ और पैर सख्ती से बंधे होने के कारण सुन्न पड़ चुके थे और महसूस होना भी बंद हो चुके थे। उसने सांस लेने का प्रयास किया किन्तु श्वास लेते ही पसलियों में तीव्र खिंचाव हुआ जिससे वह तड़प उठा। एक एक श्वास मटुक पर भारी पड़ रही थी।

“कैसे हो मटुक? यदि मैं यह प्रश्न पूछूँगा तो यह मेरी मूर्खता ही होगी।”

कमरे के अँधेरे कोने से आते भारी स्वर ने मटुक का ध्यान भंग किया। मटुक ने अपना सर घुमाया और स्वर की दिशा में देखने का प्रयास किया। अँधेरे के कारण कुछ भी स्पष्ट दिखायी नही दे रहा था। अचानक मटुक के सर के ऊपर लटकता बल्ब ऑन हुआ और उसकी आँखे चुंधिया गयी। अँधेरे से प्रकाश में आते ही उसकी आँखों के आगे सितारे नाच गये। अँधेरे कोने से वह व्यक्ति सामने आया।

मटुक की आँखे कुछ देखने की अभ्यस्त हुई। उसने उस व्यक्ति को देखा, वह तीस या पैतीस वर्ष का व्यक्ति था। कद छह फुट से भी ऊंचा। उसने काले ट्राउजर के साथ एक झक सफ़ेद शर्ट पहनी हुई थी। आस्तीनों को कुहनी तक मोड़ रखा था जिस कारण शर्ट कसी हुई थी और उसकी बलिष्ठ भुजाये स्पष्ट दिखायी दे रही थी। वह प्रकाश में आया तब मटुक ने उसका चेहरा देखा। आँखों पर नजर का चश्मा, बाल सलीके से काढ़े हुए, चेहरा क्लीन शेव्ड। वह किसी हॉलीवुड़ स्टार के समान प्रतीत होता था। स्मार्ट किन्तु सख्त।

मटुक उसके व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नही रह पाया। ना जाने क्यों उसे देखकर मटुक को अथर्व याद आ गया।

“कौन हो तुम?” मटुक ने प्रश्न किया, अगले ही पल उसे अपने मुंह में लसलसाते रक्त का एहसास हुआ। जो उसने तुरंत थूक दिया।

“मेरा परिचय है ‘माया’, माया बाहुपति। महेश बाहुपति का बेटा। जिसे तुमने मार दिया।” माया के मुंह से निकलते अंतिम शब्द में उसका क्रोध साफ़ झलक रहा था। माया के हाथ में एक फोल्डिंग चेयर थी, उसने वह फोल्डिंग चेयर मटुक के समक्ष खोली और उस पर बैठ गया। अब वे दोनों आमने सामने थे।

“मटुक शास्त्री। तो आप एक शिक्षक हैं बनारस में, या कहना सही होगा कि शिक्षक आपका छद्मरुप है? कोई बात नहीं, सब के अपने अपने छद्म रुप होते है, हर व्यक्ति अपने आप में कई व्यक्तित्व छुपाये होता है।” माया ने मटुक को संबोधित करते हुए कहा।

“अच्छा तो तुम उस दानव के बेटे हो।” मटुक ने फिर खून थूका और हंस पड़ा। उसकी हंसी में व्यंग्य था। जिसे माया ने साफ़ महसूस किया। किन्तु उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं उभरें।

“दानव! तुम मुझे दानव बुलाते हो? क्या तुम्हें दानव की परिभाषा पता है? तुलनात्मक रुप से यदि देखा जाये और आज की मानवता का विश्लेषण किया जाये फिर भी दानव या दैत्य जो भी कह लो, आज के मनुष्य की अपेक्षा कहीं ज्यादा श्रेष्ठ है, तुम्हें नहीं लगता?” माया ने इत्मिनान से पूछा।

“मुझे जानने की आवश्यकता नहीं और यदि तुम्हें लगता है के तुम्हारे टॉर्चर से मुझे कोई फर्क पड़ेगा तो आजमा के देख लो। तुम्हारा हर टॉर्चर कम पड़ जायेगा” मटुक फूंफकार उठा।

“मुझे पता है। मैं जानता हूँ, टॉर्चर शरीर पर असर डालता है। विचारों पर नही, और तुम्हारी विचारधारा ही तुम्हारी शक्ति है। किन्तु विचारधारा वाला मामला कुछ कुछ मेरे साथ भी है। तो यह ग़लतफ़हमी निकाल लो कि मैं तुम्हें टॉर्चर करने आया हूँ।” माया ने सौम्य स्वर में कहा। मटुक उसकी सौम्यता पर हैरान था। माया की मुस्कान उसे और उलझन में डाल रही थी।

“तुमने मेरे पिता जी की हत्या क्यों की? तुम हमारे साथियों की हत्यायें क्यों कर रहे हो?” माया ने मटुक की आँखों में देखते हुए पूछा।

“तुम्हें जवाब पता है।”

“मैं तुम्हारे मुंह से सुनना चाहता हूँ।”

“मैं इसके लिये बाध्य नही हूँ।”

“तुम रक्षादल से हो और हम रक्ष दल से। क्या यह कारण पर्याप्त है?” माया के मुख पर क्षण भर को कठोरता दिखी, किन्तु फिर अदृश्य हो गयी।

“तुम जानते हो, यहाँ जाति कारण नहीं है।” मटुक ने अपने आप कहा।

“तुम उस शक्ति पिंड़ के लायक नही हो और उसे पाने के हर प्रयास को विफल करना ही हमारा कर्तव्य है, यह तुम और तुम्हारी सम्पूर्ण प्रजाति अच्छे से जानती है।” मटुक फिर कसमसाया। एक ही स्थिति में बंधे होने के कारण उसका शरीर अकड़ता सा महसूस हो रहा था।

“यह किसने तय किया कौन लायक है और कौन नही?” माया ने पुन: पूछा।

“ओह तो मेरे साथ मनोवैज्ञानिक खेल खेल रहे हो? चलो यह भी कर के देख लो। मैं इस खेल में तुम्हारे साथ हूँ।” मटुक हंसा। उसके हंसने से रक्त से सना उसका चेहरा और विकृत दिखायी देने लगा, माया प्रत्युतर में केवल मुस्कुरा दिया।

“तुमने मेरे प्रश्न का उत्तर नही दिया।” माया ने टोका।

“तुम्हारी प्रवृत्ति ने! तुम्हारी विनाशक प्रवृत्ति ने तुम्हें उस शक्तिपिंड़ के अधिकार से वंचित किया है। तुम दानव एवं राक्षस सदैव मानवजाति के विनाश के लिये प्रयासरत रहे हो। इस कारण वह शक्ति तुमसे दूर रखना ही उचित है।” मटुक के स्वर में घृणा का पुट था।

“मटुक! तुम्हें नही लगता समय के साथ प्रवृत्ति भी बदल चुकी है।” माया ने कहा। मटुक ने प्रश्नवाचक दृष्टि से उसकी ओर देखा, मानो उसके कहे का आशय समझना चाहता हो।

“तुम आज मनुष्य को देखो। तुम्हारा मनुष्य अब दानवों से भी ज्यादा विनाशक और शोषक बन चुका है। क्या तुम्हें नही लगता के आज के मनुष्य के सामने यदि तुलना करे तो कल का दानव तो एक भद्र पुरुष ही कहलायेगा। दानवों को केवल मनुष्य जाति से ही मतभेद था, किन्तु मानवों को ही देख लो, उसने अपने ही भीतर सैकड़ों जातियां निर्मित कर ली और हर जाति दूसरी जाति से घृणा करती है। इस हिसाब से तो दानव श्रेष्ठ ही कहलायेंगे क्योंकि वो जातियों में नही बंटे थे।” माया कुछ क्षण के लिये रुका।

“तो तुम स्वयं को और दानवों को श्रेष्ठ सिद्ध करना चाहते हो?” मटुक के स्वर में व्यंग्य था।

“नहीं! हमें श्रेष्ठत्व नही चाहिये। वह मानवों के लिये ही रहने दो, श्रेष्ठ होना भी एक अभिशाप है। जहाँ यह भावना पनपने लगती है वही से श्रेष्ठतत्व अवनति को ओर बढ़ने लगता है। अच्छा छोडो यह श्रेष्ठ और निकृष्ट की चर्चा। यह बताओ तुम शक्ति पिंड़ की रक्षा क्यों कर रहे हो?” माया की आँखों में विचित्र सी चमक थी।

“मैं बता चुका हूँ।”

“नही, वह उत्तर नही था। वह तो योग्यता की बात थी। मैं जानना चाहता हूँ तुम क्यों उसकी रक्षा कर रहे हो?”

“खेल मत खेलो। जो पूछना है, स्पष्ट पूछो।” मटुक झुंझलाया।

“मेरे प्रश्न का आशय यह था कि उस शक्ति पिंड़ में ऐसा क्या है जिसकी तुम रक्षा कर रहे हो?” माया का स्वर सौम्य था।

“तुम जानते हो। तुम्हें अच्छे से पता है, इसीलिये तुम युगों से उसके पीछे पड़े हो। उसे प्राप्त करना चाहते हो। महादेव की तांडव ऊर्जा है उसमे। जिसे तुम दानव अपनी शक्ति बनाना चाहते हो। इस विश्व पर सत्ता प्रस्थापित करना चाहते हो।” मटुक के स्वर में थरथराहट स्पष्ट थी।

“तुम्हारे अनुसार उसमे महादेव की तांडव ऊर्जा है और हम उसे प्राप्त करना चाहते है, किन्तु मुझे अब भी यह समझ में नही आया यदि उस शक्ति पिंड़ में साक्षात् महादेव की तांडव ऊर्जा है, तो तुम्हें उसकी रक्षा की आवश्यकता क्यों है? तुम्हारी इतनी क्षमता भी है कि तुम साक्षात् महादेव की रक्षा कर सको? क्या यह तुम्हारा बड़बोलापन नहीं है? क्या महादेव को तुम्हारी रक्षा की आवश्यकता है? क्या ईश्वर को अपनी रक्षा के लिये तुम पर निर्भर रहना होगा? यदि ऐसा है तो क्या अर्थ है उसके ईश्वर होने का?” माया ने मटुक की ओर देखा, वह उसके भाव पढ़ने का प्रयास कर रहा था।

“ईश्वर सर्वशक्तिमान है मूर्ख दानव! उसे किसी से किसी प्रकार की रक्षा की आवश्यकता ही नही है। वह तो स्वयं रक्षक है इस सृष्टि का इस ब्रह्माण्ड का।” मटुक ने उत्तर दिया।

“यदि वह रक्षक है तो वह स्वयं क्यों नही रक्षा कर रहा इस शक्ति पिंड़ की?” माया ने व्यंग्य से कहा।

“तुम्हें नही लगता कि ईश्वर चाहते ही नही कि इस शक्ति पिंड़ की रक्षा हो? यदि वे चाहते तो इसके लिये इतना सब कुछ होता ही नहीं। स्पष्ट है, यह रक्षा मात्र दिखावा है। तुम मनुष्यों को यह भय है कि इस विनाशक शक्ति के किसी और के हाथ में जाते ही मनुष्यों की सत्ता और

श्रेष्ठतत्व दोनों समाप्त हो जायेंगे। तुम इतनी सी बात क्यों नही समझ पा रहे कि हो सकता है कि इस पिंड़ के पीछे कोई उद्देश्य हो? तुम युगों से उसकी रक्षा कर रहे हो, उसका क्या लाभ हुआ? सैकड़ों आक्रमण, अरबों हत्यायें, नरसंहार, भयंकर आपदायें, विनाश, युद्ध इत्यादि होते रहे किन्तु कुछ लाभ नही हुआ। तुम्हें क्या लगता है कि यह ऊर्जा जिसे तुम तांडव ऊर्जा कहते हो वह इतनी विनाशकारी है? एक प्लेग जैसी महामारी से विश्व की एक चौथाई आबादी समाप्त हो जाती है। महायुद्धों से विश्व के सारे देश प्रभावित होते हैं, नस्लीय हिंसा, जातीय दंगो में, सत्ता के लालच में, धन की लालसा, और वर्चस्व के अनेकों युद्धों का उदाहरण दे सकता हूँ जब विश्व की सारी आबादी तक समाप्ति की ओर बढ़ती जा रही थी। क्या यह सब तुम्हें किसी तांडव से कम लगता है? यदि तांडव होता भी है तो क्या इससे भी भयंकर प्रभाव दिखता? आज महादेव को आवश्यकता नही है तांडव करने की, मनुष्य खुद इतना योग्य बन चुका है कि बिना तांडव के सृष्टि का संहार कर सके। यदि ईश्वर चाहता कि इन सबकी रक्षा हो तो उसे तुम्हारी आवश्यकता ही नही पड़ती। ईश्वर के लिये तो सब उसकी संतान है वह दानव, मनुष्य, राक्षस में भेद नही करता, उसने किसी को योग्य अथवा अयोग्य घोषित नही किया। यह सब तो तुम्हारे स्वार्थ ने किया है, श्रेष्ठता की ग्रन्थि ने किया है।" माया बिना रुके कहते गया और सांस लेने के लिये क्षण भर रुका। मटुक केवल उसे सुनता रहा।

"और इसकी रक्षा करके क्या करोगे तुम? क्या प्राप्त होगा तुम्हें? कर रहे हो ना युगों से इसकी रक्षा? और अभी कितने युगों तक करोगे? कोई परिणाम कोई उद्देश्य स्पष्ट है तुम्हारे सामने कि आखिर में इसका अंत क्या है? इसका उद्देश्य क्या है? इसकी नियति क्या है? तुम्हें नही लगता कि तुम इस शक्ति को इसकी नियति से अलग कर रहे हो? तुम्हें नही लगता कि ऐसी शक्ति का उद्देश्य एक बदलाव हो सकता है? तुम्हें नही लगता प्रभु रामचन्द्र द्वारा स्थापित आदर्शों का युग अपनी समाप्ति की ओर है? तुम मनुष्य उन आदर्शों को भूलते जा रहे हो, जिस उद्देश्य के लिये तुमने त्रेतायुग में शक्ति पिंड़ की रक्षा का भार लिया था, उस उद्देश्य की सार्थकता कालातीत हो चुकी है? *एक्सपायर* हो चुकी है। तब के और अब के समाज में भिन्नता आ चुकी है। तबका मनुष्य अब स्वभाव से दानवों से भी आगे निकल चुका है। आदर्श खोखले बन चुके है, समाज खोखला होता जा रहा है। अरबों की संख्या, करोड़ो के मत, लाखों सम्प्रदाय, अनेक जातियां, सबके सब लड़ने मरने को उतारु है।

कानून, शिक्षा और नियमों का भय न हो तो मनुष्य क्या करेगा? वह अपने अंदर के छिपे महा दानव को बाहर लायेगा। जिसके सामने कल का दानव किसी निरीह और निर्दोष जीव से अधिक नही होगा। क्या वाकई में इस समाज की योग्यता है कि यह शक्ति पिंड़ उसके लिये सुरक्षित रखा जाये। यदि वह ईश्वरीय अंश है तो यह प्रमाण है ईश्वर के होने का, है न? तो यह ईश्वर इतना शक्तिहीन है जो इसकी रक्षा नहीं कर सकता ? और इसकी रक्षा क्यों करनी है, यदि इसे मानवजाति से छुपा कर रखना है तो इसे पृथ्वी पर होना ही नहीं चाहिये था। लेकिन उसकी मौजूदगी है, और इसका अर्थ यह है कि ईश्वर चाहता है वह मनुष्य के समक्ष आये और इस मानवजाति या समस्त जीव जगत में बदलाव हो।" माया फिर रुका। उसने मटुक को देखा उसके मुख पर अब सपाट भाव थे।

"तो तुम इस विश्व को बदलना चाहते हो? समाजसेवा करना चाहते हो? एक दानव की छवि के विपरीत बात कर रहे हो तुम तो। तुम्हें तो शांति से कभी कोई मतलब रहा ही नहीं था। तुम बदलाव की बात कर रहे हो?" मटुक फिर हंसा किन्तु इस बार उसकी हंसी का स्वर धीमा था। इस छोटे से बदलाव को भी माया ने पहचान लिया था।

"क्यों? क्या तुम नही बदलना चाहते इस समाज को? मैं दानव भले रहा हूँ, किन्तु मुझमे मानव अंश है। मैं इस मानव परिवेश में पला बढ़ा हूँ। मेरा जन्म, मेरा बचपन, मेरी शिक्षा, मेरा प्रेम, मेरे मित्र, मेरे संबंधी, मेरा परिवेश, सबमे इस समाज का अहम हिस्सा है, मेरी तकलीफ, मेरी ख़ुशी, मेरी सफलता, मेरी असफलता, मेरी हताशा, मेरी प्रसन्नता, मेरा अवसाद, मेरा उत्साह, मेरी वेदना, मेरा उल्लास, मेरी सारी भावनायें तो यहीं से है। मैं किसी दूसरे ग्रह पर एलियंस के साथ तो रहता नहीं हूँ, इसी धरती पर, इसी पृथ्वी पर, इन्ही मनुष्यों के साथ, इन्ही के बनाये समाज में रहता हूँ। जितना तुम इनके हो उतना ही मैं भी इनका हूँ, तुम्हें यह अधिकार किसने दिया की तुम मुझे इस मानवता, मनुष्यता और समाज से पृथक करके देखो? मैं इसे अपना ही हिस्सा मानता हूँ। जब जख्म जहरीला हो जाये, घाव नासूर बन जाये, चोट गैंगरिन में बदल जाये तब शेष शरीर की रक्षा के लिये उस हिस्से को काटना ही पड़ता है। क्या उसके कटने से दुःख नही होता? किन्तु वह आवश्यक है, या तो अंग से मोह रखो या प्राणों से और मैं वही करना चाहता हूँ। मैं इस समाज और इस पृथ्वी के प्राण बचाना चाहता हूँ, जिसके लिये मुझे उस जहरीले अंग को काटना होगा। उसको इस समाज रुपी शरीर से अलग करना ही होगा। दुःख तो अवश्य होगा

होना भी चाहिये, लेकिन उससे शरीर बचेगा। समाज का ढांचा बदल जायेगा किन्तु समाज बचा रहेगा। मुझे यही करना है, मेरा यही उद्देश्य है। राज करना आज के समय में एक फिजूल की बात है, उससे कुछ नही मिलने वाला है। सैकड़ों तानाशाह आये और राज किया किन्तु उससे कुछ नही बदला। मनुष्य पशु ही बना रहा। अब कुछ अलग करने का समय है। समय है इस पृथ्वी को एक शक्ति का आभास देने का जो सर्वशक्तिमान हो। ईश्वर अब अपने अस्तित्व का प्रमाण नही देता, जिस कारण उसके प्रति श्रद्धा, भय, प्रेम सब समाप्त हो चुका है। आवश्यकता है ईश्वर के अस्तित्व का साक्षात् प्रमाण देने का, जो इस समाज को झकझोर कर रख दे। जो इसकी आँखे खोल दे, जो उसे नये नियमों पर चलने को विवश कर दे, जो एक आदर्श की नींव रखे। जिसमे सब एक हो, ना जाति, ना सैकड़ों मजहब, ना नस्ल, ना वर्ण, ना मनुष्य, ना राक्षस, ना यक्ष, ना दानव, सब एक ही समाज हो बस। मैं ऐसे समाज का स्वप्न देख रहा हूँ, जहाँ सारी प्रजातियाँ एक साथ हो।" माया के चेहरे पर अनेको भाव आ रहे थे। उसका चेहरा बन बिगड़ रहा था। कुछ क्षण के लिये दोनों के बीच गहन खामोशी छाई रही।

"यदि मेरे हाथ खुले होते तो मैं तुम्हारे इस बेहतरीन भाषण और दिवास्वप्न पर तालियाँ जरुर बजाता। एक बात कहूँ? तुम्हें मोटिवेशनल स्पीकर होना चाहिये। मेरे सामने बोलने के बजाय तुम्हें अपना यूट्यूब चैनल खोल लेना चाहिये। यकीन मानो मोटिवेशनल स्पीकिंग के नाम पर हर तरह की बकवास करने वाले नमूनों तक के करोडो सब्सक्राइबर्स होते है, फ़ॉलोवर्स होते है और तुम तो फिर भी उन सबसे अच्छा बोलते हो, साथ में भाव भी बढ़िया बनाते हो। बेवजह शक्ति पिंड के पीछे इतने युग व्यतीत कर दिये। यदि यूट्यूब, इंटरनेट पर ही स्पीच देते तो तुम्हारे भी अंधे फ़ॉलोवर्स होते, कोई आश्चर्य नही होता जब तुम्हारे अनुयायी भी तुम्हें ही भगवान भी घोषित कर देते। चलन है ना आजकल, अपने ईश्वर को भूलकर नये ईश्वर बनाने का। तुम भी बन जाओगे और फिर कुछ समय में खुद का छोटा मोटा समाज भी बना लोगे। जो तुम्हारे आदर्शों पर चलेगा, तुम्हारा कहना मानेगा। क्या कहते हो ?"

मटुक उसे चिढ़ा रहा था। वह जाहिर कर रहा था मानों माया की बातों से वह कतई प्रभावित नही था। किन्तु माया यह अच्छे से जानता था आवश्यकता से अधिक प्रतिक्रिया देने का अर्थ यही होता है कि सामनेवाले पर प्रभाव हो रहा है। वह हंसा, कुछ देर तक मुस्कुराने के

पश्चात उसने मटुक की कुर्सी के हत्थों पर अपने हाथ रखे। वह अब मटुक के एकदम समीप था। माया ने जेब से एक रुमाल निकालकर मटुक के चेहरे पर बहते रक्त को पोंछने का प्रयास किया। मटुक सपाट भाव लिये स्थिर रहा।

“बनारस में हुआ ब्लास्ट याद होगा तुम्हें?” माया ने गम्भीरता से किन्तु एकदम सपाट स्वर में कहा। उसके प्रश्न को सुनकर मटुक की भृकुटियाँ तन गयी। उसका मुख एक विचित्र भाव से विकृत सा हो गया।

“तुम्हारे भाव बता रहे है, तुम नही भूले हो।” माया मुस्कुराया।

“तुम उस घटना का उल्लेख क्यों कर रहे हो?” मटुक के शब्दों में क्रोध था।

“तुम्हारी बेटी कैसी है?” माया ने उसके प्रश्न के उत्तर में एक और प्रश्न कर दिया।

“उसका नाम मत ले तू दानव।” मटुक क्रोध में दहाड़ा, किन्तु अगले ही पल उसे खांसी का दौरा पड़ गया।

“कल्पना करो उस मासूम पर क्या बीती होगी जब वह बम के धमाकों बीच मौजूद थी। बम का धमाका जानते हो ना मटुक? कैसा होता है। सुना है मंदिर के टनों मलबे के बीच मिली थी तुम्हारी बेटी।”

“चुप कर कमीने। एक शब्द भी आगे मत बोलना।” मटुक तड़प उठा।

“वो जीवित थी जब मंदिर के मलबे से उसे निकाला गया था। उसकी उसकी बांहों और पसलियों का चूरा हो गया था। सर पीछे से फट गया था, एक गहरा घाव था खोपड़ी में जिससे उसका दिमाग तक बाहर झलक रहा था। दोनों घुटने तक फूट चुके थे। शरीर की नब्बे प्रतिशत हड्डियाँ टूट चुकी थी। इतनी बुरी तरह से कि दुनियाँ का कोई भी सर्जन उसे जोड़ नही सकता था।” माया के मुख पर क्रोध था, नफरत थी।

“संकरित जाति के प्राणी! मेरे हाथ खोल दे। अपने खेल के लिये मेरी मरी हुई बेटी का प्रयोग मत कर। दम है तो हाथ खोल दे। मेरा एक ही हाथ तेरे लिये पर्याप्त होगा।” मटुक भावातिरेक में चीख रहा था, बड़बडा रहा था। उसे उसके सामने दीक्षा का क्षतविक्षत शव दिखायी दे रहा था। माया ने अपने हाथ में मौजूद रुमाल से मटुक का मुंह कस कर बाँध दिया। मटुक बड़ी जोर से सर हिलाता रहा किन्तु सब व्यर्थ। अब उसका मुंह बंध चुका था। उसके मुख से अब अस्पष्ट सी अजीब सी ध्वनियाँ ही निकल रही थी।

“मुझे माफ़ करना, लेकिन यह करना जरुरी था। मुझे कहने दो।” माया ने उसके कन्धो पर दोनों हाथ रखे, मटुक अपने सुलगते नेत्रों से उसे देखता रहा।

“विस्फोट से हुए धक्के और उसमे मौजूद धारदार कांच, कील और छर्रे तुम्हारी बेटी के शरीर में पैवस्त हो चुके थे। किन्तु उसे उसका दर्द महसूस नही हो रहा था। जानते हो क्यों? क्योंकि धमाके में वह अस्सी प्रतिशत तक झुलस चुकी थी। उस झुलस का दाह उसकी तड़प उस दर्द से कहीं अधिक थी। उसकी गोरी त्वचा झुलसकर काली पड़ चुकी थी और हड्डियों से जा चिपकी थी। उसके फटे और झुलसे वस्त्र पिघलकर उसकी त्वचा से चिपक गये थे। फटे हुए हिस्सों से उसका मांस बाहर लटक रहा था। वह अंतिम क्षणों में तड़प रही थी बेतहाशा दर्द से तड़प रही थी। धमाके में यदि वह क्षण भर में मर जाती तो सही था। इस अवस्था में भी वह एक घंटे तक जीवित थी। उसे जिस स्ट्रेचर पर लिटाया गया वह स्ट्रेचर रक्त से भर चुका था, उसकी जली त्वचा जगह जगह से उखड़ रही थी। एक बात तो भूल ही गया।” कहते हुए माया मटुक की ओर झुका।

“उसकी दाहिनी कलाई हाथ से उखड़ चुकी थी, जो अंत तक नही मिली।” माया की आँखों में वहशत सी दिखायी दे रही थी।

मटुक की आँखों से आंसू बहने लगे। उसके चेहरे पर तड़प साफ़ दिखायी दे रही थी। अब तक क्रोध से सुलगती आँखों में अब याचना के भाव दिखायी दे रहे थे। वह कुछ कहने को, चीखने को प्रयासरत था किन्तु मुंह पर बंधे कपड़े की वजह से उसकी चीखे घुटी की घुटी रह गयी। माया ने उसके आंसुओ से सने चेहरे को हाथों से उठाया।

“क्या उम्र थी अभी उसकी? बहुत सपने देखे होंगे ना तुमने उसके लिये। उसने ऐसे कौनसे कर्म किये होंगे जिसके लिये वह इस दर्दनाक और वीभत्स मृत्यु को प्राप्त हुई? निर्दोष थी ना वह? उस दिन मंदिर में पैतालीस लोग मरे थे सरकारी आंकड़ो के अनुसार, असल आंकड़ा पता नही। किन्तु मैं दावे से कह सकता हूँ सबसे वीभत्सता से और तड़प तड़प कर तुम्हारी बेटी ही मरी थी। क्योंकि वह सबसे अधिक समय तक जीवित थी। जबकि दूसरे लोग धमाके होने के कुछ ही मिनटों में या क्षण भर में मारे गये थे। वे खुशकिस्मत थे जो तुरंत मर गये।” माया अपनी कुर्सी पर बैठा, उसने मटुक को देखा। कुछ क्षण पहले तक कुर्सी तोड़ने तक को उतारु मटुक अब पस्त नजर आने लगा था। उसके हाथ शिथिल हो चुके थे। तना हुआ शरीर अब अपने बंधनों के सहारे झूल सा रहा था।

उसकी आँखे झुकी हुई थी जो निरंतर बहे जा रही थी।

“फिर क्या हुआ? उसने तुम्हारे सामने दम तोड़ दिया। तुम बस देखते रहे, तुम भगवान नही थे जो उसे उसकी तकलीफों से मुक्ति दिला पाते। तुम एक इंसान थे जो उसे बेबस होकर चीखते चिल्लाते मरते हुए देखने को विवश थे। कुछ दिनों तक अफरातफरी मची रही। राजनेता और मीडिया रूपी गिद्धों ने लाशों को मरने के बाद भी अपनेअपने स्वार्थ के लिये खूब नोचा। आरोप प्रत्यारोप का दौर चला, देश भर में निंदा होने लगी। युवा पीढ़ी को भी कुछ ट्रेंडिंग चीजे चाहिये थी मोमबत्तियां जलाने के लिये। यह वह्व दौर है जब युवा अपनी अकर्मण्यता मोमबत्तियां जला कर छुपा लेता है। उसे लगता है कि उसकी मोमबत्तियों से देश बदल जायेगा। कुछ दिन मीडिया, सोशल मीडिया पर ज्ञान झाडा, तर्क, वितर्क, कुतर्क हुए। देश की व्यवस्था और आतंकवाद को कोसा गया और फिर कुछ ही दिनों में सब सामान्य हो गया।” माया एक क्षण को चुप हुआ। मटुक अब शांत था। वह केवल माया को देखता रहा।

“फिर आखिरकार मंदिर के विस्फोटों के जिम्मेदारों का सुराग मिला। धरपकड़ होने लगी और कुछ दोषी पकड़े गये। लेकिन यहाँ भी फिर से गिद्धों ने अपने पंख पसार लिये, पहले मंदिर की लाशों पर राजनीति हुई थी और अब दोषियों के मजहब पर राजनीति शुरू हो गयी। एक झटके में मजहब का फायदा उठाया गया और दोषीयों को ख़ास पंथ का होने के कारण फंसाए जाने पर बहस शुरू हो गयी। मोमबत्ती जलाने वाला युवा फिर सुबह दस बजे तक सोकर जाग गया और दोबारा देश की सहिष्णुता को गरियाने लगा। इस बार मोमबत्तियां नही जलाई गयी। अबकी बार सोशल मीडिया पर तस्वीरे काली की गयी, स्लोगन लिखे गये। कुछ संस्थानों और विद्यालयों के छात्रों ने आन्दोलन भी किये, क्योंकि दोषियों में कुछ आरोपियों के कनेक्शन इन विद्यालयों से जुड़े पाये गये थे। युवा कहलाने वाली इस जॉम्बी फ़ौज ने तब अपराधियों के समर्थन में प्रदर्शन किये। उन्हें पता ही नहीं चला कि कब उनका आन्दोलन सिस्टम और पंथ विरोधी होते होते देश विरोधी हो गया। साफ़ तौर पर आँखों पर पट्टियां बांधे लोग आरोपियों को निर्दोष बताने लगे उन्हें विक्टिम बनाने की पुरजोर कोशिश की जाने लगी। पांच अपराधियों में तीन बरी हो गये क्योंकि सुबूत नही था। पहले खुद कुबूला था लेकिन फिर मोमबत्ती गैंग ,अलगाववादियों, और फर्जी बुद्धिजीवियों का समर्थन देखकर अपने कहे से पलट गये। संविधान संविधान की रट लगाने वालो ने संविधान

से खिलवाड़ करना शुरु कर दिया। अदालतें अपना समय बदलकर फांसी की सजा रोकने लगी। अभिनेता, साहित्यकार, छात्र, बुद्धिजीवी सभी अपनी फर्जी, खोखली और बनावटी विचारधारा के दिखावे में सच को झुठलाते रहे और आख़िरकार उन अपराधियों के प्रति सहानुभूति का वातावरण बना दिया गया। तीन आतंकी अब बाइज्जत बरी होकर वापस से विद्यालयों में छात्र की खाल ओढ़े बैठे है। बाकी दो को बस आजीवन कारावास की सजा हुई, और उसमे भी अभी सर्वोच्च अदालतों में देश के बड़े से बड़े और महंगे वकील उनके समर्थन में अर्जियां दे रहे है। अब बताओ मटुक आखिर इस समाज को हो क्या गया है? क्या इन्हें सच नजर नहीं आता? इनके लिये क्षण भर की ख्याति इतनी कीमती है जिसके लिये मानवता और देश दोनों का कोई मूल्य नहीं रह गया है?

यह तो मात्र एक उदाहरण है, ऐसे अनेक उदहारण है जो यह साबित करते है कि इस समाज की नींव खोखली हो चुकी है। जिन आदर्शों की स्थापना ईश्वर द्वारा की गयी थी वे आदर्श अब विलुप्त होने की कगार पर है। वातावरण कलुषित हो चुका है। समाज उपभोक्तावाद और भौतिक वाद के पीछे इतना पागल हो चुका है कि उसे सही और गलत से कोई लेना देना ही नहीं रहा है। गरीब अमीर को कोस रहा है, अमीर गरीब को नही देखना चाहता।

समाज की असमानता भयावहता की हद को छू रही है। जिनके हाथों में समाज की बागडोर है वे खुद भ्रष्ट है। नैतिकता तो केवल ग्रंथो में ही शेष रह गयी है। ब्लास्ट के कुछ दिनों बाद ही मुख्य आरोपी पकड़े गये, तुम चाहते तो स्वयं इनको दंडित कर सकते थे किन्तु कुछ चीजों के लिये शायद तुम्हारी संस्था ने कुछ हदें तय कर रखी है, और इसलिये तुमने कानून में विश्वास दिखाया, अपराधी पकड़े गये। तुम्हें पता है कि वे मानवता के लिये गंभीर खतरा है, कानून भी यह मानता है, लेकिन उन्हें फायदा मिलता है केवल एक पंथ विशेष का होने का।

नहीं.. नहीं! मैं किसी के पंथ पर ऊँगली नहीं उठाऊंगा क्योंकि मैं किसी पंथ को नहीं मानता, हर किसी ने अपने अपने ईश्वर चुन लिये है, जिन्हें कोई ईश्वर न मिला उन्होंने अपने ईश्वर खुद बना लिये, और इसमें हानि हुई मानवता की, मुख्य पंथ मानवता समाप्त हो गयी है, और छद्म पंथ अपने पैर पसारने लगे है।"

माया फिर खामोश हुआ, उसने अपनी अनियंत्रित साँसों को नियंत्रित किया।

“तुम सोच रहे होगे कि मैंने तुम्हें अब तक क्यों नही मारा? मैं अपने पिता की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के बजाय तुम्हें यह सब क्यों सुना रहा हूँ।” माया ने मटुक की आँखों में झाँका, मटुक की आँखों में अब केवल विवशता ही झलक रही थी।

“किसी ने कहा था ‘आँख के बदले आँख’ की भावना से एक दिन सारी दुनिया ही अंधी हो जायेगी और मैं इससे सहमत हूँ। आँख के बदले आँख से क्या होगा? मैं आंख के बदले सर में विश्वास करता हूँ, समस्या ही समाप्त। इससे पहले की तुम गलत आशय निकालो मैं समझा दू कि यहा सर से अर्थ था समस्या के समूल नाश से। मैंने कहा था सबने अपने अपने पंथ सुविधानुसार बना लिये, यहाँ गलत चीजो को भी मजहब के आवरण में सही साबित किया जाता रहा है। मंदिर के अपराधियों पर मुकदमे चले किन्तु इन्हें समर्थन प्राप्त हुआ, किसका समर्थन? उन लोगो का जो शान्ति का ढोंग करते है, जिनके अंदर इंसान की खाल में एक खूंखार वहशी जानवर हर समय बाहर आने को बेताब रहता है और जो सभ्यता की आड़ लेकर इस जानवर को नियंत्रण में रखे हुए है। वो अपने जैसे दूसरे जानवर को पहचानता है और उन्हें बचाता भी है, ये कौन लोग है जो इन वहशियों को मासूम बताते है? किसी ख़ास पंथ के? किसी पंथनिरपेक्ष कहलाई जाने वाली अवसरवादी जमात से? या इन मनुष्यों की खाल में छुपे भेडियों का नेतृत्व करते किसी राजनैतिक दल अथवा मंत्री से है? ये जनता के चुने हुए प्रवक्ता हैं, जो अपने स्वार्थ के लिये जनता का खून पीनेवाले पिशाचो की पैरवी करते है, क्योंकि वो किसी वोट बैंक से संबंधित है। इन सबका नतीजा क्या होता है? वे छूट जाते है, उन्हें वापस इस भीड़ में छोड़ दिया जाता है। क्योंकि उन्हें निर्दोष साबित कर दिया जाता है, अब वे फिर स्वतंत्र है किसी धार्मिक स्थल को निशाना बनाने के लिये और फिर किसी मासूम ‘दीक्षा’ का शिकार करने के लिये जिसकी किस्मत में ऐसी गलीज मौत नहीं थी। लेकिन वो उसी के लायक है क्योंकि यह उन्होंने चुना है उनके बनाये ईश्वर ने चुना है।”

दीक्षा का उल्लेख आते ही मटुक बुरी तरह से कसमसाया।

“तुम सब किसी ऐसी वस्तु की रक्षा कर रहे हो जो अपनी रक्षा करने का सामर्थ्य रखती है, यदि वह ईश्वरीय अंश हो तो। किन्तु तुम किसी जीती जागती इंसानियत की रक्षा नहीं करोगे जिसमे ईश्वर का जीवित अंश है, उस ब्लास्ट के जिम्मेदार तुम ही हो। हर उस हत्या के लिये तुम सब जिम्मेदार हो, जिसकी रक्षा करनी चाहिये आपने उसे हमेशा

नजरअंदाज किया ...'मानवता'। किन्तु इसमें भी तुम्हारा दोष नहीं है, इसके लिये यह मानवता स्वयं जिम्मेदार है। कुछ छात्र कहलाने वाले लोग, युवा पीढ़ी, देश विरोधी नारे लगाते है, देश तोड़ने की बात करते है। खुद दिन रात सुट्टा, गांजा, शराब, वासना की कीचड़ में फंसे बजबजा रहे है, किन्तु बात आदर्शो की करेंगे। ये युवा है, और इनकी गलतियों को गलत न कहकर इनका समर्थन किया जाता है, इन्हें बढ़ावा दिया जाता है। बारूद को थोडा थोडा इकट्ठा कर बम बनने का अवसर दिया जा रहा है, कल को यह बम किस पर फटेगा ? इस सड़ चुकी मानवता पर ही। उस मानवता पर जो अपने जबरदस्ती के लादे गये ईश्वरों और आदर्शो का बोझ कंधो पर ढोते ढोते हुए एक जर्जर खंडहर हो चुकी है। यह मानवता रूपी जर्जर इमारत इन धमाको से टूट कर बिखर जायेगी, रह जायेगा केवल मलबा, किसका मलबा? मनुष्यता का मलबा, पंथ के अवशेष, आदर्शो के बिखरे कांच के टुकड़े। अपनी अपनी मान्यताओं को जबरदस्ती लादा जा रहा है, देश के देश नर्क बन रहे है, लेकिन विचारधारा ने किसी का उत्थान नहीं किया उलटे मानवता पतन की ओर अग्रसर होती जा रही है। विचारधारा से लेकर आचरण तक दूषित हो चुका है, देशविरोधी होना संस्कृति हो चुकी है, मानवता विरोधी, नैतिकता विरोधी होना फैशन। आखिर इन सबका नतीजा क्या होगा कब अंत होगा? क्या यह मानवता रक्षा के लायक है?" कहते हुए माया ने मटुक के मुंह पर बंधा कपड़ा खींच दिया।

"तुम आखिर कहना क्या चाहते हो? तुम्हारे हिसाब से तो यह दुनिया अब रहने के लायक ही नही है। क्या तुम इसका समूल नाश चाहते हो?" मटुक उसकी बातों से उलझन में था। वह माया को अपनी आशा के विपरीत व्यवहार करते हुए देख कर अचंभित था।

"रीबूट! मैं नाश नही चाहता, मैं चाहता हूँ रीबूट। दोबारा शुरुवात चाहता हूँ, सोचो तुम्हारे या मेरे ईश्वर, या हम सभी के ईश्वर ने ऐसी कोई चीज क्यों भेजी यहाँ? उसका कोई ना कोई निमित्त तो होगा ही? तुमने कभी सोचा है यदि यह चीज ईश्वर ने मनुष्य जाति को एक वरदान स्वरूप दी हो तो? उन्होंने इसे ही पतन होती मानवता को रीबूट करने का जरिया बनाया हो तो? यदि ऐसा है तो तुम्हें नही लगता कि तुम स्वयं अपने ईश्वर के कार्य में बाधा बन रहे हो? उनके खिलाफ हो?" माया की आँखे किसी अजब से उत्साह से जगमगा रही थी।

"सोचो मटुक! तुम किसके लिये लड़ रहे हो? क्या होगा यदि तुम जिस विचारधारा के लिये लड़ रहे हो यदि वह विचारधारा ही गलत साबित हो जाये? ठीक है, अब मैं तर्क वितर्क में समय व्यर्थ नही करना चाहूँगा। मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि तुम मार्ग से भटके हुए हो। एक दिशाहीन उद्देश्य के पीछे भाग रहे हो जिसका कोई लाभ नही होने वाला। तुम लड़कर भी अकर्मण्य की स्थिति में हो क्योंकि तुम्हारे सदियों के प्रयासों और अनगिनत युद्धों से भी तनिक भी परिवर्तन नहीं हो रहा है। सामाजिक और वैश्विक स्थिति समय के साथ-साथ अवनति की ओर बढ़ती गयी और आगे भी बढ़ती जायेगी। तब क्या मूल्य रह गया तुम्हारे इस आजीवन तप का? संघर्ष का? अब समय है अपनी बातचीत को कुछ समय के लिये विराम देने का। अब मैं तुम्हें एक निर्णय करने का अवसर देना चाहता हूँ।" माया मटुक के नजदीक आया, उसके मुख पर एक विचित्र मुस्कान थी।

"कैसा निर्णय?" मटुक ने बिना किसी उत्साह के कहा।

माया अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और एक ताली बजाई। उसके ताली बजाते ही वह सम्पूर्ण कक्ष उजाले से भर उठा। कमरे में लाइट्स जल उठी, मटुक की आँखे इस तीव्र प्रकाश से चौंधिया गयी। जब वह देखने का अभ्यस्त हुआ तो उसने कमरे की दीवार से सटी कुर्सियों पर तीन व्यक्तियों को उसी हालत में बंधा पाया जिस हालत में मटुक स्वयं था। तीनो बंधको के चेहरे काले कपड़ों से ढंके हुए थे। माया उनके नजदीक जाकर खड़ा हो गया।

"तो अब तैयार हो जाओ मटुक। निर्णय लेने का क्षण आ गया है, यह तीन व्यक्ति जिन्हें तुम बंधे देख रहे हो, यह तुम्हारे लिये मेरी ओर से एक भेंट है।" कहते हुए माया ने बारी-बारी से तीनों के चेहरों से कपड़े हटा दिये। उन तीनो के मुंह में कपड़ा ठुंसा हुआ था।

"गौर से देखो इन्हें, पहचाना? चलो मैं बता देता हूँ। यह तीनों तुम्हारी बेटी के दोषी है। यह वे तीन छात्र है जिन्हें गिरफ्तार किया गया था किन्तु प्रमाण ना होने और राजनैतिक कारणों की वजह से छोड़ दिया गया था।" माया मुस्कुराया।

मटुक उन्हें देखकर क्रोध से पागल हो गया। उसकी नसों में मानों उबाल सा फूटने लगा। वह अपने बंधनों इतनी बुरी तरह झकझोर रहा था मानों कुर्सी के हत्थे उखाड़ ही देगा।

“सब्र करो। अपनी शक्ति बचा कर रखो। मैं तुम्हें बंधन मुक्त कर रहा हूँ। तुम्हें अपना प्रतिशोध लेने का अवसर दे रहा हूँ, जो तुम्हें तुम्हारी संस्था, यह समाज और यह कानून कभी नहीं देता। मैं किसी प्रकार का दबाव नही बनाना चाहता किन्तु स्पष्ट कर दू, के इनसे प्रतिशोध लेते ही तुम अपनी विचारधारा से विमुख हो जाओगे। क्या तुम्हें यह स्वीकार होगा?”

“मुझे सब स्वीकार है, बस मेरे बंधन खोल दो।” मटुक फुंफकार रहा था।

माया अब मटुक के बंधन खोल रहा था। मटुक की आँखों में प्रतिशोध स्पष्ट झलक रहा था, तीनों व्यक्ति उसके भाव देख कर थरथर कांप रहे थे।

मटुक के बंधन खुलते ही वह उठ खड़ा हुआ। अपनी कमजोरी अपनी पीड़ा को वह एकदम से भूल गया था। उसने माया की ओर दृष्टि डाली, माया अपने हाथ बांधे केवल मुस्कुरा रहा था।

“तुम अपना निर्णय लेने के लिये स्वतंत्र हो मटुक। उस मेज पर टॉर्चर के लिये हर तरह का उपयुक्त साधन उपलब्ध है। अपनी पसंद के अनुसार हथियार चुन लो और अपनी बेटी की वीभत्स मृत्यु का प्रतिशोध लो। स्मरण रहे मटुक, तुम्हारी बेटी की तड़प, उसकी असहनीय पीड़ा, उसकी मासूम उम्र और वीभत्स मृत्यु। यह सब स्मरण रहे।” माया ने कठोर स्वर में कहा। मटुक ने हथियारों की मेज की ओर उचटती हुई दृष्टि डाली।

“मुझे हथियारों की आवश्यकता नही है, इनकी बोटियाँ नोचने के लिये मेरे पंजे ही पर्याप्त है।” मटुक के मुख पर विक्षिप्त भाव दिखायी देने लगे थे। वह वीभत्स रूप से गुर्राते हुए उन तीनों की ओर बढ़ा। तीनों के चेहरों पर दहशत नाच रही थी।

कुछ ही देर में कमरे की दीवारों पर खून के अनगिनत छींटे दिखायी देने लगे थे। सम्पूर्ण फर्श पर मानव मांस के अवशेष बिखरने लगे। दहला देने वाली कर्णभेदी मर्मान्तिक चीखों से वह कमरा गूंज रहा था। मटुक पूर्ण क्रूरता दिखा रहा था। माया मुस्कुराते हुए अपनी फोल्डिंग चेयर पर पुन: जा बैठा। उसके चेहरे पर एक विचित्र मुस्कान थी। रक्त के छींटे उसके सफ़ेद शर्ट को भिगो रहे थे। सम्पूर्ण कमरें में मानो रक्त की वर्षा हो रही थी। उस वर्षा में माया अपनी कुर्सी पर बैठा भीग रहा था। वह उस दरिंदगी का पूर्ण आनंद ले रहा था। उसने मटुक के भीतर के राक्षस को बाहर आने पर विवश कर दिया था। यह माया की जीत थी और मटुक की

हार। मटुक हार जीत से परे जा चुका था, उसकी संवेदना, उसकी बुद्धि, उसकी विचारक्षमता एकदम लुप्त हो चुकी थी।

***

वर्तमान समय

मोक्ष

“तुम मुझे किस उद्देश्य हेतु यहाँ लाये हो ?” एक घरघराता स्वर गूँजा। मानो किसी की कंठनलिका बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुकी हों और उसकी स्वर ग्रन्थियां अपनी आखिरी नसों पर झूल रही हों। कमरे में हल्का सा प्रकाश था। माया इस समय अपने चिरपरिचित सूट में नही था, वह एक सफेद शर्ट और काली चुस्त पैंट में चहलकदमी कर रहा था।

“मैं वही बताने के लिये तुम्हें यहाँ लाया हूँ ‘अश्वत्थामा’।” माया ने कमरे के अँधेरे कोने की ओर देखा जहाँ से घरघराता सा स्वर सुनाई दे रहा था। उस हिस्से में प्रकाश व्यवस्था हल्की थी, जिस कारण उस स्वर का स्वामी स्पष्ट दिखायी नही दे रहा था। वह जिसे माया अश्वत्थामा कहकर संबोधित कर रहा था। उसने अपने शरीर पर वस्त्र के नाम पर एक काला लबादा ओढ़ रखा था। अश्वत्थामा का मुख अँधेरे और मुंह पर लपेटे लबादे के कारण अब भी स्पष्ट दिखायी नही दे रहा था। उसके हाथों के पंजे दिखायी दे रहे थे, जिनके नाख़ून काफी लम्बे और पत्थर की भाँति सख्त थे। अंगुलियाँ सामान्य से अधिक लम्बी और नुकीली थी। पंजो की त्वचा अत्यंत कुरूप एवं तैलीय सी प्रतीत हो रही थी।

“अश्वत्थामा ! तुम हजारों वर्षो से जीवनरुपी इस श्राप को झेल रहे हो। तुम्हारी यह जीर्ण अवस्था, शरीर असहनीय जख्मों की पीड़ा से भरा पड़ा है। कोई भी अंग शेष नही जहाँ से पीड़ा ना उठती हो, जख्म ना बहते हो। रक्त मानो शरीर से सूख चुका है और उसके जगह इस सड़ांध ने ले ली। इस भयंकर विद्रूप शरीर रुपी श्राप के साथ तो एक क्षण भी जीवित रहने की कल्पना मात्र से मैं सिहर उठता हूँ। तुम किस प्रकार हजारों वर्षो से यह पीड़ा, यह असहनीय कष्ट सह रहे हो, यह सोचकर ही मेरी आत्मा कांप जाती है अश्वत्थामा।” माया के चेहरे पर सहनुभूति के भाव थे, और उसका चेहरा बता रहा था कि यह भाव बनावटी नही थे।

“यह मेरे कर्मों का फल है, मैं अपने कुकर्मों के दण्ड भोग रहा हूँ।” अश्वत्थामा अपनी घरघराती आवाज में गुर्रा उठा। इसी के साथ वह प्रकाश में आया। उसके सिर के बाल एकदूसरे से लिपटकर किसी वृक्ष की जड़ जैसे सख्त हो चुके थे। उसकी सख्त जटायें उसके विशालकाय कंधो पर फैली हुई थी। लबादे के कारण उसके शरीर का आकार भले स्पष्ट ना हो रहा हो किन्तु वह सामान्य मनुष्य से अधिक चौड़ा प्रतीत हो

रहा था। प्रकाश में उसका मुख झलक रहा था। नाक से नीचे का भाग अब भी लबादे में ढंका हुआ था। उसके माथे पर एक गहरा घाव था, जिसके आसपास की त्वचा पीली पड़ चुकी थी, और मांस तक स्पष्ट दिखायी दे रहा था। उसमे से रक्त रिस रहा था किन्तु रक्त का वर्ण भी मटमैला सा था। उसके चेहरे की रंगत बैंगनी सी प्रतीत हो रही थी। आँखे भयंकर रूप से लाल एवं तेजहीन थी। त्वचा मानो पूर्णतया सूखकर चेहरे की हड्डियों से चिपकी हुई थी, जो उसे बेहद भयानक एवं ड़रावना स्वरूप प्रदान कर रहे थे। उसके शरीर से एक विचित्र सी गंध आ रही थी। किन्तु माया उस गंध से तनिक भी विचलित दिखायी नही दे रहा था।

“बस! बहुत हुआ। तुम एक सम्पूर्ण युग से इस शाप को झेल रहे हो, किसी भी पाप के लिये इतनी सजा क्या न्यायसंगत है ? तुम्हें नही लगता अब पर्याप्त हो चुका ?” माया बोला।

“मैं कलियुग के अंत तक इस दण्ड को भोगने के लिये विवश हूँ।” अश्वत्थामा गुर्राया। उसके स्वर में निराशा और क्रोध दोनों महसूस किये जा सकते थे।

“अगर मैं कहूँ कि मैं तुम्हें इस श्राप से मुक्ति दिलवा सकता हूँ तो ?” माया की बात भी पूरी नही हुई थी कि अश्वत्थामा आश्चर्यजनक गति से माया की ओर बढ़ा और उसे गर्दन से पकड़ कर हवा में उठा दिया। माया ने उसकी कलाई थाम ली।

“तू मुझे शाप से मुक्ति दिलवाएगा ? तू एक दानव? तुझमे इतना सामर्थ्य है कि तू श्री कृष्ण के दिये शाप को झुठला सकता है ? यदि मैं चाहूँ तो इसी क्षण तेरे शीश को तेरे धड़ से अलग कर दूँ और तू मुझे रोक भी नही पायेगा। स्वयं को बचाने का सामर्थ्य नही है, और मुझे शाप से मुक्ति प्रदान करेगा ? मेरे साथ परिहास करेगा तू ?” अश्वत्थामा क्रोध से कांप रहा था। माया की गर्दन मानो किसी शक्तिशाली अजगर की कुंड़ली में जकड़ी हुई सी प्रतीत हो रही थी, उसकी आँखे बाहर आने को तत्पर थी।

“म ...मेरी .ब.. बात सुनो ....” माया ने बड़ी मुश्किल से यही शब्द कहे। अश्वत्थामा ने उसकी दशा देखकर उसे किसी खिलौने की भांति दीवार पर उछाल फेंका। माया दीवार से जा लड़ा, लेकिन फिर स्वयं को संभालते हुए उठ खड़ा हुआ। वह अपनी गर्दन को सहलाते हुए खांस रहा था।

“मैं श्री कृष्ण के शाप को समाप्त करने का सामर्थ्य नही रखता। किन्तु तुम्हारा शाप कलियुग की समाप्ति से जुड़ा है और मैं कलियुग की समाप्ति की बात कर रहा हूँ। मैं इस कलियुग को समाप्त कर सकता हूँ। एक योजना है मेरे पास।” माया की आँखों में एक कुटिल चमक स्पष्ट दिखायी दे रही थी।

“कलियुग की समाप्ति ? उसके लिये तो अब भी हजारों वर्ष शेष है दानव।” अश्वत्थामा पुनः गुर्राया।

“हम शांति से बात करें ? पहले मेरी योजना सुनो। यदि तार्किक ना लगे और कोई कमी लगे तो बेझिझक तुम मुझे समाप्त कर सकते हो।” माया अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

“सुनाओ।” अश्वत्थामा ने केवल इतना ही कहा।

***

“कलियुग की अंतिम अवस्था क्या है ? चार युग हुए थे सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और वर्तमान में जो है वह कलियुग।”

“मुझे ज्ञान देने का प्रयास ना करो माया। मुझे स्पष्ट शब्दों में अपना उद्देश्य बताओ।” अश्वत्थामा ने माया को बीच में ही टोक दिया। इस समय वह माया के सामने ही एक चेयर पर बेपरवाही से बैठा हुआ था।

“युगों तक प्रतीक्षा की है तुमने। कुछ पल और संयम दिखा दो, मेरी बात पूर्ण होते होते संक्षेप में तुम सब समझ जाओगे जो मैं कहना चाहता हूँ।” माया ने अश्वत्थामा को अधीर होते देख विनती के भाव से कहा। अश्वत्थामा ने कुछ नही कहा और कुर्सी की पीठ पर आराम से पसर गया। यह उसकी हामी थी।

“सतयुग में सत्य प्रबल था, त्रेता में आदर्श की स्थापना हुई, द्वापर कर्म और धर्म प्रधान रहा, इन तीनों कालों में मनुष्य जीवन के आदर्श अपनी उच्चतम सीमा में थे। धर्म, कर्म, मनुष्यता, भक्ति, श्रद्धा, इत्यादि गुणों से सम्पूर्ण मनुष्यजाति अपना उत्कर्ष कर रही थी। किन्तु हर काल में कुछ अपवाद हुए, सत्य के विरुद्ध असत्य, धर्म के विरुद्ध अधर्म का युद्ध हर काल में होता आया है, और सदैव धर्म की ही विजय हुई है। महाभारत युद्ध की समाप्ति के पश्चात ही कलियुग ने अपनी जड़ें जमा ली थी, और पहले ही बताया गया था कि कलियुग इन तीनों युगों से विपरीत होगा। इस युग में मानवता का मूल्य समाप्त हो जायेगा, आदर्शों पर चलने वालों को समाज मूर्ख कहेगा, भक्ति केवल स्वार्थ के लिये सीमित हो जायेगी, ईश्वर को भुलाकर मनुष्य स्वयं ईश्वर बन बैठेगा, असत्य और अधर्म प्रबल

होगा और धर्म को मानने वालों को कष्ट होंगे। आसुरी शक्तियाँ अपने चरम पर होंगी। काम, क्रोध, मद, मत्सर, वासना ही मनुष्य जीवन रह जायेगा। सत्ता, संपत्ति और वासना हेतु ही सारा संसार युद्ध करेगा और उसकी प्राप्ति के पश्चात भी उसकी क्षुधा नही मिटेगी। आसुरी शक्तियों के मनुष्य पर बढ़ते प्रभाव और मनुष्य के ईश्वर में घटते विश्वास के कारण ईश्वर मनुष्य से मुंह मोड़ लेगा क्योंकि अब मनुष्य खुद को ही ईश्वर के समतुल्य समझ कर उसके ही अस्तित्व को नकारना आरंभ कर देगा, उसे किसी ईश्वर की आवश्यकता ही नहीं रह जायेगी। हजारों पंथ होंगे, हर किसी के अलग अलग ईश्वर, अलग अलग सम्प्रदाय होंगे, मजहब के नाम पर इस विश्व को रक्तपात की एक कभी ना समाप्त होने वाली हिंसा में झोंक दिया जायेगा और ऐसा हो रहा है। सारांश में कहूँ तो पृथ्वी पर इतना पाप होगा कि पृथ्वी खुद इस भार से कांप जायेगी और तब भगवान विष्णु के दसवें अवतार कल्कि का अवतरण होगा, जो संसार को पाप मुक्त करके इस कलियुग को समाप्त कर देंगे और युग चक्र पुनः आरंभ होगा, पुनः सत्य और धर्म प्रबल होगा, सत्य, धर्म और आदर्श के प्रबल होते ही पाप समाप्त हो जायेगा और पाप के समाप्त होते ही कलियुग भी समाप्त हो जायेगा जिसका आधार ही पाप है।" माया एक क्षण के लिये शांत हुआ और उसने अश्वत्थामा की ओर देखा।

"बोलते जाओ।" अश्वत्थामा ने आदेश दिया।

"और यदि गणना पर विश्वास करें तो अभी भी कल्कि अवतार के लिये हजारों वर्ष शेष है। इसका अर्थ यह है कि अभी तुम्हें और हजारों वर्ष तक इस शरीर रूपी दण्ड को झेलना है। यदि मैं यह कहूँ कि इस धरती से मैं हजारों जातियां, हजारों पंथ, लाखो मत, अनेकों विवाद, करोड़ो ईश्वरों और उनके अनुयायियों को एक ही मत पर एकत्रित कर दूंगा, एक ही पंथ की स्थापना करूंगा, एक नव निर्माण का आरंभ करूंगा, एक आदर्श नियमावली होगी जिसका सारा विश्व एक मत से पालन करेगा और उस नियमावली में किसी भी प्रकार के पाप के लिये कोई स्थान नही होगा, एक आदर्श नागरिक संहिता का निर्माण होगा जिसे सब मानेंगे, तब ? क्या तब अपने आप पाप समाप्त नही हो जायेगा ? मान लो समाप्त होना संभव ही नही है किन्तु पापी, अधर्मी, कलुषित विचार इत्यादि हर काल में रहे हैं, कोई काल ऐसा नही जहाँ इनका अस्तित्व नहीं रहा हो। वैसे ही यह इस काल में भी रहेगा किन्तु फिर उसका प्रभाव कम होगा यदि आदर्श की तुलना के रूप में देखे तो। तब क्या होगा ? कलियुग का आधार ही है

अधर्म और पाप, यदि मैं वही समाप्त कर दूँ तो इसका अर्थ तो यही हुआ ना कि मैं इस सम्पूर्ण कलियुग को ही उसके निर्धारित समय से पूर्व ही समाप्त कर दूंगा ?” माया के मुख पर अब उत्साह झलक रहा था।

“तुम कलियुग को, अर्थात एक सम्पूर्ण युग का नाश करने की क्षमता रखते हो ?” कहते हुए अश्वत्थामा भयंकर रूप से अट्टहास कर उठा।

“नही ! मैं नही कर सकता। ‘तांडव’ तो कर ही सकता है न ?” माया ने शांत स्वर में कहा तो अश्वत्थामा का अट्टहास रुक गया।

“ तांडव? महादेव का ‘तांडव’ ?”

“हां ! वे तो संहारक है, विष्णु पालनकर्ता, ब्रम्हा सृजनकर्ता तो महादेव संहारक है इस सृष्टि के। उनके तांडव से ही सृष्टि का स्वरूप बनता बिगड़ता है। क्या हो यदि उस तांडव की शक्ति हमारे पास हो ? हम कुछ भी समाप्त कर सकते हैं। है न ?” माया मुस्कुराया।

“मूर्ख दानव ! महादेव, महारुद्र, महाकाल की तांडव ऊर्जा तुझ जैसे तुच्छ दानव के संकेत पर चलेगी ? तूझे लगता है तुझमे इतना सामर्थ्य है कि तू तांडव करेगा ? तुझमे इतनी क्षमता है ? तेरी समस्त दानव जाति में इतनी क्षमता है जो तुम तांडव की ऊर्जा का अंश भी संभाल सको ?” अश्वत्थामा ने क्रोध में चेयर उठा कर कमरे की दीवार पर फेंक मारी जिससे चेयर के टुकड़े टुकड़े हो गये।

“तुम्हारे कहे से मैं सहमत हूँ अश्वत्थामा। मैं जानता हूँ मैं तांडव जैसी किसी ऊर्जा को सिद्ध नही कर सकता, यह केवल महादेव के ही वश में है। किन्तु तुम अश्वत्थामा, तुम में वह क्षमता है ? तुम्हारे अंदर महादेव का ही अंश है, उन्ही के क्रोध की ऊर्जा है। इसलिये तुम उस ऊर्जा को धारण कर सकते हो ?” माया ने अपनी चेयर से खड़े होते हुए कहा। अश्वत्थामा शांत रहा, कुछ क्षण तक दोनों के मध्य चुप्पी छाई रही।

“चलो तुम्हारे कथन पर विश्वास कर लेता हूँ, महादेव के एक अंश के होने से भी सहमत हूँ। किन्तु इसका अर्थ यह नही कि मुझमें तांडव जैसी कोई क्षमता है या ऐसी किसी क्षमता को मैंने आत्मसात किया है।” अश्वत्थामा ने इस बार थोड़े शांत स्वर में कहा। वह माया से थोडा प्रभावित लग रहा था।

“यदि मैं तुम्हें तांडव ऊर्जा प्राप्त करने में सहायता करूँ तो?” माया ने अत्याधिक उत्साहित होते हुए कहा।

“यह असंभव है।”

“संभव असंभव सब मुझ पर छोड़ दो, केवल इतना बताओ यदि मैं तुम्हें उस ऊर्जा तक पहुंचा दूँ तो क्या तुम मेरी सहायता करोगे ? वैसे वो तो तुम्हें करनी ही होगी। क्योंकि मेरी योजनानुसार ही तांडव और उस ऊर्जा को कार्यान्वित करने का लाभ होना है, मुझमे इतनी क्षमता नही है कि मैं उस ऊर्जा को संभाल सकूँ, इसके लिये मुझे तुम्हारी आवश्यकता है। यूँ समझों मेरे पास परमाणु ऊर्जा है और तुम उसे संभालने और परिष्कृत करने वाले रिएक्टर हो ? रिएक्टर से मेरा मतलब था ....”

“रहने दो। मैं इसका अर्थ जानता हूँ, हजारों वर्षो से अस्तित्व में हूँ इसलिये मैं इन सब चीजों के बारे में जानता हूँ। मुझे एकदम महाभारत काल का ही मत समझ लो। यदि तुम उस ऊर्जा को मेरे द्वारा प्रयोग करना चाहते हो, और यदि तुम्हारी बनाई हुई योजनानुसार कलियुग की समाप्ति हो तो मुझे कोई आपत्ति नही है। किन्तु क्या इसमें किसी प्रकार की जीवहानि होनी है ?” अश्वत्थामा ने प्रश्न किया।

“केवल उनकी जिनको पाप की आदत पड़ चुकी है। केवल उनका ही संहार होगा जो स्वयं को नही बदलेंगे और जो एक आदर्श नागरिक और सभ्यता के रूप में नही बदलेंगे और ऐसे लोगों की मृत्यु से तुम्हे कोई फर्क भी नही पड़ने वाला, जंगलों में उन चार अपराधियों और मेरे एजेंट्स को मारने से तुम्हे कोई परहेज नही रहा “ माया ने कहा।

“किन्तु यह संख्या तो फिर अनगिनत होगी ? अनगिनत मनुष्यों के प्राण हरने होंगे ? मैं एक पाप कर चुका हूँ, जिसका दण्ड आजतक भुगत रहा हूँ ? क्या तुम चाहते हो मैं पुन: उससे भी कई गुना अधिक पाप करूँ?” अश्वत्थामा के मन में शंका थी, हिचक थी।

“अश्वत्थामा तुमने ब्रम्हास्त्र आवाहन किया था। अर्जुन की पुत्रवधू के गर्भ पर ब्रम्हास्त्र चलाया था। एक अजन्मे निष्पाप जीव का प्राण लेने का प्रयत्न किया था, जिस कारण तुम्हें युगों तक शापित जीवन सहने की शिक्षा मिली थी। आज के परिवेश में यदि तुम देखो तो तुम्हारे पाप से भी लाखो गुना भयंकर पाप इस धरती पर हो रहे है, जो पाप उस समय अक्षम्य था वही पाप आजकल के अभिभावक भ्रूण हत्या के रूप में करते है, जो कि एकदम सामान्य है। क्या तुम्हें नही लगता के ऐसे समाज में जो ऐसे वीभत्स पाप को इतने सामान्य रूप से लेता है, जिसके लिये तुम्हें ईश्वर ने अनंतकाल तक मृत्यु से भयंकर जीवन का अभिशाप दिया वह समाज तुमसे भी अधिक भयंकर दण्ड का अधिकारी है ? अश्वत्थामा

तुम्हें सबसे पहले इस समाज को जानना होगा कि क्यों इसका बदलना आवश्यक है।” माया ने उसे समझाने का प्रयास किया।

“मुझे उस ऊर्जा के स्त्रोत को देखना है।” अश्वत्थामा ने सपाट स्वर में कहा।

“मेरे साथ आओ।” मुस्कुराते हुए माया अपने कमरे से बाहर निकल गया, अश्वत्थामा किसी परछाई की ही भाँति माया के द्वार से निकलने के पहले ही उसके सामने आ खड़ा हुआ। माया को अब इन सबकी आदत सी हो गयी थी इसलिये वह किंचित भी अचंभित नही हुआ था। माया उस गलियारे के अंतिम छोर तक गया और वहाँ लगी एक दीवार पर अपनी उंगलियों को रख दिया। कुछ ही क्षणों में दीवार अपने स्थान से सरक गयी। दीवार के पीछे एक लिफ्ट थी, माया ने अश्वत्थामा की ओर बिना देखे लिफ्ट में प्रवेश किया, अश्वत्थामा ने भी उसका अनुसरण किया। अश्वत्थामा और माया को लिये लिफ्ट नीचे खिसक रही थी। कुछ ही मिनटों में लिफ्ट का दरवाजा खुला और सामने एक बड़ा सा अत्याधुनिक यंत्रो से सुसज्जित हॉल दिखा। अश्वत्थामा कुछ क्षणों के लिये उस अत्याधुनिक कमरे को देख कर आश्चर्यचकित रह गया। वहाँ अनेक छोटी-बड़ी कम्प्यूटर स्क्रीन्स, यंत्र, कवच, इत्यादि अलग अलग विभागों में बाँट कर रखे हुए थे। उस समय हॉल में लगभग तीस व्यक्ति थे, जो अपने अलग अलग कार्यो में व्यस्त थे। अश्वत्थामा खामोशी से वह सब देखता रहा। वह एक कार्पोरेट हेड ऑफिस कम किसी अत्याधुनिक वैज्ञानिक प्रयोगशाला की इमारत ज्यादा प्रतीत हो रही थी।

“यह हमारा हेडक्वार्टर है अश्वत्थामा, हेडक्वार्टर से मेरा मतलब ....”

“मुख्यालय।” अश्वत्थामा ने सपाट स्वर में कहा, माया को पुन: अपनी गलती का एहसास हुआ। वह अब तक यह समझ नही पा रहा था कि वह उस व्यक्ति के सामने खड़ा है जिसने युगों से इस विश्व के हर बदलाव को देखा, समझा और जाना है।

“बिलकुल सही कहा। यहाँ से देश भर में फैले अपने एजेंट्स से हम सम्पर्क में रहते है। हमारे एजेंट्स में मुख्यतया दानव, राक्षस जैसी जातियां है, यहाँ से हम अपने रिफ़ॉर्मर्स से भी सम्पर्क में रहते है और उन्हें नियंत्रित करते है।” माया ने संक्षेप में समझाने का प्रयास किया।

“दानव, राक्षस, दैत्य तो समझ गया किन्तु रिफ़ॉर्मर्स ?” अश्वत्थामा ने प्रश्न किया। मुख्यालय में उपस्थित एजेंट्स ने माया के साथ उपस्थित उस भयंकर व्यक्तित्व वाले व्यक्ति को देखा और अब वह आकर्षण का

केंद्र था। अश्वत्थामा को महसूस हो रहा था कि वहाँ उपस्थित हर आँख केवल उसे घूर रही है। वैसे इसमें अश्वत्थामा के विचित्र से पहनावे और भयंकर रूप का भी योगदान था। अश्वत्थामा अब अँधेरे कमरे से एक चकाचौंध भरे मुख्यालय में था जहाँ उसका रूप पूर्णतया दिखायी दे रहा था। मात्र मुख अब तक उस लबादे से ढंका होने के कारण दिखायी नही दे रहा था। अश्वत्थामा के पैने और लम्बे धारदार नाख़ून, उसकी असामान्य रूप से बढ़ी हुई उंगलियाँ। रक्त की भाँति सुर्ख आँखे, बैंगनी रंगत ली हुई स्याह और कुरूप त्वचा। लकड़ी की तरह सख्त हो चुके केशों की जटा उसे किसी भयंकर औघड़ सा स्वरूप प्रदान करती थी। किन्तु वह औघड़ से भी भयंकर किसी जीव की भाँति ही दिखायी दे रहा था, उसके उस रूप से एक दैत्य भी घबरा जाये। माया ने एजेंट्स को संकेत किया और सभी घूरना बंद कर फौरन अपने कार्यों में व्यस्त हो गये।

"तुमने मेरे प्रश्न का उत्तर नही दिया माया।" अश्वत्थामा ने पूछा। माया उसे साथ लिये एक दूसरे कमरे की ओर बढ़ गया। अश्वत्थामा उस पूरी इमारत का अवलोकन कर रहा था।

"रिफ़ॉर्मर्स शुद्ध दानव, या दैत्यों की प्रजाति को कहते हैं। ये शुद्ध है, इनमे किसी भी प्रकार की मिलावट नही है।"

"स्पष्ट शब्दों में कहो।"

"देखो ! युगों से दानव और अन्य जातियां मानवों से छुपती आ रही है, त्रेतायुग में रावण के वध और रक्षा दल के सुबाहु द्वारा छेड़े गये दैत्य विरोधी अभियान के फलस्वरूप राक्षस दल के संस्थापक भद्रक ने मनुष्यों से गुप्त रूप से अपनी एक अलग दानव सभ्यता की नींव रखी। युगांतर में उस संस्था के अस्तित्व पर संकट आया तो उस संस्था ने एक स्थान पर रहने के बजाय विश्व के अनेक भागों में विस्तार करने का निर्णय लिया। द्वापर में महाभारत युद्ध के पश्चात भीषण हानि हुई थी। इससे सम्पूर्ण युग बदल गया था। सारी अन्य जातियों ने धर्म की विजय के पश्चात धर्म से ही किनारा कर लिया और सभी विश्व के अलग अलग हिस्सों में जा फैले, धर्म से रुष्ट हुए इन जातियों ने अपने ही मतानुसार अलग अलग मत सम्प्रदाय और पन्थों का निर्माण किया। उनके समक्ष केवल एक ही शत्रु था। वह पंथ जिसने उनका नाश किया वे उस पंथ के विरुद्ध समय समय पर लामबंद होते रहे। इसी मध्य दानव, दैत्य, एव राक्षस जातियों ने अपने चिरपरिचित रास्ते को छोड़ कर नई रणनीति अपनायी। वे अनेक पंथ एवं अनेकों ईश्वरों को मानने लगे। अनेक मतों का प्रचार करने लगे। अब वे

विचारों द्वारा अपने एक अलग सृष्टि का निर्माण कर रहे थे। जिसके लिये वे गुप्त रूप से मनुष्यों के मध्य रहने लगे। घुलने मिलने लगे।

मनुष्यों एवं अन्य जातियों के संसर्ग में आने के फलस्वरूप मिश्रित जातियों का निर्माण होने लगा। धीरे धीरे ये सभी अपने मूल उद्देश्य को भूलने लगे और समाज में समान रूप से रहने लगे। किन्तु अभी भी अनेक जातियां ऐसी थी जो मिश्रित होने के पश्चात भी अपने मूल उद्देश्य पर कायम थी और उनका मूल उद्देश्य था इस समाज में मनुष्यों से ऊपर उठकर स्वयं की सत्ता प्रस्थापित करना, ताकि युगों से हुए भेदभाव का अंत किया जा सके।

भद्रक द्वारा स्थापित राक्षस दल के मूल सदस्य अब भी अपने उद्दिष्ट के प्रति जागरूक थे। वे संसार के हर स्थान पर अपना प्रभुत्व जमा चुके थे। उन्हें उस महाशक्ति की खोज थी जिसकी सहायता से वे इस संसार पर अपनी सत्ता प्रस्थापित कर सकते थे और वह महाशक्ति थी महादेव की प्रलय ऊर्जा 'तांडव'। उस प्रलय ऊर्जा का एक अंश इस पृथ्वी पर था, जिसकी रक्षा सुबाहु द्वारा स्थापित रक्षा दल कर रहे थे। वे भी दानवों की भाँति ही हजारों वर्षों से गुप्त रूप से अपना अस्तित्व बनाये हुए है।" माया एक क्षण को द्वार खोलने के लिये रुका।

"किन्तु इसमें रिफ़ॉर्मर्स का तो उल्लेख भी नही हुआ।" अश्वत्थामा खीज उठा।

"मैंने कहा ना, हजारों वर्षो में दानव जातियों ने अन्य जातियों से मेल करके हाइब्रिड़ जातियां अर्थात संकरित जातियों का निर्माण किया। इन संकरित जातियों से उत्पन्न हुए जीव ना तो पूर्णत दानव थे और ना ही पूर्णत मनुष्य। इनमे दोनों में से किसी एक जाति के गुणों का प्रभुत्व अधिक होता था। मानव गुणों वाली जातियों ने भद्रक द्वारा स्थापित राक्षस दल के विचारों को नकार दिया और वह समाज की मुख्यधारा का हिस्सा बन कर रह गयी। उनमे से कईयों के वंशजो को तो यह भी ज्ञात नही कि वे संकरित है, अथवा में मनुष्य नही है।

किन्तु जिन वंशजो में दानव गुणों का वर्चस्व रहा वे ही असली विरासत संभाल रहे है। दानव गुणों के प्रभाव वाली जातियों ने राक्षस दल की संहिता का पालन किया और समाज में रहते हुए भी वे इसके प्रति वफादार रहे। इन्ही सबके बीच आते है वे जो कभी किसी अन्य जाति के सम्पर्क में आये ही नहीं। सीधे शब्दों में कहें तो इन्होने केवल अपनी ही

जातियों में मेल किया और वही अपना वंश बढ़ाया। यह असल दानव है, शुद्ध रक्त वाले दानव। यह रूपान्तर कर सकते है।

हर शुद्ध दानव की अपनी एक मनुष्य छवि है, वह उसी छवि में रह सकता है, वही उसका स्वरूप है किन्तु समय पड़ने पर वह अपने असली दानव स्वरूप में आ सकता है। इन्ही को हम रिफ़ॉर्मर्स कहते है।” माया ने मुस्कुराते हुए द्वार खोला।

“और निस्संदेह तुम भी इन्ही की श्रेणी में आते हो। किन्तु मुझे यह समझ में नही आता कि महादेव की तांडव ऊर्जा कोई वस्तु तो है नही जिसे प्राप्त किया जा सके तो फिर तुम उस ऊर्जा की कल्पना भी कैसे कर सकते हो ?……………….” कहते हुए अश्वत्थामा का मुख खुला का खुला रह गया। उसका सम्पूर्ण शरीर एकाएक हरे एवं पीले रंग के प्रकाश में नहा सा गया।

वह एक अत्याधुनिक प्रयोगशाला थी, जो किसी विशेष प्रकार से बनाई गयी थी। उस कमरे के मध्य में कांच की मोटी दीवार के पार वह विशालकाय शिवलिंग स्थापित था। कांच की दीवार में निरंतर पानी बरस रहा था जो उस शिवलिंग का अभिषेक कर रहा था। उस विचित्र से शिवलिंग से ही वह हरा और पीला प्रकाश प्रस्फुटित हो रहा था, जो किसी विकिरण का भास दे रहा था।

“अश्वत्थामा ! मैं उस ऊर्जा की कल्पना ही नही कर रहा, बल्कि वह प्रलय ऊर्जा मेरे सामने है, अपने ठोस स्वरूप में। इस शक्ति पुंज के रूप मे, जिसे हमने रक्षा दल के शक्ति मठ से प्राप्त किया है। यूँ समझो यह एक आणविक ऊर्जा है और तुम हो इसके रिएक्टर, जिसके मेल से मैं बनाऊंगा ऊर्जा रूपी वह परमाणु बम जो जिस जाति के हाथ में होगा उस जाति को विश्व का सम्राट बना देगा। विश्व उसके कथनानुसार चलने को विवश हो जाये क्योंकि तब वह सर्वशक्तिमान प्रजाति होगी। क्योंकि विनाश की ऊर्जा उसके साथ होगी।

वे विनाशक होंगे इस सम्पूर्ण जगत में व्याप्त भयंकर असमानता और लालच का। वे नये नियमों को रचेंगे एक नवीन सभ्यता की रचना करेंगे जो केवल आदर्शों पर चलेगी जहाँ जाति, प्रजाति और मजहब के नाम का कोई भेदभाव नही होगा। जहां सभी प्रजातियाँ एकसूत्र में बंधी होगी और समान रूप से रहेगी। अश्वत्थामा महसूस करो इस ऊर्जा को, देखो यह ऊर्जा तुम्हें पहचान रही है, तुम्हारे अंदर स्थित रुद्र का अंश इस ऊर्जा को ग्रहण करने हेतु तत्पर है और एक तुम ही हो जो इस ऊर्जा

को नियंत्रित कर सकते हो। कलियुग की समाप्ति अब तुम्हारे ही हाथों होनी है अश्वत्थामा, अब हमें किसी अवतार के लिये हजारों वर्षों तक की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नही है। मैं अपने सामने तुम्हारे रूप में एक अवतार देख रहा हूँ।" माया के स्वर में उत्तेजना और आँखों में एक भीषण चमक थी और अब वही चमक अश्वत्थामा के मुख पर थी। उसने अपने चेहरे से लबादा हटाया और ऊर्जा को महसूस करने लगा। उसके मुख पर विचित्र से भाव थे। वह अट्टहास कर उठा। सम्पूर्ण इमारत अब अश्वत्थामा के भयंकर अट्टहास से कांप रही थी, उस अट्टहास में अब माया का अट्टहास भी सम्मिलित था।

***

ऋचा ने बेचैनी में ही दो बोतल कोल्ड ड्रिंक्स पी डाली थी, इसके बावजूद उसका गला खुश्क हुआ जा रहा था। उसने अपना चेहरा एक हैट से ढांप रखा था। उसे अभी भी यकीन नही हो रहा था कि वह किस तरह के भयानक हालात में फंसी हुई है। वह अपने उस अनजाने मददगार तक को लेकर अब तक सशंकित थी। उसे पहले गलतफहमी थी कि शायद उसका कोई मतलब रहा होगा जो उसने उसकी जान बचाई, लेकिन उस त्रिपुंडधारी ने तब उसकी सोच ही बदल दी, जब उसकी बेगुनाही का सुबूत वह वीडियो फुटेज उसने ऋचा को सौंप दी थी और उसके पिता को फोन करके ऋचा से मिलने के लिये इस रेस्टोरेंट की लोकेशन भी बता दी थी। वह वाकई में कोई नेक इंसान था। साथ ही साथ चालाक भी, उसने ऋचा को अपने ठिकाने से लाते समय भी उसकी आँखों पर पट्टी बाँध दी थी।

वैसे इसमें हर्ज ही क्या है ? हर कोई अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतित है, और उसने तो फिर भी कइयों को मारा था। वह तो इस समय सारे शहर के लिये एक वांटेड़ हत्यारा था। शहर के लिये भले ही वह जो भी था लेकिन ऋचा के लिये तो वह देवता समान था। वह ना होता तो आज ऋचा भी ना होती।

ऋचा के विचारों की श्रृंखला तब भंग हुई जब उसने रेस्टोरंट के सामने एक जानी पहचानी चमचमाती फोर्ड देखी। यह उसके पापा की गाडी थी। दरवाजा खुला और एक व्यक्ति बाहर निकला, वह शिवराज पाठक था। उसने सतर्कता से सड़क के चारो ओर मुआयना किया, रे बेन का चश्मा लगाये, सफ़ेद शर्ट और पतलून पहने उस व्यक्ति ने रेस्टोरेंट में प्रवेश किया।

प्रवेश करते ही वह रेस्टोरेंट के उस हिस्से की ओर बढ़ा जहाँ ऋचा बैठी हुई थी। यह सम्पूर्ण कॉर्नर बाली ने ऋचा के लिये बुक कर रखा रखा था, इसका पता ऋचा को तब लगा जब वह रेस्टोरेंट में आयी। वह कब आया, कब रिजर्वेशन किया उसे इसका पता तक नही चला था।

“पापा !” ऋचा अपने पिता शिवराज पाठक को देखकर स्वयं को संभाल नही सकी और गले लग गयी। शिवराज भी अपनी बेटी के बारे में सुनकर सारी कड़वाहट भुला कर दौड़ा चला आया था।

“फ़िक्र मत करो। मैं आ गया हूँ, अब सब ठीक हो जायेगा।” शिवराज का स्वर भर्राया हुआ था। उसने ऋचा को चेयर पर बिठाया और अपना चश्मा उतार कर जेब में रख लिया। एक हाथ से उसने अपने आंसू पोंछे।

“मैंने मना किया था ना बेटी। मैं जानता था यह बड़े शहर, यह चकाचौंध तुम जैसी लड़कियों को निगल जाता है बेटी। लेकिन तुम जिद पर अडी रही। नतीजा देख लो, खुद तो परेशान हो ही, साथ में मुझे भी तकलीफ दे रही हो।” शिवराज भावुक था। वह शिकायत अवश्य कर रहा था किन्तु उसके स्वर क्रोध बिलकुल भी नही था।

“मुझे माफ़ कर दो पापा।आई एम् सॉरी, मुझे आपकी बात मान लेनी चाहिये थी। मैं घर जाना चाहती हूँ, आपके साथ। मुझे यहाँ से निकालिये, मैंने कुछ भी नही किया है।” वह सुबकती रही।

“मैं इसीलिये यहाँ आया हूँ। तुम्हारे साथ जो नकाबपोश था, वह कहीं नजर नही आ रहा है, कहाँ है वह ? मैं उससे मिलना चाहता हूँ , उसका धन्यवाद करना चाहता हूँ। वह नही होता तो पता नही क्या होता।” शिवराज ने रेस्टोरेंट के चारों ओर देखते हुए कहा।

“वह मेरे साथ नही आया है। उसने बस मुझे यहाँ से कुछ दूरी पहले तक ही छोड़ दिया था। उसने मेरी बेगुनाही के सुबूत के रूप में शेषन के वीडियो कैमरे से निकाली हुई फ़ुटेज की सीडी भी दी हुई है।” कहते हुए उसने अपने पास रखे कागज के लिफ़ाफे से एक सीडी शिवराज की ओर बढ़ा दी। शिवराज ने लपक कर सीडी थाम ली।

“तुम्हें पहले यहाँ से निकालना होगा। तुम्हारी बेगुनाही मैं बाद में सिद्ध कर दूंगा। लेकिन अभी इसी समय मेरे साथ चलो।” कहते हुए शिवराज उठ खड़ा हुआ।

“इतनी भी क्या जल्दी है जाने की।” एक भारी आवाज वहाँ गूंजी, शिवराज और ऋचा ने उस आवाज की दिशा में देखा जो रेस्टोरेंट के दरवाजे की ओर से आयी थी। वह जयराज शेषन था, उसके साथ छह

हथियारबंद पुलिसवाले थे जिनकी पिस्तौलों का रुख ऋचा की ओर था। पुलिस वालों को धड़धडाता हुआ अंदर आता देख रेस्टोरेंट में हड़बडी मच गयी। जयराज को देखकर ऋचा बुरी तरह घबरा गयी।

“देखो, तुम्हें जिसकी तलाश थी वह यहाँ आया ही नही। मेरी बेटी बेगुनाह है यह तुम भी जानते हो। मेरे पास सुबूत भी है, यह फूटेज जो तुम्हारे बेटे के कैमरे से ली गयी थी।” शिवराज ने जयराज को सीडी दिखायी।

“वह सब हम स्टेशन में चलकर डिस्कस करेंगे। फ़िलहाल तुम दोनों चलो मेरे साथ।” जयराज दहाड़ा। ऋचा ने अपने पिता की ओर क्रुद्ध दृष्टि से देखा।

“मैं बेबस था बेटी। मेरे पास और कोई रास्ता ही नही था। फ़िक्र मत करो, ये तुम्हें कुछ नही करेंगे, इन्हें बस उस नकाबपोश की तलाश है। इन्हें पूछताछ करनी है बस।” शिवराज ने नज़रें चुराते हुए कहा। ऋचा कुछ ना बोली और उठ खड़ी हो गयी। बाहर जयराज का काफिला खड़ा था। ऋचा और शिवराज को उसमे बिठा दिया गया। वहाँ से कुछ ही दूर खड़ा बाली यह सब देख रहा था। इस समय वह लेदर की जैकेट और सर पर कैप लगाये सड़क के दूसरे छोर पर खड़ा था। वह थोडा परेशान दिखा लेकिन उसने कोई निश्चय किया और सड़क से आती एक टैक्सी को रोका।

“कहा जाना है साहब ?” टैक्सी ड्राइवर ने पूछा।

“पुलिस स्टेशन।”

***

।। त्रेतायुग ।।

पुनर्जन्म

कपिल चिंतित था। बलभद्र द्वारा आश्रम पर आक्रमण की सूचना मिलते ही वह शीघ्र ही अपने कुछ शिष्यों के साथ आश्रम लौट आया था। सुबाहु के साथ गया हुआ शिष्य दल भी पुन: लौट आया था। इस समय वे किसी गुप्त स्थान पर थे। आश्रम नष्ट हो चुका था, दानवों की कुदृष्टि वहाँ पड़ चुकी थी, इसलिये अब वहाँ रुकना उचित नही था। कपिल व्यग्रता से उस कुटिया के बाहर चहलकदमी कर रहा था। उसके मुख पर दु:ख, विषाद, वेदना एवं क्रोध के सम्मिलित भाव थे। उसके साथ ही उनके बचे खुचे शिष्य भी कुटी के बाहर खड़े थे। दु:ख उनके मुख पर स्पष्ट झलक रहा था। कुटी के भीतर से किसी को आता देख कर कपिल व्यग्र हो गया।

“क्या हुआ ‘गुरु सजीवन’?” कपिल ने व्यग्रता से उनसे पूछा, गुरु सजीवन एक ख्यातिप्राप्त चिकित्सक थे।

“दोनों की अवस्था अत्यंत चिंताजनक है कपिल। महर्षि अब तक जीवित है तो केवल अपनी अद्भुत इच्छाशक्ति द्वारा। अन्यथा उनके शरीर के अनेक महत्वपूर्ण अंगो ने प्रतिसाद देना बंद कर दिया है।” सजीवन चिंतित और दुखी स्वर में बोले।

“और सुबाहु ?” कपिल के होंठ कांप रहे थे।

“वह अद्भुत युवक है कपिल। वह मुझे महर्षि संदीप की युवावस्था का स्मरण दिलाता है। वह भी उन्ही की भाँति केवल अपनी इच्छाशक्ति के बल पर ही जीवित है और ऐसा कब तक रहेगा मैं कुछ कह नही सकता।” सजीवन के शब्दों में निराशा स्पष्ट झलक रही थी।

“मुझे महर्षि और सुबाहु से मिलना है।” कपिल ने कहा।

सजीवन ने केवल स्वीकारोक्ति में सर हिलाया और कुटी के भीतर पुन: प्रवेश कर गये, उनके पीछे पीछे कपिल भी कुटी में पहुँच चुका था। कुटी के अंदर बने चबूतरे पर सुबाहु एवं महर्षि संदीप बेसुध अवस्था में पड़े हुए थे। उनके शरीर से बाणों को निकाल कर घावों को स्वच्छ कर दिया गया था, इस समय उनके सम्पूर्ण शरीर पर पट्टियाँ और लेप ही दिखायी दे रहे थे। कपिल ने सुबाहु के सर पर हाथ फेरा, उसका शरीर किसी अग्नि की भांति ज्वर से तप्त था।

“क ..कपिल।”

महर्षि संदीप के अत्यंत धीमे स्वर को भी कपिल ने सुन लिया, उसे अपने कानों पर विश्वास ही नही हुआ। वह महर्षि के समीप पहुंचा और उनका हाथ थाम लिया। उनका शरीर भी ज्वर से तप रहा था। उनके नेत्र अधखुले थे, किन्तु आश्चर्यजनक रूप से उनके मुख पर एक मुस्कान थी। उसे देखकर कपिल अचंभित रह गया।

“कपिल ! मेरा समय आ गया है ...” धीमे स्वर में महर्षि ने कहा।

“ऐसा ना कहिये महर्षि। आप ही तो हमारी प्रेरणा है, आपको कुछ नही होगा। आप ऐसी बातें ना कीजिये आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जायेंगे। सब कुछ पुनः पूर्व की भाँति व्यवस्थित हो जायेगा।” कपिल ने कहा, उसके स्वर कंठ में मानो अटक से रहे थे।

“आप इस समय कुछ न बोलिये महर्षि। आपको विश्राम की आवश्यकता है।” सजीवन ने महर्षि को समझाने का प्रयास किया।

“सजीवन ! यह तुम्हें भी ज्ञात है कि अब मुझे किसी भी प्रकार का विश्राम नही बचा सकता। मेरे अनेक अंगो ने कार्य करना बंद कर दिया है, मैं केवल कुछ पहर तक ही जीवित रह पाऊँगा, इसलिये मैं जो कह रहा हूँ, वह मुझे कहने दो।” महर्षि ने कहा, सजीवन ने कुछ कहना उचित ना समझा, वह वस्तुस्थिति को समझ रहे थे।

“आप के पास तो अनेकों सिद्धियाँ है महर्षि। आप चाहें तो स्वयं को बचा सकते हैं, आप उनका प्रयोग क्यों नही करते ?” कपिल अत्याधिक भावुक हो गया था । कपिल के लिये महर्षि संदीप पिता और गुरु दोनों का स्थान रखते थे, उन्हें इस अवस्था में देख कर कपिल स्वयं को बड़ी कठिनाई से नियंत्रित कर पा रहा था।

“कपिल ! मैं उन्ही की सहायता से अब तक स्वयं को जीवित रखे हुए हूँ, अन्यथा सजीवन यह जानते है कि ऐसी अवस्था में किसी का जीवित रहना असंभव है। मेरे लिये चिंतित मत हो, मैंने तुम्हारे रूप में अपनी परम्परा को जीवित रखा है, मैं तुम्हारे रूप में सदैव उपस्थित रहूँगा। मुझे इस समय इस बालक की चिंता है, सुबाहु की।” महर्षि ने अपना सिर सुबाहु की ओर मोड़ा। सुबाहु का शरीर इस समय एकदम निस्तेज एवं प्राणविहीन प्रतीत हो रहा था।

“यह अद्भुत योद्धा है कपिल। आश्रम पर हुये आक्रमण के समय मैंने इसे अपनी युद्ध कला के अद्भुत चरम पर देखा था। इसकी क्षमताओं को अभी हम समझ नही पाये है। कपिल, भार्गव की मृत्यु के पश्चात हम इसे नही जाने दे सकते। मैं अपने वर्षो के तपोबल से प्राप्त की हुई सिद्धियाँ

मेरे इस नश्वर शरीर के साथ ही नष्ट नही होने दे सकता। मैं इसे बचा सकता हूँ कपिल।" महर्षि ने कहा, उनके स्वर में कंपन था।

"कपिल यह परीक्षा का क्षण है, यह समय आवेग में आकर, भावनाओं में बहकर अशक्त होने का नही है। प्रत्येक क्षण मूल्यवान है, हमारे अनेकों शिष्यों ने आज अद्भुत वीरता का प्रदर्शन करते हुए मृत्यु का वरण किया है कपिल। उनकी इस मृत्यु को उनके बलिदान और शौर्य को अपनी निराशा एवं दु:ख में व्यर्थ मत करो। यह समय निर्णय लेने का है, मेरा जीवनकाल पूर्ण हो गया है, मैं तुम्हारे और सुबाहु के रूप में अपने उद्देश्य एव कर्तव्य की पूर्ति कर रहा हूँ। एक अंतिम कर्तव्य शेष है।" महर्षि ने सौम्य स्वर में कहा।

"आदेश कीजिये महर्षि।" कपिल ने तटस्थ होकर कहा और नेत्रों से बहने वाले अश्रुओं को रोक लिया।

"मुझे सुबाहु के समीप लिटा दो। मैं अपनी सिद्धियों एवं तपोबल से उसके लिये एक रक्षा कवच का निर्माण करूँगा जो उसे जीवनदान देगा।"

"किन्तु महर्षि ऐसा करने से आप जीवित नही रह पाएंगे, उन्ही सिद्धियों के कारण आप स्वयं को अब तक जीवित रखे हुए है।" सजीवन ने उन्हें टोका।

"सजीवन! मेरे जीवित रहने का उद्देश्य पूर्ण हो चुका है। इसलिये मेरी इच्छा है कि मृत्यु से पहले मैं अपना अंतिम कर्तव्य भी पूर्ण करु, मैं इस अद्भुत योद्धा का जीवन बचाने हेतु सिद्धिदान करना चाहता हूँ और मैं अपने इस निश्चय पर अटल हूँ।" महर्षि के स्वर में एक अद्भुत प्रभाव था जिसे सुनकर सजीवन ने पुन: कोई आपत्ति नही जतायी। महर्षि ने कपिल की ओर देखा, कपिल संकेत समझ गया और अपनी शक्तिशाली भुजाओं में महर्षि के शरीर को उठा कर सुबाहु के समीप ही लिटा दिया।

"मैं ध्यान लगा रहा हूँ, अपनी सिद्धियों एवं तपोबल द्वारा एक मंत्र कवच का निर्माण करूंगा जो इसके प्राण बचा लेगी एवं भविष्य में भी मानवता की भलाई के लिये प्रयुक्त होगी। कपिल मैं ध्यान लगाने जा रहा हूँ, मेरे नेत्र अब बंद होने के बाद पुन: नही खुलेंगे। मैं एक वचन लेना चाहता हूँ।" महर्षि ने कहा।

"बोलिये महर्षि।" कपिल ने बड़ी कठिनाई से पूछा।

"मेरी मृत्यु के पश्चात मेरा शोक नही मनाओगे। सुबाहु को अभी भी एक गुरु और योग्य मार्गदर्शक की आवश्यकता है, तुम उसे वह मार्गदर्शन प्रदान करोगे।" महर्षि ने कहा, कपिल ने उनका हाथ पकड़ लिया।

“मैं वचन देता हूँ।” कपिल ने कहा, महर्षि ने अपनी आँखे मूँद ली और ध्यान में लीन हो गये। कपिल और सजीवन अब मूकदर्शक बनने के अतिरिक्त और कुछ नही कर सकते थे।

कुछ ही क्षणों में महर्षि का शरीर एक अद्भुत प्रकाश से प्रकाशित होने लगा। उनके शरीर से ऊर्जा लहरियां एवं प्रकाश वातावरण में प्रस्फुटित हो रहा था। उस ऊर्जा एवं प्रकाश से सुबाहु का शरीर नहा गया। सुबाहु की सम्पूर्ण शिराओं में रक्त के स्थान पर अब विद्युत् लहरियां सी दौड़ती स्पष्ट दिखायी दे रही थी। उसके शरीर पर कुछ मंत्र से अंकित हो रहे थे और धूमिल हो रहे थे। अगले कुछ ही क्षणों में सुबाहु के शरीर पर भस्म की भाँति रंगत लिये एक आवरण का निर्माण हो रहा था। शीघ्र ही उस विचित्र आवरण ने सुबाहु के सम्पूर्ण शरीर को ढंक लिया था। यहाँ तक कि उसका मुख भी मुखावरण से ढंक गया। उसके मुख पर स्थित मुखावरण पर तीन प्रकाश पुंज उभर रहे थे, जो कुछ ही क्षणों में त्रिपुंड में परिवर्तित हो गये। कवच रूपी उस आवरण ने एक पोशाक का स्वरूप ले लिया । अत्यंत चुस्त उस पोशाक के कारण सुबाहु का मांसल और कटाव लिये शरीर अत्यंत शक्तिशाली दिखायी दे रहा था। उस सम्पूर्ण वस्त्र के विभिन्न भागों पर मंत्र उभरते और अदृश्य होते रहे। उस अद्भुत चमक लिये कवच रूपी पोशाक की भुजाओं पर भी त्रिपुंड बन गये थे और छाती पर एक त्रिशूल सदृश्य प्रकाशमान रेखाकृति स्पष्ट दिखायी देने लगी थी। सजीवन एवं कपिल इस दृश्य को विस्मित नेत्रों से देख रहे थे। सम्पूर्ण कुटी उस अद्भुत एवं दिव्य प्रकाश के कारण प्रकाशमान थी। धीरे धीरे प्रकाश एवं ऊर्जा इतनी बढ़ी कि दोनों को अपने नेत्र बंद करने पड़े। प्रकाश का एक भीषण ध्वनि रहित विस्फोट सा हुआ और प्रकाश समाप्त हो गया। सजीवन एवं कपिल के नेत्र चुंधिया गए। कुछ क्षणों पश्चात उनके नेत्र देखने के अभ्यस्त हुए। महर्षि संदीप प्राण त्याग चुके थे। उनके मुख पर एक दिव्य मुस्कान और संतोष का भाव था। कपिल निर्विकार भाव से उन्हें देख रहा था। उसने उन्हें प्रणाम किया। सुबाहु के शरीर में हलचल हो रही थी। यह सुबाहु का एक नया जन्म था।

***

भद्रक के प्रवेश करते ही प्रहरियों एवं सुरक्षा रक्षकों ने उसे प्रणाम किया।

“बड़े भैय्या ! आप आज अपने इस उद्दंड़ भाई के भवन में ?” बलभद्र भद्रक को देखकर अचंभित था। उसे स्मरण था अंतिम बार भद्रक उसके

भवन में तब आया था जब बलभद्र जीवन और मृत्यु के मध्य झूल रहा था। महर्षि संदीप के आश्रम से बलभद्र अत्यंत दयनीय अवस्था में लौटा था। उसे स्वयं की सुध नही थी, उसके साथ गये दो सैनिक उसे समय रहते युद्ध क्षेत्र से निकालने में सफल हो गये थे। भद्रक के कुशल चिकित्सकों एवं गुरु महेंद्र की सहायता से ही बलभद्र के प्राण बच सके थे। किन्तु इस घटना को अब तीन माह बीत चुके थे। बलभद्र के खुले और भुजंग शरीर पर अब भी घावों के चिन्ह स्पष्ट दिखायी दे रहे थे।

“बलभद्र ! मैं तुम्हें यह समझाने आया हूँ कि जो तुमने बीज बोया था वह आज विषैला वृक्ष बन चुका है। जो युद्ध अब तक केवल ढंके छिपे होता आ रहा था, वह अब सबके सम्मुख हो रहा है। दानव जाति जो सम्मान पाने का प्रयास कर रही थी उसपर तुमने कालिख पोत दी।” भद्रक अत्यंत क्रोध में था, वह आसन तक पर ना बैठा।

“भैय्या ! आप व्यर्थ चिंतित हो रहे है। हमने उस संस्था के सारे सदस्यों को मृत्यु लोक भेज दिया है। उनका कोई नाम लेवा शेष नही है, अब तो आपको प्रसन्न होना चाहिये कि तीन माह से दानवों पर एक भी आक्रमण नही हुआ है और वे अपना कार्य निर्विघ्न रूप से कर रहे है।” बलभद्र ने कहा और भद्रक को आसन पर बैठने का संकेत किया जिसे भद्रक ने सिर हिलाकर अस्वीकार कर दिया।

“इतने माह की कमतरता अब पूर्ण हो रही है, मैं समाचार लेकर आ रहा हूँ कि विभिन्न प्रदेशों में इस सप्ताह दानवों एवं अन्य राक्षस जातियों पर भयंकर आक्रमण आरंभ हुए है और इन आक्रमणों में दानव जातियों के असंख्य सैनिक मृत्यु को प्राप्त हो चुके है और यह उसी संस्था के सदस्यों का कार्य है।” बलभद्र के स्वर में क्रोध से अधिक चिंता झलक रही थी।

“अब तक हमारे राज्य और निवासियों पर कोई आक्रमण नही हुआ है। किन्तु हमें चिंता है तुम्हारी, वे केवल उन्ही पर आक्रमण कर रहे हैं जो शासन की इच्छा रखते है, महत्वकांक्षा रखते है और मुझे अब तुम्हारे लिये चिंता हो रही है, क्योंकि उनके आक्रमण की शैली अब प्रतिशोध की प्रतीत हो रही है।” भद्रक ने चिंतित स्वर में कहा।

“यदि ऐसा है तो मैं युद्ध के लिये तैयार हूँ, आने दीजिये उनके सैनिकों को, किन्तु मैंने तो सबको समाप्त कर दिया था फिर ये कहाँ से आ गये ?” बलभद्र के नेत्र विचार की मुद्रा में सिकुड़ गये।

“युद्ध के लिये तैयार हो ? मैं तुम्हें यह बताने आया हूँ कि वे कोई सैनिक नही है, वो केवल एक ही है। एक योद्धा जो पूर्ण दानव सेना को समाप्त करते जा रहा है वह भी अकेले।” भद्रक ने कहा।

“क्या! अकेला व्यक्ति ?”

“मेरे गुप्तचरों ने यही पुष्टि की है। चर्चा है कि वह एक अद्भुत योद्धा है, कोई विशेष आशीर्वाद अथवा वरदान प्राप्त है उसे। वह अपने विचित्र दण्ड एवं विचित्र पोशाक के साथ आता है, और कुछ ही क्षणों में अनेकों दानवों एवं राक्षसों को समाप्त कर देता है और इस भ्रम में मत रहो कि महर्षि संदीप एवं उनके कुछ शिष्यों को मारकर तुमने उस संस्था को ही समाप्त कर दिया, तुम्हारे आक्रमण करने से पूर्व ही वह संस्था अनेक राज्यों में गुप्त रूप से शाखाओं में विभक्त होकर अपना कार्य करने लगी थी। वह उन अनेक गुप्त शाखाओं में से कोई हो सकता है।” भद्रक ने कहा।

“कौन हो सकता है वह ? उस अद्भुत योद्धा ने मेरा अंत तक सामना किया था, किन्तु वह मेरी आँखों के सामने ही मृत्यु को प्राप्त हुआ था। खुद मैंने अपने हाथों से मारा था उसे, महर्षि संदीप भी बाणों से बिंध चुके थे। अरे ..हाँ.. वह युवक! जो उस योद्धा को अपना मामा कह रहा था, वह अद्भुत योद्धा था। वह अंत तक युद्ध करता रहा, उसने अकेले ही कुछ ही क्षणों में मेरी सम्पूर्ण सेना को क्षीण कर दिया था। उसके पास वह दण्ड था, वह विचित्र दण्ड। ये वही है, मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ यह वही है।” बलभद्र बड़बडाया।

“क्या नाम है उसका ?” भद्रक ने प्रश्न किया।

“उसका नाम …?” बलभद्र ने अपने मस्तिष्क पर दबाव डाला किन्तु उसे स्मरण न हुआ।

“उसका नाम ‘सुबाहु’ है। जिसे तुमने मारा वह उसका मामा भार्गव था और सुबाहु को बचा लिया गया है, न केवल वह बच गया है अपितु महर्षि संदीप ने उसे अपनी सिद्धियों के दान से अविजित बना दिया है।” कहते हुए गुरु महेंद्र ने भवन में प्रवेश किया। महेंद्र को देखकर दोनों ने उनके सम्मान में हाथ जोड़े। महेंद्र ने आशीर्वाद रुपी हाथ उठाकर उन्हें आशिष दिया।

“क्या हम उसे समाप्त नही कर सकते गुरुदेव ?” भद्रक को बलभद्र की चिंता थी।

“उसके पास सिद्धिकवच है और अद्भुत क्षमतायें है, वह उस संस्था का अद्भुत योद्धा था। वह बिना सिद्धिकवच के भी एक पूर्ण सेना पर भारी था, बलभद्र को यह भलीभाँति ज्ञात होगा ?” महेंद्र ने बलभद्र की ओर देखा और बलभद्र लज्जा से बगले झाँकने लगा।

“तुम उससे निपट सकते हो। किन्तु उसके लिये तुम्हें अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगानी होगी, जिस कारण तुम्हारी सत्ता अशक्त हो जायेगी, शक्ति क्षीण हो जायेगी और भयंकर हानि होगी।” महेंद्र ने कहा।

“कोई तो उपाय होगा ?” भद्रक ने कहा।

“है एक उपाय, किन्तु बलभद्र को वह स्वीकार्य नही होगा।” महेंद्र ने कहा। बलभद्र ने ज्वलंत नेत्रों से उनकी ओर देखा।

“आप उपाय बताईये।” भद्रक ने हाथ जोड़कर निवेदन किया।

“बलभद्र को शरण में जाना होगा, किष्किन्धा नरेश वानरराज बाली की शरण में।” महेंद्र ने कहा।

“असंभव! मैं उस वानर की शरण में जाऊँगा ? कदापि नही, इससे अच्छा मैं मृत्यु ही स्वीकार कर लूँ।” बलभद्र को यह प्रस्ताव तनिक भी रास नही आया। वह बाली का नाम सुनकर ही क्रोध से कांपने लगा था।

“इस समय एक वही है जो तुम्हारी सहायता कर सकता है। बाली एक अद्भुत शक्तिशाली वानर योद्धा है। वह वरदान प्राप्त है, जिस कारण प्रतिद्वंदी का आधा बल बाली के शरीर में समाहित हो जाता है। इस अद्भुत क्षमता के कारण वह अविजित है, यहाँ तक कि वह लंकापति रावण तक को परास्त कर चुका है। ऐसे वीर और शक्तिशाली की शरण में जाने में लज्जा नही अपितु बुद्धिमत्ता अधिक है।” महेंद्र ने कहा।

“किन्तु बाली हमारी सहायता क्यों करेगा ? वह तो दानवों का शत्रु है।” बलभद्र ने कहा।

“वह किसी का शत्रु नही है। वह स्वयं का ही शत्रु है, उसका स्वभाव दम्भी है और इस कारण उससे सहायता प्राप्त करना इतना दुष्कर भी नही है।” महेंद्र ने कहा।

“योजना बताइये।” बलभद्र ने कहा, रावण के पराजित होने का समाचार उसे भी मिला था और वह इससे प्रभावित भी था।

***

वे कुल सात दानव थे जो वन में घात लगाये बैठे थे, उस मार्ग पर एक अश्वारोही तीव्र वेग से आ रहा था। किन्तु अचानक ही मार्ग के मध्य एक मोटा रस्सा दोनों ओर से खींच गया और अश्व के पैर उसमे उलझ

गये। परिणामस्वरूप अश्व के साथ साथ वह अश्वारोही भी धरती पर जा गिरा। अश्वारोही गिरने से हड़बडा गया था और उसी क्षण घात लगाये दानव उस पर चारों ओर से टूट पड़े। अश्वारोही कोई सामान्य मनुष्य नही था। उसका मुख सामान्य मनुष्यों की अपेक्षा विचित्र था, पतली छोटी छोटी आँखे, समतल और निचले हिस्से की ओर नुकीली हुई नाक, नाक से निचला भाग हनु तक फुला हुआ था। वह वानर और मनुष्य का मिला जुला स्वरूप था। उसकी भुजाये आश्चर्यजनक रूप से शक्तिशाली थी और उसका आकार भी सामान्य मनुष्यों की तुलना में थोडा अधिक ही था। वह गिरते ही अद्भुत फुर्ती से पुन: उछल कर खड़ा हो गया, ना केवल खड़ा हो गया बल्कि पीठ पर टंगी गदा भी क्षण भर में उसके हाथों में आ चुकी थी।

“सुग्रीव! आज अवसर मिला है । अब तक वानर राज बाली के कारण तुम बचे हुए थे। आज तुमने ग्रामवासियों को बचाने के लिये अकेले प्रस्थान कर भयंकर भूल कर दी है।” दानवों के दल का नायक चीखा। उसकी कंटीली गदा से उसने सुग्रीव के मस्तक पर प्रहार किया किन्तु सुग्रीव ने ना केवल स्वयं को झुका कर वह प्रहार बचा लिया बल्कि अपनी गदा का शक्तिशाली प्रहार उस दानव की कमर पर भी कर दिया। उस भयंकर प्रहार से वह अनेक हाथ दूर तक जा गिरा।

“तुम्हारे दंभी और अहंकारी भाई ‘बाली’ ने हमारे नायक ‘दुदुंभी’ को मारा है, और ना केवल मारा है बल्कि उनके शव का भी अपमान किया है। हम तुम्हारे रूप में उससे अपना प्रतिशोध लेंगे। हमें पता था तुम्हारी सीमा में आनेवाले गाँव पर आक्रमण होने की मिथ्या सूचना तुम तक पहुँचते ही तुम अपने भाई की ही तरह स्वयं की शक्तियों पर अतिआत्मविश्वास के वशीभूत हो कर निश्चित ही यहाँ अकेले आओगे सुग्रीव।” गदा का प्रहार खा कर भी मुस्कराते हुए वह दानव बोला।

“अतिआत्मविश्वास तो तुम्हारा है जो तुमने यह विचार कर लिया कि सुग्रीव को तुम जैसे दानव एवं राक्षस परास्त कर सकते हैं।” कहते हुए सुग्रीव ने अपनी गदा पर दूसरे दानव के खड्ग का प्रहार रोक कर उसके पेट में पूर्ण शक्ति से लात चला दी, वह भैंसे की तरह डकारते हुए दूर जा गिरा। उसके गिरते ही पांचो दानवों ने एक साथ आक्रमण कर दिया। सभी के हाथो में विभिन्न प्रकार के घातक शस्त्र थे, तलवार, खड्ग, गदा, और भाला। वे सभी एक साथ प्रहार कर रहे थे उनकी अद्भुत फुर्ती और युद्धकला देखकर प्रतीत हो रहा था कि वे ना केवल अपने शस्त्रों

में पूर्णतया पारंगत थे अपितु कुशल योद्धा भी थे। सुग्रीव उन्हें कांटे की टक्कर दे रहा था। वह अपनी गदा पर प्रहार रोकता और अपनी अपने पैरों से वार कर देता। किसी बंदर की भाँति ही सुग्रीव जब गदा लिये उछलता तो उसकी गदा एक ना एक दानव को अवश्य अपना लक्ष्य बनाती। सुग्रीव भले ही शक्तिशाली एवं कुशल योद्धा था, किन्तु वे संख्या में सात थे, और उनमे से प्रत्येक सामान्य मनुष्य से चार गुना अधिक शक्तिशाली था। जिस कारण सुग्रीव की आशा के विपरीत अधिक समय लग रहा था। वे दो गुटों में बंट कर निरंतर प्रहार कर रहे थे। सुग्रीव के कौशल का ही परिणाम था कि वह प्रहार कर लेता किन्तु उनके एक भी प्रहार उस तक ना पहुँच पाते थे। उनका एक गुट निरंतर प्रहार करता, और जब वे थक जाते तब दूसरा गुट प्रहार करता। केवल सुग्रीव था जिसे निरंतर ना केवल बचना था बल्कि प्रहार भी करना था। सुग्रीव उनकी योजना भांप चुका था। वह समझ चुका था कि दानव योजनाबद्ध तरीके से युद्ध कर रहे है, और वे सुग्रीव को थकाना चाहते हैं। किन्तु सुग्रीव इतनी सरलता से थकने वालों में से भी नही था।

“क्यों सुग्रीव ! थक तो नही गये ?” अट्टहास करते हुए दानव नायक ने एक भीमकाय शिला सुग्रीव की ओर उछाल फेंकी, सुग्रीव ने उस शिला को गदा के भीषण प्रहार से खंड खंड कर दिया।

“मूर्ख ! केवल सात दानवों के बल पर इतना घमंड़ ? दुदुंभी को भी अपने बाहुबल पर अत्याधिक घमंड़ था, जिस कारण वह मेरे भ्राता बाली को चुनौती देने पहुँच गया। भ्राता बाली ने उसकी चुनौती ना केवल स्वीकार की बल्कि उसे उसके जीवन से भी मुक्त करके घमंड़ समाप्त कर दिया। अब वही दशा तेरी और तेरी इस तुच्छ सेना का होने वाला है।” कहते हुए सुग्रीव ने अपनी गदा का भीषण प्रहार एक दानव के मस्तक पर किया और इस प्रहार से उसका मस्तक ही फट गया।

“यह तो योजना की पहली सीढी थी सुग्रीव। मेरी दूसरी टुकड़ी भी तैयार ही बैठी है अब।” कहते हुए नायक हाथ से संकेत किया ही था कि वनों में से और आठ सशस्त्र दानव बाहर निकले। सुग्रीव भयभीत नही हुआ, किन्तु उसके माथे पर चिंता की रेखा स्पष्ट दिखायी दे रही थी। निश्चित ही अब दानव टुकड़ी चार हिस्सों में बंट कर उसी योजना पर कार्य करेगी। सुग्रीव इनसे युद्ध करने में सक्षम अवश्य था किन्तु इस समय वह बेहद थका हुआ था और अगली टुकड़ी भी उसी कूटनीति का प्रयोग करने वाली थी। इस समय उसे हल्की सी सहायता की आवश्यकता थी जो

उसे थोडा सा विश्राम प्रदान कर सके। आठों दानव अपने शस्त्रों के साथ एक साथ दौड़े, उनका लक्ष्य सुग्रीव ही था किन्तु उसी क्षण कोई सुग्रीव और उनके मध्य आकर खड़ा हो गया। आक्रमण करने के लिये आतुर टुकड़ी उस विचित्र वेशभूषा वाले व्यक्ति को अपने समक्ष देखकर ठिठक गयी।

वह सर से पाँव तक हल्के नीले रंग की चुस्त पोशाक में था, उसके मुख पर एक मुखावरण था, जिसपर एक त्रिपुंड बना हुआ था, जिसके मध्य भाग से प्रकाश सा प्रस्फुटित हो रहा था। उसकी छाती पर बने त्रिशूल के प्रारूप में प्रकाश फूट रहा था। उसके सम्पूर्ण शरीर पर विभिन्न प्रकार के मंत्र प्रकट एवं अदृश्य होते दिखायी दे रहे थें। वह सुबाहु था जो महर्षि संदीप द्वारा प्रदत्त सुरक्षा कवच में था। उसकी पीठ पर स्वर्णमंत्रो से सुसज्जित दण्ड टंगा हुआ था, और इस समय उसके हाथो में कोई भी शस्त्र नही था।

“देख क्या रहे हो ? इसे भी समाप्त कर दो।” नायक चीखा, उसके चीखते ही आठों ने पुन: आक्रमण कर दिया। सुबाहु दौड़ते हुए दानवों की टुकड़ी के मध्य स्वयं ही जाकर खड़ा हो गया। वे उसे स्वयं अपने मध्य पाकर फिर से ठिठक गये, किन्तु मात्र एक ही क्षण के लिये। उसके पश्चात उन्होंने प्रहार आरंभ कर दिये, सुबाहु ने प्रहारों से स्वयं को बचाने का प्रयास भी नही किया। दानव ने अपनी गदा का पूर्ण शक्ति से प्रहार किया किन्तु उसके कवच से टकराते ही गदा इस प्रकार छिटक कर दूर जा गिरी मानों वह किसी मजबूत धातु से जा टकराई हो, गदाधारी दानव के हाथों में भयंकर झनझनाहट हो रही थी। जब तक वह कुछ समझ पाता सुबाहु ने एक भयंकर मुक्का उसकी छाती में जड़ दिया। छाती में मुष्टि प्रहार होते ही दानव रक्त की उल्टी करता हुआ जो गिरा तो पुन: उठ ही ना पाया। सुग्रीव को भी अब संभलने का अवसर मिल गया था जिसका उसने भरपूर प्रयोग करते हुए दानव दल पर प्रहार किया। सुबाहु ने पुन: फेंके हुए भाले का प्रहार थामा और घुमा कर दूसरी ओर खड़े दानव पर फेंक दिया। भाला अत्यंत तीव्र गति से घूमता हुआ उस दानव के मस्तक को ही चीर कर बाहर निकल आया, वह चीख तक नही पाया। अब दानव दल ने एक साथ प्रहार कर दिये, सुबाहु ने एक भी प्रहार को बचाने का प्रयास नही किया। जब भी कोई प्रहार या शस्त्र उसके समीप पहुँचता उसके कवच पर विचित्र मंत्र प्रस्फुटित होते और प्रहार उससे टकरा कर यूँ छितर जाते मानों किसी भीषण चट्टान से टकराये हो। नायक ने यह देख

कर वहा स्थित एक सम्पूर्ण वृक्ष को ही अपनी शक्तिशाली भुजाओं से उखाड़ लिया और उसका प्रहार सुबाहु पर कर दिया। सुबाहु अपनी छाती पर ही वह प्रहार भी ना केवल झेल गया बल्कि उसने उस प्रहार को नायक की दिशा में ही मोड़ दिया।

भीषण गति से आया हुआ वृक्ष नायक की छाती पर आ गिरा और वह उसके तले दब गया। अभी वह कुछ करता इससे पहले ही सुग्रीव अपने स्थान से उछला और सीधे उसी वृक्ष पर आ खड़ा हुआ। इस भीषण दबाव और झटके से नायक की छाती की अस्थियाँ टूट गयी और वह रक्त की उल्टी करता हुआ मृत्यु को प्राप्त हो गया। नायक को मरता देख दानव दल में निराशा व्याप्त हो गयी। वे भागने लगे, उसी क्षण सुबाहु के हाथ में उसका दण्ड आ गया, वह भागते दानवों के पीछे दौड़ा, उसका दण्ड अब घूम रहा था। वह अद्भुत गति का प्रदर्शन करते हुए उनके समक्ष जा खड़ा हो गया। उसने अपने दण्ड से प्रहार करना आरंभ कर दिया। जिस पर भी दण्ड का प्रहार होता वह पुनः उठ नही पाता था। सुबाहु ने कुछ ही क्षणों में पूरी टुकड़ी को ही समाप्त कर दिया। सुग्रीव आँखे फाड़े बस उसे देखते ही रहा। जब सुबाहु को पूर्ण विश्वास हो गया कि अब एक भी दानव अथवा राक्षस जीवित नही बचा है तब वह सुग्रीव की ओर बढ़ा। उसने अपने दण्ड को पुनः अपनी पीठ से बाँध लिया।

“कौन हो तुम योद्धा ?” सुग्रीव ने उत्सुकतावश प्रश्न किया।

“मेरा प्रणाम स्वीकार करे वानर श्रेष्ठ सुग्रीव।” सुबाहु ने सुग्रीव को प्रणाम किया।

“मैं सुबाहु। महर्षि संदीप एवं गुरु कपिल का शिष्य।” सुबाहु ने अपना परिचय दिया।

“महर्षि संदीप ? तुम उनके शिष्य हो ?”

“जी हाँ।” सुबाहु ने सपाट स्वर में कहा।

“मुझे बहुत दुःख हुआ उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर। किन्तु मुझे यह जानकर प्रसन्नता भी हुई कि उन्होंने कपिल एवं तुम्हारे रुप में अपनी परंपरा को आगे बढ़ाया है। किष्किंधा आना कैसे हुआ ?” सुग्रीव अब सहज हो चुका था।

“हम एक योजना पर कार्य कर रहे है। हम अनेक राज्यों में अपनी शाखायें खोलना चाहते है, ताकि जिस प्रकार आप दानवों से सामान्य प्रजाजनों एवं मनुष्यों की रक्षा करते आये है, उसी प्रकार सामान्य मनुष्यों को भी अपनी रक्षा के लिये प्रशिक्षित कर सके। यदि किसी समय आप

जैसे योद्धा अनुपलब्ध हो तो उस समय वह संस्था उनकी रक्षा करे। इसी उद्देश्य हेतु विभिन्न राज्यों से होता हुआ मैं किष्किंधा पहुंचा हूँ।" सुबाहु ने नम्रता से कहा।

"आप मेरे अतिथि है। आपने मेरे प्राण बचायें है, मेरे बड़े भ्राता बाली आपसे भेंट करके प्रसन्न होंगे। महर्षि संदीप का शिष्य होना एवं आपका अद्भुत युद्ध कौशल देख कर आपका प्रस्ताव अस्वीकार करने का कोई कारण ही नही बचता। आप मेरे साथ नगर में चलिये, आज आप मेरे अतिथि है, भ्राता बाली आज किसी संधि प्रस्ताव हेतु कहीं गये हुये है, इसी कारण मुझे यहाँ आना पड़ा। वे कल प्रात: आपसे जरुर भेंट करेंगे।" सुग्रीव ने सुबाहु को आतिथ्य का निमंत्रण दिया, जिसे अस्वीकार करने का कोई प्रश्न ही नही था।

***

"दानव ! आज दानव आये है हमारी शरण में ? वो भी कौन ? भद्रक का छोटा भाई बलभद्र। भला आज अपने कट्टर शत्रु बाली से सहायता मांगने की क्या आवश्यकता आन पड़ी तुम्हें ?" सुग्रीव के ही डील डौल एवं मुखाकृति वाले बाली ने बलभद्र पर व्यंग्य किया। बलभद्र अपने दस अनुचरों के संग शांत खड़ा था। बाली के ये विष बुझे शब्द उसके कानों में किसी अंगार की भांति प्रवेश कर रहे थे। वह इस समय बाली की सभा में था। यह एक विशेष सभा थी, जहाँ सामान्यतया दिखायी देने वाले सदस्यों के बजाय बाली के कुछ सुरक्षा प्रहरी, बलशाली वानर अंगरक्षक एवं उसके कूटनीति विशेषज्ञ सदस्य ही थे। बलभद्र के शरण में आने का समाचार बाली को आज ही मिला था। बाली वैसे तो उन्हें इतना पसंद नही करता था किन्तु शरण में आने की बात सुनकर उसने उसे भेंट करने की अनुमति प्रदान कर दी थी।

"महाबलशाली, वानर राज, बाली के समक्ष मुझे शरण की याचना करने में कोई कमतरता अथवा लज्जा का अनुभव प्रतीत नही होता। क्योंकि मैं जानता हूँ आप महाप्रतापी है, आपके भय से तीनों लोक कांपते है। महाबली रावण तक को आपने अपनी एक कांख में दबाकर मित्र बनने को विवश करके उसका घमंड़ तोडा था। जब दशानन जैसे अतिशक्तिशाली को आप पराजित कर सकते है तो उसके समक्ष भला हमारी क्या तुलना ? हम तो दशानन रावण के अंगूठे के बराबर भी शक्तिशाली नही है। हम पर एक संकट आ खड़ा हुआ है, उससे हमें केवल आप ही हमारी रक्षा कर सकते हैं, इसलिये मैं स्वयं ही आपके

समक्ष आया हूँ, इस आशा में कि आप अपने उदार हृदय का परिचय देंगे और अपनी शरण में आये याचक की सहायता कर उसे अभय प्रदान करेंगे।” बलभद्र ने सिर झुकाए हुए ही कहा।

“तुम वास्तविकता स्वीकारने में तनिक भी नही झिझकते बलभद्र। मैं इस स्पष्टवादिता से प्रभावित हुआ। बोलो मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ।” बाली ने अपने सिंहासन पर आराम की मुद्रा में बैठते हुए कहा।

“एक सिद्धि धारी ने इस समय दानव एव राक्षस जातियों के विनाश का संकल्प लिया है। उसके पास अद्भुत सिद्धियाँ है और वह भयंकर योद्धा भी है। वह अपनी शक्ति के दंभ में चूर है। मनुष्यों के समक्ष वह अपना शक्तिप्रदर्शन नही करता क्योंकि वह मनुष्यों को अपने युद्ध के लिये तुच्छ समझता है। वह दानव जातियों को समाप्त करके सर्वशक्तिशाली बनने की पदवी प्राप्त करने की लालसा लिये हुए है। उसने कुछ ही माह में अनगिनत दानवों को मृत्यु के मुख में पहुंचा दिया है। मनुष्यों की रक्षा के लिये क्षत्रिय योद्धा है, सिद्धिधारी अद्भुत पुरुष है। किन्तु हम दानवों के समक्ष अभी ऐसा कोई नायक नही जो हमारी रक्षा कर सके। एकमात्र आशा हमें रावण से थी किन्तु आपने उन्हें पराजित करके हमारा भ्रम तोड़ दिया। इस समय आपके ही रूप में हम अपने रक्षक को देख रहे है, जो उस अद्भुत एवं क्रूर योद्धा से हमारी रक्षा कर सके।” बलभद्र ने हाथ जोड़ लिये।

“तुम दानव हो, और हम दानवों का विश्वास नही करतें। वे विश्वासघात करने के लिये कुख्यात होते हैं। अवश्य ही कोई कारण रहा होगा जो उस योद्धा ने विनाश के लिये दानवजातियों को ही चुना है। किन्तु उसे ज्ञात होना चाहिये कि अन्य जातियों की भाँति दानव एवं राक्षस जातियों को भी समान रुप से जीवित रहने का अधिकार है और वह अपनी शक्तियों का दुरुपयोग करके इस अधिकार का हनन कर रहा है। तुम दानव अपना घमंड़ भूलकर हमारी शरण में आये हो, हमें अपना नायक स्वीकार किया है, तो बाली इतना भी निर्दयी नही है कि अपनी शरण में आये किसी को निराश भेजे। मैं तुम्हें अपनी शरण में लेता हूँ एवं अभय प्रदान करता हूँ। आज से तुम मेरे संरक्षण में हो बलभद्र।” बाली ने अपने आसान से उठते हुए कहा।

“आप महान है सम्राट।” बलभद्र ने बाली के सामने नतमस्तक होते हुए कहा।

“रात्रि हो चुकी है बलभद्र। तुम मेरी शरण में हो तो इस समय तुम मेरे अतिथि हो। आज की रात्रि अतिथि कक्ष में विश्राम कर लो, तुम्हें सारी आवश्यक सुविधायें वहाँ मिल जायेंगी। कुछ ही समय में तुम्हें मेरी शरण में आने का एवं अभयदान का पत्र प्रदान किया जायेगा।” कहते हुए बाली सभा से बाहर निकल गया।

बलभद्र के मुख पर अपमान की लाली स्पष्ट दिखायी दे रही थी। गुरु महेंद्र की योजना भले सफल थी किन्तु इसके लिये बलभद्र को अपने शत्रु बाली के समक्ष नतमस्तक होना पड़ा था। वह भुनभुनाते हुये सैनिको द्वारा इंगित कि गयी दिशा की ओर बढ़ा, जहाँ अतिथि कक्ष था।

***

वाराणसी

२००९

शक्तिमठ में जबरदस्त गहमागहमी थी। देवदत्त ने आपातकालीन बैठक बुलवाई थी। सभी सदस्य अपना हर काम छोड़ कर उस हॉल में उपस्थित हुये। पचासों सदस्यों के बावजूद वहाँ ज़रा भी शोरगुल नही था। वे सभी कतारबद्ध सजाई गयी कुर्सियों पर बैठ गये। सबसे पीछे अथर्व खड़ा था, वह इस समय खुले गले की चुस्त टी शर्ट एवं काली जींस पहने हुए था। उसके आकर्षक चेहरे पर सपाट भाव थे। वह चेयर पर बैठने की बजाय हाथ बांधे खड़ा था। कुछ ही क्षणों पश्चात हॉल के मुख्य दरवाजे से देवदत्त ने प्रवेश किया। देवदत्त के मुख पर कोई भाव नही थे, वह हॉल के मध्य स्थित स्टेज पर पहुंचा।

“यह एक आपातकालीन मीटिंग है, इसलिये मैं बगैर किसी औपचारिकता के मुख्य बात पर आना ही उचित समझता हूँ।” देवदत्त ने एक नजर वहाँ उपस्थित सदस्यों को देखा, उसकी दृष्टि अथर्व पर जा टिकी, किन्तु उसने फौरन अपनी नज़रें हटा ली।

“जैसा की आप सभी जानते है हमारे रक्षादल की एक टुकड़ी अभी हाल ही में एक मिशन पर गयी थी। सारनाथ से बंधक बनाये गये रिफ़ॉर्मर द्वारा हमें दानवों के गुप्त दल का पता चला था, जहाँ हमारी रक्षा में स्थित ‘शिवलिंग’ को प्राप्त करने की योजना कार्यान्वित हो रही थी। मटुक अपनी एक टुकड़ी के साथ वहाँ गया था। अंतिम समय में ट्रांसमीटर से प्राप्त संदेशो के आधार पर हम यह अनुमान लगा सकते है कि मटुक और उसकी टुकड़ी अपने मिशन में सफल रही, मटुक ने रक्ष दल के प्रमुख को मार गिराया …” देवदत्त की अंतिम पंक्ति पूर्ण होने से पहले ही हॉल में तालियों की गड़गडाहट गूंज उठी। देवदत्त शांत रहा, उसने कुछ क्षण तक उनकी ख़ुशी को देखा और हाथ से शांत रहने का संकेत किया। देवदत्त के संकेत मिलते ही सभी एकदम शांत हो गये।

“अभी समाचार समाप्त नही हुआ है। रक्ष दल के प्रमुख को मटुक और उसकी टुकड़ी ने मार गिराया है, किन्तु इस कार्य के दौरान मटुक और उसकी टुकड़ी ने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। वे बड़ी ही वीरता से अंतिम श्वास तक लड़ते रहें। हमारा एक एक सदस्य उनके दस दस पर भारी पड़ा। हमारी एक जान के बदले उनकी अनेक जानें गयी। यह मिशन असफल होकर भी सफल रहा। मटुक के साथ सभी सदस्य वीरगति को

प्राप्त हुए।” देवदत्त को अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना मुश्किल हो गया था, इसलिये वह एकदम शांत हो गया। अथर्व यह समाचार मीटिंग के पहले ही जान चुका था। वह किंकर्तव्यमूढ़ सा खड़ा रहा। दीक्षा की चिता की अग्नि अभी बुझी भी नही थी कि मटुक की भी खबर आ गयी।

हॉल में एकदम सन्नाटा छा गया। हर कोई स्तब्ध रह गया। उस समय यदि सुई भी गिरती तो उसकी ध्वनि भी किसी बम के धमाके समान प्रतीत होती।

“लेकिन सर, उनकी मृत्यु की पुष्टि कैसे हुई ? वे जीवित भी तो हो सकते है ना ?” अगली पंक्ति में बैठा ड्राइवर बोल उठा, वह अब भी उस समाचार पर विश्वास नही कर पा रहा था।

“पुष्टि हो चुकी है ड्राइवर। पुष्टि हो चुकी है।” देवदत्त ने इतना ही कहा।

“जब तक हम मटुक की जगह किसी और योग्य योद्धा को नियुक्त नही कर देते, तब तक गाइड तुम मटुक का कार्यभार संभालोगे।” देवदत्त ने गाइड को देखकर आदेश दिया, और बिना उसकी सहमति की प्रतीक्षा किये वह स्टेज से उतर कर हॉल के दरवाजे से निकल गया। देवदत्त ने अपना मित्र खोया था, उसके अंदर भावनाओं का एक भीषण चक्रवात सा उत्पन्न हो रहा था, जिसके मध्य उसकी आत्मा उसका अस्तित्व चक्कर खा रहा था। अथर्व ने उसे रोकने का प्रयास नही किया। वह उनकी मनोदशा को समझता था और यह भी जानता था कि फिलहाल उनका अकेला रहना ही ठीक है।

***

अथर्व उस तंग गली में ट्रैफिक जाम के मध्य फंसा हुआ था। उसकी बाइक पिछले बीस मिनट से एक ही स्थान पर अटकी हुई थी। शक्ति मठ से उसके घर तक मार्ग लगभग तीस मिनट का ही था, वह किसी तरह उस ट्रैफिक में रेंगते हुए अपने मोहल्ले के नजदीक पहुँच रहा था। किसी प्रकार से अब वह उस तंग और ट्रैफिक वाले रास्ते से निकल कर अपनी गली की ओर बढ़ चुका था। वहाँ पहुँचते ही उसने राहत की सांस ली।

देवदत्त आंगन में आरामकुर्सी पर पीठ टिकाये और आँखे मूंदे लेटा हुआ था। सांझ हो चुकी थी। आज अंधड़ चल रही थी, मौसम भी ठंडा था। अथर्व ने मकान के बाहर अपनी बाइक स्टैंड़ पर खड़ी की, वह सीधे देवदत्त की ओर बढ़ा, और उसकी आरामकुर्सी के बगल में ही जमीन पर ही बैठ

गया। देवदत्त ने अपनी आँखे खोली, उसे अथर्व के आने का आभास हो गया था।

"बाबा ! एक महीना हो चुका है, मटुक चाचा की मृत्यु का समाचार प्राप्त हुए। इस एक महीने में आप शक्ति मठ मुश्किल से केवल एक ही सप्ताह आये होंगे। शक्ति मठ को आपके नेतृत्व की आवश्यकता है। आप इस प्रकार कब तक खुद को कष्ट देते रहेंगे ? आप का कर्तव्य आपको बुला रहा हैं।" अथर्व ने देवदत्त के हाथ पर अपना सिर रखा। देवदत्त उसे इस प्रकार बच्चे की तरह हरकत करता देख मुस्कुरा उठा। उसका एक हाथ अब अथर्व के बालों को सहला रहा था।

"मैं अपने कर्तव्य को एक क्षण भी नही भूला हूँ अथर्व। तुम हो ना वहाँ मेरे स्थान पर, तुम्हें मटुक ने प्रशिक्षित किया है। मैं एक माह से देख रहा हूँ, तुम मेरी अनुपस्थिति में मठ को कुशलता से संभाल रहे हो, नियंत्रित कर रहे हो। इसलिये मुझे मठ की चिंता नही है, क्योंकि वह तुम्हारे रूप में एक सुरक्षित नेतृत्व में है।" देवदत्त ने स्वयं से झूठ बोला, वह जानता था अथर्व अभी भी उतना परिपक्व नही हुआ है कि उस पर सम्पूर्ण शक्तिमठ की जिम्मेदारी सौंप दी जाये। वह यह भी जानता था कि मठ के हर सदस्य की कार्यकुशलता एवं आपसी तालमेल के कारण ही अथर्व को अब तक किसी भी प्रकार की कठिनाई नही आयी है।

"आज फिर तुम्हें देर हो गयी ?" कविता आरती की थाली लिये अपने बेटे की ओर बढ़ी। अथर्व फौरन खड़ा हो गया और उसने आरती ग्रहण की, माँ ने उसे प्रसाद दिया जिसे उसने दोनों हाथों की अंजुरियो में पूर्ण श्रद्धा के साथ ग्रहण किया।

"माँ ! एक वाराणसी ही तो बचा था अब तक जो इस दुनिया की मोहमाया से दूर था। अब यहां भी बड़े शहरों की भौतिकता ने अपने पैर जमाने आरंभ कर दिये है। तो अब इसकी आदत डाल लो।" अथर्व ने प्रसाद खाते हुए कहा।

"फिर से ट्रैफिक ?" माँ ने पूछा।

"हाँ ! अब मॉल बनने की कुछ तो कीमत चुकानी होगी ना ? तू फ़िक्र मत कर, मॉल बनते ही सबसे पहले तुझे ही वहाँ ले चलूँगा।" अथर्व ने माहौल हल्का फुल्का करने का प्रयास किया।

"अरे अभी तो काम शुरु किया है। कम से कम दो-चार साल लगेंगे ही, तब तक रोज इस ट्रैफिक को झेलना होगा हमें।" कविता का मुंह बन गया।

“मैं नहा कर आता हूँ, मुझे बड़ी तीव्र भूख लगी है।” कहते हुए अथर्व सीधे बाथरूम की ओर दौड़ गया। कविता उसे देखकर मुस्कुराई।

“देख रही हो कविता। अथर्व कितना बड़ा हो गया है। अपने दुःख को छिपाना सीख गया है अपना बेटा।” देवदत्त के स्वर में दुःख स्पष्ट झलक रहा था। कविता शांत रही। वह जानती थी अथर्व दीक्षा के जाने के बाद से ही अंदर ही अंदर घुल रहा था, टूट सा गया था। रही सही कसर मटुक की मौत ने पूरी कर दी थी।

***

माइकल और माया

दिल्ली (२००८)

माइकल इस समय अपने अंड़र ग्राउंड़ क्लब के निचले हिस्से में मौजूद था। वहाँ बने स्टेज पर नये फाइटर्स रेसलिंग के लिये तैयार हो रहे थे। और दर्शकों का झुण्ड उन पर दांव लगा रहा था। वह दर्शक दीर्घा के मध्य बने अपने पारदर्शी वातानुकूलित केबिन में बैठा हुआ रेसलिंग का आनंद उठा रहा था, अचानक केबिन का दरवाजा खुला। माइकल ने पलटकर देखा, दरवाजे पर माया खड़ा था। माया बाहुपति। उसे देखते ही माइकल का मुंह खुला का खुला रह गया। माया ने फौरन माइकल के आदमियों को उन्हें अकेला छोड़ने का इशारा किया। वे असमंजस में माइकल की ओर देखने लगे।

“हमें अकेला छोड़ दो।” माइकल ने आदेश दिया, इसी के साथ केबिन खाली हो गया। माया को अपने सामने देख वह सम्मान में खड़ा हो गया। माया अब उसी की चेयर पर आराम से बैठा था।

“माइकल अब हमें तुम्हारी जरूरत है।” माया ने एक नजर अरेना में लड़ते रेसलर्स को देखते हुए कहा।

“मैं तो कब से आपके ऑर्डर के इंतजार में हूँ बॉस।” माइकल के मुख पर उत्साह झलक रहा था।

“तुम्हारा बिजनेस कैसा चल रहा है ?” माया ने पूछा।

“एकदम बढिया, क्लब से बढिया कमा लेता हूँ बॉस, और अपना अंड़रग्राउंड़ बिजनेस तो है ही।” माइकल मुस्कुराया।

“मैं तुम्हारे असल बिजनेस की बात कर रहा हूँ। वैपन्स, अर्थात हथियारों की तस्करी की। सुना है नये अत्याधुनिक मॉड़ल के हथियार आये है तुम्हारे पास। मिलिट्री ग्रेड़ से भी ऊपर के हथियार, जो अभी अपने परीक्षण के प्रारम्भिक चरण में ही है, उसकी भी एक भारी खेप तुम्हारे पास आ चुकी है।” माया ने खुरदुरे स्वर में कहा।

“सब इंटरनैशनल कॉन्टेक्ट्स और पहुँच का कमाल है बॉस, आप तो सब जानते ही है आपसे भला क्या छुपा है।” माइकल कुटिल हंसी हंसा।

“तो अब काम करने का समय आ गया है। वैपन्स तैयार रखो, और जगह नोट करो जहां पहुँचाना है और अब थोडा अपने हाथ पांवो को भी काम करने दो, तैयार हो जाओ। जिस दिन की हमें इतनें दिनों से प्रतीक्षा

कर रहे हैं, वह दिन आ चुका है।” माया ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा। माया की आँखों में झाँकने का दुस्साहस माइकल नही कर पाया।

“मिशन पर तुम भी जाओगे, फ्रैंक की अगुवाई में।” माया बोला।

“मैं अकेला काफी हूँ बॉस। फ्रैंक को क्यों शामिल कर रहे हैं ?”

“मैंने कहा ना, फ्रैंक की अगुवाई में ही तुम्हें काम करना है। मेरे लिये मिशन महत्वपूर्ण है, और मैं किसी भी प्रकार का रिस्क नही लेना चाहता। इतने वर्षो की खोज के बाद आज हमें यह अवसर प्राप्त हुआ है माइकल। पीढियां गुजर गयी इसकी खोज में लेकिन यह सौभाग्य केवल हमारे हिस्से में लिखा था। तो इसकी कद्र करना सीखो, और समझो। मैं खुद भी आता, लेकिन मुझे ‘रिएक्टर’ पर काम करना है, वह भी जरुरी है। “ माया के स्वर में सख्ती थी।

“सॉरी बॉस ! मैं तैयार हूँ। मुझे लोकेशन बता दीजिये।” माइकल ने अटकते हुए कहा। वह माया के सामने खुद को बोलने में असमर्थ पा रहा था।

“ बनारस! बनारस पहुंचना है, तुम अपनी टीम को रेडी करो, फ्रैंक अपने दल के साथ तुम्हें रिसीव कर लेगा। वैपन्स बनारस ही पहुंचा दो। अपने एजेंट्स और वैपन्स दोनों अलग अलग जायेंगे। हमारे पास टारगेट की सम्पूर्ण ब्लू प्रिंट रेडी है, हमारे ‘माया कंस्ट्रक्शन एंड़ डेवलपमेंट्स” के हथियाये हुए कॉन्ट्रैक्ट के ‘मॉल’ के कंस्ट्रक्शन लोकेशन पर हथियार प्लेस करवा दो। बाकि के इंस्ट्रक्शन्स तुम्हें फ्रैंक से मिल जायेंगे।” कहते हुए माया उठ खड़ा हुआ।

“बॉस ! आप पहली बार मेरे क्लब में आये है, खातिरदारी का मौका तो दो।” माइकल ने कहा तो माया मुस्कुरा दिया।

“माइकल, तुम्हारी खातिरदारी का लुत्फ़ मैं जरुर उठाऊंगा। लेकिन बनारस से वापसी के बाद।” कहते हुए माया ने दरवाजा खोला और बाहर निकल गया। माइकल अपने स्थान पर बुत बना खड़ा रहा।

***

मिशन बनारस

वाराणसी में अलग-अलग दिशाओं से अनेक गाड़ियां एक निश्चित दिशा की ओर बढ़ रही थी। वे कुल दस गाड़ियां थी, जिसमे हर गाडी में लगभग चार व्यक्ति सवार थे। अलग अलग इलाकों से होते हुए वह काफिला अब उस निर्माणधीन मॉल की ओर बढ़ रहा था। मॉल का परिसर चारों ओर से टीन की पन्द्रह फीट ऊँची बाउंड्री से घिरा हुआ था। टीन की उस बाउंड्री के पार विशालकाय हाइड्रोलिक मशीनें अपने अपने काम में व्यस्त थी। निर्माणधीन इमारत होने के कारण वहाँ चारों ओर धूल मिटटी एवं शोर शराबे का ही साम्राज्य था। मॉल की नींव के लिये एक लाख स्क्वेयर फीट की जगह पर इतने विशालकाय फाउंडेशन बनाये गये थे कि उसमे एक पूरी तीन मंजिला इमारत ही समा जाये। अलग-अलग समय पर कुछ अंतराल के पश्चात अलग-अलग मॉड़ल की वे गाड़ियां एक के बाद एक मॉल परिसर में पहुँच चुकी थी। वे सभी मॉल के अधूरे निर्माण कार्य के विभिन्न हिस्सों में बिखर गये। अब उन्हें प्रतीक्षा थी माइकल और फ्रैंक की जो आखिरी गाडी में थे। मॉल के बैरिकेड़ से कुछ ही मीटर दूरी पर उनकी कार थी, ट्रैफिक होने के कारण वे काफी देर से फंसे हुए थे। फ्रैंक इस ट्रैफिक और शोर शराबे से खुद को बेचैन महसूस कर रहा था, माइकल चुपचाप पिछली सीट की विंडो से बनारस की तंग गलियों को निहार रहा था, उसकी आँखों में इस समय एक विचित्र सी क्रूरता के भाव थे।

“डैम!! हद्द है, इतनी ट्रैफिक। ब्लडी पीपल विथ नो सिविक सेन्स, गंवार, जाहिल कहीं के, हर जगह लेन क्रॉस कर रहे है। बीच सड़क पर कोई भी घुसा चला आ रहा है और ये हॉर्न बजाने की कौन सी सनक है इन्हें ? इनको ऐसा क्यों लगता है कि हॉर्न बजाने से सारी प्रॉब्लम दूर हो जायेगी। ये मार्केट, ये सड़कों पर बहती भीड़। मन तो कर रहा है अभी बाहर निकलूं और शूट कर दूँ एक एक को।” फ्रैंक झल्ला रहा था। माइकल उसे देखकर मुस्कुराया, वह जानता था कि फ्रैंक भले एक अरसे से भारत में रह रहा था, किन्तु वह अंदर से एक यूरोपियन ही था, उसे भारत की आदत हो ही नही सकती थी।

“शांत रहो फ्रैंक। यह तुम्हारा न्युयॉर्क नही है, यह बनारस है। यहाँ ऐसा ही चलता है, तुम्हारे झल्लाने से सिचुएशन बदलने वाली नही है।” माइकल ने कहा, वह उसकी हालत के मजे ले रहा था। इसी के साथ

गाडी के लिये थोड़ी सी जगह बनी और ड्राइवर ने फ़ौरन गाडी उस जगह से निकाली। इसी के साथ एक जोरदार आवाज हुई। ड्राइवर ने फुर्ती से ब्रेक्स दबाए जिसके परिणामस्वरूप माइकल और फ्रैंक दोनों सामने की सीट पर मुंह के बल जा गिरे। सामने वाली गली से निकलता एक ऑटो सीधे मध्य में आ गया था, और गाड़ी की दाहिनी ओर जा भिड़ा।

पूरा माजरा समझने में दोनों को कुछ पल लगे और इसी के साथ फ्रैंक गुस्से से लाल पीला होते हुए गाडी से बाहर निकला। माइकल फ्रैंक को अपने आपे से बाहर होते देख फुर्ती से बाहर निकला।

“हे ! अंधा है क्या ? देखकर नही चलाता ऑटो ?” फ्रैंक बाहर आते ही चीखा।

“अरे हमारी का गलती है इसमें ? हम तो हॉर्न दिये थे, आप ही ट्रैफिक में गाडी इतना तेज चला रहे हो। हमारा रिक्शा का हेडलाईट भी तोड़ दिया।” ऑटोवाला भी तैश में आ गया था।

“एक तो गलती करता है, ऊपर से हमको ही रुआब दिखाता है ?” कहते हुए फ्रैंक ने गिरहबान पकड़ कर उसे बाहर निकाला। ऑटो वाला शक्तिशाली फ्रैंक के उस झटके से किसी सूखे पत्ते की ही तरह बाहर आ गया। वह एकदम से आक्रामक हुए फ्रैंक को देखकर घबरा गया।

“अरे हम तो केवल अपने नुकसान की ही बात किये थे।” वह घबराते हुए बोला, तब तक पीछे जाम लगना शुरू हो गया था। हॉर्न के निरंतर होते शोर से फ्रैंक और झल्ला उठा। उसने गुस्से ट्रैफिक की ओर देखा। माइकल स्थिति की गंभीरता को समझ रहा था।

“उसे छोड़ दो फ्रैंक। चलो हमारे पास टाइम नही है।” माइकल ने कहा।

“इसे पहले सबक सिखाना पड़ेगा। इनको थोडा समझाना पड़ेगा सिविलाइजेशन और सभ्यता किसे कहते है।” फ्रैंक ने माइकल की बात को अनसुना कर दिया। उसी समय ऑटो में बैठा वह शख्स बाहर निकला। वह अथर्व था, इस समय वह सफ़ेद रंग की शर्ट और काली चुस्त ट्राउजर पहने हुए था। उसके कंधे पर एक लैपटॉप बैग टंगा हुआ था। वह सीधे फ्रैंक की ओर बढ़ा और रिक्शाचालक के गिरहबान पकड़े उसके हाथ को अपनी मजबूत पकड़ में जकड़ लिया। फ्रैंक इस सख्त पकड़ को देख कर अथर्व की ओर मुड़ा।

“तुम कौन हो ? निकलो यहाँ से।” फ्रैंक गुर्राया।

"सिविलाइजेशन और सभ्यता का हवाला देने से पहले खुद बात करने की तमीज सीख लो मिस्टर। मेहमान हो यहाँ के, इसलिये केवल हाथ पकड़ा है।" अथर्व गुर्राया।

"सॉरी सर ! सॉरी। हमें झगड़ा नही करना है, बॉस सीधे एयरपोर्ट से आ रहे हैं, मीटिंग में पहुंचना था। लेकिन इस ट्रैफिक में फंस जाने के कारण परेशान हो गये थे, उनकी तरफ से मैं माफ़ी माँगता हूँ। ऑटो वाले के नुकसान के पैसे मैं देता हूँ।" कहते हुए माइकल ने अपने पर्स से पांच पांच सौ के कुछ नोट निकाल कर रिक्शाचालक की ओर बढ़ा दिये। अथर्व ने फ्रैंक का हाथ छोड़ दिया।

"लेट तो भाई मुझे भी हो रहा है। लेकिन मैं परेशान हूँ, इसका मतलब यह नहीं की मैं दूसरों को परेशान करूँ या उनपर अपनी झल्लाहट निकालूँ। पीछे जाम लग गया है, इससे पहले के वे परेशान हो जाये और अपनी झल्लाहट तुम पर निकालने लगे, निकल लो यहाँ से। क्योंकि तुम्हारे बॉस के हिसाब से ये सब तो जाहिल और अनसिविलाइज्ड, अनएजुकेटेड़ लोग है, तब सोच लो यह अपनी असभ्यता पर आ गये तो क्या हो सकता है।" अथर्व ने फ्रैंक को घूरते हुए कहा। फ्रैंक को अब तक अपनी भूल का एहसास हो चुका था, इस वक्त उसका इन छोटी मोटी चीजों पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाय अपने मिशन पर ध्यान देना ज्यादा जरुरी था। इसलिये उसने मन मारकर नजरें नीची कर ली और भुनभुनाते हुए अपनी कार में बैठ गया।

"मैं फिर से इनकी ओर से माफ़ी मांगता हूँ।" माइकल ने कहा। अथर्व मुस्कुराया।

"तुम तो देसी हो, इन्हें समझाओ कि यहाँ सड़को पर अपना आपा नही खोया करते। हर मोड़ पर इनसे बड़े दबंग बैठे है यहां, जो सभ्यता से असभ्यता पर आने में एक पल भी नही लगाते। ठीक है, अब चलो, आज के लिये बहुत समय व्यर्थ हो गया। भूल चूक माफ़।" कहते हुए अथर्व ने वाकई हाथ जोड़ लिये और वापस ऑटो में जा बैठा। ऑटो स्टार्ट हुआ और चुपचाप अपने गंतव्य की ओर बढ़ गया। माइकल वापस अब कार में था।

"मेरा मन तो किया ...." फ्रैंक भुनभुना रहा था।

"प्लीज फ्रैंक ! मुझे पता नही बॉस ने तुम्हें इस मिशन की अगुआई के लिये क्यों चुना, तुम तो छोटी छोटी बात पर आपा खो देते हो। अब शांत रहो, अपने गुस्से को संभालो, तुम्हें पूरा अवसर मिलेगा अपनी भडास

निकालने का।” कहते हुए माइकल ने ड्राइवर को इशारा किया और गाडी सीधे मॉल की ओर बढ़ गयी।

“अगर वापसी में मुझे यह बंदा मिला,आई विल रियली किल हिम।” फ्रैंक ने दांत पिसते हुए कहा। माइकल उसे देखकर बस मुस्कुरा कर रह गया। कुछ ही देर में वे मॉल के गेट के भीतर प्रवेश कर चुके थे।

***

निर्माणधीन इमारत के एक कोने में गाड़ियों से निकले सभी एजेंट्स इकट्ठे हो चुके थे। वे सभी इस समय सामान्य पोशाकों में थे। फ्रैंक और माइकल के आते ही वे सभी कतारबद्ध खड़े हो गये, वे उनके आदेश के लिये पूर्णतया तैयार नजर आ रहे थे।

“एजेंट्स ! आज वो दिन आ चुका है। युग बीत गये, पीढियां खप गयी लेकिन किसी को भी सफलता नही मिली। क्योंकि सफलता हमेशा उन्हें ही मिलती है जो सफलता पाने के योग्य होते है। हम यहाँ तक आ पहुंचे है, इसका मतलब यही है के हम अब तक की श्रेष्ठ पीढ़ी का नेतृत्व कर रहे हैं और आज इस मिशन में हम कामयाब होकर एक नये इतिहास का पन्ना लिखेंगे और वह इतिहास दानवों एवं राक्षसों की श्रेष्ठता का अध्याय होगा। यह मिशन नही, हमारी परीक्षा है, इस मिशन पर ही हमारा वर्तमान और भविष्य निर्भर करता है। इसीलिये यदि इसमें जान भी जाती है तो यह सोच लो कि तुम्हारी एक जान हमारे सुनहरे भविष्य के नींव की एक इमारत बनेगी। एक बेहतर भविष्य, बेहतर दुनिया, बेहतर दानव समाज के लिये तैयार हो जाओ।” फ्रैंक उत्तेजना से चीखा। उसके स्वर में उत्साह था जिसने वहाँ उपस्थित सभी चालीस एजेंट्स के रक्त में एक नये उत्साह का संचार कर दिया था।

माइकल ने वहाँ उपस्थित एक क्रेन ऑपरेटर को संकेत किया। ऑपरेटर ने फ़ौरन क्रेन शुरु की, एक गहरे फाउंडेशन में बने दलदल में क्रेन का हुक धंसा और उसमे से एक पन्द्रह फीट लंबा और छह फीट चौड़ा कीचड़ में सना हुआ लोहे का बक्सा हुक से लटका हुआ बाहर निकल आया। क्रेन ने वह भारी बक्सा माइकल के ठीक सामने रखा। फ्रैंक के इशारे पर दो एजेंट्स ने आगे बढ़कर बक्से का लॉक खोल दिया। बक्से के खुलते ही उसमे करीने से सजे अत्याधुनिक हथियार स्पष्ट दिखायी देने लगे थे। ये हथियार थोड़े थोड़े हिस्सों में माइकल ने पहले ही प्लांट कर दिये थे। सभी हथियार अत्याधुनिक, ऑटोमेटिक और लेटेस्ट टेक्नोलोजी के थे। सभी ने अपने अपने हथियार ले लिये, मैंगजीन्स चेक की।

एक्स्ट्रा मैंगजीन्स की बेल्ट्स सभी के पास थी। छोटे मगर शक्तिशाली विस्फोटकों के पाउच से लदी यूटिलिटी बेल्ट्स कुछ ख़ास और कुशल एजेंट्स को सौंपी गयी। कुछ ही देर में सभी चालीस एजेंट्स सेना की किसी टुकड़ी की भाँति ही नजर आने लगी थी और जिन हथियारों से वह सुसज्जित थी, वह आसानी से किसी बड़े युद्ध को जीतने की क्षमता रखती थी। खुद माइकल और फ्रैंक ने भी अपने अपने मनपसन्द हथियार चुन लिये थे।

“यहाँ उपस्थित सभी एजेंट्स के दिमाग में मठ का नक्शा अच्छे से फीट होगा। हमने यहाँ आने से पहले उसे अच्छे से रट लिया था। तो अब हमें ज्यादा परेशानी नही होनी चाहिये। मॉल के नार्थ पिलर के फाउंडेशन से मठ की भीतरी दीवार पच्चीस मीटर की दूरी पर है, हमने 24 मीटर की दूरी तक फाउंडेशन की गहराई से ही सुरंग बना ली है। केवल एक मीटर की दीवार हमारे बीच है, उसे छेड़ा नही गया है क्योंकि उस जगह पर हरकत होते ही मठ के अत्याधुनिक सेन्सर्स उस हरकत को कैच कर लेते। इसलिये उस एक मीटर की दूरी को हमने आज के लिये सुरक्षित रखा है। हम अपने विस्फोटकों के सटीक इस्तेमाल से उसे एक झटके में तोड़ सकते है और उसके टूटते ही, रक्षा दल भले ही हरकत में आ जाये लेकिन हमें उन्हें चौंकाने का अवसर मिल जायेगा। जब तक वे मठ पर हुए आक्रमण के बारे में समझ भी पायेंगे तब तक हम उनके आधे सैनिकों को समाप्त कर लेंगे, और बाकी आधे तो ठीक से तैयार भी नही हो पाएंगे। याद रखो, यह अंतिम अवसर है, यहाँ तक आने के पश्चात मरने की भी इजाजत नही है। गर्भगृह में पहुँचते ही हमारी दूसरी टीम जो गंगा नदी के तट पर हमारे सिग्नल का वेट कर रही है, फौरन हरकत में आ जायेगी और दोनों तरफ से हमला शुरू हो जायेगा। रक्षा दल के संभलने से पहले ही हम उसे समाप्त कर चुके होंगे।” कहते हुए फ्रैंक अपनी गन सम्भाले मॉल के नार्थ फाउंडेशन की ओर बढ़ गया। सभी अपनी घड़ियाँ मिला चुके थे। अपने ट्रांसमीटर्स और रिसीवर्स चेक कर चुके थे। गन्स अनलॉक कर दी गयी थी। एजेंट्स किसी सेना की बटालियन की भाँति ही एक लय में फ्रैंक के पीछे हो लिये। फ्रैंक ने नींव की गहराई को देखा, यहाँ से कूदने का मतलब था अपनी हड्डियां तुड़वा लेना। चूँकि वह एक दानव था इसलिये उसे इतना फर्क न पड़ना था, इसके बावजूद वह अपनी सारी ऊर्जा बचायें रखना चाहता था। नींव के लिये बने उस दो मंजिले गड्ढे में सीढियां लटका दी गयी और देखते ही देखते पूरी टुकड़ी गड्ढे में उतर चुकी

थी। उस गड्ढे में पिंड़लियों तक पानी भरा हुआ था। लेकिन किसी को भी उस गंदले पानी और कीचड़ की जरा भी परवाह नही थी। फ्रैंक ने नींव के एक हिस्से में बनी दरार को देखा, वहाँ रखे हुए भीमकाय पत्थर को किसी खिलौने की ही भांति खिसका दिया। पत्थर के हटते ही सुरंग का द्वार स्पष्ट नजर आने लगा था।

उसके इशारा करते ही सभी ने अपने अपने गैस मास्क पहन लिये जो वे अपने साथ लाये थे। पूरी टुकड़ी अब उस सुरंग में प्रवेश कर रही थी। सुरंग कम से कम तीन हट्टे कट्टे व्यक्तियों के समा जाने लायक चौड़ी थी। कुछ ही देर में वे सुरंग के अंतिम छोर पर थे जहाँ मठ और उनके मध्य मात्र एक मीटर का अवरोध था। अब माइकल की बारी थी। उसने अपनी कमर में बंधी यूटिलिटी बेल्ट में से एक लड़ी निकाली, यह लड़ियाँ उसी प्रकार की थी जिस तरह की अक्सर दीपावली में घरों को सजाने में प्रयोग की जाती थी। माइकल ने उन लड़ियों को उस दीवार पर फिट करने में पन्द्रह मिनट का समय लिया।

“काम हो गया है। सभी कम से कम दस मीटर दूर हो जाये।” कहते हुए माइकल पीछे हटा। फ्रैंक के एक इशारे पर सभी ने अपनी गन्स का रुख उस दीवार की ओर कर दिया, वे अब किसी भी क्षण फायरिंग के लिये पूर्णतया तैयार थे।

***

देवदत्त इस समय अखाड़े में था। वह अक्सर अखाड़े में अपने युद्धाभ्यास में समय व्यतीत करने लगा था। रक्षा दल के सभी सदस्य अच्छे से जानते थे इस अखाड़े से देवदत्त और मटुक का कितना गहरा लगाव था। देवदत्त इस समय केवल एक धोती में था। उसकी नग्न पीठ एवं छाती पर पसीने की असंख्य बूंदे झिलमिला रही थी, जो इस बात का प्रमाण थी कि देवदत्त आज काफी समय से युद्धाभ्यास कर रहा था। वह मटुक की मृत्यु से भले ही टूट गया था, किन्तु इससे उसके अभ्यास में कभी रुकावट नही आयी। वह मठ के प्रति अपनी जिम्मेदारियों से भलीभाँति परिचित था, अपनी अनुपस्थिति में भी गाइड, ड्राइवर और अथर्व के जिम्मेदार कंधो पर मठ की जिम्मेदारी सौंप रखी थी, जिसे वे कुशलता से निभाते आ रहे थे। आज देवदत्त को जल्दी आना पड़ा क्योंकि अथर्व आज इंटरव्यू के लिये गया हुआ था। अथर्व अपने नये जीवन की शुरुआत करने जा रहा था। गाइड और ड्राइवर दोनों इस समय सारनाथ और दिल्ली में थे। वे उस सैलानी के लिंक और सुराग खोज रहे थे जिसे

पिछले हफ्ते सारनाथ से बंदी बनाया गया था। मटुक ने उसके मुंह से रक्ष दल के ठिकाने का पता अवश्य उगलवा लिया था, लेकिन मटुक के भीषण टॉर्चर के बाद अत्याधिक रक्त बह जाने और असह्य पीड़ा के कारण उसकी मौत हो गयी थी। उसकी मौत के बाद ही सारे रास्ते बंद हो चुके थे। देवदत्त ने अपने सिर को झटका और विचारों की तंद्रा से बाहर निकला। वह स्नानागार की ओर बढ़ा। उसे इस समय स्नान करने की तीव्र इच्छा हो रही थी। पसीने से उसका सम्पूर्ण शरीर चिपचिपा हो गया था। पुराने विचारों ने उसके सिर को भारी कर दिया था। ठंडे पानी के फुहार तले उसे राहत महसूस हुई। उसके तप्त शरीर पर पानी की ठंडी बौछार पड़ी और उसका भारी मस्तिष्क हल्का होता प्रतीत हुआ। उसने स्वयं को पानी की फुहारों के मध्य छोड़ दिया। लगातार गिरती बूंदों से उसका शरीर हल्का हो गया और मन शांत हो गया।

उसकी आँखे अभी भी बंद थी। एक भीषण विस्फोट के स्वर से उसकी आँखे खुल गयी। विस्फोट मठ के उत्तर कक्ष की ओर हुआ था। अभी वह कुछ समझ पाता उससे पहले ही एक और कर्णभेदी विस्फोट की आवाज से सम्पूर्ण मठ दहल उठा। देवदत्त ने अपने पैरों तले भूमि में होते कंपन को स्पष्ट महसूस किया। धमाके के तुरंत बाद गोलियों की तड़तडाहट से सम्पूर्ण मठ गूंज उठा। धमाके, धूल एवं आग की लपटों से मठ का उत्तरी हिस्सा ध्वस्त हो रहा था। देवदत्त समझ चुका था कि मठ पर आक्रमण हो गया है। वह फौरन स्नानागार से बाहर निकला। चारो ओर अफरातफरी का माहौल था। रक्षा दल का हर सदस्य अचानक हुए इस हमले से स्तब्ध था। इसके पश्चात भी जो संभल चुके थे वे अपने अपने हथियार संभाल कर मठ के उस भाग की ओर बढ़ रहे थे जहाँ से गोलियाँ चलने की आवाजें सुनाई दे रही थी। माइकल और फ्रैंक अब अपने दल बल सहित शक्ति मठ के भीतर दाखिल हो चुके थे। दाखिल होते ही उन्होंने अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी थी। जब तक कोई कुछ समझता तब तक असावधान खड़े रक्षा दल के अनेक सदस्य मारे गये। रक्षा दल के सदस्यों ने अब हथियार संभाल लिये। शक्ति मठ भव्य और विशाल अवश्य था, किन्तु उसके भूमिगत होने के कारण आग और धुएं से वहाँ का वातावरण घुटन भरा हो रहा था। फ्रैंक अपने मास्क में मुस्कुराता हुआ दोनों हाथो में थामी ऑटोमेटिक गन्स से फायरिंग करते हुए आगे बढ़ा। माइकल के चेहरे पर भी वहशियत स्पष्ट दिखायी दे रही थी। उसकी गन से गोलियाँ निरंतर चल रही थी। गोलियों के खाली कनस्तर मठ की धरती पर गिर रहे

थे। वे अनगिनत थे और हर ओर बिखरे पड़े थे। माइकल ने अपनी कमर में टंगी एक गन निकाली, वह किसी लॉन्चर का ही मिनी वर्जन था। जिसकी गोलियाँ असामान्य रूप से तीन इंच मोटी एवं आठ इंच लंबी थी। एक बार में उसमे कुल चार गोलियाँ भरी जा सकती थी, और चेम्बर इस समय गोलियों से भरा हुआ था।

“अब मेरी इस गन का कमाल देखो फ्रैंक। इसकी एक गोली एक ग्रेनेड़ के समान है, यूँ समझो यह मेरा छोटा लेकिन शक्तिशाली ग्रेनेड़ लॉन्चर है, इसकी गोलियों में शक्तिशाली विस्फोटक है, जो ट्रिगर दबाते ही लक्ष्य के चीथड़े उड़ा देते है।” कहते हुए माइकल ने गलियारे से आती हुई टुकड़ी पर लक्ष्य साध कर गोली चला दी। वह गोली टुकड़ी के एक सैनिक के सीने को भेद गयी और उसी समय उसमे विस्फोट हो गया। विस्फोट इतना शक्तिशाली था कि उसके साथ वाले छह सैनिकों ने भी उसकी चपेट में आकर प्राण त्याग दिये। गलियारे के दीवार के भी परखच्चे उड़ गये थे।

“आगे बढो, रास्ता साफ़ है, इस गलियारे से आगे ही मुख्य हॉल और अखाड़ा है, और उसके पश्चात मठ का गर्भगृह है। एक टुकड़ी यहीं रहेगी, दूसरी टुकड़ी मठ के प्रवेशद्वार की ओर बढ़ेगी ताकि वहाँ से रक्षा दल के सैनिक आक्रमण ना कर पाये, हमारी टुकड़ियां दस दस की संख्या में रहेंगी, जो मठ के विभिन्न हिस्सों पर चरणबद्ध तरीके से आक्रमण करेगी।” फ्रैंक ने पहले से तय योजना एक बार फिर से दोहराई। घातक विस्फोटक अस्त्रों से लैस दस सैनिकों का एक दल मुख्य द्वार की ओर बढा, ऑटोमैटिक बन्दूको से सज्ज दल वही मठ के मध्य में पोजीशन संभाले रहा। तो फ्रैंक के साथ दस और माइकल के साथ दस सैनिक हो लिये। वे निरंतर गोलियों एवं गैस बमों का भी प्रयोग कर रहे थे। धूल, धुंये के घने बादल गलियारे में छाने लगे थे, लेकिन फ्रैंक के सभी सैनिक गैसमास्क से सुसज्ज थे इसलिये उन्हें इससे कोई परेशानी नही हो रही थी। रक्षा दल के सैनिक इस धुंध एवं धुएं में जब तक कुछ सोच समझ पाते तब तक उनके शरीर में अनगिनत गोलियाँ अपना स्थान बना लेती। अकेले फ्रैंक ने ही अब तक दस मठ वासियों को मार गिराया था, माइकल ने अपनी मिनी गन से चार सैनिकों को संभलने से पहले ही मार गिराया। मठ में अब आग फैलने लगी थी और धुंआ घना होने लगा था, जहरीली गैस अपना असर दिखा रही थी। जहरीली गैस के चपेट में आने से ही मठ के अनेक सदस्य बिना लड़े ही मारे जा रहे थे। यह उनके लिये भयानक

बेबसी वाली मौत थी। वे योद्धा थे और इस तरह की मृत्यु उन्हें स्वीकार नही थी। किन्तु मृत्यु के किसी के स्वीकार होने या ना होने कोई फर्क नही पड़ता वह निर्दयी है, उसे बस प्राण हरना है और वह हरकर ही रहती है। इसी समय मठ की छत से पानी की फुहारें छूटने लगी। यह मठ की सुरक्षा व्यवस्था का ही हिस्सा था, जो आग और गैस जैसी किसी चीज से बचाने के लिये बनाया गया था।

पानी की फुहारों से मठ की आग मंद पड़ने लगी और धुंआ भी बैठने लगा। इसी के साथ मठ के विभिन्न हिस्सों में लगे शक्तिशाली वेंटिलेशन एवं एक्झोस्ट भी शुरु हो गये। जो जहरीली गैस और धुंए को मठ से बाहर खींच कर मठ का वातावरण श्वास लेने लायक बनाने लगे। माइकल और फ्रैंक कुछ क्षणों के लिये अचानक हुए इस बदलाव से चौंके। माइकल की तंद्रा तब भंग हुई जब उसने अपने समक्ष किसी को खड़े पाया। धूल के बादलों के मध्य एक व्यक्ति खड़ा था। मठ के इलेक्ट्रिसिटी सप्लाई के अनेक हिस्सों में से कुछ हिस्से क्षतिग्रस्त होने के कारण वहाँ की लाइट्स कांप रही थी और गलियारे का आधा हिस्सा अँधेरे में डूब चुका था। आपातकालीन लाइट्स ऑन हो चुकी थी, जिसके मद्धिम लाल प्रकाश में पानी से भीगा हुआ वह व्यक्ति मानो रक्त में नहाया सा प्रतीत हो रहा था। वह देवदत्त था, केवल एक चुस्त पैंट पहने उसका ऊपरी शरीर पूर्णतया नग्न था और पसीने एवं पानी की बूंदों से, आग और धूल से भरे इस वातावरण में मानो किसी अंगार की भाँति दहकता सा प्रतीत हो रहा था। वह इस कायराना आक्रमण से अत्याधिक क्रोधित था। माइकल जब तक अपनी गन उठाता तब तक देवदत्त के पैर फर्श पर फिसलते हुये माइकल के घुटनों से जा टकराए, माइकल झुका ही था कि देवदत्त ने अपनी कुहनी से उसकी ठोड़ी पर प्रहार कर दिया। ठोड़ी पर हुए इस शक्तिशाली प्रहार के कारण उसके निचले दांत ऊपरी दांतों से जा टकराए और दो दांत जबड़ा फोड़ कर बाहर उसके मास्क में जा गिरे। माइकल के आँखों के आगे अँधेरा साया छा गया। देवदत्त ने अपनी कमर बंधे अर्ध चक्राकार तलवार को निकाल लिया था, उसके एक ही प्रहार में माइकल का निश्चित रुप से दो भागों में विभक्त हो जाना तय था, किन्तु माइकल के साथ आयी टुकड़ी ने देवदत्त को निशाना बना कर फायरिंग शुरु कर दी। देवदत्त यदि सही समय पर अपने स्थान से ना उछलता तो अनगिनत गोलियाँ उसके शरीर में समा चुकी होती। देवदत्त ने उछलते ही अपने अर्धचक्र को घुमा कर किसी बूमरेंग की भाँति ही उन सैनिको की

ओर फेंका था, वह घूमते और लहराते हुए सैनिकों के मध्य से गुजर कर पुन: देवदत्त की ओर मुड़ा। देवदत्त ने अपनी तरफ आते उस चक्र को पुन: थाम लिया।

माइकल अपना मुंह पकड़े फर्श पर लेटा हुआ था, वह अपने सैनिकों की ओर देख रहा था जिन्होंने फायरिंग बंद कर दी थी और स्तब्ध खड़े थे। उसके तीन सैनिकों के शरीर के कमर के ऊपरी हिस्सें शरीर से कट कर फर्श पर जा गिरे। तीनों सैनिक पलक झपकने से भी पहले दो टुकडों में कट चुके थे। देवदत्त के चक्र ने अपना सटीक प्रहार किया था। माइकल ने फौरन अपना लॉन्चर चला दिया, देवदत्त अपने स्थान से उछला किन्तु यही चूक हो गयी। देवदत्त इसे कोई मामूली गोली समझ कर केवल बचा गया था, लेकिन वह गोली गलियारे की दीवार से टकराते ही शक्तिशाली विस्फोट हुआ। देवदत्त को विस्फोट की कतई उम्मीद नही थी, वह विस्फोट से हुए भयंकर झटके से किसी गेंद की तरह हवा में उछलकर गलियारे की टूटी दीवार से जा टकराया। टक्कर जबर्दस्त थी। देवदत्त को अपनी पसलियाँ टूटी हुई स्पष्ट महसूस हुई। उसके मुंह से खून निकल रहा था जिससे स्पष्ट था की सीने पर भयंकर दबाव पड़ा है। उसका चक्र भी हाथ से छूटकर फर्श पर जा गिरा था। माइकल ने पुन: अपना लॉन्चर चलाने के लिये ट्रिगर दबाया लेकिन उसकी गोलियाँ खाली हो चुकी थी। उसने झल्लाते हुए अपनी लोडेड़ गन को निकाला। यदि उसकी गोलियाँ समाप्त नही हुई होती तो देवदत्त की मृत्यु सुनिश्चित ही थी। दूसरी गन निकालने में कुछ मात्र दो से तीन सेकंड्स ही लगे होंगे और देवदत्त ने ये सेकंड्स व्यर्थ नही जाने दिये। माइकल की गोली चलने से पहले ही वह अपना स्थान बदल चुका था। माइकल केवल दीवार पर गोलियाँ चलाते रह गया, देवदत्त ने सही समय पर खुद को उस टूटी दीवार के पिछले हिस्से में उछाल लिया था, क्योंकि यही वह क्षण था जब माइकल के बचे हुए सैनिकों की ओर से अनगिनत गोलियाँ भी देवदत्त की ओर बढ़ चुकी थी। लेकिन सभी गोलियाँ दीवार से टकराकर व्यर्थ साबित हुई।

“कीप फायरिंग ! वह दीवार के पीछे ही है, छोड़ना नही।” माइकल चीखा, उसके सैनिक अब लगातार फायरिंग कर रहे थे। माइकल को अपने लॉन्चर को रीलोड़ करने का समय मिल गया था। उसने बिना क्षण गंवाए गोलियां लोड़ की। देवदत्त गोलियों की बौछार से बचने के लिये दीवार के पीछे लेट गया। गोलियों की बाढ़ से दीवार के हिस्से तक

बिखर रहे थे। इस समय देवदत्त को एक गन की अत्यंत आवश्यकता थी। उसे किसी तरह से अपने आयुध कक्ष तक पहुंचना था, लेकिन वहाँ तक जाने का रास्ता माइकल के सैनिकों के मध्य से होकर गुजरता था। सारे मठ में निरंतर गोलियों का शोर और चीखों पुकार मची हुई थी, देवदत्त जानता था कि मठ के आधे सदस्य इस समय निहत्थे है, इसके बावजूद वे अंतिम श्वास तक लड़ रहे होंगे। जिनके पास शस्त्र है वे अवश्य इनको घातक नुकसान पहुंचा रहे होंगे, लेकिन इसके बावजूद दानव दल का पलड़ा भारी होगा क्योंकि वे युद्ध की तैयारी के साथ ही आये थे और मठ में किसी को भी अचानक से इस तरह के आक्रमण का अंदेशा तक नही था। लेकिन चाहे जो भी हो जाये देवदत्त हार नही मान सकता था, वह जानता था उसके हारने का अर्थ है युगों से चलती आ रही परंपरा का नष्ट हो जाना और उसके जीवित रहते उसे यह कतई स्वीकार नही था। इसी बीच माइकल ने अपना लॉन्चर साध लिया था, उसने ट्रिगर दबाया और उस एक गोली ने आधी दीवार एक धमाके के साथ उड़ा दी। उस विस्फोट से उठी तरंगो से बचने के लिये देवदत्त ने अपने घुटनों को अपने सीने पर मोड़ कर सर झुका कर दोनों हाथो से पैरों को कस लिया। इसके बावजूद वह विस्फोट की तरंगो से पूर्णतया बच नही पाया और उसका सम्पूर्ण शरीर कांप उठा। वह घिसटते हुए दीवार कई फीट दूर चला गया। सारे शरीर पर छिलने और घिसटने के जख्म स्पष्ट दिखायी दे रहे थे। माइकल मुस्कुराया, अब वह जानता था इस बार देवदत्त नही बचेगा। देवदत्त अब खुले में था, माइकल और उसके सैनिकों ने अपनी गन्स का रुख देवदत्त की ओर किया, देवदत्त का दिमाग तेजी से दौड़ रहा था, किन्तु वह इतना तेज नही था कि ट्रिगर दबने और गोली निकलने से पहले कुछ सोच भी पाये। अचानक से दूसरे छोर से गोलियाँ चली, यह गोलियाँ माइकल के सैनिकों के शरीर में आ धंसी, गलियारे के दूसरे छोर पर मठ के अन्य सैनिक अब पूर्णतः संभल चुके थे, वे अपने हथियारों के साथ अब वहाँ मोर्चा संभाल चुके थे।

उनकी गोलियों से माइकल के कई सैनिक मारे गये, खुद माइकल ने स्वयं को फर्श पर गिरा कर गोलियों से छलनी होने से बचाया। मठ के सैनिकों ने देवदत्त की ओर एक एम फोर कार्बाइन सरका दी। देवदत्त ने अद्भुत फुर्ती दिखाते हुए कार्बाइन लपक ली और तुरंत हरकत में आ गया, उसके अचूक निशाने सीधा माइकल के सैनिकों की खोपड़ियो में सुराख करने लगे। देवदत्त के गन से छूटी हर गोली या तो सीना चीरती

या खोपड़ी तोड़ती। वह सटीक प्रहार कर रहा था। माइकल की हालत खस्ता हो गयी। उसकी सम्पूर्ण टुकड़ी ही अब समाप्त हो चुकी थी। गलियारे के फर्श पर मानव मांस के टुकड़े, और रक्त के छींटे बिखरे पड़े थे। उस गलियारे का कोई भाग ऐसा शेष नही था जहाँ रक्त ना हो।

माइकल ने फौरन खुद को बचाने के लिये अपनी गन से एक के बाद एक फायर किये, उसकी गोलियों से लगातार दो विस्फोट हुए, देवदत्त ने उससे बचने के लिये छलांग लगायी, अभी उसका शरीर हवा में ही था कि धमाका हो गया और उस धमाके से उसका शरीर विपरीत दिशा में कई फीट तक उछल गया और पथरीले फर्श से जा टकराया। टकराते ही, उसकी आँखों के आगे अँधेरा छाने लगा। उसने बंद होती आँखों से देखा, मठ के सैनिक धमाकों से बुरी तरह घायल हो चुके थे। जो अब तक अपने पैरों पर खड़े थे वे माइकल पर गोलियाँ चला रहे थे। माइकल की सहायता के लिये फ्रैंक की टीम भी तब तक पहुँच चुकी थी। फ्रैंक की टुकड़ी ने आते ही आक्रमण कर दिया, उनकी चलाई अंधाधुंध गोलियों ने मठ के सैनिकों के पाँव उखाड़ दिये। वे ज्यादा समय तक उनके सामने टिक नही सकते थे।

देवदत्त की आँखों बंद हो चुकी थी। उसके कान अब तक धमाके, चीखें और गोलियों की तड़तडाहट सुन सकते थे।

***

शक्ति मठ का भूतल मानों भूकंप से कांप रहा था। देवदत्त के नेत्र खुले, उसका सम्पूर्ण शरीर दुःख रहा था। शरीर का रोम रोम कांप रहा था। अपने ही रक्त में वह नहाया हुआ था। सम्पूर्ण फर्श पर गाढ़ा लिजलिजा रक्त फैला हुआ था। उसने अधखुले नेत्रों से मठ के मुख्य कक्ष अर्थात गर्भगृह की ओर देखा। गर्भ गृह का द्वार खुला हुआ था। यंत्रणा एवं आयुध कक्ष पूर्णतया अब आक्रमणकर्ताओं के कब्जे में थे। सम्पूर्ण मठ में गोलियों की एवं चीखने की आवाजे निरंतर आ रही थी। देवदत्त को बेसुध होकर आधा घंटा हो चुका था। मठ के अन्य हिस्सों में सुनाई देती गोलीबारी और विस्फोटों के स्वरों से पता चल रहा था कि युद्ध अब भी जारी है। देवदत्त का सम्पूर्ण शरीर मानों सुन्न पड़ा हुआ था। उसके कानों में मठ के सैनिकों की चीखे स्पष्ट सुनाई दे रही थी। वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति इकट्ठी करके उठने का प्रयास करने लगा। दानव शिवलिंग तक पहुँच चुके थे, मठ की दीवारें जगह जगह से ढ़ह रही थी। वह किसी प्रकार अपनी सम्पूर्ण शक्ति बटोर कर उठ खड़ा हुआ। उसका अर्ध चक्र

उससे कुछ ही दूरी पर फर्श पर पड़ा हुआ था। अथर्व ने उसे उठा लिया और गर्भगृह की ओर चल पड़ा। उसकी आँखे इस समय सुलग रही थी। उसका शरीर उसके ही ताप से मानो सुलगने को आतुर था। हर बढ़ते पग के साथ ही मानो देवदत्त की खोई हुई शक्ति संचित होती जा रही थी। वह गर्भ गृह के द्वार पर था। द्वार खुला हुआ था, गर्भ गृह का दृश्य देखकर उसका चेहरा क्रोध से विकृत सा होने लगा। माइकल और फ्रैंक अपने दल के साथ उस शिवलिंग को अपने मुख्य स्थान से हटा चुके थे। शिवलिंग भार में काफी अधिक होने के कारण उनका सम्पूर्ण दल हांफ रहा था। शिवलिंग को अपने मुख्य स्थान से हटा देखकर देवदत्त क्रोध से फुंफकार उठा।

“हर हर महादेव !” चीखते हुए देवदत्त ने अपना अर्धचक्र घुमा कर दानवों की तरफ फेंक दिया। माइकल उस अर्धचक्र की शक्ति से परिचित था उसने फौरन फ्रैंक पर छलांग लगाकर उसके साथ खुद को जमीन पर लिटा दिया। दुधारी अर्ध चक्र विद्युत् की गति से बूमरैंग की भाँति घूमते हुए आया और चार एजेंट्स के सिरों को धडो से विभक्त कर गया। चक्र पुन: घूमते हुए देवदत्त के हाथो में आ चुका था। फ्रैंक की आँखे यह दृश्य देखकर फटी की फटी रह गयी। देवदत्त काफी थक चुका था उसमे अब इतनी ऊर्जा शेष नही बची थी कि चक्र को पुन: उसी गति में उछाल सके। इसलिये वह उस अर्धवृत्ताकर दुधारी तलवार को मध्य में थामे हुए ही दानवों के बीच दौड़ पड़ा। जब तक वे अपने हथियार उसकी तरफ तानते तब देवदत्त की घातक तलवार दो एजेंट्स की कलाइयां काट चुकी थी। कलाइयां कटने के पश्चात देवदत्त ने बिना एक भी क्षण व्यतीत किये उनके सर एक ही प्रहार में अलग कर दिये। लेकिन इसी क्षण एक गोली उसकी छाती के मध्य आ लगी। फ्रैंक ने अपने अचूक निशाने बाजी का प्रदर्शन किया और दूसरी गोली भी देवदत्त की छाती को चीरती चली गयी। देवदत्त के हाथ अब तलवार थामने में सक्षम नही थे। वह घुटनों पर बैठ गया। उसके गिरते देख एक सैनिक ने अपनी गन कंधे पर टांग ली और अपनी कमर से एक लंबा मिलिट्री नाइफ लिये आगे बढ़ा, उसका इरादा देवदत्त को भी उसी प्रकार से मारने का था जिस प्रकार उसने उसके साथियो को मारा था। वह उसका सर काटने को उत्सुक था। लेकिन जैसे ही वह देवदत्त के समीप पहुंचा देवदत्त ने बची खुची शक्ति से उसके पैर ही खींच लिये। वह मुंह के बल देवदत्त के सामने कठोर फर्श पर गिरा। देवदत्त की तलवार का फल उसके गले को चीरते हुए आरपार

हो गया। देवदत्त हंसा। फ्रैंक ने फौरन अपनी गन का रुख देवदत्त की ओर किया और ट्रिगर दबा दिया। गोलियों की तड़तडाहट हुई और अनगिनत गोलियाँ देवदत्त के शरीर को भेदती चली गयी। देवदत्त की आँखे शून्य में उलटती चली गयी और एक हिचकी के साथ उसने अंतिम श्वास ली, देवदत्त का निष्प्राण शरीर अब फर्श पर गिरा पड़ा था।

“अंड़र वाटर टीम को सिग्नल दो।” फ्रैंक ने माइकल को निर्देश दिया, माइकल ने फौरन उस पर अमल किया। किन्तु इसी क्षण गर्भ गृह की पारदर्शी दीवार चटखने लगी। यह अंतिम सुरक्षा उपाय था, उस पारदर्शी दीवार के दूसरी ओर गंगा का गहरा और तीव्र प्रवाह था। जो दीवार के टूटते ही गर्भगृह को अपने अंदर समाहित कर लेता। इन सबमे मात्र कुछ ही सेकंड्स का समय लगने वाला था। माइकल का सम्पूर्ण दल अब मठ में अपना कार्य समाप्त करके गर्भ गृह में आ चुका था। फ्रैंक स्पष्ट रूप से देख रहा था उसकी टुकड़ी अब आधी से भी कम रह चुकी थी। मठ के असावधान सदस्यों ने भी उसके आधे सैनिकों को समाप्त कर दिया था। उसे पारदर्शी दीवार के पार कुछ हरकत दिखायी दी। वे माइकल के गोताखोर थे। जो ऑक्सीजन टैंक्स और हथियारों से लैस थे। वे उस पारदर्शी दीवार के पार थे। गोताखोर लगभग पन्द्रह की संख्या में थे। उन सभी के हाथों में लोहें की मोटी जंजीरे थी, जो गंगा के ऊपर तैर रही अनेक नावों से जुडी हुई थी। फ्रैंक ने उन्हें संकेत किया।

“माइकल अब आगे का काम हमारे गोताखोर संभाल लेंगे। फिलहाल सभी फौरन इस मठ से बाहर निकलो, हमने सुरक्षा व्यवस्था ध्वस्त कर दी है। शिवलिंग को अब हमारे डाईवर्स संभाल लेंगे।” कहते हुए फ्रैंक ने अपने सैनिकों को इशारा किया, वे फौरन जहां से आये थे उसी ओर बढ़ गये। उनका शीघ्र अतिशीघ्र गर्भगृह से निकलना आवश्यक था, अन्यथा वहाँ उनकी जलसमाधि बनना निश्चित थी। उनके गर्भगृह से निकलते ही गर्भगृह के स्तंभ कांपने लगे। पारदर्शी दीवार पूर्णतया टूट चुकी थी और उसके टूटते ही गंगा का पानी तीव्र वेग से गर्भगृह के अंदर प्रवेश कर गया। उस प्रवाह के मध्य ही सभी डाईवर्स गर्भगृह में तैरते हुए प्रवेश कर चुके थे। अब वे पूर्णतया पानी के अंदर ही थे। ऑक्सीजन मास्क के कारण उन्हें उस प्रवाह में सांस लेने में कोई कठिनाई नही हुई। उन्होंने बिना कोई क्षण गंवाए जंजीरों में लगे हुक्स को एक दूसरे में पिरो कर एक जाल बना दिया। उन सभी के सम्मिलित प्रयास से अब शिवलिंग उस जंजीर से बने झूले में पहुँच चुका था। गोताखोर ने जंजीर को एक विशिष्ट प्रकार

से झटका दिया। यह संकेत था जंजीर खींचने का। इसी के साथ गंगा की सतह पर मौजूद नावों द्वारा जंजीरे खींच ली गयी और शिवलिंग उन जंजीरों के झूले में झूलता चला गया। अब वह शिवलिंग नावों द्वारा एक विशिष्ट स्थान की ओर ले जाया जा रहा था। गोताखोर शिवलिंग के साथ ही नदी के भीतर तैर रहे थे। तल में होती इस हलचल का गंगा की सतह पर किसी को आभास तक नही था।

***

अथर्व बदहवास सा शक्ति मठ के गुप्त द्वार की ओर भाग रहा था। वह पेड़ों की उस श्रृंखला को पार करते हुए प्राचीन मंदिर के पिछले भाग में पहुँच चुका था। मठ में प्रवेश करने का यह द्वार अब भी जस का तस था। उसने अपने हाथ से कोई आकृति उस पथरीली दीवार पर बनाई जिसके फलस्वरुप पथरीली दीवार एक ओर हट गयी और द्वार प्रकट हो गया। यह वही द्वार था जहाँ से पहली बार उसके पिता उसे मठ में लेकर गये थे। द्वार के भीतर प्रवेश करते ही उसका सामना घने धुएं से हुआ। उसे खांसी आ गयी। वह सीढियों की ओर बढ़ा, सीढियों पर रक्षा दल के सदस्यों के क्षत विक्षत शवों का अंबार लगा हुआ था। उसकी आँखे लरज गयी थी। वे सभी उसके परिचित थे, उन सभी के साथ उसने अपना बचपन बिताया था। उनमे कुछ उसकी आयु के भी थे। यह एक संस्था से ज्यादा उसका अपना परिवार था। उस परिवार का हर सदस्य आज समाप्त हो गया था। वह उन शवों को लांघ नही सकता था, उसने हर शव को अपने हाथों से हटाया, उसकी आँखों से निरंतर अश्रु बह रहे थे। अथर्व अब सीढियों की ओर बढ़ा, उसकी दृष्टि धुंधली होती जा रही थी, धुएं से उसकी आँखे लाल हो चुकी थी। अचानक ही वह किसी के हाथ पर पैर रखने से फिसला और सीढियों से लुढ़कते हुए फर्श पर जा गिरा। उसका शरीर जगह जगह से छिल गया, किन्तु उसे पीड़ा महसूस ही नही हो रही थी। वह आगे बढा ही था कि ठिठक गया। सम्पूर्ण गलियारे में पानी भरा हुआ था। अथर्व ने बिना कुछ विचार किये उस पानी में छलांग लगा दी। वह तैरते हुए गलियारे में बढ़ रहा था। गलियारे के हर हिस्से में रक्षा दल के सदस्यों के शव पानी के भीतर पड़े हुये थे। कटे अंग पानी के प्रवाह में यत्र तत्र बह रहे थे। वह तैरते हुए यंत्रणा कक्ष की ओर पहुंचा। वहाँ का प्रत्येक यंत्र पानी में डूब चुका था। अथर्व ने यंत्रणा कक्ष के एक ओर स्थित दरवाजे पर बल लगाया, किन्तु पानी के दवाब के कारण वह खुल नही पा रहा था।

अब अथर्व को श्वास लेने में कठिनाई होने लगी थी। उसने अपनी सम्पूर्ण शक्ति का प्रयोग किया और उस दरवाजे को खींच कर तोड़ ही दिया। वह फौरन उस कक्ष में प्रवेश कर गया और वहाँ स्थित एक हैंड़ल को अपनी पूरी शक्ति से घुमाने लगा। जैसे जैसे हैंड़ल घूमता वैसे वैसे पानी का स्तर घटने लगा। उस कमरे में पानी अब अथर्व के सर से नीचे आ चुका था। अथर्व ने एक दीर्घ श्वास खिंची और फेफड़ों में हवा भरी। इसके बाद एक ही झटके में उसने उस सम्पूर्ण हैंड़ल को घुमा दिया। जिससे गर्भ गृह एवं गंगा के मध्य स्थित ध्वस्त हुई पारदर्शी दीवार के समकक्ष ही एक मजबूत दीवार ने मठ के दीवारों से सरक कर उस स्थान पर अवरोध उत्पन कर दिया। अब पानी अंदर नही आ सकता था, कुछ ही देर में मठ का सम्पूर्ण पानी भी बाहर जा चुका था। अथर्व दरवाजे से लड़ते भिड़ते आगे दौड़ा। कई बार वह पानी से उत्पन्न हुई फिसलन के कारण फर्श पर फिसलकर गिरा भी लेकिन उसे उसका कोई भान ही नही था। इस समय उसे गर्भ गृह में पहुंचना था, कुछ ही देर में वह गर्भ गृह में पहुँच चुका था। शिवलिंग अपने स्थान पर नहीं था। अथर्व का मस्तिष्क कुंद हो गया । गर्भ गृह में रक्षा दल के अनगिनत सदस्यों के शव एक के ऊपर एक बिखरे पड़े थे। उसे देवदत्त का छलनी हुआ शरीर दिखायी दिया। वह पागलो की भाँति चीख पड़ा, उसके आँखों से निरंतर आंसू बह रहे थे जिस कारण उसकी आँखे रक्तिम हो चुकी थी। उसकी सम्पूर्ण शक्ति मानो उसके शरीर से अलग हो चुकी थी, वह घुटनों पर ही गिर पड़ा और घिसटता हुआ एक एक शव के मध्य से होता हुआ देवदत्त तक जा पहुंचा। उसने देवदत्त के क्षत विक्षत शरीर को देखा, अथर्व की आत्मा तक चीत्कार कर उठी थी। अथर्व ने देवदत्त के शरीर को अपनी गोद में रखा। वह चीख उठा, उसके क्रंदन से सम्पूर्ण मठ कांप उठा और चीखते चीखते वह एकदम से शांत हो गया। उसी क्षण शवों के मध्य से लड़खड़ाता हुआ ड्राइवर भी गर्भ गृह में आ पहुंचा। उसका चेहरा उसकी बदहवासी की चुगली कर रहा था। वह मूर्खो की भाँति सम्पूर्ण मठ एवं उसके अवशेषों को देख रहा था। वह अथर्व और उसकी गोद में मृत देवदत्त को देखकर ठिठक गया। ड्राइवर खाली गर्भगृह को देख कर सम्पूर्ण परिस्थित समझ चुका था। वह कुछ देर तक वही किंकर्तव्यविमूढ़ सा खड़ा रहा। अथर्व को सांत्वना देने के लिये उसके पास शब्द नही थे, इस समय खुद उसे ही इसकी सर्वाधिक आवश्यकता थी।

***

“अथर्व ! अपने आप को संभालो, यह समय दुःख एवं अवसाद का नही है। हम जिसकी रक्षा के लिये प्रतिबद्ध थे, उस कर्तव्य में हमसे चूक हो गयी है। युगों से जिसकी रक्षा करते आये थे आज वह शक्ति दानवों के पास जा चुकी है। यह समय शोक का नही है, दानव एवं राक्षस जातियां कलियुग में अपने उत्थान पर है। अब उनके पास यह शक्ति है। स्वयं महादेव की संचित प्रलय ऊर्जा का स्त्रोत है उनके पास। हमें उन्हें रोकना होगा, हमारी भावनायें हमारे कर्तव्य के समक्ष कुछ भी नही है। अपना मन कड़ा करो अथर्व, अब समय आ चुका है के तुम हमारे दल के संस्थापक वीर ‘सुबाहु’ का कवच धारण करो।” ड्राइवर ने गर्भ गृह के समक्ष ही आयुध कक्ष में रखी सुबाहु की प्रतिमा की ओर संकेत किया। इस समय ड्राइवर ने स्वयं बड़े ही मुश्किल से संभाला हुआ था। यह उसकी विवशता थी, शक्ति मठ के केवल तीन ही योद्धा इस समय जीवित थे, ड्राइवर, अथर्व और गाइड, जो इस समय दिल्ली में था। इसलिये उनके पास भावनाओं में बहने का समय ही नही था। अथर्व शांत था, उसके आंसू सूख चुके थे, देवदत्त का शरीर अब भी उसकी गोद में ही था। उसके मुख पर अब कठोरता थी। वह सुबाहु की प्रतिमा को निरंतर देखे जा रहा था।

“अथर्व ! हमारा यह मठ नष्ट हो चुका है, और शत्रुओं की दृष्टि में भी आ चुका है। अब हम यहाँ पुन: नही आ सकते। देश के विभिन्न भागों में शक्ति मठ की दूसरी शाखायें एवं सदस्य है, हम वहाँ से अपने उद्देश्य को कार्यान्वित कर सकते है। अपनी खोज आरंभ कर सकते है। दुःख हम अपने उद्देश्य की पूर्ति के पश्चात मना लेंगे।” ड्राइवर ने कहा, उसके चेहरे पर भावनाओं के कारण जबर्दस्त उतार चढाव स्पष्ट दिखायी दे रहे थे।

अथर्व ने देवदत्त के शरीर को एक बार देखा और उसे आराम से फर्श पर लिटा दिया। उसके पश्चात वह आयुध कक्ष की ओर बढ़ा, उसके मुख पर सम्पूर्ण विश्व की कठोरता थी। वह अब सुबाहु की प्रतिमा के समक्ष ही खड़ा था। सुबाहु की प्रतिमा पर सजाया गया वह कवच एक विचित्र सी ऊर्जा से चमकता सा प्रतीत हो रहा था।

“मैं शपथ लेता हूँ। जिसने भी यह किया है वह धरती-आकाश, अग्नि, जल-थल जहाँ कहीं भी हो, उसे खोज कर ना केवल भयंकर मृत्यु दूंगा अपितु उसकी सम्पूर्ण प्रजाति को ही समाप्त कर दूंगा। जो युद्ध अब तक ढंके छिपे हो रहा था, अब वह खुलेआम होगा। रक्त की नदियाँ बहेंगी। यहाँ बहे हर रक्त की बूंद के मूल्य के एवज में एक एक दानव, दैत्य, राक्षस को प्राण त्यागने होंगे। मैं उस शिवलिंग को अवश्य लाऊंगा। मैं

शपथ लेता हूँ। ” अथर्व पूर्ण शक्ति से दहाड़ उठा, उसका शरीर कांप रहा था, उसका स्वर थर्रा रहा था।

उसका सम्पूर्ण शरीर मानो किसी प्रचण्ड अग्नि सा धधक रहा था। एक विचित्र सी ऊर्जा का प्रकाश उसके शरीर से प्रस्फुटित होता हुआ सा दिखायी दे रहा था । ड्राइवर आश्चर्य से उस परिवर्तन को देख रहा था।

“बाली !” ड्राइवर बुदबुदाया।

***

वर्तमान समय

निर्दोष

ऋचा के दोनों हाथ हथकडियों में जकड़े हुए थे। इस समय वह जयराज के सामने पुलिस स्टेशन के इन्वेस्टिगेशन कम टॉर्चर रूम में एक कुर्सी पर बंधी हुई थी। उसका पिता शिवराज चुपचाप कमरे के कोने में खड़ा था। ऋचा ने हिकारत से अपने पिता की ओर देखा और मुंह घुमा लिया। जयराज के चेहरे पर इस समय जमाने भर की क्रूरता थी। वह ऋचा के सामने ही एक कुर्सी पर बैठा हुआ था। उसकी गंदली सी मटमैंली आँखों में इस समय दरिंदगी नाच रही थी। उसने बेचैनी में एक सिगरेट सुलगाई, और धुंआ सीधे ऋचा के चेहरे पर छोड़ दिया, ऋचा खांस उठी। शिवराज को उसकी यह हरकत नागवार गुजरी लेकिन कुछ सोचकर वह चुप रहा। उसे तो ऋचा का किसी अपराधी की तरह हथकड़ियों में जकड़े होना भी अत्याधिक अखर रहा था, किन्तु उसकी विवशता थी। वह मन मसोस कर रह गया, वह जानता था जयराज ने अभी तक औपचारिक रूप से ऋचा की गिरफ्तारी दर्ज नही की है, जिसका मतलब था कि उसे केवल अपने मतलब की जानकारी चाहिये थी, ऋचा की गिरफ्तारी से अधिक उसे उस नकाबपोश में दिलचस्पी थी।

“तो लड़की, मैं सीधे सीधे पूछता हूँ, वो नकाबपोश कौन था ? जिसने मेरे बेटे को और दोस्तों को बेरहमी से मारा था ?” जयराज ने दांत भींचते हुए पूछा।

“मैं नही जानती उसे। वह हर समय उस अजीब से नकाब में ही रहता था। उसने जब मुझे बचाया तब मैं किसी हाई लेवल ड्रग के नशे में थी जिस कारण उसका चेहरा दिखा भी होता तो भी शायद ही याद रख पाती।” ऋचा ने सपाट शब्दों में कहा।

“उसने तुम्हारी जान क्यों बचाई ?” जयराज पुन: सिगरेट को होंठो से लगाया।

“मुझे नही पता।” ऋचा के इतना कहते ही जयराज ने सिगरेट का जलता सिरा ऋचा की बांह पर बेरहमी से रगड़ दिया। ऋचा गला फाड़कर चीख उठी।

“य...ये क्या हरकत है जयराज ?” शिवराज हलक फाड़कर चीख उठा।

“चोप्प !!” जयराज शिवराज की ओर देखकर दहाड़ा। उसकी दहाड़ और अंदाज देखकर शिवराज के तिरपन कांप गये। जयराज के चार मातहतों ने शिवराज को पकड़ कर कुर्सी पर बिठा दिया।

“मेरी पूछताछ में दखल मत दो शिवराज। मुझे उस नकाबपोश का पता हर हाल में चाहिये, इसके लिये मैं कुछ भी कर सकता हूँ। उसने मेरे बेटे को मारा है, मेरे बेटे को।” जयराज अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। वह पागलों की तरह चीख रहा था।

“और ये, तेरी बेटी, साली! सब जानती है यह।” कहते हुए जयराज ने एक झन्नाटेदार थप्पड़ ऋचा के गाल पर जड़ दिया। एक थप्पड़ में ही ऋचा का होंठ फट गया और मुंह से खून आ गया। उसके आँखों के नीचे नीला धब्बा स्पष्ट दिखायी देने लगा और गाल पर उंगलियों की लाल छाप उभर आयी। ऋचा स्तब्ध रह गयी, उसकी आँखों के आगे एक पल को अंधेरा सा छा गया।

“साली ! तुझ जैसी लड़कियों की रग रग से मैं वाकिफ हूँ। हरामजादी, मॉड़र्न बनने के चक्कर में, हाई लाइफस्टाइल और ग्लैमर के नशे के लिये किसी के भी साथ सोने को तैयार रहती है तुम जैसी लड़कियाँ। साली क्लब सिंगर नही है तू, एक कॉल गर्ल है, कॉल गर्ल और वह नकाब वाला तेरा ही कोई रेगुलर कस्टमर था, जिसे उस दिन तेरा मेरे बेटे के साथ जाना नागवार लगा।” जयराज ने बेरहमी से ऋचा के बाल पकड़ कर उसका सर अपनी ओर उठाया। ऋचा जयराज के मुंह से आती सिगरेट की बदबू को महसूस कर सकती थी। वह समझ चुकी थी कि वह बहुत बड़ी मुसीबत में फंस चुकी है। शिवराज चीखते हुए अपने स्थान से उठा ही था लेकिन मातहतों ने उसका सर मेज पर पटक कर उसे वही बाँध दिया।

“जयराज ! यह कानून के खिलाफ है, तुमने कहा था तुम मेरी मदद करोगे, मेरी बेटी को इस लफड़े से निकालोगे। लेकिन तुमने केवल उसका इस्तेमाल किया है। मैंने उसकी भलाई के लिये उसे धोखा दिया, लेकिन तुमने मुझे ही धोखे में रखा।” शिवराज तड़पता रहा, लेकिन जयराज पर उसका कोई असर नही हुआ

“मैंने आपको सुबूत दिये है। आपके पास वो वीडियो सीडी है जो आपके बेटे के कैमरे से रिकॉर्ड की गयी थी। आप जानते हैं मैं निर्दोष हूँ। आप जो कर रहे है यह गैरकानूनी है।” ऋचा ने रोते हुए कहा। जयराज ने

एक ठोकर उसकी कुर्सी पर मारी जिसके फलस्वरुप ऋचा कुर्सी से बंधी हुई फर्श पर जा गिरी।

“लटकाओ इसे ! इसकी जुबान खुलवाने का तरीका मैं जानता हूँ।” जयराज ने अपने मातहतों को निर्देश दिया। वे फौरन हरकत में आये और ऋचा को निर्दयता के साथ कुर्सी सहित उठा कर बिठा दिया। उसके बंधन खोल दिये गये थे, उस कमरे की छत से एक मोटी जंजीर लटकी हुई थी। ऋचा के दोनों हाथों को उस जंजीर से बाँध कर उसे एक ही झटके में छत से लटका दिया गया। अब उसके पैर फर्श से लगभग दो फीट ऊपर हवा में झूल रहे थे। दोनों हाथों पर सम्पूर्ण शरीर का वजन होने से उसे कंधो के जोड़ों में असहनीय दर्द होने लगा। वह चीखती रही चिल्लाती रही लेकिन जयराज पर कोई असर नही हुआ। वह कुत्सित मुस्कुराहट लिये उसके सामने आकर खड़ा हो गया।

“कुछ देर और ऐसे ही लटकी रहेगी ना तो तेरे दोनों कंधे अपनी जगह से हट जायेंगे। उसमे फिर भी समय लगेगा लेकिन तुझे इस तरह लटकाकर जो मैं तेरे साथ करने जा रहा हूँ, उसके बाद तू मुझसे मौत की भीख मांगेगी लड़की। अब भी समय है, इससे पहले के मैं सबके सामने तेरे सारे कपडे उतार कर तेरे नाजुक और गोरे जिस्म पर बेल्ट के कभी ना मिट सकने वाले निशान बना दूँ, तू मुझे अपने उस आशिक के बारे में सब सच सच बताएगी।” जयराज ने उसका मुंह अपने हाथों में कसकर भींच लिया था। ऋचा की आँखों ड़र और दहशत स्पष्ट दिखायी दे रही थी।

“मुझे उसके बारे में कुछ भी नही पता। वह कौन है, कहाँ से आया, उसने क्यों मुझे बचाया कुछ नही जानती। मैं आपको पहले ही सब सच सच बता चुकी हूँ। मेरा विश्वास कीजिये।” ऋचा फूट फूट कर रो पड़ी। शिवराज भी अपनी इस बेबसी पर रो पड़ा।

“चलो अब अपना काम शुरू करता हूँ। शुरुवात तेरे कपड़ों से करता हूँ। इसी वजह से मेरे बेटे की जान गयी थी ना ? अब देखता हूँ तुझे कौन बचाता है।” कहते हुए जयराज ने उसके कपड़ों पर हाथ रखा ही था लेकिन उसी पल कमरे के बाहर से आती गोलियों की आवाज से वह ठिठक गया। बाहर गोलियों की लगातार कई आवाज़ें सुनाई दी, इन आवाजों के मध्य उसके हवलदारों एवं इंस्पेक्टर्स की चीखें भी समान रुप से शामिल थी। पूरे स्टेशन में तोड़फोड़ की आवाजें इस कदर आ रही थी मानो कोई बुलडोजर इमारत में प्रवेश कर गया हो। अचानक ही सब शांत हो गया। जयराज ने पिस्तौल निकाल ली, उसकी देखा देखी उसके

चारों साथियों ने भी अपनी सर्विस रिवाल्वर का रुख कमरे के दरवाजे की ओर कर दिया। कमरे के भारी भरकम लोहे के दरवाजे पर भयानक आवाज हुई, मानो उससे कोई हाथी टकराया हो। दूसरी बार पुन: दरवाजे पर टकराने का कर्णभेदी स्वर उत्पन्न हुआ और दरवाजा अपने नट बोल्ट सहित उखड़ कर सीधे कमरे के भीतर आ गिरा।

टूटे हुए दरवाजे के पार 'वही' था। बाली! सर से पाँव तक वह अपने उस चुस्त और विचित्र पोशाक में खड़ा था। उसने चेहरे पर उसका वही चिर परिचित त्रिपुंड धारी मास्क पहना हुआ था। वह इस समय किसी भयंकर दैत्य की भाँति ही प्रतीत हो रहा था।

"कैसे भूल गया मै कानून का मंदिर अब मंदिर नहीं रहा, कानून के पुजारी अब पुजारी नहीं रहें, जल्लाद बन चुके हैं। इस सड़ चुके समाज को खोखला करने में इनका भी महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है।" बाली के विचारों की आंधी पुन: आरंभ हो गयी थी।

"यह..तो वही है ! अ ..आपके बेटे का कातिल।" इंस्पेक्टर बाली को देखते ही पहचान चुका था।

"नहीं ! मैं सिर्फ इसके बेटे का कातिल नहीं हूँ, मैं अब तुम्हारा और इसका भी कातिल कहलाऊंगा, वादा करता हूँ, इस कमरे से अब केवल तुम सबकी लाशें ही बाहर जायेंगी वर्दीवाले भेडियों।" बाली सर्द स्वर में गुर्राया। इससे पहले कि इंस्पेक्टर उस पर गोली चलाता वह इतनी तीव्र गति से इंस्पेक्टर के सामने जा खड़ा हुआ कि उसकी पलकें तक झपकना भूल गयी। एक इंसान से इतनी फुर्ती और तीव्र गति की वह कल्पना भी नही कर सकता था। जब तक वह कुछ समझता बाली ने दोनों हाथों से उसकी गर्दन एक झटके के साथ घुमा दी। गर्दन की हड्डी निस्संदेह कई टुकडो में बंट चुकी थी। इंस्पेक्टर एक क्षण में ही फर्श पर अपनी निर्जीव देह लिये औंधा पड़ा था। जयराज ने फुर्ती से बाली पर गोली चलाई, उसकी चलाई गोली बाली की बांह पर रगड़ खाती हुई निकल गयी। किन्तु इससे उसे लेशमात्र भी फर्क पड़ा हो ऐसा महसूस नही हुआ।

उसने फायर करते पुलिसकर्मी की गोली से झुक कर न केवल खुद को बचाया बल्कि वह घुटनों के बल फर्श पर फिसलते हुए उसके समक्ष जा पहुंचा। अभी वह कुछ समझ पाता तब तक बाली ने उसके पैर को पकड़ कर खींच लिया, वह पीठ के बल फर्श पर गिरा। उसके गिरते ही बाली ने अपने बूट से उसके सिर पर प्रहार किया। उसका सर फर्श तोड़ते हुए अंदर तक जा धंसा, उसके जीवित रहने का प्रश्न ही नही था। जयराज ने

अंधाधुंध फायरिंग शुरु कर दी। बाली गोली चलने से पहले ही अपना स्थान बदल चुका होता था। उसने फर्श पर पड़े हुए टूटे दरवाजे को ढाल बना कर गोलियों को रोक लिया। बचे हुए दो हवलदार भी निरंतर फायरिंग करे जा रहे थे। बाली इनकी गोलियों से बच सकता था, लेकिन उसके बचने के चक्कर में ऋचा और शिवराज अवश्य इन गोलियों का शिकार हो सकते थे।

बाली ने अपनी अद्भुत शक्ति का प्रदर्शन करते हुए लोहे के दरवाजे को मध्य से ही मोड़ दिया। कुछ देर के लिये फायरिंग करनेवाले हवलदारों के साथ साथ जयराज भी अवाक रह गया। यह उनके लिये किसी अजूबे से कम नही था, एक इंसान इस प्रकार लोहे के इतने मोटे दरवाजे को नही मोड़ सकता था। किन्तु बाली ने ना केवल दरवाजे को बुरी तरह मोड़ दिया, बल्कि उसे मध्य से किसी गत्ते की तरह ही फाड़ कर उसके दो हिस्से कर दिये और जब तक सभी आश्चर्य के सागर से निकल पाते उसने दरवाजे के दोनों हिस्सों को लहरा कर हवलदारों की ओर उछाल दिया। दरवाजे के फटे हुए धारदार हिस्से सीधे उनके शरीर में जा धंसे। दोनों हवलदारों की अंतड़ियां तक बाहर आ गिरी। वे दोनों भी मृत्यु को प्राप्त हुए लेकिन तड़पते हुए। जयराज का खुला हुआ मुंह जब तक बंद होता तब तक बाली उसके सामने पहुँच चुका था। जयराज एकदम से जड़ हो गया था। उसने पिस्तौल उठाने का प्रयत्न किया लेकिन बाली ने उसका हाथ पकड़ लिया। जयराज अपनी पूर्ण शक्ति का प्रयोग करके भी अपने हाथ को रत्ती भर भी हिला नही पा रहा था। बाली की शक्तिशाली पकड़ और कसती ही जा रही थी। जयराज की हाथ की हड्डियां तक चटखने लगी थी। उसका चेहरा दर्द से विकृत होने लगा।

“क..कौन है तू कमीने ?” जयराज चीखा।

“भूल गया ? मैं तेरे बेटे का हत्यारा हूँ।” बाली वीभत्स सी हंसी हंसा। उसकी हंसी सुनकर ऋचा और शिवराज के रोंगटे खड़े हो गये। जयराज का मानो पूरा खून ही निचुड़ गया था। एक जोरदार आवाज के साथ ही उसकी बाजू की हड्डी कई भागों में विभक्त हो चुकी थी। जयराज गला फाड़कर चीख उठा।

“टॉर्चर में मजा आता है ना तुझे ? एक लड़की को जंजीरों से बाँध कर, उस पर अपनी शक्ति का प्रयोग करके तुझे बड़ी शांति मिलती है ना ? तेरा पौरुषत्व का दम्भ संतुष्ट होता है ना उससे ? तेरा बेटा भी तेरा ही प्रतिरुप था। उसे भी यही विकृति थी। तूने देखा ही होगा मैंने उसे किस

तरह मारा था ? मैंने उसे पूरी शक्ति से उठा कर अपने घुटनों पर पटक कर उसकी रीढ़ की हड्डी तोड़ दी थी और इतनी बुरी तरह से उसे तोडा था कि बेचारे को छटपटाने का अवसर भी नही मिला।" कहते हुए बाली ने शिवराज गर्दन दबोच ली। उसके गले से अब आवाज की जगह अजीब से स्वर निकल रहे थे। बाली की शक्तिशाली जकड़ से उसकी गर्दन की हड्डी तक टूट रही थी। बाली ने उसी क्षण एक झटके से जयराज की गर्दन छोड़ दी और झुककर उसने जयराज को दोनों हाथों से पकड़ कर ठीक उसी प्रकार उठा लिया जिस प्रकार उसके बेटे को उठाया था।

"मैं तुझे नही तड़पाऊँगा। तुझे भी तेरे बेटे के पास उसी प्रकार भेज रहा हूँ, ताकि आत्मीयता और प्यार बना रहे बाप बेटों का।" कहते हुए बाली ने अपना घुटना मोड़ा और पूर्ण शक्ति से जयराज को घुटने पर ला पटका। जयराज की रीढ़ भी टूट गयी। उसका शरीर किसी लकड़ी की तरह ही टूट सा गया था, मानो धड़ और कमर के बीच की सारी हड्डियां हटा ली गयी हो। भयंकर चीख के साथ जयराज की आँखे उलट गयी और उसने अपने प्राण त्याग दिये। बाली ने उसे किसी खिलौने की भाँति उठा कर फेंक दिया और ऋचा को बंधनमुक्त किया। एक ही शक्तिशाली झटके में उसने उन मजबूत जंजीरों को तोड़ दिया।

"आज फिर तुमने मेरी जान बचाई।" रोते हुए भावातिरेक में ऋचा बाली से लिपट गयी। बाली ने उसके कंधे पकड़ कर स्वयं को उससे अलग किया।

"मैंने उस वीडियो सीडी की अनेक कॉपीज को मीडिया में डिस्ट्रीब्युट कर दिया है। अब प्रसारित होना भी शुरु हो गया होगा। सारा शहर जान जायेगा कि तुम निर्दोष हो। फिलहाल हमें यहाँ से निकलना होगा।" बाली ने ऋचा के कंधे पर हाथ रखकर उसे आश्वस्त किया। शिवराज इससे पहले के कुछ कहता बाली ने उसे इशारे से शांत रहने का निर्देश दे दिया। शिवराज अपने कारनामे पर लज्जित था, उसमें ऋचा से नज़रें मिलाने का साहस नही था।

"मेरे साथ आओ ! बाकी पुलिस फ़ोर्स किसी भी समय यहाँ पहुँच सकती है, उसके पहले हमें यहाँ से दूर निकल जाना होगा।" बाली ने सपाट स्वर में कहा और दरवाजे की ओर बढ़ गया, ऋचा ने एक नजर भी अपने पिता की ओर देखना उचित नही समझा और बाली के पीछे हो ली। शिवराज के पास भी बाली के साथ जाने के अलावा और कोई चारा नहीं था। कमरे से बाहर आते पुलिस स्टेशन का नजारा देखकर दोनों

के होश ही उड़ गये। वहाँ कोई भी फर्नीचर साबुत नही बचा था। सारे हवलदार और इंस्पेक्टर बुरी तरह तुड़े मुड़े बेसुध पड़े हुए थे। स्टेशन की दीवारे तक टूट चुकी थी। मानों कुछ ही क्षण पहले यहाँ जोरदार भूकंप सा आया हो। वे हैरत से अपने आस पास देखते हुए स्टेशन के बाहर निकले। स्टेशन के बाहर एक बिना नम्बर की टैक्सी खड़ी हुई थी। बाली टैक्सी को देखकर मुस्कुराया। यह ड्राइवर था, उसका ख़ास। ड्राइवर बाली को देखकर मुस्कुराया। बाली के विचित्र मास्क के नीचे क्या भाव थे यह बताना कठिन था। उसने ऋचा और शिवराज को गाडी में बैठने का संकेत किया। वे बिना कोई प्रश्न किये पिछली सीट पर बैठ चुके थे। बाली ड्राइवर की बगल वाली सीट पर कब्जा कर चुका था। उनके बैठते ही टैक्सी की विंडस्क्रीन और दरवाजे लॉक हो गयी और इंजन की घरघराहट के साथ टैक्सी अपने गंतव्य की ओर बढ़ गयी।

“तुमने मेरी बेटी की दो बार जान बचाई है, आजकल ऐसे लोग कहां मिलते है जो दूसरों के लिये खुद की जान जोखिम में डाले। मैं तुम्हारा शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ।” शिवराज ने कृतज्ञ भाव से बाली से कहा।

“मैमेरे तुम्हारी बेटी की जान बचाने के पीछे कोई मानवता, इंसानियत जैसे झूठे ढ़कोसलें नही थे शिवराज।” बाली गुर्राया। बाली के मुंह से अपना नाम सुनकर शिवराज पलभर को चौंक गया। किन्तु फिर उसे ख्याल आया शायद ऋचा ने उसके बारे में सब बता दिया हो।

“दरअसल मैं ऋचा के पीछे था क्योंकि मुझे तुझ तक पहुंचना था। ऋचा मात्र एक जरिया थी तुम तक पहुँचने का। यह संयोग ही था कि वह शेषन के चंगुल में फंस गयी और वह मेरे हाथों मारा गया। लेकिन तुम्हारी चालाकी के उल्टा पड़ने के कारण तुमने अपनी बेटी को फिर उसी परिस्थिति में फंसा दिया। अब मुझे तुम्हें बचाना ही था।” बाली ने शिवराज की ओर देखा।

“तुम मुझे कैसे जानते हो ? कौन हो तुम।” शिवराज के मन में अनजाना सा ड़र उत्पन्न हुआ।

“२००८ याद है ? बनारस में हुआ हमला ? याद है वह मॉल का टेंड़र। जो तुमने अपने किसी ख़ास को दिलवाया था ? हमले के बाद तुम एकदम से भूमिगत हो गये थे। तुम्हें बाहर लाने के लिये तुम्हारी बेटी का इस्तेमाल करना पड़ा। तुम्हारी वजह से उस दिन मेरे परिवार के ५२ लोगों

के होश ही उड़ गये। वहाँ कोई भी फर्नीचर साबुत नही बचा था। सारे हवलदार और इंस्पेक्टर बुरी तरह तुड़े मुड़े बेसुध पड़े हुए थे। स्टेशन की दीवारे तक टूट चुकी थी। मानों कुछ ही क्षण पहले यहाँ जोरदार भूकंप सा आया हो। वे हैरत से अपने आस पास देखते हुए स्टेशन के बाहर निकले। स्टेशन के बाहर एक बिना नम्बर की टैक्सी खड़ी हुई थी। बाली टैक्सी को देखकर मुस्कुराया। यह ड्राइवर था, उसका ख़ास। ड्राइवर बाली को देखकर मुस्कुराया। बाली के विचित्र मास्क के नीचे क्या भाव थे यह बताना कठिन था। उसने ऋचा और शिवराज को गाडी में बैठने का संकेत किया। वे बिना कोई प्रश्न किये पिछली सीट पर बैठ चुके थे। बाली ड्राइवर की बगल वाली सीट पर कब्जा कर चुका था। उनके बैठते ही टैक्सी की विंडस्क्रीन और दरवाजे लॉक हो गयी और इंजन की घरघराहट के साथ टैक्सी अपने गंतव्य की ओर बढ़ गयी।

“तुमने मेरी बेटी की दो बार जान बचाई है, आजकल ऐसे लोग कहां मिलते है जो दूसरों के लिये खुद की जान जोखिम में डाले। मैं तुम्हारा शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ।” शिवराज ने कृतज्ञ भाव से बाली से कहा।

“मैमेरे तुम्हारी बेटी की जान बचाने के पीछे कोई मानवता, इंसानियत जैसे झूठे ढ़कोसलें नही थे शिवराज।” बाली गुर्राया। बाली के मुंह से अपना नाम सुनकर शिवराज पलभर को चौंक गया। किन्तु फिर उसे ख्याल आया शायद ऋचा ने उसके बारे में सब बता दिया हो।

“दरअसल मैं ऋचा के पीछे था क्योंकि मुझे तुझ तक पहुंचना था। ऋचा मात्र एक जरिया थी तुम तक पहुँचने का। यह संयोग ही था कि वह शेषन के चंगुल में फंस गयी और वह मेरे हाथों मारा गया। लेकिन तुम्हारी चालाकी के उल्टा पड़ने के कारण तुमने अपनी बेटी को फिर उसी परिस्थिति में फंसा दिया। अब मुझे तुम्हें बचाना ही था।” बाली ने शिवराज की ओर देखा।

“तुम मुझे कैसे जानते हो ? कौन हो तुम।” शिवराज के मन में अनजाना सा ड़र उत्पन्न हुआ।

“२००८ याद है ? बनारस में हुआ हमला ? याद है वह मॉल का टेंड़र। जो तुमने अपने किसी ख़ास को दिलवाया था ? हमले के बाद तुम एकदम से भूमिगत हो गये थे। तुम्हें बाहर लाने के लिये तुम्हारी बेटी का इस्तेमाल करना पड़ा। तुम्हारी वजह से उस दिन मेरे परिवार के ५२ लोगों

की ह्त्या हुई।" बाली दांत पिसते हुए बोला। यह सुनकर शिवराज का मस्तिष्क सुन्न हो गया।

"तुझे लगा उस हमले में कोई नही बचा होगा ? सब मारे गये लेकिन केवल हम तीन बचे रहे।"

"द..देखो ! मैंने केवल मॉल का ठेका दिलवाने के लिये रास्ता साफ़ किया था। मुझे इसके एवज में मोटी रकम मिली थी। बस मैंने लालच में आकर यह काम किया था, बाकी तुम जो बता रहे हो मुझे ऐसा कुछ नही पता। मुझे नही पता कि ऐसा करने से किसी की जान गयी थी।" शिवराज तोते की तरह्व बोलता चला गया।

"फिर तू एकदम से गायब क्यों हो गया ?" बाली के स्वर में कठोरता थी। ऋचा सांस रोके केवल सुन रही थी।

"तुम मुझसे क्या चाहते हो ?" कुछ देर खामोश रहने के पश्चात शिवराज ने घबराये स्वर में कहा।

"मुझे उसका नाम चाहिये, जिसके कहने पर तुमने ठेका दिलवाया था।"

"क्या उसके बाद तुम मुझे और मेरी बेटी को छोड़ दोगे ?" शिवराज ने हथियार डाल दिये, वह बाली की अद्भुत शक्ति देख चुका था। वह समझ गया था अब वह इसके चंगुल से बच नही सकता।

"जवाब पर निर्भर करता है।" बाली ने दो टूक कहा।

"माया बाहुपति नाम है उसका।" शिवराज ने कहा।

***

।। त्रेतायुग ।।

सुबाहु और बाली

सुबाहु सुग्रीव को सूचित किये बिना ही किष्किंधा से निकल चुका था। उसने बलभद्र के विषय में सुन लिया था, और वह निरंतर अपने अश्व की गति बढाये हुए पथरीले मार्ग पर तीव्र गति से आगे बढ़ता जा रहा था। कुछ ही अंतर पर उसे बलभद्र और उसके अंगरक्षकों का दल दिखायी दिया, जो अपने अश्वों पर आरुढ़ आगे बढ़ते जा रहे थे। सुबाहु को अब मात्र अपना प्रतिशोध दिखायी दे रहा था। उसने अश्व पर सवार होते ही अपना दण्ड पीठ पर से उतार लिया, सूर्य की किरणें उस दण्ड को प्रकाशित कर रही थी। सुबाहु ने अपना मुखावरण पहन लिया और दण्ड घुमाना आरंभ कर दिया। अब उसके एवं बलभद्र के मध्य अंतर बेहद कम रह गया था। बलभद्र के अंगरक्षकों को ज्ञात हो गया था कि कोई उनके पीछे है, स्वयं बलभद्र भी यह समझ गया था। किन्तु इससे पहले कि वह स्वयं को तैयार कर पाता सुबाहु, अपने अश्व के ऊपर से छलांग लगा चुका था। उस अतिमानवीय छलांग को देखकर क्षण भर को बलभद्र चकित रह गया। किन्तु अगले ही क्षण सुबाहु उनके मध्य आ गिरा। उसका विद्युत् की गति से घूमता दण्ड अब धरा से टकरा चुका था। भयंकर तरंगों की लहर सी उठी जिसने बलभद्र के सम्पूर्ण दल को अश्वों सहित ही किसी विस्फोट की भाँति उछाल दिया। सम्पूर्ण दल अब धरा पर यत्र तत्र बिखरा पड़ा था। बलभद्र का शरीर अंदर तक कांप रहा था। उसने भरपूर शक्ति का प्रदर्शन करते हुए स्वयं पर नियंत्रण पाया और उठ खड़ा हुआ। उसके हाथों में अब खड्ग आ चुका था, वह अपने इस अनजान शत्रु से युद्ध करने के लिये सज्ज था।

“तो वह तू है। जो इतने दिनों से हम राक्षसों का वध कर रहा है ? कौन है तू ?” बलभद्र गुर्राया। तब तक उसके अन्य अंगरक्षक भी स्वयं को संभाल चुके थे। किन्तु यह कहना कठिन था कि वे युद्ध कर सकते थे अथवा नहीं। सुबाहु ने अपना मुखावरण हटाया। उसका मुख देखकर बलभद्र चकित रह गया। वह उस मुख को आजीवन नही भूल सकता था।

“तू जीवित है ?” बलभद्र के स्वर में आश्चर्य था।

“तेरा वध तो मेरे हाथों ही लिखा था। मुझे तो जीवित रहना ही था।” सुबाहु क्रोध से दांत पीसता हुआ बोला। उसने अपने दण्ड के मध्य एक भाग को दबाया और उसके दबते के दण्ड के दोनों किनारों पर तलवार की

भाँति धारदार पातियाँ उभर आयी। जो अंगरक्षक स्वयं को संभाल चुके थे वे आक्रमण करने के लिये आगे बढ़े किन्तु सुबाहु पूर्णतया सज्ज था। वह दोनों हाथों से दण्ड लहराते हुए उनके मध्य जहां भी जाता दो एक सैनिकों के धड़ अवश्य शीश विहीन कर देता। वह दण्ड का उपयोग कभी तलवार की भाँति लहराकर करता तो कभी भाले की भाँति दूर से ही प्रहार कर देता। वह किसी वानर की ही भाँति उछल उछल कर दण्ड लहराते हुए ना केवल प्रहार झेल रहा था, अपितु उसका प्रत्युत्तर भी दे रहा था।

अंगरक्षकों ने अनेकों बार उसपर खड्ग, कुल्हाड़ियों एवं भालों से प्रहार किया, किन्तु उसके मांत्रिक कवच के कारण हर प्रहार निरर्थक हो जाता। उनके प्रहार उस दिव्य कवच को भेद पाने में अक्षम थे। उस टुकड़ी को समाप्त करने में सुबाहु को कुछ ही क्षण लगे। वह पूर्णतया रक्त में नहाया हुआ था। बलभद्र ने अपनी पूर्ण शक्ति से उस पर खड्ग का प्रहार किया, सुबाहु ने उस प्रहार को रोकने की कोई चेष्टा नही की। खड्ग उसकी छाती से जा टकराया, किन्तु आश्चर्यजनक रूप से खड्ग उस कवच से टकराते ही दो भागों में विभक्त हो गया। बलभद्र अभी आश्चर्य भी व्यक्त ना कर पाया था के सुबाहु ने अपने मुष्टि का इतना तीव्र प्रहार किया कि बलभद्र की छाती फट पड़ी। सुबाहु की मुट्ठी बलभद्र की छाती को चीर कर आरपार हो चुकी थी, उसकी मुट्ठी में बलभद्र का हृदय था। जो अब शरीर से बाहर आ चुका था। बलभद्र मर चुका था। सुबाहु का मुख क्रोध से तप्त था। उसके मुख पर बलभद्र के रक्त के छींटे थे जो उसके स्वरूप को भयानक बना रहे थे। उसने बलभद्र के निष्प्राण को शरीर धरा पर पटक दिया। उसका सम्पूर्ण शरीर रक्त और मांस से सना हुआ था।

सहसा उसे अपने पीछे किसी के होने का आभास हुआ। वह फुर्ती से पलटा, पलटते ही उसकी छाती पर किसी की शक्तिशाली लात पड़ी, इस शक्तिशाली प्रहार से वह दूर तक जा गिरा और घिसटते हुए एक शिला से जा टकराया, शिला खंड-खंड हो गयी। यदि वह कवच उसके साथ नही होता तो निस्संदेह इस प्रहार के पश्चात सुबाहु का उठना असंभव था। उसे अपनी छाती पर भयंकर दबाव का आभास हुआ मानो पसलियाँ हृदय से सटने को आतुर हो रही थी। वह खांसते हुए अपने स्थान से उठा। उसने प्रहार करने वाले की ओर देखा।

वह सुग्रीव की ही तरह दिखने वाला बलशाली एवं भीमकाय व्यक्ति था। उसके मुख पर एक दिव्य आभा विराजमान थी। उसके पीछे सैनिकों की एक टुकड़ी किसी भी क्षण आक्रमण के लिये सज्ज खड़ी थी।

“मूर्ख ! तेरा इतना साहस? किष्किन्धा की सीमा में, महाशक्तिशाली ‘वानरराज बाली’ के संरक्षण में आये शरणागत का वध कर दिया ? तेरा इतना दुस्साहस ? तुझे अपने प्राणों से इस उद्दंड़ता का मूल्य चुकाना होगा, विचित्र कवचधारी।” बाली के मुख पर भयंकर क्रोध था, क्रोध के कारण उसके नेत्र लाल हुये जा रहे थे। नासिका से फुंफकार सी निकल रही थी। असामान्य रूप से बलशाली भुजायें फड़क रही थी। उसका क्रोध सुबाहु की मृत्यु के पश्चात ही समाप्त होना था।

सुबाहु समझ चुका था कि बाली से युद्ध होने का अर्थ है मृत्यु। बाली को शक्ति में परास्त करना असंभव था। उसने कथायें सुनी थी कि महाबली रावण तक को बाली ने अपने घुटनों पर ला दिया था, और क्षमा मांगने पर विवश कर दिया था। कथाओं के अनुसार बाली इंद्र का मानसपुत्र था और उसके पास ऐसी क्षमता है जिससे उसके प्रतिद्वंदी की आधी शक्ति बाली के शरीर में स्थानांतरित हो जाती है, जिस कारण वह अविजित है और कोई उसे परास्त नही कर सकता। सुबाहु इस शक्ति के पर्वत से जीत नही सकता था किन्तु वह उसके समक्ष टिक भी पायेगा इसमें भी उसे शंका थी और वह जानता था बाली क्रोधी है, वह उसे समझा नही सकता। बाली युद्ध किये बिना शांत नही होगा और युद्ध का अर्थ होगा सुबाहु की मृत्यु।

“मैं मृत्यु के भय से बिना लड़े हार स्वीकार नही कर सकता। युद्ध का परिणाम चाहे जो हो, लड़ना महत्वपूर्ण है। सामने स्वयं बाली हो या यमदेव।” सुबाहु ने निश्चय कर लिया। वह युद्ध के लिये तैयार था।

***

बाली अपने स्थान से उछला, सुबाहु ने भी अपनी चिर परिचित शैली में उछाल भरी। दोनों हवा में ही एक दूसरे से जा टकराये। दोनों के टकराव से भीषण तरंगे वातावरण में फ़ैल गयी। मानो एक विस्फोट सा हुआ और दोनों भूमि पर आ गिरे। सुबाहु पहले ही समझ चुका था कि वह बाली को पराजित नही कर सकता, वह स्वयं के बचाव के लिये लड़ रहा था। पहली ही टक्कर में बाली को आभास हो गया कि उसका प्रतिद्वंदी कोई दिव्य शक्ति से युक्त अद्भुत मनुष्य है। भूमि पर गिरते ही बाली ने सुबाहु को उठने तक का अवसर नही दिया और उसकी छाती पर जा बैठा। बाली का विशालकाय पंजा सुबाहु के मुख पर था तो दूसरा हाथ उसकी छाती को फाड़ने के लिये धंसा जा रहा था। सुबाहु अपने आप को शक्तिहीन सा प्रतीत कर रहा था। उसकी ऊर्जा मानो उसके शरीर

से निचुड़ सी गयी थी, वह समझ गया था कि यह बाली अद्भुत शक्ति के कारण है, प्रतिद्वंदी की आधी शक्ति के रूप में उसकी उसकी ऊर्जा अब बाली में समाहित होती प्रतीत हो रही थी, जिस कारण सुबाहु की शक्तियाँ अब आधी ही शेष रह गयी थी। बाली का पंजा भयंकर दबाव से सुबाहु का मुख दबा रहा था, सुबाहु का कुछ करना अत्यंत आवश्यक था अन्यथा उसका शीश किसी मटके की भाँति फूटना निश्चित था। उसे अपने मुख की हड्डियों पर भयंकर दबाव का स्पष्ट आभास हो रहा था। दूसरी ओर बाली के पंजे उसकी छाती को फाड़ने के प्रयास में थे, किन्तु सुबाहु का दिव्य मांत्रिक कवच बाली के पंजो को अंदर धंसने से रोक रहा था।

“मुझे लगा तू मेरे समक्ष कुछ क्षण तो टिकेगा। किन्तु नही, तू तो मेरे समक्ष एक क्षण भी खड़ा रहने योग्य नही है।” बाली ने गर्वोक्ति की।

सुबाहु ने अपने नेत्र बंद किये, उसने अपना हाथ बाली के हाथ से हटाया जो उसकी छाती पर दबाव पड़ने से रोके हुए था। सुबाहु के सम्पूर्ण कवच पर मंत्र प्रस्फुटित होने लगे। उसकी भुजाओं में मानो विद्युत् सी दौड़ने लगी थी। उसने प्रचण्ड शक्ति से बाली के मुख पर अपनी मुष्टि का प्रहार किया। इस प्रहार में सुबाहु की इच्छा शक्ति, बाहुबल, कौशल्य, कवच की प्रतिरोधक क्षमता और मंत्र ऊर्जा की संगठित शक्ति समाहित थी। जिस कारण बाली उसकी छाती से उड़ता हुआ एक विशालकाय शिला को फोड़ता हुआ भूमि पर जा गिरा।

बाली के नेत्रों के समक्ष कुछ क्षणों के लिये अंधियारा छा गया। उसे उसका जबड़ा हिलता सा प्रतीत हुआ। बाली को अपने मुख में कुछ लसलसाता सा प्रतीत हुआ, उसने थूका, वह रक्त था। बाली विस्मित रह गया। आज तक अनेक शक्तिशाली दानवों, और योद्धाओ से उसने युद्ध किये थे, किन्तु किसी में भी इतनी शक्ति नही थी जो एक ही प्रहार में बाली के मुख से रक्त निकाल दे। अपने दंभ पर पड़ी इस चोट से वह तिलमिलाया। उसे विश्वास नही हो पा रहा था कि उस योद्धा के मात्र एक प्रहार से वह इतनी दूर तक घिसटता चला गया। वह क्रोध में तमतमाते हुए उठा और उसी विशालकाय शिला को जड़ सहित उखाड़ कर भयंकर शक्ति से सुबाहु की ओर उछाल फेंका। सुबाहु इस प्रहार के लिये तैयार था।

उसने पुन: अपनी शक्तियों को एकत्रित किया, इसी के साथ उसके सम्पूर्ण कवच पर एक दिव्य मंत्र आवरण सा दिखायी देने लगा, उस भारी

शिला को सुबाहु ने अपने एक ही घूंसे में खंड खंड कर दिया और इसी के साथ वह अपने स्थान से उछला और बाली की छाती पर जा टकराया, बाली भूमि के काफी अंदर तक जा धंसा, उस स्थान पर भयानक कंपन हुआ, मानो कोई शक्तिशाली भूकंप आया हो। इस शक्तिशाली प्रहार ने बाली को चोट तो पहुंचाई किन्तु उसका क्रोध अब अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका था। उसने बिना एक क्षण भी व्यतीत किये सुबाहु के पैरों को ही पकड़ लिया। उसने सुबाहु के पैरों को खींच कर सुबाहु को पथरीली धरा पर किसी कपड़े के गट्ठर की तरह ला पटका। भीषण ध्वनि के साथ पथरीली भूमि में दरार पड़ गयी, और पत्थरों के अनेकों टुकडें हवा में बिखर गये। यदि सुबाहु के शरीर पर कवच ना होता तो निश्चित ही उसके सम्पूर्ण शरीर की अस्थियों का चूरा हो गया होता। किन्तु कवच के कारण वह इस प्रहार को झेल गया। फिर भी उसे अपने शरीर पर एक भयंकर दबाव का आभास हो रहा था। उसके हर शक्तिशाली प्रहार के साथ ही मानो उसकी बढ़ी हुई ऊर्जा का हिस्सा भी बाली के शरीर में समाहित होती जा रही थी। सुबाहु के पैर अब भी बाली की जकड़ में थे, वह उन्हें छुडा नही पाया था। बाली ने बिना क्षण गंवाए उसे पुन: पथरीली भूमि पर भीषण शक्ति से ला पटका। इस बार पथरीली भूमि एक भीषण विस्फोट से टुकड़ों में बंटती हुई सी प्रतीत हुई। बाली ने पुन: उसके पैरों को खींचा किन्तु सुबाहु ने पथरीली भूमि में निर्मित दरार में अपने दोनों हाथ पूर्ण शक्ति से फंसा लिये थे। जिस कारण बाली उसे खींच नही पाया।

बाली ने एक क्षण से भी कम समय में स्थिति को समझ लिया और इस बार दुगुनी शक्ति से सुबाहु को खींचा, सुबाहु भूमि के उस पथरीले खंड को उखाड़ते हुए खींचा चला गया। उसके हाथों में पथरीली भूमि का एक बड़ा खंड था। उछलते हुए ही उसने वह खंड बाली के मस्तक पर पटक मारा। मस्तक पर हुए इस भयंकर प्रहार से बाली अपना संतुलन खो बैठा और सुबाहु उसकी पकड़ से छूट गया। सुबाहु पुन: अपने आप को शक्तिहीन प्रतीत कर रहा था। अब उसे अपने दण्ड की आवश्यकता थी, क्योंकि वह समझ चुका था कि बाली का शरीर जैविक ऊर्जा को आकर्षित करता है, जिस कारण उसकी शक्ति रूपी जैविक ऊर्जा उसमे संचित होती जा रही है। वह इस प्रकार लड़ते रहा तो तो कुछ ही देर में स्वयं अशक्त हो जायेगा। अभी वह अपनी तंद्रा में ही था कि बाली ने एक शक्तिशाली पेड़ भूमि से उखाड़ कर उसे सुबाहु पर दे मारा सुबाहु उस वृक्ष

के धक्के से दूर तक जा गिरा। अब उसने क्षण भर की देरी करना भी उचित नही समझा और अपनी पीठ से बंधा दण्ड अपनी भुजाओं में ले लिया। बाली क्रोध के आवेग में अपने स्थान से पुन: उछला किन्तु सुबाहु ने अपने घूमते दण्ड क ऊर्जा से बाली पर प्रहार कर दिया जिसके फलस्वरूप से वह जहां से उछला था वही पुन: जा गिरा। गिरते ही वह पुन: अपने स्थान पर खड़ा हो गया था। सुबाहु दण्ड को अपनी पूर्ण गति से घुमाते हुए उछला , वह सीधे बाली के समीप पहुंचकर प्रहार करने वाला था। बाली ने उसके दण्ड प्रहार से स्वयं को बचाने के लिये उसी उखड़े वृक्ष को पुन: थाम लिया, किन्तु उससे यही चूक हो गयी। सुबाहु दण्ड का प्रहार बाली पर नही अपितु उस धरा पर करने वाला था जहाँ बाली खड़ा था। बाली का दण्ड विद्युत् तरंगे उत्पन्न करता हुआ भीषण टंकार के साथ उस भूमि से जा टकराया। परिणामस्वरूप भीषण और शक्तिशाली विस्फोट तरंगे उत्पन्न हुई और बाली और वृक्ष दोनों धरा से अनेक हाथ तक उछलते चले गये। बाली इस अद्भुत प्रहार से सुन्न हो गया था। उसके सम्पूर्ण शरीर से लेकर मस्तिष्क तक कंपन हो रहे थे। यह बाली की अद्भुत जीवटता एवं शक्ति का ही परिणाम था जो वह अब तक अपने पैरों पर खड़ा था। ऐसे भीषण प्रहार में सुबाहु ने दानवों की एक पूर्ण टुकड़ी को ही समाप्त कर दिया था।

बाली अब अपनी सम्पूर्ण शक्ति एकत्रित कर आवेग के चरम पर आ चुका था। बाली सुबाहु को एक सामान्य योद्धा समझ रहा था जिस कारण वह उचित शक्ति से प्रहार नही कर रहा था। सुबाहु ने भी अब तक अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा का प्रहार नही किया था। यदि वह अपने सम्पूर्ण ऊर्जा का प्रहार चक्रदण्ड से करता तो इस कारण वह स्वयं भी थक कर अशक्त हो जाता। किन्तु अब उसके समक्ष कोई और मार्ग शेष नही था। वैसे भी ऊर्जा संजोये रखने का महत्व तब तक ही था जब तक वह जीवित था। उसके मृत होने के पश्चात संचित ऊर्जा का कोई उपयोग वैसे भी नही होना था। बाली अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ सुबाहु की ओर दौड़ा। सुबाहु ने अपने दण्ड को पूर्ण गति से घुमाना आरंभ किया। वह अपनी पूर्ण शक्ति से बाली की ओर दौड़ा। निश्चित ही अब भीषण टकराव होना था। वहाँ उपस्थित सैनिक इस भयंकर टकराव से आशंकित होकर अनेक पग पीछे हट गये थे। उसी समय अश्व पर आरूढ़ सुग्रीव वहाँ आ पहुंचा। उसे एक भयंकर अनहोनी की आशंका थी। सुबाहु का बिना सूचित किये निकल आना, बलभद्र को बाली का अभय मिलना और बाली का अत्यंत

क्रोध में महल से अपने अंगरक्षकों सहित निकलना उसके लिये पर्याप्त संकेत था। सुग्रीव अपने अश्व से कूद कर भूमि पर आ पहुंचा और दौड़ते हुए सुबाहु एवं बाली की ओर बढ़ने लगा।

“रुक जाइये भ्राता श्री ! रुक जाइये सुबाहु।” सुग्रीव पूर्ण शक्ति से चीखा किन्तु तब देर हो चुकी थी। बाली का पूर्ण शक्ति से युक्त मुष्टि प्रहार सुबाहु की ओर बढ़ चुका था और सुबाहु की सम्पूर्ण ऊर्जा से घूमता दण्ड बाली की ओर। दण्ड और मुष्टि के टकराते ही एक कर्णभेदी विस्फोट हुआ और वहाँ मानो चक्रवात सा उत्पन्न हो गया। धूल धुंए के मध्य कुछ भी दिखायी देना असंभव हो गया था। उस शक्तिशाली विस्फोट के कारण सुग्रीव सहित सारे अंगरक्षक तक उछलते हुए जा गिरे थे। भूमि में भयंकर गड़गडाहट हुई। सम्पूर्ण धरा कांप सी गयी और समीप के वृक्षों के पत्ते तक झड़ गये। धूल और धुएं से सने सुग्रीव के कर्णपटल सांय सांय कर रहे थे। उसे कुछ भी सुनाई और दिखायी नही दे रहा था। कुछ क्षणों पश्चात वह सामान्य हुआ। उसने उस स्थान की ओर दृष्टि घुमायी जहाँ बाली और सुबाहु टकराए थे। वह स्थान अब एक विशालकाय गड्ढे में परिवर्तित हो चुका था, बाली अपने घुटनों पर बैठा हुआ अब तक थरथरा रहा था।

उसका सम्पूर्ण शरीर उस कंपन से हिल गया था। सुबाहु अपने दण्ड के साथ ही भूमि पर पड़ा था। उसके ऊपर भूमि से उड़े हुए अवशेषों का ढेर सा लग गया था। वह उसमे से उठने का प्रयास कर रहा था। बाली उसे इस प्रकार निकलने का प्रयास करते देख रहा था। वह उसे निकलने का पूर्ण अवसर देना चाहता था। सुबाहु कुछ क्षणों पश्चात लड़खडाते हुए उन अवशेषों से बाहर निकलने में सफल हुआ। उसकी सम्पूर्ण ऊर्जा मानो निचुड़ सी गयी थी। बाली के एक शक्तिशाली प्रहार से उसकी मृत्यु निश्चित थी। बाली ने अपनी मुष्टि को प्रहार करने के लिये उठाया ही था।

“रुक जाइये भ्राता श्री ! रुक जाइये। ये हमारे शत्रु नही है। इन्होने आपके छोटे भाई सुग्रीव के प्राण बचायें है।” सुग्रीव ने ऊँचे स्वर में कहा। बाली का प्रहार करने के लिये सज्ज हाथ जहां का तहां ठिठक गया।

***

सुग्रीव ने सुबाहु से अपनी भेंट का सम्पूर्ण विवरण बाली को दे दिया था। बाली का क्रोध अब शांत हो चुका था। किन्तु अपने शरणागत का उसके सीमाक्षेत्र में हुआ वध बाली को पुनः क्रोधित कर रहा था।

“सुबाहु ! तुमने मेरे प्रिय भाई के प्राण बचाकर मुझपर जो उपकार किया है। उसके बदले मैं तुम्हें तुम्हारी इस उद्दंड़ता के लिये क्षमा करता हूँ। किन्तु तुमने मेरे अभयदान में आये दानव के प्राण लिये है, इसलिये तुम मेरे दण्ड के भागी हो। तुम्हारी इस धृष्टता के लिये मैं तुम्हारी संस्था एवं तुम्हारा किष्किंधा में प्रवेश पूर्णतया निषिद्ध करता हूँ।” बाली ने अपना निर्णय सुनाया। सुबाहु शांत खड़ा रहा, उसका मुखावरण अब उतर चुका था।

“जी ! मैंने आपके राज्य के नियमों को भंग किया है, उसके लिये मैं आपके इस दण्ड को स्वीकार करता हूँ।” सुबाहु नम्र स्वर में बोला।

“तुम्हारे प्राण केवल इसलिये बचे हुये है, क्योंकि तुमने सुग्रीव की सहायता की थी। दण्ड की अवधि कल से आरंभ होगी, इसलिये मैं तुमसे निवेदन करूंगा कि आज तुम मेरा आतिथ्य स्वीकार करो, तुम निश्चय ही एक अद्भुत योद्धा हो सुबाहु। मैंने अब तक किसी को इतनी दृढ़ता से युद्ध करते नही देखा। तुम मेरी प्रशंसा के पात्र हो। इसलिये मेरी इच्छा है कि आज तुम मेरे अतिथि बनो।” बाली का स्वर अब सामान्य था।

“क्षमा कीजियेगा वानरराज ! किन्तु दानव बलभद्र के वध के पश्चात ही, भद्रक क्रोधित होकर उत्पात मचायेगा। इसलिये यह समय मेरे आतिथ्य ग्रहण करने के लिये सर्वथा अनुचित है। मुझे बस आज्ञा दीजिये। मेरी कहीं और आवश्यकता है।” सुबाहु ने नम्र स्वर में कहा।

“भद्रक के विरूद्ध मैं तुम्हारी सहायता अवश्य करता, किन्तु मैं उसके भाई के प्राण बचाने में असफल रहा, इस कारण अब मैं भद्रक के विरूद्ध कोई कार्य नही करूँगा। मुझे उस से पूर्ण सहानुभूति है। मेरा आतिथ्य ग्रहण ना करने के लिये तुम्हारे पास उचित कारण है, और तुम्हारी सहायता ना करने के मेरे पास भी उचित कारण है। मैं तुम्हारे उद्देश्य के लिये शुभकामनायें ही दे सकता हूँ। आशा करता हूँ अगली बार जब हमारी भेंट हो तब हम मित्र की तरह मिलें।” कहते हुए बाली अपने अश्व पर सवार हो गया।

“सैनिकों ! बलभद्र एवं उसके अंगरक्षकों के शवों को सम्मान सहित भद्रक को सौंप कर मेरी ओर से खेद और श्रद्धांजलि सन्देश भिजवा दिया जाये।” बाली ने सैन्य प्रमुख को आदेश दिया। उसने सिर झुका कर आदेश ग्रहण किया। उसका संकेत पाकर सुग्रीव ने सुबाहु को प्रणाम किया, प्रत्युत्तर में सुबाहु ने भी प्रणाम किया। सुग्रीव बाली के साथ ही

पुनः नगर की ओर बढ़ गया। सुबाहु कुछ क्षणों तक वहीं खड़ा रहा और फिर अपने अश्व पर सवार होकर किष्किंधा से विपरीत दिशा की ओर चल पड़ा।

***

तांडव आरंभ

२००८, वाराणसी

अथर्व अपने मकान में नितांत अकेला था, बरामदे में अपने पिता की कुर्सी पर सर टिकाये वह शून्य में ताक रहा था। सांझ की लाली आकाश में फ़ैल चुकी थी। अथर्व के काले चमकदार केश उसके सिर से नदारद थे, उसका सम्पूर्ण शीश मुंडाया हुआ था। वह अपने सौम्य व्यक्तित्व के विपरीत ही किसी अन्य व्यक्ति की तरह दिखायी दे रहा था। दीवार पर पिता के साथ लगी अपनी माँ की हार लगी तस्वीर देख कर उसकी आँखों से आंसू की दो बूंदे अनायास ही बह निकली, जिसे उसने फौरन पोंछ दिया। वह पुरानी स्मृतियों में खोया हुआ था। मठ वाली घटना को ३ महीने बीत चुके थे। उसे अब तक वह दृश्य अपनी आँखों के समक्ष किसी चलचित्र की भाँति दिखायी दे रहा था जब वह अपने पिता की मृत्यु की सूचना माँ को देने आया था। माँ यह सूचना सुनते ही आंगन में जो गिरी तो पुन: उठ ही नहीं पायी। अथर्व अब नितांत अकेला था, उसका सब कुछ खो चुका था। गुप्त मंदिर और उसके हमलें की खबरें दबी नही रही। मीडिया ने इस खबर को हाथों हाथ लिया, अंतिम निष्कर्ष यह निकला कि यह एक सुनियोजित आतंकवादी हमला था। मठ के आयुध और यंत्रणा कक्ष की प्रत्येक वस्तु एवं प्रमाण को ड्राइवर ने नष्ट कर दिया था। मीडिया एवं अन्य सरकारी संस्थाओं को केवल एक प्राचीन मंदिर की जानकारी ही मिल पायी थी जहाँ एक कट्टरवादी आतंकी संगठन ने हमला किया था। इससे अधिक और कोई भी जानकारी गाइड और ड्राइवर के एजेंट्स ने मीडिया में पहुँचने नही दी, जो पहले ही विभिन्न सुरक्षा विभागों में महत्वपूर्ण पदों पर विराजमान थे। काफी समय तक यह चर्चा का विषय बना रहा। चूँकि मीडिया केवल एक पक्ष के ही प्रति अधिक वफादार था इसलिये उसे किसी हिन्दू मंदिर पर हुए आक्रमण में मतलब का मसाला नही दिखा, जो ज्यादा दिन चलाया जा सके। इसी मध्य गाइड और ड्राइवर अपने कार्य पर लग चुके थे। वे अपने विभिन्न सूत्रों एवं शक्ति मठ के देश में स्थित अन्य शाखाओं से निरंतर संपर्क बनाये हुए थे।

गंगा तट से आती सर्द हवाओं में घाट पर गूंजती आरतियों के स्वर स्पष्ट सुनाई दे रहे थे। एक टैक्सी घर के सामने वाले मैदान में आकर रुकी। अथर्व ने स्वयं को संयत किया। टैक्सी में ड्राइवर और गाइड थे, वे तेज

कदमों से अथर्व के घर की ओर बढ़े। अथर्व उनकी गति देखकर समझ गया कि अवश्य कोई विशेष बात थी।

“अथर्व ! तुम जानना चाहते थे ना कि तुम्हें बाली कहकर क्यों संबोधित किया गया था ?” ड्राइवर ने आते ही अथर्व से प्रश्न किया। अथर्व ने हामी में केवल अपना सिर हिलाया। ड्राइवर और गाइड उसके सामने ही रखी लकड़ी की कुर्सियों पर बैठ गये। वे पूर्णतया चौकन्ने थे कि कोई और उनकी बातें न सुन पाये। वैसे भी उनके स्वर इतने धीमे थे कि उन तीनो के अलावा कोई सुन ही नही पाता।

“किवदंतियों के अनुसार तुम ‘वानरराज बाली’ का पुनर्जन्म हो।” गाइड के शब्दों ने मानों अथर्व के कानों में विस्फोट सा किया। उसने कुर्सी से अपना सिर उठाया।

“आप यह क्या कह रहे हैं ?” अथर्व ने व्यग्रता से प्रश्न किया।

“मैंने जो कहा वह स्पष्ट शब्दों में कहा ! तुम उस बाली के पुनर्जन्म हो जो त्रेतायुग का एक अद्वितीय वानर योद्धा था।” गाइड ने पुनः अपनी बात दोहराई।

“उसे तो भगवान श्रीराम के हाथों से मृत्यु प्राप्त हुई थी। उसे मोक्ष मिला था और मोक्ष का अर्थ ही है जन्म मरण के चक्र से मुक्ति। तो उसके पुनर्जन्म का प्रश्न ही नही उठता।” अथर्व ने कहा।

“तुम्हारा कहा सत्य है। किन्तु जहां तक मैं जानता हूँ कोई भी मनस्थिति तभी कार्यान्वित होगी जब तुम्हारा मन और मस्तिष्क उस अवस्था को स्वीकार करेगा। यदि तुम दुखी रहना चाहते हो तो मन तुम्हें हर वस्तु में दुखी होने के अनेक कारण दिखायेगा, किन्तु यदि तुम चाहो कि मैं किसी भी परिस्थिति में दुखी नही रहूँगा और हर वस्तु, हर अवस्था को सकारात्मक दृष्टि से देखूंगा तो तुम्हें नकारात्मकता में भी कोई ना कोई सकारात्मकता दिखायी देगी। कहावत सुने हो ना ‘मन के हारे हार, मन के जीते जीत।‘ हो सकता है ऐसा ही कुछ मोक्ष के साथ भी हो। यदि मैं अपने विचार कहूँ तो बाली को अपने अंतिम समय में बहुत ग्लानि हुई थी। वह अपने कर्मो और अपनी नीचता को लेकर खेद प्रकट कर रहा था। उसकी इच्छा थी कि किसी प्रकार वह अपने उन नीच कर्मो को सुधार सके जिसके लिये स्वयं भगवान श्री राम को उसका वध करने को विवश होना पड़ा। उसकी मृत्यु तो हो गयी, मोक्ष का वरदान भी मिल गया किन्तु उसकी आत्मा से किंचित उसका अपराधबोध उसकी ग्लानि कम नही हुई थी। उसकी आत्मा पर यह भार था, उसे अपने कर्मो का पछतावा था, और

वह चाहता था कि वह इसका दण्ड भोगे अथवा उसे पुन: अवसर मिले ताकि वह अपनी भूल सुधार कर चैन से मुक्त हो सके। उसकी इसी इच्छा के कारण शायद उसे मोक्ष भी स्वीकार नहीं हुआ और उसकी ग्लानि के फलस्वरूप उसका मानव स्वरुप में जन्म हुआ। ताकि वह अपने कर्मों को सुधार सके, मानवता के लिये कुछ ऐसा कर सके जिससे उसके पाप कम हो सके।" गाइड ने कहां।

"यह तो केवल आपकी अपनी थ्योरी है।" अथर्व बेचैन होने लगा था।

"क्या तुम्हारे पास कोई और थ्योरी है ?" ड्राइवर ने कहा जो गाइड से सहमत था। अथर्व ने कुछ नही कहा।

"अथर्व तुम्हारी अद्भुत क्षमताओं के बारे में कभी सोचा है ? यह तुम्हें कैसे मिली ? कैसे तुम बचपन में अपने से दस गुना शक्तिशाली सांड़ को चित्त कर सके ? कैसे तुम्हारे समक्ष आते ही तुम्हारा हर प्रतिद्वंदी कमजोर हो जाता है ? कैसे तुम्हारी गति और फुर्ती सामान्य मानवों से कई गुना अधिक है ? कैसे तुम्हारे जख्म जल्दी भर जाते है ? यह समस्त क्षमताये बाली में थी अथर्व और तुम उन्ही क्षमताओं के साथ जन्मे हो।" ड्राइवर ने कहा।

"किन्तु आप इतने आश्वस्त क्यों है के मैं बाली का ही पुनर्जन्म हूँ ?" अथर्व व्याकुलता की चरम पर था।

"हमारी संस्था के प्रमुख संस्थापको के आदिगुरू महर्षि संदीप की मृत्यु के पश्चात गुरु कपिल ने अपने अंतिम भाष्य में यह भविष्यवाणी की थी, युगों पश्चात बाली का पुनर्जन्म होगा, या उसकी अधूरी इच्छा ही एक मनुष्य रूप में जन्म लेगी और वही मनुष्य सम्पूर्ण मानवजाति के भविष्य का निर्णायक बनेगा। इस भविष्यवाणी के विषय में ना केवल हम जानते थे अपितु दानव जातियां भी इस भविष्यवाणी के विषय में जान चुकी थी। तुम्हारा जन्म सामान्य अवस्था में नही हुआ है अथर्व। तुम्हारे जन्म से पहले ही तुम्हें मारने की अनेकों योजनायें कार्यान्वित हो चुकी थी। जन्म से पहले ही तुम्हारे हजारों शत्रु उत्पन्न हो चुके थे, जो तुम्हारा जन्म रोकना चाहते थे। तुम्हारे पिता देवदत्त ने हर उस परिस्थिति को मात देते हुए तुम्हारे जन्म के लिये एक सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित किया। उनका सम्पूर्ण परिवार तक इस भविष्यवाणी के लिये बलिदान हो गया था।" गाइड ने कहा। अथर्व अब समझ रहा था गाइड को आखिर गाइड की उपाधि क्यों मिली हुई थी। उसके पास जानकारियों का अकूत भंडार था। उसे हर विषय में प्रवीणता प्राप्त थी।

“मेरे पिता के परिवार के विषय में मुझे कभी कुछ नही बताया गया और मेरे जन्म से पहले क्या हुआ था, जिस कारण पिताजी को सब कुछ त्यागना पड़ा ?” अथर्व ने उत्कंठा से पूछा।

“वह एक वृहद कथा है अथर्व और यह समय अभी कथा कहानियां सुनाने का नही है। ऊर्जा लिंग दानवों के कब्जे में है। वे उसका दुरुपयोग करने की तैयारी कर रहे होंगे। हमारा सबसे पहला कार्य उन्हें रोकना होना चाहिये, उन्हें खोजना होना चाहिये। शिवलिंग को पुन: प्राप्त करना है।” ड्राइवर ने टोका। वह प्रत्येक क्षण को केवल सार्थक कार्यकलापों में ही बिताने का इच्छुक था।

“मंदिर पर हमले वाले दिन मैं किसी से मिला था। मंदिर से कुछ ही दूर वाले चौराहे की व्यस्त सड़क पर उसकी गाडी मेरी ऑटो से भिड़ी थी। पहले मैंने ध्यान नही दिया था। किन्तु हमले के पश्चात जब मैंने स्वयं को संभाला तब मैंने अपने दिमाग को दौडाना आरंभ किया। इतना बड़ा हमला ऐसे ही नही हो सकता था, कुछ ना कुछ तो ऐसा रहा होगा जो मेरी नजरों के सामने हुआ था और मुझे याद नही आ रहा था। फिर मुझे याद आया वह विदेशी, उससे हुआ झगड़ा। उसकी बेचैनी। उसकी व्यग्रता। कहीं जाने की जल्दी। जब मेरा मस्तिष्क शांत हुआ तो मेरा मन बार बार पर उस व्यक्ति पर जाकर रुक जाता था। मठ बुरी तरह क्षति ग्रस्त हो चुका था, हमले में प्रयुक्त विस्फोटकों एवं जलजमाव के कारण हम आक्रमणकारियों के अंदर प्रवेश करने का द्वार खोज नही पाये। हर ओर मलबा बिखरा था। उन्होंने कहां से मठ में प्रवेश किया कुछ पता नही चला। वह तो ऊपरी मंदिर के धसकने के कारण मठ के बारे में मीडिया को पता चला।” अथर्व बोलता जा रहा था।

“मुझे याद है, तुमने मुझे उस दिन चौराहे पर जानकारियाँ इकट्ठी करने का कार्य दिया था। चौराहे की स्ट्रीट लाईट के सामने ही एक फरसान और मिठाई की बड़ी दुकान थी जहां अनेक सीसीटीवी कैमरे लगे थे। तुमने उस फ़ुटेज को प्राप्त करके हमें उस सम्पूर्ण घटना की वीडियो दिखायी थी और उन व्यक्तियों के बारें में पता करने को कहा था।” ड्राइवर ने कहा।

“मैं उसी पर आ रहा था। उन व्यक्तियों के बारे में कुछ पता चला वे कहाँ से आये थे ? एक तो विदेशी था, एयरपोर्ट के इमिग्रिशन से उस सप्ताह आने वाले हर विदेशी की जानकारी निकालने को कहा था।” अथर्व ने ड्राइवर को देखकर कहा।

“इमिग्रिशन में स्थित हमारे खुफिया एजेंट्स ने हमें सम्पूर्ण जानकारी प्रदान की थी। जिसमे कुछ दिन लगे थे, और फूटेज में तुमसे लड़ने वाले व्यक्ति के बारे में पता चला कि वह ‘फ्रैंक केज’ था। वह वर्षो से भारत में ही रह रहा है। वह एक मल्टीनैशनल संस्था का एशिया हेड है। उसका कहीं कोई संदिग्ध या आपराधिक रिकॉर्ड नही मिला।” ड्राइवर रुका और अथर्व की ओर देखने लगा।

“और दूसरे के बारे में कुछ ?” अथर्व ने प्रश्न किया।

“उसके बारे में हमने अपने एजेंट्स से हर अपराधिक रिकार्ड्स से जानकारी निकालने के लिये कह्या था। दिल्ली में किसी रिकॉर्ड में उसका उल्लेख मिला था, जिसमे वह निर्दोष साबित हो गया था। उसके किसी प्रतिद्वंदी ने उसे फंसाने के लिये उसके क्लब में हथियारों को प्लांट किया था। लेकिन जांच पड़ताल से यह साबित हो गया कि उसका इसमें कोई हाथ नही है, उसके प्रतिद्वंदी नाईट क्लब के मालिक ने यह काम जलन में किया था।” इस बार गाइड बोला।

“उसका नाम ?” अथर्व ने पूछा।

“माइकल ! उसके तीन नाईट क्लब है, दो मुम्बई में और सबसे बड़ा दिल्ली में। जहां का संचालन वह स्वयं देखता है। उसके क्लब के मेम्बर्स में बड़ी-बड़ी हस्तियाँ शामिल है, उसके क्लायंट्स में पॉलिटिक्स से लेकर स्पोर्ट्स, बिजनेस, मॉड़लिंग, और फिल्म जगत के बड़े बड़े सेलिब्रिटीज तक के नाम है। देश के विभिन्न हिस्सों से आने वाले रसूखदार सेलिब्रिटी क्लायंट्स उसके क्लब में जाना पसंद करते है।” गाइड ने अपनी जानकारी बताई।

“ इसके क्लब की सम्पूर्ण जानकारी निकालो। इस पर नजर रखो, कब कहाँ जाता है, किससे मिलता है। कौन कौन से सेलिब्रिटी इसके क्लायंट्स है मुझे उन सबके नाम चाहिये। आखिर है तो वह एक नाईट क्लब ही, भले ही कितना भी बड़ा हो लेकिन देश विदेश से सेलब्रिटीज और बड़े-बड़े रसूखदार लोगो का स्पेशली उस क्लब के लिये आना कुछ खटकता है। जानकारी निकालो, और हां एक बात और ..” अथर्व एक क्षण को रुका।

“क्या ?” दोनों ने सम्मिलित स्वर में कहा।

“मटुक जीवित है।” अथर्व ने धमाका सा किया। उसकी बात सुनकर दोनों एकदम से सन्न रह गये।

“ये क्या कह रहे हो तुम ?” दोनों ने एक साथ कहा।

“हमलावर मठ के हर भाग के बारे बकायदा पूरी रिसर्च करके आये थे। उन्हें हर भाग की, प्रत्येक कक्ष की सम्पूर्ण जानकारी थी। उन्होंने सुनियोजित ढंग से हमला किया, ऐसे स्थानों पर सबसे पहले प्रहार किया जहां प्रहार करने से अव्यवस्था हो जाती, और किसी को भी संभलने का अवसर तक ना मिलता। उन्हें पता था किस समय मठ के कितने सैनिक हथियारों के साथ होते है, और कितने सामान्य कार्यों में व्यस्त होते है। वे हर सैनिक के हिसाब से अपनी टुकड़ी को संचालित कर रहे थे। उन्हें गर्भ गृह में पानी भर जाने का भी पता था। शिवलिंग गर्भगृह से बाहर गंगा नदी में ले जाया गया। इसका अर्थ उन्हें नदी के तल से भी मठ के गर्भगृह का लोकेशन की जानकारी थी। मठ के अनेक कक्षों के द्वार पासवर्ड प्रोटेक्टेड़ थे। जिनमे से कुछ ख़ास द्वार के पासवर्ड्स केवल मटुक और मेरे पिता और बाद में गाइड जी ही जानते थे। वे सभी कक्ष खुले और नष्ट किये जा चुके थे, इसका अर्थ यही है कि मटुक जीवित है। दूसरे, जिस मंदिर विस्फोट में दीक्षा की मौत हुई थी ...” कहते हुए अथर्व का स्वर एक पल को भर्रा सा गया लेकिन उसने खुद को संभाल लिया।

“उस विस्फोट के जिम्मेदार तीन आरोपियों का अपहरण हो गया था। जिनका आजतक कोई सुराग नही मिला। इसके कुछ समय पश्चात ही दूसरे आरोपी भी गायब हो गये जिनका अब तक किसी को कोई सुराग नही मिला। मैं निश्चित तौर पर कह सकता हूँ के इनमे से कोई भी अब जीवित नही है। मटुक उन आरोपियों से प्रतिशोध लेने को आतुर थे, और मटुक के गायब होते ही वे आरोपी भी गायब हो गये और मठ पर आक्रमण हो गया बाकायदा ब्लूप्रिंट के साथ। फिर बाकी आरोपी भी गायब हो गये। मटुक के मन में दीक्षा की मृत्यु के पश्चात ही प्रतिशोध की भावना ने जन्म लिया था, वे स्वयं घटना में शामिल आरोपियों से प्रतिशोध लेने के इच्छुक थे, किन्तु पिताजी ने और रक्षा दल के नियमों ने इसकी अनुमति प्रदान नही की। इन सब घटनाओं की कड़ियाँ केवल और केवल मटुक की ओर इशारा करती है। हमें मटुक की तलाश करनी है, उनसे पूछना है कि उन्होंने ऐसा क्यों किया ?” अथर्व का चेहरा क्रोध से धधक रहा था।

गाइड और ड्राइवर दोनों अब तक हक्के-बक्के थे।

“पता करो ! मैं महावीर सुबाहु द्वारा दिया गया कवच धारण करूंगा और एक बार कवच धारण करने के पश्चात मैं नही रुकूँगा। मैं उन सबका समूचा विनाश कर दूंगा जो इस घटना के लिये दोषी है। शिवलिंग

अवश्य उनके पास है किन्तु तांडव मैं करूंगा अपनी सम्पूर्ण शक्ति और सम्पूर्ण क्षमता का प्रयोग करके दानव शक्तियों का विनाश करूंगा।” सुबाहु क्रोध से कांपते हुए उठ खड़ा हुआ।

***

वर्तमान समय

“मैंने माइकल को मारा, उसके क्लब को नष्ट कर दिया। फिर मटुक को भी हमने खोज निकाला, लेकिन उसने मेरे हाथों मरने के बजाय आत्महत्या करना ही उचित समझा। हमें पता था मॉल का ठेका तुमने ही दिलवाया था, इसलिये तुम्हारी तलाश थी। लेकिन तुम अंड़रग्राउंड़ हो चुके थे। तुम्हारे फैमिली बैक ग्राउंड़ की जानकारी निकाली गयी, तब तुम्हारी बेटी के विषय में पता चला और मैं उसके सहारे तुम्हें तलाश करने क्लब तक पहुँच गया। यह संयोग ही रहा कि शेषन बाप बेटों के कारण ऋचा मुसीबत में फंसी और मुझे उसे बचाना पडा। अब तुम मेरे सामने हो, तो मुझसे झूठ बोलने का प्रयास भी नही करना। मुझे किसी की जान लेने में एक क्षण भी संकोच नही होता, इतना तो अब तक तुम समझ ही गये होगे।” बाली अपने सामने कुर्सी से बंधे शिवराज की आँखों में झांकते हुए बोला। कुछ ही दूरी पर एक कुर्सी पर ऋचा भी बंधी हुई थी। उसके मुंह पर पट्टी बंधी हुई थी। वह कसमसा रही थी।

“तुमने जिसका नाम लिया ‘माया बाहुपति’ उसके विषय में मुझे सम्पूर्ण जानकारी चाहिये। मुझे अब तक उस शख्स का नाम नही पता था जो इस पूरे काण्ड का कर्ता धर्ता था। अब चूँकि मुझे उसका नाम पता चल गया है तो उसके बारे में जानकारी निकालना ज्यादा मुश्किल नही होगा। मेरे स्त्रोत यह कार्य कर लेंगे, किन्तु उसमे थोडा समय जायेगा, इसलिये तुम मुझे बता दो।” बाली ने एक पैर कुर्सी के हत्थे पर रखते हुए कहा।

“तुम्हें जो चाहिये वह मैं दूंगा, बस मेरी बेटी को जाने दो।” शिवराज गिड़गिड़ाया।

“जवाब दो ! मुझे तुम्हारी बेटी में कोई दिलचस्पी नही है, मीडिया इसके निर्दोष होने के वीडियोज रिलीज कर चुका है। बस कुछ खानापूर्ति के पश्चात यह निर्दोष प्रमाणित हो जायेगी। उसे छोड़ दूंगा।” बाली अपने उसी अंदाज में बोला।

“माया एक महत्वाकांक्षी बिजनेस मैन है, वह देश के टॉप ब्रांड्स में से एक ‘माया कंस्ट्रक्शन एंड़ डेवलपमेंट्स’ का चीफ है, जिसके फाउंड़र उसके पिता महेश बाहुपति थे। ये असल में दानव है। अपने कंस्ट्रक्शन की आड़ में ये एक संगठित गुप्त संस्था का संचालन करते है, जो सम्पूर्ण विश्व में फैली हुई है। माया भारत में उस दानव संस्था के प्रमुख के पद पर

है जो मनुष्य जाति पर नियंत्रण रखना चाहती है। वह दानव, दैत्यों एवं राक्षसों को संगठित रखते है, और समाज में गुप्त रूप से वास करते है। इनके सदस्य हर जगह और हर प्रमुख पदों पर विद्यमान है। तुम अंदाजा भी नही लगा सकते के हमारे बीच कितने दानव मनुष्य रूप में रह रहे है।" शिवराज एक क्षण को रुका।

"तुम तो दानव नही हो ! फिर तुम्हारी क्या मज़बूरी थी उनके साथ रहने की ?" बाली ने प्रश्न किया।

"हमारे जैसे मनुष्य युगों से इस धरती पर है, बाली। जो ना मनुष्यों के साथ है और ना ही दानवो के, उन्हें केवल अपने फायदे से मतलब है। हम इनके मध्य की सीढ़ी है, दानवों को जब भी मनुष्यों से कोई कार्य करवाना होता है वो हम जैसे मध्यस्थों का ही सहारा लेते है।" शिवराज बोला।

ऋचा ने अब कसमसाना बंद कर दिया था। उसका सम्पूर्ण अस्तित्व ही मानों बदल गया था। उसे अपने कानों पर विश्वास ही नही हो रहा था। देव, दानव, दैत्य, राक्षस, रक्ष दल, रक्षा दल इत्यादि के उल्लेख ने उसका सिर घुमा कर रख दिया था। उसे प्रतीत हो रहा था मानों वह किसी भयानक दुस्वप्न के मध्य में बेबस खड़ी है जो कब समाप्त होगा खुद उसे भी नही पता।

" अब अपनी कहानी बंद करो, और मुद्दे पर आओ। मुझे माया के बारे में सारी डिटेल्स चाहिये और मुझे नही लगता इसके लिये तुम्हें टॉर्चर करने की आवश्यकता पड़ेगी।" बाली सख्त स्वर में बोला।

"उसे तुम्हारी ही खोज है, वह जानता है कि तुम उस तक पहुँच जाओगे। वह तुमसे मिलने के लिये इतना उत्सुक।" शिवराज बोला। त्रिपुंड धारी नकाब के भीतर बाली की आँखे सिकुड़ी।

"मेरी खोज ?"

"हाँ ! उसका कहना है कि वह युगों से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। उसे पूर्ण विश्वास था तुम्हारे अस्तित्व का। उसे यकीन है तुम उस तक अवश्य पहुंचोगे। लेकिन तुमसे उसे क्या लेना देना है यह किसी को नही पता, वह तुमसे क्या चाहता है, तुम्हें कैसे जानता है, यह बात किसी को भी नही पता।" शिवराज ने इतना कहकर ऋचा की ओर देखा, ऋचा ने नफरत से देखते हुए अपनी नज़रें फेर ली।

बाली असमंजस में था। माया का असल उद्देश्य क्या था ? उसे जो चाहिये था वह तो प्राप्त कर चुका है। फिर उसे मेरी तलाश क्यों है ?"

उसके मन में अनेक प्रश्न कुलबुला रहे थे, जिसका उत्तर उसे केवल माया ही दे सकता था।

***

।। त्रेतायुग ।।

सेतु निर्माण

उस वृहद एवं अथाह समुद्र पर एक असंभव निर्माण हो रहा था। यह निर्माण वानरों की विशाल सेना द्वारा किया जा रहा था। जिसका नेतृत्व कर सुग्रीव कर रहा था। अयोध्या के युवराज श्री राम अपने भाई लक्ष्मण के साथ लंकापति रावण की नगरी पर आक्रमण करने जा रहे थें। रावण ने अपने अत्याचारों की सीमा पार कर ली थी, अयोध्या के युवराज की अर्धांगिनी को अपनी बंदिनी बना कर उसने मर्यादा की सभी सीमायें लांघ ली थी। उसे उसी का दण्ड देने मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये जाने वाले युवराज आज एक असंभव सा कार्य कर रहे थें। इस कार्य को करने से पहले महादेव का स्मरण किया गया था। समुद्र के अशांत जल पर पत्थरों द्वारा एक अद्भुत सेतु बनाया जा रहा था। यह चमत्कार ही था कि भीमकाय शिलायें लकड़ी के टुकड़ों की भाँति पानी पर तैर रही थी। वानर, मनुष्य एवं अन्य जातियों के योद्धा इस युद्ध में युवराज के साथ थे।

सुग्रीव और युवराज की भेंट विधाता द्वारा लिखी हुई थी। सुग्रीव को आज भी वह क्षण स्मरण था जब उसके बड़े भाई बाली ने राक्षस दुदुंभी के बेटे मायावी की युद्ध की चुनौती स्वीकार की थी। वे उससे युद्ध करते करते मायावी के गढ़ तक पहुँच गये थे। मायावी ने कुटिलता से बाली के दम्भ का लाभ उठाते हुए उसे पर्वतमालाओं में स्थित भूलभुलैय्या जैसी गुफाओं के जाल में फंसा दिया था। बाली को अनेक दिन लगे मायावी को उस गुफा से खोजने में। मायावी एवं बाली का भयंकर युद्ध हुआ एवं गुफा से रक्त की धारा बह निकली। सुग्रीव का मन आशंका से कांप उठा। उसे विश्वास हो गया था कि मायावी के जाल में फंस कर बाली मारा जा चुका है। इसलिये सुग्रीव ने हताश होकर गुफा का द्वार बंद कर दिया और बाली के जाने के पश्चात राजविहीन किष्किंधा के सिंहासन को संभाला। किन्तु बाली जीवित था, उसके हाथों मायावी का वध हो चुका था, वह लौटा और क्रोध में उसने अपनी मतिभ्रष्ट कर ली, सुग्रीव पर षड्यंत्र रच कर किष्किंधा का राज्य हड़पने एवं बाली को मरने के लिये छोड़ आने का आरोप लगा कर बाली ने उसे अपमानित करके किष्किंधा से राज्य निकाल दिया। वह यही नही रुका, बल्कि उसने सुग्रीव की पत्नी को भी अपनी दासी बना लिया। छोटे भाई की पत्नी पुत्रवधु सम होती

है और बाली ने उसपर कुदृष्टि रख कर अपने पापों का घडा स्वयं भर लिया था। वन वन भटकते सुग्रीव को तब साथ मिला वानरश्रेष्ठ महाबली हनुमान का। जिनके द्वारा सुग्रीव अयोध्या के युवराज से मिला। युवराज ने बाली का वध करके सुग्रीव को न्याय दिलाया। तब से सुग्रीव उनका ऋणी हो गया था। सुग्रीव को आज अकस्मात बाली का स्मरण हो आया था। यदि भ्राता आज उनके साथ होते तो वे रावण की गर्दन मरोड़ कर इस युद्ध को होने से पहले ही समाप्त कर देते। सुग्रीव सागर के किनारे एक विशालकाय शिला पर बैठे हुए अपने विचारों में मग्न था कि उसने एक दल को आते देखा, वह सतर्क हो गया। किन्तु उसे दल की अगुवाई करता व्यक्ति परिचित सा लगा।

“सुबाहु !” सुग्रीव को याद आया। वह उसे भला कैसे भूल सकता था। सुग्रीव लगभग दौड़ते हुए सुबाहु के समक्ष पहुंचा, इससे पहले की सुबाहु कुछ कह पाता सुग्रीव ने उसे आलिंगनबद्ध कर लिया। सुबाहु मुस्कुराकर रह गया। उसके साथ २० सन्यासी योद्धाओं की टुकड़ी थी। सुग्रीव ने उन्हें देखा।

“सुबाहु ! इतने वर्षो पश्चात आज यहाँ ?” सुग्रीव ने प्रश्न किया।

सुबाहु ने समुद्र तट पर होते कार्यकलापों को विस्मित भाव से देखा। उसका मुंह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया जब उसने भारी भरकम शिलाओं को समुद्र पर तैरते देखा। यह असंभव था, उसने देखा हर शिला पर अयोध्या के युवराज का नाम अंकित था। यह उसी नाम का प्रभाव था। सुबाहु स्वयं उन शिलाओं पर अंकित नाम को देखकर प्रणाम कर उठा। निस्संदेह युवराज कोई साधारण पुरुष नही है, किवदंतिया सही है, वे अवश्य कोई अवतार या दैव पुरुष है।

“धर्म एवम् अधर्म के मध्य इस युग का सबसे बड़ा युद्ध होने जा रहा है। मेरा जीवन ही अधर्म के विरुद्ध एक युद्ध के समान है, तो भला मैं इस युद्ध में सम्मिलित होने से कैसे वंचित रह पाता वानरराज। मैं इस युद्ध में अपना योगदान देने आया हूँ। अयोध्या के युवराज की सेना का भाग बनने की इच्छा लिये आया हूँ मैं। मुझे युवराज से भेंट करनी है।” सुबाहु ने नम्र स्वर में कहा। उसके स्वर में उत्साह झलक रहा था।

“चलिये मैं आपकी उनसे भेंट कराता हूँ।” कहते हुए सुग्रीव ने सुबाहु को अपने पीछे आने का संकेत किया। उसी क्षण कुछ वानर योद्धा दौड़ते हुए सुग्रीव के पास आये।

"क्या हुआ 'हरित'? इतने उद्विग्न क्यों हो ?" सुग्रीव ने वानर योद्धा से प्रश्न किया।

"वानरराज ! हम सेतु बनाने के लिये हर ओर से शिलाओं को ला रहे थे, वनों से, मैंदानों से, चहुँ ओर से। तट के अंदर भी समुद्र के भीतर तक पथरीला तल है, हमारे तैरने में कुशल सैनिक सेतु बनाने के लिये समुद्र में गोता लगा कर तल से भी शिलाओं को निकाल रहे है। इसी मध्य समुद्र में एक विचित्र शिलाखंड दिखा। हमारी सम्पूर्ण टुकड़ी ने बड़ी कठिनता से उस विचित्र शिलाखंड को तल से निकाला है। वह शिलाखंड अद्भुत है, उसका आकार प्रकार शिवलिंग जैसा ही है, और उसमे से एक अद्भुत दिव्य प्रकाश प्रस्फुटित हो रहा है। सैनिक इसे महादेव का आशीर्वाद मान रहे है। आपसे निवेदन है आप एक बार उस शिलाखंड को देख लें। उस शिलाखंड का क्या करना है हम इसे लेकर असमंजस में है, श्री राम जी को भी इसकी सूचना दे दी गयी है। वे स्वयं वहाँ उपस्थित हैं।" हरित ने एक ही सांस में बिना अटके सम्पूर्ण विवरण दे दिया। सुग्रीव की आँखे सिकुड़ गयी। उसने सुबाहु की ओर देखा और वह हरित के पीछे चल पड़ा, सुबाहु ने भी उसका अनुकरण करना ही उचित समझा।

***

वह एक अद्भुत शिलाखंड था। वह किस पदार्थ से निर्मित था यह निश्चित नही था। ना वह किसी धातु से निर्मित था और ना ही किसी शिला या अन्य ज्ञात पदार्थ से। यह अवश्य ही कोई उल्का से गिरा टुकड़ा था। संयोग से इस खंड की आकृति शिवलिंग का ही आभास देती थी। सैनिकों ने ससम्मान उस खंड की पूजा अर्चना की हुई थी और उसे एक स्वच्छ भाग पर रखा था। एक विचित्र से प्रकाश से वह शिलाखंड दीप्तिमान था। सुबाहु उस शिला को देख कर अवाक रह गया। यही अवस्था सुग्रीव की भी थी। हरित ने एक सैनिक से कुछ मंत्रणा की और सुग्रीव के पास आया।

"श्रीराम इस समय भ्राता लक्ष्मण के साथ चर्चा कर रहे है। वे दूसरी सैन्य टुकड़ी के साथ तट के समीप वाले भाग में है।" हरित ने नम्रता से कहा।

"हम उनसे वही भेंट कर लेंगे। वैसे यह हैं क्या ?" सुग्रीव के मुख से अनायास ही निकला।

“हमारी विशालकाय सेना में एक अत्यंत वृद्ध एवं ज्ञानी व्यक्ति भी है। जो इस समय उस शिवलिंग स्वरुप शिलाखंड का अभिषेक कर रहे हैं।” हरित ने शिवलिंग का अभिषेक करते एक वृद्ध की ओर संकेत किया।

“इन्होने बताया कि कुछ कथायें इन्होने अपने पूर्वजों से सुनी थी। जिसके अनुसार जब अपने पिता प्रजापति दक्ष द्वारा अपने पति महादेव का अपमान सहन ना कर पाने के कारण माता सती ने आत्मदाह कर लिया था तब महादेव अत्यंत कोधित हो गये थे। वे अपनी सुध बुध खो बैठे थे। अवसाद, विरह, दुःख, क्रोध एवं वेदना से वे विह्वल हो रहे थे। महादेव के रुदन से रुद्र आये जिन्होंने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में त्राहि त्राहि मचा दी। महादेव क्रोध में तांडव करने लगे। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का अस्तित्व ही संकट में आ गया था। तब सभी देवों ने भगवान विष्णु से महादेव के अवसाद को शांत करवाने का निवेदन किया। भगवान विष्णु महादेव की विक्षिप्त अवस्था देख कर अत्यंत व्यथित थे। महादेव माता सती का शव लिये ब्रह्माण्ड में भटक रहे थे। उनका अवसाद और क्रोध बढ़ता जा रहा था। अंततः उनके अवसाद एवं माता सती के मृत शरीर से मोह देखकर भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से माता सती के शरीर को अनेक भागों में बाँट दिया। माता सती के शरीर के नष्ट होने से महादेव का अवसाद तो कम नही हुआ किन्तु क्रोध कम हो गया। वे विरक्त हो गये और उन्होंने त्रिदेव पद को छोड़ कर अज्ञातवास ले लिया। उनका क्रोध तो शांत हो गया किन्तु उनके तांडव से भीषण प्रलय ऊर्जा का निर्माण हुआ, जो ब्रह्माण्ड में अब भी जस की तस थी। जिस कारण ब्रह्माण्ड का विनाश अटल था।

तब कहा जाता है कि भगवान विष्णु ने उस सम्पूर्ण तांडव ऊर्जा को ब्रह्माण्ड से खींच कर केन्द्रित करके ठोस रुप में एकत्र कर लिया और उसे अनंत ब्रह्माण्ड में कहीं फेंक दिया जो किसी का भी विनाश कर सकती थी। अनेक वर्षो पश्चात उस ऊर्जा का ठोस स्वरुप जो एक उल्का थी, उसका एक भाग पृथ्वी पर आ गिरा। प्रलय रुपी ऊर्जा का वह ठोस स्वरुप उल्का के रुप में पृथ्वी पर ही किसी समुद्र में आ गिरा। किन्तु कहाँ गिरा इसके विषय में कोई जानकारी या किवदंतिया नही है और इस अद्भुत शिलाखंड को देखते हुए प्रतीत होता है कि यह किंचित वही उल्का है जो महादेव की प्रलय ऊर्जा के ठोस स्वरुप से बनी है।” हरित ने कहा। इस बार भी वह बिना रुके एक ही सांस में बोल गया था।

सुग्रीव ने कुछ नही कहा। उसने उस शिवलिंग को पूर्ण श्रद्धा से प्रणाम किया और उस दिशा में बढ़ गया जहाँ श्री राम थे।

***

श्री राम का स्वरूप देखकर सुबाहु के मन में विचित्र सी आस्था का भाव उत्पन्न हुआ। उनकी प्रतिकृति सौम्य एवं दिव्य थी। सांवली देह एक अद्भुत आभा से दीप्तिमान सी प्रतीत हो रही थी। उनके मुख से चहुँओर अद्भुत आभा का आभास होता था। सुबाहु अपने आप ही श्री राम को देखकर नतमस्तक हो गया। यह किस शक्ति वश हुआ उसे स्वयं पता नही चला।

“रक्षा दल के संस्थापक, सुबाहु का प्रणाम स्वीकार करे श्री राम।” सुबाहु ने कहा, उसे आभास हो रहा था मानों वह किसी देवता के सम्मुख खड़ा था, जिनसे दृष्टि मिलाने की शक्ति उसमे नही थी।

“ तुमसे मिलकर हमें प्रसन्नता हुई सुबाहु। सुग्रीव ने तुम्हारा उल्लेख किया था। उन्होंने मुझे तुम्हारे विषय में बताया था और उनकी इच्छा थी कि तुम इस युद्ध में हमारी ओर से भाग लो। किन्तु मैंने इसकी अनुमति नही दी।” श्री राम ने कहा, उनके स्वर मानों सीधे मस्तिष्क के भीतर सुनाई देते प्रतीत हो रहे थे।

“किन्तु क्यों श्री राम ? क्या आप मुझे इस युद्ध के योग्य नही समझते ?” सुबाहु ने प्रश्न किया, उसके मुख पर असमंजस के भाव थे।

“तुम एक श्रेष्ठ योद्धा हो सुबाहु। तुम्हारे अयोग्य होने का प्रश्न ही नही उठता। मैंने तुम्हारे विषय में सुन रखा था कि तुम दानवों, राक्षसों एवं उत्पाती प्रजातियों से निरीहों एवं निर्दोषों की रक्षा के प्रति प्रतिबद्ध हो। यदि तुम भी मेरे साथ इस युद्ध के लिये आ जाते तो मेरी अनुपस्थिती में निरीहों की उन जातियों से कौन रक्षा करता ? इसलिये मैंने सुग्रीव को तुम्हें आमंत्रित करने की अनुमति नही दी। क्योंकि मुझे तुम्हारी क्षमता पर पूर्ण विश्वास है। हम सबकी अनुपस्थिति में तुम्हारे शक्तिशाली कंधो पर इस सम्पूर्ण प्रदेश की रक्षा का भार रहेगा और तुम इसके प्रति कर्तव्यबद्ध रहोगे। तुम्हारी आवश्यकता वहाँ अधिक है, तुम एक प्रकार से मेरी सेना का ही भाग हो, एक भाग जब दूसरे छोर पर युद्ध कर रहा है तब दूसरे भाग के रूप में तुम इस छोर को संकट से बचाओगे। तुम तो बिना कुछ कहे ही मेरी सेना का भाग बन चुके हो सुबाहु।” श्री राम ने शांत स्वर में कहा, उनके मुख पर एक मनमोहक स्मितहास्य था।

सुबाहु को मानो अपने सम्पूर्ण प्रश्नों के उत्तर मिल गये थे। उसे कुछ ना सूझा तो उसने दोनों हाथ जोड़ कर श्री राम के प्रति सम्मान व्यक्त किया। श्रीराम मुस्कुराए और उसके कंधो पर हाथ रखा, उस स्पर्श से मानो सुबाहु का रोम रोम एक दिव्य अनुभूति से भर उठा। उसके नेत्र सजल हो गये, क्यों हो गये यह स्वयं उसे ही नही पता था।

“तुम एक श्रेष्ठ योद्धा हो सुबाहु। मुझे तुम पर सम्पूर्ण विश्वास है के तुम मुझे निराश नही करोगे। अब चलता हूँ सुबाहु, मेरी सेना को मेरी आवश्यकता है।” कहकर श्री राम लक्ष्मण के संग सेतु की ओर बढ़ गये। सुग्रीव भी कुछ दूर तक उनके साथ रहा, श्री राम ने सुग्रीव को कुछ आवश्यक निर्देश दिये। सुग्रीव कुछ ही क्षणों में पुन: सुबाहु के सम्मुख उपस्थित हुआ।

“श्री राम ने एक कार्य तुम्हें सौंपा है। करोगे ?” सुग्रीव ने कहा।

“आप आज्ञा कीजिये।” सुबाहु उत्साह से बोला।

“यह प्रलय ऊर्जा का स्वरुप शिव लिंग तुम्हारे संरक्षण में देना चाहता हूँ। मुझे तुम पर और तुम्हारी रक्षा दल पर सम्पूर्ण विश्वास है कि उनके संरक्षण में इस ऊर्जा लिंग का रहना योग्य होगा।” सुग्रीव ने कहा।

“मैं धन्य हुआ जो मुझे इस योग्य समझा गया। मुझे प्रसन्नता हुई। मैं और मेरी संस्था इस कार्य के लिये तैयार है। किन्तु मेरी एक प्रार्थना है ..” सुबाहु नम्रतापूर्वक बोला।

“बोलो।” सुग्रीव ने अनुमति दी।

“मैं भी सेतु बनाने में कुछ सहायता करके अपने जीवन को सार्थक करने का इच्छुक हूँ। आप मुझे और मेरे दल को कुछ समय के लिये इस पावन कार्य में हाथ लगाने की अनुमति दे दीजिये।” सुबाहु ने प्रार्थना की।

“अनुमति है।” कहते हुए सुग्रीव मुस्कुराया।

“किन्तु स्मरण रहें हर शिला पर श्री राम नाम अंकित होना चाहिये।” सुग्रीव ने जाते जाते कहा।

“श्री राम।” सुबाहु ने मन ही मन दोहराया।

***

वर्तमान समय

पुनरोत्थान

अथर्व के मोबाइल में कंपन हुआ। उसने कॉल रिसीव की।

“बोलो ड्राइवर !” अथर्व ने कहा।

“टीवी ऑन करो तुरंत।” ड्राइवर ने कहा, अथर्व ने फौरन रिमोट खोजने के लिये नज़रें दौड़ाई। रिमोट टेबल पर ही रखा हुआ था, उसने उसकी सहायता से टीवी ऑन किया।

“कोई ख़ास खबर आ रही है ? कौन सा चैनल ट्यून करु?” अथर्व ने प्रश्न किया।

“हर चैनल पर वही आ रहा है, बस ऑन करो।” ड्राइवर ने व्यग्रता से कहा।

टीवी स्क्रीन पर एक व्यक्ति दिखायी दे रहा था, वह अँधेरे कमरे में एक कीमती रिवाल्विंग चेयर पर बैठा हुआ था, उसने एक बेहद महंगा सूट पहन रखा था। चेयर के पीछे वाली दिवार पर लाल रंग का धीमा बल्ब जल रहा था। उस सम्पूर्ण कमरे में केवल बल्ब की मद्धिम लाल रौशनी ही थी।

“मैं एक बार फिर दोहराना चाहूँगा। मैं जानता हूँ कि अभी भी कई लोग टीवी पर नही आये होंगे। इसलिये मैं पिछले पन्द्रह मिनट से केवल भूमिका बाँध रहा हूँ। अब मैं अपनी बात शुरु करता हूँ। मैं कौन हूँ ? सबसे पहले मैं अपने बारे में बताना चाहूँगा अपने अस्तित्व के बारे में बताना चाहूँगा। मैं मनुष्य नही हूँ, मैं उस प्रजाति का हिस्सा हूँ, जिसके साथ सदैव अन्याय होता आया है। युगों युगों से उस प्रजाति के साथ अत्याचार होता आया है, वह एक शक्तिशाली प्रजाति थी, किन्तु मनुष्यों के लोभ, स्वार्थ के कारण उसे उसके अधिकार से सदैव वंचित रखा गया।

हालत यहाँ तक आ पहुंची कि उन जैसी अनेक जातियों को स्वयं को लुप्त होने से बचाने के लिये सम्पूर्ण मनुष्य जाति से अपने अस्तित्व को ही छिपाना पड़ा। हजारों वर्षों से वह जातियां मनुष्यों के मध्य छद्म रुप में रह रही है, किन्तु क्या यह सही है ? वे अपने असल अस्तित्व के साथ समझौता कर के रह रही हैं। ऐसा क्या अपराध हो गया है उनसे ? उनके अपराधों का दण्ड वे सदैव भुगतते आये हैं, फिर उनके अस्तित्व से ही समझौता क्यों ? मुझे पता है आप सब अब तक मेरी बातों को समझ नही पाये है, आप सभी समझते हैं कि यह बेसिर पैर की बातें है और जल्द

ही आप टीवी भी बंद कर देंगे, इस समय मेरा यह प्रसारण सम्पूर्ण विश्व में एक साथ हो रहा है, अलग अलग भाषाओं में और सबटाईटल्स में हो रहा है।”

“मेरा यह वीडियो लंबा होने वाला है। इसलिये सबसे पहले तो मैं आपके समक्ष एक उदाहरण देना चाहूँगा। पहले परिचय ले लीजिये, मैं दानव हूँ, हाँ वही प्रजाति जिसका वर्णन ग्रंथो, पुराणों और माइथोलॉजी कहकर नकार दी जाने वाली कहानियों में होता आया है। हम मिथ नही है, हमारा अस्तित्व उतना ही सच है जितना आपका और इस समय मैं सम्पूर्ण राक्षस एवं दानव जाति का प्रवक्ता बनकर आप सबके समक्ष आया हूँ। जानता हूँ आप सब मेरी बात सुनकर हंस पड़े होंगे। किन्तु निश्चिंत रहिये, मैं जो प्रमाण देने जा रहा हूँ, उसे देखकर आपकी मुस्कुराहट अदृश्य हो जायेगी। लक्षद्वीप द्वीप समूह के अनेक द्वीपों को मैंने अपने प्रचार के लिये चुना हुआ है, फिलहाल मैंने उन्ही द्वीपों का चुनाव किया है जो निर्जन है। सात द्वीपों की लोकेशन और मैप आपके स्क्रीन के एक हिस्से में दिखायी दे रही होगी। मैं इन सातों द्वीपों को सम्पूर्ण रूप से नष्ट करने वाला हूँ, पांच द्वीप सुनामी से समुद्र का हिस्सा बन जायेंगे और दो द्वीप एक भीषण विस्फोट से कणों में बदल जायेंगे। लोकेशन और फोटोज आपके समक्ष है, अगले पांच मिनट के अंदर अंदर सातों द्वीप नष्ट हो जायेंगे। अभी शाम के आठ बज रहे है, मैं रात्रि के एक बजे पुन: लाइव आऊंगा। तब आप मेरी बात को गंभीरता से लेंगे और तब मैं बताऊंगा कि मैं आपसे क्या चाहता हूँ।” इतना कहते ही टीवी स्क्रीन पर रेगुलर शोज अपडेट आने लगे। लाइव प्रसारण हट चुका था। सुबाहु का मोबाइल अब तक ऑन था।

“देखा तुमने ?” ड्राइवर की आवाज सुनाई दी।

“माया ! यह माया बाहुपति है। उसने शिवलिंग की ऊर्जा को किसी प्रकार से परिष्कृत करके उसे प्रायोगिक बना लिया है। अवश्य वह उसका ही प्रयोग करने वाला है।” अथर्व बोला।

“यह प्रसारण उसने कैसे किया इसका अंदाजा नही लगा, लेकिन वह पुन: लाइव आएगा इसका अर्थ है कि उसे उसके ट्रेस हो जाने से कोई फर्क नही पड़ता।” ड्राइवर ने कहा।

“उसे अपने ट्रेस होने की परवाह नही है, क्योंकि वह शायद जानता है कि उसके हाथों में एक ऐसी शक्ति है जिसके सामने विश्व की सम्पूर्ण शक्तियाँ भी उसका कुछ नही बिगाड़ सकती और रही बात लाइव

प्रसारण की, तो हम जानते ही है, जिस प्रकार हम गुप्त रूप से हर जगह फैले हुए है, उसी प्रकार से दानव एवं अन्य गुप्त संस्थाए भी हर क्षेत्र में छुपे तौर अपनी पकड़ बनाये हुए है, सैन्य, सुरक्षा, मीडिया, साहित्य से लेकर प्रसारण और सैटेलाईटस तक इनकी खुफियां पहुँच है, और अब इन्हें खुले में आने का भी ड़र नही है, क्योंकि अब इनका मानना है कि वह समय आ चुका है, जिसके लिये इन्हें झूठी पहचान का सहारा लेकर अपने अस्तित्व को ही दुनिया से छुपाना पड़ रहा है।" अथर्व बोला।

"हम क्या करें ?" ड्राइवर ने पूछा।

"वही जो यह चाहता है, ट्रेस करो। मुझे इसकी धमकियों के हकीकत में बदलने में रत्ती भर भी संदेह नही है। वह चाहता है कि हम उस तक पहुंचे और वह यही चाहता है तो हमें भी बिना समय व्यर्थ किये उस तक जल्द से जल्द पहुंचना ही चाहिये। अपने एजेंट्स को काम पर लगाओ। माया के ठिकानों का पता लगाओ।" अथर्व ने इतना कहकर फोन काट दिया।

उसका मुख क्रोध से तमतमा रहा था। उसका केश विहीन सर मानो तप सा रहा था, उसकी लाल आँखे स्पष्ट चुगली कर रही थी कि वह कई दिनों से सोया नही है। सुबाहु ने अपना त्रिपुंड धारी मास्क पहन लिया और उस कमरे की ओर बढ़ा जहाँ शिवराज और ऋचा को बाँध कर रखा गया था।

***

एक ही घंटे के अंदर अंदर लक्षद्वीप द्वीप समूह के सात द्वीपों पर परमाणु विस्फोट की ही भाँति भयंकर विस्फोट हुए। विस्फोट में किसी प्रकार की कोई ध्वनि नही हुई थी। विस्फोट से उठी तरंगों ने सम्पूर्ण समुद्र को मानों मथ के रख दिया था। लक्षद्वीप के अन्य द्वीपों से यह विस्फोट स्पष्ट देखे जा सकते थे। ये वे द्वीप थे जहां मानव बस्तियां थी और अनगिनत पर्यटक यहाँ अपनी छुट्टियाँ बिताने आया करते थे। वे सभी उन भयंकर विस्फोटों के प्रत्यक्षदर्शी बन रहे थे। उनकी आँखों के सामने समुद्र में सैकड़ों मील दूरी पर मानो परमाणु विस्फोट से हुये और कुछ ही क्षणों में कतारबद्ध हुए उन विस्फोटों के कारण सातों द्वीपों का नामोनिशान इस तरह से मिट गया मानो वहाँ कभी उनका कोई अस्तित्व ही नही था, कुछ ही देर में इस खबर ने सम्पूर्ण विश्व को अपनी चपेट में ले लिया। सारी सरकारें सतर्क हो गयी। एक ही घंटे के भीतर दुनिया में काफी कुछ बदल गया था। अनेक देशों ने फ़ौरन आपातकालीन बैठक के लिये गुप्त सन्देश

प्रसारित कर दिये। सभी देशों के खोजी उपकरणों की दिशा अब सिर्फ और सिर्फ माया की खोज में थी।

***

ड्राइवर अथर्व के साथ था। वह आनन फानन में वहाँ आ पहुंचा था। यह एक खुफिया ठिकाना था जिसका बंदोबस्त गाइड ने किया हुआ था। यहीं के एक कमरे में शिवराज और ऋचा को रखा गया था। ड्राइवर ने आते ही सबसे पहले टीवी ऑन किया।

“देख रहे हो अथर्व ? तांडव आरंभ हो चुका है। शिवलिंग की प्रलयंकारी ऊर्जा का प्रयोग इस विध्वंस के लिये किया जा रहा है। हम उसके प्रसारण सिग्नल्स को अपने सूत्रों के द्वारा ट्रेस करवा रहे हैं, किन्तु कोई अनजाना सा अवरोध है जिस कारण हम उसकी लोकेशन ट्रेस नही कर पा रहे है।”

“वह चाहता है कि हम उस तक पहुंचे। कोशिश करते रहो।” अथर्व ने घड़ी की ओर देखा। माया का दूसरा प्रसारण किसी भी समय शुरु हो सकता था।

“एक प्रश्न पूछूं अथर्व ?” ड्राइवर ने सकुचाते हुए कहा, अथर्व ने केवल सिर हिला दिया।

“आखिर क्या वजह है कि हमारे रक्षा दल की अन्य शाखाएं इस मामले में कोई तत्परता अथवा कार्यवाही नही दिखा रही हैं? अब तक वे माया तक क्यों नही पहुँच पाये ? और दूसरी बात, जब हमें माइकल का सुराग मिल चुका था, तो हमने उसे अपने दल से साझा करने के बजाय खुद ही कार्यवाही क्यों आरम्भ कर दी ? तुमने उस समय मना कर दिया किन्तु तुम्हें नही लगता यदि समय रहते हमें सहायता मिलती तो हम शायद माया को जल्दी खोज निकालते ?” अरसे से ड्राइवर के मन में दबा प्रश्न आज अवसर देखकर बाहर निकल आया।

“यह प्रश्न तुमने मुझसे उस समय क्यों नही किया ? आज अचानक क्यों ?” अथर्व का स्वर गंभीर हो गया।

“उस समय मुझे तुम ठीक लगे, कर्तव्य भावना अवश्य थी किन्तु प्रतिशोध भावना कर्तव्य से अधिक प्रबल थी, शक्ति मठ हमारा परिवार था और देवदत्त हमारे मार्गदर्शक, उन्होंने जिस प्रकार उनकी हत्या की, जिस प्रकार हमारे सम्पूर्ण परिवार का नृशंसतापूर्वक नरसंहार किया, उसे देखते हुए भले मैंने स्वयं को काबू में रखा किन्तु कहीं ना कहीं मन में

प्रतिशोध की भावना पल रही थी। इसलिये उस समय मैं भी तुम्हारी भाँति प्रतिशोध का अभिलाषी था। ” ड्राइवर ने एक सांस में कह दिया।

“ प्रतिशोध मूल भावना अवश्य थी, किन्तु उस शिवलिंग को पुन: प्राप्त करना मेरा मुख्य उद्देश्य था, शक्तिमठ हमारे रक्षा दल की रीढ़ थी, सारा संचालन और अर्थव्यवस्था इस पर ही निर्भर थी। उन्होंने इसी पर प्रहार करके हमारे संगठन की रीढ़ तोड़ दी थी, समूचा संगठन नेतृत्व और संचालन के अभाव में बिखर गया था, हमारी अर्थव्यवस्था लगभग ध्वस्त हो गयी थी, और मटुक से प्राप्त जानकारी को आधार बना कर एक ही समय हमारी अन्य शाखाओं पर आक्रमण हुए, जिस समय शक्ति मठ पर हमला हुआ उसी समय हमारी चार प्रमुख शाखाओं को भी ध्वस्त कर दिया गया था, यह अपने आप में एक और बड़ा झटका था, रक्षा दल लगभग बिखर चुका था, उस समय रक्षा दल स्वयं असहाय था, उसे स्वयं को पुन: खड़ा करने में काफी समय लगना था, और हम यह समय व्यर्थ नही गंवा सकते थे, माइकल की कड़ी मिलने के पश्चात तो बिलकुल भी नही, और दूसरी सबसे मुख्य बात, तुम जानते हो रक्षा दल के अपने नियम और अपने कानून है, यदि हम नियम कानून का ध्यान रखने के चक्कर में पड़ते तो स्थितियां हमारी पकड़ से निकल जाती, यह समय नियम और प्रोटोकॉल फ़ॉलो करने का बिलकुल भी नही था, और जो मैं करने जा रहा था रक्षा दल मुझे उसकी अनुमति कदापि नहीं देता, मटुक के पश्चात मैं नही चाहता था कि फिर कोई सदस्य उनके हाथ लगे, इसलिये मैंने उन्हें इसमें कभी शामिल नही किया। ” अथर्व ने कहा।

“रक्षा दल एकदम से चुप तो नही था इतने वर्षो में ? उसने शिवलिंग की खोज बीन भी नही की होगी ?” ड्राइवर ने कहा।

“शक्ति मठ के नष्ट होने के पश्चात से हमें किसी भी मिशन के बारे में कोई सूचना नही दी गयी, या वे हमें शामिल नही करना चाहते थे, साफ़ साफ़ कहूँ तो गाइड, मुझे और आपका उन्होंने मूक बहिष्कार कर रखा था, शायद हमारी नाकामी के कारण या फिर सुरक्षा कारणों से। दूसरे उन्हें अपने स्तर पर कार्यवाही करने के लिये पहले पुन: संगठित होने की और अर्थव्यस्था का सुचारु संचालन स्थापित करने की आवश्यकता थी, जिस दौरान वे किसी और कार्य को अंजाम देने के लिये इतने सक्षम नही थे। या उन्होंने गुप्त रूप से जांच शुरु भी होगी किन्तु हमें पता नही, अब उनकी जांच कहाँ पहुंची, हुई भी या नही यह मैं नही जानता। ” अथर्व ने कहा।

ड्राइवर के मन में अब भी हलचल थी, अर्थव्यवस्था, संचालन, और नेतृत्व क्षमता का अभाव सबसे मुख्य कारण था रक्षा दल की अक्षमता और सुस्ती का, यह बात वह समझ चुका था, किन्तु क्या वे वाकई एकदम निष्क्रिय हो गए थे ? यदि हो गए थे तो निस्संदेह एक बड़ी लापरवाही थी। ड्राइवर ने अपना सिर झटका और टीवी की ओर देखने लगा। टीवी पर चलता कार्यक्रम फौरन रुक गया और एक काली स्क्रीन उभर आयी। काली स्क्रीन पर माया का अक्स उभरा। इस बार उसका चेहरा छिपा हुआ नही था। वह आत्मविश्वास एव दृढ़ता से भरा हुआ प्रतीत हो रहा था।

“उसने इस बार अपना चेहरा नही छिपाया है।” अथर्व के मुंह से निकला।

“मुझे यकीन है कुछ देर पहले वाले मेरे प्रसारण के पश्चात लक्षद्वीप से आती खबरों एवं विचलित कर देने वाली फ़ुटेज देखने के पश्चात अब मेरी बातों को मजाक ना समझते हुए गंभीरता से लिया जायेगा। मैंने इस बार खुद को नही छिपाया है, क्योंकि अब इतने युगों के पश्चात सही समय आया है, हमारी सम्पूर्ण प्रजाति को अँधेरे से प्रकाश में लाने का। यह मैं हूँ, मुझे कई लोग फ़ौरन पहचान गये होंगे। मैं माया ग्रुप्स का चेयरमैन ‘माया बाहुपति’ हूँ। जी हां मैं मनुष्य नही हूँ। मैं एक दानव हूँ, मेरा परिवार दानव है। मैं एक गुप्त दानव सोसायटी का प्रतिनिधित्व करता हूँ, जिसे अब और गुप्त रहने की आवश्यकता नही है, अब उन्हें समझना होगा कि यह पृथ्वी उनकी भी उतनी ही है जितना की मनुष्यों की। उन्हें भी मनुष्यों की तरह अपनी पहचान के साथ जीने का समान अधिकार है। मैं जानता हूँ मेरी पहचान जाहिर होते ही सारी एजेंसियाँ मेरे पीछे लगगयी होंगी। कुछ ही मिनटों में मेरी कम्पनी की हर बिल्डिंग के आगे पुलिस, मिलिट्री, और सीक्रेट एजेंसियों की भरमार होगी। मेरे ऑर्गनाइजेशन के हर खाते, ट्रांजेक्शन, इत्यादि को ब्लॉक कर दिया जायेगा, मेरे संगठन से जुड़े हर व्यक्ति को या तो गिरफ्तार कर लिया जायेगा या नजरबंद कर लिया जायेगा।

यहाँ मैं बताना चाहूँगा कि मेरी ऑर्गनाइजेशन के आधे से अधिक कर्मचारियों को यह आभास तक नही है कि वे दानवों के साथ उन्ही के मध्य अपने जीवन का आधा समय बिता रहे है। आप उदाहरण देख ही रहे है, किस प्रकार दानव, राक्षस, दैत्य जातियां मनुष्यों के मध्य रह रही हैं, और मनुष्यों को किसी भी प्रकार का कोई आभास तक नही है, और

ना ही उन्हें किसी प्रकार का कोई खतरा है। हो सकता है कि आज आप जिस होटल में खा रहे हो उसका मैनेजर या शेफ कोई दैत्य हो, अभी आप जिस टैक्सी से उतरे हैं उसका ड्राइवर कोई दानव हो, आपका कोई घनिष्ठ मित्र, क्लासमेट, सहकर्मी, मंगेतर, पति, पत्नी, इत्यादि में कोई मनुष्य के अलावा किसी अन्य प्रजाति का जीव हो, आप सोचते है सरकार आपके हाथों में है, तो यह भी हो सकता है कि राजनीति में प्रमुख पदों पर आसीन पदाधिकारी भी हममे से ही कोई एक हो, आपको सुरक्षा प्रदान करने वाली पुलिस, सेना इत्यादि में भी अनेक दानव, दैत्य, राक्षस हो सकते हैं जो आपकी रक्षा करते हैं।

आपका इलाज करने वाला डॉक्टर भी राक्षस जाति से संबंधित हो सकता है, आपका प्रिय लेखक, कलाकार, हीरो, हिरोइन, सेलिब्रिटी, बिजनेस हाउस, मल्टीनैशनल कम्पनीज, बड़े बड़े ब्रांड्स इन सबके मालिक या सीईओ अथवा कर्मचारी दानव हो, नये हथियार बनाने वाले रक्षा वैज्ञानिक, अंतरिक्ष एवं सैटेलाईट बनाने वाली संस्थानों में प्रमुख वैज्ञानिक तक में अन्य प्रजातियाँ सम्मिलित होंगी और आपको इसका पता भी नही चलता और ना ही कोई एहसास होता है।

अब तक आपको अपने पडोसी से ड़र नही था लेकिन अब आपके मन में एक अनजाना भय उत्पन्न हो जायेगा कि क्या पता आपके सामने का हर दूसरा व्यक्ति एक दानव अथवा राक्षस हो। यह भय क्यों होगा ? क्या उसने आपको नुकसान पहुंचाया या कभी आप पर हमला किया ? या आपका कभी अहित करने का प्रयास किया ? नही, यह भय इसका नही है। यह भय है उसके परिचय का, आपके मन में अब शंका हो गयी है कि सामने वाला शायद दानव है, राक्षस है, कोई खूंखार प्रजाति है, जो केवल मनुष्यों को फाड़ खाने के लिये उतावली है। केवल एक अनजानी प्रजाति का अपने बीच होने की कल्पना ही कितनी सिहरन पैदा करने वाली होती है ना ? खैर! मैं फिर भूमिका बाँधने लगा, लेकिन यह आवश्यक भी है। मैं सबसे पहले सारी सुरक्षा एजेंसीस को चेतावनी देना चाहूँगा कि यदि आप अब माया के किसी भी ऑर्गनाइजेशन पर हमला करने का प्रयास कर रहे हैं तो अपने आप को जहाँ का तहां रोक लें।

आपने उन सात द्वीपों का नामोनिशान मिटते देखा ही होगा। यदि मेरे किसी भी ठिकाने पर आक्रमण हुआ तो मैं उदाहरण देने के लिये भी एक समूचे शहर को नष्ट करने में हिचक नही दिखाऊंगा। आपको मुझ तक पहुँचने में कुछ मिनट्स लगेंगे, लेकिन मुझे सारे एशिया तक को मिटाने में

कुछ क्षण ही पर्याप्त है। इसलिये मेरी बात सुनें, धैर्य रखें, मुझे अपना धैर्य खोने पर विवश ना करें।” माया ने इतना कहा और एक लंबी सांस ली।

ड्राइवर का फोन बजा, उसने कॉल रिसीव की। कुछ देर हाँ-हूँ करने के पश्चात उसने अथर्व की ओर देखा। अथर्व ने प्रश्नवाचक नजरों से उसे देखा।

“गाइड का फोन था, गुप्तचर संस्थाओं में अपने सम्पर्क सूत्रों से माया की लोकेशन पता चली है, वह ‘फोर्ट’ में है, मुंबई।” ड्राइवर ने कहा, अथर्व फौरन उठ खड़ा हुआ, उसके पास व्यर्थ करने के लिये समय बिलकुल भी नही था।

“मुंबई के लिये अगली फ्लाईट बुक करवाओ फौरन। हमें डेढ़ से दो घंटे मुम्बई पहुँचने में लगेंगे, एयरपोर्ट से फोर्ट तक का रास्ता भी लगभग एक घंटे का पड़ेगा, यानी हम अभी निकले तो भी ढाई से तीन घंटे में वहाँ होंगे।” कहते हुए अथर्व ने बिना कोई समय गंवाए सुबाहु के मंत्र कवच को टेबल के ऊपरी हिस्से से उठाया और अलमारी की ओर बढ़ गया। एक बैग निकाल कर उसने वह पोशाक दूसरे कपड़ों के साथ तह करके रख दी।

“यह पोशाक फ्लाईट में ?” ड्राइवर के मन में प्रश्न उठा।

“पोशाक है, कोई विस्फोटक या प्रतिबंधित वस्तु नही। कहते हुए उसने सुबाहु का चक्र दण्ड उठाया। चक्रदण्ड इस समय दोनों ओर से भीतर की ओर सिकुड़कर कर एक फीट की छड़ सा दिख रहा था। जिस पर सुनहरे अक्षरों में मंत्र गुदे हुए थे। दण्ड पर एक विशिष्ट दबाव पड़ते ही वह दोनों ओर से खुल जाता और उसका आकार बढ़ जाता। उस दण्ड को बैग में रखता देख कर ड्राइवर की आँखे सिकुड़ी।

“इसमें भी कोई दिक्कत नही होगी। यह धातु का बना एक एंटिक है, इसमें कोई बम, ड्रग्स, अथवा विस्फोटक या प्रतिबंधित केमिकल भी नही है, वे पहचान ही नही सकते के यह किसी प्रकार का शस्त्र है।” ड्राइवर के मनोभावों का अनुमान लगाते अथर्व ने कहा और, त्रिपुंड धारी मास्क को पलट कर एक टोपी की तरह सर पर पहन लिया जो उसके कानो को ठंडी हवा से बचाने का वस्त्र दिखायी देने लगी थी।

“इस प्रसारण को नही सुनोगे ?” ड्राइवर ने टीवी की ओर इशारा किया।

“मोबाइल में सुन लूँगा।” कहते हुए अथर्व ने मोबाइल में इंटरनेट ऑन किया और ब्लूटूथ हेड फोन्स पहन लिये। उसने फुर्ती से एक जैकेट और

ब्लू जींस पहन ली। बूट्स के लेस बाँधे और बैग कंधो पर लिये निकलने को तैयार हो गया।

"शिवराज और ऋचा का क्या करना है ?" ड्राइवर ने कमरे की ओर इशारा किया जहाँ दोनों कैद थे।

"मन तो मेरा शिवराज की गर्दन मरोड़ देने का था। लेकिन अभी मेरे सामने उससे बड़ी समस्या हैं, छोड़ दो उसे। इस समय ऋचा को उसकी जरूरत है।" कहते हुए अथर्व कमरे से बाहर निकल गया। ड्राइवर का मुंह खुला का खुला रह गया।

***

"मेरा आपके सामने आने का उद्देश्य यही था, मैं चाहता हूँ कि जातियों एवं प्रजातियों के मध्य का यह भेद मिट जाये। आप अब तक जिस प्रकार से अन्य जातियों के साथ रहते आये हैं बिना किसी शिकायत के उन्ही जातियों की हकीकत से, असली स्वरूप से आप इतना घबरा क्यों जातें है ? हम इसी पृथ्वी, इसी वातावरण, इसी समाज, इन्ही नियमों के मध्य पले बढ़े हैं। भावनायें भी इसी से जुडी है तो यह समाज हमें उपेक्षित क्यों रखे ? मैं श्रेष्ठता की ग्रंथि से पीड़ित नही हूँ, इसलिये यह नहीं कहूँगा की दानव श्रेष्ठ है या मानव, मुझे श्रेष्ठता की परिपाटी ही कभी समझ में नहीं आयी। इस श्रेष्ठता के कारण ही यह पृथ्वी नरक बन चुकी है। आपने युगों से दानव जातियों को असभ्य एवं बर्बर कहकर उन्हें रेखांकित किया, उनके चरित्र गढ़े, उन्हें खलनायक की उपाधि दे दी।

धर्म एवं अधर्म के युद्ध में उन्हें अधर्म का प्रतीक बनाया। किन्तु आप क्या है ? दानव तो सदैव अपने मूल स्वभाव के अनुरुप ही चला है। किन्तु मनुष्य को क्या हो गया ? वह अपने मूल स्वभाव से इतना अलग कैसे हो गया ? सतयुग एवं त्रेतायुग में मनुष्यता अपने उच्चतम शिखर पर थी, वो आदर्श आज कैसे भुला दिये ? यह कितना विचित्र दुर्भाग्य है इस युग का, जिन आदर्शो से इस समाज की नींव पड़ी आज वही आदर्श एकदम लुप्त हो गये है, यदि भूले भटके उन आदर्शों का कहीं कोई नामलेवा शेष भी हो तो उन्ही आदर्शों पर जीने वालों का मखौल बनाया जाता है, वे मजाक की वस्तु बना दिये जाते है। जैसे जैसे मनुष्य विकास की सीढियां चढ़ता गया वह संवेदनहीन होता चला गया। जो जितना अधिक विकसित होता गया वह उतना ही अधिक भावना शून्य होता गया। शिक्षा समाज को सभ्य बनाती है, किन्तु शिक्षित समाज अब निर्मम होता जा रहा, भौतिकवाद के कारण उसके सारे आदर्श, सारे उसूल, सारी अच्छाइयां

उसका साथ छोड़ चुकी है, मनुष्य का बढ़ता लालच अनेक युद्धों का जनक रहा है, उसके स्वार्थ के कारण आज एकदूसरे से इतनी असुरक्षितता है कि सारे देशों ने ऐसे ऐसे विध्वंसक अस्त्र बना लिये है जो यदि चलाए गये तो इस सम्पूर्ण पृथ्वी से मानवजाति का नाश हो जायेगा। मनुष्य जितना सक्षम हुआ उतना ही विनाशक बनता चला गया।

मजहब के नाम पर देश के देश जल रहे है, कट्टरता की हद यहाँ तक है कि दूसरे मजहब के बच्चो तक को बख्शा नही जाता। सब अपने आप में शांति का संदेश देते मजहब के पैरोकार बताते है, लेकिन आधी से अधिक दुनिया इन शांति के पैरोकारों ने नर्क बना रखी है। मजहब मनुष्य को जीना सिखाता है कहने वाले, आज भी मजहबी कट्टरता के नाम पर खाड़ी एवं अफ्रीकी देशों की दुर्दशा देख सकते है। दूसरे पंथ के अनुयायियों को जीवित रहने तक का अधिकार किसी का मजहब नही देता तो क्या आप इसे आदर्श कहोगे ? राक्षस, दानव और शैतान तक का उदाहरण आप देते हो लेकिन खुद अपने आप में आप एक शैतान हो यह क्यों भूल जाते हो ? क्या चाहते हो आप ? क्या हासिल करके मानोगे ? कहाँ तक जाओगे ? कोई सीमा निर्धारित है या बस चलते जा रहे हैं सब कुछ भुलाकर। चलिये, देश और समाज की बात छोडिये, आप अपने पड़ोस में ही देखिये, पडोस क्यों अपने घर में ही देख लीजिये। बेटा बाप की नही सुनता, बेटी माँ के प्रवचन नापसंद करती है। नाते रिश्तेदार कौन मर रहे हैं, कौन जी रहे है किसी को परवाह नही है किसी की। अनेक बूढ़े अपने कमरों में मर रहे है, लेकिन पड़ोसियों तक को उनको मरने की खबर तब आती है जब उनकी लाशों से सड़ांध आने लगती है। सब कुछ पा कर भी सब मे अकेलापन है, बेचैनी है।

क्यों है यह सब ? हर कोई इतनी हड़बडी में क्यों है ? प्यार, विश्वास, रिश्ते यह सब बेवजह और बोझ से क्यों बन गये है ? हर कोई इतना स्वार्थी क्यों है ? प्यार, लगाव, अपनापन सब खोज रहे है, सबको चाहिये लेकिन देना किसी को नही है। पति पत्नी, गर्लफ्रेंड़, बॉय फ्रेंड़, लिव-इन रिलेशन, सब के सब केवल शारीरिक जरूरतों के इर्द गिर्द ही सिमट कर रह गये है। कोई भी रिश्ता आज नही टिक पाता, हर किसी को हर किसी से बेपनाह उम्मीदें है, बेपनाह चाहतें हैं लेकिन खुद से कोई उम्मीद रखें यह उसे चुभता है, वह अपने बारे में सोचना चाहता है लेकिन दूसरों का यह बर्ताव उसे स्वार्थी लगता है।

प्यार जैसे शब्द का अर्थ तक अब केवल वासना तक सीमित हो कर रह गया है। जरूरत के लिये रिश्ते बन रहे हैं, जब तक जरूरत है तब तक सब ठीक है, जरूरत खत्म तो सब खत्म। प्रीपेड़ जनरेशन है यह तो, जिसके लिये हर चीज केवल तत्कालीन है, जब तक फायदा मिले तब तक झेलो और फिर फेंक दो। आपको लगता है मैं प्रवचन दे रहा हूँ। लेकिन नही मैं अपने मुद्दे तक ही आ रहा हूँ, आपको संयम रखना होगा आपको समझना होगा के मैं चाहता क्या हूँ। मैं क्या बदलना चाहता हूँ।"

"आपको महसूस नही होता ? यहाँ कुछ सड़ रहा है, समाज में कुछ सड़ांध मार रहा है, इसकी बदबू आप तक नहीं पहुँच रही है ? यह आदर्शो की लाश से उठती दुर्गन्धि है। मूल्यों में लगे हुये कीड़े है, जो इस पूरे समाज की आत्मा को खा रहे है। मनुष्य देह में अब एक केवल आत्मा ही रह चुकी है, बाकी रिश्तें, अपनापन, प्यार, मूल्य, आदर्श, भावनाए, मानवता, मजहब, सहनशीलता, सह्रदयता, इत्यादि मूल्यों का जीता जागता कब्रिस्तान है यह शरीर।"

"इसे दफनाओगे तो भी इसमें कीड़े ही पड़ने वाले है, इसका इलाज है, इसे भस्म कर दो, जला दो इस देह को। समाप्त कर दो इस उठती सड़ांध को, ताकि इस वातावरण को फिर से सांस लेने लायक बनाया जाये। आप लोगो का दम नही घुटता इस झूठे समाज में ? आप कैसे सांस ले पाते है इन बनावटी नियमों और भावनाओं से बजबजाते वातवारण में ? मेरा तो दम घुटता है, क्या हम यही चाहते थे ? इसी दिन के लिये मनुष्य ने इतनी प्रगति की? विज्ञान को साधकर आधुनिक बना ? आधुनिकता की व्याख्या क्या है ? क्या आधुनिकता की व्याख्या केवल स्वार्थ है ? आज की पीढ़ी, यंग जनरेशन, जिसे हम भविष्य के समाज की नींव कहते है, क्या है वह ? वह भटकी हुई भेड़ों का झुण्ड बन कर रह गया हैं। उसका सम्पूर्ण जीवन केवल बेफालतू की 'दुविधाओं, फिजूल के विद्रोह, खोखली क्रांतियों, और लिसलिसाती वासना की विकृत कल्पनाओं का ही मिश्रण बन कर रह गया है। अरे ये क्या बेहतर भविष्य बनायेंगे जिन्हें खुद का ही भविष्य नही पता ? ये क्या समाज को बेहतर बनायेंगे जिनकी सम्पूर्ण आयु केवल किसी फेक रिलेशन के कन्फ्यूजन को ही सुलझाने में व्यर्थ हो जाये।"

"किस बात का कन्फ्यूजन है ? कभी कभार तो लगता है इस पूरे समाज को कन्फ्यूज होने का शौक है, हर किसी की अपनी समस्यायें है, हर किसी के पास भयंकर उलझन है जो उसके हिसाब से कभी सुलझ ही

नही सकती। उसका जीवन केवल उलझन, अनिश्चितता, नशा और सेक्स के इर्द गिर्द घूम रहा है। वासना में यह समाज इस प्रकार से लिसडा हुआ है के घिन्न आती है अब तो। मरणासन्न वृद्धा से लेकर एक महीने तक बच्चियों तक से वासना का घिनौना खेल खेला जाता है।”

“यहाँ तक के जानवरों तक को अपनी विकृति का शिकार बनाना आरंभ कर दिया गया है, झूठे मूल्यों एवं भटकती क्रांतियो के मध्य सम्पूर्ण विश्व दिशाहीन सा लगता है। फेमिनिस्ट के अपने सपने है, असल मुद्दों से उनका दूर दूर तक कोई लेना देना नही है, उनकी आधुनिकता और समानता की लड़ाई केवल शराब सिगरेट और सेक्स के अधिकार तक ही सिमट कर रह गयी है। उनका वश नही है वरना शारीरिक क्षमताओं को पार करके भी विपरीत लिंगी समाज को नीचा दिखाने में कोई कसर ना रखे, समानता चिल्लाते चिल्लाते कब यह विकृतियों में तब्दील हो गयी है इन्हें स्वयं नही पता।

क्रांतिधारियो के अलग राग है, इन्हें क्रांति चाहिये, समानता चाहिये। लेकिन कौन सी क्रांति कौन सी समानता इसका कोई अता पता नहीं है। किससे लड़ रहे है, क्यों लड़ रहे है, कब तक लड़ेंगे पता नहीं। सारी दुनिया से इनकी क्रांतियो को नकार दिया गया है, हर कोई इनकी खोखली क्रांतियो की हकीकत जानता है, फिर भी इनकी झूठी क्रांतियों में ये अपनी ऊर्जा नष्ट कर रहे है।”

फिर आते है मजहबी, इनके अनुसार एक अकेले इन्होने ही सम्पूर्ण दुनिया में रहने का लाइसेंस लिया हुआ है और यही ईश्वर के सच्चे अनुयायी है। जहाँ जहाँ गये है वहाँ वहाँ नर्क बना दिया है। सम्पूर्ण दुनिया आज इनकी लगायी आग में जल रही है। निर्दोषों की हत्याओं को इन्होने धर्मयुद्ध करार दे रखा है। इनके अपने मूल्य है, और वे इन्हें ना मानने वालों को जीवित रहने का अधिकारी ही नही समझते। ये भी शताब्दियों से लड़ रहे है, क्यों लड़ रहे है पता नही। बस लड़ना है, लड़ने की फितरत नही जा रही, विकृतियों को निकलने का मार्ग चाहिये इसलिये यह विकृतियाँ झूठे मूल्यों एवं आदर्शों के नाम पर निकल रही है।

आप हमें दानव कहते हो, राक्षस कहते हो। असल राक्षस तो आज भी मौजूद है, उदाहरण आपके सामने ही है। ये असंतुष्ट है, हर जगह असंतुष्ट है, जहां जायेंगे वही असंतुष्ट है। इन्हें संतुष्टि तब भी नही मिलती जब दूसरे पंथ का नाश हो जाये। दूसरे पंथ के ना होने पर भी इनका युद्ध अपने ही पन्थानुयायियों से होता है। खुद के अपने अपने खेमे है, एक दूसरे को

काट डालेंगे, विस्फोटों से बच्चों, महिलाओं, बुजुर्गों के टुकड़े टुकड़े कर देंगे क्योंकि तब वे गैर संप्रदायी नही बल्कि अलग मत को मानने वाले होंगे।

पंथ के नाम पर मजबूरों को भटकाने की बाकायदा मार्केटिंग संस्थाने खुल चुकी है। ईश्वर एक गारंटीड़ प्रोड़क्ट के रूप में प्रचारित किया जा रहा है, पैसे और झूठे लालच, प्रलोभनों से ईश्वर के सामीप्य का लालच दिया जा रहा है। अपनी मूर्खताओं भरे आड़म्बरों से बीमारियों को ठीक करने का तमाशा किया जा रहा है, हैरत होती है कि यदि इनके आडंबरों से कोई ठीक होता है तो ये अस्पतालों में क्यों नही जाते ? वहाँ जाकर अपने ईश्वर की मार्केटिंग क्यों नहीं करते ? संदेश देने वाला तो कब का झूल गया, लेकिन पीछे रह गयी यह ईश्वर की सेल्स टीम। बस किसी भी तरह किसी को भी फांसो और उसे अपने तथाकथित पंथ में ईश्वर के समीप ला दो। क्यों ? ईश्वर इतना स्वार्थी है ? उसके लिये सब अलग अलग है ? वह गैर संप्रदायियों को अपने बच्चे नही मानता ? वे क्या सौतेले हैं ? यदि ईश्वर परमपिता है तो वह अपने पुत्रों को जस का तस उनके दोषों, अवगुणों एवं गुणों के आधार पर स्वीकार क्यों नही कर सकता ? इसका अर्थ है कि ईश्वर को भी सब बना बनाया ही चाहिये, उसे बस सब अच्छा ही चाहिये ? ऐसा ही है ना ?

क्या अपने कभी गणना की है औद्योगिक क्रांति के आरंभ होने से लेकर अब तक के युद्धों में कितने लोग मरे है ? प्राकृतिक आपदाओं, बीमारियों में भी इतने लोगों को नही मारा जितनों को लालच, मजहब और सत्ता के युद्धों ने मारा है। तो आपको नही लगता के मजहब, सत्ता, लालच, महत्वकांक्षा नरभक्षी है ? इसे केवल मनुष्य और सम्पूर्ण मानवता का रक्त ही चाहिये। यदि ऐसा है तो क्यों नही हम इसे त्याग देते ? क्यों हम इस नरभक्षी परजीवी को अपने व्यक्तित्व पर चिपटे रहने देना चाहते है ? मुझे पता है मेरी बातों को एक विक्षिप्त की बकवास समझ कर खारिज कर दिया जायेगा।

आप सोचोगे के भला मैं कौन होता हूँ यह प्रवचन देने वाला ? मैं क्यों उपदेश देने लगा ? और मुझे क्या पड़ी है दुनिया बदलने की ? तो मैं बता दूँ, शक्ति जिसके पास होती है, युग परिवर्तन का कर्तव्य भी उसी का होता है। जो शक्तिशाली है वही समाज बदल सकता है, अशक्त केवल रो सकता है, कुचला जा सकता है।

आज मेरे पास शक्ति है, ऐसी शक्ति जो पल भर में इस सम्पूर्ण विश्व का भूगोल बदल कर रख दे। आपने उसका उदाहरण देखा ही हैं। मैं बात को और लंबा नही खींचना चाहता, मैं जानता हूँ कि यह समाज उपदेशों से नही दण्ड से सुधरता है। सीधे सपाट शब्दों में कहूँ तो मैं इस सम्पूर्ण विश्व और उसके खोखले आदर्शों से तंग आ चुका हूँ। मैं एक अलग सिविलाईजेशन के सपने देख रहा हूँ, जहाँ किसी प्रकार का बनावटी पन ना हो, जो भी हो वह सही हो, शुद्ध हो। लेकिन विविधता भरे इस विश्व में शांति तब तक नही लाई जा सकती जब तक की उस पर तरह तरह के सैकड़ों मजहबों का राज हो, लाखों मत एक साथ चल रहे हो, अनेक ईश्वरों की सत्ता हो। स्वार्थ, द्वेष, लालच, और वासना हो। इसलिये मैंने निर्णय लिया है कि सम्पूर्ण विश्व अब केवल एक ही शक्ति के अधीन होगा। हर देश के अलग संविधान अलग नियम नही होंगे। एक विश्व एक नियमावली, एक नागरिक संहिता, एक आदर्शवाद, एक विचार, एक मत।

जब सम्पूर्ण विश्व एक मत के झंडे तले आएगा तभी यह मतभेद समाप्त होंगे। इसलिये मैं सम्पूर्ण विश्व के प्रमुख पंथ स्थलों को आज नष्ट करने जा रहा हूँ, सम्पूर्ण विश्व में जो भी स्थान किसी भी मजहब, पंथ का अनुयायी हो, गढ़ हो, केंद्र हो, वह स्थान समूल रूप से नष्ट करने वाला हूँ। हर प्रकार का धार्मिक नेतृत्व आज समाप्त हो जायेगा। अरब, भारत, वेटिकन सहित अनेक पंथ प्रधान क्षेत्रों का समूल नाश होगा और उसके पश्चात केवल एक आदर्शवाद की स्थापना होगी। मेरा मानना है, यदि अरबों का जीवन सुधारना है तो इसमें करोड़ो के जीवन का कोई मूल्य नही है। मरने वाले यह सोच कर संतोष कर लें कि यह उनका बलिदान एक बेहतर कल की नींव बनेगा। वे धन्य होंगे जो इस महायज्ञ में अपने प्राणों की आहुति देंगे।”

“मैं इस सम्पूर्ण समाज के एक नये आरंभ की कल्पना कर रहा हूँ, इसके लिये मैं सारे पुराने मजहबों एवं मान्यताओं को समाप्त करके एक नये पंथ का निर्माण करूंगा, जो केवल समान अधिकारों एवं समान मूल्यों की पक्षधर ही होगी। जब तक पुराने मजहब, मान्यतायें, हैं तब तक इस सम्पूर्ण विश्व में अशांति रहेगी। कोई भी मान्यता अपने विरोधी को सहन नहीं कर सकती, भले ही आप स्वयं को लाख सहनशील प्रचारित कर लें।”

“अभी भी आपके मन में मेरी इस महत्वकांक्षा के प्रति शंका है। मैं इस शंका को भी साफ़ कर दूंगा। कुछ देर प्रतीक्षा कीजिये। मैं अब एक संपूर्ण देश को इस विश्व के नक्शे से मिटाने जा रहा हूँ। मुझे दुःख होगा उन करोड़ों मनुष्यों के जीवन का, जिन्हें इस महान कार्य के लिये मिटने की खातिर चुना गया है। अगले प्रसारण की प्रतीक्षा कीजिये और फिर बता दू, मेरी लोकेशन भले ट्रेस कर ली गयी हो, किन्तु यदि मेरी लोकेशन को ही नष्ट करने का प्रयास किया गया तो मेरे पास स्थित वह शक्ति अनियंत्रित हो जायेगी। फिर ना यह विश्व बचेगा और ना ही कोई मानवता। अपनी हालत के लिये आप स्वयं जिम्मेदार होंगे।” इतना कहकर माया मुस्कुराया और टीवी स्क्रीन ब्लैंक हो गयी।

***

अथर्व फोर्ट स्थित बहुमंजिली माया टॉवर के समक्ष खड़ा था। वह इलाका एक युद्धक्षेत्र में तब्दील हो चुका था। माया की पहचान जाहिर होते ही इस परिसर को खाली करवा दिया गया था। स्पेशल फोर्सेस और अनगिनत पुलिस के जवान इस सम्पूर्ण क्षेत्र के चप्पे चप्पे पर तैनात थे। सम्पूर्ण टॉवर के हर वर्ग मीटर पर मिलिट्री, स्पेशल फोर्सेस एवं पुलिस के हथियारबंद सिपाही किसी भी क्षण धावा बोलने के लिये तत्पर खड़े थे। मीडिया की अनगिनत गाड़ियां और सैकड़ों रिपोर्टर्स ने पूरे इलाके को मधुमक्खी के छत्ते की तरह ही घेर लिया था। मिलिट्री ने कईयों को उस स्थल से खदेड़ दिया था, किन्तु इसके बावजूद मीडिया बेशर्मों की तरह अडी हुई थी। अथर्व स्पष्ट रूप से समझ रहा था कि इस इमारत में प्रवेश करना लगभग असंभव था। इतनी चौबंद सुरक्षा व्यवस्था को चीर कर वह टॉवर तक नही पहुँच सकता था।

“जैसा कि आप देख रहे है, देश की प्रमुख बिजनेस सेलिब्रिटीज में से एक, माया ग्रुप के फाउंड़र और चीफ ‘माया बाहुपति’ ने खुद को एक दानव घोषित करके सनसनी मचा दी है। सारी दुनिया में यह घटना चर्चा का विषय है। माया ने दावा किया है कि उसके पास कोई ऐसा वेपन है जिससे वह सम्पूर्ण देश को भी नष्ट कर सकता है। उसने उदाहरण के लिये सात द्वीपों को नष्ट कर के इस बात पर मुहर भी लगा दी है। यदि यह सच है तो क्या होगा आगे ? मिलिट्री, पुलिस और स्पेशल फोर्सेज ने इस समय माया ग्रुप के हेडक्वार्टर को पूर्णतया घेर लिया है और जिस प्रकार से कुछ ही देर में, फोर्ट, और कोलाबा परिसर को पूर्णतया खाली कर दिया गया है, उससे आशंका जतायी जा रही है कि यह क्षेत्र एक वॉर

जोन में बदलने वाला है। फ़ोर्स की सारी यूनिट्स अत्याधुनिक हथियारों से सुसज्जित है। इसका अर्थ यही है कि वे माया की शक्तियों एवं उसकी धमकियों को हल्के में नहीं ले रहे है, और सम्पूर्ण तैयारी के साथ आये हैं, आगे की अपडेट्स के लिये हमारे साथ बने रहिये। कैमरामैन मिथिलेश गुप्ता के साथ मै शुभानंद, सन मीडिया से।" न्यूज संवाददाता ने कवरेज करना आरंभ कर दिया था। अथर्व अब भी उस भीड़ और सुरक्षा व्यवस्था से बचकर इमारत में दाखिल होने का रास्ता खोज रहा था।

सेना की एक टुकड़ी, इमारत के परिधि में बढ़ी और उसी क्षण इमारत के किसी हिस्से से एक अद्भुत प्रकाश सा प्रस्फुटित हुआ और एक ऊर्जा लहर से वह संपूर्ण टुकड़ी नहा उठी। कुछ ही क्षण लगे होंगे और लगभग पन्द्रह सैनिकों की वह यूनिट खड़े खड़े राख में तब्दील हो गयी। उन्हें चीखने तक का अवसर नही मिला। उनका यह दृश्य देखकर सभी के रोंगटे खड़े हो गये। पत्रकारों तक को सांप सूंघ गया। ऊर्जा लहर पुन: कौंधी और इस बार निशाना पुलिस और मिलिट्री वाहन थे। अनगिनत वाहन उस ऊर्जा लहर से छूते ही किसी बम के धमाके की तरह ही फट पड़े। विस्फोटों की एक कतारबद्ध शृंखला ही आरंभ हो गयी थी। कर्णभेदी विस्फोटों एवं भयंकर अग्नि से सम्पूर्ण क्षेत्र थर्रा उठा। मीडिया और तमाशाइयों में भगदड़ मच गयी। यूनिट्स ने बिना किसी चीज की प्रतीक्षा किये टॉवर को निशाना बना कर ओपन फायरिंग आरंभ कर दी। जबरदस्त फायरिंग शुरू हो गयी थी। अथर्व को इस हड़बडी का फायदा उठाना था, उसने बिना कोई क्षण गंवाए अपने सर पर टोपी की भाँति ओढ़ रखा त्रिपुंड धारी मास्क खींच कर मुंह को ढंक लिया। वह इस समय जैकेट में था किन्तु जैकेट के भीतर उसने मंत्र कवच धारण कर रखा था, जिस पर मंत्र उभरने लगे थे। वह अद्भुत गति से दौड़ा। भीषण रूप से होती फायरिंग के मध्य ऊर्जा लहरियों का प्रहार निरंतर जारी था। लहरियों की जद में जो भी चीज आती वह नष्ट हो जाती, विखंडित हो जाती। वाहनों के कतारबद्ध विस्फोटों से आरंभ हुई शृंखला अब भी अपने चरम पर थी। उसी क्षण एक ऊर्जा लहर ने एक और टुकड़ी को निशाना बनाया, यह इतना भीषण प्रहार था कि पन्द्रह मीटर के दायरे में कई फीट का गड्ढा हो गया मानों वहाँ कोई उल्का गिरी हो।

इस भीषण धमाके से अथर्व उछलता हुआ एक इमारत की दीवार से जा टकराया। अंडर ग्राउंड़ गैस की पाइप फटने के कारण एक भीषण कर्णभेदी विस्फोट हुआ जिसे मीलों तक स्पष्ट सुना जा सकता था। तीन

मंजिल ऊँचा आग का एक भीषण बवंड़र सा उठा। उस धमाके से अनेक वाहन हवा में कई फीट तक किसी खिलौनें की भाँति उड़ रहे थे। अनेक इमारतों के शीशे और दीवारें तक चटख गए। अथर्व अब बाली बन चुका था, वह अपने आप को उछलते और गिरते भारी भरकम वाहनों के नीचे दबने से बचते बचाते आगे बढ़ता जा रहा था। वह भयंकर फुर्ती से उछल रहा था। मीडिया की नजरों से वह दृश्य बच नही सका। जब सम्पूर्ण सैन्य और पुलिस फ़ोर्स इमारत की विपरीत दिशा में दौड़ रही थी तब वह विचित्र नकाब पहना हुआ शख्स विस्फोटों एवं मलबों के टुकड़ों से स्वयं को बचाता हुआ, धूल, धुएं एवं आग के गुबार के मध्य दौड़े जा रहा था।

नकाब के आवरण में छुपे अथर्व के मस्तिष्क में वह दृश्य स्पष्ट दिखायी देने लगे थे, धूल,आग, धुएं, मलबे और विस्फोटों के मध्य उसे तड़पती हुई दीक्षा दिखायी दे रही थी। उसे उसके साथ होने का भास हो रहा था। वह किसी भी वस्तु की परवाह ना करते हुए बस दौड़े चला जा रहा था। अचानक उसके पीछे भयंकर विस्फोट हुआ और वह उस विस्फोट के धक्के से सीधे टॉवर के प्रवेशद्वार को तोड़ते हुए भीतर जा गिरा। यह अब तक का सर्वाधिक शक्तिशाली विस्फोट था। उसका सम्पूर्ण शरीर कांप रहा था। बाली ने इमारत के बाहर देखा, वह सम्पूर्ण परिसर किसी श्मशान की भाँति जल रहा था। इमारतें मलबों में तब्दील हो चुकी थी। सम्पूर्ण परिसर को आग के भीषण बवंड़र ने अपनी आगोश में लिया हुआ था। बाहर शायद ही अब कोई प्रतिकार करने वाला शेष बचा हो और जो बचे भी होंगे उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि इस आपदा से कैसे निपटा जाये।

बाली अपने पैरों पर खड़ा हो गया। उसने जैकेट उतार फेंकी। उसकी नसों में अब रक्त की जगह लावा सा बहता महसूस हो रहा था। आँखों में अग्नि तप रही थी। मुट्ठियाँ भिंची हुई थी, और मांसपेशियाँ फड़क रही थी। उसके सामने माया के एजेंट्स खड़े थे। अत्याधुनिक शस्त्रों से लैस मनुष्यों के भेस में छिपे दानव। बाली उन्ही की ओर द्रुत गति से दौड़ पड़ा। वे संख्या में पन्द्रह थे और बाली अकेला।

***

।। त्रेतायुग ।।

अंतिम युद्ध

सुबाहु के नेत्र तप रहे थे। प्रखर धूप में उसका सम्पूर्ण कवच मानो तप रहा था। इसके हाथ में थमा दण्ड अपने सम्पूर्ण रूप में दमक रहा था। उसके समक्ष एक सम्पूर्ण सेना खड़ी थी। उस सेना का नेतृत्व स्वयं भद्रक कर रहा था।

“अयोध्या के युवराज के साथ ही समस्त शक्तिशाली शक्तियाँ भी लंका युद्ध में सम्मिलित होने चली गयी है, बचे है तो केवल कुछ ऐसे योद्धा जिनमे इतनी भी क्षमता नहीं कि वे दानवों के संगठित प्रहार से स्वयं को बचा सके। उस ऊर्जा शिवलिंग में महादेव की प्रचण्ड तांडव ऊर्जा है, वह ऊर्जा जिसके पास होगी वह स्वयं एक विनाशक होगा। सृष्टि की सर्वशक्तिशाली शक्ति होगी वह प्रजाति जो इस ऊर्जा को सिद्ध कर लेगी। बलभद्र की मृत्यु के पश्चात से ही प्रतिशोध की अग्नि में मेरा सम्पूर्ण अस्तित्व धधक रहा है, मेरे सारे आदर्श सारे नियम समस्त संयम बलभद्र की मृत्यु से समाप्त हो चुके है। आज का यह युद्ध निर्णय करेगा दानव जाति अथवा मनुष्य जाति। मैं किसी भी मूल्य पर उस शिवलिंग को प्राप्त करके दानव और राक्षस जाति को और अधिक सुदृढ़ बनाऊंगा।” भद्रक के मस्तिष्क में विचारों की आंधी चल रही थी।

उसके समक्ष सुबाहु खड़ा था। अकेला। भद्रक की आधी से अधिक सेना के समक्ष केवल एक व्यक्ति। सुबाहु को इस क्षण की ही प्रतीक्षा थी। उसने अपना सम्पूर्ण जीवन, सम्पूर्ण आयुष्य इसी क्षण की प्रतीक्षा में बिताया था। उसका खौलता रक्त, फड़कती भुजाएं, अपनी शक्ति, युद्ध कौशल के अंतिम कण तक का संपूर्ण प्रयोग करने के लिये उत्सुक थी। भद्रक ने अपनी सेना को आक्रमण का आदेश दिया। सेनापति के साथ ही असंख्य अश्वारोही एवं पैदल सैनिक सुबाहु को लक्ष्य कर बाणों की वर्षा करने लगे। सुबाहु ने अपना दण्ड से बाणों को लकड़ी की तीलियों की भाँति छिटकाना आरंभ कर दिया। दानव सेना असंख्य थी। सुबाहु को इस समय अपने सम्पूर्ण बल की आवश्यकता थी। वह यह भूल ही गया था कि उसका कवच अभेद्द है, बाणों की यह वर्षा उसके कवच को भेद नही सकती थी। वह अपने स्थान से उछला, पूर्ण वेग एवं सम्पूर्ण ऊर्जा

को केन्द्रित करके उसने उछाल भरी थी। भद्रक क्षण भर को उसकी उछाल देख कर हतप्रभ रह गया।

उसने अब तक केवल सुना था इस उछाल के विषय में, किन्तु आज अपने नेत्रों से देखकर भी उसे विश्वास नही हो रहा था कि कोई सामान्य मनुष्य इतनी ऊंचाई तक भी उछल सकता है। सेना की पहली टुकड़ी के मध्य सुबाहु अपने दण्ड को विद्युत् की गति से लहराते हुए कूद पड़ा। उसका दण्ड सम्पूर्ण वेग और प्रचण्ड शक्ति से धरा से टकराया। एक भीषण टंकार की ध्वनि उत्पन्न हुई और विशालकाय कंपन तरंगो से संपूर्ण टुकड़ी उछल पड़ी। पहली टुकड़ी को सुबाहु की भूमिकंपक सिद्धि ने भूमि पर ला दिया था। उसके आसपास दानव सैनिकों के मृतदेह गिर रहे थे। वह उनके मध्य से दौड़ता बढ़ा आ रहा था। दण्ड के मध्य एक विशिष्ट दबाव से दण्ड के दोनों किनारों पर धारदार पत्तियाँ उभर आयी और इसी के साथ सुबाहु ने उस दण्ड को एक विशालकाय चक्र की भाँति घुमाना आरंभ करके अपने समक्ष आगे बढ़ती दूसरी टुकड़ी पर फेंक दिया।

दण्ड विशालकाय चक्र की भाँति हवा को काटते हुए आगे बढ़ा और अनेक दानव सैनिकों को टुकड़ों में विभक्त करते हुए पुन: घूमकर सुबाहु के हाथो में जा पहुंचा। सुबाहु अब पूर्णतया दानव टुकड़ी के मध्य घिर चुका था। सभी एक साथ प्रहार कर रहे थे, सुबाहु कभी दण्ड को घुटनों पर बैठ के घुमाता तो कभी हवा में फिरकी की भाँति घूमते हुए चला देता। इससे उसके समीप आने वाला हर सैनिक अनेक टुकडों में विभक्त हो जाता। भद्रक सुबाहु की वीरता से मानो सम्मोहित सा हो गया था।

“एक अकेले ने मेरी लगभग दो दानव टुकड़ियों को कुछ ही क्षणों में समाप्त कर दिया ? अद्भुत योद्धा है यह तो।” भद्रक ने सेना का नेतृत्व संभाल लिया था। उसने सम्पूर्ण सेना को चारों दिशाओं में फ़ैल जाने का निर्देश दिया। सुबाहु बिना थके बिना रुके युद्ध कर रहा था। एक प्रहार खाता तो दस दानवों के सिर काट डालता। साक्षात् रुद्र का अवतार प्रतीत हो रहा था वह। भद्रक की सेना चारों ओर से अनेक पंक्तियों में सुबाहु के समीप गोलाकार व्यूह की रचना कर रही थी। सुबाहु को इसकी भनक लग चुकी थी। किन्तु उसे उलझाये रखने के लिये पर्याप्त दानव टुकड़ियां उससे युद्ध कर रही थी। सुबाहु अपने युद्ध कौशल, सिद्धि और मंत्र कवच के कारण अवश्य अभेद था, किन्तु निरंतर होते प्रहारों के कारण उसका शरीर भी शीघ्र ही थकान की ओर बढ़ने लगा था। सुबाहु भूमिकंपक का प्रयोग नही करना चाहता था, ऐसा करने से उसकी बची

खुची ऊर्जा भी क्षीण हो जाती। स्थिति अचानक से विकट होती प्रतीत हो रही थी। अचानक उसकी दृष्टि पठार पर आते अश्वारोही पर पड़ी। सूर्य से चमकते मुंडे हुये शीश एवं शक्तिशाली व्यक्तित्व का वह स्वामी युद्धक्षेत्र की ओर तीव्रता से बढ़ रहा था।

“गुरु कपिल !” सुबाहु ने अश्वारोही को देखा, और मानो उसके शरीर में पुन: ऊर्जा का संचार हो गया।

***

वर्तमान समय

अंतिम युद्ध

बाली एजेंट्स की गोलियों से स्वयं को बचाता हुआ उनके मध्य पहुंचा। बाली प्राचीन युद्ध कलाओं में कुशल योद्धा था, विद्युत् की गति से उसके हाथ पैर चल रहे थे। बाली पर चली हुई हर गोली उसके अभेद कवच के कारण बेकार हो जाती, बाली को गोलियों से चोट अवश्य लग रही थी, किन्तु वह घातक नही थी। कवच की मंत्र शक्ति भले ही युगों पश्चात पूर्व की भाँति प्रभावशाली नही थी। लेकिन बाली अकेला ही किसी दिव्यास्त्र से कम नही था, यह उसने माइकल के क्लब में ही प्रमाणित कर दिया था। उसने कुछ ही क्षणों में पंद्रह एजेंट्स की सम्पूर्ण गतिविधियों की गणना कर ली। उसका कार्य हो चुका था, अब वह सटीक अनुमान लगा सकता था कि अगले कुछ ही क्षणों में उनके शरीर किस प्रकार हरकत करने वाले है, किसी भी सामान्य मनुष्य के लिये कुछ क्षणों का समय कोई मायने नही रखता, किन्तु वह बाली था।

सर्वप्रथम ऑटोमेटिक राइफल के ट्रिगर दबाते एजेंट सम्मुख वह जा पहुंचा, उसने ट्रिगर दबाया ही था कि बाली ने राइफल की नाल गलियारे की ओर घुमा दी, एक के बाद एक अनेक गोलियाँ निकली और चार से पांच एजेंट्स के शरीरों में अनगिनत छेद हो गये। जब तक राईफलधारी कुछ समझता बाली ने उसी की गन का उल्टा प्रहार उसके सीने पर किया। उसकी पसलियाँ कई हिस्सों में टूट गयी और वह मुंह से रक्त की उलटी करता हुआ फर्श पर जा गिरा। बाली आगे बढ़ा ही था कि उसकी पीठ से एक धारदार ठंडी वस्तु रगड़ खाते हुए निकल गयी। यह एक शिकारी नाइफ का प्रहार था। एजेंट्स ने गन्स के साथ साथ नाइफ भी निकाल ली थी। गोलियों को बेअसर होता देख उन्हें इस समय नाइफ का प्रयोग ही उचित लगा। बाली मास्क के भीतर हंसा। नाइफ से प्रहार करने वाले एजेंट को उसने घूमते हुए एक फ़्लाइंग किक जड़ दी। उस भरपूर शक्ति से युक्त किक की एक ठोकर से ही उस एजेंट की गर्दन की हड्डी टूट गयी और वह निष्प्राण देह लिये फर्श पर जा गिरा। उसका हवा में लहराता नाइफ बाली ने हवा मे ही थाम लिया और आगे बढ़ते एक एजेंट की गर्दन पर प्रहार कर दिया।

उसने इतनी फुर्ती से नाइफ घुमाया था कि किसी को देखने तक का अवसर नही मिला। उसके समक्ष खड़े एजेंट के हाथों से उसका नाइफ छूट कर फर्श पर जा गिरा। एक क्षण को उसने बाली को देखा, और दूसरे ही क्षण उसका सर उसके धड़ से फिसलते हुए गलियारे के सफ़ेद फर्श पर जा गिरा। वह आलीशान गलियारा अब किसी कसाईबाड़े में तब्दील हो गया था। बाली किसी के कुछ समझने से पहले ही दौड़ते हुए फर्श पर घुटनों के बल बैठ कर एजेंट्स के मध्य से फिसलता चला गया। एजेंट्स के मध्य फिसलते हुए उसका नाइफ अद्भुत गति से घूम रहा था। कुछ दूर तक फिसलते हुए वह रुका और अपने पैरों पर खड़ा हो गया। उसे पीछे देखने तक की आवश्यकता महसूस नही हुई, उसके पीछे सभी एजेंट्स फर्श पर पड़े तड़प रहे थे।

सभी के पेट बाली की नाइफ ने चीर दिये थे, उनकी अंतड़ियां तक फर्श पर आ चुकी थी। बाली हाथ में नाइफ लिये गलियारे के दूसरे छोर की ओर बढ़ रहा था। एक एजेंट अब भी उसकी नाइफ की परिधि में आने से बच गया था। उसने अपनी गन का रुख बाली की ओर किया ही था कि बाली फुर्ती से घुमा और नाइफ को उसकी ओर उछाल दिया। नाइफ सीधे उसके माथे के बीचो बीच जा धंसा था। उसकी ऊँगली ट्रिगर पर दब ही ना पायी और वह भी लाशों के ढेर में एक लाश बन कर रह गया। बाली लिफ्ट की ओर बढ़ा, उसने टॉप फ्लोर से दो मंजिल नीचे का फ्लोर चुना। मास्क के नीचे उसका शरीर मानो तप रहा था। उसकी आँखे धुंधली पड़ रही थी। उसका सम्पूर्ण शरीर रक्त से सना हुआ था। त्रिपुंड धारी मास्क के ऊपर रक्त के छींटे स्पष्ट दिखायी दे रहे थे। उसने हाथ से रक्त पोंछा, हाथ हटाते ही उसे मठ दिखा, गर्भ गृह में शक्ति मठ के सदस्यों के कटे फटे शव दिखायी देने लगे। मठ का तहस नहस हुआ गर्भ गृह दिखायी दिया, देवदत्त का गोलियों से छलनी हुआ शरीर दिखायी दिया। उसकी माँ उसके क़दमों में जो गिरी तो पुन: चार कंधो के सहारे ही उठ सकी। दीक्षा का सुंदर और कोमल शरीर उसे जलता हुआ दिखायी दिया, उस जलते मांस की दुर्गंध उसके सम्पूर्ण अस्तित्व का दम घोंट रही थी। उसे घुटन महसूस हुई, वह धुंआ उसके गले में फंस रहा था, जले मांस की गंध से उसकी नसें फटती हुई प्रतीत हुई।

उसने एक झटके से अपना त्रिपुंड मास्क उतार दिया और घुटनों के बल बैठ गया। वह लंबी लंबी साँसे ले रहा था। हांफ रहा था, उसकी जलती आँखों से लावें की भाँति तप्त अश्रु धारायें बह रही थी। उसके हृदय में

भूकंप जैसी थरथराहट हो रही थी। वह लिफ्ट के फर्श पर ही बैठ गया और अपनी आँखे मूँद ली। उसका अवसाद उसकी बेचैनी बन कर उसपर हावी हो रहा था। उसे इस अवसाद पर नियंत्रण पाना था। कुछ क्षणों पश्चात उसकी साँसे नियंत्रित हुई और उसने आँखे खोली। एक ही फ्लोर बचा था। वह जानता था दरवाजा खुलते ही उसका सम्पूर्ण स्वागत किया जायेगा। उसने पुनः त्रिपुंड धारी मास्क पहन लिया और स्वयं को युद्ध के लिये सज्ज कर लिया।

लिफ्ट रुकी, उसे पता था यही क्षण है जब सामने वाले के आक्रमण की प्रतीक्षा करने के बजाय खुद आक्रमण करना चाहिये। उसने अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा एकत्रित की, मंत्र कवच पर दिव्य मंत्र प्रस्फुटित हुये और बाली का शक्तिशाली घूंसा लिफ्ट के दरवाजे पर जा लगा।

***

लिफ्ट के दूसरी ओर मशीन गन्स से लैस एजेंट्स की एक सम्पूर्ण टुकड़ी, निशाना लगाये बैठी थी। लिफ्ट का दरवाजा खुलते ही सैकड़ों गोलियाँ एक साथ चलने को आतुर थी। लिफ्ट फ्लोर पर आकर रुकी, सबकी उंगलियाँ ट्रिगर पर कस उठी। दरवाजा खुलने की घरघराहट शुरू ही हुई थी के मानो एक भीषण विस्फोट सा हुआ और स्टील का भारी भरकम दरवाजा किसी कागज की भाँति फटकर एजेंट्स पर आ गिरा। उस दरवाजे के साथ ही साथ बाली भी बाहर आ चुका था। किसी के कुछ समझने से पहले उसके हाथों में उसका दण्ड पूर्णतया खुल चुका था। दण्ड किसी चक्र की भाँति ही खुला और उसकी जद में जो भी एजेंट आया वह गाजर मूली की भाँति कटने लगा। सम्पूर्ण गलियारे में रक्त की वर्षा सी होने लगी थी। एजेंट्स को मानों भूत सा दिख गया था, उन्होंने अपने साथियों की परवाह किये बगैर फायरिंग शुरू कर दी।

अनगिनत गोलियाँ गलियारे में चलने लगी, जिसकी जद में खुद एजेंट्स भी आ रहे थे। बाली ने दो एजेंट्स को अपने सामने ढाल बना दोनों भुजाओं से लटका दिया था। दोनों एजेंट्स के शरीर में सैकड़ो गोलियाँ समा चुकी थी। बाली ने उन्हें फेंका और उन गोलियों के मध्य आकर खड़ा हो गया, उसे उनकी कोई परवाह ही नहीं थी। उसका कवच अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा से प्रकाशमान हो रहा था, सैकड़ों गोलियाँ उस पर लग रही थी और छिटक रही थी। किन्तु वो उस कवच को भेद पाने में अक्षम साबित हो रही थी। एजेंट्स की टुकड़ी दो दलों में बारी बारी

से फायरिंग कर रही थी। एक टुकड़ी की गोलियाँ खत्म होती तो उनके मैगजीन बदलने तक दूसरी टुकड़ी फायरिंग करती।

निरंतर चलती गोलियाँ बाली के कवच को भेद तो नही पा रही थी किन्तु उसके शरीर पर भीषण दबाव बना रही थी। बाली का दण्ड अब पूर्णतया खुल चुका था, उसने दण्ड को घुमाना आरंभ किया और एजेंट्स के मध्य कूद पड़ा, उसका दण्ड जहां भी पड़ता एजेंट पुनः उठ नही पाता। अद्भुत गति से वह किसी लट्टू की भाँति ही घूम रहा था। उसके दण्ड के दोनों छोर पर स्थित धारदार लौह पट्टिकायें एजेंट्स के अंग भंग कर रही थी। भीषण गोलाबारी और धमाकों से गलियारे की इलेक्ट्रिसिटी जल बुझ रही थी। बाली एजेंट्स को काटते हुए बढा जा रहा था कि उसके सामने एक धमाका हुआ और वह कई फीट दूर जा गिरा। धमाका उसके एकदम इंच भर सामने ही हुआ था। उसने स्वयं को संभालते हुए धमाके की ओर देखा, एजेंट्स के सबसे पीछे एक शख्स खड़ा था। जिसके हाथों में असॉल्ट रायफल कम ग्रेनेड़ लॉन्चर थी, वह फ्रैंक था।

“एजेंट्स ! इस पर गोलियाँ असर नही करेंगी, अब समय आ गया है, जब हम रिफ़ॉर्मर्स अपने असली स्वरूप में आये और इस कीड़े को मसल डाले।” फ्रैंक ने कहा, इसी के साथ उसके शरीर में बदलाव आना आरंभ हो गया, उसकी आँखे लाल हो गयी, चेहरा विचित्र आकार लेने लगा और उसकी सम्पूर्ण मांसपेशियाँ दोगुने आकार में फूलने लगी। उसने अपना सूट उतार फेंका, उसका सफ़ेद शर्ट एकदम से कस गया था और कई जगह फट भी गया था। फ्रैंक अब अपने दानव स्वरूप में आ चुका था। फ्रैंक के साथ ही एजेंट्स भी अपने दानव एवं राक्षस स्वरूप में आ गए।

बाली अपने समक्ष एक अच्छी खासी दानव सेना को देख रहा था, जिनमे से हर एक उससे आकार में लगभग डेढ़ गुना था। वह अपने स्थान से पुनः उठ खड़ा हुआ, उसका दण्ड विस्फोट वाले स्थान पर ही छूट गया था। अब उसे यह युद्ध केवल अपने युद्ध कौशल, कवच एवं इच्छाशक्ति से ही लड़ना था।

वह उठ खड़ा हुआ, आगे बढ़ा ही था कि फ्रैंक बाली की फुर्ती को भी मात करते हुए उसके समक्ष आ खड़ा हुआ और उसका विशालकाय प्रचण्ड घूंसा बाली की छाती में जा टकराया। बाली उस घूंसे से पीछे गिरने वाला ही था लेकिन उसने बिजली की सी गति से फ्रैंक का घूंसा ही पकड़ लिया और उछल कर कर उसकी ठोड़ी पर अपने घुटने का प्रहार

कर दिया। फ्रैंक इस भीषण प्रहार से कई फीट दूर जा गिरा। फ्रैंक का शरीर अभी फर्श पर गिरा ही था कि बाली के बूट की शक्तिशाली ठोकर उसकी छाती में आ लगी। फ्रैंक तिलमिला उठा लेकिन उसने बाली के पैरों को पकड़ खींच लिया जिसके फलस्वरुप बाली फर्श पर मुंह के बल गिरने ही वाला था किन्तु उसने स्वयं की हथेली को फर्श ओर टिका कर खुद को बचा लिया। फ्रैंक अद्भुत फुर्ती को भी मात देती हुई गति से फर्श पर पड़े पड़े ही लुढ़का और बाली की पीठ पर अपने घुटने का प्रहार कर दिया। बाली फर्श से जा लगा, और इस क्षण का भरपूर लाभ उठाते हुए फ्रैंक उसकी पीठ पर सवार हो गया।

उसने अपने दोनों हाथो से बाली की गर्दन जकड़ ली और घुटने उसकी पीठ में धंसाये हुए अपनी मजबूत पकड़ बनाये रखी। वह बाली की गर्दन उमेठने की फिराक में था। बाली फ्रैंक की अतिमानवीय शक्ति को स्पष्ट महसूस कर रहा था, उसने अपनी दोनों हथेलियों को फर्श पर टिकाया और अपने शरीर को फ्रैंक के साथ ही ऊपर उठा कर उछाल दिया और सीधे गलियारे की दीवार से जा टकराया। फ्रैंक की पीठ दीवार से टकराते ही उसकी पसलियाँ चरमरा उठी। उसकी पकड़ ढीली हुई ही थी कि बाली की कोहनी का भरपूर प्रहार उसके माथे पर हुआ जिससे वह चकरा गया। उसका माथा फट गया और रक्त की धार बहने लगी।

बाली फुर्ती से पलटा और निर्दयता से उसने फ्रैंक के सिर को दोनों हाथों से पकड़ कर दीवार में पूर्ण शक्ति के साथ भिड़ा दिया। दीवार में दरारें उत्पन्न हो गयी। बाली ने अपने बूट का भरपूर प्रहार फ्रैंक के घुटने के पिछले जोड़ पर किया और उसे फर्श पर ही बिठा दिया। नीचे बैठते ही बाली ने अनगिनत बार उसके सिर को दीवार में टकरा दिया, दीवार बुरी तरह टूट चुकी थी और साथ टूट चुकी थी फ्रैंक की खोपड़ी। उसने निढाल फ्रैंक को फर्श पर ला पटका, फ्रैंक के फर्श पर गिरते बाली ने उसकी बांह को बेदर्दी से उमेठा और अपने बूट से भयंकर गति का प्रयोग करते हुए उसके मस्तक पर प्रहार कर दिया।

हड्डी टूटने की भीषण ध्वनि के साथ ही मजबूत फर्श दो तीन इंच तक भीतर धंस गया। उसने रक्त से सना अपना बूट उठाया। फ्रैंक की बुरी तरह से टूटी फूटी लाश फर्श पर निढाल पड़ी थी। बाकी रिफॉर्मर्स जो चलचित्र की भान्ति यह युद्ध देख रहे थे मानों नींद से जागे और एक साथ हमला कर दिया। बाली पहले ही पूर्ण गलियारे और उसकी स्थिति की गणना कर चुका था। वह अपने स्थान से लुढ़का और सीधे एजेंट्स के शवों के मध्य

आकर रुका। उसे एजेंट्स की मशीन गन्स की आवश्यकता थी। उसने लेटे लेटे ही शवों की आड़ में मशीन गन्स से अंधाधुंध फायरिंग आरंभ कर दी। गलियारे में बेहिसाब गोलियाँ चलने लगी। सामान्य एजेंट्स गोलियों से फ़ौरन दम तोड़ देते थे किन्तु रिफ़ॉर्मर्स पर उन गोलियों का विशेष प्रभाव नही हो रहा था। बाली ने एक के पश्चात एक तीन मशीन गन्स खाली कर दी। भले ही दानवों पर उसका प्राणघातक असर नही हो रहा था किन्तु अनगिनत और हाई कैलिबर की गोलियों से वे घायल अवश्य हो रहे थे।

बाली ने आखरी मशीनगन खाली होते ही अपने स्थान से छलांग लगायी और दानवों के मध्य जा पहुंचा, कोई कुछ समझता उससे पहले ही बाली हरकत में आ चुका था। उसके सामने पहुँचते ही दानवों की शक्ति मानो आधी रह गयी। बाली ने किसी के सर पर प्रहार किया तो किसी के घुटनों पर। किसी पीठ में प्रहार करके रीढ़ की हड्डी ही तोड़ डाली। अद्भुत कवच और बाली की क्षमता का ही परिणाम था कि उसका एक एक प्रहार प्राणघातक साबित हो रहा था। एक दानव बाली पर प्रहार करने में सफल हो गया, उसका भारी भरकम घूंसा बाली के चेहरे पर पड़ा, किन्तु बाली को उसके प्रहार से ज़रा भी फर्क नही पड़ा।

उसने उसकी कंठ नली ही दबोच ली। बाली ने सम्पूर्ण क्रूरता का प्रदर्शन करते हुए उसकी कंठ नली पर अपनी उंगलियाँ धंसाना आरंभ कर दिया, इससे पहले कि दानव संभल पाता बाली की उंगलियाँ उसका मांस फाड़ते हुए उसकी कंठ नली को ही उसके गले से बाहर खींच लायीं। दानव गला पकड़े फर्श पर लोटने लगा, उसके गले से रक्त का फव्वारा छूट रहा था। बाली ने उसकी कंठ नली का टुकड़ा हिकारत से गलियारे में फेंक दिया। दानव और एजेंट्स अब भी अच्छी खासी संख्या में थे। बाली को अपनी सम्पूर्ण शक्ति एवं ऊर्जा की आवश्यकता थी। उसने एक क्षण के लिये अपनी आँखे बंद की, उसके कवच पर मंत्र पुन: प्रस्फुटित होने लगे। यह प्रमाण था ऊर्जा के असीम बहाव का। बाली ने आँखे खोली और दानवों के कुछ भी समझने से पूर्व उनके मध्य पहुँच कर विद्युत् की गति से प्रहार आरंभ कर दिये। उसे यह युद्ध शीघ्र ही निपटाना था। उसका प्रहार जिस पर भी पड़ता वह पुन: उठ पाने की अवस्था में नही रहता था। अनेकों दानवों को बुरी तरह तोड़ते मरोड़ते वह आगे बढ़ता रहा। उसने अपने से दुगुने दानव तक को हवा में उछाल फेंका था, बाली

की शक्तियाँ और ऊर्जा अपने चरम की ओर बढ़ रही थी। उसके प्रतिद्वंदी उसके समक्ष टिक नही पा रहे थे।

बाली को फर्श पर अपना दण्ड दिखा। उसने बगैर एक भी क्षण गंवाए दण्ड को उठा लिया और पलक झपकने से भी पूर्व उसने दण्ड को अपने चारों ओर नचाना आरंभ कर दिया। दण्ड अद्भुत गति से उसके सम्पूर्ण शरीर के चारो ओर घूम रहा था, उसकी धारदार लौह पट्टियाँ एजेंट्स को पुनःकाटने लगी। सम्पूर्ण गलियारे में मात्र रक्त और मांस के टुकड़े उड़ते बिखरते दिखायी दे रहे थे। कुछ ही देर में उस मंजिल का कोई भी भाग ऐसा नहीं बचा था जहाँ रक्त के धब्बे ना हो। सम्पूर्ण गलियारे का फर्श रक्त, शवों एवं कटे फटे अंगो के टुकड़ों से भरा पड़ा था।

आखिरी बची टुकड़ी की ओर बाली ने दण्ड को चक्र की ही भाँति घुमा कर फेंका। दण्ड हवा को काटता हुआ दानवों के मध्य से गुजरा और वापस बाली के हाथों में आ पहुंचा। बाली अब बेझिझक उनके मध्य से चलते हुए गलियारे के अंतिम छोर की ओर बढ़ने लगा। सारे एजेंट्स और दानवों के शरीर धड़ से मध्य में दो टुकड़ों विभक्त होकर गिरने आरंभ हो गये थे। सनसनाते हुए चक्र ने क्षण भर में ही बड़ी सफाई से उनके शरीरों को काट दिया था। कोई भी एजेंट अब वहाँ जीवित नही था। बाली रक्त से तरबतर नहाया हुआ था, वह उस दरवाजे के सामने खड़ा था। उसने एक ठोकर में ही दरवाजे को उखाड़ फेंका।

वह अब एक विशालकाय अत्याधुनिक कमरे में था और उसके सामने खड़ा था एक अद्भुत और आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी। माया बाहुपति। माया रक्त से सने हुए बाली की ओर देख कर मुस्कुराया।

“मुझे पता था मेरे एजेंट्स और रिफ़ॉर्मर्स तुम्हें रोक नही पायेंगे और देखो, मेरा अनुमान एकदम सही था, तुमने मुझे बिलकुल भी निराश नही किया। मैं यानी कि माया, तुम्हारा स्वागत करता हूँ, यह तुम्हारी खुशनसीबी है कि तुम्हें यह युगपरिवर्तन देखने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।” माया मुस्कुराया उसकी मुकुराहट काफी रहस्यमय थी। उसका स्वर एक विचित्र सी उत्तेजना से परिपूर्ण था। वह रोमांचित था।

बाली ने उस सम्पूर्ण कमरे को देखा, एक विशालयकाय विचित्र से संयंत्र पर उसकी दृष्टि जाकर ठहर गयी। वह एक विशालकाय पारदर्शी ट्यूब जैसा यंत्र था। जिसके मध्य शक्ति मठ का प्राचीन ऊर्जा शिवलिंग अपनी सम्पूर्ण दिव्यता के साथ चमक रहा था। शिवलिंग से प्रस्फुटित होती ऊर्जा लहरियां उस ट्यूब में भीषण गति से चक्रवात की भाँति

घुमती सी प्रतीत हो रही थी। उस चमक की ओर अधिक देर तक देखना बाली के वश का नहीं था। उसने उस संयत्र के समक्ष एक विचित्र से ट्यूब में एक अजीब से व्यक्ति को देखा। वह ध्यान मुद्रा में बैठा हुआ था। शक्ति लिंग से निकलती ऊर्जा से उसका शरीर जगमगा रहा था, उस विचित्र और असाधारण आकृति लिये हुए व्यक्ति को देखकर वह आश्चर्यचकित रह गया और उससे भी अधिक आश्चर्य उसे इस बात का हो रहा था के उस कुरूप, विशालकाय एवं वीभत्स प्रतिकृति वाले शरीर का स्वामी शिवलिंग की प्रचण्ड ऊर्जा को मानों सोख रहा था। यह असंभव था, कोई भी शक्ति रूद्र के तांडव ऊर्जा को भला कैसे झेल सकती थी।

"वह कोई सामान्य व्यक्ति नही है, अथर्व।" माया ने मानो बाली का मन पढ़ लिया था।

"मेरा नाम तुम्हें मटुक ने ही बताया होगा।" बाली गुर्राया। उसे इस बात से बिलकुल भी हैरानी नही थी।

"मुझे तुम्हारे असली नाम से कोई मतलब नही है, मैं जानता हूँ तुम बाली हो और मुझे बाली से ही मतलब है। जिसे तुम देख रहे हो जानते हो वह कौन है ? वह प्राचीन काल के इतिहास का ही एक शापित व्यक्तित्व है, मिलो 'अश्वत्थामा' से।" माया मुस्कुरा उठा।

अश्वत्थामा का नाम सुनकर बाली अवाक रह गया, उसे अपने आप पर विश्वास ही नही हुआ। किन्तु उसके प्रशिक्षण के आरंभ में ही वह इतना कुछ देख और समझ चुका था कि उसे अब ऐसी घटनाओं पर आश्चर्य कम ही होता था। वह जानता था हमारी माइथोलॉजी कोई मिथक ना होकर हमारा इतिहास है, जिसे नकारा नही जा सकता। माया उसे ही एकटक घूरे जा रहा था, वह चहलकदमी कर रहा था।

"मुझे तुमसे मिलने की बड़ी तीव्र इच्छा थी बाली। ऐसा कह लो कि मैं केवल तुमसे मिलने के लिये ही जन्मा हूँ। मेरे जीवन का असल उद्देश्य तुमसे प्रतिशोध ही तो है और आज वह क्षण आ गया है। मेरी युगों की प्रतीक्षा का आज अंत होने जा रहा है, मेरा युग युगांतर प्रतिशोध का स्वप्न आज अपना मूर्त रूप लेने को उत्सुक है, बाली।" माया बड़बडा रहा था।

"मैं तुम्हें जानता तक नही। मुझसे कैसा और किस प्रकार का प्रतिशोध ?" बाली गुर्राया।

"ओह ! इसका अर्थ यह हुआ कि तुम्हें कुछ भी याद नही है। यानी इस विशेषता के साथ केवल मैं ही जन्मा हूँ। मैं अपने पिछले जन्म की

स्मृतियों के साथ ही जन्मा हूँ। इसलिये मुझे आज भी वह घटना कल ही की बात हो प्रतीत होती है, मेरा रोम रोम उस प्रतिशोध की अग्नि में सुलग उठता है। जिस प्रकार तुमने मेरे पिता की हत्या की, मेरी हत्या की, मेरे सम्पूर्ण परिवार का संहार किया, मेरी मृत्यु के पश्चात भी मेरी आत्मा उस प्रतिशोध की अग्नि में धधक रही थी और विधि का विधान देखो, संयोग देखो आज मुझे वह अवसर मिला है।"

"साफ़ साफ़ कहो, क्या कहना चाहते हो ? मुझे याद नही कब मैंने तुम्हारे परिवार की हत्या की।" बाली असमंजस में था।

"त्रेतायुग में।" माया का मुख क्रोध से तमतमा उठा।

"त्रेतायुग में ? क्या बकवास है यह ?" बाली झुंझला उठा।

"तुम अब भी नही समझे अथर्व ? तुम बाली के ही पुनर्जन्म हो जिसकी मृत्यु मेरे हाथों ही लिखी गयी है, ताकि मैं अपना प्रतिशोध पूर्ण कर सकूँ। दुदुंभी याद है ? जिसकी हत्या करके तुमने उसका शरीर किसी पशु के शरीर की भाँति पर्वतों में फेंक दिया था ? उसका बेटा याद है जो अपने पिता की मृत्यु का प्रतिशोध लेने आया था, जिसने तुम्हें कड़ी टक्कर दी थी। तुम्हारी प्रतिद्वंदी की आधी शक्ति हर लेने की क्षमता के पश्चात भी वह तुमसे कई दिनों तक उस भूलभुलैया वाली पर्वत शृंखलाओं के मध्य स्थित अंधियारी गुफा में बिना थके निरंतर युद्ध करता रहा। किन्तु आधी शक्तियों के बल पर वह कब तक एक वरदान प्राप्त महाशक्ति से लड़ सकता था ? तुमने उसे निर्दयता से मार दिया, और तुम्हारी क्रूरता यही समाप्त नही हुई। तुमने उसके सम्पूर्ण परिवार को भी मार कर अपनी क्रोध की अग्नि शांत की। मैं वही तो हूँ। मैं वही दानव हूँ 'माया' जिसका तुमने वध किया था। विधि के दण्ड देने के भी विचित्र तरीके होते है, मैं अपने जन्म के साथ ही अपनी स्मृतियाँ लाया था, मुझे भास था कि मेरा प्रतिद्वंदी, मेरा शत्रु भी जन्म ले चुका है। एक अजीब सा संबंध है हमारे बीच, बाली। मुझे तुम्हारी उपस्थिति का हर क्षण एहसास होता था। मुझे तुम्हारी ऊर्जा का आभास होता था। जब भी तुम अपनी अद्भुत क्षमताओं का प्रयोग करते होगे तभी मुझे तुम्हारी उपस्थिति का आभास होता था। मुझे यह पता था कि यदि मेरा जन्म हुआ है तो मेरे प्रतिशोध का भी जन्म अवश्य हुआ है और आज यह बात सत्य प्रमाणित हो गयी। आज हम दोनों युगों युगों के पश्चात पुनः एक दूसरे के समक्ष खड़े है।" माया ने कहा और साँस लेने के लिये ठहरा।

“चलो एक क्षण को मान भी लूं कि मैं बाली और तुम माया के पुनर्जन्म हो तो क्या यह सारा प्रपंच केवल प्रतिशोध के लिये किया है ?” बाली ने प्रश्न किया।

“अरे नही! नही ! प्रतिशोध मेरे जीवन के उद्देश्य में से एक अवश्य है, किन्तु प्रतिशोध ही मेरा प्राथमिक उद्देश्य है ऐसा नही है। यह ऊर्जा लिंग, तांडव ऊर्जा, शिवलिंग की खोज, दानव जातियों को संगठित करना, इस संसार को बदलना यह मेरा प्रमुख उद्देश्य है। प्रतिशोध तो द्वितीयक उद्देश्य है। मैंने अपने टेलीकास्ट में जो कहा मैं उसके प्रति पूर्णतया समर्पित हूँ और आज सुबह होने के पहले ही मैं सम्पूर्ण विश्व पर एक नया संविधान एक नयी नागरिक संहिता लागू कर दूंगा। बस कुछ देर और, एक और उदाहरण की आवश्यकता है इस दुनिया को, उन्हें अभी समझना शेष है की एक महाशक्ति का उदय हो चुका है, और तुम्हें उसके निर्देशानुसार ही चलना है। बस एक देश के नष्ट होते ही सभी मान जायेंगे।” माया मुस्कुराया। उसके चेहरे पर गंभीरता और हास्य का विचित्र सा भाव था।

“प्रतिशोध और तुम्हारे दिवास्वप्न। मुझे अफ़सोस है कि मैं तुम्हारे दोनों उद्देश्यों की पूर्ति में बाधा बनकर आया हूँ।” कहने के पश्चात ही बाली माया की ओर दौड़ पड़ा। अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा और शक्ति को समेट कर उसने माया के चेहरे की ओर पूर्ण गति से अपना घूंसा चला दिया। किन्तु आश्चर्यजनक रूप से माया ने उसके भीषण घूंसे को अपनी एक हथेली पर ही थाम लिया।

बाली का वह घूंसा जो लिफ्ट की शक्तिशाली स्टील के दरवाजों को कागज की भांति फाड़ सकने में सक्षम था। वह घूंसा इतनी सहजता से माया ने अपनी हथेली पर झेल लिया। बाली आश्चर्य से एक क्षण के लिये मुंह बाये खड़ा रहा। माया मुस्कुराया, और उसने उसी घूंसे को पकड़ कर बाली को अपनी ओर खिंचा, बाली आगे खिंचते हुए आया ही था कि माया ने एक बेहद शक्तिशाली घूंसा उसके पेट में जड़ दिया। उस घूंसे का प्रहार इतना शक्तिशाली था कि बाली हवा में कई फीट तक उछलते हुए फर्श पर ना केवल जा गिरा, बल्कि फर्श पर काफी दूर तक घिसटते हुए सीधे कमरे की दीवार से जा टकराया, कमरे की दीवार और फर्श दोनों चटख गये थे। बाली ने अपने जीवन में प्रथम बार इतना भीषण प्रहार झेला था। उसका मस्तिष्क चकरा सा गया।

“मैं प्रतिशोध के लिये जन्मा हूँ बाली। प्रकृति ने जैसे हर जीव को अपने प्रतिद्वंदी शत्रु से निपटने के लिये कोई ना कोई क्षमता प्रदान की है। उसी प्रकार प्रकृति ने तुझे मेरा प्रतिद्वंदी निश्चित किया है, तो मुझे तुम्हारी क्षमता की प्रतिरोधक शक्ति जन्म से ही मिली है। प्रतिद्वंदी की आधी ऊर्जा सोखने में तुम्हारा शरीर सक्षम है ना ? किन्तु मेरा शरीर तुम्हारी इस क्षमता का उलट है। तुम उसकी ऊर्जा नही सोख सकते। अब युद्ध बराबरी का होगा। किन्तु तुम्हारी स्थिति देखकर लगता नही कि यह युद्ध बराबरी का रहेगा। उठो, अभी तुम्हें बहुत कुछ देखना बाकी है।” माया मुस्कुराया, वह अपनी सफ़ेद शर्ट को बांहों के बटन खोलकर शर्ट को अपनी कुहनियों के ऊपर मोड़ता हुआ, मुट्ठियाँ भींचे हुए बाली के समीप आ पहुंचा।

***

।। त्रेतायुग ।।

अंतिम निर्णय

कपिल ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति को एकजुट करते हुए, दण्ड को पूर्ण गति से घुमाया और दौड़ते अश्व से ही छलांग लगा कर दानव सेना के मध्य कूद पड़ा। उसके दण्ड के भूमि से टकराते ही भीषण कंपन हुआ और दानव सेना की वह टुकड़ी बिखर गयी। उस भीषण कंपन से बचने हेतु सुबाहु भी अपनी पूर्ण शक्ति का प्रयोग करते हुए अपने स्थान से उछल गया था, जिस कारण वह कंपन लहरों की सीमा में आने से बच गया। व्यूह बनने के पहले ही बिखर चुका था। कपिल अपनी सम्पूर्ण योग्यता का प्रयोग करते हुए दानव सेना से युद्ध कर रहा था। उसका दण्ड विद्युत की भाँति लहरा रहा था। दानव सेना कपिल पर अस्त्रों शस्त्रों के अलावा विशालकाय शिलाखंडो एवं वृक्षों का भी प्रहार कर रही थी। कपिल इन भीषण प्रहारों को दण्ड द्वारा घूर्णन से निर्मित सुरक्षा वलय आवरण के कारण ना केवल बचा लेता बल्कि वह दानवों के प्रहारों को उन्ही पर उलट देता। विशालकाय वृक्ष एवं शिलाखंड अनेक भागो में विभक्त होकर दानव सेना से जा टकराते जिसके फलस्वरुप अनेक दानव मृत्यु को प्राप्त हुए।

दानव सेना का भीषण संहार हो रहा था। कपिल को युद्ध करते देख सुबाहु दुगुने उत्साह से प्रहार करने लगा। वह अब सम्पूर्ण ऊर्जा के प्रयोग से भूमिकंपक का निर्माण करके अपने आप को अशक्त नही करना चाहता था। उसे प्रहार से बचाने हेतु महर्षि संदीप द्वारा प्रदत्त सुरक्षा कवच ही पर्याप्त था। सुबाहु स्वयं एक शक्तिशाली और निपुण योद्धा था जो उस पोशाक के बिना भी अकेले अनेक दानवों पर परास्त करने की क्षमता रखता था। अब तो उसके पास चक्रदण्डसिद्धि और सुरक्षा कवच भी था। सुबाहु एक जीवित ब्रम्हास्त्र के समान ही था। वह जिस अद्भुत गति से प्रहार करता उसे देखकर भद्रक के माथे पर चिंता की रेखायें उभरने लगी थी। उसकी गति सामान्य दृष्टि से दिखायी ही नहीं पड़ती रही थी, और वह प्रहार करके दूसरी ओर निकल भी जाता।

कपिल भी अपनी यथाशक्ति युद्ध में भरपूर सहयोग दे रहा था। उन्हें आभास भी नही था कि व्यूह पुनः बन रहा था। वे आंतरिक सेना की टुकड़ियों से युद्ध करने में व्यस्त थे और बाहरी टुकड़ियां धीरे धीरे अभेद्य घेरा निर्मित कर रही थी। दानव सैन्य अपने आक्रमण की शैली निरंतर

बदल रही थी, कोई टुकड़ी भारी शिलाओं एवं वृक्षों को उखाड़ फेंकती तो कोई टुकड़ी बाणों की वर्षा कर देती, कोई टुकड़ी खड्ग एवं तलवारों से आमने सामने प्रहार कर देती। सुबाहु और कपिल निरंतर होते इस शैली परिवर्तन से उलझ से गये थे। अभी वे युद्ध कर ही रहे थे कि पुन: असंख्य बाणों की वर्षा आरंभ हो गयी।

बाण सुबाहु के कवच को भेद नही सकते थे, किन्तु यह कपिल के शरीर को अवश्य भेद सकते थे। कपिल ने बाणों को आता देखते ही दण्ड को पूर्ण गति से गुमाते हुए दण्ड वलय का निर्माण किया जिस कारण समस्त बाण उस घूमते दण्ड से टकराकर छितरा गये। सुबाहु ने भी अब शैली को बदलते हुए सम्पूर्ण ऊर्जा से चक्रदण्ड प्रयोग करने के बजाय कम अवधि के चक्र उत्पन्न करने लगा। वह अपनी सम्पूर्ण गति से दानवों पर प्रहार करता और उनके प्रहारों को बचा लेता, और इसी के साथ चक्र दण्ड घुमा कर भूमि पर पटक देता। ऐसे छोटे छोटे कंपनो से उसके समीप दानव सेना तितर बितर हो जाती थी।

कपिल ने भी यही नीति अपनायी अब वह सम्पूर्ण शक्ति के बजाय ऊर्जा का आंशिक प्रयोग करके दण्ड से वलय बनाता और प्रहार रोकने के साथ ही प्रहार भी कर देता। भद्रक अपने स्थान से केवल उन्हें युद्ध करते हुए देख रहा था। उसकी एक चौथाई सेना कुछ ही समय में कपिल और सुबाहु ने समाप्त कर दी थी। वह इनकी वीरता से मंत्रमुग्ध था। उसका मन कर रहा था कि वह स्वयं इस व्यूह के भीतर प्रवेश करके सुबाहु से युद्ध करें, किन्तु ऐसा करने से उसके सैनिक व्यूह बना नही पाते। सुबाहु और कपिल लाख कुशल योद्धा ही सही, किन्तु व्यूह के भीतर चरणबद्ध और निरंतर होते प्रहारों के कारण उनकी गति धीमी होती जा रही थी। भद्रक ने स्वयं को रोक लिया।

इस बार दानवों की एक टुकड़ी ने शिलाओं एवं वृक्षों से प्रहार किया, इन प्रहारों से बचने के लिये कपिल ने जैसे ही चक्र दण्ड से वलय का निर्माण किया उसी क्षण दूसरी टुकड़ी ने बाणों की वर्षा आरंभ कर दी। सुबाहु इस दोहरी नीति को भांप चुका था, और आश्चर्यजनक गति से वह बाणों की वर्षा के मध्य कपिल की ढाल बनकर खड़ा हो गया। उसे चक्र घुमाने तक का अवसर नहीं मिला था। सैकड़ों बाणों को उसने अपने शरीर को ढाल बना कर रोक लिया इसके पश्चात भी कपिल की पीठ में दो बाण जा लगे।

एक बाण पीठ से होते हुए छाती के निचले भाग को चीर कर आर पार हो गया था। कपिल का ध्यान इस भीषण पीड़ा के कारण भंग हुआ और उसका वलय मध्य में ही रुक गया। जिस कारण भीमकाय शिलाओं एवं वृक्षों का सीधा प्रहार अब उस पर ही हो रहा था। एक विशालकाय शिला को सुबाहु ने अपने दण्ड से कई भागो में विभक्त कर दिया और उसी क्षण पुनः बाणों की वर्षा आरंभ हो गयी। कपिल घुटनों पर बैठ गया था। उसे भीषण पीड़ा हो रही थी, उसने दो क्षणों के लिये अपने नेत्र बंद किये, ध्यान लगाया और पुनः उठ खड़ा हो गया। वह चाहता तो बाणों को अपने शरीर से खींच निकालता किन्तु ऐसा करने से रक्त बहने लगता जिस कारण वह अशक्त हो जाता।

उसने अपने चारों ओर बनता चक्रव्यूह देखा, वह समझ चुका था कि यह व्यूह अत्यंत घातक सिद्ध होने वाला है। वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति एकत्रित करके निरंतर बचाव और प्रहार करते जा रहा था। सुबाहु अब भूमिकंपक का प्रयोग करने में असमर्थ था। कपिल चोटिल था और वह स्वयं को उस कंपन से बचाने की अवस्था में नही था। सुबाहु पूर्णतया अपने कवच और युद्ध कला के प्रयोग से ही युद्ध कर रहा था। उसने दण्ड को चक्र की भाँति ही घुमाया, हल्के दबाव से दण्ड के दोनों छोरो का धारदार भाग बाहर उभर आया। सुबाहु ने सम्पूर्ण गति का प्रयोग करते हुए दण्डरुपी चक्र को दानव टुकड़ी की ओर लहरा दिया, चक्र हवा को काटते हुए टुकड़ी के मध्य से होते हुए पुनः सुबाहु के हाथों में आ चुका था।

एक सम्पूर्ण टुकड़ी उस चक्र से अनेक भागों में कट फट चुकी थी। सुबाहु अब यही कर रहा था, वह दण्ड को चक्र की भाँति ही घुमा कर प्रयोग में लाने लगा, देखते ही देखते उसने अनेकों दानवों को काट डाला। सम्पूर्ण भूमि रक्त और मांस के टुकड़ों से रक्तिम हो गयी थी। सुबाहु पूर्णतया शत्रु के रक्त में नहाया हुआ था। उसके रूप में मानो साक्षात रूद्र तांडव कर रहे थे। वह जिस ओर अपने दण्ड को घुमाते हुए निकल जाता वह भाग दानवों के शवों एवं कटे फटे अंगो से पट जाता था। किन्तु निरंतर दण्ड को चक्र की भाँति घुमाने से उसकी अधिकतर ऊर्जा क्षीण होते जा रही थी। वह समझ चुका था कि यदि इसी प्रकार वह प्रहार पर प्रहार करते रहा तब भी वह चक्रव्यूह की मात्र एक ही पंक्ति को भेद पायेगा और ऊर्जाहीन हो जायेगा।

अपने कवच के कारण वह अवश्य अभेद्य था किन्तु निरंतर झेलते प्रहारों का दबाव अब उसके शरीर पर स्पष्ट दिखने लगा था। वह बचाव

भी करता और बीच बीच में कपिल की ओर बढ़ती टुकड़ी पर चक्र से प्रहार भी कर देता। कपिल भी यथाशक्ति अपने दण्ड से अनेकों दानवों से युद्ध कर रहा था। बाणों की वर्षा भी निरंतर होने लगी थी। कपिल स्वयं को बचते बचाते भी अपने शरीर पर दो और बाणों के घाव ले बैठा। उसके शरीर में इस समय चार बाण धंसे हुए थे जिनमे से दो उसके शरीर के पार हो चुके थे। सुबाहु कातर भाव से कपिल को मृत्यु की ओर बढ़ते देख रहा था। दानव टुकड़ी अब उसे घेर चुकी थी। वह अपने सम्पूर्ण प्रयासों के पश्चात भी कपिल तक पहुँचने में अक्षम था। उसने अपने प्रहार रोक लिये। वह एकदम स्तब्ध खड़ा हो गया और अपने नेत्र बंद कर लिये। उसे ऊर्जा पुन: एकत्रित करनी थी, वह थक चुका था। दानवों के निरंतर प्रहार अब भी हो रहे थे, कवच के कारण प्रहार उसके शरीर पर प्रभावहीन अवश्य थे, किन्तु ये प्रहार उसे ध्यान लगाने में अड़चन पैदा कर रहे थे। चक्रव्यूह अब कस चुका था। दानव सेना की चारो पंक्तियां वलयाकार होती हुई संकुचित होती जा रही थी।

सेना का घेराव अब इतना समीप आ चुका था कि हवा तक का प्रवेश उस व्यूह में कठिन हो गया था। सुबाहु ने अंतिम प्रयास स्वरूप पूर्ण गति से दण्ड को घुमाया और कपिल की दिशा में दौड़ा। दानव उसे घेरने का प्रयास करते किन्तु उसके चक्र के समीप आते ही परलोक सिधार जाते। रक्त के फौव्वारे उडाता हुआ सुबाहु अंतत: कपिल के समक्ष आ खड़ा हुआ। वह हांफ रहा था उसकी ऊर्जा क्षीण हो रही थी।

“चक्रव्यूह शक्तिशाली है सुबाहु। हमें महाचक्र का निर्माण करना होगा, सम्मिलित भूमिकंपक का प्रयोग करना होगा।” कपिल ने कहा, उसके मुख पर वेदना स्पष्ट दिखायी दे रही थी। उसका सम्पूर्ण शरीर रक्त में नहाया हुआ था।

“किन्तु उसमे भयंकर ऊर्जा प्रयोग होगी और उस कंपन से स्वयं आप भी नही बच पाओगे। मैं ऐसा नही होने दे सकता। हम युद्ध करेंगे। मैं इस सेना से युद्ध कर सकता हूँ।” सुबाहु ने कहा।

“हमारे पास विचार करने का समय नही है, यह जान लो कि भद्रक के रूप में एक बड़ी शक्ति है, जिसे यदि हमने समाप्त कर दिया तो वर्षो तक पुन: कोई दानव एवं राक्षस शक्ति मनुष्यों के विरूद्ध आने का साहस नही जुटा पायेगी। मेरे शरीर में चार बाण धंस चुके है, मेरी कई अस्थियाँ टूट चुकी है। छाती पर निरंतर दबाव बढ़ते जा रहा है। मैं वैसे भी कुछ क्षणों से अधिक जीवित नही रहूँगा। इसलिये बुद्धिमत्ता यही है कि हम सम्मिलित

भूमिकंपक का प्रयोग करे। अभी मुझे इतनी ऊर्जा है कि मैं तुम्हारा साथ दे सकूँ, किन्तु निरंतर और विभिन्न शैली से होते इन प्रहारों को इस प्रकार झेलते रहे तो मैं इस योग्य ही नही रहूँगा।" कपिल ने कहा। यदि वह सुबाहु के त्रिपुंड रूपी मुखावरण के पार उसका मुख देख पाता तो अवश्य उसके अश्रु देख लेता। सुबाहु असंख्य दानव सैन्य एवं कपिल की अवस्था देखकर असमंजस में था। उसे निर्णय लेना था और शीघ्र ही लेना था।

दानवों ने पुन: बाणों की वर्षा आरंभ कर दी। सुबाहु ने कपिल को अपने दण्ड से निर्मित वलय के मध्य ले लिया। जिससे एक घूमते सुरक्षा आवरण का निर्माण हो गया। बाण उससे टकराकर छितराकर पुन: दानव सेना को ग्रास बना रहे थे। बाणों के रुकते ही सुबाहु ने दण्ड चक्र को तीव्रता से घुमा दिया और इसी के साथ बीस से भी अधिक दानव सैनिको के शरीर उस चक्र की परिधि में आकर कट गये। कपिल निर्णय ले चुका था। उसने दण्ड को घुमाना आरंभ कर दिया था, सुबाहु हतप्रभ सा उसे देख रहा था, ना चाहते हुए भी उसका हाथ दण्ड को कपिल की लय में ही घुमाने लगा, दोनों के दण्ड अब एक ही गति से और एक ही लय में भयंकर रूप से घुमने लगे थे। उसमे से अब विद्युत् लहरियां सी वातावरण में फैलने लगी थी।

दोनों के समीप ही धूल का एक चक्रवात सा उत्पन्न हो गया था। दानव सेना का व्यूह उन दोनों को केन्द्रित करते हुए और संकरा हो गया था। कपिल ने सुबाहु को संकेत किया और दोनों सम्पूर्ण शक्ति समेटकर एक साथ भूमि से उछले। उनका चक्र अब अपनी सम्पूर्ण शक्ति से घूम रहा था और विद्युत् तरंगे उत्पन्न कर रहा था। दोनों ही भीषण गति से उछले थे और उस से भी भीषण गति से भूमि से अपने चक्र दण्ड सहित आ टकराये। उस टकराव से एक अति भयंकर ऊर्जा लहर का निर्माण हुआ। भूमि अनेक वर्गमील तक भीषण भूकंप से थरथरा उठी। एक भयंकर कर्णभेदी विस्फोट हुआ जो पचास मील दूर तक स्पष्ट सुनाई दिया होगा। किसी आणविक विस्फोट की ही भाँति भयंकर लहरें उत्पन्न हुई। ये कंपन लहरें इतनी भयानक थी कि जहां भी गयी सम्पूर्ण जीवन को ही समाप्त करती चली गयी। दानव सेना के शरीर के भीतर ही सम्पूर्ण अस्थियाँ सैकड़ो भागों में टूटकर बिखर गयी। भद्रक अपने अश्व सहित भीषण गति से उड़ते हुए भूमि पर आ गिरा था। उस कंपन के कारण क्षण भर में ही उसकी सम्पूर्ण अस्थियाँ असंख्य भागों में विभक्त हो चुकी थी, भद्रक कुछ समझ पाने से पूर्व ही अपने प्राण त्याग चुका था। विस्फोट की ध्वनि अब

तक निरंतर सुनाई दे रही थी। धूल का एक भयंकर चक्रवात उत्पन्न हुआ था। मानो कोई विशालकाय उल्का भूमि के उस हिस्से पर अपने सम्पूर्ण गति से आ गिरी हो।

उस सम्पूर्ण क्षेत्र में एक विशालकाय तालाब जितना बड़ा गड्ढा हो चुका था। सम्पूर्ण क्षेत्र में वृक्ष और वन तक अपनी जड़ों से उखड़े पड़े थे। सम्पूर्ण भूभाग जीवन रहित हो गया था। भूमि अब तक थरथरा रही थी। धूल और धुएं को छटने में ही समय लग गया, वातावरण जब कुछ देखने योग्य हुआ तो उस सम्पूर्ण क्षेत्र में केवल शवों के अम्बार के अलावा और कुछ भी दिखायी नही दे रहा था। एक सम्पूर्ण सेना के शवों का अंबार उस भूमि पर यत्रतत्र बिखरा हुआ था। भूमि का कोई भी भाग ऐसा शेष नही था जहाँ कोई शव ना पड़ा हो। सम्पूर्ण दानव सेना समाप्त हो चुकी थी। वातावरण में अब भी विस्फोट के बाद की सीटियाँ सी बज रही थी। गड्ढे के मध्य सुबाहु अपने दण्ड के साथ घुटनों के बल बैठा हुआ था।

उसका सम्पूर्ण शरीर, सम्पूर्ण अस्तित्व थरथरा रहा था। वह हजारों दानवों के शवों के मध्य अकेला जीवित व्यक्ति था। महर्षि संदीप के दिये कवच के कारण वह जीवित अवश्य था किन्तु उसका सम्पूर्ण शरीर अब तक कांप रहा था। वह अपने पैरों पर खड़े होने योग्य ऊर्जा तक प्रयोग कर चुका था। उसके समक्ष ही कपिल का शव पड़ा था। कपिल के मुख पर एक विजयी स्मितहास्य था। सुबाहु वही गिर पड़ा। कुछ समय पश्चात वह उठा, उस सम्पूर्ण भूभाग में वायु प्रवाह तक मानों रुक गया था।

“आप भी आज चले गये। मैं आपको वचन देता हूँ, आपने जिस उद्देश्य के लिये रक्षा दल का निर्माण किया था, आपकी अनुपस्थिति में आपके पदचिन्हों पर चलते हुए मैं उस उद्देश्य की पूर्ति के लिये आजीवन कर्तव्यबद्ध रहूँगा। महर्षि संदीप का आशीर्वाद, आपकी शिक्षा और ज्ञान, मामा भार्गव के विश्वास, और अपने माता पिता के आशीर्वाद के साथ मैं इस कर्तव्य का आजीवन पालन करूंगा और जब भी भद्रक और बलभद्र जैसा कोई संकट पुनः आएगा हम उसका नाश करके मानवता की रक्षा करेंगे।” सुबाहु ने भर्राए हुए कंठ से अपने आप से कहा।

वर्षा आरंभ हो गयी थी, भीषण गड़गडाहट हुई, और विद्युत् के प्रकाश से सम्पूर्ण वातावरण प्रकाशमान हो गया। सुबाहु ने मुखावरण निकाल दिया, वर्षा की बूंदे उसके मुख को भिगो रही थी, उसके अश्रु वर्षा की बूंदों में ही विलुप्त हो गये। सुबाहु ने कपिल का दण्ड अपने दण्ड के

साथ ही पीठ पर लटका लिया और कपिल के निष्प्राण देह को अपनी शक्तिशाली भुजाओं में उठा कर एक निश्चित दिशा की ओर बढ़ गया। भार्गव, कपिल, और महर्षि संदीप द्वारा प्रदत्त कर्तव्य निभाने के लिये अभी उसे अनेक युद्ध लड़ने थे। यह तो अभी उसका आरंभ मात्र था, बलभद्र और भद्रक की मृत्यु के पश्चात अब निश्चित रुप से कुछ वर्षो तक शांति रहनी थी।

त्रेतायुग अध्याय समाप्त।

वर्तमान

अंतिम निर्णय

बाली माया के इस शक्तिशाली प्रहार से हतप्रभ था। उसे माया से इस प्रकार के अतिमानवीय प्रहार की कतई अपेक्षा नहीं थी, यदि वह कवच नही होता तो अवश्य ही बाली की पसलियाँ टूट चुकी होती। उसका दण्ड उसके हाथों से कबका छूट चुका था।

“तुम यहाँ अपनी जान देने चले आये, तुम्हें क्या पड़ी है इस दुनिया की ? यह कोई शिवलिंग नही है जिसकी श्रद्धावश तुम यहाँ खिंचे चले आये। यह तो उस असीमित ऊर्जा का ठोस स्वरुप है। इस ऊर्जा का पृथ्वी पर आना व्यर्थ नही है। इसकी रक्षा की आड में इसे सम्पूर्ण मानवता से छिपा कर रखने से तुम इस भयंकर ऊर्जा का अपमान कर रहे हो। यह ऊर्जा सम्पूर्ण युग को परिवर्तित कर सकती है, अरे मैं तो चाहता हूँ कि पुन: अच्छाई स्थापित हो। तुम रक्षा दल वालों को यदि इससे आपत्ति है तो इसका अर्थ यही हुआ कि असली खलनायक तुम ही हो, हम दानव नही।” कहते हुए माया ने एक जबर्दस्त ठोकर बाली के सीने में दे मारी, उस भीषण शक्ति से युक्त ठोकर के पड़ते ही वह मजबूत दीवार को तोड़ते हुए कई इंच तक अंदर जा धंसा।

“मैं तुम्हारा परिवर्तन का प्रवचन ही सुनते आ रहा हूँ पिछले कुछ घंटो से और मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूँ, कि तुम अपने इस दिवास्वप्न से बाहर आ जाओ और सारी दुनिया के बदलाव का ठेका लेने की आड़ में अपनी विकृति बंद करो।” कहते हुए बाली अपने स्थान से उछला किन्तु माया उसे कहीं अधिक तेज निकला वह बाली के समीप आने से पहले ही हवा में ही तीव्र गति से घुमा और एक जबर्दस्त ठोकर के प्रहार से बाली को किसी गेंद की ही भाँति कमरे के दूसरी दीवार पर फेंक मारा। बाली अब तक केवल उसकी शक्ति से ही हतप्रभ था किन्तु अब वह उसकी फुर्ती से भी आश्चर्यचकित था। फुर्ती में माया बाली के समान ही था, वह शक्ति और फुर्ती में बाली का विपरीत रूप प्रतीत हो रहा था और अभी वह अपने मानव स्वरूप में ही था, अपने असल स्वरूप में वह अत्याधिक शक्तिशाली होता।

“तुम पर पड़ते हर प्रहार के साथ मानो मेरे हृदय में जलती आग पर पानी की बौछार सी हो रही है। यह अग्नि युगों से मेरे अंदर मुझे जला रही

है। आज मेरी इस जलन से मुझे मुक्ति मिल जायेगी। आज मेरी सदियों की बेचैनी शांत हो जायेगी। मैं चाहता हूँ नये कल को तुम अपनी आँखों से देखो, लेकिन तुम्हें अपने हाथो से मारने के मोह से मैं स्वयं को बचा नहीं पा रहा हूँ।” माया धीमी चाल से फर्श पर पड़े बाली की बढ़ा।

“यह पुनर्जन्म वगैरह वाली कुंठा अपने मन से निकाल दो माया। तुम दानव अवश्य हो लेकिन मैं बाली का पुनर्जन्म नही हूँ। अपनी कहानियों को अपने पास ही रखो। रही बात मुझे मारने की, तो मैं भी यही हूँ और तुम भी। बातें बनाने के बजाय युद्ध को ही निर्णय करने दो।” कहने के साथ ही बाली फुर्ती से उठ खड़ा हुआ। उसके खड़े होते ही माया एकदम समीप पहुँच चुका था।

माया का प्रचण्ड घूंसा लहराया, बाली ने अपना कंधा विपरीत दिशा में हिलाकर घूंसे को चेहरे पर पड़ने से रोका और दूसरे हाथ से माया के चेहरे पर प्रहार कर दिया। माया उस प्रहार से बगल वाली मेज तोड़ते हुए फर्श पर जा गिरा। उसके गिरते बाली अपने स्थान से उछला, वह माया की छाती पर जा खड़ा होता इससे पहले ही माया ने उसके पैरों को हवा में ही थाम लिया और ना केवल थाम लिया बल्कि उसे किसी कपड़े के गट्ठर की भाँति ही पूरी शक्ति से फर्श पर ला पटका। एक भीषण ध्वनि के साथ ही उस जगह का फर्श तक उखड़ गया। यदि कवच ना होता तो बाली संभवतः मृत हो चुका होता। कवच होने के पश्चात भी वह उस भीषण प्रहार को महसूस कर रहा था। उसका सर एक क्षण को चकराया। माया ने उसे पुनः पैर पकड़कर खींचा ही था कि बाली ने वहाँ रखी मेज को पकड़ लिया, माया की अभूतपूर्व शक्ति के कारण वह मेज सहित उठ गया किन्तु फर्श पर पटके जाने से पूर्व ही बाली ने उस भारी भरकम मेज को माया के सर पर पटक दिया। मेज के प्रहार से माया हड़बडा कर गिरा और बाली को संभलने का अवसर मिल गया। उनकी इस उठापटक से एक व्यक्ति विचलित हो रहा था। अश्वत्थामा इस व्यवधान से विचलित होता प्रतीत हो रहा था। वह ऊर्जा लिंग से ऊर्जा की असीमित मात्रा को खींचने के लिये ध्यान केन्द्रित नही कर पा रहा था।

माया अपने सिर को सहलाते हुए उठा। उठते ही उसने बिना एक क्षण गंवाये बाली की ओर दौड़ लगा दी। बाली कुछ समझ पाता उससे फहले ही माया की ठोकर उसके पेट में जा लगी, माया ने उसे उठाकर पुनः फर्श पर पटकने का प्रयास किया ही था कि बाली ने दोनों हाथों को बांधकर माया की पीठ पर पूरी शक्ति से प्रहार किया। माया फर्श पर औंधा जा

गिरा उसके गिरते ही बाली पूरी शक्ति से उछलते हुए उसकी पीठ पर जा धमका। माया अभी संभल भी ना पाया था कि बाली ने उसके हाथ को जकड़ लिया। बाली उसके हाथ को उमेठने की फिराक में ही था किन्तु माया फुर्ती से पलटा और अपना हाथ छुड़ा लिया। दोनों अब आमने सामने घुटनों के बल बैठे हुए थे , दोनों हांफ रहे थे। माया के चेहरे पर मुस्कान थी, बाली के नकाब के भीतर के भाव झलक नही रहे थे।

“मजा आ रहा है। बहुत दिनों बाद कसरत हो रही है बाली।” माया हँसा। बाली और माया दोनों फिर से टकराये। उनके टकराव से भयंकर ध्वनि सी उत्पन हुई। माया ने बाली को उठा कर पटका ही था लेकिन वह गिरते गिरते माया को भी लेकर गिरा।

अश्वत्थामा अपनी आँखे खोल चुका था। वह अपने समक्ष युद्ध करते माया और बाली को बेचैनी से देख रहा था। ऊर्जा लिंग से निकलती तांडव ऊर्जा अनियंत्रित सी होने लगी थी।

“माया ! तांडव ऊर्जा अनियंत्रित हो रही है, मैं ध्यान नही लगा पा रहा हूँ। मुझे उस ऊर्जा के प्रवाह को मोड़ना ही होगा।” अश्वत्थामा चीख उठा।

“वैसे भी एक सम्पूर्ण देश की ओर इस ऊर्जा का प्रवाह मोड़ने ही वाले थे। तुम वही करो, वैसे भी तुम मात्र इस ऊर्जा के प्रवाह को मोड़ सकते हो, समाहित नहीं कर सकते। तुम एक हथियार हो अश्वत्थामा और यह ऊर्जा उसमे भरा बारूद। तुम्हारा रुख जहां होगा वही यह बारूद फटेगा। नजदीकी किसी भी देश पर इस ऊर्जा प्रवाह को मोड़ो, ध्यान लगाओ।” कहते हुए माया ने अश्वत्थामा की ओर बढ़ते बाली को बीच में ही जकड़ लिया और दोनों गुत्थम गुत्था हो गये। बाली समझ चुका था कि कुछ ही क्षणों में एक सम्पूर्ण देश और करोड़ों की जनसँख्या का नाश हो जायेगा। वह आगे बढ़ना चाहता था लेकिन माया शक्तिशाली था। वह उसके चंगुल से छूट नही पा रहा था।

माया ने उसे फर्श पर पटक दिया और उसकी छाती पर चढ़ बैठा। उसके दोनों हाथ बाली की छाती को चीरने के लिये उतारु हो रहे थे, लेकिन उस कवच को भेद पाने में वह अक्षम था। उसने पूरी शक्ति के साथ एक घूंसे का प्रहार बाली के सर पर किया। बाली ने उसका हाथ जकड़ा ही था कि माया ने दूसरे हाथ से प्रहार किया। वह बाली का त्रिपुंड मास्क उतारना चाहता था। उसे निकाले बगैर बाली को मारना असंभव सा था।

“अश्वत्थामा ! तुम एक पाप का दण्ड युगों से भुगत रहे हो, तुम्हें लगता है तुम संसार को परिवर्तित करके कलियुग का अंत कर दोगे और मुक्ति पा लोगे ?” बाली ने हाँफते हुए कहा।

“चुप रहो।” माया का शरीर अब बदलने लगा था। उसपर उसका दानव स्वरूप स्पष्ट रूप से उभर रहा था। बाली के सर पर उसने पुन: एक भीषण प्रहार किया किन्तु बाली ने प्रतिकार नही किया।

“तुम यह भूल रहे हो अश्वत्थामा ! तुम कलियुग के लिये दण्ड नही भोग रहे हो, तुम एक भयंकर और अक्षम्य पाप का दण्ड भुगत रहे हो। आज तुम उस अक्षम्य अपराध से भी कई गुना भयंकर अपराध करने जा रहे हो। इससे तुम्हें कतई मुक्ति प्राप्त नही होगी। कतई नहीं। अपने आप को रोको।” बाली चीखा। माया ने उसकी छाती पर एक के पश्चात एक कई अमानवीय प्रहार किये। माया विक्षिप्त सा हो चुका था, उसे त्रेता युग का वह बाली दिखायी दे रहा था जो उस पर निर्दयता से प्रहार किये जा रहा था, आज स्थिति उलट थी। आज वह बाली के स्थान पर था और बाली उसके स्थान पर।

बाली ने अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा को एकत्रित किया। माया के बढ़ते प्रहार को हाथों पर झेल लिया, लेकिन इस दबाव से वह फर्श तोड़ते हुए भीतर जा धंसा। वह आलीशान अत्याधुनिक कमरा अब किसी खंडहर की भाँति ही दिख रहा था।

बाली अपनी सम्पूर्ण शक्ति को एकत्रित करते हुए चीखा और माया को अपने शरीर से ऊपर उछालने में सफल हुआ। माया कई फीट तक उड़ते हुए अश्वत्थामा के समीप जा गिरा। उसके गिरते ही कमरे के दरवाजे की ओर भारी चहलकदमी की आवाजें सुनाई देने लगी। माया के चेहरे पर एक कुत्सित हंसी दौड़ गयी। दरवाजे पर उसके रिफ़ॉर्मर्स थे। वे सभी बिना कोई क्षण गंवाए कमरे में आ पहुंचे। वे पन्द्रह से अधिक की संख्या में थे।

अश्वत्थामा का शरीर एक दिव्य चमक से दीप्तिमान हो रहा था। उसके शरीर की प्रत्येक नस इस प्रकार जगमगा रही थी मानो उसमे रक्त के बजाय अग्नि प्रवाहित हो रही हो। अश्वत्थामा किसी भी क्षण प्रलय ऊर्जा का रुख मोड़ने वाला था। बाली ने अपने स्थान से कुछ ही दूर पड़े दण्ड की ओर देखा और छलांग लगायी। उसके छलांग लगाते ही माया भी अपने स्थान से उछल पड़ा था। किन्तु बाली इस बार बाजी मार चुका था। माया के सामने आते ही उसका अर्धचक्र बनना आरंभ हो गया था।

माया उस चक्र से टकराकर अपने एजेंट्स के मध्य जा गिरा और यही वह क्षण था जब बाली ने दण्ड को भीषण गति से घुमाते हुए कमरे के फर्श पर दे मारा, विद्युत् की लहरियां सी फेंकता दण्ड पूर्ण ऊर्जा शक्ति को समेटे हुए फर्श से टकराया। बंद कमरे में भूमिकंपक ऊर्जा घातक सिद्ध हुई। उस फ्लोर की सभी दीवारें छितरा सी गयी। अश्वत्थामा जिस यंत्र में बैठा था, वह पारदर्शी यंत्र तक टूट चुका था, अश्वत्थामा भूमि पर आ गिरा। सारे एजेंट्स खिड़कियाँ और कांच तोड़ते हुए सीधे टॉवर के बाहर गिर गये। माया ने टकराव होते ही उस भारी भरकम यंत्र को जकड़ लिया था नहीं तो वह भी उन कंपन तरंगो के कारण शीशों को तोड़ता हुआ टॉवर से बाहर जा गिरता। भूमिकंपक ऊर्जा के कारण वह सम्पूर्ण इमारत किसी सूखे पत्ते की भाँति ही कांप रही थी। बाली ने अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा को इस प्रहार में झोंक दिया था।

"ऊर्जा अनियंत्रित हो गयी है माया। यह ऊर्जा अब इसी स्थान और इस देश को ही नष्ट कर देगी।" अश्वत्थामा भयाक्रांत होकर चीखा। बाली ने तत्क्षण निर्णय लिया और दौड़ते हुए उस ऊर्जा लिंग के समक्ष जा पहुंचा। इमारत के विभिन्न हिस्से गिरने आरंभ हो गये थे। बाली पारदर्शी यंत्र को एक ही प्रहार में तोड़ते हुए सीधे शिवलिंग के समक्ष आकर रुका। शिवलिंग अद्भुत ऊर्जा से दमक रहा था, उसमे से भयंकर ऊर्जालहरें निकल रही थी। बाली ने शिवलिंग को पूर्ण श्रद्धा से नमन किया। उसके मस्तिष्क में वे शब्द गूंज रहे थे जो उसकी शक्तियों के विषय में उसके पिता ने कहे थे।

"तुम्हारे अंदर क्षमता है, तुम जैव ऊर्जा को अपनी ओर आकर्षित करते हो। तुम्हारे शरीर की बनावट विचित्र है, वह हर प्रकार की जैव ऊर्जा को अपनी ओर खींचता है। यही कारण है के तुम्हारा हर प्रतिद्वंदी तुम्हारे समक्ष कमजोर हो जाता है। बचपन में उस सांड़ से लड़ते समय उसकी जैव ऊर्जा का आधा भाग तुम्हारे अंदर समाहित हो जाने के कारण ही वह शांत हो गया था और तुम उसे थाम सके थे। ऐसे अनेकों उदाहरण है जहां तुमने देखा होगा के तुम्हारी गति, फुर्ती, और शक्ति तुम्हारे प्रतिद्वंदी से अधिक होती है। तुम्हारा शरीर प्रतिद्वंदी या किसी भी संकट के समय ऊर्जा प्रवाह को अपनी ओर आकर्षित करने लगता है, जिस कारण लड़ते समय तुम्हारे अंदर अनेक मनुष्यों की जैव ऊर्जा समाहित होने के कारण तुम्हारी क्षमता सामान्य मनुष्य की अपेक्षा कई गुनी बढ़ जाती है।"

"प्रलय ऊर्जा भी रुद्र, महादेव की ही ऊर्जा है। यदि मैं जैव ऊर्जा को

अपने अंदर आकर्षित कर सकता हूँ , तो इस ऊर्जा को भी ग्रहण करने का प्रयास कर सकता हूँ। मैं जानता हूँ मेरा शरीर महादेव की असीमित ऊर्जा को झेल नही सकता। किन्तु मैं फिर भी प्रयास तो कर ही सकता हूँ।" कहते हुए बिना एक भी क्षण गंवाए बाली शिवलिंग से लिपट गया और उस कमरे में प्रचण्ड रुप से फैलती ऊर्जा सीधे बाली के शरीर की ओर प्रवाहित होने लगी। वह उस ऊर्जा को ग्रहण कर रहा था।

"ये असंभव है ! ये इस ऊर्जा को नियंत्रित नही कर सकता।" माया चीखा।

"वह फट जायेगा। उसे ज्ञात है कि उसका शरीर इस प्रचण्ड शक्ति को संभाल नही पायेगा। इसके पश्चात भी वह प्रयास कर रहा है।" अश्वत्थामा आश्चर्य से बाली को देख रहा था। उसका सम्पूर्ण शरीर उस भयंकर ऊर्जा से मानो फट पड़ने को उतारु था। फिर भी वह अपना प्रयास नही छोड़ रहा था।

अश्वत्थामा ने कोई निर्णय ले लिया था। वह उठा और शिवलिंग की ओर बढ़ा।

"अश्वत्थामा ! रुक जाओ। तुम्हें उससे प्रभावित होने की आवश्यकता नही है। वह इस ऊर्जा से खुद ही मारा जायेगा। रुक जाओ मूर्खता मत करो। तुम इस ऊर्जा को ग्रहण करने का इरादा त्याग दो वरना नष्ट हो जाओ...गे।" अंतिम शब्द बोलते बोलते माया अटक गया। अश्वत्थामा उसकी ओर देखकर मुस्कुराया। उसे नष्ट ही तो होना था।

"मैं अमर नही हूँ ! मुझे केवल शापित जीवन जीने का शाप मिला है।" कहते हुए वह शिवलिंग से जा लिपटा। अब वह सम्पूर्ण ऊर्जा अपने अंदर धारण कर रहा था। उसका अमर शरीर इस ऊर्जा के भयंकर दबाव को समेट रहा था। अमरत्व के कारण उसकी मृत्यु संभव नही थी। किन्तु यह भयंकर पीड़ा दायक था, उसके सम्पूर्ण शरीर में मानो लावे का एक महासागर सा हिलोरे मार रहा था। बाली और अश्वत्थामा दोनों के शरीर भयंकर रुप से ऊर्जा के कारण दमक रहे थे। इमारत अब बुरी तरह कांपने लगी थी।

"नहीं ! ऐसा नही हो सकता। हमारी युगों की मेहनत मैं इस तरह बर्बाद नही होने दे सकता कतई नहीं।" कहते हुए माया बाली पर झपट पड़ा। बाली ने स्वयं को उसके प्रहार से बचाया और उसकी गर्दन दोनों हाथों से जकड़ ली। बाली अब भी शिवलिंग से ही सटा हुआ था और दोनों हाथों से माया की गर्दन जकड़े हुये था। माया सम्पूर्ण शक्ति से

छुटने का प्रयत्न कर रहा था लेकिन बाली के अंदर इस समय एक दैवीय ऊर्जा दौड़ रही थी। जिसकी शक्ति के समक्ष माया कुछ भी नही था। वह छटपटाता रहा। बाली अपनी सम्पूर्ण क्षमता से ऊर्जा को ग्रहण करता रहा। उसकी नसें फटने लगी। उसका मंत्र कवच तक फट रहा था। वह किसी भी क्षण एक बम की भाँति फट पड़ने को उतारु था। माया उसकी पकड़ से छूटने के लिये हरसंभव प्रयास कर रहा था किन्तु सब व्यर्थ था। अश्वत्थामा ने एक क्षण के लिये बाली की ओर देखा।

"तुम्हें बलिदान देने की आवश्यकता नही है बच्चे।" कहते हुए अश्वत्थामा मुस्कुराया और इसी के साथ अश्वत्थामा ने एक ही झटके में सम्पूर्ण ऊर्जा को अपने भीतर ही समाहित कर लिया। किन्तु तब तक बाली अपने शरीर की क्षमता से कई गुना अधिक ऊर्जा सोख चुका था। उसका सम्पूर्ण शरीर किसी सुलगते कोयले की भाँति दहक रहा था और इसी क्षण एक भयंकर कर्णभेदी विस्फोट हुआ। उस विस्फोट से वह सम्पूर्ण टॉवर एकदम भरभराकर गिर पड़ा। उस ऊर्जा विस्फोट में बाली का सम्पूर्ण शरीर उसके कवच सहित कणों में विखंडित हो गया। उसके साथ ही माया भी विखंडित हो चुका था। अश्वत्थामा भी उस तांडव ऊर्जा के साथ ही एक भीषण विस्फोट से उपजे प्रकाश के साथ कणों में बदल गया। कोलाबा का वह सम्पूर्ण इलाका एक चुंधिया देने वाले प्रकाश से चमक उठा। उस विस्फोट से आसपास की अनेक इमारतों की नींव तक थरथरा गयी थी। अश्वत्थामा सम्पूर्ण ऊर्जा को ग्रहण करके विखंडित हो चुका था।

***

"विश्वास नही होता कि हम एक भयानक संकट से बाहर आ चुके है। कुछ घंटो पहले एक प्रसारण से आरंभ हुए इस खेल ने हमें यह बता दिया कि अब भी मनुष्यों के साथ और उनके मध्य मनुष्यों के अलावा अन्य प्राचीन जातियां निवास करती है। हमारा सम्पूर्ण समाज हिल चुका है। इस सम्पूर्ण घटना का केंद्र था मुम्बई का कोलाबा क्षेत्र। माया बाहुपति का दानव होना और सम्पूर्ण विश्व की एक अच्छी खासी आबादी को समाप्त करके शांति स्थापित करने के दावे ने सम्पूर्ण विश्व को हिला कर रख दिया था। इससे यह जाहिर हो चुका है कि हमारे समाज में हमारे ही मध्य कुछ ऐसी गुप्त संस्थाए कार्यरत है जो हमें नष्ट करने के स्वप्न देख रही है, तो कुछ हमें बचाने के लिये गुप्त रुप से कार्यरत है।

कोलाबा की इस इमारत की ओर बढ़ने का मिलिट्री और स्पेशल फोर्सेज के असफल प्रयास के मध्य एक विचित्र से त्रिपुंड धारी मास्क पहने व्यक्ति को माया टॉवर में प्रविष्ट होते रिकॉर्ड किया गया था। उसके प्रवेश के पश्चात ही सम्पूर्ण टॉवर से आती गोलाबारी की आवाजें यह स्पष्ट कर रही थी कि भीतर एक भयंकर वॉर जोन बना हुआ है। टॉवर से कुछ विचित्र से बनावट और शरीर वालें जीवों का गिरना भी इस बात को प्रमाणित करता है कि वह जो भी कोई था उसके कारण ही आज हम एक बड़े संकट से बचे हुए है।

हमारा वह रक्षक कौन था और कहां से आया था इसके बारे में कोई जानकारी फिलहाल तो नही है। किन्तु माया टॉवर में हुए भीषण विस्फोट हमारा वह अनजाना रक्षक जीवित है अथवा नही यह तक हमें नही पता। मैं और अधिक जानकारी के लिये घटनास्थल पर निरंतर बना रहूँगा और पल पल की अपडेट्स देता रहूँगा।" पत्रकार ने कवरेज पूर्ण किया। कोलाबा के सम्पूर्ण क्षेत्र में फायर ब्रिगेड़ की अनेकों गाड़ियां अपने कार्यो में लगी हुई थी। सम्पूर्ण क्षेत्र अब एक मिलिट्री छावनी में तब्दील हो चुकी थी। देशी विदेशी अनेकों एजेंसिया इस समय कोलाबा पहुँच चुकी थी।

सीएसटी पर खड़ा गाइड मुख्य सड़क से आते जाते पुलिस, मिलिट्री, दमकल और विभिन्न मीडिया की गाड़ियों को खामोशी से देख रहा था।

"चल आजा ! गाडी में बैठ जा, अपना यहाँ का काम समाप्त हुआ। सच्चाई स्वीकार कर लो। यही हमारी नियति है। चलो बैठो अभी हमें हमारी संस्था को सम्पूर्ण रिपोर्ट देनी है। अथर्व का साथ देने और दल को अँधेरे में रख कर मिशन को अंजाम देने के लिये हम पर कार्यवाही होगी।" अपनी गाडी में बैठा ड्राइवर ठंडे स्वर में बोला। गाइड ने उसकी ओर देखा और दरवाजा खोलकर ड्राइविंग सीट पर बैठ गया।

"तुम्हें क्या लगता है, अथर्व वाकई मर चुका होगा ?" गाइड ने उत्सुकता वश पूछा।

"अथर्व तो मंदिर वाले हादसे के बाद ही मर चुका था प्यारे। यह जो था ना वह बाली था बाली। अथर्व के लिये मैं निश्चित तौर पर कह सकता हूँ की वह मर चुका है। लेकिन बाली के विषय में नहीं जानता।" ड्राइवर ने कहा।

"अब आगे क्या होगा ? अब इस सम्पूर्ण विश्व को जब पता चल ही चुका है कि उनके मध्य मनुष्यों के अलावा दैत्य, दानव, राक्षस इत्यादि

प्रजातियां साथ रहती है, उनका अस्तित्व है, और वे सभी अपने अधिकारों को पाने के लिये सदैव प्रयासरत है। यह एक बहुत बड़ा रहस्य है जो सम्पूर्ण विश्व को बदल कर रख देगा। तुम्हें क्या लगता है इसके परिणाम क्या होंगे ?" गाइड ने पुन: प्रश्न किया।

"इन प्रजातियों के अस्तित्व का रहस्योद्घाटन अब हो ही चुका है, तो सीधी सी बात है अब यह दुनिया पहले जैसी बिलकुल नही रहेगी। माया ने जो किया है वह तो अभी मात्र आरंभ है। मनुष्यों एवं अन्य जातियों के मध्य युगों से संघर्ष होता आ रहा था, किन्तु गुप्त रुप से, अब वह संघर्ष खुल कर सामने आएगा। ये अन्य जातियां मनुष्यों के साथ समन्वय बना चुकी है, इस हद तक घुल मिल चुकी है और हर क्षेत्र में वर्चस्व प्राप्त कर चुकी है कि सीधे युद्ध में किसी भी एक प्रजाति का जीतना मुश्किल है। लेकिन विभिन्न जातियों का यह टकराव निश्चित रूप से और भयानक होगा, मनुष्य अपने मध्य की अन्य प्रजातियों का पता लगाने की जी तोड़ कोशिश करेगा और उनसे निपटने की तैयारी भी और दूसरी प्रजातियाँ अब स्वयं को और अधिक सुदृढ़ बनाएगी और आगामी हर युद्ध के लिये तैयार रहेंगी।" ड्राइवर ने कहा।

"इसका मतलब अब सम्पूर्ण पृथ्वी युद्ध का मैदान बनने वाली है ?" गाइड के स्वर में चिंता का पुट स्पष्ट था।

"मुझे कहते हुए दु:ख भी हो रहा है और चिंता भी, लेकिन यही सच है। एक भीषण विभीषिका, एक प्रचण्ड युद्ध और युग परिवर्तक बदलाव के लिये अब हमें तैयार हो जाना चाहिये।" कहते हुए ड्राइवर ने कार स्टार्ट की और गाडी सड़क पर निकल पड़ी।

समाप्त

विशेष धन्यवाद

विशेष तौर पर दो महिलाओं को धन्यवाद कहना चाहूँगा। नीलम और साधना, यह दोनों मुझे हर संभव तनाव से दूर रखने का प्रयास करती हैं, जिसमे ये सफल भी है, जिस कारण मैं लिखने के लिये स्वतंत्र रहता हूँ। दुनिया के लिये मैं सेलिब्रिटी रहूँ या ना रहूँ, किन्तु मुझे सेलिब्रिटी फील करवाने में यह दोनों सदैव अग्रणी रहती हैं। काफी कुछ बदला है, सकारात्मक हुआ है, इसमें इनका सर्वाधिक योगदान है, और मैं यह अच्छी तरह से जानता हूँ कि मात्र दो पंक्तियों मे मैं इनके योगदान के लिये इन्हें धन्यवाद नहीं कर सकता, ये दोनों धन्यवाद से परें हैं मेरे लिये। मेरे लिये असीम ऊर्जा एवं सकारात्मकता का स्त्रोत हैं, और सदैव रहेंगी।

मेरी प्रियंका दीदी, जिन्होंने मेरा पहला उपन्यास कई बार पढ़ा, और हर बार बात होने पर उसका उल्लेख अवश्य करती हैं। मेरे अगले उपन्यास की सर्वाधिक प्रतीक्षा इन्ही को है।

मेरा मनोबल बढ़ाने के लिये तन्वी का धन्यवाद, इन्हें मैं प्यार से मेरी पर्सनल मनोवैज्ञानिक, और मोटिवेशनल स्पीकर भी कहता हूँ।

मोहित शर्मा, यश ठाकुर, नलिनाक्ष ईशु, इन्होने इस प्रोजेक्ट को शून्य से साकार होते हुए देखा है, बाली के आरंभ से अंत तक के हर उतार चढ़ाव के ये साक्षी रहे है। इनका सम्पूर्ण योगदान है बाली के निर्माण में, जिसे मैं कदापि नकार नही सकता। यश ठाकुर जी का उल्लेख विशेषतौर पर करूंगा, बाली के लिये इनकी उत्सुकता, इनकी लगन के कारण ही

मुझे इस प्रोजेक्ट को पुन: आरंभ करने की प्रेरणा मिलती रही है। मोहित जी एवं नलिनाक्ष जी से सैकड़ों बार हुई घंटो की बातचीत ही इस कहानी को तराशने का कार्य करती आ रही है।

मेरे प्रकाशक एवं सम्पादक, शुभानंद जी एवं मिथिलेश का धन्यवाद, जिन्होंने मुझ पर विश्वास जताया और मेरे दोनों उपन्यासों के प्रथम पाठक, प्रथम समीक्षक एवं प्रथम आलोचक बन कर मुझे गौरवान्वित किया।

हिमांशु जी का धन्यवाद जिनके सुझाव एवं सम्पादन में कहानी और अधिक उभरकर सामने आई। निशांत मौर्य जिन्होंने आकर्षक मुखपृष्ठ की रचना की, जिन्होंने मेरे द्वारा कल्पित दृश्य को साकार रूप देकर शानदार मुखपृष्ठ की रचना करके उसमे प्राण फूंके।

शिवाजी आर्यन भाई का भी धन्यवाद, यह स्वयं एक सेलिब्रिटी है, जाने माने अभिनेता हैं, समय का मूल्य इन्हें सर्वाधिक पता है, इतनी व्यस्त जीवन शैली के पश्चात भी मित्रों के उत्साहवर्धन के लिये समय अवश्य निकाल लेते है, जो निस्संदेह उत्साह दुगुना कर देता है।

आदित्य भाई एवं डॉली भाभी का भी धन्यवाद करना चाहूँगा। जिन्होंने मेरे लेखन की समीक्षा की और मार्गदर्शन किया।

मेरे सोशल मीडिया से जुड़ें अन्य मित्र, जिनकी सूची इतनी लंबी है कि एक सम्पूर्ण पुस्तक बन जाये। अंत में उन सभी पाठकों का धन्यवाद, जिन्होंने मेरे पहले उपन्यास को पढ़ा, और जिनके हाथों में प्रस्तुत उपन्यास है।